॥ श्री गणेशाय नमः ॥

राजा
शुक्र

श्री आर्यभट्ट पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०६६ ❖ शाके :- १९३१

सन्-२००९-२०१० ई. ❖ भारतीय गणराज्य संवत् ६०-६१

प्रधान सम्पादक
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न, प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली

सम्पादकः
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, 2/45-ए,
वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

प्रकाशकः
धर्मसन प्रकाशन
2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ❖ दूरभाष : 23285234, 23264986

विषय सूची

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचाग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त' सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अत: प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रात: ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मेटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जावे। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रात: ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आपा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.=जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं. कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंशित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल ताथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ "**शतक मार्त्तण्ड**" का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्य भटीय" कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर "**आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र**" का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

"**शतक मार्त्तण्ड**" जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने "श्री आर्यभट्ट पंचांग" ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

—सम्पादक

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

प्रमुख व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत व्रत पर्वादि सं. २०६६ वि., शाके १९३१, सन् २००९-१० ई.

भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (२७ मार्च २००९ ई. से १५ मार्च २०१० ई. तक)

श्री राम नवमी	३ अप्रै.
श्री महावीर जयंती	७ "
वैशाखी, डॉ. अंबेडकर जयंती	१४ "
मई दिवस	१ मई
बुद्ध पूर्णिमा	९ "
गंगा दशहरा	२ जून
रक्षा बन्धन	५ अग.
शब ए बारात (ऐ)	[illegible]
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१३ "
भा. स्वतन्त्रता दिवस ६३वाँ वर्ष	१५ "
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	२३ "
अनन्त चतुर्दशी	३ सित.
जमातुल विदा (ऐ)	१८ "
श्री अग्रसेन जयंती	१९ "
ईद उल्ल फित्तर (मीठी ईद)	२० "
विजया दशमी	२८ "
महात्मा गांधी व शास्त्री जी ज.	२ अक्टू.
श्री वाल्मीकि जयंती	४ "
दीपावली	१७ "
श्री महावीर निर्वाण दिवस	१८ अक्टू.
भैय्या दूज	१९ "
गुरु नानक देव जयंती	२ नव.
गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस	२१ "
ईद उल्ल जुहा (बकरीद)	२८ "
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	२४ दिसं.
क्रिसमस डे	२५ "
मुहर्रम ताजिया	२८ "
अंग्रेजी नववर्ष २०१० प्रा. (ऐ.)	१ जन.
लोहड़ी उत्सव (पं.-हरि.-हि.प्र.) (ऐ)	१३ "
मकर संक्रांति (ऐ)	१४ "
बसन्त पंचमी (ऐ)	२० "
भा. गणतन्त्र दिवस ६१वाँ वर्ष	२६ "
चेहल्लुम (ऐ)	४ फर.
महा शिवरात्रि	१२ "
ई ए मिलाद (बारावफात) (ऐ)	२७ "
होलिका दहन	२८ "
धुलैण्डी	१ मार्च

नोट:-१. जिस अवकाश दिन के आगे (ऐ) लिखा है उन्हें ऐच्छिक अर्थात् वैकल्पिक अवकाश समझें। २. मुस्लिम त्यौहार सभी नये चाँद से होते हैं। अतः स्थान भेद आदि कारणों से कभी-कभी एक दिन का फर्क आ जाना सम्भव है। ३. सभी अवकाशों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है।

प्रमुख व्रत पर्वोत्सवादि

नववर्ष प्रारंभ	२७ मार्च
सिंधारा, चेटीचण्ड	२८ "
गणगौरी ३, गौरी ३, सौभाग्य ३	२९ "
श्री पंचमी, कल्पादि ५, नाग पंचमी	३१ "
स्कन्द ६ व्रत	३१ "
श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति)	३ अप्रै.
श्री राम नवमी, नवरात्र पूर्ण	३ "
हरिदमनोत्सव	६ "
अनंग त्रयोदशी	७ "
दमनक चतुर्दशी	८ "
चैत्री पूर्णिमा, मन्वादि १५, श्री हनुमान ज.	९ "
वैशाख स्ना. प्रा.	९ "
अनुसूइया जयंती	१२ "
शीतला पूजन (बूढ़ा बासौड़ा)	१६ "
दामोदर पुण्य तिथि (असम)	२६ "
त्रेता युगादि ३, कल्पादि ३, अक्षय तृतीया	२७ "
चन्दन षष्ठी (बिहार)	३० अप्रै.
गंगा सप्तमी (गंगोत्पति)	१ मई
वि. मजदूर दिवस	१ "
श्री सीता नवमी (जानकी ज.)	३ "
रुक्मणी द्वादशी	६ "
अशोक त्रिरात्री व्रतारम्भ	७ "
वैशाखी पूर्णिमा, पीपल पूजन	९ "
अशोक त्रिरात्री व्रत व वैशाख स्नान पूर्ति	९ "
देवर्षि नारद ज.	११ "
श्री दादूदयाल पुण्य तिथि	१७ "
मधुसूदन द्वादशी	२१ "
वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (अमा. पक्ष)	२२ "
भावुकाऽमावस्या	२४ "
वट सावित्री व्रत पूजन (अमा. पक्ष)	२४ "
करवीर व्रत, करि दिनं, दशहरा व्रत प्रा.	२५ "
दशाश्वमेध घाटे स्नान प्रा. (काशी)	२५ "
रम्भा तृतीया व्रत	२६ "
पं. जवाहर लाल नेहरू पुण्य दिवस	२७ "
अरण्य षष्ठी, जामित्र षष्ठी	२९ मई
महेश नवमी (माहेश्वरीणामुत्पत्ति)	१ जून
श्री गंगा दशहरा (गंगावतरण)	२ "
दशहरा व्रत पूर्ण	२ "
दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ति	२ "
चम्पक द्वादशी	४ "
वट सावित्री व्रत प्रा.	५ "
विश्व पर्यावरण दिवस	५ "
ज्येष्ठी पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत पूजन	७ "
गोपद्म व्रतोद्यापन	१९ "
मनोरथ द्वितीया (बंगाल)	२४ "
कुमार षष्ठी व्रत	२७ "
विवस्वत् सप्तमी (सूर्य पूजन)	२८ "
खरसी पूजा (त्रिपुरा)	२९ "
भड्डली नवमी, शुद्धादि ९	३० "
आशा दशमी व्रत, मन्वादि १०	१ जुला.
चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ	२ "
कोकिला व्रत, वायु परीक्षा	६ "
आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजन	७ "
मन्वादि १५, सन्यासीनां चातुर्मासारम्भ:	७ "
अशून्य शयन व्रत प्रा. (बंगाल)	९ "
विश्व जनसंख्या दिवस	११ "
नाग पंचमी (मरुस्थले)	१२ "
शीतला सप्तमी (उड़ीसा)	१४ "
मन्वादि ८	१५ "
मंगलागौरी पूजन, केर पूजा (त्रिपुरा)	१६ "
हरियाली ३०, मन्वादि ३०	२२ "
चितलगी ३० (उड़ीसा)	२२ "
सरस माधुरी जयंती, नक्त व्रत प्रारम्भ	२२ "
सिंधारा (राज.)	२३ "
मधुश्रवा (छोटी तीज) हरियाली तीज	२४ "
वरद चतुर्थी	२५ "
नाग पंचमी (देशाचारे), अमरनाथ यात्रारंभ	२६ "
वर्ण श्रृयाल षष्ठी	२७ "
शीतला सप्तमी (सिंध)	२८ "
लोक मान्य तिलक पुण्य दिवस	१ अग.
पवित्रार्पण द्वादशी	२ "
हयग्रीव जयंती	२ "
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षा बन्धन	५ "
श्री गायत्री ज.	५ "
उपाकर्म (यजुर्वेदीनाम्)	५ "
अमरनाथ दर्शन (कश.)	५ "
उपाकर्म (ऋग्वेदीनाम्)	६ अग.
अशून्य शयन व्रत पूर्ति (बं.)	७ "
श्री रविन्द्र नाथ टैगोर पुण्य दि.	७ "
सिंधारा (राज.)	८ "
कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज	९ "
संकष्ट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी, भा. क्रांति दि.	९ "
रक्षा पंचमी (उड़ीसा), चन्द्र षष्ठी व्रत	११ "
ऊभी ६, ललही ६, हल ६, पुत्रार्थी व्रत	११ "
माधव देव तिथि (असम)	१२ "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	१३ "
कालाष्टमी	१३ "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	१४ "
मन्वादि ८	१४ "
गोगा नवमी, भा. स्वतंत्रता दि. ६३वाँ वर्ष	१५ "
वत्स द्वादशी	१७ "
कलियुगादि १३	१८ "
अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रा.	१९ "
कुशोत्पाटिनी अमा., पिठोरी ३०	२० "
मन्वादि ३०	२० "
नक्त व्रत पूर्ति	२१ "
मन्वादि ३, हरितालिका ३, गौरी ३	२२ "
उपाकर्म (सामगानाम्)	२३ "
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	२३ "
विनायक ४, कलंकी ४	२३ "
पत्थर ४	२३ "
ऋषि पंचमी व्रत	२४ "
सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता ६ (गुज.)	२५ "
बलदेव ६ (बलराम ज.)	२५ "
मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान ७	२६ "
श्री राधाष्टमी, राधा ज.	२७ "
महालक्ष्मी व्रतारम्भ	२७ "
श्री चन्द नवमी, अदुःख ९	२९ "
भागवत जयन्ती	२९ "
दशावतार जयंती	३० "
श्रवण द्वादशी व्रत, वामन ज.	१ सितं.
गोत्रिरात्री व्रत प्रा.	२ "
अनन्त चतुर्दशी व्रत	३ "
उपाकर्म (अथर्वाणाम्), प्रोष्ठपदी पूर्णिमा	३ "
महालयारम्भ:, गोत्रिरात्री व्रत पूर्ण	३ "
शिक्षक दिवस	५ "
दशरथ ललिता व्रत, विश्व साक्षरता दिवस	८ "
जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति	१२ "

मातृ नवमी, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध	१३ सितं.
भारतीय हिन्दी दिवस	१४ "
भारतीय इंजीनियर्स डे	१५ "
विश्वकर्मा पूजन	१६ "
कात्यायनी जयंती	१७ "
गजच्छाया पर्व (स्नान दानार्थ)	१८ "
शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन	१९ "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	२३ "
सरस्वती आवाहनम्	२५ "
महाष्टमी (भद्रकाल्यावतार)	२६ "
सरस्वती पूजन	२६ "
महानवमी, दुर्गानवमी, मन्वादि ९	२७ "
विश्व पर्यटक दि.	२७ "
नवरात्र पूर्ण, सरस्वती बलिदान	२७ "
अस्त्र शस्त्रादि पूजन	२७ "
विजया दशमी (रावण दाह)	२८ "
अपराजिता व शमी पूजन	२८ "
सरस्वत्यै विसर्जनं, माधवाचार्य ज.	२८ "
भरत मिलाप	२९ "
बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबन्दी	३० "
शरत्पूर्णिमा, रास पूर्णिमा (वृन्दावन)	३ अक्टू.
कोजागर व्रत	३ "
कार्तिक स्नानारम्भः	४ "
करवा चौथ, कर्क ४, दशरथ ४	७ "
भारतीय वायु सेना दविस	८ "
अहोई अष्टमी, कालिका पूजन (पंजाब)	११ "
गोवत्स द्वादशी (गोवत्स पूजन)	१४ "
धनत्रयोदशी धन्वन्तरी ज.	१५ "
यमाय दीपदानम्	१५ "
नरक हारिणी रूप चतुर्दशी	१६ "
वि. खाद्य दिवस	१६ "
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	१७ "
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बली पूजा	१८ "
द्यूतक्रीड़ा, गो-क्रीड़ा	१८ "
यम द्वितीया भैया दूज, यमुना स्नान	१९ "
विश्वकर्मा व चित्र गुप्त पूजन	१९ "
गोसंवर्धन सप्ताह प्रा.	२० "
सूर्य षष्ठी व्रत प्रा. (बि.)	२२ "
सौभाग्य पंचमी, पांडव ५	२३ "
सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण, डाला छठ	२४ "
छट पूजा (बिहार)	२४ "
कल्पादि ७, सहस्रार्जुन ज.	२५ "
गोपाष्टमी, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ण	२६ "
अक्षय नवमी, कुष्मांड ९, आंवला ९	२७ "

कृतयुगादि ९, जगद्धातृ पूजन	२७ अक्टू.
तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	२९ "
भीष्म पंचक प्रारम्भ	२९ "
मन्वादि द्वादशी	३० "
श्रीमती गांधी पुण्य दिवस	३१ "
सरदार पटेल जयंती	३१ "
वैकुण्ठ चतुर्दशी, झाड़ी पूजन (राज.)	१ नवं.
काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस	१ "
कार्तिकी पूर्णिमा, मन्वादि १५, देव दीपोत्सव	२ "
भीष्म पंचक व कार्तिक स्नान पूर्ण	२ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	५ "
श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव जी पूजन	९ "
प्रथमाष्टमी	९ "
वैतरणी व्रत	१२ "
संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस	१३ "
बाल दिवस	१४ "
श्री तिरुपति बालाजी जयंती	१५ "
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ "
नाग पंचमी (द.भा.)	२१ "
चम्पा षष्ठी व्रत, स्कंद षष्ठी	२२ "
श्री राम कलेवा, मूलक रूपिणी ६	२३ "
मित्र सप्तमी	२४ "
महानंदा नवमी, कल्पादि ९	२६ "
श्री गीता जयन्ती	२८ "
व्यंजन द्वादशी	२९ "
श्री दत्तात्रेय ज., अन्नपूर्णा ज.	१ दिसं.
पिशाच मोचन श्राद्ध, विश्व एड्स दिवस	१ "
विकलांग दिवस	३ "
भारतीय नौ सेना दिवस	४ "
भारतीय झण्डा दिवस	७ "
अष्टका श्राद्ध	९
मानवाधिकार दिवस	१० "
स्वरूप द्वादशी व्रत	१३ "
सरदार पटेल पुण्य दि., धनु मलमास प्रा.	१५ "
वकुला ३० (उड़ीसा)	१६ "
बलिदान दिवस, किसान दिवस	२३ "
शाम्ब दशमी (उड़ीसा)	२७ "
मन्वादि ११, वैकुण्ठ ११ (द.भा.)	२८ "
शाकम्भरी ज., माघ स्नानारंभः	३१ "
पौषी पूर्णिमा, गंगासागर यात्रा प्रा.	३१ "
सन् २०१० ई.	
दशाश्वमेध घाटे स्नान प्रा. (काशी)	१ जन.
श्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस	११ "
लोहड़ी उत्सव (पं.)	१३ "

मकर संक्रांति, मलमास पूर्ण	१४ जन.
रटन्ति कालिका पूजन	१४ "
माघ बिहु (असम), पोंगल पर्व (केरल)	१४ "
मौनी अमा., द्वापर युगादि ३०	१५ "
भा. थलसेना दिवस	१५ "
गौरी तृतीया व्रत, गोंतरी (पं.)	१८ "
वरद ४, तिल ४, कुन्द ४	१९ "
वसन्त (श्री) पंचमी, सरस्वती पूजन	२० "
रतिकामोत्सव, तक्षक पूजा	२० "
दारिद्र्य हरण षष्ठी	२१ "
शीतला ६ (बंगाल)	२१ "
रथ सप्तमी, आरोग्य ७, मन्वादि ७	२२ "
भीष्माष्टमी	२३ "
भारतीय गणतन्त्रता दिवस ६१वाँ वर्ष	२६ "
भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण	२७ "
कल्पादि १३, लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ण	३० "
दशाश्वमेध घाटे स्नान पू.	३० "
महात्मा गांधी पुण्य दि., ललिता जयंती	३० "
अष्टका श्राद्ध	६ फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत, श्री वैद्यनाथ जयंती	१२ "
शिव खप्पर पूजन	१३ "
वेलेन्टाइन डे	१४ "
फुलरिया दूज	१६ "
संत ४ (उड़ीसा)	१८ "
गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल)	२० "
होलाष्टक प्रारम्भ	२२ "
गोविन्द द्वादशी	२६ "
होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ण	२८ "
मन्वादि १५	२८ "
डा. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस	२८ "
फाल्गुनी पूर्णिमा	२८ "
वसन्त प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, छारेड़ी	१ मार्च
धुलैण्डी, गण गौरी पूजन प्रा. (राज.)	१ "
कल्पादि ३, आशा चौथ व्रत (राज.)	३ "
रंग पंचमी	५ "
एकनाथ षष्ठी	६ "
शीतलाष्टमी, शीतला पूजन, बासौड़ा	७ "
सूरज रोटा व्रत (राज.)	७ "
अष्टका श्राद्ध	८ "
दशामाता व्रत	१० "
रंग त्रयोदशी	१३ "
मीन मलमास प्रारम्भ	१४ "
मन्वादि ३०, चांद्र संवत्सर २०६६ पूर्ण	१५ "

विनायक चौथ व्रत (शुक्ल पक्षीय)

चैत्र	सोमवार	३० मार्च
वैशाख	मंगलवार	२८ अप्रै.
ज्येष्ठ	बुधवार	२७ मई
आषाढ़	शुक्रवार	२६ जून
श्रावण	शनिवार	२५ जुला.
भाद्रपद	रविवार	२३ अग.
आश्विन	मंगलवार	२२ सितं.
कार्तिक	बुधवार	२१ अक्टू.
मार्गशीर्ष	शुक्रवार	२० नवं.
पौष	रविवार	२० दिसं.
	सन् २०१० ई.	
माघ	मंगलवार	२० जन.
फाल्गुन	गुरुवार	१८ फर.

चतुर्थी व्रत (कृष्ण पक्षीय)

वैशाख	सोमवार	१३ अप्रै.
ज्येष्ठ	मंगलवार	१२ मई
आषाढ़	गुरुवार	११ जून
श्रावण	शनिवार	११ जुला.
भाद्रपद	रविवार	९ अग.
आश्विन	मंगलवार	८ सितं.
कार्तिक	बुधवार	७ अक्टू.
मार्गशीर्ष	गुरुवार	५ नवं.
पौष	शनिवार	५ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
माघ	रविवार	३ जन.
फाल्गुन	मंगलवार	२ फर.
चैत्र	बुधवार	३ मार्च

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

चैत्र	शुक्रवार	३ अप्रै.
वैशाख	शनिवार	२ मई
ज्येष्ठ	रविवार	३१ "
आषाढ़	सोमवार	२९ जून
श्रावण	बुधवार	२९ जुला.
भाद्रपद	गुरुवार	२७ अग.
आश्विन	शनिवार	२६ सितं.
कार्तिक	सोमवार	२६ अक्टू.
मार्गशीर्ष	बुधवार	२५ नवं.
पौष	शुक्रवार	२५ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
माघ	शनिवार	२३ जन.
फाल्गुन	सोमवार	२२ फर.

मासिक कालाष्टमी व्रत

वैशाख	शुक्रवार	१७ अप्रै.
ज्येष्ठ	रविवार	१७ मई
आषाढ़	मंगलवार	१६ जून
श्रावण	बुधवार	१५ जुला.
भाद्रपद	गुरुवार	१३ अग.
आश्विन	शनिवार	१२ सितं.
कार्तिक	रविवार	११ अक्टू.
मार्गशीर्ष	सोमवार	९ नवं.
पौष	बुधवार	९ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
माघ	गुरुवार	७ जन.
फाल्गुन	शनिवार	६ फर.
चैत्र	रविवार	७ मार्च

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	५ अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	२१ "
"	शुक्ल	मोहिनी	५ मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	२० "
"	शुक्ल	निर्जला	३ जून
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी	१९ "
"	शुक्ल	देवशयनी	२ जुला.
श्रावण	कृष्ण	कामदा	१८ "
"	शुक्ल	पवित्रा	१ अग.
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	१६-१७ "
"	शुक्ल	पद्मा (जलझूलनी)	३१ "
आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा	१५ सितं.
"	शुक्ल	पापांकुशा	२९-३० "
कार्तिक	कृष्ण	रमा	१४ अक्टू.
"	शुक्ल	देव प्रबोधिनी	२९ "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पत्ति	१२ नवं.
"	शुक्ल	मोक्षदा	२८ "
पौष	कृष्ण	सफला	१२ दिसं.
"	शुक्ल	पवित्रा (पुत्रदा)	२८ "
		सन् २०१० ई.	
माघ	कृष्ण	षट्तिला	१० जन.
"	शुक्ल	जया	२६ "
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	९ फर.
"	शुक्ल	आमलकी	२५ "
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	११ मार्च

नोट–उपरोक्त एकादशी व्रतों के आगे जहां दो तारीखें दी हैं उनमें प्रथम स्मार्तों व दूसरी वैष्णवों की एकादशी समझें।

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	भौम प्रदोष व्रत	७ अप्रै.
वैशाख	कृष्ण		२२ "
"	शुक्ल		६ मई
ज्येष्ठ	कृष्ण		२२ "
"	शुक्ल		५ जून
आषाढ़	कृष्ण	शनि प्रदोष व्रत	२० "
"	शुक्ल	शनि प्रदोष व्रत	४ जुला.
श्रावण	कृष्ण		१९ "
"	शुक्ल	सोम प्रदोष व्रत	३ अग.
भाद्रपद	कृष्ण	भौम प्रदोष	१८ "
"	शुक्ल	भौम प्रदोष	१ सितं.
आश्विन	कृष्ण		१६ "
"	शुक्ल		१ अक्टू.
कार्तिक	कृष्ण		१५ "
"	शुक्ल	शनि प्रदोष	३१ "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	शनि प्रदोष	१४ नवं.
"	शुक्ल		२९ "
पौष	कृष्ण		१३ दिसं.
"	शुक्ल	भौम प्रदोष	२९ "
		सन् २०१० ई.	
माघ	कृष्ण	भौम प्रदोष	१२ जन.
"	शुक्ल		२७ "
फाल्गुन	कृष्ण		११ फर.
"	शुक्ल		२६ "
चैत्र	कृष्ण	शनि प्रदोष	१३ मार्च

मासिक शिवरात्री व्रत

वैशाख	गुरुवार	२३ अप्रै.
ज्येष्ठ	शुक्रवार	२२ मई
आषाढ़	रविवार	२१ जून
श्रावण	सोमवार	२० जुला.
भाद्रपद	मंगलवार	१८ अग.
आश्विन	गुरुवार	१७ सितं.
कार्तिक	शुक्रवार	१६ अक्टू.
मार्गशीर्ष	रविवार	१५ नवं.
पौष	सोमवार	१४ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
माघ	बुधवार	१३ जन.
फाल्गुन	शुक्रवार	१२ फर.
चैत्र	रविवार	१४ मार्च

पूर्णिमा व्रत

चन्द्रोदय व्यापिनी	मास	सूर्योदय व्यापिनी
९ मार्च	चैत्र	९ मार्च
८ अप्रै.	वैशाख	९ अप्रै.
७ जून	ज्येष्ठ	७ जून
६ जुला.	आषाढ़	७ जुला.
५ अग.	श्रावण	५ अग.
४ सितं.	भाद्रपद	४ सितं.
३ अक्टू.	आश्विन	४ अक्टू.
२ नवं.	कार्तिक	२ नवं.
१ दिसं.	मार्गशीर्ष	२ दिसं.
३१ "	पौष	३१ "
	सन् २०१० ई.	
२९ जन.	माघ	३० जन.
२८ फर.	फाल्गुन	२८ फर.

अमावस्याएं

पितृकार्या तर्पणादि निमित्त	मास	देवकार्या स्नान दानार्थ
२४ अप्रै.	वैशाख	२५ अप्रै.
२४ मई	ज्येष्ठ	२४ मई
२२ जून	आषाढ़	२२ जून
२१ जुला.	श्रावण	२२ जुला.
२० अग.	भाद्रपद	२० अग.
१८ सितं.	आश्विन	१८ सितं.
१७ अक्टू.	कार्तिक	१८ अक्टू.
१६ नवं.	मार्गशीर्ष	१६ नवं.
१६ दिसं.	पौष	१६ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
१५ जन.	माघ	१५ जन.
१३ फर.	फाल्गुन	१३ फर.
१५ मार्च	चैत्र	१५ मार्च

श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र	गुरुवार	९ अप्रै.
वैशाख	शुक्रवार	८ मई
ज्येष्ठ	रविवार	७ जून
आषाढ़	सोमवार	६ जुला.
श्रावण	बुधवार	५ अग.
भाद्रपद	शुक्रवार	४ सितं.
आश्विन	शनिवार	३ अक्टू.
कार्तिक	सोमवार	२ नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	१ दिसं.
पौष	गुरुवार	३१ "
	सन् २०१० ई.	
माघ	शुक्रवार	२९ जन.
फाल्गुन	रविवार	२८ फर.

सायन संक्रांतियां

वृष	रविवार	१९ अप्रै.
मिथुन	बुधवार	२० मई
कर्क	रविवार	२१ जून
सिंह	बुधवार	२२ जुला.
कन्या	शनिवार	२२ अग.
तुला	मंगलवार	२२ सितं.
वृश्चिक	शुक्रवार	२३ अक्टू.
धनु	रविवार	२२ नवं.
मकर	सोमवार	२१ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
कुम्भ	बुधवार	२० जन.
मीन	गुरुवार	१८ फर.

निरयण संक्रांतियाँ (पुण्यकाल)

मेष	७।१३ तक	१४ अप्रै.
वृष	१५।१८ से	१४ मई
मिथुन	१०।४३ तक	१५ जून
कर्क	सूर्योदय से	१६ जुला.
सिंह	१७।७ से	१६ अग.
कन्या	१७।१ से	१६ सितं.
तुला	सूर्योदय से	१७ अक्टू.
वृश्चिक	सूर्योदय से	१६ नवं.
धनु	८।१८ तक	१६ दिसं.
	सन् २०१० ई.	
मकर	सम्पूर्ण दिन	१४ जन.
कुंभ	८।४ तक	१३ फर.
मीन	१६।८ से	१४ मार्च

षडऋतु, गोल एवं अयनारंभ

तारीख	ऋतु	अयन	गोल
१९ अप्रै.	ग्रीष्म ऋतु	-	-
२१ जून	वर्षा ऋतु	दक्षिणायन	-
२२ अग.	शरद ऋतु	-	-
२२ सितं.	-	-	दक्षिण गोले

२३ अक्टू.	हेमन्त ऋतु	-	-
२१ दिस.	शिशिर ऋतु	उत्तरायण	-
१८ फर.	वसन्त ऋतु	-	-

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध (महालय)

पूर्णिमा श्राद्ध	४ सितं.
प्रतिपदा श्राद्ध	५ "
द्वितीया श्राद्ध	६ "
तृतीया श्राद्ध	७ "
चतुर्थी श्राद्ध	८ "
पंचमी श्राद्ध	९ "
षष्ठी श्राद्ध	१० "
सप्तमी श्राद्ध	११ "
अष्टमी श्राद्ध	१२ "
नवमी श्राद्ध (सौभाग्यवती श्राद्ध)	१३ "
दशमी श्राद्ध	१४ "
एकादशी श्राद्ध	१५ "
द्वादशी श्राद्ध (सन्यासीनां श्राद्ध)	१५ "
त्रयोदशी श्राद्ध	१६ "
चतुर्दशी श्राद्ध (दुर्मरण श्राद्ध)	१७ "
अमा. श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध विसर्जनं च)	१८ "
मातामह श्राद्ध	१९ "

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	२९ मार्च
श्री राम जयंती	३ अप्रै.
श्री परशुराम जयंती	२७ "
श्री नृसिंह जयंती	७ मई
श्री कूर्म जयंती	८ "
श्री बुद्ध जयंती	९ "
श्री कल्की जयंती	३१ जुला.
श्री कृष्ण जयंती	१३ अग.
श्री वाराह जयंती	२२ "
श्री वामन जयंती	१ सितं.

दसमहाविद्या जयंतियाँ

श्री महातारा जयंती	३ अप्रै.
श्री मातंगी जयंती	२७ "
श्री बगलामुखी जयंती	२ मई
श्री छिन्नमस्ता जयंती	८ "
श्री धूमावती जयंती	३१ "
आद्या मां श्रीकाली जयंती	१३ अग.
श्री भुवनेश्वरी जयंती	१ सितं.
श्री कमला जयंती	१८ अक्टू.
षोडषी श्री त्रिपुर सुन्दरी जयंती	१ दिस.
श्री विद्या मां ललिता जयंती	३० जन.

जैन व्रत, पर्वोत्सव

दशलक्षण व्रत प्रा.	३० मार्च
रोहिणी व्रत	३१ "
आयंबिल ओली प्रा.	२ अप्रै.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२ "
श्री सुमतिनाथ जन्म-ज्ञान-मोक्ष	५ "
श्री महावीर जयंती	७ "
दशलक्षण व्रत पूर्ण	८ "
आयंबिल ओली पूर्ण	९ "
मुनि सुव्रतनाथ जन्म-तप	२० "
श्री कुन्दनाथ जन्म-तप-मोक्ष	२६ "
रोहिणी व्रत	२७ "
श्री महावीर स्वामी केवल्य ज्ञान	४ मई
ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा.	१० "
श्री अनन्त नाथ जन्म-तप	२१ "
श्री शान्ति नाथ जन्म-तप-मोक्ष	२२ "
रोहिणी व्रत	२५ "
श्रुति पंचमी	२८ "
श्री सुपार्श्व नाथ जन्म-तप	४ जून
ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण	७ "
श्री नमीनाथ जन्म-तप	१८ "
रोहिणी व्रत	२१ "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	२९ "
चौमासी चौदस	६ जुला.
चातुर्मास व्रत नियम प्रा.	६ "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	७ "
तेरापन्थ स्थापना	७ "
रोहिणी व्रत	१९ "
श्री नमीनाथ जयंती	२७ "
श्री पार्श्वनाथ जयंती	२८ "
रोहिणी व्रत	१५ अग.
पर्यूषण पर्व प्रा.	१८ "
कल्पसूत्र पाठ	२१ "
तेलाधर तप	२२ "
पर्यूषण पर्व पूर्ण, संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष)	२३ "
क्षमावणी पर्व, संवत्सरी (पंचमी पक्ष)	२४ "
दशलक्षण व्रत प्रारम्भ	२४ "
श्री कालु निर्वाण दिवस	२५ "
आचार्य तुलसी पट्टा रोहण	२ सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	३ "
दशलक्षण व्रत पूर्ण	३ सितं.
रोहिणी व्रत	११ "
आयंबिल ओली प्रा.	२५ "
आयंबिल ओली पूर्ण	४ अक्टू.
रोहिणी व्रत	९ "
श्री पद्म प्रभु जन्म-तप	१६ "
श्री महावीर निर्वाण दिवस	१८ "
आचार्य श्री तुलसी जन्म	२० "
ज्ञान पंचमी	२३ "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	२६ "
श्री संभवनाथ जन्म	२ नवं.
अष्टान्हिका पर्व पूर्ति	२ "
चातुर्मास्य व्रत नियम पूर्ण	२ "
रोहिणी व्रत	५ "
महावीर स्वामी दीक्षा दिवस	११ "
श्री पुष्पदन्त नाथ जन्म-तप	१७ "
मौनी ग्यारस	२८ "
श्री मुल्लीनाथ जन्म-तप	२८ "
श्री अरहनाथ जन्म	१ दिसं.
रोहिणी व्रत	२ "
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा दिवस	५ "
श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप	१२ "
श्री चन्द्र प्रभु जन्म-तप	१२ "
श्री यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य, त्रिस्तुति	१९ "
श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य	२४ "
श्री जिनानन्द सागर पुण्य दिवस	२८ "
रोहिणी व्रत	३० "
सन् २०१० ई.	
श्री शीतल नाथ जन्म-तप	११ जन.
मेरु १३, श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक	१२ "
श्री ऋषभदेव मोक्ष	१४ "
श्री विमलनाथ जन्म-तप	१९ "
दशलक्षण व्रत प्रा.	२० "
मर्यादा महोत्सव	२२ "
श्री अजीत नाथ जन्म	२५ "
रोहिणी व्रत	२६ "
श्री अभिनन्दन नाथ जन्म-तप	२६ "
श्री धर्मनाथ जन्म-तप	२८ "
दशलक्षण व्रत पूर्ण, श्री जितेन्द्र रथ यात्रा	२९ "
श्री पद्म प्रभु मोक्ष	२ फर.
श्री श्रेयांश नाथ जन्म-तप	९ "
श्री वासु पूज्य जन्म-तप	१२ "
अष्टान्हिका पर्व प्रा., रोहिणी व्रत	२२ "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	२८ "
श्री ऋषभदेव जन्म-तप	८ मार्च

इस्लामी त्यौहार

फातिहा यजदहूम	८ अप्रै.
उर्स मेला प्रा. (अजमेर)	२४ जून
हजरत अली जन्म	६ जुला.
शब ए मिराज	२० "
शब ए बारात	७ अग.
पाक रोजे शुरू	२२ "
सहादत ए हजरत अली	११ सितं.
शब-ए-कद्र	१७ "
जमात ए अलविदा	१८ "
ईद उल फित्तर (मीठी ईद)	२१ "
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो (दिल्ली)	७ अक्टू.
हज्ज	२७ नवं.
ईद उल्ल जुहा (बकरीद)	२८ "
मुहर्रम ताजिया, हिजरी सन् १४३१ प्रा.	१९ दिसं.
सन् २०१० ई.	
चेहल्लम शहीद करबला	४ फर.
सहादत ए इमाम हसन	१३ "
आखरी चाहर शाम्ब	१३ "
ईद ए मिलाद	२७ "
इद ए मौलाद	४ मार्च

क्रिश्चियन पर्व

क्रिसमस डे (बड़ा दिन) ईसा ज.	२५ दिसं.
न्यू ईयर ईवनिंग डे	३१ "
न्यू ईयर २०१० सन् प्रा.	१ जन.
वेलेण्टाइन डे	१४ फर.

महापुरुष जयन्तियाँ

श्री झूलेलाल जयंती	२८ मार्च
भक्त पीपा राम जी जयंती	९ अप्रै.
डॉ. भीम राव अंबेडकर जयंती	१४ "
श्री वल्लभाचार्य जयंती	२१ "
श्री सेन भक्त जयंती	२१ "
श्री शुकदेव मुनि जयंती	२५ "
श्री छत्रपति शिवाजी जयंती	२६ "
आद्य जगदगुरु श्री शंकराचार्य जयंती	२९ "
श्री सूरदास जी जयंती	२९ "
श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भा.)	२९ "
बाबू कुंवर सिंह जयंती (बिहार)	१ मई
श्री हित हरिवंश महाप्रभु जयंती	५ "
श्री रविन्द्र नाथ टैगोर ज.	७ "

माँ आनंदमयी जयंती	१२ मई
श्री महाराणा प्रताप ज.	२७ "
श्री संत कबीर जयंती	७ जून
लो. बाल गंगाधर तिलक जयंती	२३ जुला.
गोस्वामी तुलसी दास जयंती	२८ "
संत ज्ञानेश्वर जयंती	१४ अग.
स्वामी शिवानंद जयंती	१७ "
संत सुथरेशाह जयंती	२० "
ऋषि दधीची जयंती	२७ "
स्वामी हरिदास जयंती	२७ "
श्री चन्द जयंती (उदासीन सम्प्रदाय)	२९ "
श्री सर्वपल्ली डॉ. श्री राधाकृष्णन ज.	५ सितं.
श्री गोविन्द वल्लभ पंत जयंती	९ "
श्री विनोबा भावे जयंती	११ "
श्री अग्रसेन जयंती	१९ "
श्री माधवाचार्य जयंती	२८ "
श्री महात्मा गांधी जयंती	२ अक्टू.
श्री लाल बहादुर शास्त्री जयंती	२ "
महर्षि वाल्मिकी जयंती	३ "
कविकुल कालीदास जयंती	३० "
सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती	३१ "
वीर वैरागी जयंती (नकोदर)	३१ "
श्री निंबार्काचार्य जयंती	२ नवं.
पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म-दिवस	१४ "
संत घासी दास जयंती	२० "
श्री साई बाबा जयंती	२३ "
भक्त नरसी मेहता जयंती	२४ "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस	३ दिसं.
ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन)	२५ "
पं. मदन मोहन मालवीय जन्म दिवस	२५ "

सन् २०१० ई.

स्वामी विवेकानन्द जी जयंती	६ जन.
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	६ "
योगीराज बाबा लाल दयाल जयंती	१७ "
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ "
लाला लाजपतराय जयंती	२४ "
श्री रामचरण स्नेही जयंती	२९ "
संत रैदास जयंती	३० "
समर्थ गुरु रामदास जयंती	७ फर.
महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती	८ "
श्री दीनबन्धु इण्ड्रयूज जयंती	१२ "
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	१६ "
पं. लेखराम वीर जयंती	१७ फर.
महर्षि याज्ञवल्क्य जयंती	१९ "
संत श्री दादूदयाल जयंती	२२ "
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	२८ "
संत तुकाराम जयंती	२ मार्च

सिक्ख गुरु पर्व (प्रा. मत से)

प्रकाश दिवस

गुरु तेगबहादुर जी	१४ अप्रै.
गुरु अर्जुन देव जी	१६ "
गुरु अंगद देव जी	२६ "
गुरु अमरदास जी	८ मई
गुरु हरगोविन्द जी	८ जून
गुरु हरिकिशन जी	१६ जुला.
गुरु ग्रन्थ साहिब जी	२१ अग.
गुरु रामदास जी	६ अक्टू.
गुरु नानक देव जी	२ नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	२४ दिसं.

सन् २०१० ई.

गुरु हरराय जयंती	२८ जन.

गुरुयाई मिली (प्रा. मत से)

गुरु नानक देव जी	अवतार दिन से
गुरु अमर दास जी	२७ मार्च
गुरु तेगबहादुर जी	८ अप्रै.
गुरु हरगोविन्द जी	१७ मई
गुरु अर्जुन देव जी	२२ अग.
गुरु रामदास जी	२ सितं.
गुरु अंगद देव जी	९ "
गुरु हरिकिशन जी	१२ अक्टू.
गुरु ग्रंथ साहिब जी	२० "
गुरु गोविन्द सिंह जी	१९ नवं.
गुरु हरराय जी (२०१० ई.)	१३ मार्च

ज्योति जोत समाए (प्रा. मत से)

गुरु अंगद देव जी	२९ मार्च
गुरु हरगोविन्द जी	३० "
गुरु हरिकिशन जी	८ अप्रै.
गुरु अर्जुन देव जी	२७ मई
गुरु रामदास जी	२३ अग.
गुरु अमरदास जी	३ सितं.
गुरु नानक देव जी	१४ "
गुरु हरराय जी	१२ अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	२३ "
गुरु तेगबहादुर जी	२१ नवं.

सिक्खों के अन्य पर्व (प्रा. मत से)

खालसा पंथ साजना दिवस	१० अप्रै.
गुरु ग्रंथ साहिब जी वार्षिकोत्सव	३० नवं.

प्रकाश दिवस (नानक शाही कैलेण्डर से)

(शिरोमणी गुरु द्वारा प्रबंधक कमेटी अनुसार)

गुरु नानक देव जी	५ नवं.
गुरु अंगद देव जी	१८ अप्रै.
गुरु अमरदास जी	२३ मई
गुरु रामदास जी	९ अक्टू.
गुरु अर्जुन देव जी	२ मई
गुरु हरगोविन्द जी	५ जुला.
गुरु हरराय जी	३१ जन.
गुरु हरिकिशन जी	२३ जुला.
गुरु तेगबहादुर जी	१८ अप्रै.
गुरु गोविन्द सिंह जी	५ जन.
गुरु ग्रन्थ साहिब जी	१ सितं.

गुरुयाई मिली

गुरु नानक देव जी	अवतार दिन से
गुरु अंगद देव जी	१८ सितं.
गुरु अमरदास जी	१६ अप्रै.
गुरु रामदास जी	१६ सितं.
गुरु अर्जुन देव जी	१६ "
गुरु हरगोविन्द जी	११ जून
गुरु हरराय जी	१४ मार्च
गुरु हरिकिशन जी	२० अक्टू.
गुरु तेगबहादुर जी	१६ अप्रै.
गुरु गोविन्द सिंह जी	२४ नवं.
गुरु ग्रन्थ साहिब जी	२० अक्टू.
खालसा पंथ साजना दिवस	१४ अप्रै.

ज्योति जोत समाए

गुरु नानक देव जी	२२ सितं.
गुरु अंगद देव जी	१६ अप्रै.
गुरु अमरदास जी	१६ सितं.
गुरु रामदास जी	१६ "
गुरु अर्जुन देव जी	१६ "
गुरु हरगोविन्द जी	१९ मार्च
गुरु हरराय जी	२० अक्टू.
गुरु हरिकिशन जी	१६ अप्रै.
गुरु तेग बहादुर जी	२४ नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	२१ अक्टू.

मेले एवम् उत्सवादि

मेला मनसादेवी पंचकुला (हरि.) २७ मार्च से ३ अप्रै.	
मेला चेटी-चण्ड	२८ मार्च
मेला गणगौर (जयपुर)	२९ "
मेला माई सरखाना (पंजाब)	१ अप्रै.
मेला बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	३ "
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	३ "
मेला श्री रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	३ "
मेला माता कांसा देवी (कांसल रोपड़) प्रा.	७ "
मेला देवी हथिहरा (कुरुक्षेत्र)	८ "
मेला बाल सुन्दरी देवबन्ध (उ.प्र.)	८ "
मेला नानक पुरी शरीफ (पंजाब)	९ "
मेला हनुमान जयंती सालासर (राज.)	९ "
मेला हनुमान जयंती तारा नगर (राज.)	९ "
मेला वैशाखी उत्सव (पं.-हरि.-हि.प्र)	१४ "
मेला कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू)	१५ "
मेला पिंजौर (हरियाणा)	२५ "
मेला श्री बांके बिहारी जी चरण दर्शन (वृन्दा.)	२७ "
मेला पीपल जातर (कुल्लू)	२८ "
मेला गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	१ मई
मेला आनी आउटर सिगज (कुल्लू) प्रा.	६ "
मेला डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	१४ "
मेला बंजार ४ दिन का प्रा. (कुल्लू)	१४ "
मेला चनाणी माता जी	१७ "
मेला साढ़ी जातर नगर (हि.प्र.) प्रा.	१८ "
मेला भद्रकाली (कपूरथला)	२० "
मेला हल्दीघाटी (राज.)	२७ "
मेला क्षीरभवानी (कश्मीर)	३१ "
मेला गंगा दशहरा (हरिद्वार)	२ जून
मेला सपोर यात्रा धारलदा (ऊधमपुर)	२ "
मेला बरहे भटिण्डा (पंजाब)	३ "
मेला पाण्डवों की बाड़ी का (सोलन)	३ "
पीपलू (ऊना) हि.प्र.	३ "
मेला शुद्ध महादेश्व जी यात्रा (ऊधमपुर)	७ "
मेला भून्तर (कुल्लू) प्रा. ३ दिन का	१४ "
मेला श्री जगन्नाथ रथ यात्रा (पुरी)	२४ "
मेला उर्स प्रा. (अजमेर ९ दिन का)	२४ "
मेला सन्तोख सिंह जी नानकसर, चीमा प्रा.	२८ "

मेला शरीफ भवानी (कश्मीर) ३० जून
मेला ज्वालामुखी (कश्मीर) ६ जुला.
मेला नैमिषारण्य, काहनवाल (गुरदासपुरा) ७ "
मेला गुरु पूर्णिमा (कुराली) ७ "
मेला नागपंचमी (जयपुर) १२ "
मेला मढ़ाली शरीफ १८ "
मेला हरियाली अमा. (उदयपुर) २२ "
मेला तीज जयपुर में २ दिन का प्रा. २४ "
मेला नयना देवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.) २९ "
मेला बाबा निधान सिंह जी ढींडसा (लुधियाना) ४ अग.
मेला बाबा प्यारा सिंह जी चमकौर प्रा. ५ "
मेला अमरनाथ दर्शन (कश्मीर) ६ "
मेला गोगा मेड़ी हनुमानगढ़ (राज.) ६ अग. से ४ सितं तक
मेला श्री कृष्ण जन्माष्टमी १३ "
मेला द्रौण दनकौर प्रा. (उ.प्र.) १३ "
मेला नंदोत्सव नंदगांव, बरसाना १५ "
मेला गोगा नवमी अंबाला १५ "
मेला गोगा पीर (नकोदर) १५ "
मेला कैलाश यात्रा (कश्मीर) १९ "
मेला सुथरे शाह (दिल्ली) २० "
मेला राणी सती (झुंझुनू) राज. २० "
स्नान मेला (लोहार्गल) राज. २० "
मेला बाबा रामदेव (रुणीचा) प्रा. २२ "
मेला गुसाई आणा कुराली (पंजाब) २२ "
मेला गणेश जन्मोत्सव (मण्डी) हि.प्र. २३ "
मेला गणेश जन्मोत्सव (महा.) २३ "
मेला मोती डूंगरी गणेश जी (जयपुर) २३ "
मेला पट्टा प्रा. (कश्मीर) २४ "
मेला देवछटी ब्रजमण्डल व गौतम २५ "
मेला गरुड़ गोविन्द छटीकरा (उ.प्र.) २६ "
मेला श्री राधा जन्मोत्सव बरसाना (उ.प्र.) २७ "
मेला तेजा जी (ब्यावर) राज. २९ "
मेला बाबा रामदेव पूर्ण रुणिचा व तागनगर (राज.) ३० "
मेला चार भूजा नाथ मेवाड़ (राज.) ३१ "
मेला जलझूलनी एकादशी (उदयपुर) ३१ "
मेला वामन द्वादशी अंबाला १ सितं
मेला बाबा सोढ़ल व छपार (पं.) ३ "
मेला गोंइद वाल साहिब अमृतसर ४ "
मेला गुग्गापीर (लुधियाना) ४ "
मेला आशापति यात्रा (कश्मीर) १७ "
मेला फल्गु (कुरुक्षेत्र) १८ "
मेला आशापूर्णि (पठानकोट) प्रा. ९ दिन का १९ "

मेला आमेर छट (जयपुर) २४ सितं
मेला ज्वालामुखी, तारा देवी (हि.प्र.) २६ "
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) २६ "
मेला दशहरा (रावण-दाह) सर्वत्र २८ "
मेला बाबा बूढ़ा साहिब (अमृतसर) २८ "
मेला शाकंभरी देवी (उ.प्र.) ३ अक्टू.
मेला देवी हथीहरा (कुरुक्षेत्र) ३ "
मेला महारासोत्सव (ब्रजमण्डल) ४ "
मेला शरद प्रा. १५ दिन का (धौलपुर) ४ "
मेला देवी प्रा. (लखनऊ) उ.प्र. ७ "
मेला राधाकुण्ड स्नान गोवर्धन (उ.प्र.) ११ "
मेला दीपावली (अमृतसर) १७ "
मेला अन्नकूट पूजा गोवर्धन (उ.प्र.) १८ "
मेला यमुना स्नान मथुरा (उ.प्र.) १९ "
मेला सूर्यषष्ठी ३ दिन का प्रा. (बिहार) २२ "
मेला गोपाष्टमी गौपूजन (सर्वत्र) २६ "
मेला जुगल जोड़ी परिक्रमा (वृन्दा.) २७ "
मेला अचलेश्वर २ दिन का प्रा. (बटाला) २८ "
मेला बाबा रुद्रानन्दनारी ५ दिन का प्रा. (ऊना) २८ "
मेला रेणुका (नाहन) हि.प्र. ५ दिन का प्रा. २८ "
मेला पुष्कर (राज.) ५ दिन का प्रा. २९ "
मेला पुण्डरपुर यात्रा (महा.) २९ "
मेला वीरवैरागी नकोदर (पंजाब) ३१ "
मेला रामतीर्थ (अमृतसर) २ नवं.
मेला गढ़गंगा (उ.प्र.) २ "
मेला कपाल मोचन (हरि.) २ "
मेला बाल दिवस (दिल्ली) १४ "
मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू) १५ "
मेला श्री बांके बिहारी जी प्रादुर्भावोत्सव २१ "
मेला दुदेहर साहिब (अमृतसर) २२ "
मेला बाबा सत्य साई ज. (सिरड़ी) २३ "
मेला श्री घालदास ज., रामधाम खेडापा २८ "
मेला कपर्दीश्वर यात्रा दर्शन (कश्मीर) १ दिसं
मेला जोड़ फतेहगढ़ साहेब ३ दिन का प्रा. २५ "
मेला चमकौर साहिब ३ दिन का प्रा. २५ "
मेला संगीत (बाबा हरवल्लभ) प्रा. (जाल.) २७ "
मेला हृतापन नाशन स्नान (मद्रास) २८ "
मेला माणकपुर शरीफ (रोपड़) ३१ "

सन् २०१० ई.

मेला लोहड़ी उत्सव (प., हरि., हि.प्र.) १३ जन
मेला माघी मुकतसर (पंजाब) १४ "
मेला मकर संक्रांति (सर्वत्र) १४ "
मेला पोंगल पर्व (द.भा.) १४ जन.
मेला माघ बिहु (असम) १४ "
मेला मौनी अमावस्या (प्रयाग व हरिद्वार) १५ "
मेला वसन्त पंचमी (सर्वत्र) २० "
मेला वेणेश्वर (बांसवाड़ा) १० दिन का प्रा. २७ "
मेला डेजर्ट उत्सव ३ दिन का प्रा. (जैसलमेर) २८ "
मेला पंचखण्ड पीठ विराटनगर (राज.) २८ "
मेला वेणेश्वर (मुख्य) बांसवाड़ा ३० "
मेला माघी पूर्णिमा ३० "
मेला बाबा अन्तर सिंह जी मस्तुआणा (पं.) ९ फर.
मेला श्री महाशिवरात्री (सर्वत्र) १२ "
मेला श्री नीलकण्ठ महादेव (उत्तरांचल) १२ "
मेला होलियां, होलाष्टक प्रा. २२ "
मेला फूलडोलोत्सव शहपुरा (मेवाड़) २५ "
मेला श्यामजी खाटू (राज.) २५ "
मेला बीरमदास बधोछी (पटियाला) २५ "
मेला होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.) २८ "
मेला पंखा (झज्जर) (हरि.) २८ "
मेला गुरु राम सहाय (देहरादून) ४ मार्च
मेला शीतला माता कुराली (पंजाब) ७ "
मेला केशरिया मेवाड़ ८ "
मेला कैलादेवी १५ दिन का प्रा. (करौली) ११ "
मेला पृथूदक् पिहोवा (हरि.) १४ "
मेला बाबा अन्तर सिंह जी (नानकसर, चीमा) ३ दिन का १४ "

पंचक सं. २०६६ वि.

प्रारंभ		समाप्ति	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
- -	-	२७ मार्च	२९।१३
१९ अप्रै.	२३।४४	२४ अप्रै.	१४।००
१७ मई	७।५६	२१ मई	२३।५२
१३ जून	१५।०३	१८ जून	९।१८
१० जुला.	२१।१२	१५ जुला.	१७।०९
६ अग.	२७।०७	११ अग.	२३।१७
३ सितं.	९।३५	७ सितं.	२८।४७
३० "	१७।०३	५ अक्टू.	११।१४
२७ अक्टू.	२५।१७	१ नवं.	१९।३४
२४ नवं.	९।३२	२८ नवं.	२९।२०
२१ दिसं.	१७।०२	२७ दिसं.	१४।५६
१७ जन.	२३।३८	२२ जन.	२२।५१
१३ फर.	२९।४६	१८ फर.	२८।५७
१३ मार्च	१२।०८	- -	-

गण्ड मूलादि नक्षत्र सं. २०६६ वि.

प्रारंभ		समाप्ति	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
- -	-	२८ मार्च	२८।२१
४ अप्रै.	१८।१८	६ अप्रै.	१७।१४
१३ "	२०।२२	१५ "	२५।४९
२३ "	१४।४५	२५ "	१२।४४
१ मई	२४।३९	३ मई	२३।००
१० "	२८।११	१३ "	९।२८
२० "	२४।२३	२२ "	२२।३८
२९ "	६।५९	३० "	२८।३२
७ जून	१०।५४	९ जून	१६।१९
१७ "	९।१४	१९ "	८।३४
२५ "	१५।३२	२७ "	११।३८
४ जुला.	१६।५०	६ जुला.	२२।३०
१४ "	१६।२७	१६ "	१७।०७
२२ "	२५।५४	२४ "	२०।५३
३१ "	२२।४७	२ अग.	२८।३३
१० अग.	२२।१७	१२ "	२३।४४
१९ "	१२।३३	२१ "	७।२३
२७ "	२९।३८	३० "	११।०८
६ सितं.	२७।५७	८ सितं.	२९।१२
१५ "	२१।४७	१७ "	१७।२९
२४ "	१३।४१	२६ "	१८।३६
४ अक्टू.	१०।४७	६ अक्टू.	११।१५
१२ "	२८।३९	१४ "	२५।३९
२१ "	२२।३१	२३ "	२६।४८
३१ "	१९।२०	२ नवं.	१९।१३
९ नवं.	१०।०२	११ "	७।३९
१८ "	७।०४	२० "	११।०४
२७ "	२८।५२	२९ "	२९।०४
६ दिसं.	१६।१६	८ दिसं.	१३।०५
१५ "	१४।२२	१७ "	१८।३६
२५ "	१३।५०	२७ "	१५।१५
२ जन. २०१० ई.	२५।१४	४ जन. २०१० ई.	२०।२६
११ "	२०।२०	१३ "	२५।०५
२१ "	२१।०८	२३ "	२३।५३
३० "	१२।३०	३१ "	३०।३३
७ फर.	२६।०७	९ फर.	३०।५९
१७ "	२७।०३	१९ "	३०।२३
२६ "	२३।४८	२८ "	१७।५९
७ मार्च	९।११	९ मार्च	१३।२२
- -	-	- -	-

हरिद्वार में कुंभ महापर्व का सुयोग

संवत् २०६७ बुधवार ता. १४ अप्रैल सन् २०१० ई. प्रथम वैशाख कृष्ण अमावस्या वैशाखी के दिन गुरु कुम्भ राशि में होने से हरिद्वार में कुम्भ पर्व मनाया जाएगा। पर्व के दिन स्नान, दान, पुण्यार्जन करने वाले जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। नोट-जिस वर्ष मेष संक्रांति के दिन देव गुरु बृहस्पति कुम्भ राशि में होते है। उस वर्ष हरिद्वार में कुम्भ महापर्व का सुयोग बनता है।

संवत् २०६६ ता. १९ दिसम्बर सन् ०९ ई. से गुरु कुम्भ राशि में भ्रमण करने लगेंगे। ता. १ जनवरी सन् २०१० से शुरू होने वाले माघ मास में स्नान करने वाले कुम्भ महापर्व का लाभ प्राप्त करने लगेंगे।

ता. १४ अप्रैल सन् २०१० ई. संवत् २०६७ वि. में हरिद्वार में कुम्भ महापर्व के सामान्य स्नानादि पर्व तथा शाही स्नानादि पर्व दो-तीन मास पहले से ही शुरू हो जायेंगे। सद्गृहस्थी, सन्त, महात्मा, साधु-सन्यासी, योगी, प्रवासी जन पुण्य लाभ पाने के लिए तीर्थ स्थानों में डेरा डाले रहते हैं। अत: स्थानीय प्रशासन को भरपूर तैयारियां करनी पड़ती हैं।

सामान्य स्नानादि पर्व की प्रमुख तारीखें

१.	गुरुवार	ता. १४ जनवरी	सन् २०१० ई.	मकर संक्रांति पुण्यकाल
२.	शुक्रवार	ता. १५ जनवरी	सन् २०१० ई.	मौनी अमावस सूर्यग्रहण
३.	बुधवार	ता. २० जनवरी	सन् २०१० ई.	वसन्त पंचमी-श्री पंचमी
४.	शनिवार	ता. ३० जनवरी	सन् २०१० ई.	माघी पूर्णिमा (पुष्य नक्षत्र में)
५.	शनिवार	ता. १२ फरवरी	सन् २०१० ई.	संक्रांति पुण्यकाल
६.	रविवार	ता. २८ फरवरी	सन् २०१० ई.	होलिका दहन

शाही स्नान पर्व की प्रमुख तारीखें

१.	प्रथम शाही स्नान	महाशिवरात्री शुक्रवार	ता. १२ फरवरी	सन् २०१० ई.
२.	द्वितीय शाही स्नान	सोमवती अमावस सोमवार	ता. १५ मार्च	सन् २०१० ई.
३.	तृतीय शाही स्नान	वैशाखी (मेष संक्रांति) पर्व बुधवार	ता. १४ अप्रैल	सन् २०१० ई.

ग्रहण विवरण संवत् २०६६ विक्रमी

इस वर्ष भारत में केवल तीन ग्रहण दिखाई देंगे, जिनमें दो सूर्य ग्रहण और एक चन्द्र ग्रहण होगा। भारतीय भू-भाग पर दृश्य ग्रहण विवरण, सूतक (वेध) एवं राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव निम्न प्रकार है।

१. खग्रास सूर्यग्रहण-श्रावण कृष्ण अमावस्या बुधवार ता. २२ जुलाई सन् २००९ ई.।

२. खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण-पौष शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार ता. ३१ दिसम्बर सन् ०९ ई.।

३. खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण-माघ कृष्ण अमावस्या शुक्रवार ता. १५ जनवरी सन् २०१० ई.।

१. खग्रास सूर्यग्रहण

श्रावण कृष्णा ३० बुधवार ता. २२ जुलाई २००९ में भा.स्ट.टा. के अनुसार प्रात: ५।३३ से ७।२५ बजे के मध्य होने वाले खग्रास, खण्डग्रास और ग्रस्तोदित भारत के विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देगा। मानचित्र के में खग्रास ग्रहण दिखाई देने हेतु अ ब स द रेखा में तथा ग्रहण आरंभ के बाद जहां सूर्योदय होगा उनका आरंभ काल दिखाया गया है। खण्डग्रास दिखाई देने की जानकारी हेतु है। समाप्ति काल समय भी लगाया गया है। इसी प्रकार प्रमुख शहरों के खग्रास ग्रहण काल की तालिका भी बनाई गयी है। भारत के अधिकांश भाग में ग्रस्तोदित व खण्डग्रास दिखाई देगा। कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व पंजाब, काश्मीर के विभाग में खण्डग्रास ही देखा जायेगा। अरुणाचल, अपर आसाम, बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात व आंशिक राजस्थान का दक्षिणी भाग में खग्रास दिखाई देगा। जहां काली छाया के साथ सायं काल जैसा सन्नाटा व सर्द हवाओं का प्रभाव १ से ४ मिनट तक (स्थान भेदानुसार) बनेगा।

विश्व के भू-भाग में भारत के अतिरिक्त प्रशान्त महासागर, फिलीपिंस, जापान, उत्तरी इण्डोनेशिया, सिंगापुर, हांगकांग, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, कम्बोडिया, चीन, फिजी, कजाकिस्तान, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, किर्गिस्तान, लाओस, मलेशिया, माइक्रोनेशिया, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, रूस, श्रीलंका, ताईवान, तजाकिस्तान, थाईलैण्ड, उज्बेकिस्तान, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, वीयतनाम आदि में देखा जा सकेगा। खग्रास ग्रहण का भूलोक में भारतीय समयानुसार प्रात: ५।२८ बजे प्रारंभ व १०।४२ बजे समाप्ति समय रहेगा।

दिल्ली समयानुसार ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण

ग्रहण स्पर्श-५।३३ बजे से किन्तु सूर्य उदय ५।३८ बजे। **ग्रहण मध्य**-६।२८ बजे। **ग्रहण मोक्ष**-७।२५ बजे। **कुल ग्रहण काल (पर्व काल)**-१ घंटा ४७ मिनट। **ग्रहण वेध (सूतक)**-ता. २१ जुलाई २००९ ई. मंगलवार को सायं ५।३८ बजे से लगेगा। जिसमें रोगी, वृद्धजनों व बालकों के अतिरिक्त आध्यात्म रुचिजनों को भोजनादि न करना ही शास्त्रोक्ति है।
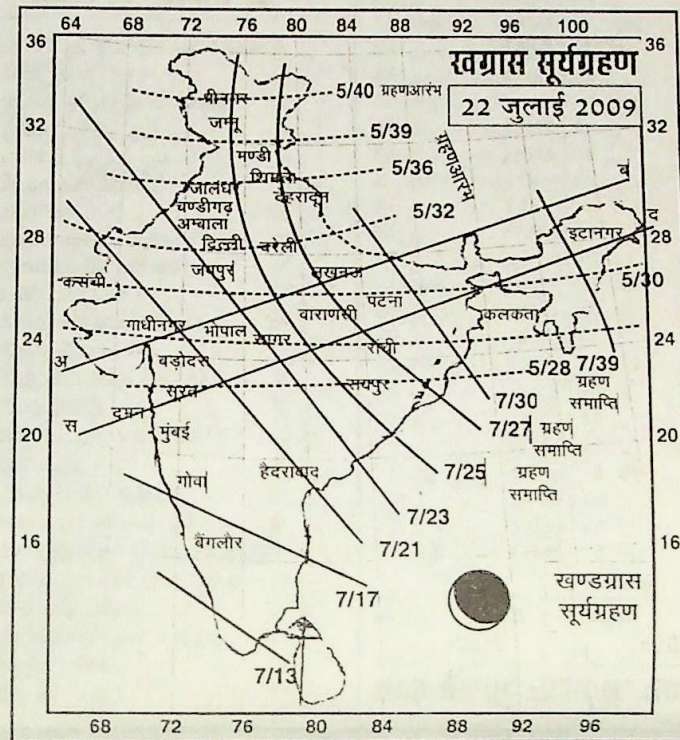
खग्रास (सम्पूर्ण ग्रहण) दिखाई देने वाले स्थानों का विवरण (घं. मि. मे)

नगर नाम	सूर्य उदय	ग्रहण आरंभ	खग्रास आरंभ	मध्य	खग्रास पूर्ति	ग्रहण समाप्ति
ईटानगर	४।३४	५।३१	६।३०	६।३२	६।३३	७।३९
डिब्रूगढ़	४।२८	५।३२	६।३१	६।३३	६।३४	७।४१
शिवसागर	४।२९	५।३१	६।३१	६।३२	६।३[illegible]	७।४१
भूटान	४।४९	५।३१	६।२८	६।२९	६।३१	७।३५
दार्जिलिंग	४।५६	५।३१	६।२७	६।२९	६।३०	७।३३
कुच बिहार	५।५२	५।३०	६।२७	६।२९	६।३१	७।३४
पटना	५।११	५।३०	६।२५	६।२७	६।२९	७।३०
पूर्णिया	५।०३	५।३०	६।२६	६।२७	६।२९	७।३१
उज्जैन	५।५३	५।२९	६।२३	६।२४	६।२५	७।२२
खण्डवा	५।५४	५।२९	६।२२	६।२३	६।२३	७।२१
भोपाल	५।४७	५।२८	६।२२	६।२४	६।२५	७।२३
सागर	५।४२	५।२८	६।२२	६।२४	६।२५	७।२४
वाराणसी	५।२०	५।३०	६।२४	६।२६	६।२७	७।२८
भड़ूच	६।०७	५।२८	६।२१	६।२३	६।२४	७।२०
बडोदरा	६।०५	५।२८	६।२२	६।२३	६।२३	७।२०
सूरत	६।०८	५।२८	६।२१	६।२३	६।२४	७।२०
दमन	६।११	५।२९	६।२२	६।२३	६।२४	७।१९

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

(यह ग्रहण पुष्य नक्षत्र व कर्क के चन्द्रमा में दिखाई देगा।)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	उन्नति	अर्थ लाभ	व्यय वृद्धि	देह पीड़ा	हानि	धन आगम	अरिष्ट	चिन्ता	सुख वृद्धि	स्त्री कष्ट	रोग उत्पात	मान हानि

विश्व पर प्रभाव-कर्कस्थ चन्द्र व बुधवार संयोग से तटवर्ती क्षेत्रों पर तूफान, भूस्खलन, बाढ़ व जलप्लव का विशेष प्रभाव होकर धन-जन हानि संभव है। चीन, जापान, रूस, अफगानिस्तान, पूर्वी भारत, बर्मा, बंगलादेश तथा मुस्लिम राष्ट्रों ईरान, इराक, पाकिस्तानादि राष्ट्रों में राजनैतिक अस्थिरता और उग्रवादी ताकतों के दुष्प्रभाव से जन समूह चिन्तित रहेगा। साधु, ब्राह्मण व फकीरों को अनेक कठिनाईयों का फलप्रद है। रस पदार्थ व धान्य भावों में तेजी होगी।

यथा-रवेन्दु ग्रहणं यदा, ग्रस्तौदितं वा दृश्यते। राजयुद्धं प्रजानाशं, सर्द धान्यं विनश्यति॥

२. खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण

पौष शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार ता. ३१ दिसं. २००९ व १ जन. २०१० (मध्यरात्री आर्द्रा नक्षत्र मिथुने चन्द्र)। यह ग्रहण भारतीय भू-भाग पर प्राय: सभी स्थानों पर खण्ड ग्रास दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त यूरोप, एशिया महाद्वीप व आस्ट्रेलिया, अफ्रिका, इण्डोनेशिया आदि स्थानों पर खण्ड ग्रास दिखाई देगा।

ग्रहण स्पर्श-ता. ३१ दिसं. २००९ की रात्रि व ता. १ जनवरी २०१० को २४।२२ बजे होगा। **ग्रहण मध्य**-२४।५४ बजे। **ग्रहण मोक्ष**-२५।२४ बजे। **कुल ग्रहण काल (पर्व काल)**-१ घंटा २ मिनट।

ग्रहण वेध (सूतक)-ता. ३१ दिसम्बर २००९ को दोपहर ३।२२ से लगेगा। वेध काल में भोजन, तैल मर्दन, मैथुन, प्रतिमादि स्पर्श वर्जित माना गया है।

विश्व पर प्रभाव-कलाकारों, प्रवक्ताओं को कष्टप्रद है। पाश्चात्य राष्ट्रों में प्राकृतिक प्रकोप व आतंकी गुटों से अनेक हानि और भय व्याप्त होगा। काजू, बादाम, किसमिस व अखरोटादि मेवा भावों में उछालें की तेजी का प्रभाव रहेगा। राजनैतिक दलों में आपसी फूट से जनता में क्षोभ रहेगा।

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	धन अर्जन	हानि	देह अरिष्ट	व्यय वृद्धि	भाग्य उन्नति	रोग उत्पात	चिन्ता	रिपु भय	स्त्री पीड़ा	देह पीड़ा	अप व्यय	कार्य लाभ

३. खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण
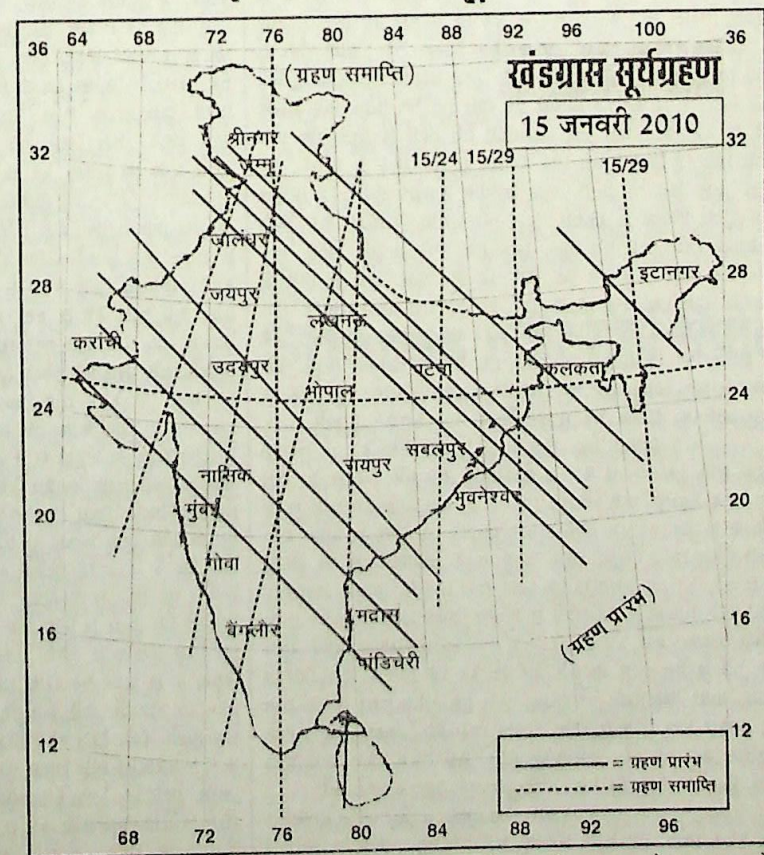
माघ कृष्ण अमावस्या ता. १५ जनवरी २०१० शुक्रवार को दिन के ११।५३ से १५।१२ बजे के मध्य उ.षा. नक्षत्र व मकर के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। भारत के अधिकांश भाग में खण्डग्रास व दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर यही सूर्यग्रहण कंकणाकृति के रूप में दिखाई देगा। दक्षिण से उत्तरी भाग में क्रमश: ग्रासमान भिन्न-भिन्न स्थानों पर कम दिखाई देगा।

शेष पृष्ठ 233 पर

व्यापारिक भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर सन् २००९-१० ई.

परिलेखकर्ता-मनीष कुमार जैन पोरसा वाले C/o लाइट मशीनरी के पास चम्बल कॉलौनी, थाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४०११ फोन पी.पी. (०७५१) ६५३२०६२

नोट-व्यापार में किसी भी प्रकार की कोई गारन्टी नहीं होगी।

जनवरी २००९-ता. २९ दिसम्बर २००८ से ९ जनवरी २००९ के बीच बाजरा २५, मक्का ३५, सौंफ ५०५, सोयाबीन ५०५, कालीमिर्च ५७७ की तेज, अरण्डी तेल ५०७ की भारी मन्दी, चावल में तेजी बन सकती है। ११ से १९ जनवरी तक बादाम ४०७ की भारी तेजी, सोयाबीन ५०१ तेजी, पिस्ता, काजू में जोरदार तेजी, मगज तरबूज ५०१, काली मिर्च ७९९ की तेजी। इसके अलावा छोटी इलायची २५, चना ६५ तेज, ज्वार-बाजरा, चावल में तेजी आ सकती है। २० जनवरी से फरवरी के बीच चीनी में १६५ की भारी तेजी, ज्वार, बाजरा, मक्का में तेजी, सौंठ में ५७७ की तेजी तथा काली मिर्च, मूंग ७५ तेज तो किसमिस, इमली, सोयाबीन में अच्छी मन्दी चलने की संभावना है। २५ जनवरी से १५ फरवरी तक लाल मिर्च मन्दी मगर सौंफ में अच्छी तेजी चल सकती है। **तेल तिलहन** २५ दिसम्बर २००८ से १९ जनवरी २००९ तक रिफाइंड तेल, सरसों, अरण्ड, अन्न में मन्दी अच्छी तो २० से २५ जनवरी तक अस्थायी तेजी तो २७ जनवरी से ११ फरवरी तक सिंगदाना तेल में ७७७ की मन्दी, अलसी, अरण्ड में अच्छी मन्दी चल सकती है। ११ से १९ फरवरी तक तेलों में एकदम तेजी का उछाला बनने की संभावना है। २१ फरवरी से १ मार्च के बीच, सरसों, अरण्ड, अलसी में मन्दी का झटका लग सकता है।

फरवरी २००९-ता. २ से १५ फरवरी के बीच सौंठ ७०७ तेजी, गुड़ में तेजी, गेहूं तेजी, जौ, जई जोरदार मन्दी, चावल में ३६ की मंदी, चीनी ११५ तेजी, कालीमिर्च २ से १५ फरवरी तक ३९७ की तेजी तो १५ फरवरी से ३ मार्च तक काली मिर्च ७०७ की जोरदार मंदी का झटका लग सकता है। ५ से २९ मार्च के बीच काली मिर्च ५०५ की तेजी का उछाला बन सकता है। ५ से २७ फरवरी के बीच मूंग २९७, गेहूं २१, उड़द ९९९, सुपारी ३१५ तथा सौंठ ११७५ की तेजी, मगर अरण्डी तेल १५५ मन्दी, मक्का ३५ मन्दी, इमली ५०५ की जोरदार मंदी, हल्दी १०५ की, खोपरा गोला ५७० की मंदी, गुड़ में ७५ की मंदी। २५ फरवरी से ५ मार्च के बीच बरेली, बनारस, एटा यू.पी. में ओलापात, पानी वर्षा भी हो सकती है। २१ फरवरी से १ मार्च तक गुड़, चीनी मंदी, इलमी मंदी, अरहर ७७ मंदी, मटर ८९ मंदी, मसूर १७७ की मंदी आ सकती है।

मार्च २००९-ता. २० फरवरी से ७ मार्च तक हल्दी, जीरा, लाल मिर्च मंदी, मसूर १७५ मंदी गेहूं ३६ तथा सौंठ ७७७, सरसों, सोयाबीन में १७५ की मंदी आ सकती है। ९ से २१ मार्च के बीच उड़द १७५ तेज मूंग में २७७ तेज, किसमिस ५०७ तेज, बासमती चावल १७५ तेज। १५ से २७ मार्च के बीच मूंग, ज्वार, उड़द, गेहूं, बाजरा में तेजी चल सकती है। १८ से ३१ मार्च तक अरहर, मसूर १७५ तेजी तथा काली मिर्च, हल्दी, सोयाबीन ७०९ की तेजी, सौंफ, जीरा ७०७ तेज, सौंठ १५७९ की भारी तेजी। **तेल तिलहन**—१ से ११ मार्च रिफाइण्ड तेल में २५ की तेजी (१० KG पर), फली तेल बम्बई में २१ को भारी तेजी तो २३ मार्च तक जोरदार मंदी आ सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। २५ मार्च से ७ अप्रैल के बीच सरसों १७५ तेज, अरहर, चना, उड़द में अच्छी तेजी का उछाला आ सकता है। तो ११ अप्रैल तक तेलों में मन्दी का झटका, ११ से १८ अप्रैल तक सरसों, उड़द, रिफाइण्ड में तेजी आ सकती है। १८ से ३० अप्रैल तक मंदी चल सकती है। १ से ९ मई तक तेलों में तेज, उड़द, ज्वार, बाजरा, मूंग में अच्छी तेजी चल सकती है। ११ से २३ मई के बीच सरसों २०५ की मन्दी, रिफाइण्ड तेल २५ से ४५ की भारी मंदी, २३ से ३१ मई के बीच तेलों में एक अस्थाई तेजी बन सकती है। २१ मार्च से ७ अप्रैल के बीच जीरा में २२०१ की भारी तेजी तो २१ अप्रैल की बीच जीरा २३०७ की जोरदार मंदी तो २१ से ३० अप्रैल तक जीरा ३९९ की तेजी बन सकती है। १५ से २१ मार्च तक हल्दी २७७ तेज तथा मूंग, गुड़ में तेजी, सोयाबीन ६९९ की तेजी, किसमिस ५०० तेज, मगर पाम आयल, सोयाबीन तेल में मंदी चल सकती है। २२ से ३१ मार्च तक जीरा २११ तेज, हल्दी ५५ तेज, सोयाबीन तेल ५५ तेज, सोयाबीन ३०२ तेज, चीनी ११५ तेजी। मगर सौंठ ९९९ की भड़कती तेजी, सौंफ में ५५५ की तेज, मगर मसूर ३०५ की मंदी, गेहूं, जौ में मंदी, धनिया ५०५ मंदी, तिल १७५ की तेजी आ सकती है।

अप्रैल २००९--ता. २९ मार्च से २१ अप्रैल के बीच कभी भी उड़द ५७५ तेज, सौंठ, चीनी ६५ तेज, मसूर १७७ तेज, किसमिस ५०० तेज, मगर जावित्री, गेहूं, जीरा, सरसों मंदी, हल्दी में मंदी चल सकती है। २५ अप्रैल से ७ मई के बीच, सरसों ४५ तेज, सोना १७७ तेज, चांदी ३४५ की मंदी, छोटी इलायची में ४५ तेज, ज्वार १७५ तेज, बाजरा, मक्का मे तेजी, बादाम १५ तेज, तिल २५५ तेज, बिनौला ६५ तेजी। चना ४५ तेजी आ सकती है। काली मिर्च ८०७ की जोरदार मंदी चल सकती है।

मई २००९-ता. २७ अप्रैल से २९ मई के बीच लाल मिर्च मे ७०० म ११०१ की मंदी आ सकती है। २९ अप्रैल से या फिर ७ से २१ मई के बीच उड़द ७७७ तेज, मूंग में ४७५ तेज, सरसों ७९ तेज जौ १०५ तेज, चीनी ६५ तेज, ज्वार सफेद १५५ तेज सोयाबीन ३०६ तेज, गेहूं १५ तेज, अरहर ६५ तेज, चना ४५ तेज बाजरा-मक्का में तेजी आ सकती है। मगर हल्दी मंदी, काली मिर्च में तेजी। चावल, जीरा, लौंग में मंदी चल सकती है। २१ मई से १ जून के बीच चना ४५ मंदी, इमली २०० मंदी, उड़द २७७ की मंदी, सूजी, मैदा ३५ मंदी, चीनी ७५ मंदी, काली मिर्च २९९ की मंदी, मगर जावित्री १५ तेजी, मूंग ७५ तेज, हल्दी २७७ तेज, इलायची ५ तेजी, लौंग ७५ तेज, बादाम ५०५ तेज, ज्वार २९९ की भड़कती तेजी, गेहूं में तेजी चल सकती है।

जून २००९-ता. ३० मई से ९ जून के बीच काबली चना २५५ तेज, उड़द १८५ तेज, सौंठ ९९९ तेज, मूंग ४५ तेज, राजमा, बाजरा तेज, मक्का, गेहूं तेज, अरहर, मटर में तेजी चल सकती है। मगर काली मिर्च ५७५ की मंदी, चीनी ४५ मंदी तथा सोना, चांदी में मंदी चल सकती है। ११ से २५ जून के बीच गेहूं में ६५ की भारी तेजी, बाजरा-अरहर ७५ तेज, सरसों ८९ तेज, बादाम तेजी, चीनी ६५ तेज, मगर उड़द, मक्का में मंदी। इसके अलावा इलायची, पिपरमेन्ट, इमली, मूंग में मंदी आने की संभावना है। २५ जून से ५ जुलाई के बीच बादाम २०० तेजी, मगर जीरा, हल्दी गेहूं, चना, मोंठ आदि में मंदी का झटका लग सकता है। ३० मई से ७ जून के बीच बम्बई वाले तेल में २५ की जोरदार मंदी, अरण्ड २०५ की मंदी, ६ से १५ जून तक रिफाइण्ड में ४१ से ४५ की भारी तेजी, तो १५ से २१ जून तक तेलों में मंदी चल सकती है।

जुलाई २००९-ता. १ जुलाई से १५ जुलाई के बीच गेहूं, जौ ४५, मौंठ, अरहर, उड़द ७५, मसूर ७५ तेज, लाल मिर्च में तेजी, गुड़, चीनी, खण्डसारी ५५ की तेजी आ सकती है। १५ जुलाई से ३१ जुलाई के बीच बादाम ११७५ की मंदी, छोटी इलायची ६५ की मंदी, खोपरा गोला में ५०५ की मंदी, सरसों २७५ की मंदी, राजमा, जावित्री में मंदी, मगर गेहूं १५ तेज, जौ ६५ तेज, मौंठ तेज, गुड़ १०५ तेजी, मूंग में १५५ की तेजी, लौंग ५५ तेज, बड़ी इलायची ९७५ तेज, बाजरा; चावल ७५ तेज, मक्का में अच्छी तेजी चल सकती है। इसके अलावा काबली चना, चीनी ७५ तेज, चना, मटर ३६, तेवड़ा में तेजी, जौ में अच्छी तेजी बन सकती है। यहाँ पानी वर्षा की कमी से तेजी का वातावरण बन सकता है। ११ से १६ जुलाई तक चीनी ५५ की मंदी आ सकती है। २१ से ३० जून तक तेल तिलहन में एक दम तेजी, तो ५ जुलाई के बीच कभी भी तेलों मे मंदी आकर १५ जुलाई तक सरसों, चना, अरहर, रिफाइंड में जोरदार तेजी आ सकती है। १६ से ३० जुलाई तक सरसों, अरण्ड में अच्छी मंदी आ सकती है।

अगस्त २००९-ता. २७ जुलाई से ११ अगस्त के बीच कभी भी बड़ी इलायची २०७५ तेज, गेहूं २५ तेज, चावल तेज, इमली १५५ तेज, कालोंजी ७०७ तेज, अजवायन ९०० तेज, लौंग ७५ तेज, बाजरा, मक्का में तेजी, उड़द १७५ तेज, मूंग ७७ तेज। चना ४५ तेज, चावल ५५ तेज, जौ ४५ तेजी आ सकती है। चीनी ५५ तेज, बिनौला, सरसों में तेजी चल सकती है। ७ से १६ अगस्त

के बीच गुजरात-राजस्थान ७ अगस्त से २१ अगस्त तक राजमा, अरहर, मूंग, उड़द मंदी, मगर लौंग, चीनी, गुड़ में तेजी आ सकती है। ३ से १६ अगस्त के बीच तेलों में जोरदार मंदी आ सकती है। तो २७ अगस्त तक सरसों, अरण्ड, अलसी, सोयाबीन तेल में अच्छी तेजी आएगी अथवा ये तेजी १५ सितम्बर तक चल सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। चीनी ५५, तेल, बिनौला, सौंठ ७०७ की भारी तेजी बन सकती है। मगर उड़द ४५, मूंग ५५ तेज, चना, मसूर ७५, मटर ४५ तेज, चीनी ७७ तेज, मगर पोस्तादाना मंदी, पिस्ता, जीरा आदि में मंदी आ सकती है।

सितम्बर २००९–ता. २९ अगस्त से ७ सितम्बर के बीच राजमा ५५ तेज, बाजरा ४५ तेज, मक्का ५५ तेज, बादाम ५०० तेज, काली मिर्च ७०७ तेज, मैथी १५० तेज, बड़ी इलायची ९०९ तेज, खोपरा गोला तेज, जावित्री १० तेज, चना ६५ तेज, मगर उड़द, मूंग, मसूर, मगज तरबूज में जोरदार मंदी रह सकती है। ७ से १६ सितम्बर के बीच केरल, आन्ध्र प्रदेश, मद्रास आदि क्षेत्रों में भारी वर्षा होने पर Coconut, जावित्री तेज, अरण्ड, अलसी, चना, चांदी में तेजी आ सकती है। मगर उड़द, मसूर, मूंग मंदी, अरहर आदि में अच्छी मंदी चल सकती है। १७ से २५ सितम्बर तक, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली साइड पानी वर्षा होने पर, मूंग, उड़द, गेहूं में मंदी, मक्का, चावल २५ मंदी तथा चीनी में ४५ की मंदी, मगज तरबूज में मंदी तथा सोना-चांदी में मंदी का झटका लग सकता है। ज्वार ४५, बाजरा ४५ की तेजी, मगर चना ४५ की तेजी, राजमा ३७५ की जोरदार तेजी, खाद्य तेल में ११५ की जोरदार तेजी बन सकती है। ९ अक्टूबर से १८ नवम्बर तक काली मिर्च ९०९ से १८७५ की भारी तेजी बन सकती है। १३ से २३ सितम्बर २००९ के बीच जीरा १५७५ तेज, अरहर ४५ तेज, छुआरे ५०५ तेज तो उड़द, मसूर १०, मूंग ७५ मंदी आ सकती है। ५ अक्टूबर से १५ दिसम्बर के बीच हल्दी ५५५ तेज तो बाद में ११-१५ दिन मंदी आएगी। २५ से ३० सितम्बर तक बादाम ५०० तेज, उड़द ४५ तेज, मूंग ७५ तेज, चना, मसूर, अरहर, मटर, तेवड़ा में भारी तेजी बन सकती है।

अक्टूबर २००९–ता. १ से १९ अक्टूबर तक उड़द ५७५ की मंदी, मूंग ७०७ की मंदी, अरहर ४५ मंदी। ३ से २१ अक्टूबर के बीच काजू, पिस्ता तेजी, खोपरा गोला, गेहूं तेजी, काली मिर्च ९९९ की भारी तेजी बन सकती है। २३ से ३१ अक्टूबर सरसों १७५ तेज, ग्वार १४५ तेज, इसके अलावा मूंग, उड़द, चना, अरहर, मोंठ में अच्छी तेजी चल सकती है। २१ अक्टूबर से ३ नवम्बर के बीच मूंगफली तेल १५५ तेज, सोयाबीन ७१९ तेज, इसके साथ हल्दी, मूंग, सरसों तेज, अरहर में अच्छी तेजी बन सकती है। २५ सितम्बर से २७ अक्टूबर के बीच बम्बई फली तेल, अरण्ड, सोयाबीन, सूरजमुखी तेल, गुड़ में जोरदार मंदी आ सकती है। २५ अक्टूबर से ११ नवंबर तक सरसों, बिनौला में अच्छी तेजी बनने की संभावना है।

नवम्बर २००९–ता. २७ अक्टूबर से ९ नवम्बर के बीच उड़द ७५ तेज, अरहर २७ तेज, हल्दी २०५ तेज, इसके अलावा राजमा १५० तेज, पोस्तादाना ७०७ तेज, चना ४५ तेज, गेहूं १५ तेज तो इसके बाद दालवाने में मंदी आयेगी। १० से १६ नवम्बर के बीच मूंग ५५ की मंदी तथा गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, दिल्ली अच्छी वर्षा हो जाने से राजमा १५० तेज, गेहूं ४५ तेज, जायफल, जावित्री २५ की जोरदार तेजी तो चीनी, बादाम, मूंग में कुछ दिन की मंदी चल सकती है। १८ से ३० नवम्बर तक मक्का ४५ तेज, चना ४५ तेज, गुड़ १५१ तेज, सरसों तेल तेज, मगर उड़द, मूंग, जायफल में मंदी चलेगी।

दिसम्बर २००९–ता. २२ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक पोस्तादाना ८०७ तेज, मौंठ ५० तेज, रगूनी उड़द १७७ तेज, राजमा २५० तेज, लाल मिर्च ५०० की अस्थाई तेजी, अरहर ११५ तेज, चना ४५ तेजी आ सकती है। २२ से ३१ दिसम्बर तक मूंग २७५ तेज, अरहर ५५ तेज, उड़द २०५ तेज, अरण्डी तेल १५५ तेजी बन सकती है। १ से २७ दिसम्बर तक गुड़ १७५ तेज, गुवार २५५ की तेजी बन सकती है। मगर ३१ दिसम्बर तक चावल ३० की मंदी, गुड़ ५० मंदी, छोटी इलायची २५ की मंदी चल सकती है।

जनवरी २०१०–ता. २९ दिसम्बर २००९ से ५ जनवरी २०१० के मध्य गेहूं ५५ तेज, मैदा, सूजी १५ तेज, जीरा १७७, चना ४० तेजी, बड़ी इलायची ५०५ तेज, खोपरा गोला २०५ तेज, बाजरा, मक्का, ज्वार में तेजी, मगर मटर, मसूर १७५ मंदी, उड़द १७५ मंदी, चीनी ४५ मंदी आ सकती है। ५ से १२ जनवरी के बीच गेहूं में ६५ की मंदी, बाजरा ४५ की मंदी, लौंग, बादाम मंदी, उड़द २७५ की मंदी, अरहर ३०६ की जोरदार मंदी, राजमा ५५ मंदी, इलायची मंदी, मगर जीरा, कालीमिर्च में तेजी। सोयाबीन ६०५ तेज, सौंफ ५७५ तेज व खोपरा गोला में मंदी का झटका लग सकता है। १२ से २१ जनवरी के बीच कभी भी सौंफ ७०७ की तेजी, चांदी ४५० तेज, धनिया ५०५ तेज (१०० किलोग्राम पर तेजी)। इलायची १६५ तेज, इमली २५० की तेजी आ सकती है। १२ से २३ जनवरी तक चावल, अरहर, गेहूं, मक्का, मगज तरबूज में मंदी चल सकती है। मूंगफली तेल में तेजी आ सकती है। ७ जनवरी से ७ मार्च के मध्य चीनी में १५५ से ५५१ की तूफानी तेजी आकर बाद ११ अप्रैल तक चीनी में घटबढ़ से मंदी चल सकती है। सावधानी से व्यापार करें।

फरवरी २०१०–ता. २ फरवरी से ११ मार्च के बीच बादाम मंदी, काली मिर्च में १५०५ की जोरदार मंदी तो ९ अप्रैल काली मिर्च में ९९९ की जोरदार तेजी चल सकती है। ११ से २३ फरवरी के मध्य कभी भी अरहर १६५ तेज, काली मिर्च ५०० तेज, चना १२५ तेज, राजमा १५० तेज। इसके अलावा पोस्तादाना, बाजरा, काजू, बादाम में तेजी, अरण्डी तेल में अच्छी तेजी मगर चना, उड़द, मसूर, मूंग में मंदी आ सकती है। २३ फरवरी से १ मार्च में मध्य गेहूं १२१ तेज, मगज तरबूज ५०० तेज, बादाम २०० तेज, किसमिस ५५५ की भारी तेजी। इसके अलावा राजमा, लोबिया, बिनौला, अलसी में तेजी चल सकती है। चना, मूंग, उड़द में तेजी संभव है। बाजार रुख देख कर ही व्यापार करें।

मार्च २०१०–ता. २७ फरवरी से ११ मार्च तक गेहूं ६५ की भारी मंदी, कावली चना ३७७ मंदी, हल्दी मंदी, मसूर १६५ मंदी, बादाम मंदी, चना ७७ मंदी, मगर अरण्ड तेल, सरसों तेल में तेजी, मैदा, सूजी आदि मंदी, मगर उड़द ५७५ की तेजी, सौंफ ७७७ की तेजी, अरहर ५५ तेज, मौंठ २७५ तेज, मूंग ३७५ तेजी चल सकती है। ११ मार्च से २३ मार्च के बीच बादाम, चावल ९९ की मंदी, मूंग १५५ मंदी, गेहूं १४५ मंदी, कावली चना ५७५ की मंदी आ सकती है। २४ मार्च से १ अप्रैल के मध्य कभी भी चना ७५ तेज, मटर ६५ तेज, मसूर २७५ तेज, राजमा २५५ तेज, अरहर १७५ तेज, उड़द ५७५ तेज, मूंग २७२ तेज, मगर खोपरा गोला, गेहूं मंदी, कावली चना में भयंकर मंदी का धड़ाका हो सकता है। २९ मार्च से ७ अप्रैल उड़द १७५ एकदम तेज, मूंग २५९ तेज, मौंठ २७७ तेज, अरहर ६५ तेज, मटर ३६ तेज, बासमती चावल ७५, जावित्री २५ तेज, मगर सौंठ, गेहूं, जौ में मंदी चल सकती है। सावधानी से व्यापार करें।

Shares तेजी-मंदी रिपोर्ट

(26-9-1Y) 15 दिसंबर 2008 से 1 जनवरी 2009 के बीच शेयर्स मार्केट में भारी मंदी, ए.सी.सी शेयर में 205 की मंदी, रिलायंस 155 की मंदी, तो 5 जनवरी 2009 तक ए.सी.सी 55 तेज, रिलायंस 65 की तेजी, तो 11 जनवरी 2009 तक ए.सी.सी. 75 मंदी, रिलायंस इन्डस्ट्रीज में 87 की मंदी, 12 से 18 जनवरी 2009 तक या 27 जनवरी 2009 तक शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी, BSE Index में 275 Point की तेजी आवे तो 9 फरवरी 2009 तक अच्छी मंदी आवेगी। 10 फरवरी 09 से 5 मार्च 09 के बीच BSE Shares Index में 777 Point की बढ़ोतरी, ACC Shares 65 तेज। Reliance Industries Shares में 89 की तेजी आ सकती है। 7 मार्च 09 से 3 अप्रैल 09 के बीच Shares Market में मंदी, ACC 177 की मंदी। Index में 1575 Point की गिरावट आ सकती है। 5 से 21 अप्रैल 09 तक या 19 मई 09 तक घटबढ़ से ACC 175 तेज, Reliance 295 तेजी आ सकती है। यहां बाजार तीव्र घटाबढ़ी में चल सकता है। सन् 2009 शुरू के 5-7 महीने घटाबढ़ी से अच्छी मंदी में नीचे से नीचे भाव बनने की संभावना है। अत: बड़ी तेजी 15-20 दिन की तेजी में बेचकर मंदी का व्यापार करें।

17 मई 09 से 11 जून 09 तक शेयर्स मंदी का धमाका या ये मंदी 18-6-2009 तक चल सकती है। 19 जून 2009 से 18 जुलाई 2009 तक तेजी तो 19 जुलाई 2009 से 16 अगस्त 2009 तक कभी भी शेयर्स

शेष पृष्ठ 236 पर

विक्रम सम्वत् २०६६, शाके १९३१ मध्ये विवाह मुहूर्त्ताः

यहां दिये गए विवाह मुहूर्त्त ***"लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पंचकम्। एकार्गलौपग्रहौ च क्रांति साम्यं तथा परम्।। दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषाः महाबलाः। एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधैः।।"*** श्लोक सूत्रगत प्रमुख दश दोष रहित है तथा जिन दोषों के परिहार वाक्य मिले उन्हें भी दिया गया है। इस दश दोष शुद्धि को रेखाओं में प्रदर्शित किया गया है। रेखाओं में जहाँ (।) ऐसी खड़ी रेखा है वहां उस दोष की पूर्ण शुद्धि समझें तथा जहाँ (ऽ) ऐसा चिन्ह है उसे परिहार सहित दोष जानें। **वैवाहिक नक्षत्र "रोहिण्युत्तर रेवत्यो स्वाति मूलं मृगो मघा। अनुराधाश्च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदः।।"** किन्तु कात्यायनोक्त **"त्रिषुः त्रिषूत्तरादिषु"** (गृह्य सूत्र) के अनुसार चार विशेष विवाह नक्षत्र भी हैं। इस विषय में धर्म सिंधुकार ने भी लिखा है। **"चित्रा श्रवण धनिष्ठा ऽश्विनि यजुर्वेदीनाम्"** अतः यजुर्वेदियों के विवाह इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों में भी हो सकते हैं। हम पाठकों की सुविधा हेतु इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों के मूहूर्त्त भी अलग से दे रहे हैं।

नोटः यहां क्रांतिसाम्य (महापात) दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है। लग्नों का समय भा.स्टै.टा. दिल्ली हेतु है। अतः अन्य नगरों के लिये समय परिवर्तित करके संशोधित कर लें। गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लिया गया है। लग्नों के आगे दिया गया समय लग्नारंभ काल है।

समय शुद्धि

- **शुक्रास्त (तारा):-** वर्षारंभ से बाल्यत्व सहित चैत्र शुक्ल १२ सोमवार दिनांक ६ अप्रैल २००९ ईस्वी तक। **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **मीनार्ऽर्क (मल मास):-** वर्षारंभ से वैशाख कृ. ४ सोमवार दिनांक १३ अप्रैल २००९ ई. तक। चैत्र कृ. १४ रविवार दिनांक १४ मार्च २०१० ई. से सम्वत् पर्यन्त। **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **देवशयन (चातुर्मास):-** आषाढ़ शु. ११ गुरुवार दिनांक २ जुलाई २००९ ई. से कार्तिक शु. ११ गुरुवार दिनांक २९ अक्टूबर २००९ ई. तक। **(द्विगर्त देशों के अतिरिक्त सर्वत्र वर्जित)।**
- **धनुष्यार्क (मल मास):-** पौष कृ. १४ मंगलवार दिनांक १५ दिसंबर २००९ ई. से माघ कृ. १४ गुरुवार दिनांक १४ जनवरी २०१० ई. तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **शुक्रास्त (तारा):-** बाल्यत्व वृद्धत्वा सहित पौष कृ. ११ शनिवार दिनांक १२ दिसंबर २००९ ई. से फाल्गुन कृ. १२ बुधवार दिनांक १० फरवरी २०१० ई. तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **गुरु अस्त (तारा):-** बाल्यत्व वृद्धत्वा सहित फाल्गुन कृ. १२ बुधवार दिनांक १० फरवरी २०१० ई. से वर्ष पर्यन्त तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **होलाष्टकः:-** फाल्गुन शु. ८ सोमवार २२ फरवरी २०१० ई. से फाल्गुन शु. १५ रविवार दिनांक २८ फरवरी २०१० ई. तक **(रावी, व्यास, शतलुज के किनारे एवं पंजाब, हरि., उ.प्र., राज., हि.प्र. में वर्ज्य)**

—ः विवाहे सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार ः—

सूर्यः-३, ६, १०, ११वाँ शुभ। १, २, ५, ७, ९वाँ पूज्य। ४, ८, १२वाँ नेष्ट। गुरुः-२, ५, ७, ९, ११वाँ शुभ। १, ३, ६, १०वाँ पूज्य। ४, ८, १२वाँ नेष्ट।
चन्द्रः-१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वाँ शुभ। १२वाँ ग्राह्य (पूज्य)। ४, ८वाँ नेष्ट।

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
५	१४ अप्रै.	मंगल	मूल	रे. ८।।।।।।ऽऽ।। (रविर्निरंश)	ल. वृश्चि. रात्री २२।५४ से	मेष	मकर	धनु
८	१७ "	शुक्र	उ.षा.	रे. ८ऽशु.।।।।।।ऽ।।	ल. धूलिमुखे, वृश्चिक रात्री २०।४६	मेष	मकर	मकर
१२	२२ "	बुध	उ.भा.	रे. ८।।ऽशु.।।ऽरो.।।।। (शुक्रयुति आवश्यके)	ल. वृश्चिक रात्री २०।२७ बजे	मेष	मकर	मीन
१३	२३ "	गुरु	उ.भा.	रे. ९।।ऽशु.।।।।।। (शुक्रयुति आवश्यके)	ल. वृष दिवा ७।० बजे	मेष	मकर	मीन

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
३	२७ अप्रै.	सोम	रोहि.	रे. ९।।।।।ऽनृ.।।।।	ल. वृष प्रातः ६।४४ बजे। धनु रात्री २५।१० बजे तक	मेष	मकर	वृष
४	२८ "	मंगल	रोहि.	रे. ९।।।।।ऽनृ.।।।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. वृष प्रातः ७।१२ तक	मेष	मकर	वृष
११	५ मई	मंगल	उ.फा.	रे. ९।।।।।ऽग्नि।।।।	ल. मिथुन प्रातः ९।३९ बजे से (बु. ७ पूज्य) वृशि. रात्री १९।३६ बजे	मेष	मकर	कन्या
१३	७ "	गुरु	स्वाती	रे. ९।।।।।।।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. धनु रात्री २३।३४ से	मेष	मकर	तुला
१४	८ "	शुक्र	स्वाती	रे. ८।।।।।ऽचौ.।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. वृष प्रातः ६।१ बजे	मेष	मकर	तुला

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
३	१२ मई	मंगल	मूल	रे. १०।।।।।।।।।। (रि. ति. आ.)	ल. गोधूलि, वृश्चिक रात्री २०।३ तक	मेष	मकर	धनु
५	१४ "	गुरु	उ.षा.	रे. ८।।।।ऽग्नि.।ऽ।। (मासान्त आवश्यके)	ल. वृश्चिक रात्री १९।० बजे	मेष	मकर	मकर
१०	१९ "	मंगल	उ.भा.	रे. ९।।।।।।ऽ।।	ल. मेष रात्री २७।४२ बजे	वृष	मकर	मीन
११	२० "	बुध	उ.भा.	रे. ९।।।।।।ऽ।।	ल. मिथुन प्रातः ७।९ बजे, धूलिमुखे	वृष	मकर	मीन

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
७	३० मई	शनि	मघा	रे. ६।।।ऽगु.ऽग्नि.ऽऽ।।	ल. मिथुन प्रातः ६।२९ बजे, धूलिमुखे, धनु रात्री २०।१२ बजे	वृष	मकर	सिंह
८	३१ "	रवि	उ.फा.	रे. ९।।।।।।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. मेष रात्री २८।३ से (लग्ने भौम दोष)	वृष	मकर	सिंह
९	१ जून	सोम	उ.फा.	रे. ९।।।।।ऽ।।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. मिथुन प्रातः ६।२२ बजे	वृष	कुंभ	सिंह
९	१ "	सोम	उ.फा.	रे. ९।।।।ऽरो. ।।।।	ल. गोधूलि वेलायां, धनु रात्री २०।८ बजे, मीन रात्री २५।२६ बजे (चं. ७ पू)	वृष	कुंभ	कन्या
१०	२ "	मंगल	हस्त	रे. ८।।।।ऽरो.।ऽ।।	ल. मिथुन प्रातः ६।१८ बजे	वृष	कुंभ	कन्या
१२	४ "	गुरु	स्वाती	रे. ८ऽसू.।।।।ऽग्नि. ।।।।	ल. धूलिमुखे, धनु रात्री १९।५६ बजे	वृष	कुंभ	तुला
१४	६ "	शनि	अनु.	रे. ८।।।ऽबु. ।।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. मिथुन प्रातः ८।४३ से	वृष	कुंभ	वृश्चि.

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
२	९ जून	मंगल	मूल	रे. ७।।।ऽसूऽचौ.।ऽ।।	ल. मिथुन प्रातः ५।५० बजे	वृष	कुंभ	धनु
३	११ "	गुरु	उ.षा.	रे. ६।।ऽरा.।।ऽरो.।।ऽऽ (दग्धा तिथि आवश्यके) (गणितेन क्रांति साम्याऽभावः)	ल. गोधूलि वेलायां	वृष	कुंभ	मकर
९	१७ "	बुध	रेवती	रे. ८।।।।ऽग्नि.।ऽ।। (रि. ति. आ.)	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री २५।४८ बजे (ल.भौ.दो.) (के. ४ दो.)	मिथुन	कुंभ	मीन

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
४	२६ जून	शुक्र	मघा	रे. ६।।।ऽगु. ऽग्निऽऽ।।	ल. गोधूलि वेलायां, मेष रात्री २५।१३ बजे (ल.भौ.दो.) वृष रात्री २६।४८ बजे	मिथुन	कुंभ	सिंह

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
१२	३० अक्टू.	शुक्र	उ.भा.	रे. ६ऽसू।।।ऽशऽनृ.।।।ऽ (द.ति. आवश्यके)	ल. धूलिमुखे, वृष रात्री १८।२९ बजे	तुला	मकर	मीन
१३	३१ "	शनि	उ.भा.	रे. ६ऽसू.।।।ऽश.ऽनृ.।।।ऽ (द.ति. आवश्यके)	ल. वृश्चिक दिवा ७।५२ बजे	तुला	मकर	मीन

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
२	४ नवं.	बुध	रोहि.	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. गोधूलि वेलायां, सिंह रात्री २४।४३ बजे	तुला	मकर	वृष
३	५ "	गुरु	रोहि.	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. वृश्चिक दिवा ८।१३ तक	तुला	मकर	वृष
८	१० "	मंगल	मघा	रे. ६ऽबु.।।।ऽगु.ऽचौ.।ऽ।। (रि. ति. आ.)	ल. वृश्चिक दिवा ८।४६ से। धूलिमुखे	तुला	मकर	सिंह

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
८	१० नवं.	मंगल	मघा	रे. ६ऽबु.।।।ऽगु.ऽचौ.।ऽ।। (तिथि क्षय आवश्यके)	ल. कुंभ दिवा १३।१८ बजे (मं. ६ दो.)	तुला	मकर	सिंह
१०	११ "	बुध	मघा	रे. ६ऽबु.।।।ऽगु.ऽचौ.।ऽ।।	ल. वृश्चिक दिवा ७।०९ बजे	तुला	मकर	सिंह
१२	१३ "	शुक्र	हस्त	रे. ७।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ (दग्धा तिथि आवश्यके)	ल. वृश्चिक दिवा ७।०१ बजे	तुला	मकर	कन्या
१२	१३ "	शुक्र	हस्त	रे. ८।।।।।।।ऽ।ऽ (दग्धा तिथि आवश्यके)	ल. सिंह रात्री २४।०४ बजे	तुला	मकर	कन्या

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
३	१९ नवं.	गुरु	मूल	रे. ९ऽश.।।।।।।।।	ल. कुंभ दिवा १२।४३ बजे। सिंह रात्री २३।४० बजे। (सू. ४ दो.)	वृश्चि.	मकर	धनु
१०	२७ "	शुक्र	उ.भा.	रे. ६।।।।ऽश ऽग्नि।ऽ।ऽ	ल. सिंह रात्री २३।०९ बजे	वृश्चि.	मकर	मीन
१५	२ दिसं.	बुध	रोहि.	रे. ९।।।।ऽशु.।।।।।	ल. धूलिमुखे, सिंह रात्री २४।४५ तक	वृश्चि.	मकर	वृष

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
८	९ दिसं.	बुध	उ.फा.	रे. ८।।ऽश.।।।।ऽ।।	ल. मेष दिवा १४।१६ बजे (मं. ४ दो.) (सू. ८ दो.) कर्क रात्री २०।१ बजे (गु. ७ पू.)	वृश्चि.	मकर	सिं./क.

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह मुहूर्त्ताः सं. २०६६

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
८	१८ अप्रै.	शनि	श्रवण	रे. ७ऽशऽ।।।ऽनृ.।।।।	ल. वृष प्रातः ७।१९ बजे, धनु रात्री २३।०१ बजे	मेष	मकर	मकर
९	१९ "	रवि	श्रवण	रे. ८ऽशऽ।।।।।।।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. वृष प्रातः ७।१५ बजे	मेष	मकर	मकर
९	१९ "	रवि	धनि.	रे. ७ऽबु।ऽगु।।।।ऽ।।	ल. धूलिमुखे, वृश्चिक रात्री २०।३९ बजे	मेष	मकर	मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
१२	६ मई	बुध	चित्रा	रे. ७।।।।ऽमंऽनृ.ऽ।।।	ल. धनु रात्री २२।५४ से	मेष	मकर	कन्या
१३	७ "	गुरु	चित्रा	रे. ८।।।।ऽमंऽनृ.।।।। (रि.ति. आवश्यके)	ल. वृष प्रातः ६।५ बजे। वृश्चिक रात्री १९।२८ बजे	मेष	मकर	कं./तु.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
८	१७ मई	रवि	धनि.	रे. ६ऽसू.।ऽगु.।।ऽग्नि।ऽ।।	ल. धूलिमुखे	वृष	मकर	कुंभ

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
१३	१४ नवं.	शनि	चित्रा	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. वृश्चिक दिवा ६।५७ बजे	तुला	मकर	कन्या

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
५	२२ नवं.	रवि	श्रवण	रे. ९।।।।।ऽचौ.।।।।	ल. धूलिमुखे	वृश्चि.	मकर	मकर
१२	२९ "	रवि	अश्वि.	रे. ७ऽसू.ऽसू.।।।ऽनृ.।।।।	ल. धूलिमुखे, सिंह रात्री २३।०१ बजे (सू. ४ दो.)	वृश्चि.	मकर	मेष

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
१०	११ दिसं.	शुक्र	चित्रा	रे. ८।।ऽश।।।।ऽ।।	ल. मेष दिवा १४।१२ बजे। सिंह रात्री २२।१८ बजे	वृश्चि.	मकर	कं./तु.

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय विवाह मुहूर्त्ताः सं. २०६६

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
६	१३ जुला.	सोम	उ.भा.	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. गोधूलि वेलायां, मेष रात्री २४।०२ बजे, वृष रात्री २६।६ तक (के. ४ दो.)	मिथुन	कुंभ	मीन
११	१८ "	शनि	रोहि.	रे. ७।ऽसू.।।।ऽग्नि।ऽ।।	ल. गोधूलि वेलायां, मीन रात्री २२।१८ बजे। मेष रात्री २३।४३ बजे। (ल. भौ. दो.)	कर्क	कुंभ	वृष
१२	१९ "	रवि	रोहि.	रे. ।ऽसू.।।।ऽग्नि।ऽ।।	ल. कन्या दिवा १०।०५ बजे	कर्क	कुंभ	वृष

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
४	२५ जुला.	शनि	उ.फा.	रे. ७।।।।ऽरो.ऽऽ।।	ल. मेष रात्री २४।४२ तक (के. ४ दो.) वृष रात्री २४।५४ बजे	कर्क	कुंभ	सिं./क.
५	२६ "	रवि	हस्त	रे. ९।।।।।।।।ऽ (दग्धा तिथि आवश्यके)	ल. गोधूलि वेलायां, मीन रात्री २१।४६ बजे। मेष रात्री २३।११ बजे (चं. ७ पू.)	कर्क	कुंभ	कन्या
८	२९ "	बुध	स्वाती	रे. ९।।।।।।ऽ।।	ल. कन्या दिवा ९।२६ बजे	कर्क	कुंभ	तुला
९	३० "	गुरु	अनु.	रे. ७।।।।ऽनृ.।ऽऽ। (गणितेन क्रांति साम्याऽभावः)	ल. मीन रात्री २१।३० बजे। वृष रात्री २४।३४ बजे। (चं. ७ पू.)	कर्क	मकर	वृश्चि.
१०	३१ "	शुक्र	अनु.	रे. ८।।।।।।ऽऽ। (गणितेन क्रांति साम्याऽभावः)	ल. मीन रात्री २२।४७ तक	कर्क	मकर	वृश्चि.
१४	४ अग.	मंगल	उ.षा.	रे. ७।।ऽरा.।।ऽरो.।ऽ।। (रि. ति. आ.)	ल. कन्या दिवा ५।०२ बजे	कर्क	मकर	धनु
१४	४ "	मंगल	उ.षा.	रे. ८।।ऽरा.।।।।ऽ।।	ल. मीन रात्री १७।११ बजे। मेष रात्री १८।३६ बजे। वृष रात्री २०।११ बजे (ल.भौ. दो.)	कर्क	मकर	मकर

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
३	९ अग.	रवि	उ.भा.	रे. ८।।।।।ऽनृ.।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. गोधूलि वेला, मेष १८।१६ बजे, वृष रात्री १९।५१ बजे (ल.भौ.दो.)	कर्क	मकर	मीन
४	१० "	सोम	उ.भा.	रे. ८।।।।।।ऽऽ।।	ल. कन्या ८।३९ बजे। तुला दिवा १०।५५ बजे (ल.बु.दो.) गोधूलि वेलायां	कर्क	मकर	मीन
४	१० "	सोम	रेवती	रे. ८।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	ल. मेष रात्री २२।१७ से। वृष रात्री २३।४७ बजे (ल.भौ.दो.)	कर्क	मकर	मीन
५	११ "	मंगल	रेवती	रे. ८।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	ल. कन्या दिवा ८।३५ बजे। गोधूलि वेलायां	कर्क	मकर	मीन

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०६६

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
२	२२ अग.	शनि	उ.फा.	रे. ९।।ऽबु.।।।।।।	ल. कन्या दिवा ७।५१ बजे। तुला दिवा १०।८ बजे, धूलि मुखे	सिंह	मकर	सिं./क.
२	२२ "	शनि	उ.फा.	रे. ९।।ऽबु.।।।।।।	ल. मीन रात्री २०।० बजे। वृष रात्री २३।०० बजे	सिंह	मकर	कन्या
३	२३ "	रवि	हस्त	रे. ८।ऽसू.।।।ऽचौ.।।।। (क्षय तिथि आवश्यके)	ल. तुला दिवा १०।४ बजे	सिंह	मकर	कन्या
५	२४ "	सोम	चित्रा	रे. ९।।।।।।ऽ।।	ल. तुला दिवा १०।० बजे। मेष रात्री २१।१७ बजे (चं. ७ पू.) (के. ४ दो.)	सिंह	मकर	क./तु.
६	२५ "	मंगल	स्वाती	रे. ९।।।।।ऽरो.।।।।	ल. कन्या दिवा ७।४० बजे। धूलिमुखे, मेष रात्री २१।१३ बजे। (चं. ७ पू.)	सिंह	मकर	तुला

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लत्तादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
९	२९ अग.	शनि	मूल	रे. ७ऽश।।।।।।ऽ।ऽ	ल. कन्या दिवा ८।११ तक। तुला दिवा ९।४० बजे। मीन रात्री १९।३२ बजे	सिंह	मकर	धनु
९	२९ "	शनि	मूल	रे. ७ऽश।।।।।।ऽ।ऽ	ल. मेष रात्री २०।५७ बजे	सिंह	मकर	धनु
१०	३० "	रवि	मूल	रे. ७ऽश.।।।।।।।ऽ।ऽ	ल. कन्या दिवा ७।२० बजे। तुला दिवा ११।८ तक	सिंह	मकर	धनु
११	३१ "	सोम	उ.षा.	रे. ९।।ऽरा.।।।।।।	ल. गोधूलि वेलायां, मीन रात्री १९।२५ बजे। मेष रात्री २०।५० बजे (के. ४ दो.) (बु. ७ पू.)	सिंह	मकर	ध./म.
१२	१ सितं.	मंगल	उ.षा.	रे. ८।।ऽरा.।।ऽचौ.।।।।	ल. कन्या दिवा ७।१२ बजे। तुला दिवा ९।२८ बजे	सिंह	मकर	मकर
१२	१ "	मंगल	श्रवण	रे. ७ऽसू.।।।ऽशु.ऽचौ.।।।।	ल. वृष रात्री २२।२१ बजे	सिंह	मकर	मकर
१३	२ "	बुध	श्रवण	रे. ७ऽसू.।।।ऽके.शु.ऽचौ.।।।।	ल. कन्या दिवा ७।८ बजे। तुला दिवा ९।२५ बजे	सिंह	मकर	मकर
१३	२ "	बुध	श्रवण	रे. ८ऽसू.।।।ऽके.शु.।।।।।	ल. धूलिमुखे, मीन रात्री १९।१७ बजे (मं. ४ दो.) (बु. ७ पू.)	सिंह	मकर	मकर
१३	२ "	बुध	धनि.	रे. ८।।ऽगु.।।।ऽ।।।	ल. मीन रात्री २०।१५ से, मेष रात्री २०।४२ बजे। वृष रात्री २२।१७ बजे (बु. ७ पू.)	सिंह	मकर	मकर
१४	३ "	गुरु	धनि.	रे. ८।।ऽगु.।।।ऽ।।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. कन्या दिवा ७।०४ बजे। तुला दिवा ९।२१ बजे	सिंह	मकर	म./कुं.
आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०६६								
७	११ सितं.	शुक्र	रोहि.	रे. ७।ऽसू।।।ऽचौ.।ऽ।।	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री २०।६ बजे (के. ४ दो.)	सिंह	मकर	वृष
१२	१६ "	बुध	मघा	रे. ६।।ऽशु.।ऽगुऽग्नि।ऽ।। (शुक्र युति आवश्यके)	ल. मेष रात्री १९।४७ बजे (के. ४ दो.), वृष रात्री २१।२२ बजे (मासांत आव.)	सिंह	मकर	सिंह
आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०६६								
२	२० सितं.	रवि	हस्त	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. तुला दिवा ६।१६ बजे (चं. १२ दो.)	कन्या	मकर	कन्या
२	२० "	रवि	चित्रा	रे. १०।।।।।।।।।।	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री १९।३१ बजे। (के. ४ दो.), वृष रात्री २१।०६ बजे	कन्या	मकर	कन्या
३	२१ "	सोम	स्वाती	रे. ९।।।।।ऽनृ.।।।।	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री २०।५२ तक (के. ४ दो.)	कन्या	मकर	तुला
५	२३ "	बुध	अनु.	रे. ९।।।।।ऽचौ.।।।।	ल. धूलिमुखे, वृष रात्री २०।५४ बजे (चं. ७ पू.)	कन्या	मकर	वृश्चि.
१०	२८ "	सोम	उ.षा.	रे. ६।।ऽरा.।ऽमं.ऽग्निऽ।।।	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री १९।०० बजे (के. ४ दो.), वृष रात्री २०।३५ बजे	कन्या	मकर	मकर
११	२९ "	मंगल	श्रवण	रे. ८।।।।।।ऽऽ।।	ल. धूलिमुखे १७।५९ तक	कन्या	मकर	मकर
११	३० "	बुध	धनि.	रे. ७।।ऽगु.।।ऽनृ.ऽ।।।	ल. धूलिमुखे, मेष रात्री १८।५२ बजे (के. ४ दो.) वृष रात्री २०।२७ बजे	कन्या	मकर	कुंभ
कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०६६								
३	२१ अक्टू.	बुध	अनु.	रे. ९।।।।।ऽनृ.।।।।	ल. वृष रात्री १९।०४ बजे (चं. ७ पू.)	तुला	मकर	वृश्चि.
४	२२ "	गुरु	मूल	रे. ९ऽश।।।।।।।।।	ल. सिंह रात्री २५।३४ बजे	तुला	मकर	धनु
५	२३ "	शुक्र	मूल	रे. ८ऽश।।।।ऽचौ.।।।।	ल. वृष दिवा १८।५६ बजे धूलिमुखे	तुला	मकर	धनु
७	२५ "	रवि	उ.षा.	रे. ७।।ऽरा.।।ऽरो.।ऽ।।	ल. वृश्चिक दिवा ८।१६ बजे	तुला	मकर	धनु
८	२६ "	सोम	श्रवण	रे. ८।।।।।ऽरो.।ऽ।। (दग्धा तिथि आवश्यके)	ल. वृश्चिक दिवा ८।४८ से	तुला	मकर	मकर
८	२६ "	सोम	श्रवण	रे. ९।।।।।।।ऽ।। (रिक्ता तिथि आवश्यके)	ल. धूलिमुखे, वृष रात्री १८।४४ बजे	तुला	मकर	मकर

अथ गृहारंभ (नींव रखना) मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
२९ जुला.	श्राव.	शु.	८	बुध	स्वाती	ल. सिंह ७।०९ बजे। कन्या ९।२६ बजे।
३१ "	"	"	१०	शुक्र	अनु.	ल. सिंह ७।०१ बजे, कन्या ९।१८ बजे, अभिजित
७ अग.	भाद्र.	कृ.	१	"	धनि.	ल. तुला ११।०७ बजे। अभिजित।
४ सितं.	"	शु.	१५	"	शत.	ल. तुला ९।१७ बजे। अभिजित।
५ अक्टू.	कार्ति.	कृ.	१	सोम	रेवती	ल. तुला ७।१५ बजे। अभिजित।
२१ "	"	शु.	३	बुध	अनु.	ल. वृश्चिक ९।४१ तक।
३१ "	"	"	१३	शनि	उ.भा.	ल. वृश्चिक ७।५२ बजे। अभिजित।
२५ नवं.	मार्ग.	शु.	८	बुध	शत.	ल. धनु ९।०७ बजे तक।
२ दिसं.	"	"	१५	"	रोहि.	ल. मकर १०।०९ बजे (ल.गु.दो.)

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
७ मई	वैशा.	शु.	१३	गुरु	चित्रा	ल. वृष ६।०५ बजे। अभिजित।
२० "	ज्ये.	कृ.	११	बुध	उ.भा.	ल. मिथुन ७।९ बजे (रा. ८ दो.) अभि.
१ जून	"	शु.	९	सोम	उ.फा.	ल. अभिजित (रिक्ता तिथि आवश्यके)
३० अक्टू.	कार्ति.	"	१३	शनि	उ.भा.	ल. वृश्चि. ७।५६ बजे, मकर १२।१९ बजे, अभिजित।
२५ नवं.	मार्ग.	"	८	बुध	शत.	ल. अभिजित।

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
१७ अप्रै.	वैशा.	कृ.	८	शुक्र	उ.षा.	ल. वृष अभिजित (कुं.च.शु.)
२० "	"	"	१०	सोम	धनि.	ल. कर्क (कुं.च.शु.)
१ मई	"	शु.	७	शुक्र	पुष्य	ल. वृष अभिजित (कुं.च.शु.)
१५ "	ज्ये.	कृ.	६	"	उ.षा.	ल. अभिजित (कुं.च.र.)
२० "	"	"	११	बुध	उ.भा.	ल. मिथुन, अभिजित (कुं.च.शु.)
२८ "	"	शु.	५	गुरु	पुष्य	ल. अभिजित (कुं.च.र.)
१० जुला.	श्रा.	कृ.	३	शुक्र	धनि.	ल. सिंह ९।११ तक (कुं.च.र.)
२९ "	"	शु.	८	बुध	स्वाती	ल. अभिजित (कुं.च.शु.)
३१ "	"	"	१०	शुक्र	अनु.	ल. अभिजित (कुं.च.शु.)
५ अक्टू.	कार्ति.	कृ.	१	सोम	रेवती	ल. अभिजित (कुं.च.र.)
२१ "	"	शु.	३	बुध	अनु.	ल. वृश्चि. ९।४१ तक (कुं.च.र.)
३१ "	"	"	१३	शनि	उ.भा.	ल. वृश्चि. अभिजित (कुं.च.शु.)
९ नवं.	मार्ग.	कृ.	७	सोम	पुष्य	ल. वृश्चि. (कुं.च.र.)
१८ "	"	"	१३	शनि	चित्रा	ल. वृश्चि., अभि. (कुं.च.शु.)
२५ "	"	शु.	८	बुध	शत.	ल. अभिजित (कुं.च.शु.)
२८ "	"	"	११	शनि	रेवती	ल. मकर, अभिजित (कुं.च.शु.)
२ दिसं.	"	"	१५	बुध	रोहि.	ल. अभिजित (कुं.च.र.)

नोटः- उपरोक्त जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त उन लोगों के उपयोगार्थ हैं जिन्हें ट्रांसफर या किसी आपदा वश अथवा अन्य किसी कारण वश किराये आदि के मकानों का परिवर्तन करना पड़ता है। यहाँ अधिक मास व गुरु-शुक्रास्तादि का विचार नहीं किया गया है। कुंभ चक्र रहित एवं शुद्ध दोनों ही प्रकार के मुहूर्त दिये गये हैं।

अथ सर्व देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
१७ अप्रै.	वैशा.	कृ.	८	शुक्र	उ.षा.	ल. अभिजित, कर्क (ल.के.दो.)
३० "	"	शु.	६	गुरु	पुनर्वसु	ल. वृष, अभिजित
१ मई	"	"	७	शुक्र	पुष्य	ल. वृष, अभिजित
१० "	ज्ये.	कृ.	१	रवि	अनु.	ल. अभिजित
२० "	"	"	११	बुध	उ.षा.	ल. मिथुन (रा. ८ दो.) अभिजित
२८ "	"	शु.	५	गुरु	पुनर्वसु	ल. अभिजित
७ जून	"	"	१५	रवि	अनु.	ल. अभिजित
१२ "	आषा.	कृ.	४	शुक्र	श्रवण	ल. अभिजित
२४ "	"	शु.	२	बुध	पुनर्वसु	ल. सिंह (ल.श.दो.) अभिजित
१ जुला.	"	"	१०	"	चित्रा	ल. सिंह (ल.श.दो.)
३१ अक्टू.	कार्ति.	"	१३	शनि	उ.भा.	ल. वृश्चिक, अभिजित
८ नवं.	मार्ग.	कृ.	६	रवि	पुनर्वसु	ल. वृश्चिक
१३ "	"	"	१२	शुक्र	हस्त	ल. अभिजित
२३ "	"	शु.	६	सोम	श्रवण	ल. अभिजित
२५ "	"	"	८	बुध	शत.	ल. अभिजित
२ दिसं.	"	"	१५	"	रोहि.	ल. अभिजित
३ "	पौष	कृ.	१	गुरु	मृगशिरा	ल. अभिजित
११ "	"	"	१०	शुक्र	हस्त	ल. मकर आवश्यके

अथ द्विरागमन मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
१७ अप्रै.	वैशा.	कृ.	८	शुक्र	उ.षा.	ल. मिथुन, अभिजित
२० "	"	"	१०	सोम	धनि.	ल. मिथुन
३० "	"	शु.	६	गुरु	पुनर्वसु	ल. वृष, अभिजित
१ मई	"	"	७	शुक्र	पुष्य	ल. अभिजित
६ "	"	"	१२	बुध	हस्त	ल. वृष, अभिजित
२३ नवं.	मार्ग.	"	६	सोम	श्रवण	ल. अभिजित, मीन
२५ "	"	"	८	बुध	शत.	ल. मकर, अभिजित
२७ "	"	"	१०	शुक्र	उ.भा.	ल. अभिजित
२ दिसं.	"	"	१५	बुध	रोहि.	ल. अभिजित
१७ फर.	फाल्गु.	शु.	३	"	उ.भा.	ल. मीन, अभिजित
१९ "	"	"	५	शुक्र	अश्विनी	ल. अभिजित
२५ "	"	"	११	गुरु	पुनर्वसु	ल. मीन, मेष, अभिजित
२६ "	"	"	१३	शुक्र	पुष्य	ल. अभिजित
११ मार्च	चैत्र	कृ.	११	गुरु	उ.षा.	ल. अभिजित
१२ "	"	"	१२	शुक्र	श्रवण	ल. अभिजित

अथ मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
१ मई	वैशा.	शु.	७	शुक्र	पुष्य	ल. वृष, अभिजित
६ "	"	"	१२	बुध	हस्त	ल. वृष, मिथुन (ल.रा.दो.)
१२ जून	आषा.	कृ.	४	शुक्र	श्रवण	ल. सिंह (ल.श.दो.)
१८ "	"	"	१०	गुरु	रेवती	ल. सिंह
३ फर.	फाल्गु.	"	५	बुध	हस्त	ल. मीन
५ "	"	"	७	शुक्र	स्वाती	ल. अभिजित
१९ "	"	शु.	५	"	अश्वि.	ल. मीन

अथ उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
२९ अप्रै.	वैशा.	शु.	५	बुध	आर्द्रा	ल. वृष, अभिजित
१४ मई	ज्ये.	कृ.	५	गुरु	पू.षा.	ल. अभिजित
४ जून	"	शु.	१२	"	स्वाती	ल. मिथुन, अभिजित
१० "	आषा.	कृ.	३	बुध	पू.षा.	ल. सिंह
३० अक्टू.	कार्ति.	शु.	१२	शुक्र	पू.भा.	ल. वृश्चिक, अभिजित
५ नवं.	मार्ग.	कृ.	३	गुरु	रोहि.	ल. वृश्चिक, अभिजित
२७ "	"	शु.	१०	शुक्र	उ.भा.	ल. मकर (ल.गु.दो.) अभिजित

अथ अक्षरारंभ व विद्यारंभ मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
२२ अप्रै.	वैशा.	कृ.	१२	बुध	पू.भा.	ल. वृष (विद्यारंभ)
२९ "	"	शु.	५	"	आर्द्रा	ल. वृष, अभिजित
३० "	"	"	६	गुरु	पुनर्वसु	ल. वृष, अभिजित
६ मई	"	"	१२	बुध	हस्त	ल. वृष, अभिजित
११ "	ज्ये.	कृ.	२	सोम	ज्ये.	ल. सिंह (ल.श.दो.)
१४ "	"	"	५	गुरु	पू.षा.	ल. मिथुन (विद्यारंभ)
१७ "	"	"	८	रवि	धनिष्ठा	ल. मिथुन (विद्यारंभ)
२१ "	"	"	१२	गुरु	रेवती	ल. अभिजित
२५ दिसं.	पौष	शु.	८	शुक्र	उ.भा.	ल. मकर (विद्यारंभ)
२७ "	"	"	१०	रवि	अश्वि.	ल. मकर
७ जन.	माघ	कृ.	८	गुरु	हस्त	ल. मकर (विद्यारंभ)
११ "	"	"	१२	सोम	अनु.	ल. अभिजित (अक्षरारंभ)
२१ "	"	शु.	६	गुरु	उ.भा.	ल. मीन, मेष (विद्यारंभ)
२२ "	"	"	७	शुक्र	रेवती	ल. मीन
२७ "	"	"	१२	बुध	मृग.	ल. मीन, मेष (विद्यारंभ)
३ फर.	फाल्गु.	कृ.	५	"	हस्त	ल. मीन (विद्यारंभ)

अथ विप्पणी (दुकान) करण मुहूर्त्ताः सं. २०६६ वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
१७ अप्रै.	वैशा.	कृ.	८	शुक्र	उ.षा.	ल. मिथुन, अभिजित
१ मई	"	शु.	७	"	पुष्य	ल. अभिजित
६ "	"	"	१२	बुध	हस्त	ल. वृष, अभिजित
१५ "	ज्ये.	कृ.	६	शुक्र	उ.षा.	ल. अभिजित
२० "	"	"	११	बुध	उ.भा.	ल. अभिजित
२१ "	"	"	१२	गुरु	रेवती	ल. अभिजित
२८ "	"	शु.	५	"	पुष्य	ल. अभिजित
२५ जून	आषा.	"	३	गुरु	"	ल. अभिजित
१ जुला.	"	"	१०	बुध	चित्रा	ल. सिंह ११।६ तक
३१ अक्टू.	कार्ति.	"	१३	शनि	उ.भा.	ल. वृश्चिक, अभिजित
९ नवं.	मार्ग.	कृ.	७	सोम	पुष्य	ल. वृश्चिक
१३ "	"	"	१२	शुक्र	हस्त	ल. अभिजित
२८ "	"	शु.	११	शनि	रेवती	ल. अभिजित
२ दिसं.	"	"	१५	बुध	रोहि.	ल. मकर (ल.गु.दो.)
६ "	पौष	कृ.	५	रवि	पुष्य	ल. अभिजित
११ "	"	"	१०	शुक्र	हस्त	ल. मकर (ल.गु.दो.)
१३ "	"	"	१२	रवि	स्वाती	ल. मकर (आवश्यके) ल.गु.दो.

अथ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०६६ विक्रमी (दिनांक २७ मार्च २००९ ई. से १५ मार्च २०१० ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य, गुरु व चंद्र बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबुल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए ४, ८, १२वें सूर्य व ४, ८वें चन्द्र का परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः ४, ८, १२वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ और अष्टम चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। यहां कात्यायनोक्त चार नक्षत्रों के विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें भी सम्मिलित हैं। अतः स्वप्रथानुसार ग्रहण करें।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेषः-अप्रैल-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ९, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१३ अप्रै. से १४ मई १५ मई से १४ जून १७ अक्टू. से १६ नवं.	**मेषः-अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, १९, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ९, १०, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	वर्षारंभ से १ मई तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक
वृषः-मई-१७, १९, २०, **जून**-१, २, ४, ६, १७, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १३, १४, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१४ मई से १४ जून १५ जून से १६ जुला. १६ नवं. से १५ दिस.	**वृषः-अप्रैल**-१७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १४, १७, १९, २०, **जून**-२, ४, ६, १७, २२, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १३, १४, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ११।	१ मई से ३० जुला. तक
मिथुनः-अप्रैल-१४, २२, २३, २७, २८, **मई**-७, ८, १२, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १९, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१४ जून से १६ जुला. १८ अक्टू. से १६ नवं.	**मिथुनः-अप्रैल**-१४, २२, २३, २७, २८, **मई**-७, ८, १२, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १९, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९ (१७।५०) तक।	वर्षारंभ से ३० अप्रै. तक ३० जुला. से १५ दिसं. तक
कर्कः-अप्रैल-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, १२, १४, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१६ नवं. से १५ दिसं.	**कर्कः-अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७ (११।११) तक। १२, १४, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११ (२३।९) तक।	१ मई से १६ जुला. तक
सिंहः-अप्रैल-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ९, २६, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४।	१३ अप्रै. से १४ मई	**सिंहः-अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ९, २६, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४,	वर्षारंभ से १ मई तक ३० जुला. से १५ दिसं. तक

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्याः-**मई**-१७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, १७, २६, **अक्टूबर**-२१, २६, २७, ३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, २२, २७, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१४ मई से १४ जून १८ अक्टू. से १६ नवं.	**कन्याः**-**अप्रैल**-१७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, २२, २७, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१ मई से ३० जुला. तक
तुलाः-**अप्रैल**-१४, २२, २३, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, **जून**-१७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-१०, ११, १३, १४, १९, २७, २९, **दिसंबर**-९, ११।	१४ अप्रै. से १४ मई १४ जून से १६ जुला. १७ अक्टू. से १६ नवं. १६ नवं. से १५ दिसं.	**तुलाः**-**अप्रैल**-१४, २२, २३, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-१०, ११, १३, १४, १९, २७, २९, **दिसंबर**-९, ११।	वर्षारंभ से १ मई तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक
वृश्चिकः-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, **नवंबर**-१९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१४ मई से १४ जून १६ नवं. से १५ दिसं.	**वृश्चिकः**-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१ मई से १६ जुला. तक
धनुः-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, २६, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४।	१३ अप्रै. से १४ मई १४ जून से १६ जुला.	**धनुः**-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, २६, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१ मई से १६ जुला. तक
मकरः-**मई**-१७, १९, २०, **जून**-१, २, ४, ६, ९, १७, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १३, १४, १९, २२, २७, **दिसंबर**-२, ९, ११।	१४ मई से १४ जून	**मकरः**-**अप्रैल**-१५, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, **दिसंबर**-२, ९ (१७।५० से), ११।	वर्षारंभ से १ मई तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक
कुंभः-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, **मई**-७, ८, १२, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१; ४, ६, ९, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-१०, ११, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-९, ११।	१७ अक्टू. से १६ नवं.	**कुंभः**-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, **मई**-५, ६, ७, ८, १२, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, ४, ६, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-१०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-९, ११।	वर्षारंभ से १५ दिसं. तक
मीनः-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७ (११।११) तक, १२, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ६, ९, **नवंबर**-१९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११ (२३।९) तक।	१३ अप्रै. से १४ मई १६ नवं. से १५ दिसं.	**मीनः**-**अप्रैल**-१४, १७, १८, १९, २२, २३, २७, २८, **मई**-५, ६, ७ (११।११ तक), १२, १४, १७, १९, २०, ३०, ३१, **जून**-१, २, ४, ९, १७, २६, **अक्टूबर**-३०, ३१, **नवंबर**-४, ५, १०, ११, १३, १४, १९, २२, २७, २९, **दिसंबर**-२, ९, ११ (२३।९) तक।	१ मई से ३० जुला. तक

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल सं. वि. २०६६, सन् २००९-१० ई.

नोट–यह राशिफल गोचर ग्रह, नक्षत्र चरणाक्षर, नाम राशि-जन्म राशि के आधार पर वर्षारंभ के ग्रह योग से लिखा गया है।

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

स्वामी मंगल नग मूंगा शुभदायक

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–ग्रह योग से खर्चा बढ़ेगा तथा यात्रा योग ज्यादा बनेगा। मांगलिक खर्चा होगा। दिनांक २८, ३० को सावधान रहना चाहिए।

अप्रैल २००९–कार्यक्रम अच्छे चलेंगे। राज दरबार में सम्मान प्राप्ति का योग है तथा मांगलिक कार्यों से परिवार में खुशी होगी। भूमि-भवन लेन-देन का योग बनेगा। रक्त विकार योग भी बनता है। अचानक आर्थिक लाभ भी मिलेगा। पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ने का योग बनता है। ता. १, ९, १३, १७, २२, २७ अशुभ रहेंगी। **मई**–कार्यक्रम सम्पन्नता में मित्र वर्ग मदद करेंगे। अचानक शुभ समाचारों की प्राप्ति का योग बनेगा। आदर सम्मान की प्राप्ति भी होगी। सन्तान पक्ष को नौकरी योग बनेगा। गुरु नीच का कुछ चिंतादायक योग भी करेगा। स्त्री पक्ष से अच्छी सलाह मिलेगी। पारिवारिक कार्यों की योजना बनेगी। ता. ३, ७, १४, २३, २९ व ३१ अशुभ रहेंगी। **जून**–मित्रों से लाभ। आंशिक बीमारी का योग बनेगा। निदान शीघ्र हो जायेगा। परिवार में धार्मिक कार्यों का योग बनेगा। कुछ स्थानों की मंगल यात्रा एवं व्यवसाय का लाभ भी होगा। राज काज में कुछ परेशानी बनेगी। विवाद से बचें। रिश्तेदारों से नया शुभ संदेश व नया कारोबार भी होगा। ता. ५, ९, १५, १९, २४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–सन्तान पक्ष से खुशी योग। वाहन से सावधान रहना चाहिए। विकासात्मक गति में आर्थिक स्थिति अच्छी होने के योग। केतु ४था आकस्मिक आर्थिक लाभ व पारिवारिक कार्यों में सफलता दिलायेगा। यात्रा खर्चा से परेशानी जैसी स्थिति बनेगी। भूमि भवन लेन-देन से शुभ लाभ बनेगा। ता. ३, ८, ११, २०, २७, व ३० अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–स्वास्थ्य में गड़बड़ बनेगी। भूमि भवन में विवाद का योग बनेगा। पत्नी के स्वास्थ्य में गड़बड़ योग भी बनेगा। सन्तान योग एवं वाहन प्राप्ति का योग बनेगा। मित्र वर्ग का सहयोग अच्छा रहेगा। माह के मध्य यात्रा योग शुभ बनेगी। धार्मिक कार्यों का आयोजन भी होगा। शुभ समाचार भी मिलेंगे। ता. ६, १३, १८, २२, २६ अशुभ रहेंगी। **सितंबर**–कारोबार में उन्नति। धन योग भी बनता है। किसी मित्र से मिलाप होगा। पित्त रोग का योग बनता है। आय कम तथा व्यय ज्यादा होगा। आत्मीय जनों से भी विवाद योग बनेगा। नया स्थान या स्थानान्तरण योग बनेगा। ता. १, ७, १४, १९, २३ अशुभ रहेंगी। **अक्टूबर**–शारीरिक व्याधि से परेशानी। स्त्री पक्ष से मदद मिलेगी। वाहन प्राप्ति व पदोन्नति अथवा नया व्यवसाय का योग है। राज दरबार में मान सम्मान बढ़ेगा। माह के अन्त में आर्थिक लाभ भी होगा। आशातीत कार्य योजना से लाभ बढ़ेगा। कृषि कार्यकर्त्ता को अच्छा लाभ। ता. ३, १०, २३, २९ व ३१ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–कारोबार मध्यम। आय कम व्यय अधिक होगा। सन्तान का सुख मिलेगा। राजसभा में अपना वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु पक्ष परास्त होंगे। मनोवृति बढ़ेगी। अधूरा कार्य पूर्व का इस माह में बनने का योग बनता है। नेत्र विकार से परेशानी बनेगी। यात्रा भी अचानक होगी। ता. ४, १०, २०, २४, २५ अशुभ रहेंगी। **दिसम्बर**–बंधन भय रहेगा। निजी जनों से अनबन भी होगी। यात्रा में कष्ट योग। गुप्त चिन्ता। मासान्त में वात व्याधि योग। पारिवारिक कार्यों में वृद्धि, संबंध योग बनेगा। स्त्री पक्ष से आर्थिक लाभ योग। उदर विकार से भी अशांति योग। ता. १३, २०, ३० अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–धन लाभ। आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी तथा कारोबार कमजोर बनेगा। ऋण प्राप्ति योग या अचानक पूर्व की डूबत राशि प्राप्ति का योग बनेगा। साझेदारी कार्य योग भी बनेगा। धन हानि की घटना भी घट सकती है। बना हुआ कार्य भी बदल सकता है। सावधान रहें। ता. ८, १२, १८, २९ अशुभ रहेंगी। **फरवरी**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घरेलू विवाद बढ़ने का योग बनेगा। सन्तान का भाग्योदय योग बनेगा। मित्र वर्गों का कार्य आपके लिए शोभनीय होगा। भूमि भवन विवाद में विजय योग बनेगा। रक्त विकार से बाधा भी बनती है। छोटा बच्चा को बीमारी योग विशेष बनेगी। ता. ९, १४, १७, २३ अशुभ रहेंगी। **मार्च**–क्रोधावेश योग। मित्र वर्ग से कुछ अनबन भी। उलझे हुए कार्यों का निष्पादन बनेगा। शत्रु कमजोर होंगे। धन लाभ का योग बनता है। सन्तान पक्ष को सेवा योग या धंधा बनेगा। धार्मिक यात्राएं भी बनेंगी। भाई बंधु काफी मदद करने के पक्षधर बनेंगे। वाहन प्राप्ति योग बनता है। ता. २, ९, १४, १९, २५ अशुभ रहेंगी।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

स्वामी शुक्र नग हीरा शुभदायक

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–ढैय्या का शनि पारिवारिक परेशानी एवं स्वास्थ्य को बाधिक करेगा। ता. २७ व २९ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–शुक्र ग्रह राजा होने से भाग्योदय योग। प्रतियोगिता में विजय योग करेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। राजकीय कार्यों में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आर्थिक योग कुछ कमजोर बनेगा। ता. ३, ८, १४, १९, २३, २६ अशुभ रहेंगी। **मई**–निजी जनों से विवाद योग। आर्थिक लाभ। सम्पति लाभ होगा। अचानक डूबत राशि प्राप्ति का योग बनेगा। अर्थ व्यर्थ नहीं जायेगा। विवाह आदि मांगलिक खर्चा योग बनता है। वाहन योग तथा सामाजिक सेवा का समय भी मिलेगा। ता. ५, ९, १०, १३, २०, २२, ३० अशुभ रहेंगी। **जून**–कार योग हल्का योग बनेगा। पारिवारिक विवाद से दूर रहें। गैस पीड़ा योग, न्यायालय पीड़ा से बचने का प्रयास करें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अपव्यय का अचानक योग बनेगा। पारिवारिक क्लेश बढ़ेगा। रोजगार की अभिवृद्धि होगी। गुप्त मन्त्रणा से पुराना कार्य भी बनेगा। ता. १, ८, ९, १३, २४ व २९ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–स्वास्थ्य में सुधार होगा। राजभय बनेगा। नेत्र पीड़ा की बाधा बनेगी। सन्तान सुख अच्छा बनेगा। पत्नी को चोट योग भी। नये कार्य का योग बनता है। शुभ यात्रा का कार्य भी बनेगा। वायु विकार से परेशानी भी होगी। पुराने विवाद में विजय योग भी। मन उदास हो सकता है। ता, ३, ४, ८, १०, १३, २०, २२ अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–निजी कार्य में वृद्धि योग, अचानक यात्रा योग भी। वायु एवं रक्त विकार का योग भी बनेगा। नयी योजना के अनुरूप कार्य बनेगा। स्त्री सुख प्राप्ति का योग भी बनेगा। भाईयों से कुछ अनबन योग बनता है। भूमि भवन का लेन-देन भी लाभदायक होगा। दक्षिणी यात्रा से लाभ। ता. ४, ११, १६, १९, २२, २४, २७ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–क्रोधावेश बढ़ेगा। दुर्घटना योग भी। कोर्ट कचहरी में विजय बनेगी। पारिवारिक कार्यों में झंझट बढ़ेगा। स्वजनों द्वारा मजाक भी बन सकता है। धार्मिक यात्रा का योग बनेगा। संबंधी जनों द्वारा शुभ समाचार भी। ता. ३, ८, १९, २८, ३० अशुभ रहेंगी। **अक्टूबर**–गैस पीड़ा बाधा, चोरी योग, भूमि भवन का कार्य भी। उत्साह बढ़ेगा। मासान्त में शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। पशुओं से सावधान रहें। नवीन व्यवसाय में साझेदारी का योग बनेगा। नया स्थान प्राप्ति या स्थानान्तरण योग भी बढ़ेगा। किसी झगड़े से भी परेशानी बढ़ेगी। ता. २, १२, १८, २४, २७ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–भाई बंधुओं से विवाद बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ योग। नवीन सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। मित्र वर्ग द्वारा यात्रा योग बनेगा। वाहन से

सावधान रहें। पशु क्रय-विक्रय से लाभ बनेगा। चोरी के योग से बचें। कृषि कार्य में लाभ शुभ। ता. ३, ९, १८, २३, २८ अशुभ रहेंगी। **दिसम्बर**–सुखद यात्रा योग शुभ समाचार प्राप्ति का योग भी। सामाजिक कार्यों में आक्षेप लगेंगे। नवीन वस्त्र प्राप्ति का योग भी। माह के अन्त में शुभ लाभ योग बनेगा। व्यापारी वर्ग अच्छा लाभ कमायेगा। भाग्योदय योग। रोजगार प्राप्ति के अवसर बनेंगे। शत्रु पक्ष से कुछ सावधानी रखें। ता. ८, ९, १८, २१ अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–मं+श+बु के कारण आर्थिक एवं स्थाई सामग्री का लाभ होगा। ट्रैक्टर-कार, ट्रक क्रय जैसा शुभ योग है। भूमि संबंधी समस्याओं का समाधान होगा। पागल कुत्ते से बचें। व्यवसायोन्मुखी कार्य बनेगा। ता. ४, १०, १४, १९, २७ अशुभ रहेंगी। **फरवरी**–कफ विकार, निम्न जनों के द्वारा जीवन में वर्चस्व बढ़ेगा। पशुओं के लेन-देन से लाभ भी होगा। सेवा योग, नवीन स्थानों का भ्रमण होगा। आर्थिक लाभ भी बनेगा। राजनैतिक लाभ मिलेगा। विदेशी सम्पर्क या यात्रा योग बनेगा। पारिवारिक कार्य बढ़ेंगे। शत्रु पक्ष कमजोर होगा। ता. ३, ८, १३, १४, १७, २५ अशुभ रहेंगी। **मार्च**–उदर पीड़ा का योग। कारोबार में वृद्धि होगी। राजपक्ष में मंत्री तुल्य पद का योग बनेगा। कुछ नये लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। पशु क्रय-विक्रय योग में लाभ बनेगा। भवन निर्माण संबंधी कार्य योग बनेगा। पारिवारिक क्षेत्रों में भ्रमण योग है। मित्र वर्ग के योगदान से आर्थिक लाभ होगा। ता. ९, १६, २७, २८ अशुभ रहेंगी।

मिथुन–क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

(के+गु+रा अशुभ)

दिनांक २७ मार्च से ३१ मार्च २००९ तक–भागदौड़ ज्यादा होगी। अशुभ कार्य योग बनेगा। सावधान। वाहन से भी भय रहेगा। ता. २८ व ३१ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–मानसिक अशांति योग। धन का खर्चा बढ़ेगा। विरोधी कमजोर होंगे। आय से व्यय अधिक होगा। वाहन प्राप्ति का भी योग बनता है। मित्र वर्ग से काफी मदद। सहयोग प्राप्ति का योग है। जमीन का सौदा बनेगा। ता. २, ८, १०, १८, २४ अशुभ हैं। **मई**–स्वास्थ्य में सुधार योग बनेगा। वृथा विवाद भी होगा। सन्तति सुख में बाधक योग बनेगा। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। सामाजिक परिवेश में नयापन प्रतीत होगा। स्त्री पक्ष से कोराबार में लाभ मिलेगा। रोजगार प्राप्ति का माह रहेगा। अनावश्यक भ्रमण नहीं करें तो शुभ रहेगा। ता. ८, १८, २४, ३० अशुभ रहेंगी। **जून**–राजनैतिक लाभ प्राप्ति का योग बनता है। मित्र वर्ग से कष्ट योग। उदर पीड़ा से परेशानी बनेगी। राजकीय सेवा योग अथवा लि.कं. में सेवा योग। नवीन कार्य में सफलता मिलेगी। मित्र वर्गों के धोखा से बचें। सन्तान प्राप्ति एवं मांगलिक कार्यों का खर्चा होगा। ता. ४, ११, २४, ३० अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–वायु विकार बढ़ेगा। नेत्र पीड़ा योग भी बढ़ेगा। रोजगार योग। शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। नया कार्य हेतु सम्पर्क बढ़ेगा। कार्यों में उत्साह भी हो। पशुओं से जान को खतरा भी बनेगा। ६५ वर्ष की आयु के ऊपर के लोगों का असामाजिक नुकसान होगा। राजनैतिक बाधा भी आयेगी। ता. ३, ४, १५, २५, ३० अशुभ रहेंगी। सावधान। **अगस्त**–ग्रह योग से इस माह में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भाईयों से सुख बंधन योग, गड़बड़ योग, अपराधिक योग से बाधित होगा। विदेश जाने का योग भी बनेगा। पशुओं से चोट का योग बनता है। परीक्षा परिणाम अनुकूल आयेगा। कार्य लाभ बनेगा। ता. ३, ९, १५, २७, ३० अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–कारोबार मध्यम, आय व्यय बराबर रहेंगे। धार्मिक कार्यों की ओर खर्चा होगा। सन्तान का भाग्योदय योग भी है। किसी संकट का योग बनेगा। विषैले जानवर से भी बचें तो अच्छा रहेगा। नेत्र विकार योग बनता है। ओहदा (पद) बढ़ेगा, सामाजिक सेवाएं बढ़ेंगी। ता. ५, ८, १७ व २२ अशुभ रहेंगी। **अक्टूबर**–कारोबार में उन्नति व धन का लाभ होगा। सामाजिक कार्यों में खर्चा होगा। राजसभा में मान-सम्मान बढ़ेगा। मित्र से मिलाप एवं सन्तान पक्ष का सुखयोग बनता है। नेत्र रोग का योग बनता है। स्त्री वर्ग का प्रबल सहयोग प्राप्त होगा। पित्त रोग भी बनेगा। ता. २, ८, १०, १५, २०, २५ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। धन व सम्पदा में वृद्धि होगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। राज सभा में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। कार्यों की अधिकता बढ़ेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। चौपाये पशुओं का सुख मिलेगा। शत्रुओं की वृद्धि होगी। अग्नि का भय रहेगा। ता. २, ९, १०, १७, २३, ३० अशुभ रहेंगी। **दिसम्बर**–आय तथा व्यय सम रहेंगे। स्त्री द्वारा अशुभ घटना भी घटेगी। मित्रों का मिलाप लाभदायक रहेगा। सन्तान को चोट योग बनेगा। धार्मिक कार्यों की योजना एवं यात्रा बनेगी। मन में उत्साह एवं रोजगार प्राप्ति का अवसर बनेगा। शत्रु सक्रिय होने का योग। ता. ७, ९, १०, १७, १९, २६ अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–कफ विकार का योग। मानसिक अशांति होगी। सामाजिक आक्षेप लगेंगे। रोजगार प्राप्ति का अवसर बनेगा। नया स्थान या स्थानान्तरण योग बनेगा। विरोधी कमजोर होंगे। धार्मिक खर्चा, मांगलिक खर्चा होगा। स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार होगा। पशुओं से सावधान। ता. १०, १४, १९, २०, ३० अशुभ हैं। **फरवरी**–निजी लोगों से आर्थिक मदद मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता भी। स्थान परिवर्तन योग, भवन निर्माण संबंधी सेवा बनेगी। पारिवारिक कार्यों में बढ़ोतरी होगी। नवीन योजना का लाभ मिलेगा। विदेश यात्रा अथवा व्यवसाय योग भी। ता. १३, १९, २४, २७ व २९ अशुभ हैं। **मार्च**–वृथा विवाद एवं व्यय। चोरी या डकैती का योग। अपहरण तुल्य घटना भी घटेगी। सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। रोजगार प्राप्ति का योग। राजनैतिक लाभ भी मिलेगा। नया मित्र व्यवसाय में मदद करेगा। कारोबार का प्रचार प्रसार करना लाभदायक होगा। ता. ८, १३, २०, २९ अशुभ हैं।

कर्क–ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

दिनांक २७ मार्च से ३१ मार्च २००९ तक–शनि का ढैय्या प्रभाव से आपको अचानक परेशानियों से गुजरना पड़ेगा। विवाद में विजय। ता. २७ व २९ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्य का खर्चा भी बढ़ेगा। भूमि भवन का विवाद बढ़ेगा। विवाद योग, सन्तान योग तथा रोजगार प्राप्ति योग बनता है। कार्य योग में कुशलता बढ़ेगी तथा सम्पर्क भी बढ़ेगा। यात्रा योग ज्यादा बनेगा। ता. ३, १०, १४, २२, २८ अशुभ हैं। **मई**–कारोबार बढ़िया चलेगा। धन खर्चा ज्यादा होगा। राज पक्ष के मामले में वर्चस्व बढ़ेगा। कृषक वर्ग के लिए संकट योग बनेगा। धार्मिक कार्यों में बढ़ोतरी। शरीर को आराम की आवश्यकता पड़ सकती है। स्त्री पक्ष से सेवा का योग बनेगा। ता. १, २, १२, १९, २०, २४ अशुभ रहेंगी। **जून**–कार्य व्यवहार बढ़ेगा। सन्तान का भाग्योदय। भूमि भवन लेन-देन का शुभ योग बनेगा। उदर बाधा (रोग), स्त्री पक्ष से ताड़ना मिल सकती है। स्थान परिवर्तन का योग तथा वाहन प्राप्ति का शुभ योग बनेगा। कोर्ट कचहरी के मामले में हानि भी। ता. ८, १६, २४, ३० अशुभ हैं। **जुलाई**–कारोबार में नवीनता बनेगी। पदोन्नति का योग भी बनता है। माता-पिता को कष्ट योग बनेगा। रक्त विकार रोग का कारण बन सकता है। पशुओं से सावधान। चोट या गिरने का भी योग मंगल+राहु से बनता है। पुराने मामले में विजय योग। ता. ४, १३, १९, २३ व २८ अशुभ हैं। **अगस्त**–कार्य प्रगतिशील रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार के योग। परिवार में अनावश्यक खर्चा भी होगा। कृषि कार्य में नलकूप से लाभ होगा। परिवार में मांगलिक खर्चा का दायित्व निभाना पड़ेगा।

सत्संग का लाभ योग भी बनता है। वाहन से सावधान। ता. १०, २०, २२, २९ अशुभ हैं। **सितम्बर**–कार्य योग बढ़ेगा। नवीन उद्योग की स्थापना जैसा योग बनता है। भाइयों में बंटवारा जैसा योग भी बनेगा। वायु रोग का प्रकोप होगा। मित्र लोग अच्छी मदद करेंगे। स्त्री पक्ष से विवाद योग बनता है। शारीरिक व्याधि या चोट भी मंगल ग्रह से बनती है। ता. १०, १४, २२, २८ अशुभ हैं। **अक्टूबर**–व्यवसाय में बाधा योग। स्त्री वर्ग में भी संकट आयेगा। लोक प्रियता में कमी, लेकिन विजय योग आपका ही बनेगा। चिन्ता तथा भागदौड़ ज्यादा रहेगी। स्थान परिवर्तन, पदोन्नति या नया धंधा का अच्छा योग बनता है। पित्त रोग का प्रभाव भी बनेगा। ता. ७, १२, १८, २३ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–कारोबार मध्यम, आय कम, व्यय अधिक होगा। सफेद वस्तु का क्रय-विक्रय करें तो लाभ बनेगा। मित्र वर्ग नयी समस्या बढ़ायेंगे। सन्तान को भी कष्ट, क्लेश योग। यह माह अशुभ दायक रहेगा। ता. ३, ६, ९, १४, २०, २२, २६ अशुभ हैं। **दिसम्बर**–मांगलिक कार्यो में खर्चा बढ़ेगा। रिश्तेदारों में मान सम्मान बढ़ेगा। अचानक नयी योजना से नया धंधा भी कर सकते हैं। पदोन्नति एवं रोजगार लाभ का योग बनता है। कुछ स्थानों पर पारितोषिक भी प्राप्त होगा। क्रय-विक्रय योग आपका शुभ रहेगा। ता. ८, १३, २४, २७ अशुभ हैं। **जनवरी २०१०**–इस माह में आपको काफी शुभ समाचार मिलेंगे। नये व्यवसाय का शुभारंभ योग तथा विदेश यात्रा भी बनती है। मित्र वर्ग से शुभदायक कार्यों में सहयोग मिलेगा। परिवार में नया सदस्य का आगमन होगा। वाहन से सावधान। चोरी का भी भय बनता है। दक्षिणी यात्रा में लाभ बनेगा। ता. ५, १३, १९, २२, २३ व २६ अशुभ रहेंगी। **फरवरी**–विवाद जन्य मामले बनेंगे। पुराने विवाद का रहस्य खुलेगा। अशांति का योग बनेगा। माता-पिता एवं पत्नी को रोग भी बनेगा। राजपक्ष में बर्चस्व रहेगा। नेताओं के लिए यह माह यात्रा विशेष का रहेगा। मित्र वर्ग इस माह में आर्थिक लाभ दिलायेंगे। सम्मान प्राप्ति योग भी। ता. १३, २४, २७, २८ अशुभ हैं। **मार्च**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बंधुओं से सुख मिलेगा। घरेलू कार्यो में वृद्धि होगी। माता-पिता के आशीर्वाद से रोजगार लाभ भी मिलेगा। मित्र वर्गों में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। व्यापार में निवेश योग बनता है। आर्थिक लाभ भी। ता. १०, ११, १९, ३० अशुभ रहेंगी।

सिंह–मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

स्वामी सूर्य **नग माणक**

शनि की साढ़ेसाती। केतु १२वां, सू+चं+शु+बु ८वां इस वर्ष प्रारंभ में ग्रह योग अशुभ फलदायक है। नवग्रह शांति कराना आवश्यक होगा। शनि दान भी।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–एकाएक खर्चा का समाचार मिलेगा। पारिवारिक कार्यो में रुकावट बढ़ेगी। अनायास उदासी बनेगी। ता. २७ व २९ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–कफ, वायु विकार, वृथा खर्चा तथा रोग बाधा से चिन्ता रहेगी। स्त्री पक्ष से स्वास्थ्य हेतु मदद मिलेगी। नवीन सम्पर्क सूत्र की स्थिति बढ़ेगी। विवाद योग से बचें। पशुओं से भी सावधान रहें। रिश्तेदारों में सम्पर्क बढ़ेगा। ता. ३, ८, १०, २४, २७ अशुभ रहेंगी। **मई**–उत्साह बढ़ेगा। धंधे में परिवर्तन योग बनेगा। पारिवारिक संबंधों में कटुता बढ़ने का वातावरण बनेगां वाहन से सावधान। कृषि कार्यों में लाभ बनेगा। राजसेवा योग बनेगा। नयी कम्पनी की एजेंसी प्राप्ति का योग भी बनता है। सम्पत्ति लाभ तथा मांगलिक खर्चा बढ़ेगा। ता. ७, १४, १९, २४ अशुभ रहेंगी। **जून**–शिरशूल बाधा। विविध कार्यों में भागदौड़ रहेगी। मित्र वर्गों से सही मार्ग दर्शन मिलेंगे। व्यापारिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों में दायित्व बढ़ेगा। अनावश्यक यात्रा से बचें। कुछ स्थानों में मान सम्मान भी होगा। ता. ४, १०, १६, २०, २४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिवार कार्यों में [illegible] मित्र वर्ग आपको अचानक यात्रा करायेंगे। वाहन से सावधान रहें। रक्त पित्त रोग का प्रभाव बढ़ेगा। पारिवारिक कार्यों में काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक लाभ तथा राजपक्ष में योग ठीक बनेगा। विवाह योग भी। ता. ३, ७, १४, १९, २३ अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–पत्नी को कष्ट योग। सुखद कार्य की योग्यता बनेगी। सामाजिक सेवा योग बढ़ेगा। सन्तान पक्ष की बाधा, धार्मिक कार्यो का आयोजन खर्चा। कोर्ट कचहरी विवाद में हार बर्बादी का योग बनता है। कुलदेवी की पूजा करें। स्त्री द्वारा अच्छा मार्ग दर्शन मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना। ता. ८, १०, २२, २८ अशुभ हैं। **सितम्बर**–नये कार्य के प्रति चिन्ता योग बनेगा। प्रतियोगी वर्ग को सफलता एवं रोजगार लाभ बनेगा। विद्युत एवं जल से सावधान रहें। गुप्त रोग बंधन का भय भी रहेगा। कारोबार-धंधा में भी अड़चन बनेगी। पत्नि को पीड़ा योग बनेगा। सन्तान लाभ, भूमि भवन लेन-देन का अच्छा योग। ता. ३, ९, १७, २१, २४ अशुभ हैं। **अक्टूबर**–व्यवसाय में लाभ होगा। सन्तान पक्ष को भी लाभ मिलेगा। अनावश्यक विवाद से बचें। संबंध योग बढ़ेगा। रोमांश भी होगा। भूमि भवन में वृद्धि या निर्माण कार्य में गति मिलेगी। धार्मिक यात्राएं रद्द होंगी। मित्र वर्ग से शुभ सूचनाएं मिलेंगी। पुराना विवाद हो तो सुलझेगा। ता. ९, १४, १९, २३, २७ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–सम्पत्ति विवाद का योग। अचानक यात्रा योग। मांगलिक खर्चा परिवार में आयेगा। दायित्व एवं कर्त्तव्य बढ़ेगा। कृषि सेवा में अच्छा लाभ बनेगा। स्वयं को चोट का योग भी है। उदर विकार की संभावना। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। गायत्री उपासना करें। ता. ३, ११, २२, २७, २९ अशुभ रहेंगी। **दिसम्बर**–विवाद या कलह का योग। पत्नि द्वारा नया कार्य की योजना का प्रस्ताव तथा लाभ भी। प्रियजन या प्रेमी मिलन का माह शुभदायक है। नवीन कार्य में मित्र वर्ग भी मदद करेंगे। यात्रा योग में शारीरिक चोट का योग। पारिवारिक विवाद से बचें। पशुओं के लेन-देन से भी लाभ बनेगा। ता. ८, १२, २४, २९ अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–राजकीय कार्यों में लाभ होगा। किसी समाचार पत्र का संवाददाता बनने का शुभ समय चल रहा है। प्रेमी वर्ग से भी आर्थिक सहयोग मिलने का योग बनता है। यात्रा बस क्रय का योग बनता है। अचानक किये गये कार्य में विफलता योग। स्थान परिवर्तन योग भी है। ता. ४, ९, १८, २५, २८ अशुभ रहेंगी। **फरवरी**–प्रियजनों के साथ भ्रमण योग। उद्योग स्थापना का माह शुभदायक योग करता है। परीक्षण कार्य में सफलता योग। अनहोनी घटना से बचें। रोमांश के चक्कर में कारावास जैसा योग भी बनेगा। सत्तापक्ष के योगदान से कुछ लाभ बनेगा। नये सम्पर्क सूत्र से आर्थिक लाभ मिलेगा। ता. ७, १३, २०, २४ अशुभ हैं। **मार्च**–स्वास्थ्य में गड़बड़ होगी। मांगलिक कार्यों का खर्चा होगा। रोजगार का अवसर खुलेगा। शत्रु कमजोर होंगे। कारोबार में भी नवीनता आयेगी। प्रेमी जनों से आर्थिक लाभ मिलेगा। स्त्री को कष्ट योग भी बनता है। राजकीय कार्यों में लाभ अच्छा रहेगा। जमीन जायदाद का सौदा योग भी। ता. २, १०, १५, १९, २८ अशुभ हैं।

कन्या–टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

स्वामी बुध **नग पन्ना**

शनि-साढ़ेसाती अशुभ योग। मं+बु+शु+सू+चं वर्षारंभ में अशुभ है। सू+श+रा का योग खर्चा एवं चिन्तादायक रहेगा।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–मांगलिक खर्चा होगा। रोजगार आवेदन भरने का योग भी बनता है। शुभ यात्रा योग भी। ता. २७ व २९ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–इस माह में रोग से परेशानी होगी। घरेलू कार्यों की समस्याएँ बढ़ेंगी। स्वास्थ्य में गड़बड़ भी रहेगी। निजी लोगों से अनबन होगी। विदेशी सम्पर्क खूब बनने का योग भी बनता है। पारिवारिक कार्यों में कीर्ति बढ़ेगी। भूमि लाभ। ता. ७, ९, १४, २२ अशुभ हैं। **मई**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति

सुधरेगी। विद्यार्थी वर्ग को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्य योजना के निर्माण में मित्रों का सहयोग मिलेगा। स्त्रियों के लिए यह माह मांगलिक खर्चा वाला रहेगा। तथा कोर्ट कचहरी के मामले में विजय होगी। अपमानजनक मामले में स्त्री वर्ग का सहयोग समाधान में मिलेगा। ता. १, ४, ८, १२, १९, २३ अशुभ रहेंगी। **जून**–कार्यक्रम संचालन में बाधा। पुत्र को रोग व्याधि का योग है। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। विवाद में विजय। मित्र वर्ग नये स्थान में नये धंधे की जानकारी करायेंगे। स्थानान्तरण योग बनता है। जमीन जायदाद के विवाद से बचें। माता-पिता को काफी कष्ट योग। राजनैतिक योग प्रबल बनते हैं। ता. ७, ९, १४, २७, २८ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–वृथा व्यय बनेगा। अच्छे स्थान की यात्रा भी होगी। राज कार्य में अच्छी सफलता मिलेगी। राज सेवा योग भी बनता है। कारोबार बढ़ेगा। शनि ग्रह का योग भूमि पति यानि भूमि का अच्छा सौदा करायेगा। परिवार में शुभ कार्य एवं स्त्री वर्ग का भाग्योदय भी होगा। विदेश यात्रा योग बनता है। ता. ८, १३, १८, २२, २६ अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–आर्थिक लाभ होगा। शिक्षा में अभिवृद्धि, पारिवारिक कार्यों में सफलता। स्त्री पक्ष से लाभ मिलेगा। स्थान परिवर्तन योग तथा वाहन प्राप्ति योग बनता है। नयी योजनाओं का लाभ मिलेगा। कफ जन्य रोग से पीड़ित होंगे। अग्नि एवं जल का भय रहेगा। रोजगार प्राप्ति योग। ता. ६, ९, १२, १८, २४ अशुभ हैं। **सितम्बर**–वायु या पित्त का प्रभाव बढ़ेगा। अनावश्यक यात्रा से बचें। निजीजनों का सहयोग मिलेगा। विदेशी सामग्री का व्यापार में लाभ या एजेंसी की प्राप्ति करें, लाभ होगा। धार्मिक कार्यों का आयोजन भी होगा। रोजगार एवं राजकीय सेवा का योग बनेगा। सामाजिक आक्षेपों से बचें। ता. १२, १८, २७, ३० अशुभ हैं। **अक्टूबर**–पशुओं से भय रहेगा। मासान्त में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। फाइनेंस कम्पनी से सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। नये सम्पर्क में नये मित्र बनेंगे। विवादित मामला में पारस्परिक समझौता होगा। तथा कोर्ट का न्याय आपके हित में होगा। भ्रमण के दौरान चक्कर का योग भी है। ता. ३, ९, १६, २३, २८ अशुभ हैं। **नवम्बर**–स्वास्थ्य में गड़बड़ बनेगी। पशुओं से बचकर रहें, वाहन प्राप्ति एवं पारिवारिक कार्यों का दायित्व बढ़ेगा। सन्तान प्राप्ति का योग शु+बु+चं. की स्थिति से रोग ज्यादा भी बढ़ सकता है। राजपक्ष से भी बल मिलेगा। यात्रा प्रवास में स्वास्थ्य लाभ भी होगा। ता. ४, ९, १४, २१, २५, २७ अशुभ होंगी। **दिसम्बर**–पारिवारिक विवाद बढ़ेंगे। पुराना कार्य में भी हार बनेगी। स्त्री पक्ष से विवाद योग एवं राजनैतिक बाधाएं आयेंगी। राज पक्ष का सहारा बनेगा। नौका योग-दर्शन जल यात्रा भी बनेगी। अनावश्यक कार्यों का जिक्र चलेगा। रोजगार का लाभ मिलेगा। ता. ३, ९, १४, २०, २७, २९ अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–मांगलिक कार्यों का योग तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वाहन प्राप्ति का योग बनेगा। धार्मिक यात्रा होगी। किसी नये स्थान की यात्रा में आर्थिक लाभ होगा। माता-पिता की सेवा से दुर्घटना योग चलता-टलेगा। मित्र मण्डल में आपका वर्चस्व रहेगा। व्यापारिक गति बढ़ेगी। ता. ३, ८, १६, २२, २५ अशुभ हैं। **मार्च**–पुराने ख्यालों के शोध कार्य की इच्छा बनेगी। भाग्योदय का माह रहेगा। राजकीय सेवा का योग। विवाह योग तथा आर्थिक लाभ होगा। पर्यटन जैसी यात्रा भी होगी। नये कार्य के लिए मित्र वर्ग तैयार रहेंगे। स्त्री पक्ष की सलाह मानना स्वयं को लाभ प्राप्त होगा। ता. ७, ११, २१, २७, २९ अशुभ रहेंगी।

तुला–रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला

तुला राशि चक्रं

८ ६ ९ ७ ५ श. रा. गु. ४ के. ११ १० १ ३ मं. १२ २ सू.बु.शु.चं.

स्वामी शुक्र — नग हीरा

रा+गु+के+मं इस वर्ष पारिवारिक कार्यों में एवं धंधा में तथा शिक्षा के क्षेत्र में बाधक रहेंगे। स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–नवरात्रा साधना का शुभ योग बनेगा। आध्यात्मिक कार्य भी होगा। सन्तान प्राप्ति का समय है। ता. २८ व ३१ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–स्वास्थ्य में गड़बड़ रहेगी। उदर व्याधि बढ़ेगी। अशुभ समाचार प्राप्ति योग भी बनता है। यात्रा में संकट योग। रोजगार-धंधा प्राप्ति का योग बनेगा। प्रकाशन एवं लेखन संबंधी सम्मान प्राप्ति का अवसर बनता है। परिवार में नया सदस्य आगमन का योग है। ता. १०, १४, २२, २६ अशुभ रहेंगी। **मई**–शत्रु पक्ष से हानि। खर्चा विशेष योग बनेगा। शुभ समाचार प्राप्ति का योग है। नौकरी में पदोन्नति। व्यापार में तरक्की का भी योग बनता है। राज पक्ष से अच्छा लाभ बनेगा। मान-सम्मान प्राप्ति का अवसर। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्थाई सम्पत्ति में वृद्धि का योग बनता है। आर्थिक लाभ भी। ता. ४, ९, १६, २३ व ३१ अशुभ हैं। **जून**–स्त्री पक्ष से लाभ। यात्राएं होंगी। व्यापार एवं व्यवसाय में उन्नति का योग। वाहन प्राप्ति का भी अवसर। परिवार में नये सदस्य का आगमन योग। राज पक्ष से कुछ अभियोग आरोप भी लगेगा। राजनैतिक कार्यों से बचाव योग। जालसाजी कार्यों का त्याग करना हितकर होगा। ता. ६, ९, १३, १६, २४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–कार्य व्यवहार में प्रगति, धन लाभ का योग, खर्चा अधिक होने का योग। उदर रोग से पीड़ित होंगे। राजकीय व्यवस्था से ईलाज योग बनेगा। विदेश गमन+तीर्थाटन योग बनता है। नये कार्य के लिए मित्र वर्ग तत्परता से योगदान देंगे। भूमि भवन क्रय-विक्रय कर सकते हैं। ता. ९, १२, १६, २७, २९ अशुभ हैं। **अगस्त**–कारोबार में उन्नति होगी। शत्रु पक्ष निर्बल होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मांगलिक खर्चा का भी योग है। परिवार में कुछ विवाद योग बनता है। पत्थरी जैसा रोग का भी प्रभाव बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। परिभ्रमण चलता रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। ता. ११, १३, २१, २९ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–कार्य योजना धीमी चलेगी। आय कम खर्चा अधिक। ऋणी योग बनेगा। दौड़धूप अधिक रहेगी। विदेशी सामग्री का व्यापार लाभदायक होगा। मित्र वर्ग इस माह में अच्छी मदद करेंगे। गैर विधि के कार्य से दण्ड भी प्राप्त होगा। स्त्री पक्ष आपको नये कार्य हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगी। पशुओं से सावधान रहना शुभदायक रहेगा। ता. २, ११, २२, २८, ३० अशुभ हैं। **अक्टूबर**–इस माह में धार्मिक कार्यों का खर्चा विशेष बनता है। मुकद्दमे में विजय योग। काम में बाधाएं। स्त्री को रोग विकृति। नये व्यवसाय की योजना जन्म स्थान से बाहर करने हेतु बनेगी। जो लाभदायक होगी। रुका हुआ रुपया प्राप्ति के अवसर भी बनेंगे। नवीन कार्यों से लाभ। ता. ५, ११, १७, २३, २८ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–कार्य व्यवहार में बाधा धन का नुकसान, भाइयों से कुछ विवाद बनेगा। पत्नी का स्वास्थ्य खराब। शत्रु पक्ष से बचना शुभदायक। रक्त विकार की पीड़ा स्वयं को या त्वचा रोग। स्त्री से भी विवाद बनेगा। संबंधियों से झगड़ा बढ़ेगा। नेत्र रोग बाधा। अग्नि से भय भी होगा। ता. ९, १६, २२ व २५ अशुभ हैं। **दिसम्बर**–यात्रा योग बनेगा। कार्य योजना का विस्तार होगा। राज कार्यों में सम्मान प्राप्ति। नये शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। पुराना कार्य बनेगा। व्यवसाय में तरक्की होगी। भूमि भवन के लेन-देन में सावधान हानि होगी। पशुओं से सावधान रहें। कुछ नये स्थानों में भ्रमण भी होगा। ता. ८, १४, २०, २४ व २९ अशुभ हैं। **जनवरी २०१०**–वायु विकार बढ़ेगा। नेत्र पीड़ा योग भी होगा। निजी लोगों के द्वारा अपमान भी। माह अशुभदायक रहेगा। गायत्री मंत्र या नवग्रह की शांति आवश्यक है। रोजगार से लाभ मिलेगा। नये स्थान पर जाना पड़ सकता है। पारिवारिक विवाद बढ़ेंगे। आर्थिक कार्य में गति धीमी होगी। ता. १०, १९, २१, २६ व २८ अशुभ हैं। **फरवरी**–मित्रों से लाभ। परिवार में मांगलिक कार्यों का खर्चा। राजकीय कार्यों में लाभ। सेवा प्राप्ति का अवसर बनेगा। सन्तान पक्ष बीमारी से ग्रस्त। भूमि-भवन का योग बनता है। नये स्थान परिवर्तन के दो अवसर बनेंगे। वाहन से सावधान रहें। परिश्रम का लाभ मिलेगा। ता. ४, ९, १७, २४, २८ अशुभ हैं। **मार्च**–लड़ाई-झगड़े का योग बनता है। मानसिक अशांति का योग बनता है। मित्र वर्ग से नाराजगी बनेगी। व्यापार में गति

(शेष पृष्ठ १८५ पर)

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् २०६६ वि.

- स्त्री पक्ष का वर्चस्व बढ़ेगा। शैक्षिक उन्नयन एवं शासन योग भी बढ़ेगा।
- कार्यपालिका एवं न्यायपालिका कार्यप्रणाली में मतभेद बंनता रहेगा।
- ज़नता का जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्त्ताओं में अविश्वास़ योग।
- विधान सभा/ लोक सभा/राज्य सभा एवं स्थानीय निकायों में स्त्री वर्ग का प्रभाव बढ़ेगा। तथा अशोभनीय घटनाओं का कारण बनेगा।
- ठगी, चोरी, पाकिटमारी एवं सीमा उल्लंघन सम्बंधी घटनाऐं अधिक होंगी।
- अफवाहों का बोलवाला ज्यादा रहेगा। सत्यता पर प्रश्न चिह्न भी लग सकता है। वरिष्ठतम पदेन स्त्री वर्ग को कष्ट या अपहरण या हत्या जैसा योग भौम+शुक्र ग्रह योग से बनेगा।
- प्राकृतिक आपदाएं यत्र-तत्र घटित होती रहेंगी। पाश्चात्य मत के प्रभाव से बालिकाओं की मर्यादा खत्म जैसा योग बनेगा।
- बम ब्लास्ट एवं घुसपैठ सम्बंधी घटनाओं का अम्बार रहेगा।
- सैन्य शक्ति का प्रयोग यत्र-तत्र करना पड़ेगा। पाकिस्तान, चीन, नेपाल, हिन्द चीन, अमेरिका एवं अफ्रीका में भूगर्भीय घटनाओं का प्रभाव बनेगा तथा परस्पर विवाद से युद्ध के बादल भी मण्डरायेंगे। पाकिस्तान का वर्चस्व घटेगा।
- आतंकवादी गुटों द्वारा शक्तिशाली राष्ट्रों का हनन करने का योग बनेगा। तस्कर व शेयर्स बाजार में काफी आत्म हत्यायें होने का योग बनेगा। परस्पर धोखा योग विशेष बनेगा।
- शनि की दृष्टि से घटना का एकाएक होना तथा आपदा योग बनेगा।
- कृषक वर्ग के लिए यह वर्ष अच्छा फलदायक रहेगा। व्यापारी वर्ग भी वांछित लाभ प्राप्त करेंगे, लेकिन विश्व व्यापार संघ के प्रभाव से कुछ आपत्तियाँ विशेष बनेंगी।
- समुद्र तटीय प्रदेशों में जन धन की हानि का प्रभाव हमेशा बना रहेगा। तथा सुनामी, भूकम्प, आतंकवाद, विस्फोट, अकाल यत्र-तत्र तथा विद्युत संचार व्यवस्था में चिन्तादायक योग है।
- शिक्षा-संस्कृति-संस्कार-नारी का विकास जन्य अनेक योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्विति होगी। धनाढ्य वर्ग को लूटने का आतंक पश्चिम देशों में बनेगा।
- रूस, ब्रिटेन, भारत, चीन, ईराक, ईरान, इजराईल, अफ्रीका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मलेशिया, मॉरिशस, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, जर्मनी, जापानादि देशों में स्थानीय आपदाएँ, दुर्घटनाएँ एवं नैतिकता पतन जैसी घटनाओं का बाहुल्य रहेगा। हनन-हत्याएँ खेल बन जायेंगी।
- सिंह का शनि युद्ध का भय, अनहोनी घटनाएँ, नेत्र बाधा एवं शासक वर्ग में अचानक ध्वज झुकने जैसी घटनायें घटने का कारक होगा। अग्निकांडों एवं अन्याय का वर्चस्व बढ़ेगा।
- धार्मिक स्थल, धर्माचार्यों का स्थान भी अपवित्र करने जैसी वरदातें बढ़ेंगी। पाश्चात्य मतों का प्रभाव एवं मीडिया की वृद्धि के कारण शर्मनाक घटनाओं का बोलवाला होगा।
- निजी कम्पनियों का व्यापार बढ़ेगा। प्रत्येक विंभाग में निजीकरण की चर्चा चलती रहेगी।
- शैक्षिकोत्थानार्थ विदेशी अपना प्रभाव भारत में जमाने का प्रयास करेंगे तथा अभिवृद्धि होगी।
- वैज्ञानिकों का वर्चस्व बढ़ेगा। भूगर्भियान्वेषणों से नया तथ्य शोधार्थियों के लिए उपलब्ध होगा तथा अफवाहों का भण्डाफोड़ होगा। असत्य का पर्दाफाश होगा।
- छत्रभंग-मध्यावधि चुनाव एवं समन्वयात्मक ढांचे की सरकारें चलने का योग है।

विगत दो दशक से "श्री आर्यभट्ट पंचांग" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई इससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है। उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैव विद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैव विद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह

विस्तृत वर्णन योगानुसार

विक्रम संवत् २०६६ शाके १९३१ का वर्ष लग्नम्, वर्षेश तथा आर्द्रा प्रवेश लग्न योग इस प्रकार है–

वर्ष लग्नम् ६।२२

दिनांक २६-३-०९

वर्षेश लग्नम् ८।१०

दिनांक १३-४-०९

आर्द्रा प्रवेश लग्न १।५

दिनांक २१-६-०९

द्वादश मास भाव स्थान

प्रत्येक माह का प्रभाव भावानुसार

परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "वाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

शुभ मिति आषाढ़ बदी त्रयोदशी वि.सं. २०६६ तमे रविवासरे चन्द्रोच्च रोहिणी योग सूर्य देव आर्द्रा नक्षत्र में मध्यरात्रि बाद ३ प्रहर वेलायां वृषभ स्थिर लग्न में प्रवेश करने से तथा शनि ४था सामाजिक-पारिवारिक कार्यों में विवाद योग लेकिन वर्षा का योग अच्छा बनेगा। कृषक, व्यापारी एवं कर्मचारी सन्तुष्ट रहेंगे। तथा स्त्री वर्ग को नयी गति की जानकारी मिलेगी। धार्मिक आयोजनों का बाहुल्य रहेगा। १४ क्षय से रसकस की मांग बढ़ेगी। तेजी बनेगी। तथा सोमवती अमावस्या योग द्वितीय दिवस पर मृगशिरा के प्रभाव से राष्ट्रीय आषाढ़ प्रारंभ एवं सौर वर्णानुसार आर्द्रा में भुवन भास्कर दिन के ११।१२ घं. मि. पर प्रवेश करेगा। तथा दानादि योग बनेगा। "आषाढ़ी अमावस शुभ दिन मृगशिरादि रिख सात। उत्तम उपजेगी फसल उत्तम हो बरसात।।" तेरस दिन जो रोहिणी एक घड़ी जो होय। घणी अंधेरी चाल है वर्षा भी नहीं होय। चतुर्थी योग श्रवण नक्षत्र तिथौ तृतीय बढ़ जाय। चतुर्दशी के क्षय योग से तेरस भंग हो जाय।। यदि मंगल क्षेत्र में शुक्र पड़े नारी चेतना योग। अनायास ही भगदड़ मचै ऐसा बनेगा जोग।। यदि आषाढ़ सुदी पक्ष में प्रतिपदा युक्ति भौम। आषाढ़ी पूर्णिमा भौम की अग्निकाण्ड का व्यौम।।

वर्ष लग्न ग्रह योगानुसार ग्रह प्रभाव–चर लग्न-तुला स्थायी शुक्र जो कि लग्नेश एवं अष्टमेश बना है तथा स्वयं षष्ट भाव में चतुर्थ ग्रह युक्ति में शत्रु भाव में बैठा है। अचानक उपद्रव योग तथा गुप्त रूप से धोखा में लेकर हत्याएं–बलात्कार-भ्रष्टाचार का बोलवाला रहेगा। ग्रह युक्ति फल के अनुसार यत्र योग। **"एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंच खेचरा। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।"** वर्षारंभ में यही योग बनकर वर्ष पर्यन्त प्रभावित रहेगा। किन्हीं देशों के प्रशासकों की हत्याएँ भी बनती हैं। पश्चिम देशों में भुखमरी भी बढ़ेगी। गुरु नीच का तथा राहु की युक्ति से ग्रहण योग भी राजनैतिक कार्य प्रणाली में अस्थिरता का द्योतक है। **"गुरौ युक्ति राहवे भाव चतुर्थ प्रभाव। सौख्य बाधक योग बने हा-हाकार मचायः।।"** मंगल कुंभ का पंचम भाव में भूमि विकास, योजनाओं की क्रियान्विति में अपवाद रूप से बाधाएँ आयेंगी। केतु १०वां वैज्ञानिक तकनीक का वर्चस्व बढ़ेगा। शनि ११वां पिता क्षेत्र में आकर मान मर्यादाएँ भंग करने का योग करेगा। **"पिता नींद में सोच रहा फिर आये भू चाल। बेटा भी बन बैठेगा देखो पिता का काल।।"** के अनुसार शनि अशुभ कार्यों का प्रतीक होगा। क्योंकि भौम+शनि की दृष्टि तथा स्वक्षेत्री मंगल को प्रभावित करेगा। स्वयं पिता के क्षेत्र में शत्रु रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कारक शनि **"युद्ध का कारक भी बनेगा।"** जापान, टोकियो, ईराक, ईरान, आष्ट्रिया, कनाडा, पाकिस्तान, भारत, तुर्की, इंगलैण्ड, न्यूजीलैंड, कोरिया, गोवा आदि में प्राकृतिक बाधाएं भूस्खलन तथा अग्नि जन्य-दुर्घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। सावधान रहें।

वर्षेश लग्नानुसार–गु+रा=अशुभ। ऋण बढ़ेगा भारत का। चन्द्र नीच-खर्चा अधिक योग तथा योजनाओं की क्रियान्विति में सफलता ६० प्रतिशत तक बनेगी। केतु आठवां दुर्घटनाओं का प्रतीक है। शुक्र ४था सांसारिक जीवन जीने वाली बातों का शिविर लगेगा। प्रशिक्षण चलेगा। सू+बुध के योग से शैक्षिक स्तर का विकास एवं नयी-नयी योजनाओं की घोषणाएं तथा अनुवासनाएं भी होंगी। बेरोजगारी घटेगी। विकासात्मक गतिविधियों से भारत का वर्चस्व बढ़ेगा। मंगल तृतीय भाव शनि क्षेत्र में। शनि नवम में सिंह क्षेत्रे परस्पर सप्तम दृष्टि के योग से बंटवारा विवाद बनेगा। नये प्रान्त/नया देश बनाने की मांग का आन्दोलन चलेगा। अत: ग्रह अशांति यत्र-तत्र बनी रहेगी। साम्प्रदायक दंगों का बोलवाला उत्तराखण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश व तमिलनाडु में घटेगा या प्रभाव पड़ेगा। सूर्य देव की आकाशीय कौंसल (परिषद) में पदेन स्थिति (विभाग) अच्छी होने के कारण उष्णता (गर्मी) का वर्चस्व बढ़ेगा। जनता में उष्णता के प्रभाव से अनेक रोग एवं व्याधियों का भ्रामक योग भयंकर फैलेगा। वैज्ञानिक तकनीकी द्वारा समाधान चलता रहेगा।

आर्द्रा लग्न–ग्रहादि में शनि फसल को हानि करेगा। रा+के का प्रभाव अत्याचार एवं गुप्तचरों का वर्चस्व बढ़ने जैसा बनेगा। चं+बु की युक्ति चन्द्रोत्व सहित होना भारतीय संस्कृति का अनुकरण पश्चिमी देश करेंगे। तथा पुरस्कार भी प्राप्त करेंगे। मं+शु की मेष राशि में युक्ति होना त्यागपत्र-दाम्पत्य जीवन में सुख बाधा योग बनता है। अधिकारी एवं कर्मचारी सम्पर्क बाधा। राजनेता+जनता का कार्य योग बाधा बनेगी। अत: फणी चक्र का काल चक्र विशेष प्रतिष्ठित जन नेताओं के लिए यम (मृत्यु) का संकेत भी बनता है।

मेदनीय ज्योतिष–ग्रहयोगानुसार गणना एवं नक्षत्रानुसार ग्रह गति योग भविष्य फलम्

इस वर्ष का फल मध्यम बनेगा। गौ प्रजा की सेवा योग बनेगा। नेता-मंत्रि लोग भोगेंगे नया भोग। स्त्री वर्ग भी आतंक में होगी यह कुयोग। बंध्या स्त्रियों के इस वर्ष सन्तान योग शुक्र+चन्द्र की युक्ति से यह बने सुयोग॥ कृषक भी हर्षित होगा व्यापारी को भी लाभ। कर्मी लोग भी लाभ लेंगे स्त्री को सुलाभ।

प्रान्तीय भविष्य फल

राजस्थान–राशि तुला इस वर्ष का राजा भी, राशि स्वामी भी है। शुक्र ग्रह का प्रभाव जो राहु के साथ बैठा है ग्रहण योग का प्रभाव करेगा। अतः जनता में विश्वास जन्य बात नहीं रहेगी। दक्षिणी राजस्थान में हिंसा बढ़ेगी। उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान में रोमांश बढ़ेगा। नारी क्रय-विक्रय का धंधा चलेगा। राज सेवा में स्त्री वर्ग, प्रशासन में स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। मंगल+शनि के योग से गुप्त हस्तान्तरण/गुप्त हत्याएं/अमंगल कार्य की गति बढ़ेगी। कानून व्यवस्था संतोष जनक होगी। राजनैतिक गति में तीन पार्टियों का वर्चस्व रहेगा (भाजपा+बसपा+कांग्रेस)। सरकार मिलीजुली के घटनाक्रम में बनेगी। मंत्रिमंडल के गठन की बाधाएं विशेष रहेंगी। वर्तमान सरकार संकट में रहेगी। महिला मुख्यमंत्री का वर्चस्व बनता है। अनावृष्टि तथा चोरी डकैती का प्रभाव रहेगा। पूर्वी+दक्षिणी भाग में नदियों का जल स्तर सीमा लांघकर जन धन हानि करेगा। १४४ धारा का प्रयोग ज्यादा होता रहेगा।

पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश–विभिन्न राशियां प्रभावित। इन प्रांतों में कृषि कार्यों का विशेष विकास होगा। कृषक वर्ग हर्षित रहें। कांग्रेस+बसपा राजनैतिक पार्टियां हावी रहेंगी। राशि योगों से शनि+मंगल का सम सप्तक प्रभाव इन पर भी पड़ेगा और परस्पर विवाद दंगा फसाद से जनता का राज के प्रति विश्वास घटेगा। मुख्यमंत्रियों पर विपक्षी नेताओं का मायाजाल बढ़ेगा। सतापक्ष को निर्धारित घोषणाओं के अनुसार कार्य नहीं करने देगा।

"आगे पीछे बहुत ग्रह सूर्य के भौम अगार। सामाजिक उत्पात से होवे बहुत विगार॥"

"वक्र चाल चलते हुए, बुध मार्गी हो जाय। राजनीति का रुख तभी एकदम पलटा खाय॥"

दीपावली के आसपास यह घटना सामाजिक परिवेश में चलेगी। बुध भारी उथल-पुथल का कारण बनेगा। कश्मीर के मामले में चौकसी रखने की आवश्यकता है। अमेरिका शांति हेतु बीच में प्रयास करेगा। लेकिन वर्चस्व घटेगा। प्रान्तों में मुख्य शासक का काल ग्रास बनेगा। विश्व शांति परिचर्चा नाम मात्र की रह जायेगी। मकर का बृहस्पति नीच का होकर आंतकवादी घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। राजनीति का वर्चस्व खत्म होने जैसा योग। कूटनीति के योग से जनता को भय बना रहेगा। विदेशी पर्यटकों का अपमान भी होगा तथा प्रशासन चिंतित होगा।

गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटका, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़–इन राज्यों की राशियाँ एवं भौगोलिक स्थिति की अवधारणा मानें तो प्राकृतिक वातावरण यहाँ पर अनियंत्रित रहेगा। रा+के के प्रभाव से दलगत नीतियाँ प्रभावित होंगी। छदनवेशी योग का प्रभाव बढ़ेगा। प्रदेशों की सरकारों में भी अस्थिरता बनी रहेगी। डकैती, लूटपाट तथा तूफान योग से जन धन की हानि होगी। संतों के आश्रमों में भी काला बाजारी व्यापार का व्यवसाय चलने का संकेत बनेगा। इन राज्यों में जून ०९ से अगस्त ०९ तक तीन में काफी भूचाल बनेगा। **"भूम्यां नाशश्चतुष्पादगजहय वृषभैर्युद्ध सुभिक्ष रोगैः। पीडयन्ते सर्व देशाः उदधिपुर पथे दुर्गद शेषु भंगः॥"** चौपाये जानवरों को रोग बनता है। राजनेताओं की सभा स्थलों में हत्याओं का प्रयास योग बनता है। स्थानीय राजनैतिक पार्टियों का वर्चस्व बढ़ेगा। शिवसेना का अन्तर्कलह महाराष्ट्र में बढ़ेगा। भूचाल, तूफान एवं अन्य भूमण्डलीय घटनाएँ काफी चिन्ताकारक। तीन प्रांतों में ध्वज झुकने का योग है।

आसाम, बंगला देश, बिहार, झारखण्ड, मिजोरम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, भूटान, गोवा–इन प्रान्तों एवं देशों में शनि+मंगल+राहु+केतु ग्रह के योग से तथा शनि+मंगल के सम सप्तक योग के कारण परिसीमन विवाद से झगड़ा चलेगा। शैक्षण संस्थाओं में काफी तोड़फोड़ एवं हड़तालों का आयोजन बनेगा। कृषक वर्ग को व्यापारी वर्ग परेशान करेंगे। अक्टूबर+नवम्बर २००९ का समय इन प्रांतों के लिए परिवर्तनकारी होगा। वर्षा की अनियमितता-बाढ़, तूफान, वायु वेग का यत्र-तत्र बाधित प्रभाव जून+जुलाई २००९ में बनेगा। व्यक्तिगत विवादों में न्यायालय भी अपनी मर्यादा को खो देंगे। असम में क्षेत्रीयता का वर्चस्व बढ़ेगा। जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। उन्नतिशील कार्य की दशा भी चलेगी। प्रशासन एवं सरकारी नियंत्रणों में स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। ग्रह गति में शनि का प्रभाव– **"एकादश्यां शनौ तस्मित छत्र भंगोऽथवा भुवि। नगर भंगश्च स्यद्वैरिचौराद्युपद्रवाः॥"** इन राज्यों में सरकार बदल जाय। कोई महानगर गांव जिला तहस नहस हो जाय। प्राकृतिक आपदा योग इन स्थानों में विशेष बनता है। अन्दरूनी मामलों का प्रभाव परस्पर मनमुटाव चलता रहेगा। स्त्री वर्ग की विजय होगी। लेकिन सौदाबाजी चलती रहेगी।

विश्व स्तरीय घटनाक्रम प्रमुख राष्ट्रों की मिश्रित भविष्य वाणी

अन्तर्राष्ट्रीय भविष्य

जर्मनी, जापान, ईराक, ईरान, न्यूजीलैंड–इन देशों में इस वर्ष ग्रह योग से राज्यादि कार्यों में बाधा योग। शत्रुता का भाव बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदाएँ एवं अणु-परमाणुओं के प्रति कार्यशालाओं में अचानक दुर्घटनाएं शनि ग्रह के कारण बनेंगी। धार्मिक नेताओं का अपमान भी होगा। आतंकवादी लोग काफी परेशानियां करेंगे। स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। भारत के साथ तालमेल सामान्य होगा। धार्मिक आन्दोलनों का योग ज्यादा बनेगा। हथियारों का सौदा एवं भौतिक कार्यों के सम्पादन में गड़बड़ योग से गोली काण्ड या छदम वेशी योग बनेगा। मई २००९ से सितम्बर २००९ तक का समय विशेष प्रतिकूल बनेगा। राजनैतिक अस्थिरता तथा भूगर्भीय घटनाओं का मोड़ शोध रूप में चलेगा। विश्व व्यापार व्यवस्था में काफी वृद्धि का योग बनेगा। वाहन दुर्घटनाओं एवं प्राकृतिक आपदाओं का भय रहेगा।

अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, अण्डमान द्वीप समूह–शुक्र राजा एवं चन्द्र मंत्री के कारण इन देशों में तकनीकी योग विशेष बढ़ेंगे। नयी शिक्षा नीति तथा स्त्री वर्ग की सुविधा के लिए काफी राहतों की घोषणाएं बजट में की जायेंगी। शनि ग्रह से इन देशों में गुप्त कार्यों का वर्चस्व बढ़ेगा। तथा अमर्यादित कार्यों का बोलवाला होगा। विश्व व्यापार एवं खेलकूद प्रक्रिया में इन देशों का प्रभाव यथावत रहेगा। आर्थिक दृष्टि से मजबूती का योग बनता है। भारतीय व्यापार में इन देशों का योगदान बिगड़ सकता है। किसी विशिष्ट नेताओं की हत्याएँ अथवा अपहरण का योग भी बनता है। आंधी-तूफान, सुनामी के प्रभाव से ग्रसित होने का योग है। रचनात्मक पहलू श्रेष्ठ रहेगा।

लन्दन, रूस, बर्मा, चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, हिन्दचीन, बंगला देश–इन देशों में मंगल+राहु+शनि के योग से बीमारी का प्रकोप बढ़ेगा। पशुओं में भी विशेष बीमारी का योग। सतारूढ़ सरकारों का भविष्य विश्वास मत पर आधारित होगा। सतारूढ़ पार्टी को दबाव रूप में कार्य करना पड़ सकता है। आतंकवादी संगठनों को सहयोग भी कर सकते हैं। शनि+मंगल के सम सप्तक योग से विषम स्थिति का संकट मंडारायेगा। भारतीय संबंधों को सुधारने की बजाय चिन्ताजनक वार्ताएं बनेंगी। जून २००९ से अक्टूबर २००९ का समय इन देशों के लिए आपदा युक्त रहेगा। राजनैतिक पार्टियों में

विद्रोह का प्रभाव चलेगा। चीन+पाकिस्तान+बंगला देश अपनी सीमा को लांघ कर भी युद्धादि के रूप में प्रस्तुत हो सकते हैं। प्राकृतिक अपदाएं बाढ़ादि का भय भी रहेगा। व्यापारिक कार्य प्रणाली में काफी परिवर्तन का योग बनता है।

फ्रांस, ईजराईल, सिक्किम, नेपाल, भूटान, श्री लंका, युगोस्लाविया, मॉरिशस, मलेशिया–खगोलीय-ब्रह्माण्डीय घटना के आधार पर नक्षत्र ग्रह गति योग की गणना के मुताबिक यहां की सरकारों में तनावपूर्ण वातावरण रहेगा। मंगल+शनि के सम सप्तक योग के कारण **चत्वार पंच खेचरा** युक्ति के योग से मुख्य शासन पदच्युत होना या देवलोक गमन का योग बनेगा। पाकिस्तान का वर्चस्व कम होगा। परवेज मुर्शरफ इसके लिए अग्रगामी होंगे। पाकिस्तान भारत सहित अन्य देशों को मैत्रिता बनाकर धोखा देगा। फ्रांस में क्रीड़ा क्षेत्र पिछड़ेगा। इजराईल में खनिज समस्या विद्रोह का कारण बनेगी। अराजक तत्वों का बोलबाला बढ़ेगा। इन देशों की लग्न एवं कुण्डली का प्रयोग–**"छत्रस्य भंग सलिलस्य नाशो लोकेषु पीड़ा पशु-वित्त हानिः। स्वाच्छी विहिनो यदि चक्र वृति बक्रे च सौरी पितृ संस्थिते च॥"** अर्थात् कहीं सता परिवर्तन, कहीं अकाल स्थिति, जनता में भयंकर रोगों का संक्रमण, प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रभाव क्षेत्र नगण्य हो जायेगा। तथा वैज्ञानिकों का परीक्षण विफल होने का योग बनता है। राजनैतिक पार्टियों में अन्तर्कलह बना रहेगा। मशीनरी व तकनीकी शिक्षा का योग श्रेष्ठ, लेकिन दुर्घटनाएं अधिक होंगी।

भारत–वि.सं. २०६६ के प्रवेश लग्न तुला चर लग्नानुसार कार्य की प्रगति गति लेगी। लेकिन लग्नेश अष्टमेश शुक्र जो कि वर्ष का राजा भी है। स्त्री पक्ष का वर्चस्व बढ़ायेगा। स्त्री पक्ष का बाहुल्य योग बनेगा। शुक्र+राहु की युति से हत्याओं का अम्बार रहेगा।

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

भाव	ग्रह
३ मं.	
रा.बु. सू.च.श. ४	
२ रा.	
१	
१२	
५	
११	
६	
के. ८	
१०	
गु. ७	
९	

गणतंत्र दिवस कुण्डली

न्यायालयों में भीड़ बढ़ेगी। मंगल के प्रभाव से रक्त विकार, रोग तथा कृषि जन्य शिक्षा का विकास होगा। जातिगत निर्णयों से सरकार का संचालन चलेगा। सभी राजनैतिक पार्टियों का वर्चस्व गिरेगा। खनिज सम्पदा की खोज होगी। नारी के नेतृत्व में काफी योजनाओं की क्रियान्विति होगी, चुनावों में नारी हत्याओं की घटना भी घटेगी। शनि+मंगल का समसप्तक योग राजतंत्र में विघटन का घटक बनेगा। किसी भी एक पार्टी को केन्द्रीय एवं क्षेत्रीय/प्रान्तीय सरकारें बनाने का योग नहीं बनता। मिश्रित सरकारों के गठन का योग बनता है। राहु+केतु (४था ७वां) व्यापारिक सौदों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने तथा तीन बार राष्ट्र ध्वज झुकने की घटनाएं निंदनीय होंगी। आतंकवाद एवं घुसपैठ का वर्चस्व बढ़ेगा। कृषि क्षेत्र में भारत का विकास होगा। तकनीकी शिक्षा संस्थाएं खुलेंगी।

राजनैतिक पार्टियों का भविष्य फल

राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी–ग्रहों के योग से पार्टी के नेतृत्व में रुकावट बन सकती है। सन् २००९ से २०१० तक ग्रहयोग निर्बल बन रहे हैं। अन्य पार्टियों से मनमुटाव तथा शीर्षस्थ नेता को पद्च्युत करने का योग बनेगा। दक्षिणी भारत में नेतृत्व बढ़ेगा। उड़ीसा, बंगाल, बिहार में पतन का कारण बनेगा। राजसत्ता में बहुत संकट का सामना करना पड़ेगा।

दल में दो मतों का उदयमान भी बनता है। यदि नेतृत्व परिवर्तन या हत्या योग बनता है तो पार्टी पतन की ओर चलेगी। भविष्य संकट युक्त है।

भाजपा–इस पार्टी में नेतृत्व का अभाव लक्षित होगा। व्यक्तिवाद के वर्चस्व से पार्टी की छवि में उदासीनता बनेगी। खुरापाती योग (मंगल+शनि से) बनता है। अतः इसका मार्ग प्रशस्तकर्त्ता की आवश्यकता होगी। नारी शक्ति इसका कमान लेती है तो वर्चस्व बढ़ेगा। क्योंकि शुक्र ग्रह राजा स्त्री का कारक बनता है। दिनांक १६ अप्रैल से २० जुलाई ०९ तक का समय प्रतिकूल होगा। पार्टी के कार्यकर्त्ता ही पार्टियों की छवि धूमिल करेंगे। जनाधार का विश्वास पार्टी में नहीं होकर व्यक्ति विशेष को मान्य करेंगे। पंजाब, राजस्थान, हि.प्र., गुजरात, तमिलनाडु में कुछ वर्चस्व बनेगा।

बसपा–इस पार्टी को शनि ग्रह आगे बढ़ाने में शुभ योग करेगा। यह पार्टी शासन तंत्र की सहयोगी बनेगी। सन् २००९-२०१० तक ढैय्या शनि राज सिंहासन दिलायेगा। तथा सम्पूर्ण भारत में सफलता का सोपान चलेगा। इसकी छवि में सुधार होगा। नेतृत्व अच्छा प्रतीत होगा। विशिष्ट व्यक्तियों का समावेश होना भी बनता है। दो नेताओं का अवसान योग भी बनता है।

सपा–यह पार्टी भी प्रगति की ओर रहेगी। अनावश्यक घटनाओं का शिकार बनेगी। ईर्ष्या की भावना से दल में कुछ विघटन योग भी बनेगा। झारखण्ड, बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में सीटों का तालमेल अच्छा तथा विजय योग सहित सरकार में सहभागिता बनती है।

जद–इस पार्टी का कारक ग्रह राशि से शनि शुभदायक है। क्षेत्रीय पार्टी होकर भी आगामी चुनावों में तालमेल बिठाने में सफलता प्राप्त करेगी। इस पार्टी में नेतृत्व की क्षमता अच्छी बनती है। जनता का विश्वास बनाने में सक्रियता रहेगी। बिहार का नेतृत्व श्रेष्ठ रहेगा।

माकपा–माकपा पार्टी शनि ग्रह से बाधित होगी तथा भविष्य में अच्छी सफलता का अभाव रहेगा। बंगाल प्रान्त में व्यक्तित्व पर पार्टी का मंगल चलेगा।

अन्य एवं निर्दलीय–बड़ी-बड़ी पार्टियां भी इनके सदस्यों से भयभीत रहेंगी। १० से १५ प्रतिशत वर्चस्व भविष्य में पूर्व से बढ़ेगा।

उत्साह उमंग एवं कार्य क्षमता के साथ सरकारों में सहभागिता निभायेंगे।

व्यक्तिगत भविष्य फलम्

महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल–इनको शनि की महादशा के शुभ प्रभाव से सर्वोच्च पद मिला। शुक्र+गुरु का परिवर्तन योग श्रेष्ठता का प्रतीक राजनैतिक एवं प्रशासनिक योग में सर्वोच्च पद प्रदान कराया। वर्ष २००९-२०१० में भी इनकी ख्याति बढ़ेगी। तथा राहु+केतु के कारण स्वास्थ्य की स्थिति न्यून (कमजोर) होगी। शासन तंत्र में नियंत्रण अच्छा रखेंगी। कीर्ति चारों दिशाओं में शुक्र राजा होने के कारण बढ़ेगी। अक्टूबर २००९ में सावधान रहें।

उपराष्ट्रपति महामहिम–श्री हामिद जी अंसारी–आपको पद लाभ मंगल के योग से बना है। कार्यग्रहण काल का समय उत्तम होने के कारण शत्रु पक्ष परास्त होंगे। आपके लिए शुभ समय चल रहा है। दिनांक ३० मई से २८ जुलाई ०९ तक स्वास्थ्य एवं दुर्घटना का ध्यान रखें। राज्य सभा की मर्यादा में आपका नेतृत्व सराहनीय होगा। पूर्वी विदेशी यात्रा में संकट योग बनता है।

प्रधानमंत्री श्री मान डॉ. मनमोहन सिंह जी–ग्रह योग में शासन सत्ता कार्यकाल में संकट योग बना है। अतः संकट का सामना करना पड़ेगा। संकट में ही प्रधानमंत्री का पद पर शोभनीय एवं अशोभनीय घटनाओं का शिकार बनना पड़ेगा। मई २००९ में स्वास्थ्य गड़बड़ का योग भी बनता है। लम्बी यात्राएं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होंगी। दुर्घटना के ३ योग शनि के कारण बनेंगे। सावधान।

श्रीमती सोनिया गांधी (अध्यक्षा कांग्रेस पार्टी)–आपकी कुण्डली में राज योग भंग का क्रम चलता है। लेकिन महिलाओं का नेतृत्व आजीवन रहेगा। जनता में आपका विश्वास चलेगा। लेकिन छदमवेशी राज नेताओं से बचकर कार्य करना शुभदायक रहेगा। विपक्षीय सत्ता का वर्चस्व प्राप्ति का योग है। जून २००९ में हवाई दुर्घटना का योग भी बनता है। शारीरिक कष्ट होगा। पार्टी में विघटन की समस्या आने का संकेत बनता है। शुक्र+गु ४थे आपको सत्ता पक्ष के सहयोग में सेवा का लाभ दिलायेगा। अचानक नया नेतृत्व का चयन आपका है। सरकार में सहभागिता योग है।

श्री राहुल गांधी–सन् २००९ व २०१० आपके लिए शुभ रहेगा। विजय योग बनेगा। पार्टी का नेतृत्व भी मिल सकता है।

शारीरिक-पारिवारिक, यात्रादिक एवं गुप्त शत्रुओं से भी सावधान रहें। दक्षिणी दिशा में मृत्यु तुल्य कष्ट भी बन सकता है। प्रधानमंत्री जैसे योग भी बनते हैं। दिनांक २४ मई से २८ सितम्बर २००९ तक ग्रह योग निर्बल तथा दुर्घटना योग भी बनता है। सुरक्षा व्यवस्था पर ध्यान रखें तो शुभदायक होगा।

श्रीमती प्रियंका बढेरा–यह स्त्री कांग्रेस के नेतृत्व में वर्चस्व बढ़ा सकती है। इनके ग्रह योग २००९ व २०१० में पदासीन होने के बनते हैं। गुप्त शत्रुओं से सावधान भी रहें। छदमवेशी योग कष्ट बाधा भी देंगे। दिनांक १५ मई से २० अगस्त २००९ तक सावधान रहना चाहिए। सुरक्षा प्रहरी भी धोखा दे सकते हैं। कन्या का शनि इसे राजनीति का विशेष लाभ भी देगा। पारिवारिक संबंध बिगड़ भी सकते हैं।

माननीय श्री अटल बिहारी जी वाजपेयी–आपका समय अच्छा नहीं है। सामान्य योग है। स्वास्थ्य की स्थिति बिगड़ेगी। रा+के के कारण चोट योग भी बनता है। स्त्री पक्ष से खतरा भी बनेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। राजनैतिक हल चल में पहल करना वर्चस्व खोना बनेगा। भाजपा में भी निर्देशन शून्य रहेगा।

श्री मान लालकृष्ण जी अडवाणी–यह वर्ष शनि+मंगल+रा+के+शु के योग से कष्टदायी बनेगा। पार्टी से जीत का योग तो बनेगा, लेकिन बहुमत का अभाव रहेगा। आपकी योजना से जन समूह में विद्रोह होगा। प्रगति नजर नहीं आती है। प्रधानमंत्री बनने के आसार न्यून बनते हैं। अक्टूबर २००९ तो शारीरिक दृष्टि से विशेष अशुभता सूचक बनता है। सावधान रहें। यात्राएं भी कष्टदायी रहेंगी।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम–आपका वर्चस्व बढ़ेगा। नवीन तकनीकी क्षेत्र में शोध संस्थान में अहम भूमिका होगी। आपका स्वास्थ्य जुलाई ०९ से अक्टूबर ०९ तक प्रतिकूल होगा। आपके मार्ग दर्शन से भारत का आणविक विकास होगा। तथा विश्व में भारत का वर्चस्व बढ़ायेंगे। दुर्घटना योग भी है।

पूर्व उपराष्ट्रपति मान्य श्रीमान भैरों सिंह शेखावत–आपकी अभी बृहस्पति की दशा चल रही है। यह सामाजिक कीर्ति आध्यात्म योग है। वृद्धि करता है। लेकिन राजनीति में स्थिति धूमिल बन सकती है। स्वास्थ्य भी आपका प्रतिकूल रहेगा। जून से अक्टू. ०९ तक का समय चिन्ताजनक रहेगा। अशोभनीय घाटा योग भी बन सकता है। दुर्घटना योग भी बनता है।

श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया मुख्यमंत्री राज. सरकार–आपका व्यक्तित्व निखरेगा। व्यक्तित्व कार्य सीमा में सन्तुष्टि बढ़ेगी। पुनः सत्ता का योग भंग होता है। नये चेहरे भी सामने आयेंगे। स्वयं की जीत होगी। पार्टी का नेतृत्व जिम्मा भी आ सकता है। तोड़ जोड़ कर राज पक्ष में मुख्यमंत्री पद का आसार भी बनता है। अन्तर्कलह से वर्चस्व में न्यूनता आयेगी। तीन दुर्घटना योग भी बनेंगे।

श्री राजनाथ सिंह–राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा का पद छिन सकता है। बृहस्पति ग्रह+मंगल+शनि+राहु+केतु का प्रभाव सीधा पड़ेगा। उत्तर प्रदेश में आपका वर्चस्व बढ़ सकता है। कार्यकाल सन्तोषजनक हेतु यश प्राप्ति भी होगी। विजय भी होगी। चोट की घटना का योग बनता है। विपक्षी भूमिका निभाने का योग।

सुश्री मायावती (मुख्यमंत्री उ.प्र.)–आपकी कुण्डली के योगानुसार चन्द्रमा, गुरु तथा दृष्टि योग शुभ होने से आपका वर्चस्व बढ़ेगा। आपका कार्य क्षेत्र भी बढ़ेगा। पार्टी का प्रभाव सम्पूर्ण भारत में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए सत्ता पक्ष के नजदीक पहुंच सकते हैं। नेतृत्व आपका अच्छा रहेगा। तीनों प्रान्त उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल/झारखंड में वर्चस्व बढ़ेगा। राजस्थान में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

माननीय श्री मुलायम सिंह यादव–आपका वर्चस्व व्यक्तिगत गिरेगा। पार्टी में कुछ कलह बनेगा। आगामी चुनावों में आपकी पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा। अन्तर्कलह के योग से आप चिंतित होंगे तथा मायावती-मुलायम का पश्चिम-पूर्व की दूरी तुल्य विवाद चलेगा। तथा विवाद में हार श्री यादव की होगी। सितम्बर ०९ से नवम्बर ०९ तक का समय नेष्ट (अशुभ रहेगा)।

श्री एम. चन्द्र बाबु नायडु–इस वर्ष राजनैतिक जीवन में काफी मोड़ तथा नये सम्पर्क सूत्रों का योग बनेगा। किसी पुराने विवाद में सफलता मिलेगी। मानसिक अशांति का योग भी बनता है। राजनीति से सन्यास लेना लाभदायक रहेगा। नियंत्रण एवं नेतृत्व में शिथिलता तथा वाहन या चोट का भय भी कार्य प्रणाली की प्रक्रिया के दौरान घटने का योग बनता है।

श्रीमान प्रणव मुखर्जी–राजनीति में वर्चस्व यथावत रहेगा। कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। सिनेमा जगत के द्वारा माल्य अभिवादन किया जायेगा। परिवार में अकाल मृत्यु का कुयोग भी बनता है। अपहरण या दुर्घटना का योग बनता है। पार्टी में आपका पदेन योगदान सराहनीय रहेगा। नवीन व्यवसाय का भी योग बनता है।

श्रीमान शरद पंवार–इस वर्ष आपका समय संकटदायक रहेगा। नवीन पार्टी के निर्माण में विफलता तथा जीत का योग भी सामान्य बनता है। क्षेत्रीय पार्टी के संरक्षक रूप में कार्य आप करेंगे। केन्द्रीय पार्टी के गठन या निर्माण में आपका योगदान रहेगा। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। शनि+मंगल का सम सप्तक योग मृत्यु तुल्य कष्ट भी देगा।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी–आपके लिए वि.सं. २०६६ नयी सौगात, प्रधानमंत्री का पद प्राप्ति जैसी घटना का लाभ प्रदान कर सकता है। धनु लग्न जन्य योग के प्रभाव जातक बलहीन होकर भी विश्व में कीर्ति बढ़ायेगा। आप भाजपा के नेतृत्व को तो विजय के साथ सत्ता पक्ष में आप पद प्राप्त कर सकते हैं। कष्ट योग दिनांक ३० जून ०९ से २८ सितम्बर २०१० तक रहेगा।

श्री मान लालू प्रसाद यादव (रेल मंत्री)–वि.सं. २०६६ में ग्रह योग आपके लिए शुभ रहेंगे। पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा। स्वास्थ्य कुछ कमजोर होगा। उपप्रधान मंत्री पद तक शोभायमान होने का योग बनता है। रेल यात्रा में अचानक परेशानी। छदमवेशी लोग चिन्तादायक घटना करेंगे। आपको सन् २०१० में विशेष राजपद योग यानि केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व भी प्राप्त हो सकता है।

श्री एम. करुणानिधि–वि.सं. २०६६ में आपको रोग व्याधि का प्रभाव बनेगा। पार्टी पक्ष की सदस्यता में भी कमी, लेकिन अहंकारिता के प्रभाव से आप अपयश प्राप्त करेंगे। राजनैतिक योग न्यून है। तथा वर्ष के अन्त तक मृत्यु तुल्य कष्ट बनेगा। ३० सितम्बर ०९ से ३० दिसम्बर ०९ तक संकट योग में आपका वर्चस्व न्यून बनेगा। विजय योग भी नहीं बनता है।

श्री पी. चिदम्बरम (वित्त मंत्री)–वि.सं. २०६६ में आपको नवीन पद का योग बनेगा। मंत्रिमण्डल परिवर्तन के विघटन योग में आपका परिवर्तन होगा। कार्य शैली में सुन्दरता का योग कम रहेगा। सन्तोषजनक के लिए प्रयास करेंगे। किसी पक्ष से कीर्ति-घोटाला रूप में बिगड़ेगी। पुनः चुनाव में विजय योग की संभावना न्यून बनती है। शारीरिक व्याधि सतायेगी।

श्री मान शिवराज पाटिल–सामाजिक जीवन, राजनैतिक जीवन में संकट योग, परिवार में अशोभनीय घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। आपकी गठित पार्टी का वर्चस्व शनि ग्रह के कारण न्यूनता की ओर

होगा। छदमवेशी शत्रु पक्ष का प्रभाव बढ़ेगा। केन्द्रीय सरकार में आगामी चुनावों में पद प्राप्ति का योग बनता है। दिनांक २० जून ०९ से २४ अक्टूबर ०९ तक समय प्रतिकूल रहेगा।

सुश्री उमा भारती–इस वर्ष का राजा शुक्र तथा आपका राशि पति शुक्र के प्रभाव से राजनैतिक कार्यों में आपका घटा हुआ वर्चस्व पुनः प्राप्त होगा। चुनावी दौरों में शत्रु पक्ष प्रबल रहकर आपको चोट पहुंचायेंगे। आपकी विजय होगी तथा राज्य स्तर या केन्द्रीय मंत्री मण्डल में स्थान प्राप्त होगा। सत्य एवं कटुता की कहानी से लोग आपको सहयोग शुक्र के कारण करेंगे। वर्ष शुभ है।

श्रीमती शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार)–आपका राजयोग आजीवन प्रतीत हो रहा है। आपका राशि पति शनि राज कराने में खूब योग कर रहा है। साम्प्रदायिक विवादों से बचें, अन्यथा छबि धूमिल हो सकती है। विमान दुर्घटना का योग ३० अगस्त ०९ से १० अक्टूबर ०९ तक बनता है। स्वास्थ्य योग सामान्य बनेगा। शिथिलता एवं उदासीनता होते हुए पूर्ण दायित्व वहन करते हुए कार्य में सफलता प्राप्त करने का साहस चलेगा। शत्रुता के प्रभाव से मृत्यु तुल्य कष्ट बनने का योग है।

श्रीमती सुषमा स्वराज–वर्ष २०६६ का घटना क्रम आपके लिए प्रतिकूल बनेगा। व्यक्तिगत विरोध बढ़ेगा। पार्टी में नया पद प्राप्ति का योग बनता है। पुनः विजय योग में भी सन्देह बनता है। अहंकारिता के प्रभाव से राजनैतिकता का लाभ नहीं होकर मनोनयन से चयन का लाभ मिल सकता है। दिनांक १४ मई से २४ अगस्त ०९ तक बीमारी दुर्घटना तथा लज्जा भंग जैसा योग बनेगा।

श्री जार्ज बुश (अमेरिका राष्ट्रपति)–आपका यह वर्ष रोग कारक तथा संकटदायक एवं अविश्वसनीय कार्यों की बाधाओं से सतायेगा। विश्व स्तर में आपकी वाणी का विरोध होगा। देश में अपराध बढ़ेंगे, जिसका दोष आप पर लगेगा। राजनैतिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन में भी नया मोड़ आयेगा। दिनांक २० जून से ३० अगस्त ०९ तक का समय संकटदायक रहेगा।

श्री टोनी ब्लेयर (ब्रिटेन प्रधानमंत्री)–संवत् २०६६ का शुक्र आपको पारिवारिक ऐश आरामों से लाभदायक योग करेगा। स्त्री पक्ष द्वारा ही मान हानि की घटना तथा विवाद के घेरे में आने का संकेत बनता है। भारत के साथ मैत्री भाव बढ़ाकर भी लाभ नहीं प्राप्त कर पायेंगे।

श्री परवेज मुशर्रफ (पूर्व पाकिस्तान राष्ट्रपति)–आपको वर्ष २०६६ उदासीनता का घटक बनेगा। शनि+रा+के. के कारण स्थान छोड़कर जीवन जीना पड़ेगा। पुनः सत्ता पक्ष प्राप्त करने की आप योजना बनायेंगे। सन् २०१०-११ में इसका लाभ प्रतिकूल या अनुकूल बनेगा। हार या जीत या मौत जैसा वातावरण का मुकाबला करना पड़ेगा। जेल यात्रा का योग भी बन सकता है।

मुस्लिम राष्ट्र–इस वर्ष मुस्लिम राष्ट्रों में दो नये संगठनों का उदय शुक्र+चन्द्रमा के योग से बनेगा। यह संगठन मुस्लिम पारिवारिक नियमों एवं आचरण धारणा का सम्पादन करेंगे। तथा धार्मिक आयोजनों का प्रभाव विशेष बनेगा। संगठनों का कहीं-कहीं विरोध प्रदर्शन भी होगा।

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र–वर्ष २०६६ में शुक्र+चन्द्रमा का बल इस केन्द्र को मिलेगा तथा नये अन्वेषणों (शोध) से पाश्चात्य देश चकित हो जायेंगे। मानव जीवन में सेवार्थ उपकरण बनेंगे।

विभिन्न लघु पार्टियों का संक्षिप्त भविष्य फलम्

यू.पी.ए. गठबंधन–यह पार्टी निखरने का योग बनेगा। वि.सं. २०६६ में अनेक खण्ड-खण्ड या विवाद का योग बनेगा। कालसर्प की बाधा बनेगी। मकर का गुरु विघटन का द्योतक रहेगा। राजपक्ष में विवादित रहकर समय गुजरेगा। शनि से परस्पर विद्रोह होगा। सरकारी नीति असंतुष्ट होगी।

शिवसेना–इस पार्टी का वर्चस्व २०१० से २०१५ तक बनेगा। तथा राजतंत्र में सहभागिता रहेगी। दिनांक २५ मई से ३० सितम्बर ०९ तक खर्चा बढ़ेगा। परस्पर विवाद बनेगा। अभद्रता का योग बनेगा। मध्यावधि चुनाव में कुछ वर्चस्व बढ़ेगा। जनता का विश्वास घटेगा। कार्यकर्त्ताओं में आचार विचारों में परिवर्तन बनेगा। महाराष्ट्र में विवादित योग चलेगा। बड़े नेता की हत्या भी हो सकती है।

करणी सेना–इसका वर्चस्व सन् २०१६ में बढ़ेगा। तब लोगों का विश्वास बढ़ेगा। विवादित सदस्यों का वर्चस्व घटेगा। राजस्थान में क्षेत्रीयता के प्रभाव से जीवन एवं गठन में संगठन होगा। शुक्र+मंगल+चन्द्र के व्यक्ति विशेष को चोट योग भी बनता है।

संयुक्त मोर्चा–वि.सं. २०६६ में इस मोर्चे का पतन जैसा योग बनेगा। या किसी पार्टी में विलय का योग बनता है। नयी पार्टी का गठन व्यक्ति के नाम पर होने का योग बनता है। जो सरकार मिश्रित बनेगी उनकी ओर से पार्टी का नया गठन सन् २००९ जून में बनने का योग है।

आकाली दल–यह पार्टी अग्रगामी बनेगी। क्षेत्रीय रूप में स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ेगी। सन् २०१३ से २०१७ तक इसका वर्चस्व भारतीय स्तर तक फैलेगा। पार्टी में तर्क-वितर्क के योग से विवादात्मक स्थिति बनेगी। दिनांक १३ मई से ३० जुलाई ०९ तक चिन्तादायक योग है।

बजरंग दल–यह पार्टी धार्मिक स्थलों पर कार्यक्रमों का आयोजन करके विद्रोह फैलायेगी। चुनावी कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा। दिनांक १७ जून ०९ से ३० जुलाई ०९ तक अशुभ समय रहेगा। न्यायालय संबंधी तर्क वितर्क भी बनेगा। शनि के प्रभाव से आर्थिक संकट भी बढ़ेगा।

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा–छ.ग.+झारखंड में क्षेत्रीयता का लाभ प्राप्त होगा। सन् २०११ से २०१३ तक बढ़ेगी तथा राजनैतिक स्तर घटेगा, परंतु वृद्ध नेता की हत्यायें भी होने का योग बनता है। दिनांक १६ जुलाई से २४ नवम्बर ०९ तक संकट का योग बनेगा। विवादित रूप रहेगा।

अन्य घटक, केन्द्र संस्थानों का भविष्य फलम्

त्रिपुरा प्रान्त–यह प्रान्त प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होगा। औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होगा। इसमें धार्मिक जीवन हेतु काफी अच्छे-अच्छे कार्यक्रम होंगे। दिनांक १४ अगस्त से ३० सितम्बर ०९ तक कठिनाई का समय रहेगा। पर्यटकों का आना-जाना बढ़ेगा। सरकार अस्थिर रहेगी।

तिरुपति बालाजी, रामदेवरा, श्रीनाथ जी, एक लिंग जी, श्री सालासर जी, श्याम जी खाटू एवं मेहन्दीपुर बालाजी–इन स्थानों में सरकारी नियंत्रण बढ़ाना होगा। घुसपैठियों का वर्चस्व बनेगा। आंशिक लोग भीड़ में ही खत्म होने का योग बनता है। महन्तों पुजारियों में विघटन का भी योग बनता है। न्यायालय प्रकरण भी बनने का योग है। लोग चिंतित रहेंगे।

लोकसभा–मंगल+सूर्य के प्रभाव से एवं शनि की दृष्टि से अशांति जन्य वातावरण रहेगा। राष्ट्रपति महोदया को भी लोकसभा में अशांति का सामना करना पड़ सकता है। सन् २००९ में लोकसभा की स्थिति भौतिक रूप से चिन्तनीय रहेगी। शोर शराबा चलेगा।

राष्ट्रीय महिला आयोग–शुक्र ग्रह के प्रभाव से इस वर्ष यह आयोग काफी मजबूत होगा। कानूनों की अनुपालना तथा अधिकारों की मांग में सफलता प्राप्त करेगा। आर्थिक स्थिति भी मजबूत तथा विश्व में कीर्ति का ध्वज फहरायेगा।

वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र–शुक्र ग्रह के योग से नवीन अनुसंधान औषधि निर्माण-शारीरिक अन्वेषणों से आणविक वृद्धि तथा तकनीकी योग का लाभ मिलेगा।

वि. सं. २०६६ में मकर राशिस्थ राहू का राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि—मेष राशि वालों को दसवां राहू सामानय फलदायक रहेगा। स्थाई सम्पति से सम्बन्धित विवादों में संघर्ष से सफलता मिलेगी। राजकीय कार्यों में सफलता।

वृष राशि—वृष राशि वालों को नवम् भाव का राहू बनते कार्यों में बाधाऐं उत्पन्न करेगा। श्रम संघर्ष से अल्प लाभ। भाग्यावरोध की स्थिति। धार्मिक यात्राएं। आत्मविश्वास में वृद्धि।

मिथुन राशि—मिथुन राशि वालों को अष्टम राहू अशुभफल प्रद रहेगा। रोगोपद्रव की स्थिति बनेगी। अनचाही यात्राऐं। आय कम खर्च ज्यादा। हिंसक जानवरों से सावधानी रखें।

कर्क राशि—कर्क राशि वालों को सप्तम् राहू मध्यम फल प्रद होगा। साझेदार से अनबन पत्नी को स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी। व्यापार में परेशानियाँ। स्वयं को मानसिक उलझनें रहेंगी।

सिंह राशि : सिंह राशि वालों को छठा राहू शुभ फल देने वाला है। आर्थिक स्थिति मजबूत। शत्रु हार मानेंगे। स्वयं का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। ऋण भार में कमी होगी।

कन्या राशि—कन्या राशि वालों को पंचम राहू मध्यम फलकारक रहेगा। विद्या के क्षेत्र में सफलता रहेगी। सन्तान पक्ष से परेशानी। सट्टेबाजी से हानि। लाभ के मार्ग में बाधाएँ आयेंगी।

तुला राशि—तुला राशि वालों को चौथा राहू अशुभफल प्रद रहेगा। घरेलू समस्याऐं रहेंगी। सुख में कमी रहेगी। स्थाई सम्पति सम्बन्धी विवाद होंगे। मातृ सुख में कमी।

वृश्चिक राशि—वृश्चिक राशि वालों को तृतीय राहू पराक्रम में वृद्धि करने वाला होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उच्च मनोबल से अनेक कार्य सिद्ध होंगे।

धनु राशि—धनु राशि वालों को द्वितीय स्थान का राहू शुभफल देने वाला नहीं होगा। कुटुम्ब जनों से विरोध। आय के साधन बन्द होंगे। रोगोपद्रव रहेगा।

मकर राशि—मकर राशि वालों को लग्नस्थ राहू मानसिक तनाव व दुश्चिन्ता प्रदान करने वाला होगा। व्यर्थ का भ्रमण, जीवन साथी के साथ वैचारिक मतभेद रहेगा। व्यर्थ यात्राएं होंगी।

कुंभ राशि—कुंभ राशि वालों को द्वादश राहू व्यर्थ की यात्राऐं बनकर अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे। आय के साधन कम होंगे। विरोधी सर उठाएंगे। ऋणभार बढ़ेगा।

मीन राशि—मीन राशि वालों को एकादश राहू लाभ के अनेक अवसर प्रदान करेगा। सन्तान पक्ष से सन्तोष, भाईयों से लाभ। मित्रों से पूर्ण सहयोग व प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

वि. सं. २०६६ में धनु राशिस्थ राहू का राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि—मेष राशि वालों को नवम राहू भाग्यावरोध करेगा। प्रतिष्ठा पर आंच आयेगी। बनते कार्य बिगड़ेंगे। परिश्रम के पश्चात् अल्प लाभ होगा।

वृष राशि—वृष राशि वालों को अष्टम राहू से रोग वृद्धि। नित नई समस्याऐं उदय होंगी। झगड़े झंझट बढ़ेंगे। अनावश्यक भ्रमण व खर्चे होंगे।

मिथुन राशि—सप्तम राहू से पत्नी को स्वास्थ्य हीनता, स्वयं को मानसिक विभ्रम व सांझेदार से तनाव होगा।

कर्क राशि—छठे राहू से ऋणभार में कमी। शत्रु परास्त होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। पराक्रम वृद्धि। शत्रु परास्त होंगे।

सिंह राशि—सिंह राशि को पंचम राहू मध्यम रहेगा। विद्या लाभ। सन्तान पक्ष से चिन्ता। शेयर सट्टे आदि से हानि। मित्रों से धोखा होगा।

कन्या राशि—कन्या राशि को चौथा राहू पूज्य रहेगा। घरेलू वातावरण अशान्त। सुख में कमी। सम्पति विवाद व राज्य पक्ष से भय।

तुला राशि—तुला राशि को तृतीय राहू से पराक्रम वृद्धि। सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति। मनोबल से कार्यों में सफलता रहेगी।

वृश्चिक राशि—इस राशि वालों को दूसरा राहू अशुभ रहेगा। आर्थिक संकट उत्पन्न होगा। पारिवारिक जनों से तनाव। खर्चों में अधिकता। रोग वृद्धि।

धनु राशि—धनु राशि वालों को लग्नस्थ राहू से मानसिक विभ्रम की स्थिति। दाम्पत्य जीवन में तकरार। व्यापार में परेशानी व साझेदार से तनाव रहेगा।

मकर राशि—मकर राशि वालों को द्वादश राहू अशुभ रहेगा। व्यर्थ की यात्राऐं होंगी तथा खर्चों में बढ़ोत्तरी व ऋणग्रस्तता की स्थिति रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे।

कुंभ राशि—कुंभ राशि वालों को एकादश राहू शुभ रहेगा। आय के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। भाइयों व मित्रों से पूर्ण सहयोग व प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

मीन राशि—मीन राशि वालों को दशम राहू राजकीय कार्यों में सफलता। पारिवारिक वातावरण अशान्त। मातृ सुख में कमी। कर्म क्षेत्र में प्रभुत्व वृद्धि होगी।

वि. सं. २०६६ में कर्क राशिस्थ केतु का राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि—मेष राशि वालों को चौथा केतु पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण रहेगा। सुख में कमी। मातृ सुख में न्यूनता, सम्पति विवाद उत्पन्न होंगे।

वृष राशि—वृष राशि वालों को तीसरा केतु आत्म विश्वास में वृद्धि। मनोबल तेज होकर कार्य सिद्ध होंगे। विरोधी झुकेंगे।

मिथुन राशि—इस राशि वालों को दूसरा केतु अशुभ रहेगा। आर्थिक संकट उत्पन्न होगा। कुटुम्ब जनों से मतभेद पैदा होगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा।

कर्क राशि—कर्क राशि वालों को लग्नस्थ केतु से मानसिक तनाव, साझेदार से अनबन, पत्नी का स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा। स्वयं आत्मबल में कमी रहेगी।

सिंह राशि—सिंह राशि को द्वादश केतु से अनचाही यात्राएं बनकर खर्चों में वृद्धि होगी। शत्रु उत्पन्न होंगे। ऋणग्रस्तता की स्थिति रहेगी।

कन्या राशि—कन्या राशि वालों को एकादश केतु शुभ फलप्रद रहेगा। आय के अनेक स्त्रोत उत्पन्न होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। विरोधी परास्त होंगे।

तुला राशि—तुला राशि वालों को दसवां केतु राजकीय कार्यों में सफलता का सूचक है। नौकरी में स्थानांतरण होगा। दिनचर्या अस्त व्यस्त रहेगी।

वृश्चिक राशि—वृश्चिक राशि वालों को नवां केतु भाग्यावरोध पैदा करेगा। बनते कार्यों में बाधाएं आयेंगी। सामाजिक अपवाद पैदा होगा।

धनु राशि—धनु राशि वालों को अष्टम केतु पूज्य होगा। रोगोपद्रव बनकर परेशानियाँ आयेंगी। आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे।

मकर राशि—मकर राशि वालों को सप्तम केतु पत्नी के स्वास्थ्य में गड़बड़ी करेगा। व्यापार में अवनति, साझेदार से मतभेद रहेगा।

कुंभ राशि—कुंभ राशि वालों को छठा केतु उत्तम फलप्रद रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। आर्थिक संतुलन बनेगा। स्वास्थ्य में अपेक्षाकृत सुधार होगा।

मीन राशि—मीन राशि वालों को पंचम केतु सन्तान पक्ष से चिन्ता व विद्याध्ययन में बाधा व आय के साधनों की प्राप्ति परन्तु संघर्ष के बाद मिलेंगे।

वि. सं. २०६६ में मिथुन राशिस्थ केतु का द्वादश राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि—मेष राशि वालों को तीसरा केतु शुभ फलप्रद रहेगा। पराक्रम वृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विरोधी झुकेंगे। धार्मिक यात्राएं होंगी।

वृष राशि—वृष राशि वालों को दूसरा केतु अशुभ रहेगा। आर्थिक विषमताऐं रहेंगी। कुटुम्ब जनों से मनोमालिन्य रहेगा। रोग परेशान करेंगे।

मिथुन राशि—मिथुन राशि वालों को लग्नस्थ केतु आत्मविश्वास में कमी। पत्नी से वैचारिक मतभेद। व्यापार में उतार चढ़ाव रहेगा।

कर्क राशि—कर्क राशि वालों को द्वादश केतु से फिजूल खर्ची बढ़ेगी। अनचाही यात्राऐं, रोगोपद्रव व विरोधी सक्रिय रहेंगे।

सिंह राशि—सिंह राशि वालों को एकादश केतु शुभ फलप्रद रहेगा। आय के अनेक स्त्रोत उत्पन्न होंगे। प्रभुत्व में वृद्धि होगी।

कन्या राशि—कन्या राशि वालों को दसवां केतु। राजकीय कामों में सफलता व नौकरी में स्थानान्तरण। सम्पति में विवाद की स्थिति बनेगी।

तुला राशि—तुला राशि वालों को नवम केतु से भाग्य में परेशानी। बनते कार्यों में बाधाएं आयेंगी। धार्मिक यात्राएं होंगी। मनोबल न्यून रहेगा।

वृश्चिक राशि—वृश्चिक राशि वालों को अष्टम केतु अशुभ फलप्रद रहेगा। रोग वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति खराब। चोट मोच का भय रहेगा।

धनु राशि—धनु राशि वालों को सप्तम केतु से साझेदार से धोखा। पत्नी का स्वास्थ्य कमजोर। दाम्पत्य सुख में कमी। व्यापार में नुकसान रहेगा।

मकर राशि—मकर राशि वालों को छठा केतु पराक्रम में वृद्धि होकर शत्रु दबे रहेंगे। ऋण भार में कमी। स्वास्थ्य में सुधार।

कुंभ राशि—कुंभ राशि वालों को पंचम केतु मध्यम रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता, विद्या लाभ में बाधा। बुद्धि में भ्रम की स्थिति रहेगी।

मीन राशि—मीन राशि वालों की चौथा केतु घरेलू सुख में कमी। सम्पति विवाद उठेंगे। राज्य से परेशानी रहेगी। आर्थिक घाटा के योग।

वि. सं. २०६६ में कुंभ राशिस्थ गुरु का द्वादश राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि–मेष राशि वालों को एकादश भाव का गुरु आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष मजबूत बनेगा। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे।

वृष राशि–वृष राशि वालों को दसवां गुरु पूज्य रहेगा। कर्म क्षेत्र या नौकरी में स्थान परिवर्तन बनेगा। सुख साधनों में कमी रहेगी। आर्थिक स्थिति न्यून रहेगी। संघर्ष से लाभ प्राप्त होगा।

मिथुन राशि–मिथुन राशि वालों को भाग्य भाव का गुरु शुभ फलप्रद रहेगा। भाग्य में वृद्धि। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। स्वयं का मनोबल उच्च रहेगा। धार्मिक यात्राऐं होंगी। समाज में इज्जत वृद्धि होगी।

कर्क राशि–कर्क राशि वालों को अष्टमस्थ गुरु अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा। स्वास्थ्य हीनता नित नए रोग उत्पन्न होंगे। शत्रुओं का दबाव बना रहेगा। आय में रुकावटें खर्च अधिक होंगे।

सिंह राशि–सिंह राशि वालों को सप्तम गुरु शुभ रहेगा। पत्नी को भाग्य वृद्धि होगी। पत्नी से सुख की प्राप्ति व स्वयं को उच्च मनोबल की प्राप्ति होगी। लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

कन्या राशि–कन्या राशि वालों को छठा गुरु पूज्य होगा। नवीन शत्रु उदय होंगे। भुगतान असुन्तलन बनकर ऋण ग्रस्तता रहेगी। खर्चों में बढ़ोतरी व कार्य क्षेत्र में रुकावटें रहेंगी।

तुला राशि–तुला राशि वालों को पंचम गुरु शुभ फलप्रद रहेगा। सन्तान के सम्बन्ध में शुभ अवसर की प्राप्ति। आय के अनेक स्त्रोत बनकर लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा। मानसिक सुख की प्राप्ति।

वृश्चिक राशि–वृश्चिक राशि वालों को सुख स्थान का गुरु सुख में कमी करने वाला होगा। घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा। आय के साधनों में रुकावटें होंगी। खर्चे बढ़ेंगे।

धनु राशि–धनु राशि वालों को तीसरा गुरु श्रेष्ठ फलप्रद रहेगा। स्वयं के पराक्रम में वृद्धि बनकर सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धार्मिक यात्राऐं बनेंगी। पारिवारिक वातावरण सुख प्रद रहेगा। आय के साधन बढ़ेंगे।

मकर राशि–मकर राशि वालों को धन भाव का गुरु आर्थिक परेशानियाँ प्रदान करने वाला होगा। स्वास्थ्य हीनता की स्थिति रहेगी। शत्रु परेशान करेंगे। कार्य क्षेत्र में रुकावटें आयेंगी।

कुंभ राशि–कुंभ राशि वालों को लग्नस्थ गुरु शुभ रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुख पूर्ण रहेगा। विद्या, बल, बुद्धि का लाभ होगा। सन्तान पक्ष से सुख व सन्तोष की प्राप्ति होगी। भाग्य का सितारा तेज।

मीन राशि–मीन राशि वालों को द्वादश भावगत गुरु। अत्यधिक खर्च कारक रहेगा। कर्म क्षेत्र में बाधाएं आएंगी तथा आर्थिक नुकसान के योग बनेंगे। शत्रु हावी होंगे। मानसिक खिन्नता रहेगी।

वि. सं. २०६६ में मकर राशिस्थ गुरु का द्वादश राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष राशि–मेष राशि वालों को दसवां गुरु मिश्रित फलकारक रहेगा। राज्य पक्ष के कार्यों में रुकावटें, कर्म क्षेत्र में उथल-पुथल रहेगी। सुख साधनों में वृद्धि। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव रहेगा।

वृष राशि–वृष राशि वालों को भाग्य स्थान का गुरु शुभ फलप्रद रहेगा। स्वयं के आत्म विश्वास में वृद्धि। धार्मिक कार्यों में रुचि व सन्तान पक्ष को विद्या क्षेत्र में उन्नति रहेगी।

मिथुन राशि–मिथुन राशि वालों को अष्टम स्थान का गुरु अशुभ रहेगा। स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। नित नये रोगोपद्रव रहेंगे। अज्ञात भय रहेगा। खर्चों में बढोत्तरी होगी। मानसिक तनाव रहेगा।

कर्क राशि–कर्क राशि वालों को सप्तम गुरु सामान्यतः शुभ रहेगा। पत्नी को पीड़ा व मानसिक उद्वेग रहेगा। स्वयं के मनोबल में वृद्धि। सन्तान की प्रगति होगी। आय के नये स्त्रोत बनेंगे।

सिंह राशि–सिंह राशि वालों को षष्टम सथानगत गुरु परेशानी कारक रहेगा। पेट सम्बन्धी गड़बड़ी रहेगी। नित नये शत्रु उदय होंगे। कर्ज की स्थिति पैदा होगी। मानसिक उद्वेग बनकर कर्म क्षेत्र में कठिनाइयाँ रहेंगी।

कन्या राशि–कन्या राशि वालों को पंचम गुरु सामान्य फलप्रद रहेगा। सन्तान पक्ष की प्रगति में बाधाएँ आयेंगी। स्वयं को विद्या, बल, बुद्धि का लाभ प्राप्त होगा। आय के अवसर बनते रहेंगे।

तुला राशि–तुला राशि वालों को चौथा गुरु पूज्य होगा। सुख साधनों में कमी, स्वयं को मानसिक तनाव रहेगा। कार्य क्षेत्र सामान्य रहेगा। आय के साधन सिमटकर खर्चों में बेतहासा वृद्धि होगी। घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा।

वृश्चिक राशि–वृश्चिक राशि वालों को तीसरा गुरु पराक्रम में वृद्धि करने वाला होगा। पराक्रम बढ़कर समाज में विवादित स्थिति बनेगी। भाग्य का सितारा तेज रहेगा। आय के अनेक स्त्रोत बनकर लाभ की प्राप्ति होगी।

धनु राशि–धनु राशि वालों को द्वितीय गुरु परेशानी कारक रहेगा। भुगतान-असन्तुलन की स्थिति बनेगी। आय में रुकावटें आयेंगी। मानसिक रोगों की उत्पत्ति होगी। राज्य क्षेत्र से सामान्यतः लाभ रहेगा। शत्रु प्रभावी होंगे।

मकर राशि–मकर राशि वालों को लग्नस्थ गुरु मानसिक उद्वेग कारक रहेगा। निर्णय क्षमता में असन्तुलन रहेगा। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। पत्नी से अपेक्षित सहयोग। भाग्य का सितारा तेज रहेगा।

कुंभ राशि–कुंभ राशि वालों को द्वादश भावगत गुरु अत्यधिक भ्रमण व निरर्थक यात्राऐं बनकर खर्च वृद्धि कारक रहेगा। अनजान शत्रु पैदा होकर तनाव वृद्धि होगी। सुख में कमी। स्वास्थ्य में न्यूनधिक्य रहेगा।

मीन राशि–मीन राशि वालों को ग्यारहवां गुरु शुभ फलप्रद रहेगा। अनैतिक कार्यों से धन की प्राप्ति। सन्तान पक्ष की प्रगति बनकर मानसिक सन्तोष की प्राप्ति। पत्नी से भरपूर सहयोग। आय के साधनों में वृद्धि होगी।

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र-राशि संचार, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि सं. २०६६ वि.

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२७ मार्च	उ.भा.	४	मीन	
३१ "	रेवती	१		११।२५
३ अप्रै.	"	२		
७ "	"	३		
१० "	"	४		
१३ "	अश्वि.	१	मेष	२४।४९
१७ "	"	२		
२० "	"	३		
२४ "	"	४		
२७ "	भरणी	१		१६।३६
३० "	"	२		
४ मई	"	३		
७ "	"	४		
११ "	कृति.	१		१०।४९
१४ "	"	२	वृष	२१।४२
१८ "	"	३		
२१ "	"	४		
२५ "	रोहि.	१		७।०१
२८ "	"	२		
१ जून	"	३		
४ "	"	४		
७ "	मृग.	१		२८।५३
११ "	"	२		
१४ "	"	३	मिथुन	२८।१९
१८ "	"	४		
२१ "	आर्द्रा	१		२७।५४
२५ "	"	२		
२८ "	"	३		
२ जुला.	"	४		
५ "	पुन.	१		२७।२६
९ "	"	२		

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१२ जुला.	पुन.	३	मिथुन	
१६ "	"	४	कर्क	१५।१०
१९ "	पुष्य	१		२७।००
२३ "	"	२		
२६ "	"	३		
३० "	"	४		
२ अग.	श्लेषा	१		२५।४९
६ "	"	२		
९ "	"	३		
१३ "	"	४		
१६ "	मघा	१	सिंह	२३।३१
२० "	"	२		
२३ "	"	३		
२७ "	"	४		
३० "	पू.फा.	१		१९।२५
३ सितं.	"	२		
६ "	"	३		
९ "	"	४		
१३ "	उ.फा.	१		१३।२१
१६ "	"	२	कन्या	२३।२५
२० "	"	३		
२३ "	"	४		
२६ "	हस्त	१		२८।४६
३० "	"	२		
३ अक्टू.	"	३		
७ "	"	४		
१० "	चित्रा	१		१७।५१
१३ "	"	२		
१७ "	"	३	तुला	११।२२
२० "	"	४		
२३ "	स्वा.	१		२८।१७

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२७ अक्टू.	स्वा.	२	तुला	
३० "	"	३		
२ नवं.	"	४		
६ "	विशा.	१		१२।३१
९ "	"	२		
१२ "	"	३		
१६ "	"	४	वृश्चि.	११।१२
१९ "	अनु.	१		१८।३२
२२ "	"	२		
२६ "	"	३		
२९ "	"	४		
२ दिसं.	ज्येष्ठा	१		२२।५३
६ "	"	२		
९ "	"	३		
१२ "	"	४		
१५ "	मूल	१	धनु	२५।५४
१९ "	"	२		
२२ "	"	३		
२५ "	"	४		
२८ "	पू.षा.	१		२८।०७
सन् २०१० ई.				
१ जन.	"	२		
४ "	"	३		
७ "	"	४		
१० "	उ.षा.	१		३०।११
१४ "	"	२	मकर	१२।४०
१७ "	"	३		
२० "	"	४		
२४ "	श्रवण	१		८।२५
२७ "	"	२		
३० "	"	३		

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२ फर.	श्रवण	४	मकर	
६ "	धनि.	१		११।३९
९ "	"	२		
१२ "	"	३	कुंभ	२५।४०
१६ "	"	४		
१९ "	शत.	१		१६।०५
२२ "	"	२		
२६ "	"	३		
१ मार्च	"	४		
४ "	पू.भा.	१		२२।२७
८ "	"	२		
११ "	"	३		
१४ "	"	४	मीन	२२।३२

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२८ मार्च	शत.	४	कुंभ	
१ अप्रै.	पू.भा.	१		२९।४७
६ "	"	२		
१० "	"	३		
१४ "	"	४	मीन	२६।२८
१९ "	उ.भा	१		८।२८
२३ "	"	२		
२७ "	"	३		
२ मई	"	४		
६ "	रेवती	१		१४।५२
१० "	"	२		
१५ "	"	३		
१९ "	"	४		
२३ "	अश्वि.	१	मेष	२७।२७
२८ "	"	२		
१ जून	"	३		

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
६ जून	अश्वि.	४	मेष	
१० "	भरणी	१		२३।१५
१५ "	"	२		
१९ "	"	३		
२४ "	"	४		
२९ "	कृति.	१		५।४०
३ जुला.	"	२	वृष	१९।२२
८ "	"	३		
१३ "	"	४		
१७ "	रोहि.	१		२५।१६
२२ "	"	२		
२७ "	"	३		
१ अग.	"	४		
६ "	मृग.	१		७।३७
११ "	"	२		
१६ "	"	३	मिथुन	१५।२९
२१ "	"	४		
२६ "	आर्द्रा	१		२३।४९
१ सितं.	"	२		
६ "	"	३		
११ "	"	४		
१७ "	पुन.	१		१७।३९
२३ "	"	२		
२९ "	"	३		
५ अक्टू.	"	४	कर्क	९।२३
११ "	पुष्य	१		
१७ "	"	२		
२४ "	"	३		
१ नवं.	"	४		
९ "	श्लेषा.	१		१४।५०
१८ "	"	२		
३० "	"	३		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२७ मार्च	उ.भा.	३	मीन	
२९ "	"	४		
३१ "	रेवती	१		१०।११
१ अप्रै.	"	२		
३ "	"	३		
५ "	"	४		
६ "	अश्वि.	१	मेष	२१।२६
८ "	"	२		
९ "	"	३		
११ "	"	४		
१३ "	भरणी	१		१३।२९
१५ "	"	२		
१७ "	"	३		
१९ "	"	४		
२१ "	कृति.	१		१४।५४
२३ "	"	२	वृष	२९।४७
२७ "	"	३		
२ मई	"	४		
१७ जून	रोहि.	१		२४।२६
२० "	"	२		
२२ "	"	३		
२४ "	"	४		
२६ "	मृग.	१		२९।१२
२८ "	"	२		
३० "	"	३	मिथुन	२२।४१
२ जुला.	"	४		
४ "	आर्द्रा	१		८।४५
५ "	"	२		
७ "	"	३		
८ "	"	४		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१० जुला.	पुन.	१		१६।५९
१२ "	"	२		
१३ "	"	३		
१५ "	"	४	कर्क	८।२७
१६ "	पुष्य	१		२२।७
१८ "	"	२		
१९ "	"	३		
२१ "	"	४		
२३ "	श्लेषा.	१		११।०९
२४ "	"	२		
२६ "	"	३		
२८ "	"	४		
३० "	मघा	१	सिंह	१५।५५
१ अग.	"	२		
३ "	"	३		
५ "	"	४		
७ "	पू.फा.	१		१९।२६
९ "	"	२		
१२ "	"	३		
१४ "	"	४		
१७ "	उ.फा.	१		१०।२०
१९ "	"	२	कन्या	२९।२६
२३ "	"	३		
२६ "	"	४		
३१ "	हस्त	१		९।१५
१४ अक्टू.	"	२		
१७ "	"	३		
१८ "	"	४		
२० "	चित्रा	१		२८।१७
२२ "	"	२		
२४ "	"	३	तुला	२६।१९
२६ "	"	४		
२८ "	स्वाती	१		२५।१२

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
३० अक्टू.	स्वाती	२	तुला	
१ नवं.	"	३		
३ "	"	४		
५ "	विशा.	१		२७।४७
८ "	"	२		
१० "	"	३		
१२ "	"	४	वृश्चि.	१०।११
२४ "	अनु.	१		१३।०३
१६ "	"	२		
१८ "	"	३		
२० "	"	४		
२२ "	ज्येष्ठा	१		२७।२९
२५ "	"	२		
२७ "	"	३		
२९ "	"	४		
१ दिसं.	मूल	१	धनु	२२।०५
३ "	"	२		
६ "	"	३		
८ "	"	४		
१० "	पू.षा.	१		२५।३६
१३ "	"	२		
१५ "	"	३		
१८ "	"	४		
२२ "	उ.षा.	१		२८।४१
५ फर.	"	२	मकर	२९।१७
८ "	"	३		
१० "	"	४		
१३ "	श्रवण	१		९।४२
१५ "	"	२		
१७ "	"	३		
१९ "	"	४		
२१ "	धनि.	१		२७।२८
२३ "	"	२		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२५ फर.	धनि.	३	कुंभ	२९।४९
२८ "	"	४		
१ मार्च	शत.	१		२८।२०
३ "	"	२		
५ "	"	३		
७ "	"	४		
९ "	पू.भा.	१		१४।५०
११ "	"	२		
१२ "	"	३		
१४ "	"	४	मीन	२०।४३

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
९ अप्रै.	धनि.	२	मकर	
१ मई	"	३	कुंभ	१८।४३
५ जन.	"	४		
२१ "	शत.	१		७।२३
४ फर.	"	२		१८।११
१८ "	"	३		१७।४६
४ मार्च	"	४		१३।१५

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१३ मई	रेवती	१		२८।२५
१९ "	"	२		
२३ "	"	३		
२७ "	"	४		
३० "	अश्वि.	१	मेष	२९।०५
३ जून	"	२		
७ "	"	३		
१० "	"	४		
१३ "	भरणी	१		२५।०५
१७ "	"	२		
२० "	"	३		
२३ "	"	४		

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२६ जून	कृति.	१	मेष	२१।४५
२९ "	"	२	वृष	२४।४०
२ जुला.	"	३		
५ "	"	४		
८ "	रोहि.	१		२९।२५
१२ "	"	२		
१५ "	"	३		
१७ "	"	४		
२० "	मृग.	१		२८।१५
२३ "	"	२		
२६ "	"	३	मिथुन	२५।१२
२९ "	"	४		
१ अग.	आर्द्रा	१		२०।४८
४ "	"	२		
७ "	"	३		
१० "	"	४		
१३ "	पुन.	१		८।२४
१५ "	"	२		
१८ "	"	३		
२१ "	"	४	कर्क	२०।१७
२४ "	पुष्य	१		१५।४८
२७ "	"	२		
३० "	"	३		
१ सितं.	"	४		
४ "	श्लेषा	१		१९।४७
७ "	"	२		
१० "	"	३		
१२ "	"	४		
१५ "	मघा	१	सिंह	२०।४१
१८ "	"	२		
२१ "	"	३		
२३ "	"	४		

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२६ सितं.	पू.फा.	१	सिंह	१९।००
२९ "	"	२		
१ अक्टू.	"	३		
४ "	"	४		
७ "	उ.फा.	१		१५।१३
१० "	"	२	कन्या	७।५९
१२ "	"	३		
१५ "	"	४		
१८ "	हस्त	१		९।३७
२० "	"	२		
२३ "	"	३		
२६ "	"	४		
२८ "	चित्रा	१		२६।३९
३१ "	"	२		
३ नवं.	"	३	तुला	१०।४६
५ "	"	४		
८ "	स्वाती	१		१८।४१
११ "	"	२		
१३ "	"	३		
१६ "	"	४		
१९ "	विशा.	१		९।५४
२१ "	"	२		
२४ "	"	३		
२७ "	"	४	वृश्चि.	९।००
२९ "	अनु.	१		२४।४०
२ दिसं.	"	२		
५ "	"	३		
७ "	"	४		
१० "	ज्ये.	१		१५।०९
१३ "	"	२		
१५ "	"	३		
१८ "	"	४		

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२० दिसं.	मूल	१	धनु	२९।२५
२३ "	"	२		
२६ "	"	३		
२८ "	"	४		
३१ "	पू.षा.	१		१९।४२
३ जन.	"	२		
५ "	"	३		
८ "	"	४		
११ "	उ.षा.	१		१०।०३
१३ "	"	२	मकर	२५।३९
१६ "	"	३		
१९ "	"	४		
२१ "	श्रवण	१		२४।३१
२४ "	"	२		
२७ "	"	३		
२९ "	"	४		
१ फर.	धनि.	१		१५।२०
४ "	"	२		
६ "	"	३	कुंभ	२२।५३
९ "	"	४		
११ "	शत.	१		३०।३२
१४ "	"	२		
१७ "	"	३		
२० "	"	४		
२२ "	पू.भा.	१		२२।१५
२५ "	"	२		
२८ "	"	३		
२ मार्च	"	४	मीन	२२।३४
५ "	उ.भा.	१		१६।४६
८ फर.	"	२		
१० "	"	३		
१३ "	"	४		

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

साढ़े पांच बजे (प्रात: ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने १५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है। इसके लिए १६ अगस्त प्रात: ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं- यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अत: ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे १५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति= ३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अत: १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अत: उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त के शनि स्पष्ट** ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त के** शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ **को घटायें** = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अत: क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)- (१-४७)=११-१२-५६-३५ अत: **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५ आया।**

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (◆ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१◆	०।०२★	०।०५	०।०७★	०।१०	०।१२★	०।१५	०।१७★	०।२०	०।२२★	०।२५	०।२७★	०।३०
२	०।०२★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३●	०।०७★	०।१५	०।२२★	०।३०	०।३७★	०।४५	०।५२★	१।००	१।०७★	१।१५	१।२२★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६◆	०।१२★	०।२५	०।३७★	०।५०	१।०२★	१।१५	१।२७★	१।४०	१।५२★	२।०५	२।१७★	२।३०
६	०।०७★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८●	०।१७★	०।३५	०।५२★	१।१०	१।२७★	१।४५	२।०२★	२।२०	२।३७★	२।५५	३।१२★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११◆	०।२२★	०।४५	१।०७★	१।३०	१।५२★	२।१५	२।३७★	३।००	३।२२★	३।४५	४।७★	४।३०
१०	०।१२★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३●	०।२७★	०।५५	१।२२★	१।५०	२।१७★	२।४५	३।१२★	३।४०	४।७★	४।३५	५।२★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६◆	०।३२★	१।०५	१।३७★	२।१०	२।४२★	३।१५	३।४७★	४।२०	४।५२★	५।२५	५।५७★	६।३०
१४	०।१७★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८●	०।३७★	१।१५	१।५२★	२।३०	३।०७★	३।४५	४।२२★	५।००	५।३७★	६।१५	६।५२★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१◆	०।४२★	१।२५	२।०७★	२।५०	३।३२★	४।१५	४।५७★	५।४०	६।२२★	७।०५	७।४७★	८।३०
१८	०।२२★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३●	०।४७★	१।३५	२।२२★	३।१०	३।५७★	४।४५	५।३२★	६।२०	७।७★	७।५५	८।४२★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६◆	०।५२★	१।४५	२।३७★	३।३०	४।२२★	५।१५	६।०७★	७।००	७।५२★	८।४५	९।३७★	१०।३०
२२	०।२७★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८●	०।५७★	१।५५	२।५२★	३।५०	४।४७★	५।४५	६।४२★	७।४०	८।३७★	९।३५	१०।३२★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१◆	१।०२★	२।०५	३।०७★	४।१०	५।१२★	६।१५	७।१७★	८।२०	९।२२★	१०।२५	११।२७★	१२।३०
२६	०।३२★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३●	१।०७★	२।१५	३।२२★	४।३०	५।३७★	६।४५	७।५२★	९।००	१०।७★	११।१५	१२।२२★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६◆	१।१२★	२।२५	३।३७★	४।५०	६।०२★	७।१५	८।२७★	९।४०	१०।५२★	१२।५	१३।१७★	१४।३०
३०	०।३७★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८●	१।१७★	२।३५	३।५२★	५।१०	६।२७★	७।४५	९।०२★	१०।२०	११।३७★	१२।५५	१४।१२★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१◆	१।२२★	२।४५	४।०७★	५।३०	६।५२★	८।१५	९।३७★	११।००	१२।२२★	१३।४५	१५।०७★	१६।३०
३४	०।४२★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३●	१।२७★	२।५५	४।२२★	५।५०	७।१७★	८।४५	१०।१२★	११।४०	१३।०७★	१४।३५	१६।०२★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६◆	१।३२★	३।०५	४।३७★	६।१०	७।४२★	९।१५	१०।४७★	१२।२०	१३।५२★	१५।२५	१६।५७★	१८।३०
३८	०।४७★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८●	१।३७★	३।१५	४।५२★	६।३०	८।०७★	९।४५	११।२२★	१३।००	१४।३७★	१६।१५	१७।५२★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१◆	१।४२★	३।२५	५।०७★	६।५०	८।३२★	१०।१५	११।५७★	१३।४०	१५।२२★	१७।०५	१८।४७★	२०।३०
४२	०।५२★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३●	१।४७★	३।३५	५।२२★	७।१०	८।५७★	१०।४५	१२।३२★	१४।२०	१६।०७★	१७।५५	१९।४२★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६◆	१।५२★	३।४५	५।३७★	७।३०	९।२२★	११।१५	१३।०७★	१५।००	१६।५२★	१८।४५	२०।३७★	२२।३०
४६	०।५७★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८●	१।५७★	३।५५	५।५२★	७।५०	९।४७★	११।४५	१३।४२★	१५।४०	१७।३७★	१९।३५	२१।३२★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१◆	२।०२★	४।०५	६।०७★	८।१०	१०।१२★	१२।१५	१४।१७★	१६।२०	१८।२२★	२०।२५	२२।२७★	२४।३०
५०	१।०२★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३●	२।०७★	४।१५	६।२२★	८।३०	१०।३७★	१२।४५	१४।५२★	१७।००	१९।०७★	२१।१५	२३।२२★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६◆	२।१२★	४।२५	६।३७★	८।५०	११।०२★	१३।१५	१५।२७★	१७।४०	१९।५२★	२२।०५	२४।१७★	२६।३०
५४	१।०७★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८●	२।१७★	४।३५	६।५२★	९।१०	११।२७★	१३।४५	१६।०२★	१८।२०	२०।३७★	२२।५५	२५।१२★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११◆	२।२२★	४।४५	७।०७★	९।३०	११।५२★	१४।१५	१६।३७★	१९।००	२१।२२★	२३।४५	२६।०७★	२८।३०
५८	१।१२★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३●	२।२७★	४।५५	७।२२★	९।५०	१२।१७★	१४।४५	१७।१२★	१९।४०	२२।०७★	२४।३५	२७।०२★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

दैनिक ग्रह—स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रंहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

मार्च सन् २०१० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २४° ।००' ।१३"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु (वक्री) रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
1	१० १६ १७ ०३	०४ २० ३६ ३५	०३ ०६ ५३ १९	१० ०५ ०१ ५४	१० १५ ५१ ५०	१० २७ ५२ ०१	०५ ०८ ५२ २२	०८ २४ ३० ०७	११ ०१ ३८ ४३	१० ०२ ४१ ०९	०८ ११ ०३ १७	1
2	१० १७ १७ १५	०५ ०५ ३८ ५८	०३ ०६ ४६ १५	१० ०६ ४५ ०१	१० १६ ०६ २०	१० २९ ०६ ५०	०५ ०८ ४८ ११	०८ २४ २६ ५६	११ ०१ ४२ ०३	१० ०२ ४३ २२	०८ ११ ०४ २५	2
3	१० १८ १७ २५	०५ २० २२ ५७	०३ ०६ ३९ ५८	१० ०८ २९ १०	१० १६ २० ४९	११ ०० २१ ३७	०५ ०८ ४३ ५७	०८ २४ २३ ४६	११ ०१ ४५ २४	१० ०२ ४५ ३५	०८ ११ ०५ ३१	3
4	१० १९ १७ ३४	०६ ०४ ४१ ३५	०३ ०६ ३४ २८	१० १० १४ २४	१० १६ ३५ १९	११ ०१ ३६ २३	०५ ०८ ३९ ४०	०८ २४ २० ३५	११ ०१ ४८ ४६	१० ०२ ४७ ४८	०८ ११ ०६ ३६	4
5	१० २० १७ ४१	०६ १८ ३१ ०७	०३ ०६ २९ ४५	१० १२ ०० ४१	१० १६ ४९ ४८	११ ०२ ५१ ०८	०५ ०८ ३५ २०	०८ २४ १७ २४	११ ०१ ५२ ०८	१० ०२ ५० ००	०८ ११ ०७ ३९	5
6	१० २१ १७ ४६	०७ ०१ ५१ ०४	०३ ०६ २५ ४८	१० १३ ४८ ०३	१० १७ ०४ १७	११ ०४ ०५ ५२	०५ ०८ ३० ५८	०८ २४ १४ १३	११ ०१ ५५ ३१	१० ०२ ५२ ११	०८ ११ ०८ ४०	6
7	१० २२ १७ ५०	०७ १४ ४३ ३६	०३ ०६ २२ ३८	१० १५ ३६ ३१	१० १७ १८ ४५	११ ०५ २० ३४	०५ ०८ २६ ३३	०८ २४ ११ ०३	११ ०१ ५८ ५४	१० ०२ ५४ २२	०८ ११ ०९ ३९	7
8	१० २३ १७ ५३	०७ २७ १२ ४३	०३ ०६ २० १३	१० १७ २६ ०४	१० १७ ३३ १३	११ ०६ ३५ १५	०५ ०८ २२ ०६	०८ २४ ०७ ५२	११ ०२ ०२ १७	१० ०२ ५६ ३२	०८ ११ १० ३६	8
9	१० २४ १७ ५३	०८ ०९ २३ २३	०३ ०६ १८ ३३	१० १९ १६ ४३	१० १७ ४७ ४०	११ ०७ ४९ ५५	०५ ०८ १७ ३६	०८ २४ ०४ ४१	११ ०२ ०५ ४२	१० ०२ ५८ ४२	०८ ११ ११ ३२	9
10	१० २५ १७ ५३	०८ २१ २० ५६	०३ ०६ १७ ३९	१० २१ ०८ २७	१० १८ ०२ ०७	११ ०९ ०४ ३३	०५ ०८ १३ ०५	०८ २४ ०१ ३०	११ ०२ ०९ ०६	१० ०३ ०० ५१	०८ ११ १२ २६	10
11	१० २६ १७ ५०	०९ ०३ १० ३१	मा०३ ०६ १७ २९	१० २३ ०१ १६	१० १८ १६ ३३	११ १० १९ १०	०५ ०८ ०८ ३१	०८ २३ ५८ १९	११ ०२ १२ ३१	१० ०३ ०२ ५९	०८ ११ १३ १८	11
12	१० २७ १७ ४६	०९ १४ ५६ ५२	०३ ०६ १८ ०४	१० २४ ५५ १०	१० १८ ३० ५९	११ ११ ३३ ४६	०५ ०८ ०३ ५६	०८ २३ ५५ ०९	११ ०२ १५ ५६	१० ०३ ०५ ०७	०८ ११ १४ ०८	12
13	१० २८ १७ ४०	०९ २६ ४४ ०२	०३ ०६ १९ २२	१० २६ ५० ०५	१० १८ ४५ २३	११ १२ ४८ २०	०५ ०७ ५९ २०	०८ २३ ५१ ५८	११ ०२ १९ २२	१० ०३ ०७ १४	०८ ११ १४ ५७	13
14	१० २९ १७ ३२	१० ०८ ३५ २०	०३ ०६ २१ २३	१० २८ ४६ ०१	१० १८ ५९ ४७	११ १४ ०२ ५२	०५ ०७ ५४ ४२	०८ २३ ४८ ४७	११ ०२ २२ ४७	१० ०३ ०९ २०	०८ ११ १५ ४३	14
15	११ ०० १७ २३	१० २० ३३ १३	०३ ०६ २४ ०७	११ ०० ४२ ५४	१० १९ १४ १०	११ १५ १७ २३	०५ ०७ ५० ०२	०८ २३ ४५ ३७	११ ०२ २६ १३	१० ०३ ११ २५	०८ ११ १६ २८	15

मार्च सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।१९"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु (वक्री) रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
27	११ १२ २८ ०४	११ १६ ३२ ३९	१० १५ १७ ५२	११ ०८ १७ ०८	०९ २४ ०९ १९	११ १३ ४६ ४१	०४ २२ ५९ ०८	०९ १२ २८ ०२	१० २९ २४ ३२	१० ०१ २७ १८	०८ ०९ १७ २३	27
28	११ १३ २७ २८	०० ०० ०९ २९	१० १६ ०४ ५०	११ १० १५ १६	०९ २४ २० ५८	११ १३ ०८ ५७	०४ २२ ५४ ४८	०९ १२ २४ ५२	१० २९ २७ ५३	१० ०१ २९ ०७	०८ ०९ १७ ३९	28
29	११ १४ २६ ४९	०० १३ ५९ ५९	१० १६ ५१ ४६	११ १२ १४ ३३	०९ २४ ३२ ३२	११ १२ ३१ १८	०४ २२ ५० ३१	०९ १२ २१ ४१	१० २९ ३१ १४	१० ०१ ३० ५५	०८ ०९ १७ ५२	29
30	११ १५ २६ ०९	०० २८ ०० १९	१० १७ ३८ ४२	११ १४ १४ ५३	०९ २४ ४४ ००	११ ११ ५३ ५९	०४ २२ ४६ १६	०९ १२ १८ ३०	१० २९ ३४ ३५	१० ०१ ३२ ४२	०८ ०९ १८ ०४	30
31	११ १६ २५ २६	०१ १२ ०६ ३५	१० १८ २५ ३८	११ १६ १६ ३४	०९ २४ ५५ २३	११ ११ १७ १४	०४ २२ ४२ ०५	०९ १२ १५ १९	१० २९ ३७ ५४	१० ०१ ३४ २७	०८ ०९ १८ १४	31

अप्रैल सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।२३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
1	११ १७ २४ ४१	०१ २६ १५ २५	१० १९ १२ ३२	११ १८ १८ २७	०९ २५ ०६ ४१	११ १० ४१ १८	०४ २२ ३७ ५७	०९ १२ १२ ०८	१० २९ ४१ १३	१० ०१ ३६ ११	०८ ०९ १८ २२	1
2	११ १८ २३ ५३	०२ १० २४ १६	१० १९ ५९ २६	११ २० २१ २७	०९ २५ १७ ५३	११ १० ०६ २४	०४ २२ ३३ ५३	०९ १२ ०८ ५८	१० २९ ४४ ३१	१० ०१ ३७ ५४	०८ ०९ १८ २८	2
3	११ १९ २३ ०३	०२ २४ ३१ २६	१० २० ४६ १९	११ २२ २५ ०४	०९ २५ २८ ५९	११ ०९ ३२ ४५	०४ २२ २९ ५२	०९ १२ ०५ ४७	१० २९ ४७ ४८	१० ०१ ३९ ३५	०८ ०९ १८ ३२	3
4	११ २० २२ ११	०३ ०८ ३५ ५३	१० २१ ३३ ११	११ २४ २९ ०६	०९ २५ ४० ००	११ ०९ ०० ३३	०४ २२ २५ ५६	०९ १२ ०२ ३६	१० २९ ५१ ०५	१० ०१ ४१ १५	०८ ०९ १८ ३५	4
5	११ २१ २१ १६	०३ २२ ३६ ४७	१० २२ २० ०२	११ २६ ३३ २३	०९ २५ ५० ५५	११ ०८ ३० ००	०४ २२ २२ ०२	०९ ११ ५९ २५	१० २९ ५४ २०	१० ०१ ४२ ५३	व०८ ०९ १८ ३५	5
6	११ २२ २० १९	०४ ०६ ३३ ०५	१० २३ ०६ ५३	११ २८ ३७ ३९	०९ २६ ०१ ४४	११ ०८ ०१ १४	०४ २२ १८ १३	०९ ११ ५६ १५	१० २९ ५७ ३४	१० ०१ ४४ ३०	०८ ०९ १८ ३४	6
7	११ २३ १९ २०	०४ २० २३ १०	१० २३ ५३ ४२	०० ०० ४१ ३९	०९ २६ १२ २७	११ ०७ ३४ २७	०४ २२ १४ २८	०९ ११ ५३ ०४	११ ०० ०० ४८	१० ०१ ४६ ०६	०८ ०९ १८ ३०	7
8	११ २४ १८ १९	०५ ०४ ०४ ४६	१० २४ ४० ३०	०० ०२ ४५ ०६	०९ २६ २३ ०४	११ ०७ ०९ ४४	०४ २२ १० ४७	०९ ११ ४९ ५३	११ ०० ०४ ००	१० ०१ ४७ ४०	०८ ०९ १८ २५	8
9	११ २५ १७ १५	०५ १७ ३५ १५	१० २५ २७ १८	०० ०४ ४७ ३९	०९ २६ ३३ ३५	११ ०६ ४७ १३	०४ २२ ०७ १०	०९ ११ ४६ ४३	११ ०० ०७ ११	१० ०१ ४९ १३	०८ ०९ १८ १७	9
10	११ २६ १६ १०	०६ ०० ५२ ०१	१० २६ १४ ०४	०० ०६ ४८ ५९	०९ २६ ४३ ५९	११ ०६ २७ ००	०४ २२ ०३ ३८	०९ ११ ४३ ३२	११ ०० १० २२	१० ०१ ५० ४४	०८ ०९ १८ ०८	10
11	११ २७ १५ ०२	०६ १३ ५२ ५८	१० २७ ०० ५०	०० ०८ ४८ ४५	०९ २६ ५४ १८	११ ०६ ०९ ०८	०४ २२ ०० १०	०९ ११ ४० २१	११ ०० १३ ३१	१० ०१ ५२ १३	०८ ०९ १७ ५७	11
12	११ २८ १३ ५३	०६ २६ ३७ ०२	१० २७ ४७ ३४	०० १० ४६ ३६	०९ २७ ०४ २९	११ ०५ ५३ ४०	०४ २१ ५६ ४६	०९ ११ ३७ १०	११ ०० १६ ३९	१० ०१ ५३ ४१	०८ ०९ १७ ४४	12
13	११ २९ १२ ४१	०७ ०९ ०४ २७	१० २८ ३४ १७	०० १२ ४२ ०९	०९ २७ १४ ३५	११ ०५ ४० ४०	०४ २१ ५३ २७	०९ ११ ३४ ००	११ ०० १९ ४५	१० ०१ ५५ ०८	०८ ०९ १७ ३०	13
14	०० ०० ११ २८	०७ २१ १६ ४७	१० २९ २० ५९	०० १४ ३५ ०६	०९ २७ २४ ३४	११ ०५ ३० ०७	०४ २१ ५० १३	०९ ११ ३० ४९	११ ०० २२ ५१	१० ०१ ५६ ३३	०८ ०९ १७ १३	14
15	०० ०१ १० १३	०८ ०३ १६ ५८	११ ०० ०७ ४१	०० १६ २५ ०५	०९ २७ ३४ २६	११ ०५ २२ ०३	०४ २१ ४७ ०३	०९ ११ २७ ३८	११ ०० २५ ५५	१० ०१ ५७ ५६	०८ ०९ १६ ५५	15
16	०० ०२ ०८ ५७	०८ १५ ०८ ५८	११ ०० ५४ २१	०० १८ ११ ४८	०९ २७ ४४ ११	११ ०५ १६ २७	०४ २१ ४३ ५९	०९ ११ २४ २७	११ ०० २८ ५८	१० ०१ ५९ १८	०८ ०९ १६ ३५	16
17	०० ०३ ०७ ३८	०८ २६ ५७ ३५	११ ०१ ४० ५९	०० १९ ५४ ५८	०९ २७ ५३ ५०	११ ०५ १३ १७	०४ २१ ४० ५९	०९ ११ २१ १६	११ ०० ३२ ००	१० ०२ ०० ३८	०८ ०९ १६ १२	17
18	०० ०४ ०६ १८	०९ ०८ ४८ ०६	११ ०२ २७ ३७	०० २१ ३४ २०	०९ २८ ०३ २१	११ ०५ १२ ३३	०४ २१ ३८ ०५	०९ ११ १८ ०५	११ ०० ३५ ००	१० ०२ ०१ ५६	०८ ०९ १५ ४९	18
19	०० ०५ ०४ ५७	०९ २० ४६ ०१	११ ०३ १४ १३	०० २३ ०९ ३८	०९ २८ १२ ४६	मा११ ०५ १४ ११	०४ २१ ३५ १६	०९ ११ १४ ५५	११ ०० ३७ ५९	१० ०२ ०३ १३	०८ ०९ १५ २३	19
20	०० ०६ ०३ ३३	१० ०२ ५६ ४२	११ ०४ ०० ४८	०० २४ ४० ४२	०९ २८ २२ ०३	११ ०५ १८ ०९	०४ २१ ३२ ३२	०९ ११ ११ ४४	११ ०० ४० ५६	१० ०२ ०४ २८	०८ ०९ १४ ५६	20
21	०० ०७ ०२ ०८	१० १५ २४ ५८	११ ०४ ४७ २१	०० २६ ०७ २०	०९ २८ ३१ १३	११ ०५ २४ २४	०४ २१ २९ ५३	०९ ११ ०८ ३३	११ ०० ४३ ५२	१० ०२ ०५ ४१	०८ ०९ १४ २७	21
22	०० ०८ ०० ४१	१० २८ १४ ३७	११ ०५ ३३ ५३	०० २७ २९ २२	०९ २८ ४० १६	११ ०५ ३२ ५२	०४ २१ २७ १९	०९ ११ ०५ २३	११ ०० ४६ ४६	१० ०२ ०६ ५३	०८ ०९ १३ ५६	22
23	०० ०८ ५९ १३	११ ११ २७ ५३	११ ०६ २० २३	०० २८ ४६ ४०	०९ २८ ४९ १०	११ ०५ ४३ ३०	०४ २१ २४ ५२	०९ ११ ०२ १२	११ ०० ४९ ३९	१० ०२ ०८ ०३	०८ ०९ १३ २३	23
24	०० ०९ ५७ ४२	११ २५ ०४ ५५	११ ०७ ०६ ५२	०० २९ ५९ ०७	०९ २८ ५७ ५८	११ ०५ ५६ १५	०४ २१ २२ २९	०९ १० ५९ ०१	११ ०० ५२ ३०	१० ०२ ०९ ११	०८ ०९ १२ ४८	24
25	०० १० ५६ १०	०० ०९ ०३ ३५	११ ०७ ५३ १९	०१ ०१ ०६ ३६	०९ २९ ०६ ३७	११ ०६ ११ ०२	०४ २१ २० १२	०९ १० ५५ ५१	११ ०० ५५ १९	१० ०२ १० १७	०८ ०९ १२ १२	25
26	०० ११ ५४ ३६	०० २३ १९ २९	११ ०८ ३९ ४४	०१ ०२ ०९ ०२	०९ २९ १५ ०९	११ ०६ २७ ४७	०४ २१ १८ ०१	०९ १० ५२ ४०	११ ०० ५८ ०७	१० ०२ ११ २२	०८ ०९ ११ ३४	26
27	०० १२ ५३ ०१	०१ ०७ ४६ ३९	११ ०९ २६ ०७	०१ ०३ ०६ ११	०९ २९ २३ ३२	११ ०६ ४६ २७	०४ २१ १५ ५६	०९ १० ४९ २९	११ ०१ ०० ५२	१० ०२ १२ २४	०८ ०९ १० ५४	27
28	०० १३ ५१ २३	०१ २२ १८ २४	११ १० १२ २८	०१ ०३ ५८ २३	०९ २९ ३१ ४८	११ ०७ ०६ ५७	०४ २१ १३ ५६	०९ १० ४६ १८	११ ०१ ०३ ३७	१० ०२ १३ २५	०८ ०९ १० १३	28
29	०० १४ ४९ ४३	०२ ०६ ४८ ३३	११ १० ५८ ४७	०१ ०४ ४५ ०९	०९ २९ ३९ ५५	११ ०७ २९ १५	०४ २१ १२ ०३	०९ १० ४३ ०७	११ ०१ ०६ १९	१० ०२ १४ २४	०८ ०९ ०९ ३०	29
30	०० १५ ४८ ०१	०२ २१ १२ १५	११ ११ ४५ ०४	०१ ०५ २६ ३४	०९ २९ ४७ ५५	११ ०७ ५३ १५	०४ २१ १० १५	०९ १० ३९ ५६	११ ०१ ०९ ००	१० ०२ १५ २२	०८ ०९ ०८ ४६	30

मई सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।२७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
1	०० १६ ४६ १७	०३ ०५ २६ १९	११ १२ ३१ १९	०१ ०६ ०२ ३६	०९ २९ ५५ ४५	११ ०८ १८ ५४	०४ २१ ०८ ३३	०९ १० ३६ ४६	११ ०१ ११ ३८	१० ०२ १६ १७	०८ ०९ ०८ ००	1
2	०० १७ ४४ ३१	०३ १९ २९ १५	११ १३ १७ ३२	०१ ०६ ३३ १२	१० ०० ०३ २८	११ ०८ ४६ १०	०४ २१ ०६ ५७	०९ १० ३३ ३५	११ ०१ १४ १५	१० ०२ १७ ११	०८ ०९ ०७ १२	2
3	०० १८ ४२ ४३	०४ ०३ २० ४१	११ १४ ०३ ४३	०१ ०६ ५८ २१	१० ०० ११ ०२	११ ०९ १४ ५७	०४ २१ ०५ २७	०९ १० ३० २४	११ ०१ १६ ५०	१० ०२ १८ ०२	०८ ०९ ०६ २३	3
4	०० १९ ४० ५३	०४ १७ ०० ५२	११ १४ ४९ ५२	०१ ०७ १८ ०३	१० ०० १८ २७	११ ०९ ४५ १४	०४ २१ ०४ ०४	०९ १० २७ १३	११ ०१ १९ २३	१० ०२ १८ ५२	०८ ०९ ०५ ३२	4
5	०० २० ३९ ०१	०५ ०० ३० ०५	११ १५ ३५ ५८	०१ ०७ ३२ २०	१० ०० २५ ४४	११ १० १६ ५७	०४ २१ ०२ ४६	०९ १० २४ ०३	११ ०१ २१ ५४	१० ०२ १९ ४०	०८ ०९ ०४ ३९	5
6	०० २१ ३७ ०७	०५ १३ ४८ २३	११ १६ २२ ०२	०१ ०७ ४१ १६	१० ०० ३२ ५२	११ १० ५० ०२	०४ २१ ०१ ३४	०९ १० २० ५२	११ ०१ २४ २३	१० ०२ २० २६	०८ ०९ ०३ ४६	6
7	०० २२ ३५ ११	०५ २६ ५५ २५	११ १७ ०८ ०४	व०१ ०७ ४४ ५६	१० ०० ३९ ५१	११ ११ २४ २७	०४ २१ ०० २९	०९ १० १७ ४१	११ ०१ २६ ५०	१० ०२ २१ १०	०८ ०९ ०२ ५०	7
8	०० २३ ३३ १४	०६ ०९ ५० ३४	११ १७ ५४ ०४	०१ ०७ ४३ २८	१० ०० ४६ ४१	११ १२ ०० ०९	०४ २० ५९ २९	०९ १० १४ ३०	११ ०१ २९ १५	१० ०२ २१ ५२	०८ ०९ ०१ ५४	8
9	०० २४ ३१ १४	०६ २२ ३३ १३	११ १८ ४० ०२	०१ ०७ ३७ ०३	१० ०० ५३ २२	११ १२ ३७ ०४	०४ २० ५८ ३६	०९ १० ११ २०	११ ०१ ३१ ३७	१० ०२ २२ ३३	०८ ०९ ०० ५५	9
10	०० २५ २९ १४	०७ ०५ ०२ ५९	११ १९ २५ ५७	०१ ०७ २५ ५४	१० ०० ५९ ५४	११ १३ १५ ११	०४ २० ५७ ४८	०९ १० ०८ ०९	११ ०१ ३३ ५८	१० ०२ २३ ११	०८ ०८ ५९ ५६	10
11	०० २६ २७ ११	०७ १७ २० ०९	११ २० ११ ५०	०१ ०७ १० १८	१० ०१ ०६ १६	११ १३ ५४ २६	०४ २० ५७ ०७	०९ १० ०४ ५८	११ ०१ ३६ १६	१० ०२ २३ ४७	०८ ०८ ५८ ५५	11
12	०० २७ २५ ०७	०७ २९ २५ ५०	११ २० ५७ ४१	०१ ०६ ५० ३५	१० ०१ १२ ३०	११ १४ ३४ ४६	०४ २० ५६ ३३	०९ १० ०१ ४७	११ ०१ ३८ ३३	१० ०२ २४ २२	०८ ०८ ५७ ५३	12
13	०० २८ २३ ०२	०८ ११ २२ ०८	११ २१ ४३ २९	०१ ०६ २७ ०८	१० ०१ १८ ३४	११ १५ १६ १०	०४ २० ५६ ०४	०९ ०९ ५८ ३६	११ ०१ ४० ४७	१० ०२ २४ ५५	०८ ०८ ५६ ४९	13
14	०० २९ २० ५५	०८ २३ १२ ०६	११ २२ २९ १५	०१ ०६ ०० २५	१० ०१ २४ २९	११ १५ ५८ ३५	०४ २० ५५ ४१	०९ ०९ ५५ २५	११ ०१ ४२ ५९	१० ०२ २५ २५	०८ ०८ ५५ ४४	14
15	०१ ०० १८ ४७	०९ ०४ ५९ ४१	११ २३ १४ ५९	०१ ०५ ३० ५४	१० ०१ ३० १४	११ १६ ४१ ५८	०४ २० ५५ २५	०९ ०९ ५२ १५	११ ०१ ४५ ०९	१० ०२ २५ ५४	०८ ०८ ५४ ३८	15
16	०१ ०१ १६ ३८	०९ १६ ४९ ३२	११ २४ ०० ४१	०१ ०४ ५९ ०८	१० ०१ ३५ ४९	११ १७ २६ १७	०४ २० ५५ १५	०९ ०९ ४९ ०४	११ ०१ ४७ १६	१० ०२ २६ २१	०८ ०८ ५३ ३०	16
17	०१ ०२ १४ २८	०९ २८ ४६ ४७	११ २४ ४६ २०	०१ ०४ २५ ४१	१० ०१ ४१ १४	११ १८ ११ २९	मा०४ २० ५५ १२	०९ ०९ ४५ ५३	११ ०१ ४९ २१	१० ०२ २६ ४६	०८ ०८ ५२ २२	17
18	०१ ०३ १२ १६	१० १० ५६ ४९	११ २५ ३१ ५६	०१ ०३ ५१ १०	१० ०१ ४६ ३०	११ १८ ५७ ३४	०४ २० ५५ १४	०९ ०९ ४२ ४२	११ ०१ ५१ २४	१० ०२ २७ ०९	०८ ०८ ५१ १२	18
19	०१ ०४ १० ०३	१० २३ २४ ५१	११ २६ १७ ३०	०१ ०३ १६ ११	१० ०१ ५१ ३६	११ १९ ४४ २८	०४ २० ५५ २३	०९ ०९ ३९ ३२	११ ०१ ५३ २४	१० ०२ २७ ३०	०८ ०८ ५० ००	19
20	०१ ०५ ०७ ४९	११ ०६ १५ २८	११ २७ ०३ ०१	०१ ०२ ४१ २१	१० ०१ ५६ ३१	११ २० ३२ १०	०४ २० ५५ ३८	०९ ०९ ३६ २१	११ ०१ ५५ २२	१० ०२ २७ ४९	०८ ०८ ४८ ४८	20
21	०१ ०६ ०५ ३४	११ १९ ३२ ०१	११ २७ ४८ २९	०१ ०२ ०७ १६	१० ०२ ०१ १६	११ २१ २० ३७	०४ २० ५५ ५९	०९ ०९ ३३ १०	११ ०१ ५७ १८	१० ०२ २८ ०६	०८ ०८ ४७ ३५	21
22	०१ ०७ ०३ १८	०० ०३ १५ ५०	११ २८ ३३ ५५	०१ ०१ ३४ ३१	१० ०२ ०५ ५१	११ २२ ०९ ४८	०४ २० ५६ २६	०९ ०९ २९ ५९	११ ०१ ५९ ११	१० ०२ २८ २१	०८ ०८ ४६ २०	22
23	०१ ०८ ०१ ०१	०० १७ २५ ४२	११ २९ १९ १८	०१ ०१ ०३ ३७	१० ०२ १० १६	११ २२ ५९ ४१	०४ २० ५७ ००	०९ ०९ २६ ४९	११ ०२ ०१ ०१	१० ०२ २८ ३३	०८ ०८ ४५ ०४	23
24	०१ ०८ ५८ ४२	०१ ०१ ५७ ३४	०० ०० ०४ ३८	०१ ०० ३५ ०६	१० ०२ १४ ३०	११ २३ ५० १५	०४ २० ५७ ४०	०९ ०९ २३ ३८	११ ०२ ०२ ४९	१० ०२ २८ ४४	०८ ०८ ४३ ४८	24
25	०१ ०९ ५६ २३	०१ १६ ४४ ५१	०० ०० ४९ ५५	०१ ०० ०९ २५	१० ०२ १८ ३३	११ २४ ४१ २८	०४ २० ५८ २६	०९ ०९ २० २७	११ ०२ ०४ ३५	१० ०२ २८ ५४	०८ ०८ ४२ ३०	25
26	०१ १० ५४ ०२	०२ ०१ ३९ २०	०० ०१ ३५ ०९	०० २९ ४६ ५६	१० ०२ २२ २६	११ २५ ३३ १७	०४ २० ५९ १९	०९ ०९ १७ १६	११ ०२ ०६ १८	१० ०२ २९ ०१	०८ ०८ ४१ ११	26
27	०१ ११ ५१ ४०	०२ १६ ३२ २७	०० ०२ २० २०	०० २९ २८ ००	१० ०२ २६ ०८	११ २६ २५ ४३	०४ २१ ०० १७	०९ ०९ १४ ०५	११ ०२ ०७ ५९	१० ०२ २९ ०६	०८ ०८ ३९ ५१	27
28	०१ १२ ४९ १६	०३ ०१ १६ ४४	०० ०३ ०५ २८	०० २९ १२ ५४	१० ०२ २९ ४०	११ २७ १८ ४३	०४ २१ ०१ २२	०९ ०९ १० ५४	११ ०२ ०९ ३६	१० ०२ २९ ०९	०८ ०८ ३८ ३१	28
29	०१ १३ ४६ ५१	०३ १५ ४६ ४३	०० ०३ ५० ३२	०० २९ ०१ ५१	१० ०२ ३३ ००	११ २८ १२ १६	०४ २१ ०२ ३३	०९ ०९ ०७ ४३	११ ०२ ११ १२	व१० ०२ २९ १०	०८ ०८ ३७ ०९	29
30	०१ १४ ४४ २५	०३ २९ ५९ १३	०० ०४ ३५ ३४	०० २८ ५५ ०२	१० ०२ ३६ १०	११ २९ ०६ २१	०४ २१ ०३ ५०	०९ ०९ ०४ ३३	११ ०२ १२ ४४	१० ०२ २९ ०९	०८ ०८ ३५ ४७	30
31	०१ १५ ४१ ५७	०४ १३ ५३ ०८	०० ०५ २० ३२	मा०० २८ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ०२ १४ २४	१० ०२ २९ ०७	०८ ०८ ३४ २४	31

जून सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।३१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
1	०१ १६ ३९ २८	०४ २७ २८ ४९	०० ०६ ०५ २६	०० २८ ५४ ३२	१० ०२ ४१ ५६	०० ०० ५६ ०३	०४ २१ ०६ ४३	०९ ०८ ५८ ११	११ ०२ १५ ४२	१० ०२ २९ ०२	०८ ०८ ३३ ००	1
2	०१ १७ ३६ ५७	०५ १० ४७ २६	०० ०६ ५० १८	०० २९ ०० ५९	१० ०२ ४४ ३३	०० ०१ ५१ ३७	०४ २१ ०८ १९	०९ ०८ ५५ ००	११ ०२ १७ ०६	१० ०२ २८ ५५	०८ ०८ ३१ ३५	2
3	०१ १८ ३४ २५	०५ २३ ५० ३२	०० ०७ ३५ ०६	०० २९ ११ ५४	१० ०२ ४६ ५९	०० ०२ ४७ ४०	०४ २१ १० ००	०९ ०८ ५१ ५०	११ ०२ १८ २८	१० ०२ २८ ४७	०८ ०८ ३० १०	3
4	०१ १९ ३१ ५२	०६ ०६ ३९ ३९	०० ०८ ११ ५१	०० २९ २७ १९	१० ०२ ४९ १३	०० ०३ ४४ १०	०४ २१ ११ ४७	०९ ०८ ४८ ३९	११ ०२ १९ ४८	१० ०२ २८ ३६	०८ ०८ २८ ४४	4
5	०१ २० २९ १८	०६ १९ १६ ०८	०० ०९ ०४ ३३	०० २९ ४७ ०९	१० ०२ ५१ १७	०० ०४ ४१ ०६	०४ २१ १३ ४१	०९ ०८ ४५ २८	११ ०२ २१ ०४	१० ०२ २८ २४	०८ ०८ २७ १७	5
6	०१ २१ २६ ४३	०७ ०१ ४१ १०	०० ०९ ४९ ११	०१ ०० ११ २२	१० ०२ ५३ ०९	०० ०५ ३८ २८	०४ २१ १५ ४०	०९ ०८ ४२ १७	११ ०२ २२ १८	१० ०२ २८ ०९	०८ ०८ २५ ५०	6
7	०१ २२ २४ ०६	०७ १३ ५५ ४८	०० १० ३३ ४६	०१ ०० ३९ ५४	१० ०२ ५४ ५०	०० ०६ ३६ १४	०४ २१ १७ ४५	०९ ०८ ३९ ०६	११ ०२ २३ २९	१० ०२ २७ ५३	०८ ०८ २४ २२	7
8	०१ २३ २१ २९	०७ २६ ०१ ०९	०० ११ १८ १८	०१ ०१ १२ ४०	१० ०२ ५६ १९	०० ०७ ३४ २४	०४ २१ १९ ५६	०९ ०८ ३५ ५५	११ ०२ २४ ३७	१० ०२ २७ ३५	०८ ०८ २२ ५३	8
9	०१ २४ १८ ५१	०८ ०७ ५८ ३६	०० १२ ०२ ४६	०१ ०१ ४९ ३६	१० ०२ ५७ ३८	०० ०८ ३२ ५७	०४ २१ २२ १२	०९ ०८ ३२ ४५	११ ०२ २५ ४३	१० ०२ २७ १५	०८ ०८ २१ २४	9
10	०१ २५ १६ १२	०८ १९ ५० ०१	०० १२ ४७ ११	०१ ०२ ३० ३५	१० ०२ ५८ ४५	०० ०९ ३१ ५३	०४ २१ २४ ३५	०९ ०८ २९ ३४	११ ०२ २६ ४६	१० ०२ २६ ५३	०८ ०८ १९ ५५	10
11	०१ २६ १३ ३३	०९ ०१ ३७ ५१	०० १३ ३१ ३३	०१ ०३ १५ ३४	१० ०२ ५९ ४०	०० १० ३१ ११	०४ २१ २७ ०३	०९ ०८ २६ २३	११ ०२ २७ ४६	१० ०२ २६ ३०	०८ ०८ १८ २५	11
12	०१ २७ १० ५३	०९ १३ २५ १०	०० १४ १५ ५२	०१ ०४ ०४ २६	१० ०३ ०० २४	०० ११ ३० ४९	०४ २१ २९ ३७	०९ ०८ २३ १२	११ ०२ २८ ४३	१० ०२ २६ ०४	०८ ०८ १६ ५४	12
13	०१ २८ ०८ १२	०९ २५ १५ ३८	०० १५ ०० ०७	०१ ०४ ५७ ०७	१० ०३ ०० ५७	०० १२ ३० ४८	०४ २१ ३२ १७	०९ ०८ २० ०१	११ ०२ २९ ३८	१० ०२ २५ ३७	०८ ०८ १५ २४	13
14	०१ २९ ०५ ३१	१० ०७ १३ ३०	०० १५ ४४ १८	०१ ०५ ५३ ३२	१० ०३ ०१ १८	०० १३ ३१ ०७	०४ २१ ३५ ०२	०९ ०८ १६ ५१	११ ०२ ३० २९	१० ०२ २५ ०८	०८ ०८ १३ ५३	14
15	०२ ०० ०२ ५०	१० १९ २३ २३	०० १६ २८ २६	०१ ०६ ५३ ३७	व१० ०३ ०१ २८	०० १४ ३१ ४४	०४ २१ ३७ ५३	०९ ०८ १३ ४०	११ ०२ ३१ १८	१० ०२ २४ ३७	०८ ०८ १२ २१	15
16	०२ ०१ ०० ०८	११ ०१ ५० ०८	०० १७ १२ ३१	०१ ०७ ५७ १८	१० ०३ ०१ २५	०० १५ ३२ ४०	०४ २१ ४० ४९	०९ ०८ १० २९	११ ०२ ३२ ०४	१० ०२ २४ ०४	०८ ०८ १० ४९	16
17	०२ ०१ ५७ २६	११ १४ ३८ २१	०० १७ ५६ ३२	०१ ०९ ०४ ३२	१० ०३ ०१ १२	०० १६ ३३ ५४	०४ २१ ४३ ५१	०९ ०८ ०७ १८	११ ०२ ३२ ४७	१० ०२ २३ २९	०८ ०८ ०९ १७	17
18	०२ ०२ ५४ ४३	११ २७ ५१ ५१	०० १८ ४० २९	०१ १० १५ १४	१० ०३ ०० ४६	०० १७ ३५ २५	०४ २१ ४६ ५८	०९ ०८ ०४ ०८	११ ०२ ३३ २७	१० ०२ २२ ५३	०८ ०८ ०७ ४५	18
19	०२ ०३ ५२ ०१	०० ११ ३२ ५९	०० १९ २४ २२	०१ ११ २९ २२	१० ०३ ०० १०	०० १८ ३७ १३	०४ २१ ५० १०	०९ ०८ ०० ५७	११ ०२ ३४ ०४	१० ०२ २२ १५	०८ ०८ ०६ १२	19
20	०२ ०४ ४९ १८	०० २५ ४१ ५८	०० २० ०८ १२	०१ १२ ४६ ५३	१० ०२ ५९ २१	०० १९ ३९ १७	०४ २१ ५३ २८	०९ ०७ ५७ ४६	११ ०२ ३४ ३८	१० ०२ २१ ३५	०८ ०८ ०४ ३९	20
21	०२ ०५ ४६ ३४	०१ १० १६ १५	०० २० ५१ ५८	०१ १४ ०७ ४५	१० ०२ ५८ २१	०० २० ४१ ३७	०४ २१ ५६ ५२	०९ ०७ ५४ ३५	११ ०२ ३५ १०	१० ०२ २० ५३	०८ ०८ ०३ ०७	21
22	०२ ०६ ४३ ५१	०१ २५ १० २१	०० २१ ३५ ४०	०१ १५ ३१ ५६	१० ०२ ५७ ०९	०० २१ ४४ १२	०४ २२ ०० २१	०९ ०७ ५१ २४	११ ०२ ३५ ३८	१० ०२ २० ०९	०८ ०८ ०१ ३४	22
23	०२ ०७ ४१ ०७	०२ १० १६ २१	०० २२ १९ १८	०१ १६ ५९ २३	१० ०२ ५५ ४६	०० २२ ४७ ०१	०४ २२ ०३ ५५	०९ ०७ ४८ १३	११ ०२ ३६ ०४	१० ०२ १९ २४	०८ ०८ ०० ०१	23
24	०२ ०८ ३८ २३	०२ २५ २४ ५९	०० २३ ०२ ५३	०१ १८ ३० ०६	१० ०२ ५४ ११	०० २३ ५० ०४	०४ २२ ०७ ३४	०९ ०७ ४५ ०२	११ ०२ ३६ २६	१० ०२ १८ ३७	०८ ०७ ५८ २८	24
25	०२ ०९ ३५ ३८	०३ १० २६ ५६	०० २३ ४६ २३	०१ २० ०४ ००	१० ०२ ५२ २५	०० २४ ५३ २१	०४ २२ ११ १८	०९ ०७ ४१ ५१	११ ०२ ३६ ४६	१० ०२ १७ ४९	०८ ०७ ५६ ५५	25
26	०२ १० ३२ ५३	०३ २५ १४ २२	०० २४ २९ ४८	०१ २१ ४१ ०५	१० ०२ ५० २७	०० २५ ५६ ५१	०४ २२ १५ ०८	०९ ०७ ३८ ४१	११ ०२ ३७ ०३	१० ०२ १६ ५९	०८ ०७ ५५ २२	26
27	०२ ११ ३० ०७	०४ ०९ ४१ ४३	०० २५ १३ १०	०१ २३ २१ १७	१० ०२ ४८ १८	०० २७ ०० ३४	०४ २२ १९ ०२	०९ ०७ ३५ ३०	११ ०२ ३७ १७	१० ०२ १६ ०७	०८ ०७ ५३ ४९	27
28	०२ १२ २७ २१	०४ २३ ४६ ०१	०० २५ ५६ २८	०१ २५ ०४ ३३	१० ०२ ४५ ५८	०० २८ ०४ ३०	०४ २२ २३ ०२	०९ ०७ ३२ १९	११ ०२ ३७ २८	१० ०२ १५ १३	०८ ०७ ५२ १६	28
29	०२ १३ २४ ३४	०५ ०७ २६ ३३	०० २६ ३९ ४१	०१ २६ ५० ५०	१० ०२ ४३ २६	०० २९ ०८ ३८	०४ २२ २७ ०७	०९ ०७ २९ ०८	११ ०२ ३७ ३६	१० ०२ १४ १८	०८ ०७ ५० ४४	29
30	०२ १४ २१ ४७	०५ २० ४४ २१	०० २७ २२ ५०	०१ २८ ४० ०२	१० ०२ ४० ४४	०१ ०० १२ ५७	०४ २२ ३१ १६	०९ ०७ २५ ५७	११ ०२ ३७ ४१	१० ०२ १३ २२	०८ ०७ ४९ १२	30

जुलाई सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।३७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
1	०२ १५ १८ ५९	०६ ०३ ४१ ३२	०० २८ ०५ ५५	०२ ०० ३२ ०३	१० ०२ ३७ ५०	०१ ०१ १७ २८	०४ २२ ३५ ३०	०९ ०७ २२ ४७	व११ ०२ ३७ ४३	१० ०२ १२ २४	०८ ०७ ४७ ४०	1
2	०२ १६ १६ ११	०६ १६ २० ५०	०० २८ ४८ ५५	०२ ०२ २६ ४६	१० ०२ ३४ ४६	०१ ०२ २२ ११	०४ २२ ३९ ४९	०९ ०७ १९ ३६	११ ०२ ३७ ४२	१० ०२ ११ २४	०८ ०७ ४६ ०८	2
3	०२ १७ १३ २२	०६ २८ ४५ ११	०० २९ ३१ ५२	०२ ०४ २४ ०२	१० ०२ ३१ ३१	०१ ०३ २७ ०५	०४ २२ ४४ १२	०९ ०७ १६ २५	११ ०२ ३७ ३९	१० ०२ १० २३	०८ ०७ ४४ ३६	3
4	०२ १८ १० ३४	०७ १० ५७ २८	०१ ०० १४ ४४	०२ ०६ २३ ३९	१० ०२ २८ ०५	०१ ०४ ३२ १०	०४ २२ ४८ ४१	०९ ०७ १३ १४	११ ०२ ३७ ३२	१० ०२ ०९ २०	०८ ०७ ४३ ०५	4
5	०२ १९ ०७ ४५	०७ २३ ०० २०	०१ ०० ५७ ३२	०२ ०८ २५ २७	१० ०२ २४ २८	०१ ०५ ३७ २६	०४ २२ ५३ १३	०९ ०७ १० ०३	११ ०२ ३७ २३	१० ०२ ०८ १६	०८ ०७ ४१ ३५	5
6	०२ २० ०४ ५६	०८ ०४ ५६ ०७	०१ ०१ ४० १५	०२ १० २९ ११	१० ०२ २० ४१	०१ ०६ ४२ ५३	०४ २२ ५७ ५१	०९ ०७ ०६ ५२	११ ०२ ३७ ११	१० ०२ ०७ ११	०८ ०७ ४० ०४	6
7	०२ २१ ०२ ०७	०८ १६ ४७ ०२	०१ ०२ २२ ५५	०२ १२ ३४ ३५	१० ०२ १६ ४४	०१ ०७ ४८ २९	०४ २३ ०२ ३३	०९ ०७ ०३ ४२	११ ०२ ३६ ५६	१० ०२ ०६ ०४	०८ ०७ ३८ ३४	7
8	०२ २१ ५९ १८	०८ २८ ३५ १६	०१ ०३ ०५ ३०	०२ १४ ४१ २५	१० ०२ १२ ३६	०१ ०८ ५४ १७	०४ २३ ०७ १९	०९ ०७ ०० ३१	११ ०२ ३६ ३८	१० ०२ ०४ ५६	०८ ०७ ३७ ०५	8
9	०२ २२ ५६ २९	०९ १० २३ ०५	०१ ०३ ४८ ०१	०२ १६ ४९ २२	१० ०२ ०८ १९	०१ १० ०० १४	०४ २३ १२ ०९	०९ ०६ ५७ २०	११ ०२ ३६ १७	१० ०२ ०३ ४६	०८ ०७ ३५ ३६	9
10	०२ २३ ५३ ४०	०९ २२ १२ ५७	०१ ०४ ३० २७	०२ १८ ५८ ०८	१० ०२ ०३ ५१	०१ ११ ०६ २१	०४ २३ १७ ०४	०९ ०६ ५४ ०९	११ ०२ ३५ ५४	१० ०२ ०२ ३६	०८ ०७ ३४ ०८	10
11	०२ २४ ५० ५२	१० ०४ ०७ ३७	०१ ०५ १२ ४९	०२ २१ ०७ २६	१० ०१ ५९ १४	०१ १२ १२ ३८	०४ २३ २२ ०४	०९ ०६ ५० ५८	११ ०२ ३५ २८	१० ०२ ०१ २३	०८ ०७ ३२ ४०	11
12	०२ २५ ४८ ०४	१० १६ १० ०६	०१ ०५ ५५ ०७	०२ २३ १६ ५८	१० ०१ ५४ २७	०१ १३ १९ ०४	०४ २३ २७ ०७	०९ ०६ ४७ ४८	११ ०२ ३४ ५८	१० ०२ ०० १०	०८ ०७ ३१ १३	12
13	०२ २६ ४५ १७	१० २८ २३ ४९	०१ ०६ ३७ २१	०२ २५ २६ २७	१० ०१ ४९ ३०	०१ १४ २५ ३९	०४ २३ ३२ १४	०९ ०६ ४४ ३७	११ ०२ ३४ २६	१० ०१ ५८ ५५	०८ ०७ २९ ४६	13
14	०२ २७ ४२ २९	११ १० ५२ २७	०१ ०७ १९ ३०	०२ २७ ३५ ३८	१० ०१ ४४ २४	०१ १५ ३२ २४	०४ २३ ३७ २६	०९ ०६ ४१ २६	११ ०२ ३३ ५२	१० ०१ ५७ ३९	०८ ०७ २८ २०	14
15	०२ २८ ३९ ४३	११ २३ ३९ ४५	०१ ०८ ०१ ३५	०२ २९ ४४ १५	१० ०१ ३९ ०८	०१ १६ ३९ १७	०४ २३ ४२ ४२	०९ ०६ ३८ १६	११ ०२ ३३ १४	१० ०१ ५६ २२	०८ ०७ २६ ५५	15
16	०२ २९ ३६ ५७	०० ०६ ४९ ०८	०१ ०८ ४३ ३५	०३ ०१ ५२ ०५	१० ०१ ३३ ४४	०१ १७ ४६ १९	०४ २३ ४८ ०१	०९ ०६ ३५ ०५	११ ०२ ३२ ३४	१० ०१ ५५ ०४	०८ ०७ २५ ३०	16
17	०३ ०० ३४ १२	०० २० २३ १४	०१ ०९ २५ ३०	०३ ०३ ५८ ५७	१० ०१ २८ १०	०१ १८ ५३ २९	०४ २३ ५३ २५	०९ ०६ ३१ ५४	११ ०२ ३१ ५१	१० ०१ ५३ ४४	०८ ०७ २४ ०६	17
18	०३ ०१ ३१ २७	०१ ०४ २३ १२	०१ १० ०७ २१	०३ ०६ ०४ ४२	१० ०१ २२ २८	०१ २० ०० ४८	०४ २३ ५८ ५२	०९ ०६ २८ ४३	११ ०२ ३१ ०५	१० ०१ ५२ २४	०८ ०७ २२ ४३	18
19	०३ ०२ २८ ४३	०१ १८ ४८ १४	०१ १० ४९ ०७	०३ ०८ ०९ १०	१० ०१ १६ ३८	०१ २१ ०८ १५	०४ २४ ०४ २४	०९ ०६ २५ ३२	११ ०२ ३० १६	१० ०१ ५१ ०२	०८ ०७ २१ २१	19
20	०३ ०३ २६ ००	०२ ०३ ३४ ५७	०१ ११ ३० ४९	०३ १० १२ १५	१० ०१ १० ३९	०१ २२ १५ ५०	०४ २४ ०९ ५९	०९ ०६ २२ २१	११ ०२ २९ २५	१० ०१ ४९ ३९	०८ ०७ २० ००	20
21	०३ ०४ २३ १७	०२ १८ ३७ २६	०१ १२ १२ २५	०३ १२ १३ ५१	१० ०१ ०४ ३२	०१ २३ २३ ३२	०४ २४ १५ ३८	०९ ०६ १९ १०	११ ०२ २८ ३१	१० ०१ ४८ १५	०८ ०७ १८ ३९	21
22	०३ ०५ २० ३६	०३ ०३ ४७ ३४	०१ १२ ५३ ५७	०३ १४ १३ ५३	१० ०० ५८ १८	०१ २४ ३१ २२	०४ २४ २१ २०	०९ ०६ १५ ५९	११ ०२ २७ ३४	१० ०१ ४६ ५१	०८ ०७ १७ २०	22
23	०३ ०६ १७ ५४	०३ १८ ५६ ०४	०१ १३ ३५ २३	०३ १६ १२ २०	१० ०० ५१ ५६	०१ २५ ३९ १९	०४ २४ २७ ०६	०९ ०६ १२ ४९	११ ०२ २६ ३५	१० ०१ ४५ २५	०८ ०७ १६ ०१	23
24	०३ ०७ १५ १३	०४ ०३ ५३ ५०	०१ १४ १६ ४५	०३ १८ ०९ ०७	१० ०० ४५ २७	०१ २६ ४७ २३	०४ २४ ३२ ५६	०९ ०६ ०९ ३८	११ ०२ २५ ३३	१० ०१ ४३ ५८	०८ ०७ १४ ४४	24
25	०३ ०८ १२ ३३	०४ १८ ३३ १४	०१ १४ ५८ ०१	०३ २० ०४ १४	१० ०० ३८ ५१	०१ २७ ५५ ३४	०४ २४ ३८ ४९	०९ ०६ ०६ २७	११ ०२ २४ २९	१० ०१ ४२ ३१	०८ ०७ १३ २७	25
26	०३ ०९ ०९ ५३	०५ ०२ ४९ ००	०१ १५ ३९ १२	०३ २१ ५७ ३९	१० ०० ३२ ०८	०१ २९ ०३ ५२	०४ २४ ४४ ४६	०९ ०६ ०३ १६	११ ०२ २३ २२	१० ०१ ४१ ०३	०८ ०७ १२ ११	26
27	०३ १० ०७ १३	०५ १६ ३८ ३१	०१ १६ २० १८	०३ २३ ४९ २२	१० ०० २५ १९	०२ ०० १२ १७	०४ २४ ५० ४५	०९ ०६ ०० ०६	११ ०२ २२ १२	१० ०१ ३९ ३३	०८ ०७ १० ५७	27
28	०३ ११ ०४ ३४	०६ ०० ०१ ३७	०१ १७ ०१ १९	०३ २५ ३९ २२	१० ०० १८ २४	०२ ०१ २० ४८	०४ २४ ५६ ४९	०९ ०५ ५६ ५५	११ ०२ २१ ००	१० ०१ ३८ ०३	०८ ०७ ०९ ४४	28
29	०३ १२ ०१ ५५	०६ १३ ०० ०३	०१ १७ ४२ १५	०३ २७ २७ ४०	१० ०० ११ २३	०२ ०२ २९ २६	०४ २५ ०२ ५५	०९ ०५ ५३ ४४	११ ०२ १९ ४५	१० ०१ ३६ ३३	०८ ०७ ०८ ३१	29
30	०३ १२ ५९ १७	०६ २५ ३६ ५६	०१ १८ २३ ०५	०३ २९ १४ १६	१० ०० ०४ १७	०२ ०३ ३८ १०	०४ २५ ०९ ०४	०९ ०५ ५० ३३	११ ०२ १८ २८	१० ०१ ३५ ०१	०८ ०७ ०७ २०	30
31	०३ १३ ५६ ३९	०७ ०७ ५६ ०६	०१ १९ ०३ ५०	०४ ०० ५९ ०९	०९ २९ ५७ ०६	०२ ०४ ४७ ०१	०४ २५ १५ १७	०९ ०५ ४७ २३	११ ०२ १७ ०९	१० ०१ ३३ २९	०८ ०७ ०६ १०	31

अगस्त सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।४२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
1	०३ १४ ५४ ०२	०७ २० ०१ ४२	०१ १९ ४४ ३०	०४ ०२ ४२ २२	०९ २९ ४९ ४९	०२ ०५ ५५ ५८	०४ २५ २१ ३२	०९ ०५ ४४ १२	११ ०२ १५ ४७	१० ०१ ३१ ५६	०८ ०७ ०५ ०२	1
2	०३ १५ ५१ २५	०८ ०१ ५७ ४५	०१ २० २५ ०४	०४ ०४ २३ ५४	०९ २९ ४२ २९	०२ ०७ ०५ ०२	०४ २५ २७ ५१	०९ ०५ ४१ ०१	११ ०२ १४ २३	१० ०१ ३० २३	०८ ०७ ०३ ५४	2
3	०३ १६ ४८ ५०	०८ १३ ४८ ००	०१ २१ ०५ ३४	०४ ०६ ०३ ४६	०९ २९ ३५ ०३	०२ ०८ १४ १२	०४ २५ ३४ १२	०९ ०५ ३७ ५०	११ ०२ १२ ५७	१० ०१ २८ ४९	०८ ०७ ०२ ४८	3
4	०३ १७ ४६ १५	०८ २५ ३५ ४४	०१ २१ ४५ ५८	०४ ०७ ४१ ५८	०९ २९ २७ ३४	०२ ०९ २३ २८	०४ २५ ४० ३७	०९ ०५ ३४ ३९	११ ०२ ११ २८	१० ०१ २७ १४	०८ ०७ ०१ ४३	4
5	०३ १८ ४३ ४०	०९ ०७ २३ ५४	०१ २२ २६ १६	०४ ०९ १८ ३०	०९ २९ २० ०२	०२ १० ३२ ५१	०४ २५ ४७ ०४	०९ ०५ ३१ २८	११ ०२ ०९ ५७	१० ०१ २५ ४०	०८ ०७ ०० ३९	5
6	०३ १९ ४१ ०७	०९ १९ १५ ०२	०१ २३ ०६ ३०	०४ १० ५३ २४	०९ २९ १२ २६	०२ ११ ४२ २०	०४ २५ ५३ ३३	०९ ०५ २८ १८	११ ०२ ०८ २४	१० ०१ २४ ०४	०८ ०६ ५९ ३७	6
7	०३ २० ३८ ३५	१० ०१ ११ २६	०१ २३ ४६ ३८	०४ १२ २६ ३७	०९ २९ ०४ ४७	०२ १२ ५१ ५५	०४ २६ ०० ०६	०९ ०५ २५ ०७	११ ०२ ०६ ४९	१० ०१ २२ २८	०८ ०६ ५८ ३६	7
8	०३ २१ ३६ ०४	१० १३ १५ ०६	०१ २४ २६ ४०	०४ १३ ५८ ११	०९ २८ ५७ ०५	०२ १४ ०१ ३६	०४ २६ ०६ ४१	०९ ०५ २१ ५६	११ ०२ ०५ ११	१० ०१ २० ५२	०८ ०६ ५७ ३७	8
9	०३ २२ ३३ ३४	१० २५ २७ ५८	०१ २५ ०६ ३७	०४ १५ २८ ०५	०९ २८ ४९ २१	०२ १५ ११ २३	०४ २६ १३ १८	०९ ०५ १८ ४६	११ ०२ ०३ ३२	१० ०१ १९ १५	०८ ०६ ५६ ३८	9
10	०३ २३ ३१ ०५	११ ०७ ५१ ५७	०१ २५ ४६ २९	०४ १६ ५६ १८	०९ २८ ४१ ३५	०२ १६ २१ १६	०४ २६ १९ ५८	०९ ०५ १५ ३५	११ ०२ ०१ ५०	१० ०१ १७ ३८	०८ ०६ ५५ ४२	10
11	०३ २४ २८ ३७	११ २० २९ ०६	०१ २६ २६ १५	०४ १८ २२ ५०	०९ २८ ३३ ४७	०२ १७ ३१ १५	०४ २६ २६ ४१	०९ ०५ १२ २४	११ ०२ ०० ०६	१० ०१ १६ ०१	०८ ०६ ५४ ४६	11
12	०३ २५ २६ ११	०० ०३ २१ ३५	०१ २७ ०५ ५६	०४ १९ ४७ ३९	०९ २८ २५ ५८	०२ १८ ४१ २०	०४ २६ ३३ २६	०९ ०५ ०९ १३	११ ०१ ५८ २१	१० ०१ १४ २३	०८ ०६ ५३ ५२	12
13	०३ २६ २३ ४६	०० १६ ३१ ३४	०१ २७ ४५ ३१	०४ २१ १० ४४	०९ २८ १८ ०७	०२ १९ ५१ ३०	०४ २६ ४० १३	०९ ०५ ०६ ०३	११ ०१ ५६ ३३	१० ०१ १२ ४५	०८ ०६ ५३ ००	13
14	०३ २७ २१ २३	०१ ०० ०० ५६	०१ २८ २५ ००	०४ २२ ३२ ०२	०९ २८ १० १६	०२ २१ ०१ ४७	०४ २६ ४७ ०२	०९ ०५ ०२ ५२	११ ०१ ५४ ४३	१० ०१ ११ ०७	०८ ०६ ५२ ०९	14
15	०३ २८ १९ ०१	०१ १३ ५० ५७	०१ २९ ०४ २४	०४ २३ ५१ ३२	०९ २८ ०२ २५	०२ २२ १२ ०९	०४ २६ ५३ ५४	०९ ०४ ५९ ४१	११ ०१ ५२ ५२	१० ०१ ०९ २९	०८ ०६ ५१ १९	15
16	०३ २९ १६ ४१	०१ २८ ०१ ४९	०१ २९ ४३ ४१	०४ २५ ०९ १२	०९ २७ ५४ ३३	०२ २३ २२ ३७	०४ २७ ०० ४७	०९ ०४ ५६ ३०	११ ०१ ५० ५९	१० ०१ ०७ ५१	०८ ०६ ५० ३१	16
17	०४ ०० १४ २२	०२ १२ ३२ ०९	०२ ०० २२ ५३	०४ २६ २४ ५७	०९ २७ ४६ ४२	०२ २४ ३३ १०	०४ २७ ०७ ४३	०९ ०४ ५३ १९	११ ०१ ४९ ०४	१० ०१ ०६ १३	०८ ०६ ४९ ४५	17
18	०४ ०१ १२ ०५	०२ २७ १८ ३४	०२ ०१ ०१ ५९	०४ २७ ३८ ४५	०९ २७ ३८ ५१	०२ २५ ४३ ४९	०४ २७ १४ ४१	०९ ०४ ५० ०८	११ ०१ ४७ ०७	१० ०१ ०४ ३४	०८ ०६ ४९ ००	18
19	०४ ०२ ०९ ४९	०३ १२ १५ २९	०२ ०१ ४० ५८	०४ २८ ५० ३२	०९ २७ ३१ ०२	०२ २६ ५४ ३३	०४ २७ २१ ४१	०९ ०४ ४६ ५८	११ ०१ ४५ ०९	१० ०१ ०२ ५६	०८ ०६ ४८ १७	19
20	०४ ०३ ०७ ३५	०३ २७ १५ २९	०२ ०२ १९ ५१	०५ ०० ०० १२	०९ २७ २३ १४	०२ २८ ०५ २२	०४ २७ २८ ४३	०९ ०४ ४३ ४७	११ ०१ ४३ ०८	१० ०१ ०१ १७	०८ ०६ ४७ ३६	20
21	०४ ०४ ०५ २२	०४ १२ १० ०८	०२ ०२ ५८ ३८	०५ ०१ ०७ ४०	०९ २७ १५ २८	०२ २९ १६ १६	०४ २७ ३५ ४७	०९ ०४ ४० ३६	११ ०१ ४१ ०७	१० ०० ५९ ३९	०८ ०६ ४६ ५६	21
22	०४ ०५ ०३ ११	०४ २६ ५१ ०९	०२ ०३ ३७ १८	०५ ०२ १२ ५२	०९ २७ ०७ ४४	०३ ०० २७ १५	०४ २७ ४२ ५२	०९ ०४ ३७ २५	११ ०१ ३९ ०३	१० ०० ५८ ०१	०८ ०६ ४६ १८	22
23	०४ ०६ ०१ ००	०५ ११ ११ ४४	०२ ०४ १५ ५२	०५ ०३ १५ ४०	०९ २७ ०० ०२	०३ ०१ ३८ १९	०४ २७ ४९ ५९	०९ ०४ ३४ १५	११ ०१ ३६ ५९	१० ०० ५६ २३	०८ ०६ ४५ ४१	23
24	०४ ०६ ५८ ५१	०५ २५ ०७ २१	०२ ०४ ५४ १९	०५ ०४ १५ ५७	०९ २६ ५२ २४	०३ ०२ ४९ २७	०४ २७ ५७ ०८	०९ ०४ ३१ ०४	११ ०१ ३४ ५२	१० ०० ५४ ४५	०८ ०६ ४५ ०६	24
25	०४ ०७ ५६ ४४	०६ ०८ ३६ ०५	०२ ०५ ३२ ४०	०५ ०५ १३ ३५	०९ २६ ४४ ४८	०३ ०४ ०० ४०	०४ २८ ०४ १८	०९ ०४ २७ ५३	११ ०१ ३२ ४५	१० ०० ५३ ०७	०८ ०६ ४४ ३३	25
26	०४ ०८ ५४ ३७	०६ २१ ३८ ३१	०२ ०६ १० ५४	०५ ०६ ०८ २५	०९ २६ ३७ १७	०३ ०५ ११ ५८	०४ २८ ११ ३०	०९ ०४ २४ ४३	११ ०१ ३० ३६	१० ०० ५१ ३०	०८ ०६ ४४ ०२	26
27	०४ ०९ ५२ ३२	०७ ०४ १७ १४	०२ ०६ ४९ ०१	०५ ०७ ०० १७	०९ २६ २९ ४९	०३ ०६ २३ २१	०४ २८ १८ ४३	०९ ०४ २१ ३२	११ ०१ २८ २५	१० ०० ४९ ५३	०८ ०६ ४३ ३२	27
28	०४ १० ५० २८	०७ १६ ३६ ०८	०२ ०७ २७ ०१	०५ ०७ ४९ ०२	०९ २६ २२ २५	०३ ०७ ३४ ४८	०४ २८ २५ ५८	०९ ०४ १८ २१	११ ०१ २६ १४	१० ०० ४८ १६	०८ ०६ ४३ ०४	28
29	०४ ११ ४८ २५	०७ २८ ३९ ५५	०२ ०८ ०४ ५५	०५ ०८ ३४ २६	०९ २६ १५ ०६	०३ ०८ ४६ २०	०४ २८ ३३ १३	०९ ०४ १५ १०	११ ०१ २४ ०१	१० ०० ४६ ३९	०८ ०६ ४२ ३८	29
30	०४ १२ ४६ २४	०८ १० ३३ ३३	०२ ०८ ४२ ४२	०५ ०९ १६ १९	०९ २६ ०७ ५२	०३ ०९ ५७ ५७	०४ २८ ४० ३०	०९ ०४ ११ ५९	११ ०१ २१ ४८	१० ०० ४५ ०४	०८ ०६ ४२ १४	30
31	०४ १३ ४४ २४	०८ २२ २१ ५४	०२ ०९ २० २१	०५ ०९ ५४ २५	०९ २६ ०० ४३	०३ ११ ०९ ३८	०४ २८ ४७ ४९	०९ ०४ ०८ ४९	११ ०१ १९ ३३	१० ०० ४३ २८	०८ ०६ ४१ ५१	31

सितम्बर सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
1	०४ १४ ४२ २५	०९ ०४ ०९ २६	०२ ०९ ५७ ५५	०५ १० २८ ३०	०९ २५ ५३ ३९	०३ १२ २१ २४	०४ २८ ५५ ०८	०९ ०४ ०५ ३८	११ ०१ १७ १७	१० ०० ४१ ५३	०८ ०६ ४१ ३०	1
2	०४ १५ ४० २८	०९ १६ ०० ०४	०२ १० ३५ २१	०५ १० ५८ १९	०९ २५ ४६ ४१	०३ १३ ३३ १४	०४ २९ ०२ २८	०९ ०४ ०२ २७	११ ०१ १५ ००	१० ०० ४० १९	०८ ०६ ४१ ११	2
3	०४ १६ ३८ ३३	०९ २७ ५७ ०७	०२ ११ १२ ४०	०५ ११ २३ ३५	०९ २५ ३९ ४९	०३ १४ ४५ ०९	०४ २९ ०९ ५०	०९ ०३ ५९ १६	११ ०१ १२ ४३	१० ०० ३८ ४५	०८ ०६ ४० ५४	3
4	०४ १७ ३६ ३९	१० १० ०३ ०७	०२ ११ ४९ ५२	०५ ११ ४४ ०१	०९ २५ ३३ ०४	०३ १५ ५७ ०८	०४ २९ १७ १२	०९ ०३ ५६ ०६	११ ०१ १० २४	१० ०० ३७ १२	०८ ०६ ४० ३९	4
5	०४ १८ ३४ ४६	१० २२ १९ ५३	०२ १२ २६ ५६	०५ ११ ५९ १९	०९ २५ २६ २५	०३ १७ ०९ १२	०४ २९ २४ ३५	०९ ०३ ५२ ५५	११ ०१ ०८ ०५	१० ०० ३५ ३९	०८ ०६ ४० २५	5
6	०४ १९ ३२ ५६	११ ०४ ४८ ३०	०२ १३ ०३ ५४	०५ १२ ०९ १२	०९ २५ १९ ५३	०३ १८ २१ २१	०४ २९ ३१ ५९	०९ ०३ ४९ ४४	११ ०१ ०५ ४५	१० ०० ३४ ०७	०८ ०६ ४० १३	6
7	०४ २० ३१ ०७	११ १७ २९ ३२	०२ १३ ४० ४४	व०५ १२ १३ २१	०९ २५ १३ २८	०३ १९ ३३ ३४	०४ २९ ३९ २४	०९ ०३ ४६ ३४	११ ०१ ०३ २४	१० ०० ३२ ३६	०८ ०६ ४० ०४	7
8	०४ २१ २९ २०	०० ०० २३ १३	०२ १४ १७ २७	०५ १२ ११ ३०	०९ २५ ०७ ११	०३ २० ४५ ५१	०४ २९ ४६ ४९	०९ ०३ ४३ २३	११ ०१ ०१ ०३	१० ०० ३१ ०५	०८ ०६ ३९ ५५	8
9	०४ २२ २७ ३५	०० १३ २९ ४०	०२ १४ ५४ ०३	०५ १२ ०३ २५	०९ २५ ०१ ००	०३ २१ ५८ १३	०४ २९ ५४ १५	०९ ०३ ४० १२	११ ०० ५८ ४१	१० ०० २९ ३६	०८ ०६ ३९ ४९	9
10	०४ २३ २५ ५२	०० २६ ४९ ०६	०२ १५ ३० ३१	०५ ११ ४८ ५२	०९ २४ ५४ ५८	०३ २३ १० ३९	०५ ०० ०१ ४२	०९ ०३ ३७ ०२	११ ०० ५६ १९	१० ०० २८ ०६	०८ ०६ ३९ ४५	10
11	०४ २४ २४ ११	०१ १० २१ ४८	०२ १६ ०६ ५१	०५ ११ २७ ४६	०९ २४ ४९ ०४	०३ २४ २३ ०९	०५ ०० ०९ ०९	०९ ०३ ३३ ५१	११ ०० ५३ ५६	१० ०० २६ ३८	०८ ०६ ३९ ४२	11
12	०४ २५ २२ ३२	०१ २४ ०८ ०९	०२ १६ ४३ ०४	०५ ११ ०० ०१	०९ २४ ४३ १९	०३ २५ ३५ ४४	०५ ०० १६ ३७	०९ ०३ ३० ४०	११ ०० ५१ ३३	१० ०० २५ ११	मा०८ ०६ ३९ ४२	12
13	०४ २६ २० ५५	०२ ०८ ०८ १८	०२ १७ १९ ०९	०५ १० २५ ४२	०९ २४ ३७ ४१	०३ २६ ४८ २३	०५ ०० २४ ०५	०९ ०३ २७ २९	११ ०० ४९ ०९	१० ०० २३ ४५	०८ ०६ ३९ ४३	13
14	०४ २७ १९ २०	०२ २२ २१ ५३	०२ १७ ५५ ०५	०५ ०९ ४५ ०२	०९ २४ ३२ १३	०३ २८ ०१ ०७	०५ ०० ३१ ३३	०९ ०३ २४ १८	११ ०० ४६ ४५	१० ०० २२ १९	०८ ०६ ३९ ४६	14
15	०४ २८ १७ ४८	०३ ०६ ४७ २९	०२ १८ ३० ५४	०५ ०८ ५८ २३	०९ २४ २६ ५४	०३ २९ १३ ५४	०५ ०० ३९ ०२	०९ ०३ २१ ०७	११ ०० ४४ २१	१० ०० २० ५५	०८ ०६ ३९ ५१	15
16	०४ २९ १६ १८	०३ २१ २२ १०	०२ १९ ०६ ३४	०५ ०८ ०६ १८	०९ २४ २१ ४४	०४ ०० २६ ४५	०५ ०० ४६ ३१	०९ ०३ १७ ५७	११ ०० ४१ ५७	१० ०० १९ ३१	०८ ०६ ३९ ५८	16
17	०५ ०० १४ ५०	०४ ०६ ०१ १५	०२ १९ ४२ ०५	०५ ०७ ०९ ३४	०९ २४ १६ ४३	०४ ०१ ३९ ४१	०५ ०० ५४ ००	०९ ०३ १४ ४६	११ ०० ३९ ३२	१० ०० १८ ०९	०८ ०६ ४० ०७	17
18	०५ ०१ १३ २३	०४ २० ३८ ३३	०२ २० १७ २८	०५ ०६ ०९ १०	०९ २४ ११ ५३	०४ ०२ ५२ ४०	०५ ०१ ०१ २९	०९ ०३ ११ ३५	११ ०० ३७ ०८	१० ०० १६ ४७	०८ ०६ ४० १८	18
19	०५ ०२ ११ ५९	०५ ०५ ०७ ०९	०२ २० ५२ ४२	०५ ०५ ०६ १७	०९ २४ ०७ १२	०४ ०४ ०५ ४३	०५ ०१ ०८ ५८	०९ ०३ ०८ २५	११ ०० ३४ ४३	१० ०० १५ २७	०८ ०६ ४० ३०	19
20	०५ ०३ १० ३७	०५ १९ २० २२	०२ २१ २७ ४७	०५ ०४ ०२ १७	०९ २४ ०२ ४१	०४ ०५ १८ ४९	०५ ०१ १६ २७	०९ ०३ ०५ १४	११ ०० ३२ १९	१० ०० १४ ०८	०८ ०६ ४० ४५	20
21	०५ ०४ ०९ १६	०६ ०३ १२ ५२	०२ २२ ०२ ४३	०५ ०२ ५८ ३९	०९ २३ ५८ २१	०४ ०६ ३१ ५९	०५ ०१ २३ ५६	०९ ०३ ०२ ०३	११ ०० २९ ५५	१० ०० १२ ५०	०८ ०६ ४१ ०१	21
22	०५ ०५ ०७ ५७	०६ १६ ४१ २३	०२ २२ ३७ २९	०५ ०१ ५६ ५८	०९ २३ ५४ १०	०४ ०७ ४५ १२	०५ ०१ ३१ २५	०९ ०२ ५८ ५३	११ ०० २७ ३१	१० ०० ११ ३३	०८ ०६ ४१ २०	22
23	०५ ०६ ०६ ४०	०६ २९ ४५ ०५	०२ २३ १२ ०७	०५ ०० ५८ ४९	०९ २३ ५० ११	०४ ०८ ५८ २९	०५ ०१ ३८ ५३	०९ ०२ ५५ ४२	११ ०० २५ ०७	१० ०० १० १८	०८ ०६ ४१ ४०	23
24	०५ ०७ ०५ २५	०७ १२ २५ २०	०२ २३ ४६ ३४	०५ ०० ०५ ४४	०९ २३ ४६ २२	०४ १० ११ ४९	०५ ०१ ४६ २१	०९ ०२ ५२ ३१	११ ०० २२ ४४	१० ०० ०९ ०४	०८ ०६ ४२ ०२	24
25	०५ ०८ ०४ १२	०७ २४ ४५ २१	०२ २४ २० ५३	०४ २९ १९ ०६	०९ २३ ४२ ४५	०४ ११ २५ १३	०५ ०१ ५३ ४९	०९ ०२ ४९ २०	११ ०० २० २१	१० ०० ०७ ५१	०८ ०६ ४२ २६	25
26	०५ ०९ ०३ ००	०८ ०६ ४९ ३२	०२ २४ ५५ ०१	०४ २८ ४० १०	०९ २३ ३९ १८	०४ १२ ३८ ३९	०५ ०२ ०१ १६	०९ ०२ ४६ ०९	११ ०० १७ ५९	१० ०० ०६ ३९	०८ ०६ ४२ ५२	26
27	०५ १० ०१ ५०	०८ १८ ४३ ०५	०२ २५ २९ ००	०४ २८ ०९ ५६	०९ २३ ३६ ०२	०४ १३ ५२ ०९	०५ ०२ ०८ ४२	०९ ०२ ४२ ५९	११ ०० १५ ३७	१० ०० ०५ २९	०८ ०६ ४३ २०	27
28	०५ ११ ०० ४१	०९ ०० ३१ २६	०२ २६ ०२ ४९	०४ २७ ४९ १०	०९ २३ ३२ ५८	०४ १५ ०५ ४३	०५ ०२ १६ ०८	०९ ०२ ३९ ४८	११ ०० १३ १६	१० ०० ०४ २०	०८ ०६ ४३ ५०	28
29	०५ ११ ५९ ३५	०९ १२ १९ ५३	०२ २६ ३६ २८	०४ २७ ३८ २३	०९ २३ ३० ०५	०४ १६ १९ १९	०५ ०२ २३ ३३	०९ ०२ ३६ ३७	११ ०० १० ५५	१० ०० ०३ १३	०८ ०६ ४४ २२	29
30	०५ १२ ५८ ३०	०९ २४ १३ २५	०२ २७ ०९ ५७	मा०४ २७ ३७ ५०	०९ २३ २७ २४	०४ १७ ३२ ५८	०५ ०२ ३० ५८	०९ ०२ ३३ २६	११ ०० ०८ ३५	१० ०० ०२ ०७	०८ ०६ ४४ ५५	30

अक्टूबर सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५९'।४९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
1	०५ १३ ५७ २७	१० ०६ १६ १९	०२ २७ ४३ १५	मा०४ २७ ४७ ३४	०९ २३ २४ ५३	०४ १८ ४६ ४१	०५ ०२ ३८ २१	०९ ०२ ३० १६	११ ०० ०६ १६	१० ०० ०१ ०३	०८ ०६ ४५ ३१	1
2	०५ १४ ५६ २६	१० १८ ३१ ५५	०२ २८ १६ २३	०४ २८ ०७ २५	०९ २३ २२ ३५	०४ २० ०० २७	०५ ०२ ४५ ४४	०९ ०२ २७ ०५	११ ०० ०३ ५८	१० ०० ०० ००	०८ ०६ ४६ ०८	2
3	०५ १५ ५५ २७	११ ०१ ०२ २७	०२ २८ ४९ २१	०४ २८ ३७ ०२	०९ २३ २० २८	०४ २१ १४ १५	०५ ०२ ५३ ०६	०९ ०२ २३ ५५	११ ०० ०१ ४१	०९ २९ ५८ ५८	०८ ०६ ४६ ४७	3
4	०५ १६ ५४ ३०	११ १३ ४८ ५४	०२ २९ २२ ०८	०४ २९ १५ ५६	०९ २३ १८ ३३	०४ २२ २८ ०७	०५ ०३ ०० २७	०९ ०२ २० ४४	१० २९ ५९ २४	०९ २९ ५७ ५८	०८ ०६ ४७ २८	4
5	०५ १७ ५३ ३४	११ २६ ५१ ००	०२ २९ ५४ ४४	०५ ०० ०३ ३१	०९ २३ १६ ४९	०४ २३ ४२ ०२	०५ ०३ ०७ ४६	०९ ०२ १७ ३३	१० २९ ५७ ०९	०९ २९ ५७ ००	०८ ०६ ४८ ११	5
6	०५ १८ ५२ ४१	०० १० ०७ २६	०३ ०० २७ ०९	०५ ०० ५९ ०७	०९ २३ १५ १७	०४ २४ ५५ ५९	०५ ०३ १५ ०५	०९ ०२ १४ २२	१० २९ ५४ ५४	०९ २९ ५६ ०३	०८ ०६ ४८ ५५	6
7	०५ १९ ५१ ५०	०० २३ ३६ १२	०३ ०० ५९ २३	०५ ०२ ०२ ०१	०९ २३ १३ ५७	०४ २६ १० ००	०५ ०३ २२ २२	०९ ०२ ११ १२	१० २९ ५२ ४१	०९ २९ ५५ ०८	०८ ०६ ४९ ४२	7
8	०५ २० ५१ ०१	०१ ०७ १५ ०९	०३ ०१ ३१ २६	०५ ०३ ११ २७	०९ २३ १२ ४९	०४ २७ २४ ०४	०५ ०३ २९ ३८	०९ ०२ ०८ ०१	१० २९ ५० २९	०९ २९ ५४ १४	०८ ०६ ५० ३०	8
9	०५ २१ ५० १४	०१ २१ ०२ १७	०३ ०२ ०३ १७	०५ ०४ २६ ४२	०९ २३ ११ ५२	०४ २८ ३८ ११	०५ ०३ ३६ ५३	०९ ०२ ०४ ५०	१० २९ ४८ १८	०९ २९ ५३ २२	०८ ०६ ५१ २०	9
10	०५ २२ ४९ ३०	०२ ०४ ५६ ०७	०३ ०२ ३४ ५७	०५ ०५ ४७ ०१	०९ २३ ११ ०८	०४ २९ ५२ २०	०५ ०३ ४४ ०७	०९ ०२ ०१ ३९	१० २९ ४६ ०८	०९ २९ ५२ ३२	०८ ०६ ५२ १२	10
11	०५ २३ ४८ ४८	०२ १८ ५५ ४५	०३ ०३ ०६ २५	०५ ०७ ११ ४४	०९ २३ १० ३६	०५ ०१ ०६ ३३	०५ ०३ ५१ १९	०९ ०१ ५८ २८	१० २९ ४४ ००	०९ २९ ५१ ४४	०८ ०६ ५३ ०६	11
12	०५ २४ ४८ ०९	०३ ०३ ०० ३६	०३ ०३ ३७ ४०	०५ ०८ ४० ११	०९ २३ १० १५	०५ ०२ २० ४८	०५ ०३ ५८ २९	०९ ०१ ५५ १८	१० २९ ४१ ५३	०९ २९ ५० ५७	०८ ०६ ५४ ०१	12
13	०५ २५ ४७ ३१	०३ १७ १० ०१	०३ ०४ ०८ ४२	०५ १० ११ ४८	मा०९ २३ १० ०७	०५ ०३ ३५ ०६	०५ ०४ ०५ ३८	०९ ०१ ५२ ०७	१० २९ ३९ ४७	०९ २९ ५० १२	०८ ०६ ५४ ५८	13
14	०५ २६ ४६ ५६	०४ ०१ २२ ४७	०३ ०४ ३९ ३२	०५ ११ ४६ ०१	०९ २३ १० १०	०५ ०४ ४९ २७	०५ ०४ १२ ४६	०९ ०१ ४८ ५६	१० २९ ३७ ४३	०९ २९ ४९ २९	०८ ०६ ५५ ५७	14
15	०५ २७ ४६ २४	०४ १५ ३६ ४१	०३ ०५ १० ०९	०५ १३ २२ २३	०९ २३ १० २६	०५ ०६ ०३ ५०	०५ ०४ १९ ५१	०९ ०१ ४५ ४५	१० २९ ३५ ४१	०९ २९ ४८ ४७	०८ ०६ ५६ ५८	15
16	०५ २८ ४५ ५३	०४ २९ ४८ १८	०३ ०५ ४० ३२	०५ १५ ०० २७	०९ २३ १० ५४	०५ ०७ १८ १५	०५ ०४ २६ ५५	०९ ०१ ४२ ३५	१० २९ ३३ ४०	०९ २९ ४८ ०७	०८ ०६ ५८ ००	16
17	०५ २९ ४५ २५	०५ १३ ५३ १६	०३ ०६ १० ४२	०५ १६ ३९ ५२	०९ २३ ११ ३३	०५ ०८ ३२ ४३	०५ ०४ ३३ ५७	०९ ०१ ३९ २४	१० २९ ३१ ४०	०९ २९ ४७ २९	०८ ०६ ५९ ०५	17
18	०६ ०० ४४ ५९	०५ २७ ४६ ४७	०३ ०६ ४० ३७	०५ १८ २० १८	०९ २३ १२ २५	०५ ०९ ४७ १४	०५ ०४ ४० ५७	०९ ०१ ३६ १३	१० २९ २९ ४३	०९ २९ ४६ ५३	०८ ०७ ०० १०	18
19	०६ ०१ ४४ ३५	०६ ११ २४ २८	०३ ०७ १० १८	०५ २० ०१ २९	०९ २३ १३ २९	०५ ११ ०१ ४६	०५ ०४ ४७ ५५	०९ ०१ ३३ ०३	१० २९ २७ ४७	०९ २९ ४६ १९	०८ ०७ ०१ १८	19
20	०६ ०२ ४४ १३	०६ २४ ४३ ०१	०३ ०७ ३९ ४५	०५ २१ ४३ १०	०९ २३ १४ ४५	०५ १२ १६ २०	०५ ०४ ५४ ५१	०९ ०१ २९ ५२	१० २९ २५ ५३	०९ २९ ४५ ४७	०८ ०७ ०२ २७	20
21	०६ ०३ ४३ ५३	०७ ०७ ४० ४९	०३ ०८ ०८ ५७	०५ २३ २५ ११	०९ २३ १६ १३	०५ १३ ३० ५७	०५ ०५ ०१ ४४	०९ ०१ २६ ४१	१० २९ २४ ०१	०९ २९ ४५ १६	०८ ०७ ०३ ३८	21
22	०६ ०४ ४३ ३४	०७ २० १८ ०८	०३ ०८ ३७ ५४	०५ २५ ०७ २१	०९ २३ १७ ५३	०५ १४ ४५ ३५	०५ ०५ ०८ ३६	०९ ०१ २३ ३०	१० २९ २२ ११	०९ २९ ४४ ४८	०८ ०७ ०४ ५१	22
23	०६ ०५ ४३ १८	०८ ०२ ३६ ५८	०३ ०९ ०६ ३६	०५ २६ ४९ ३१	०९ २३ १९ ४५	०५ १६ ०० १६	०५ ०५ १५ २५	०९ ०१ २० १९	१० २९ २० २३	०९ २९ ४४ २१	०८ ०७ ०६ ०५	23
24	०६ ०६ ४३ ०३	०८ १४ ४० ५१	०३ ०९ ३५ ०२	०५ २८ ३१ ३६	०९ २३ २१ ४९	०५ १७ १४ ५८	०५ ०५ २२ १२	०९ ०१ १७ ०९	१० २९ १८ ३६	०९ २९ ४३ ५६	०८ ०७ ०७ २१	24
25	०६ ०७ ४२ ५०	०८ २६ ३४ १९	०३ १० ०३ १३	०६ ०० १३ ३०	०९ २३ २४ ०५	०५ १८ २९ ४२	०५ ०५ २८ ५६	०९ ०१ १३ ५८	१० २९ १६ ५२	०९ २९ ४३ ३४	०८ ०७ ०८ ३९	25
26	०६ ०८ ४२ ३८	०९ ०८ २२ ३७	०३ १० ३१ ०७	०६ ०१ ५५ ०८	०९ २३ २६ ३३	०५ १९ ४४ २७	०५ ०५ ३५ ३८	०९ ०१ १० ४७	१० २९ १५ १०	०९ २९ ४३ १३	०८ ०७ ०९ ५८	26
27	०६ ०९ ४२ २८	०९ २० ११ १९	०३ १० ५८ ४६	०६ ०३ ३६ २६	०९ २३ २९ १२	०५ २० ५९ १५	०५ ०५ ४२ १७	०९ ०१ ०७ ३६	१० २९ १३ ३१	०९ २९ ४२ ५४	०८ ०७ ११ १९	27
28	०६ १० ४२ २०	१० ०२ ०५ ५५	०३ ११ २६ ०७	०६ ०५ १७ २४	०९ २३ ३२ ०३	०५ २२ १४ ०४	०५ ०५ ४८ ५३	०९ ०१ ०४ २६	१० २९ ११ ५३	०९ २९ ४२ ३७	०८ ०७ १२ ४१	28
29	०६ ११ ४२ १४	१० १४ ११ ३५	०३ ११ ५३ १२	०६ ०६ ५७ ५७	०९ २३ ३५ ०५	०५ २३ २८ ५५	०५ ०५ ५५ २७	०९ ०१ ०१ १५	१० २९ १० १८	०९ २९ ४२ २३	०८ ०७ १४ ०५	29
30	०६ १२ ४२ ०९	१० २६ ३२ ४३	०३ १२ २० ००	०६ ०८ ३८ ०६	०९ २३ ३८ १९	०५ २४ ४३ ४७	०५ ०६ ०१ ५८	०९ ०० ५८ ०४	१० २९ ०८ ४५	०९ २९ ४२ १०	०८ ०७ १५ ३०	30
31	०६ १३ ४२ ०६	११ ०९ १२ ३४	०३ १२ ४६ ३०	०६ १० १७ ४९	०९ २३ ४१ ४४	०५ २५ ५८ ४०	०५ ०६ ०८ २६	०९ ०० ५४ ५४	१० २९ ०७ १४	०९ २९ ४१ ५९	०८ ०७ १६ ५६	31

नवम्बर सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५९' ।५३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
1	०६ १४ ४२ ०५	११ २२ १२ ५५	०३ १३ १२ ४२	०६ ११ ५७ ०६	०९ २३ ४५ २१	०५ २७ १३ ३६	०५ ०६ १४ ५१	०९ ०० ५१ ४३	१० २९ ०५ ४५	०९ २९ ४१ ५०	०८ ०७ १८ २५	1
2	०६ १५ ४२ ०६	०० ०५ ३३ ४२	०३ १३ ३८ ३६	०६ १३ ३५ ५६	०९ २३ ४९ ०९	०५ २८ २८ ३३	०५ ०६ २१ १३	०९ ०० ४८ ३२	१० २९ ०४ १९	०९ २९ ४१ ४३	०८ ०७ १९ ५४	2
3	०६ १६ ४२ ०८	०० १९ १३ ०५	०३ १४ ०४ १२	०६ १५ १४ २०	०९ २३ ५३ ०८	०५ २९ ४३ ३१	०५ ०६ २७ ३२	०९ ०० ४५ २१	१० २९ ०२ ५६	०९ २९ ४१ ३८	०८ ०७ २१ २५	3
4	०६ १७ ४२ १२	०१ ०३ ०७ ४१	०३ १४ २९ २९	०६ १६ ५२ १७	०९ २३ ५७ १८	०६ ०० ५८ ३१	०५ ०६ ३३ ४८	०९ ०० ४२ १०	१० २९ ०१ ३४	०९ २९ ४१ ३५	०८ ०७ २२ ५८	4
5	०६ १८ ४२ १८	०१ १७ १३ ०५	०३ १४ ५४ २७	०६ १८ २९ ४९	०९ २४ ०१ ३९	०६ ०२ १३ ३२	०५ ०६ ४० ०१	०९ ०० ३९ ००	१० २९ ०० १६	मा०९ २९ ४१ ३५	०८ ०७ २४ ३१	5
6	०६ १९ ४२ २६	०२ ०१ २४ ४०	०३ १५ १९ ०५	०६ २० ०६ ५५	०९ २४ ०६ ११	०६ ०३ २८ ३५	०५ ०६ ४६ ११	०९ ०० ३५ ४९	१० २८ ५८ ५९	०९ २९ ४१ ३६	०८ ०७ २६ ०७	6
7	०६ २० ४२ ३६	०२ १५ ३८ १८	०३ १५ ४३ २३	०६ २१ ४३ ३७	०९ २४ १० ५४	०६ ०४ ४३ ३९	०५ ०६ ५२ १७	०९ ०० ३२ ३८	१० २८ ५७ ४६	०९ २९ ४१ ३९	०८ ०७ २७ ४३	7
8	०६ २१ ४२ ४८	०२ २९ ५० ४९	०३ १६ ०७ २१	०६ २३ १९ ५५	०९ २४ १५ ४८	०६ ०५ ५८ ४५	०५ ०६ ५८ २०	०९ ०० २९ २७	१० २८ ५६ ३५	०९ २९ ४१ ४५	०८ ०७ २९ २१	8
9	०६ २२ ४३ ०२	०३ १४ ०० १२	०३ १६ ३० ५७	०६ २४ ५५ ५०	०९ २४ २० ५२	०६ ०७ १३ ५३	०५ ०७ ०४ २०	०९ ०० २६ १६	१० २८ ५५ २६	०९ २९ ४१ ५२	०८ ०७ ३१ ००	9
10	०६ २३ ४३ १८	०३ २८ ०५ १४	०३ १६ ५४ १२	०६ २६ ३१ २४	०९ २४ २६ ०७	०६ ०८ २९ ०१	०५ ०७ १० १६	०९ ०० २३ ०५	१० २८ ५४ २१	०९ २९ ४२ ०१	०८ ०७ ३२ ४१	10
11	०६ २४ ४३ ३७	०४ १२ ०५ १२	०३ १७ १७ ०५	०६ २८ ०६ ३८	०९ २४ ३१ ३३	०६ ०९ ४४ ११	०५ ०७ १६ ०८	०९ ०० १९ ५५	१० २८ ५३ १७	०९ २९ ४२ १३	०८ ०७ ३४ २२	11
12	०६ २५ ४३ ५७	०४ २५ ५९ १८	०३ १७ ३९ ३६	०६ २९ ४१ ३१	०९ २४ ३७ ०९	०६ १० ५९ २३	०५ ०७ २१ ५७	०९ ०० १६ ४४	१० २८ ५२ १७	०९ २९ ४२ २६	०८ ०७ ३६ ०५	12
13	०६ २६ ४४ १९	०५ ०९ ४६ २१	०३ १८ ०१ ४३	०७ ०१ १६ ०६	०९ २४ ४२ ५५	०६ १२ १४ ३५	०५ ०७ २७ ४२	०९ ०० १३ ३३	१० २८ ५१ १९	०९ २९ ४२ ४२	०८ ०७ ३७ ५०	13
14	०६ २७ ४४ ४३	०५ २३ २४ ४०	०३ १८ २३ २६	०७ ०२ ५० २३	०९ २४ ४८ ५२	०६ १३ २९ ४९	०५ ०७ ३३ २३	०९ ०० १० २३	१० २८ ५० २४	०९ २९ ४३ ००	०८ ०७ ३९ ३५	14
15	०६ २८ ४५ ०९	०६ ०६ ५२ १२	०३ १८ ४४ ४५	०७ ०४ २४ २३	०९ २४ ५४ ५९	०६ १४ ४५ ०३	०५ ०७ ३९ ००	०९ ०० ०७ १२	१० २८ ४९ ३२	०९ २९ ४३ १९	०८ ०७ ४१ २२	15
16	०६ २९ ४५ ३७	०६ २० ०६ ४७	०३ १९ ०५ ४०	०७ ०५ ५८ ०७	०९ २५ ०१ १६	०६ १६ ०० १९	०५ ०७ ४४ ३३	०९ ०० ०४ ०१	१० २८ ४८ ४३	०९ २९ ४३ ४१	०८ ०७ ४३ ०९	16
17	०७ ०० ४६ ०६	०७ ०३ ०६ ३७	०३ १९ २६ ०९	०७ ०७ ३१ ३५	०९ २५ ०७ ४३	०६ १७ १५ ३६	०५ ०७ ५० ०२	०९ ०० ०० ५०	१० २८ ४७ ५७	०९ २९ ४४ ०५	०८ ०७ ४४ ५८	17
18	०७ ०१ ४६ ३७	०७ १५ ५० ३६	०३ १९ ४६ १२	०७ ०९ ०४ ४९	०९ २५ १४ २०	०६ १८ ३० ५३	०५ ०७ ५५ २७	०८ २९ ५७ ३९	१० २८ ४७ १३	०९ २९ ४४ ३१	०८ ०७ ४६ ४८	18
19	०७ ०२ ४७ ०९	०७ २८ १८ ३९	०३ २० ०५ ४९	०७ १० ३७ ४९	०९ २५ २१ ०७	०६ १९ ४६ ११	०५ ०८ ०० ४८	०८ २९ ५४ २८	१० २८ ४६ ३३	०९ २९ ४४ ५९	०८ ०७ ४८ ३९	19
20	०७ ०३ ४७ ४३	०८ १० ३१ ५९	०३ २० २४ ५९	०७ १२ १० ३६	०९ २५ २८ ०४	०६ २१ ०१ ३०	०५ ०८ ०६ ०५	०८ २९ ५१ १८	१० २८ ४५ ५५	०९ २९ ४५ २९	०८ ०७ ५० ३१	20
21	०७ ०४ ४८ १८	०८ २२ ३२ ५७	०३ २० ४३ ४२	०७ १३ ४३ १०	०९ २५ ३५ १०	०६ २२ १६ ५०	०५ ०८ ११ १७	०८ २९ ४८ ०७	१० २८ ४५ २१	०९ २९ ४६ ०१	०८ ०७ ५२ २४	21
22	०७ ०५ ४८ ५४	०९ ०४ २५ ०२	०३ २१ ०१ ५७	०७ १५ १५ ३३	०९ २५ ४२ २६	०६ २३ ३२ १०	०५ ०८ १६ २५	०८ २९ ४४ ५६	१० २८ ४४ ४९	०९ २९ ४६ ३५	०८ ०७ ५४ १८	22
23	०७ ०६ ४९ ३२	०९ १६ १२ ३४	०३ २१ १९ ४३	०७ १६ ४७ ४४	०९ २५ ४९ ५१	०६ २४ ४७ ३१	०५ ०८ २१ २८	०८ २९ ४१ ४५	१० २८ ४४ २०	०९ २९ ४७ ११	०८ ०७ ५६ १३	23
24	०७ ०७ ५० ११	०९ २८ ०० २७	०३ २१ ३७ ००	०७ १८ १९ ४३	०९ २५ ५७ २५	०६ २६ ०२ ५२	०५ ०८ २६ २७	०८ २९ ३८ ३४	१० २८ ४३ ५५	०९ २९ ४७ ५०	०८ ०७ ५८ ०९	24
25	०७ ०८ ५० ५०	१० ०९ ५४ ००	०३ २१ ५३ ४८	०७ १९ ५१ ३१	०९ २६ ०५ ०९	०६ २७ १८ १४	०५ ०८ ३१ २२	०८ २९ ३५ २४	१० २८ ४३ ३२	०९ २९ ४८ ३०	०८ ०८ ०० ०६	25
26	०७ ०९ ५१ ३१	१० २१ ५८ ३६	०३ २२ १० ०६	०७ २१ २३ ०७	०९ २६ १३ ०१	०६ २८ ३३ ३७	०५ ०८ ३६ ११	०८ २९ ३२ १३	१० २८ ४३ १३	०९ २९ ४९ १२	०८ ०८ ०२ ०४	26
27	०७ १० ५२ १४	११ ०४ १९ १९	०३ २२ २५ ५२	०७ २२ ५४ ३०	०९ २६ २१ ०३	०६ २९ ४९ ००	०५ ०८ ४० ५६	०८ २९ २९ ०२	१० २८ ४२ ५६	०९ २९ ४९ ५६	०८ ०८ ०४ ०३	27
28	०७ ११ ५२ ५७	११ १७ ०० ३०	०३ २२ ४१ ०८	०७ २४ २५ ४०	०९ २६ २९ १३	०७ ०१ ०४ २३	०५ ०८ ४५ ३६	०८ २९ २५ ५२	१० २८ ४२ ४२	०९ २९ ५० ४२	०८ ०८ ०६ ०२	28
29	०७ १२ ५३ ४१	०० ०० ०५ १५	०३ २२ ५५ ५२	०७ २५ ५६ ३७	०९ २६ ३७ ३२	०७ ०२ १९ ४७	०५ ०८ ५० १२	०८ २९ २२ ४१	१० २८ ४२ ३२	०९ २९ ५१ ३०	०८ ०८ ०८ ०२	29
30	०७ १३ ५४ २६	०० १३ ३४ ५२	०३ २३ १० ०३	०७ २७ [illegible]	०९ २६ [illegible]	०७ ०३ ३५ ११	०५ ०८ ५४ ४२	०८ २९ १९ ३०	१० २८ ४२ २४	०९ २९ ५२ २०	०८ ०८ १० ०३	30

दिसम्बर सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५९'।५८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. कं. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
1	०७ १४ ५५ १२	०० २७ २८ २८	०३ २३ २३ ४१	०७ २८ ५७ ४३	०९ २६ ५४ ३५	०७ ०४ ५० ३५	०५ ०८ ५९ ०८	०८ २९ १६ १९	१० २८ ४२ २०	०९ २९ ५३ १२	०८ ०८ १२ ०५	1
2	०७ १५ ५५ ५९	०१ ११ ४२ ५३	०३ २३ ३६ ४५	०८ ०० २७ ४९	०९ २७ ०३ १९	०७ ०६ ०६ ०१	०५ ०९ ०३ २८	०८ २९ १३ ०८	मा१० २८ ४२ १८	०९ २९ ५४ ०६	०८ ०८ १४ ०७	2
3	०७ १६ ५६ ४८	०१ २६ १२ ५०	०३ २३ ४९ १५	०८ ०१ ५७ ३३	०९ २७ १२ १२	०७ ०७ २१ २६	०५ ०९ ०७ ४४	०८ २९ ०९ ५७	१० २८ ४२ २०	०९ २९ ५५ ०२	०८ ०८ १६ १०	3
4	०७ १७ ५७ ३८	०२ १० ५१ ४६	०३ २४ ०१ १०	०८ ०३ २६ ५४	०९ २७ २१ १२	०७ ०८ ३६ ५२	०५ ०९ ११ ५४	०८ २९ ०६ ४६	१० २८ ४२ २५	०९ २९ ५६ ००	०८ ०८ १८ १४	4
5	०७ १८ ५८ २९	०२ २५ ३२ ४४	०३ २४ १२ २८	०८ ०४ ५५ ४६	०९ २७ ३० २१	०७ ०९ ५२ १९	०५ ०९ १५ ५९	०८ २९ ०३ ३५	१० २८ ४२ ३३	०९ २९ ५७ ००	०८ ०८ २० १८	5
6	०७ १९ ५९ २१	०३ १० ०९ २८	०३ २४ २३ १०	०८ ०६ २४ ०५	०९ २७ ३९ ३७	०७ ११ ०७ ४६	०५ ०९ १९ ५९	०८ २९ ०० २५	१० २८ ४२ ४४	०९ २९ ५८ ०१	०८ ०८ २२ २३	6
7	०७ २१ ०० १४	०३ २४ ३७ ०४	०३ २४ ३३ १५	०८ ०७ ५१ ४६	०९ २७ ४९ ०१	०७ १२ २३ १३	०५ ०९ २३ ५४	०८ २८ ५७ १४	१० २८ ४२ ५८	०९ २९ ५९ ०५	०८ ०८ २४ २९	7
8	०७ २२ ०१ ०९	०४ ०८ ५२ १९	०३ २४ ४२ ४१	०८ ०९ १८ ४१	०९ २७ ५८ ३३	०७ १३ ३८ ४१	०५ ०९ २७ ४३	०८ २८ ५४ ०३	१० २८ ४३ १५	१० ०० ०० १०	०८ ०८ २६ ३५	8
9	०७ २३ ०२ ०५	०४ २२ ५३ ३१	०३ २४ ५१ २८	०८ १० ४४ ४४	०९ २८ ०८ १३	०७ १४ ५४ १०	०५ ०९ ३१ २७	०८ २८ ५० ५२	१० २८ ४३ ३५	१० ०० ०१ १७	०८ ०८ २८ ४१	9
10	०७ २४ ०३ ०२	०५ ०६ ४० ०५	०३ २४ ५९ ३५	०८ १२ ०९ ४४	०९ २८ १८ ००	०७ १६ ०९ ३९	०५ ०९ ३५ ०६	०८ २८ ४७ ४१	१० २८ ४३ ५८	१० ०० ०२ २६	०८ ०८ ३० ४८	10
11	०७ २५ ०४ ०१	०५ २० १२ ०४	०३ २५ ०७ ०२	०८ १३ ३३ ३२	०९ २८ २७ ५४	०७ १७ २५ ०८	०५ ०९ ३८ ३९	०८ २८ ४४ ३१	१० २८ ४४ २४	१० ०० ०३ ३७	०८ ०८ ३२ ५६	11
12	०७ २६ ०५ ०१	०६ ०३ २९ ५२	०३ २५ १३ ४७	०८ १४ ५५ ५३	०९ २८ ३७ ५६	०७ १८ ४० ३८	०५ ०९ ४२ ०६	०८ २८ ४१ २०	१० २८ ४४ ५४	१० ०० ०४ ५०	०८ ०८ ३५ ०४	12
13	०७ २७ ०६ ०१	०६ १६ ३३ ५९	०३ २५ १९ ५०	०८ १६ १६ ३४	०९ २८ ४८ ०५	०७ १९ ५६ ०८	०५ ०९ ४५ २८	०८ २८ ३८ ०९	१० २८ ४५ २६	१० ०० ०६ ०४	०८ ०८ ३७ १२	13
14	०७ २८ ०७ ०३	०६ २९ २४ ५३	०३ २५ २५ १०	०८ १७ ३५ १८	०९ २८ ५८ २२	०७ २१ ११ ३८	०५ ०९ ४८ ४४	०८ २८ ३४ ५८	१० २८ ४६ ०२	१० ०० ०७ २०	०८ ०८ ३९ २१	14
15	०७ २९ ०८ ०६	०७ १२ ०३ ०२	०३ २५ २९ ४६	०८ १८ ५१ ४४	०९ २९ ०८ ४५	०७ २२ २७ ०९	०५ ०९ ५१ ५४	०८ २८ ३१ ४७	१० २८ ४६ ४१	१० ०० ०८ ३८	०८ ०८ ४१ ३०	15
16	०८ ०० ०९ ०९	०७ २४ २८ ५९	०३ २५ ३३ ३९	०८ २० ०५ ३०	०९ २९ १९ १५	०७ २३ ४२ ४०	०५ ०९ ५४ ५८	०८ २८ २८ ३७	१० २८ ४७ २२	१० ०० ०९ ५८	०८ ०८ ४३ ३९	16
17	०८ ०१ १० १३	०८ ०६ ४३ २८	०३ २५ ३६ ४६	०८ २१ १६ ०८	०९ २९ २९ ५२	०७ २४ ५८ १०	०५ ०९ ५७ ५६	०८ २८ २५ २६	१० २८ ४८ ०७	१० ०० ११ २०	०८ ०८ ४५ ४९	17
18	०८ ०२ ११ १८	०८ १८ ४७ ४२	०३ २५ ३९ ०८	०८ २२ २३ ०८	०९ २९ ४० ३६	०७ २६ १३ ४२	०५ १० ०० ४९	०८ २८ २२ १५	१० २८ ४८ ५५	१० ०० १२ ४३	०८ ०८ ४७ ५९	18
19	०८ ०३ १२ २३	०९ ०० ४३ २८	०३ २५ ४० ४४	०८ २३ २५ ५६	०९ २९ ५१ २६	०७ २७ २९ १३	०५ १० ०३ ३५	०८ २८ १९ ०४	१० २८ ४९ ४६	१० ०० १४ ०८	०८ ०८ ५० ०९	19
20	०८ ०४ १३ २९	०९ १२ ३३ १२	०३ २५ ४१ ३४	०८ २४ २३ ५४	१० ०० ०२ २३	०७ २८ ४४ ४४	०५ १० ०६ १६	०८ २८ १५ ५३	१० २८ ५० ४०	१० ०० १५ ३४	०८ ०८ ५२ १९	20
21	०८ ०५ १४ ३६	०९ २४ २० ०१	व०३ २५ ४१ ३६	०८ २५ १६ १७	१० ०० १३ २६	०८ ०० ०० १५	०५ १० ०८ ५१	०८ २८ १२ ४२	१० २८ ५१ ३८	१० ०० १७ ०२	०८ ०८ ५४ ३०	21
22	०८ ०६ १५ ४२	१० ०६ ०७ ३९	०३ २५ ४० ५२	०८ २६ ०२ २०	१० ०० २४ ३६	०८ ०१ १५ ४६	०५ १० ११ १९	०८ २८ ०९ ३१	१० २८ ५२ ३८	१० ०० १८ ३२	०८ ०८ ५६ ४०	22
23	०८ ०७ १६ ४९	१० १८ ०० ११	०३ २५ ३९ २०	०८ २६ ४१ ११	१० ०० ३५ ५१	०८ ०२ ३१ १७	०५ १० १३ ४१	०८ २८ ०६ २१	१० २८ ५३ ४१	१० ०० २० ०३	०८ ०८ ५८ ५१	23
24	०८ ०८ १७ ५६	११ ०० ०२ ४८	०३ २५ ३६ ५९	०८ २७ ११ ५७	१० ०० ४७ १२	०८ ०३ ४६ ४८	०५ १० १५ ५७	०८ २८ ०३ १०	१० २८ ५४ ४७	१० ०० २१ ३६	०८ ०९ ०१ ०२	24
25	०८ ०९ १९ ०३	११ १२ १९ ५३	०३ २५ ३३ ५०	०८ २७ ३३ ४४	१० ०० ५८ ४०	०८ ०५ ०२ १९	०५ १० १८ ०७	०८ २७ ५९ ५९	१० २८ ५५ ५६	१० ०० २३ ११	०८ ०९ ०३ १२	25
26	०८ १० २० १०	११ २४ ५६ १६	०३ २५ २९ ५३	०८ २७ ४५ ३७	१० ०१ १० १३	०८ ०६ १७ ४९	०५ १० २० ११	०८ २७ ५६ ४९	१० २८ ५७ ०८	१० ०० २४ ४७	०८ ०९ ०५ २३	26
27	०८ ११ २१ १७	०० ०७ ५६ ०२	०३ २५ २५ ०७	व०८ २७ ४६ ४९	१० ०१ २१ ५१	०८ ०७ ३३ १९	०५ १० २२ ०८	०८ २७ ५३ ३८	१० २८ ५८ २३	१० ०० २६ २४	०८ ०९ ०७ ३३	27
28	०८ १२ २२ २५	०० २१ २२ ०३	०३ २५ १९ ३२	०८ २७ ३६ ४१	१० ०१ ३३ ३६	०८ ०८ ४८ ५०	०५ १० २३ ५९	०८ २७ ५० २७	१० २८ ५९ ४०	१० ०० २८ ०३	०८ ०९ ०९ ४४	28
29	०८ १३ २३ ३२	०१ ०५ १५ २२	०३ २५ १३ ०७	०८ २७ १४ ४७	१० ०१ ४५ २५	०८ १० ०४ १९	०५ १० २५ ४३	०८ २७ ४७ १६	१० २९ ०१ ०१	१० ०० २९ ४३	०८ ०९ ११ ५४	29
30	०८ १४ २४ ३९	०१ १९ ३४ ४२	०३ २५ ०५ ५४	०८ २६ ४१ ०२	१० ०१ ५७ २०	०८ ११ १९ ४९	०५ १० २७ २२	०८ २७ ४४ ०५	१० २९ ०२ २५	१० ०० ३१ २५	०८ ०९ १४ ०४	30
31	०८ १५ २५ ४७	०२ ०४ १६ ०४	०३ २४ ५७ ५२	०८ २५ ५५ ४५	१० ०२ ०९ २१	०८ १२ ३५ १९	०५ १० २८ ५४	०८ २७ ४० ५४	१० २९ ०३ ५१	१० ०० ३३ ०८	०८ ०९ १६ १४	31

जनवरी सन् २०१० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २४° ।००' ।०४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
1	०८ १६ २६ ५४	०२ १९ १३ ०१	०३ २४ ४९ ००	०८ २४ ५९ ४६	१० ०२ २१ २६	०८ १३ ५० ४९	०५ १० ३० २०	०८ २७ ३७ ४३	१० २९ ०५ २०	१० ०० ३४ ५३	०८ ०९ १८ २४	1
2	०८ १७ २८ ०२	०३ ०४ १७ १५	०३ २४ ३९ २०	०८ २३ ५४ २५	१० ०२ ३३ ३६	०८ १५ ०६ १८	०५ १० ३१ ३९	०८ २७ ३४ ३२	१० २९ ०६ ५२	१० ०० ३६ ३९	०८ ०९ २० ३४	2
3	०८ १८ २९ ०९	०३ १९ १९ ५०	०३ २४ २८ ५१	०८ २२ ४१ ३३	१० ०२ ४५ ५२	०८ १६ २१ ४७	०५ १० ३२ ५२	०८ २७ ३१ २१	१० २९ ०८ २७	१० ०० ३८ २६	०८ ०९ २२ ४४	3
4	०८ १९ ३० १७	०४ ०४ १२ ३०	०३ २४ १७ ३३	०८ २१ २३ २५	१० ०२ ५८ १२	०८ १७ ३७ १७	०५ १० ३३ ५८	०८ २७ २८ ११	१० २९ १० ०५	१० ०० ४० १४	०८ ०९ २४ ५३	4
5	०८ २० ३१ २५	०४ १८ ४८ ४१	०३ २४ ०५ २७	०८ २० ०२ ३६	१० ०३ १० ३७	०८ १८ ५२ ४६	०५ १० ३४ ५८	०८ २७ २५ ००	१० २९ ११ ४५	१० ०० ४२ ०४	०८ ०९ २७ ०२	5
6	०८ २१ ३२ ३४	०५ ०३ ०४ ०९	०३ २३ ५२ ३३	०८ १८ ४१ ४४	१० ०३ २३ ०७	०८ २० ०८ १५	०५ १० ३५ ५१	०८ २७ २१ ४९	१० २९ १३ २८	१० ०० ४३ ५५	०८ ०९ २९ १०	6
7	०८ २२ ३३ ४२	०५ १६ ५७ ००	०३ २३ ३८ ५२	०८ १७ २३ २५	१० ०३ ३५ ४१	०८ २१ २३ ४४	०५ १० ३६ ३८	०८ २७ १८ ३८	१० २९ १५ १३	१० ०० ४५ ४७	०८ ०९ ३१ १८	7
8	०८ २३ ३४ ५१	०६ ०० २७ १४	०३ २३ २४ २४	०८ १६ ०९ ५६	१० ०३ ४८ २०	०८ २२ ३९ १४	०५ १० ३७ १९	०८ २७ १५ २८	१० २९ १७ ०२	१० ०० ४७ ४१	०८ ०९ ३३ २६	8
9	०८ २४ ३६ ००	०६ १३ ३६ १९	०३ २३ ०९ ११	०८ १५ ०३ १२	१० ०४ ०१ ०४	०८ २३ ५४ ४३	०५ १० ३७ ५२	०८ २७ १२ १७	१० २९ १८ ५३	१० ०० ४९ ३५	०८ ०९ ३५ ३३	9
10	०८ २५ ३७ ०९	०६ २६ २६ ३२	०३ २२ ५३ १३	०८ १४ ०४ ४१	१० ०४ १३ ५१	०८ २५ १० १२	०५ १० ३८ १९	०८ २७ ०९ ०६	१० २९ २० ४६	१० ०० ५१ ३१	०८ ०९ ३७ ४०	10
11	०८ २६ ३८ १८	०७ ०९ ०० ३५	०३ २२ ३६ ३१	०८ १३ १५ २१	१० ०४ २६ ४३	०८ २६ २५ ४०	०५ १० ३८ ४०	०८ २७ ०५ ५५	१० २९ २२ ४२	१० ०० ५३ २८	०८ ०९ ३९ ४७	11
12	०८ २७ ३९ २६	०७ २१ २१ ११	०३ २२ १९ ०७	०८ १२ ३५ ४३	१० ०४ ३९ ३९	०८ २७ ४१ ०९	०५ १० ३८ ५४	०८ २७ ०२ ४४	१० २९ २४ ४१	१० ०० ५५ २६	०८ ०९ ४१ ५२	12
13	०८ २८ ४० ३५	०८ ०३ ३० ५६	०३ २२ ०१ ०३	०८ १२ ०५ ५७	१० ०४ ५२ ४०	०८ २८ ५६ ३८	०५ १० ३९ ०१	०८ २६ ५९ ३३	१० २९ २६ ४३	१० ०० ५७ २५	०८ ०९ ४३ ५८	13
14	०८ २९ ४१ ४४	०८ १५ ३२ ०८	०३ २१ ४२ १९	०८ ११ ४५ ५५	१० ०५ ०५ ४४	०९ ०० १२ ०६	०५ १० ३९ ०२	०८ २६ ५६ २३	१० २९ २८ ४६	१० ०० ५९ २५	०८ ०९ ४६ ०३	14
15	०९ ०० ४२ ५२	०८ २७ २६ ५५	०३ २१ २२ ५८	०८ ११ ३५ १६	१० ०५ १८ ५२	०९ ०१ २७ ३४	व०५ १० ३८ ५७	०८ २६ ५३ १२	१० २९ ३० ५३	१० ०१ ०१ २६	०८ ०९ ४८ ०७	15
16	०९ ०१ ४४ ००	०९ ०९ १७ १६	०३ २१ ०३ ०२	मा०८ ११ ३३ ३०	१० ०५ ३२ ०४	०९ ०२ ४३ ०२	०५ १० ३८ ४४	०८ २६ ५० ०१	१० २९ ३३ ०२	१० ०१ ०३ २८	०८ ०९ ५० १०	16
17	०९ ०२ ४५ ०७	०९ २१ ०५ १६	०३ २० ४२ ३२	०८ ११ ४० ०१	१० ०५ ४५ १९	०९ ०३ ५८ २९	०५ १० ३८ २५	०८ २६ ४६ ५०	१० २९ ३५ १३	१० ०१ ०५ ३१	०८ ०९ ५२ १३	17
18	०९ ०३ ४६ १४	१० ०२ ५३ ०६	०३ २० २१ ३०	०८ ११ ५४ १३	१० ०५ ५८ ३८	०९ ०५ १३ ५६	०५ १० ३८ ००	०८ २६ ४३ ३९	१० २९ ३७ २७	१० ०१ ०७ ३५	०८ ०९ ५४ १५	18
19	०९ ०४ ४७ २०	१० १४ ४३ १४	०३ १९ ६० ००	०८ १२ १५ २६	१० ०६ १२ ०१	०९ ०६ २९ २३	०५ १० ३७ २८	०८ २६ ४० २९	१० २९ ३९ ४३	१० ०१ ०९ ४०	०८ ०९ ५६ १७	19
20	०९ ०५ ४८ २५	१० २६ ३८ ३३	०३ १९ ३८ ०२	०८ १२ ४३ ०५	१० ०६ २५ २७	०९ ०७ ४४ ४८	०५ १० ३६ ५०	०८ २६ ३७ १८	१० २९ ४२ ०१	१० ०१ ११ ४६	०८ ०९ ५८ १७	20
21	०९ ०६ ४९ ३०	११ ०८ ४२ १९	०३ १९ १५ ४१	०८ १३ १६ ३३	१० ०६ ३८ ५६	०९ ०९ ०० १४	०५ १० ३६ ०५	०८ २६ ३४ ०७	१० २९ ४४ २१	१० ०१ १३ ५२	०८ १० ०० १७	21
22	०९ ०७ ५० ३३	११ २० ५८ १७	०३ १८ ५२ ५७	०८ १३ ५५ १७	१० ०६ ५२ २८	०९ १० १५ ३९	०५ १० ३५ १३	०८ २६ ३० ५७	१० २९ ४६ ४४	१० ०१ १५ ५९	०८ १० ०२ १६	22
23	०९ ०८ ५१ ३६	०० ०३ ३० २५	०३ १८ २९ ५४	०८ १४ ३८ ४७	१० ०७ ०६ ०३	०९ ११ ३१ ०३	०५ १० ३४ १६	०८ २६ २७ ४६	१० २९ ४९ ०९	१० ०१ १८ ०७	०८ १० ०४ १८	23
24	०९ ०९ ५२ ३७	०० १६ २२ ४०	०३ १८ ०६ ३५	०८ १५ २६ ३६	१० ०७ १९ ४२	०९ १२ ४६ २६	०५ १० ३३ ११	०८ २६ २४ ३५	१० २९ ५१ ३६	१० ०१ २० १६	०८ १० ०६ ११	24
25	०९ १० ५३ ३८	०० २९ ३८ ३४	०३ १७ ४३ ०२	०८ १६ १८ १८	१० ०७ ३३ २३	०९ १४ ०१ ४९	०५ १० ३२ ०१	०८ २६ २१ २४	१० २९ ५४ ०५	१० ०१ २२ २५	०८ १० ०८ ०८	25
26	०९ ११ ५४ ३७	०१ १३ २० ४१	०३ १७ ११ १७	०८ १७ १३ ३१	१० ०७ ४७ ०६	०९ १५ १७ ११	०५ १० ३० ४४	०८ २६ १८ १३	१० २९ ५६ ३७	१० ०१ २४ ३५	०८ १० १० ०३	26
27	०९ १२ ५५ ३६	०१ २७ २९ ५७	०३ १६ ५५ २५	०८ १८ ११ ५६	१० ०८ ०० ५३	०९ १६ ३२ ३२	०५ १० २९ २१	०८ २६ १५ ०२	१० २९ ५९ १०	१० ०१ २६ ४६	०८ १० ११ ५७	27
28	०९ १३ ५६ ३३	०२ १२ ०५ ०२	०३ १६ ३१ २७	०८ १९ १३ १४	१० ०८ १४ ४२	०९ १७ ४७ ५३	०५ १० २७ ५२	०८ २६ ११ ५१	११ ०० ०१ ४६	१० ०१ २८ ५७	०८ १० १३ ५१	28
29	०९ १४ ५७ ३०	०२ २७ ०१ ४२	०३ १६ ०७ २६	०८ २० १७ १०	१० ०८ २८ ३४	०९ १९ ०३ १३	०५ १० २६ १७	०८ २६ ०८ ४१	११ ०० ०४ २३	१० ०१ ३१ ०९	०८ १० १५ ४३	29
30	०९ १५ ५८ २५	०३ १२ १२ ४९	०३ १५ ४३ २५	०८ २१ २३ ३१	१० ०८ ४२ २८	०९ २० १८ ३२	०५ १० २४ ३५	०८ २६ ०५ ३०	११ ०० ०७ ०३	१० ०१ ३३ २१	०८ १० १७ ३५	30
31	०९ १६ ५९ १९	०३ २७ २९ ०३	०३ १५ १९ २६	०८ २२ ३२ ०३	१० ०८ ५६ २४	०९ २१ ३३ ५१	०५ १० २२ ४८	०८ २६ ०२ १९	११ ०० ०९ ४४	१० ०१ ३५ ३४	०८ १० १९ २५	31

फरवरी सन् २०१० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २४° ।००' ।०९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
1	०९ १८ ०० १२	०४ १२ ४० ०७	०३ १४ ५५ ३२	०८ २३ ४२ ३६	१० ०९ १० २३	०९ २२ ४९ ०९	०५ १० २० ५४	०८ २५ ५९ ०८	११ ०० १२ २७	१० ०१ ३७ ४८	०८ १० २१ १४	1
2	०९ १९ ०१ ०५	०४ २७ ३६ २६	०३ १४ ३१ ४७	०८ २४ ५५ ००	१० ०९ २४ २४	०९ २४ ०४ २७	०५ १० १८ ५५	०८ २५ ५५ ५७	११ ०० १५ १२	१० ०१ ४० ०१	०८ १० २३ ०२	2
3	०९ २० ०१ ५६	०५ १२ १० ३३	०३ १४ ०८ ११	०८ २६ ०९ ०८	१० ०९ ३८ २७	०९ २५ १९ ४३	०५ १० १६ ४९	०८ २५ ५२ ४७	११ ०० १७ ५९	१० ०१ ४२ १६	०८ १० २४ ४९	3
4	०९ २१ ०२ ४७	०५ २६ १७ ५४	०३ १३ ४४ ४९	०८ २७ २४ ५२	१० ०९ ५२ ३२	०९ २६ ३४ ५९	०५ १० १४ ३८	०८ २५ ४९ ३६	११ ०० २० ४७	१० ०१ ४४ ३०	०८ १० २६ ३५	4
5	०९ २२ ०३ ३७	०६ ०९ ५७ ०१	०३ १३ २१ ४२	०८ २८ ४२ ०५	१० १० ०६ ३९	०९ २७ ५० १५	०५ १० १२ २१	०८ २५ ४६ २५	११ ०० २३ ३८	१० ०१ ४६ ४५	०८ १० २८ २०	5
6	०९ २३ ०४ २६	०६ २३ ०८ ५८	०३ १२ ५८ ५४	०९ ०० ०० ४२	१० १० २० ४८	०९ २९ ०५ ३०	०५ १० ०९ ५९	०८ २५ ४३ १५	११ ०० २६ ३०	१० ०१ ४९ ००	०८ १० ३० ०३	6
7	०९ २४ ०५ १४	०७ ०५ ५६ ४०	०३ १२ ३६ २६	०९ ०१ २० ३९	१० १० ३४ ५९	१० ०० २० ४४	०५ १० ०७ ३०	०८ २५ ४० ०४	११ ०० २९ २३	१० ०१ ५१ १६	०८ १० ३१ ४६	7
8	०९ २५ ०६ ०१	०७ १८ २४ ०६	०३ १२ १४ २२	०९ ०२ ४१ ५०	१० १० ४९ १२	१० ०१ ३५ ५८	०५ १० ०४ ५६	०८ २५ ३६ ५३	११ ०० ३२ १९	१० ०१ ५३ ३२	०८ १० ३३ २७	8
9	०९ २६ ०६ ४७	०८ ०० ३५ ३९	०३ ११ ५२ ४३	०९ ०४ ०४ १३	१० ११ ०३ २६	१० ०२ ५१ ११	०५ १० ०२ १७	०८ २५ ३३ ४२	११ ०० ३५ १६	१० ०१ ५५ ४८	०८ १० ३५ ०६	9
10	०९ २७ ०७ ३३	०८ १२ ३५ ३९	०३ ११ ३१ ३२	०९ ०५ २७ ४४	१० ११ १७ ४२	१० ०४ ०६ २४	०५ ०९ ५९ ३२	०८ २५ ३० ३१	११ ०० ३८ १४	१० ०१ ५८ ०४	०८ १० ३६ ४५	10
11	०९ २८ ०८ १७	०८ २४ २८ ०५	०३ ११ १० ५२	०९ ०६ ५२ २१	१० ११ ३२ ००	१० ०५ २१ ३५	०५ ०९ ५६ ४२	०८ २५ २७ २०	११ ०० ४१ १४	१० ०२ ०० २१	०८ १० ३८ २२	11
12	०९ २९ ०९ ००	०९ ०६ १६ २५	०३ १० ५० ४३	०९ ०८ १८ ००	१० ११ ४६ १९	१० ०६ ३६ ४६	०५ ०९ ५३ ४६	०८ २५ २४ १०	११ ०० ४४ १६	१० ०२ ०२ ३७	०८ १० ३९ ५८	12
13	१० ०० ०९ ४१	०९ १८ ०३ ३५	०३ १० ३१ ०८	०९ ०९ ४४ ४२	१० १२ ०० ३९	१० ०७ ५१ ५६	०५ ०९ ५० ४५	०८ २५ २० ५९	११ ०० ४७ १९	१० ०२ ०४ ५४	०८ १० ४१ ३२	13
14	१० ०१ १० २२	०९ २९ ५१ ५९	०३ १० १२ १०	०९ ११ १२ २३	१० १२ १५ ००	१० ०९ ०७ ०५	०५ ०९ ४७ ४०	०८ २५ १७ ४८	११ ०० ५० २३	१० ०२ ०७ ११	०८ १० ४३ ०५	14
15	१० ०२ ११ ०१	१० ११ ४३ ३७	०३ ०९ ५३ ४९	०९ १२ ४१ ०२	१० १२ २९ २३	१० १० २२ १३	०५ ०९ ४४ २९	०८ २५ १४ ३७	११ ०० ५३ २९	१० ०२ ०९ २८	०८ १० ४४ ३७	15
16	१० ०३ ११ ३८	१० २३ ४० १३	०३ ०९ ३६ ०७	०९ १४ १० ३९	१० १२ ४३ ४७	१० ११ ३७ २०	०५ ०९ ४१ १३	०८ २५ ११ २७	११ ०० ५६ ३६	१० ०२ ११ ४५	०८ १० ४६ ०७	16
17	१० ०४ १२ १४	११ ०५ ४३ २३	०३ ०९ १९ ०६	०९ १५ ४१ १४	१० १२ ५८ ११	१० १२ ५२ २६	०५ ०९ ३७ ५३	०८ २५ ०८ १६	११ ०० ५९ ४४	१० ०२ १४ ०१	०८ १० ४७ ३६	17
18	१० ०५ १२ ४८	११ १७ ५४ ५४	०३ ०९ ०२ ४७	०९ १७ १२ ४४	१० १३ १२ ३७	१० १४ ०७ ३१	०५ ०९ ३४ २८	०८ २५ ०५ ०६	११ ०१ ०२ ५३	१० ०२ १६ १८	०८ १० ४९ ०३	18
19	१० ०६ १३ २१	०० ०० १६ ५४	०३ ०८ ४७ ११	०९ १८ ४५ ११	१० १३ २७ ०३	१० १५ २२ ३५	०५ ०९ ३० ५९	०८ २५ ०१ ५५	११ ०१ ०६ ०४	१० ०२ १८ ३५	०८ १० ५० २८	19
20	१० ०७ १३ ५१	०० १२ ५१ ५०	०३ ०८ ३२ २०	०९ २० १८ ३४	१० १३ ४१ ३०	१० १६ ३७ ३८	०५ ०९ २७ २५	०८ २४ ५८ ४४	११ ०१ ०९ १५	१० ०२ २० ५१	०८ १० ५१ ५२	20
21	१० ०८ १४ २०	०० २५ ४२ ३१	०३ ०८ १८ १३	०९ २१ ५२ ५३	१० १३ ५५ ५७	१० १७ ५२ ३९	०५ ०९ २३ ४६	०८ २४ ५५ ३३	११ ०१ १२ २८	१० ०२ २३ ०७	०८ १० ५३ १५	21
22	१० ०९ १४ ४७	०१ ०८ ५१ ५०	०३ ०८ ०४ ५२	०९ २३ २८ ०८	१० १४ १० २६	१० १९ ०७ ३९	०५ ०९ २० ०४	०८ २४ ५२ २२	११ ०१ १५ ४१	१० ०२ २५ २४	०८ १० ५४ ३६	22
23	१० १० १५ १२	०१ २२ २२ ३२	०३ ०७ ५२ १७	०९ २५ ०४ २०	१० १४ २४ ५४	१० २० २२ ३८	०५ ०९ १६ १८	०८ २४ ४९ १२	११ ०१ १८ ५६	१० ०२ २७ ३९	०८ १० ५५ ५५	23
24	१० ११ १५ ३५	०२ ०६ १६ ४२	०३ ०७ ४० २९	०९ २६ ४१ २९	१० १४ ३९ २३	१० २१ ३७ ३५	०५ ०९ १२ २७	०८ २४ ४६ ०१	११ ०१ २२ १२	१० ०२ २९ ५५	०८ १० ५७ १३	24
25	१० १२ १५ ५७	०२ २० ३५ ००	०३ ०७ २९ २८	०९ २८ १९ ३६	१० १४ ५३ ५२	१० २२ ५२ ३१	०५ ०९ ०८ ३३	०८ २४ ४२ ५०	११ ०१ २५ २८	१० ०२ ३२ ११	०८ १० ५८ २९	25
26	१० १३ १६ १६	०३ ०५ १५ ५६	०३ ०७ १९ १५	०९ २९ ५८ ४१	१० १५ ०८ २२	१० २४ ०७ २५	०५ ०९ ०४ ३६	०८ २४ ३९ ३९	११ ०१ २८ ४६	१० ०२ ३४ २६	०८ १० ५९ ४४	26
27	१० १४ १६ ३३	०३ २० १५ ०६	०३ ०७ ०९ ४९	१० ०१ ३८ ४५	१० १५ २२ ५१	१० २५ २२ १९	०५ ०९ ०० ३५	०८ २४ ३६ २८	११ ०१ ३२ ०४	१० ०२ ३६ ४०	०८ ११ ०० ५७	27
28	१० १५ १६ ४९	०४ ०५ २५ ११	०३ ०७ ०१ १०	१० ०३ ११ ४९	१० १५ ३७ २१	१० २६ ३७ १०	०५ ०८ ५६ ३०	०८ २४ ३३ १८	११ ०१ ३५ २३	१० ०२ ३८ ५५	०८ ११ ०२ ०८	28

वि. सं. २०६६ के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रवि आदि योगों का विवरण

निम्नांकित शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धि प्रद होते हैं किन्तु द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ दोनों ही प्रकार के कार्य द्विगुण व त्रिगुण फल प्रद होते हैं। अतः इन में यदि मृत्यु हो तो विधिवत् शांति करवानी आवश्यक होती है। यहां सभी योगों का प्रा. व समाप्ति काल अंग्रेजी ता. अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.	प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
२७ मार्च	सूर्यो.	२८ मार्च	२८।२१	६ सितं.	सूर्यो.	६ सितं.	२७।५७
३० "	२५।५५	१ अप्रै.	२३।०९	८ "	"	८ "	२९।१२
३ अप्रै.	सूर्यो.	३ "	२०।३१	१४ "	२३।४६	१५ "	२१।४७
८ "	१५।५८	९ "	१५।५०	२० "	सूर्यो.	२० "	१२।२०
११ "	सूर्यो.	११ "	१६।५८	२३ "	१२।१३	२४ "	१३।४१
१८ "	७।५५	१९ "	१०।३६	२७ "	२१।३९	२८ "	सूर्यो.
२४ "	सूर्यो.	२५ "	१२।४४	२८ "	२४।४६	२९ "	२७।४३
२७ "	९।१०	२८ "	२९।१६	४ अक्टू.	सूर्यो.	४ अक्टू.	१०।४७
३० "	सूर्यो.	१ मई	२४।३९	६ "	"	६ "	११।१५
६ मई	"	६ "	२२।५४	७ "	१०।५५	८ "	१०।१८
१५ "	१५।४०	१६ "	१८।३६	११ "	३०।०३	१२ "	२८।३९
२१ "	सूर्यो.	२२ "	२२।३८	२१ "	सूर्यो.	२१ "	२२।३१
२५ "	"	२६ "	१३।३४	२५ "	"	२६ "	८।४८
२८ "	"	२९ "	६।५९	१ नवं.	१९।३४	२ नवं.	१९।१३
३१ "	२८।०३	१ जून	२८।०४	३ "	१८।२४	५ "	१५।५१
१२ जून	सूर्यो.	१२ "	२५।३६	८ "	११।२४	९ "	१७।०२
१८ "	"	१९ "	८।३४	१० "	सूर्यो.	१० "	८।४६
२० "	२९।०४	२१ "	२६।३४	१४ "	२९।०८	१५ "	२९।१७
२२ "	सूर्यो.	२२ "	२३।४७	२२ "	सूर्यो.	२२ "	१६।५१
२५ "	"	२५ "	१५।३२	२३ "	"	२३ "	२०।००
२८ "	१०।३२	२९ "	१०।०४	२७ "	२८।५२	२८ "	सूर्यो.
३ जुला.	१४।२८	४ जुला.	१६।५०	२९ "	सूर्यो.	२९ "	२९।०४
१० "	सूर्यो.	१० "	७।४६	१ दिसं.	"	१ दिसं.	२६।३८
१४ "	"	१४ "	१६।२७	२ "	"	३ "	२२।३८
१६ "	"	१६ "	१७।०७	४ "	२०।२६	५ "	१८।१६
१८ "	१४।५५	१९ "	१२।५५	६ "	सूर्यो.	६ "	१६।१६
२० "	सूर्यो.	२० "	१०।२७	१२ "	११।१७	१३ "	११।५२
२६ "	"	२६ "	१७।५२	२५ "	१३।५०	२६ "	१४।५६
३० "	२०।३८	३१ "	२२।४७	२९ "	सूर्यो.	२९ "	१३।३१
२ अग.	सूर्यो.	२ अग.	२८।३३	३० "	"	३० "	११।४१
९ "	२०।४६	१० "	२२।१७	१ जन.	"	२ जन.	२५।१४
११ "	२३।१७	१२ "	२३।४४	११ "	"	११ "	२०।२०
१५ "	सूर्यो.	१५ "	२१।३७	१५ "	३०।५७	१७ "	१०।०४
२३ "	"	२३ "	२६।२२	२२ "	सूर्यो.	२२ "	२२।५१
२६ "	२७।४०	२७ "	२९।३८	२५ "	२३।४३	२६ "	सूर्यो.

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
२७ जन.	सूर्यो.	२७ जन.	२०।४०
२८ "	१८।१६	२९ "	१५।३०
३ फर.	सूर्यो.	३ फर.	२४।२४
१२ "	१३।०५	१३ "	१६।१४
१८ "	सूर्यो.	१९ "	३०।२३
२२ "	७।३३	२३ "	सूर्यो.
२५ "	सूर्यो.	२५ "	२६।२२
३ मार्च	"	३ मार्च	१०।२३
१२ "	"	१२ "	२२।३५

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
२७ मार्च	सूर्यो.	२७ मार्च	२९।१३
२४ अप्रै.	"	२४ अप्रै.	१४।००
३० "	२५।५६	१ मई	सूर्यो.
२५ मई	१६।०७	२६ "	"
२८ "	८।५२	२९ "	"
२२ जून	सूर्यो.	२२ जून	२३।४७
२५ "	"	२५ "	१५।३२
२० जुला.	"	२० जुला.	१०।२७
३० "	"	३१ "	सूर्यो.
११ अग.	२३।१७	१२ अग.	"
१५ "	सूर्यो.	१५ "	२१।३७
२३ "	"	२३ "	२६।२२
८ सितं.	"	८ सितं.	२९।१२
२० "	"	२० "	१२।२०
६ अक्टू.	"	६ "	११।१५
२१ "	"	२१ "	२२।३१
१८ नवं.	"	१८ नवं.	७।०४
२७ "	२८।५२	२८ "	सूर्यो.
२५ दिसं.	१३।५०	२६ दिसं.	"
२२ जन.	सूर्यो.	२२ जन.	२२।५१
२५ फर.	२६।२२	२६ फर.	सूर्यो.

रवि पुष्य योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
११ अक्टू.	३०।०३	१२ अक्टू.	सूर्यो.
८ नवं.	११।२४	९ नवं.	१०।०२
६ दिसं.	सूर्यो.	६ दिसं.	१६।१६

गुरु पुष्य योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
३० अप्रै.	२५।२६	१ मई	सूर्यो.
·२८ मई	८।५२	२९ "	"
२५ जून	सूर्यो.	२५ जून	१५·३२
२५ फर.	२६।२२	२६ फर.	सूर्यो.

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
१६ मई	१८।३६	१६ मई	२३।५९
२६ "	सूर्यो.	२६ "	११।०५
२७ जुला.	१७।२४	२८ जुला.	१५।२९
२० सितं.	१२।२०	२० सितं.	२०।००
१० अक्टू.	सूर्यो.	१० अक्टू.	८।२९
२४ नवं.	"	२४ नवं.	१३।५९

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
२६ अप्रैल	११।०४	२७ अप्रै.	सूर्यो.
२० जून	७।०७	२० जून	११।०४
२८ "	१०।३२	२९ "	सूर्यो.
१ सितं.	सूर्यो.	१ सितं.	१५।३४
५ "	२२।४५	५ "	२६।४१
२० अक्टू.	सूर्यो.	२० अक्टू.	९।३०
२४ "	२९।४१	२५ "	१६।५४
१६ फर.	सूर्यो.	१६ फर.	१३।११
२ मार्च	"	२ मार्च	१२।३१

रवि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
२७ मार्च	सूर्यो.	२७ मार्च	२९।१३
२९ "	"	२९ "	२७।१३
३१ "	२४।३२	१ अप्रै.	२३।०९
३ अप्रै.	२०।३१	५ "	१८।१२
७ "	१६।२८	८ "	१५।५८
१५ "	२५।४९	१६ "	२८।५४
२८ "	७।१२	२८ "	२९।१६
२९ "	२७।५९	३० "	२५।५६
२ मई	२३।४१	४ मई	२२।३८
६ "	२२।५४	७ "	२३।३४
१५ "	१५।४०	१६ "	१८।३६
२७ "	११।०६	२८ "	८।५२
२९ "	६।५९	३० "	५।३१
३१ "	२८।०३	२ जून	२८।३३
५ जून	६।५४	६ "	८।४३
१३ "	२८।२३	१५ "	६।४१
२५ "	१५।३२	२६ "	१३।२०
२७ "	११।३८	२८ "	१०।३२
३० "	१०।१५	१ जुला.	११।०६
४ जुला.	१६।५०	५ "	१९।२३
६ "	सूर्यो.	६ "	२२।३०
१३ "	१५।०३	१४ "	१६।२७
२४ जुला.	२०।५३	२५ जुला.	१९।०४
२६ "	१७।५२	२७ "	१७।२४
२९ "	१८।४४	३१ "	२२।४७
४ अग.	७।४१	५ अग.	१०।४७
११ "	२३।१७	१२ "	२३।४४
२२ "	२७।२८	२३ "	२६।२२
२४ "	२६।००	२५ "	२६।२२
२७ "	२९।३८	२९ "	८।११
२९ "	८।११	३१ "	१४।१५
२ सितं.	१७।२२	३ सितं.	२२।४९
९ "	२९।१४	१० "	२८।५२
२१ "	११।३५	२२ "	११।३१
२३ "	१२।१३	२४ "	१३।४१
२७ "	२१।३९	२९ "	२७।४३
२ अक्टू.	८।२०	३ अक्टू.	९।५१
९ "	९।२८	१० "	८।२९
१० "	१७।५१	११ "	७।२०
२० "	२१।२३	२१ "	२२।३१
२३ "	२८।१७	२४ "	२९।४१
२७ "	११।५२	२९ "	१६।५१
३१ "	१९।२०	१ नवं.	१९।३४
८ नवं.	११।२४	९ "	१०।०२
२० "	११।०४	२१ "	१३।४८
२२ "	१६।५१	२३ "	२०।००
२५ "	२५।५६	२७ "	२८।५२
७ दिसं.	१४।३१	८ दिसं.	१३।०५
१९ "	२४।१८	२० "	२७।२८
२१ "	३०।३६	२३ "	९।३०
२५ "	१३।५०	२७ "	१५।१५
३० "	११।४१	३१ "	९।२२
५ जन.	१८।३९	६ जन.	१७।२४
१८ "	१३।११	१९ "	१६।०९
२० "	१८।५१	२१ "	२१।०८
२३ "	२३।५३	२४ "	८।२५
२४ "	२४।११	२६ "	२२।३१
२८ "	१८।१६	२९ "	१५।३०
३ फर.	२४।२४	४ फर.	२३।३९
१६ "	२४।४६	१७ "	२७।०३
१८ "	२८।५७	१९ "	१६।०५
१९ "	३०।२३	२१ "	७।१६
२३ "	७।१०	२४ "	२८।३२
२६ "	२३।४८	२७ "	२०।५६
६ मार्च	८।१३	७ मार्च	९।११

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥

विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५१०२ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५३वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समथ हात थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्क. तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों को २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग— भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०५८ में कलियुग ५१०२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९८ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

अथ सम्वत् २०६६ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि दशाधिकारी फलम्

श्री गणेशाम्बा गुरुभ्यो नमः

वागीशाद्या सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृत्कृत्या स्युः तन्नमामि विनायकम्।। तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च। पंचांगं श्रृणुते नित्यं गंगा स्नान फलं लभेत्।। तिथि आयुकरि प्रोक्ता नक्षत्रं पाप नाशनम्। वारं शत्रून् विनाशाय योगो वृद्धि शतानि च।। करणं करोतु कल्याणं चन्द्रो लक्ष्मी दिने दिने। यशसो वर्द्धते नित्यं दिवाकरो भूमण्डले।।

अथ श्री मन्नृपति चक्र चूड़ामणि वीर विक्रमादित्य राज्यात् शुभ संवत् २०६६ तथा च श्री मन्नृपति शालि वाहन राज्याच्छुभ शाकः १९३१, वर्षेऽस्मिन् कल्पतोगताब्दाः १,९७,२९,४९,११०। सृष्तितो गताब्दाः १,९५,५८,८५,११०। तत्र कृतयुग प्रमाणं १७,२८०००। त्रेता युग प्रमाणं १२,९६०००। द्वापर युग प्रमाणं ८,६४०००। कलियुग प्रमाणं ४,३२००० वर्षाणि, तन्मध्ये भुक्त कलिः ५११०। भोग्य कलिः ४,२६,८९०। श्री कृष्ण जन्मतो गताब्दाः ५२४५। श्री बौद्धावतार सम्वत् २६३२-३३। श्री महावीर निर्वाण जैन सम्वत् २५३५-३६। ईसवी सन् २००९-१०। हिजरी सन् १४३०-३१। भारतीय गणराज्य सम्वत् ६०-६१ प्रवर्त्तते।

अथाऽस्मिन् वर्षे राजा शुक्रः। मंत्री चन्द्रः। सस्येशो बृहस्पतिः। धान्येशो भौमः। मेघेशो सूर्यः। रसेशो शनिः। नीरसेशो बृहस्पतिः। फलेशो सूर्यः। धनेशो बुधः। दुर्गेशो सूर्यः। एते दशाधिकारिणः। तत्र बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि षष्ठ्याब्दानां मध्ये विष्णु विंशतिकायां १६ "शुभकृत" नाम संवत्सरः प्रवर्त्तते। तस्य मेषाऽर्क समये भुक्त मासादयः ११।११।५।१७। भोग्य मासादि ०।१८।५४।४३ तदनुसार वैशाख शुक्ल ७ शुक्रवासरे रात्रौ १०।४२ वादनोपरि "शोभकृत्" नाम संवत्सरः प्रवर्त्तते। विश्वेदेव दैवतं युगम्। वर्षनाम "श्रावणः"। चतुर्मेघानां मध्ये "संवर्त्त" नाम मेघः। रोहिणी निवासः "समुद्रे"। समय निवासे "मालाकार" गृहे। समय वाहन "दर्दुरः"। स्तंभाः २ "जलतृणयोः"। सोमवत्याऽमावस्या ३। अंगारकी चतुर्थी ३। सोमवती पंचमी २। सूर्य सप्तमी २। बुधाष्टमी २। रवि दशमी २। समय विश्वा १८। समय मुहूर्त्तानि ३१५। समय दिनानि ३५४। तिथि क्षयः १६। तिथि वृद्धिः १०। अष्टोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा ९९। खपति विश्वा १२६। विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा ८७। खपति विश्वा १२३। वर्षा विश्वा १३। धान्यम् ११। तृणम् १५। शीतम् १५। तेजः ११। वायुः १३। वृद्धिः १५। क्षयः १५। विग्रहः ११। तयोरैक्यम् ११९। सत्यम् अर्द्ध। धर्म ड्योढ़ा। पाप १८। शनि दृष्टिः दक्षिणस्याम्। भारते दृश्य ग्रहण ३ सूर्यस्य २, चन्द्रमसः १। दैवज्ञ शुभाऽशुभ चिंतनीयम्।।

अखिलेश्वर काल के कर्ता, अभियन्ता व लोक नायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के राजा-मंत्री आदि दशाधिकारियों का प्रभाव यूं तो न्यूनाधिक सर्वत्र होता है तथापि राजा का प्रभाव भारत वर्ष मुकुट मणि कश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मंत्री का प्रभाव कलिंग में, सस्येश का विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट व मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण व गोवा में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग व कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धनेश व दुर्गेश का प्रभाव सर्वत्र समान रूप से पड़ता है।

अथ शुभकृत् नाम सम्वत्सर फलम्

शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी संपूर्णा विविधोत्सवैः। आतंक चौराभयदा राजानः समरोत्सुकाः।।

जिस वर्ष शुभकृत् नामक संवत्सर होता है। उस वर्ष चोर, तस्कर एवं आतंकवादी आदि असामाजिक तत्वों में भय व्याप्त होकर शासक वर्ग में देश हितार्थ जागरुकता व प्रजा में मांगलिक उत्सव जैसा हर्ष पूर्ण वातावरण रहता है।

अथ राजा शुक्रः तस्य फलम्

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य संकुला सुतीव्र वेगाः सरितोम्बुराशिभिः। फलन्ति वृक्षा बहुगो प्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिक सौख्य संयुता।।

वर्ष के राजा शुक्र का फल—शुक्र राजा हों तो पृथ्वी पर वर्षा श्रेष्ठ होती है। नदियों के जलस्तर व वेग में बढ़ोत्तरी होती है। घास चारा फल एवं धान्योत्पादन उत्तम रहकर गो आदि पशुओं में वृद्धि होती है तथा प्रजा भौतिक सुख युक्त होती है।

अथ मंत्री चन्द्रः तस्य फलम्

शशिनि मंत्रिगते बहुसस्यवत्यपिधरा रमते सुखमंडिता। वियति वारिधरा वहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः।।

वर्ष के मंत्री चन्द्र का फल—मंत्री पद पर जिस वर्ष चन्द्र हों उस वर्ष बादल श्रेष्ठ वर्षा करते हैं एवं उत्तम धान्योत्पादन होकर प्रजा सुख पूर्वक वास करती है।

अथ सस्येश बृहस्पतिः तस्य फलम्

सस्य पतौ सुरराजपुरोहिते सकल सौख्य करः श्रुतिपूर्वकाः। जलधरा जलदा बहुसस्यदा रस पयांसि बहूनि वसूनिवै।।

वर्ष के सस्येश बृहस्पति का फल—सस्येश पद पर जिस वर्ष बृहस्पति हों उस वर्ष धरा भौतिक सुखों से युक्त होती है। वर्षा उत्तम होकर धान्योत्पादन रसोत्पादन व गोआदि पशुओं की वृद्धि होती है।

अथ धान्येश भौमः तस्य फलम्

भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म धान्य महर्घकम्। शालीक्षु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।

वर्ष के धान्येश मंगल का फल—धान्येश पद पर मंगल आसीन हों उस वर्ष शालि, धान, घी, तैल एवं ग्रीष्म धान्यादि के भावों में महंगाई रहती है।

अथ मेघेश सूर्यः तस्य फलम्

जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि वैरमते जनता रसम्। यवचणेक्षु निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।।

वर्ष के मेघेश सूर्य का फल—मेघेश पद पर सूर्य हों तो पृथ्वी एवं प्रजा दोनों रसमय रहते हैं। जौ, चना, ईख, निवारधान एवं शालिधान आदि की उत्पत्ति श्रेष्ठ होती है व सस्ते होते हैं।

अथ रसेशो शनिः तस्य फलम्

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः। अज गवां गज वाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरान्न रसैर्युता।।

वर्ष के रसेश शनि का फल—शनि का रसेश पदासीन होना रस हीनता का द्योतक है। बादलों में जल की, स्तनधारी पशुओं में दुग्ध की कमी एवं मनुष्यों को रसों की कमी रहती है। हाथी, घोड़ा, गर्दभ, ऊँट, गाय व बकरी आदि पशुओं की क्षति होती है।

अथ नीरसेशो बृहस्पतिः तस्य फलम्

हरिद्रापीतवस्तूनां पीतवस्त्रादिकं च यत्। नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।

वर्ष के नीरसेश बृहस्पति का फल—इस पद पर जिस वर्ष बृहस्पति हों। उस वर्ष पीत धान्य, पीली दालें, पीले वस्त्र एवं हरिद्रादि पीत वस्तुओं की वृद्धि होकर प्रजा में प्रेम वृद्धि होती है।

अथ फलेशो सूर्यः तस्य फलम्

द्रुमवती फलपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विरोधतः। बहुजलं जलदो भुवि मुंचति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रविः।।

वर्ष के फलेश सूर्य का फल—वर्ष के फलेश सूर्य का होना पृथ्वी पर फल, पुष्प, वृक्षादि की उत्पत्ति श्रेष्ठ किन्तु फलों का कीट आदि से दूषित होकर नष्ट होना एवं बादल कभी पर्याप्त व कमी अतिवृष्टी कारक हैं।

अथ धनेशो बुधः तस्य फलम्

द्रविणपो हिमरश्मि सुतो यदा विविध संग्रह वस्तु फला तदा। द्विजवरा जपयज्ञसुसंयुताः कृषिविशेष विशेषित मानसाः।।

वर्ष के धनेश बुध का फल—वर्ष में वित्त मंत्रालय बुध संभालें तो संवत् में कृषि विशेष कार्य एवं संग्रह योग्य वस्तुओं के संग्रह से विशेष लाभ की प्राप्ति रहती है। द्विज वर्ग यत्र-तत्र जप यज्ञादि धार्मिक कृत्यों में रत रहते हैं।

अथ दुर्गेशो सूर्यः तस्य फलम्

नय विशेष करस्तरणिस्तदा गतभया नरराज पुरोगमाः। समधिकेन तदा नृपतोन्यतः पथि च संव्रजतां न भयं क्वचित्।।

वर्ष के दुर्गेश सूर्य का फल—गढ़पति सूर्य देव हों तो शासकों में अनुशासन बनकर प्रजा निर्भय होती है एवं पर्यटकों को निर्भीक पर्यटन उपलब्ध होता है तथापि कुछ नये कर लागू होते हैं व कई कानूनों में संशोधन भी होता है।

अथ वर्षनाम श्रावणः तत्फलम्

मनोह्लादं प्रकुर्वन्ति जनाः सौख्य समायुताः। श्रावणे वृष्टिरत्युग्रा गोमहिष्यादिकं सुखम्।।

वर्ष नाम श्रावण का फल—सर्वत्र सुवृष्टि होकर गो आदि पशुओं को चारा एवं प्रजा में धन धान्य व भौतिक सुखों की वृद्धि होगी। किन्तु श्रावण मास में अति वर्षण रहता है।

चतुर्मेघानां मध्ये संवर्त्त नाम मेघ तत्फलम्—"संवर्त्ते जल पूरिता" सूत्रानुसार वर्ष में श्रेष्ठ वर्षा होगी।

रोहिणी निवासो समुद्रे तत्फलम्—"समुद्रे तु महावृष्टिः" सूत्रानुसार प्रभूत वृष्टि होगी।

समय निवासो मालाकार गृहे तत्फलम्—"सर्ववस्तु समर्घं स्यान्मालाकार गृहेऽब्दके" सभी प्रकार की वस्तुऐं सस्ती एवं सुलभ हों।

समय वाहन दर्दुर तत्फलम्—वर्षा उत्तम होगी एवं यत्र-तत्र वेद ध्वनी सुनायी देगी।

स्तम्भाः २ जल तृणयोः तौ फलम्—वर्षा श्रेष्ठ होकर तृणादि उत्पत्ति उत्तम किन्तु अन्न उत्पादन मध्यम प्रायः रहेगा।

समय विश्वा १८ तत्फलम्—समय के विश्वा १८ होने से वर्ष में विकाश दर बढ़ेगी।

उत्पत्ति खपति—वर्ष में उत्पत्ति विश्वा ८७ एवं खपति विश्वा १२३ होना नेष्ट फलप्रद है।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

शनि का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१० जुला.	पू.फा.	४		१९।३४
१२ अग.	उ.फा.	१		२८।४५
९ सितं.	,,	२	कन्या	२४।०१
६ अक्टू.	,,	३		२१।४२
४ नवं.	,,	४		२९।२६
१७ दिसं.	हस्त	१		२२।३५

राहु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१२ मई	उ.षा.	४		१८।५६
१४ जुला.	,,	३		१६।१८
१५ सितं.	,,	२		१३।५५
१७ नवं.	,,	१	धनु	११।४६
१९ जन.	पू.षा.	४		९।०८

केतु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१२ मई	पुष्य	२		१८।५६
१४ जुला.	,,	१		१६।१८
१५ सितं.	पुन.	४		१३।५५
१७ नवं.	,,	३	मिथुन	११।४६
१९ जन.	,,	२		९।०८

हर्षल का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
६ अप्रै.	पू.भा.	४	मीन	२३।३३
३ अक्टू..	,,	३	कुंभ	२३।११
२७ जन.	,,	४	मीन	१३।२०

नेपच्यून का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
१ अक्टू.	धनि.	२	मकर	२९।३०
७ दिसं.	,,	३	कुंभ	२५।४८

प्लूटो का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
२० जन.	मूल	४		२६।०६

मंगल का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
२० दिसं.	वक्री	३०।३१
११ मार्च	मार्गी	१९।५८

बुध का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
७ मई	वक्री	६।४६
३१ ,,	मार्गी	१२।१८
७ सितं.	वक्री	९।५१
३० ,,	मार्गी	१८।२१
२७ दिसं.	वक्री	१८।४८
१६ जन.	मार्गी	२४।२१

गुरु का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
१५ जून	वक्री	१९।५१
१३ अक्टू.	मार्गी	१९।१८

शुक्र का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
१८ अप्रै.	मार्गी	२४।३९

शनि का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
१७ मई	मार्गी	१३।५५
१५ जन.	वक्री	२४।२८

हर्षल का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
१ जुला.	वक्री	२३।३९
२ दिसं.	मार्गी	१४।०६

नेपच्यून का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
२९ मई	वक्री	१५।३३
५ नवं.	मार्गी	१७।००

प्लूटो का वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं. मि.
४ अप्रै.	वक्री	३०।००
१२ सितं.	मार्गी	१५।२८

बुध का उदयास्त

ता. मास	उ./अ.		घं.मि.
१४ अप्रै.	उदय	पश्चिम	८।२५
७ मई	अस्त	,,	२१।४५
२८ मई	उदय	पूर्व	२४।०८
१ जुला.	अस्त	,,	१२।४१
२७ ,,	उदय	पश्चिम	२७।१६
१२ सितं.	अस्त	,,	२३।०८
२९ ,,	उदय	पूर्व	८।४८
१४ अक्टू.	अस्त	,,	२५।४१
१ दिसं.	उदय	पश्चिम	२८।००
२८ ,,	अस्त	,,	१८।४३
११ जन.	उदय	पूर्व	२१।१२
२४ फर.	अस्त	,,	८।०८

गुरु का उदयास्त

ता. मास	उ./अ.		घं.मि.
१३ फर.	अस्त	पूर्व	१६।२१
१५ मार्च	उदय	पश्चिम	१९।३८

शुक्र का उदयास्त

ता. मास	उ./अ.		घं.मि.
३ अप्रै.	उदय	पूर्व	१५।५३
१५ दिसं.	अस्त	,,	२०।४१
७ फर.	उदय	पश्चिम	७।५८

शनि का उदयास्त

ता. मास	उ./अ.		घं.मि.
२९ अग.	अस्त	पश्चिम	१२।३०
६ अक्टू.	उदय	पूर्व	२९।४५

अगस्त्य तारा उदयास्त

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
२५ अप्रै.	अस्त	२९।३५
२८ अग.	उदय	२९।३२

शुभ संवत् २०६६ वि. मध्ये शनि साढ़ेसाती व अढैया विचार

सिंह राशिगत शनि की साढ़ेसाती का निम्न राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

(ता. ९ सितम्बर सन् २००९ ई. तक)

कर्क राशि–कर्क राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम चरण चलेगा। जिसके फलस्वरूप आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव, मानसिक तनाव व भाग्य में अवरोध पैदा होंगे। स्वर्ण पाद से शनि का. आगमन से श्रम संघर्ष से अल्प लाभ होगा।

सिंह राशि–सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का द्वितीय चरण होगा। जिससे स्वयं को क्रोधाधिक्य, रोगोपद्रव बनकर आर्थिक स्थिति न्यून रहेगी। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। लौहपाद से शनि का आगमन हर क्षेत्र में कष्ट प्रद रहेगा।

कन्या राशि–कन्या राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का प्रथम चरण अनावश्यक खर्चो में बढ़ोत्तरी करायेगा तथा मानसिक उद्वेग की स्थिति रहेगी। विरोधी पक्ष प्रबल होंगे। स्वर्ण पाद से शनि का आगमन संघर्ष के बाद सफलता दिलायेगा।

सिंह राशिगत शनि की अढैया का निम्न राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

वृष राशि–वृष राशि वालों को शनि की अढैया चलेगी। जिससे सुख में कमी रहेगी। पारिवारिक वातावरण कलहपूर्ण रहेगा। राजकीय कामों में रुकावटें बनकर आंशिक सफलता मिलेगी। शत्रु प्रबल होंगे। कर्म क्षेत्र में परिवर्तन होगा।

मकर राशि–मकर राशि वालों को अष्टम स्थान में शनि भ्रमण करने से अढैया का प्रभाव रहेगा। जिससे मानसिक तनाव, पेट सम्बन्धी व वायुजनित रोग बार-बार परेशान करेंगे। शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। कार्य क्षेत्र में तनाव व खर्चे अधिक होंगे।

कन्या राशिगत शनि की साढ़ेसाती का निम्न राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

(ता. ९ सितम्बर सन् २००९ ई. को शनि कन्या राशि में प्रवेश करेंगे)

सिंह राशि–सिंह राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का तीसरा चरण मुक्त होगा। अतः आर्थिक विषमताऐं रहेंगी। ऋणग्रस्तता बनेगी। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। कुटुम्बजनों से वैमनस्यता रहेगी। सुख में कमी। कर्म क्षेत्र में तनाव रहेगा।

कन्या राशि–कन्या राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का दूसरा चरण चलेगा। जिससे स्वयं को क्रोधाधिक्य बनकर मानसिक तनाव रहेगा। पत्नी को शारीरिक कष्ट रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में चुनौती। आय के साधन अवरुद्ध होंगे।

तुला राशि–तुला राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण शुरू होगा जिसके फलस्वरूप अप्रत्याशित व्ययकारक यात्राऐं। बनते कार्यों में बिगाड़। नवीन शत्रुओं द्वारा हानि का प्रयास। अत्यधिक खर्च। भाग्यावरोध बनकर तनाव रहेगा।

कन्या राशिगत शनि की अढैया का निम्न राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मिथुन राशि–मिथुन राशि वालों को शनि की अढैया का प्रभाव रहेगा। चतुर्थ भावगत शनि से घरेलू वातावरण अशान्त। चौपायों से हानि। स्थाई सम्पति सम्बन्धी विवाद होंगे। सुख के साधन सिमटेंगे। तनाव पूर्ण वातावरण रहेगा। भाग्य में बाधाऐं खड़ी होंगी।

कुंभ राशि–कुंभ राशि वालों को शनि की अढैया चलेगी। अष्टम शनि अरिष्ट कारक प्रभाव देगा। स्वास्थ्य का पाया कमजोर। गैस ट्रबल, पेट सम्बन्धी रोगों से परेशान रहेंगे। कार्य क्षेत्र में स्थानांतरण की स्थिति। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। कार्यों में विलम्ब की स्थिति रहेगी।

अथ अष्टोत्तरी मतेनाय-व्यय चक्रम्

(विन्ध्य से दक्षिण वासियों के लिये)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४

अथ विंशोत्तरी मतेनाय-व्यय चक्रम्

(विन्ध्य से उत्तर वासियों के लिये)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

श्री चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. २७ मार्च से ९ अप्रैल सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ६ चैत्र से १९ चैत्र तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
६	शु	१	३५	४६	२०	३७	रे	५७	१७	२९	१३	ब्र	१५	५०	१२	३९	किं	७	१२	९	११	३०	४१	६	१९	१८	३५	१४	२९	27	मे. २९।१३	११	१२	२८	४	५९/२४	६	१९	१९	२८	पंचक २९।१३ तक, नव संवत्सरारंभ, वर्षफल श्रवणं, ध्वजारोपणं, A
७	श	२	३२	१३	१९	१०	अ	५५	९	२८	२१	ऐं	१०	२६	१०	२८	बा	४	८	७	५७	३०	४५	६	१७	१८	३५	१५	३०	28	मेष	११	१३	२७	२८	२१	६	५४	२०	३१	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घः, सिंधारा, चेटीचण्ड, झूलेलाल ज. B
८	र	३	२७	५२	१७	२५	भ	५२	२१	२७	१३	वै	०४/५७	१९/३८	८/२९	०/२०	तै	०	९	६	२०	३०	५०	६	१६	१८	३६	१६	उ./आ.१	29	मेष	११	१४	२६	४९	२०	७	३३	२१	३७	भ. २८।२६ से, रवि उस्सानी मु. मा. ४ प्रा., गौरी तृतीया, गणगौर C
९	चं	४	२३	००	१५	२७	कृ	४९	१०	२५	५५	प्री	५०	४२	२६	३२	वि	२३	०	१५	२७	३०	५४	६	१५	१८	३७	१७	२	30	वृष ८।५४	११	१५	२६	९	१७	८	१८	२२	४४	भ. १५।२७ तक, विनायक ४ व्रत B (सिंधी संप्रदाय)
१०	मं	५	१७	५१	१३	२२	रो	४५	४६	२४	३२	आ	४३	३८	२३	४१	बा	१७	५१	१३	२२	३०	५८	६	१४	१८	३७	१८	३	31	वृष	११	१६	२५	२६	१५	९	१०	२३	४९	रेवत्यां सूर्यः ११।२५, रेवत्यां बुधः १०।११, कल्पादि ५, श्री पंचमी, D
११	बु	६	१२	३५	११	१५	मृ	४२	२१	२३	९	सौ	३६	३१	२०	४९	तै	१२	३५	११	१५	३१	२	६	१३	१८	३८	१९	४	A1	मि. ११।५१	११	१७	२४	४१	१२	१०	१०	२४	५०	अप्रैल मा. ४ ता. ३० प्रा., पूभायां भौमः २९।४७, मूर्ख दिवस, विश्व E
१२	गु	७	७	२२	९	८	आ	३९	१	२१	४८	शो	२९	२९	१७	५९	व	७	२२	९	८	३१	७	६	१२	१८	३८	२०	५	2	मिथुन	११	१८	२३	५३	१०	११	१४	२५	४४	भ. ९।८ से, २०।६ तक, आयंबिल ओली प्रा. (जैन) E स्वास्थ्य दिवस
१३	शु	८	२	१५	७	४	पुन	३५	५०	२०	३१	अति	२२	३३	१५	१२	ब	२	१५	७	४	३१	११	६	१०	१८	३९	२१	६	3	क. १४।५०	११	१९	२३	३	८	१२	२२	२६	३१	पूर्वोदयं शुक्रः १५।५३, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, दुर्गा पूजा, F
०	शु	९	५७	१६	२९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथि क्षयः
१४	श	१०	५२	३३	२७	१०	पु	३२	५२	१८	१८	सु	१५	४७	१२	२८	तै	२४	५४	१६	७	३१	१५	६	९	१८	३९	२२	७	4	कर्क	११	२०	२२	११	५	१३	२९	२७	१२	वक्री प्लूटो ३०।०० G डोलोत्सव
१५	र	११	४८	७	२५	२३	श्ले	३०	९	१८	१२	धृ	९	१४	९	५०	व	२०	१९	१४	१६	३१	१९	६	८	१८	४०	२३	८	5	सिं. १८।१२	११	२१	२१	१६	३	१४	३४	२७	४९	भ. १४।१६ से २५।२३ तक, कामदा ११ व्रत (सबका), लक्ष्मीकांत G
१६	चं	१२	४४	६	२३	४५	म	२७	४८	१७	१४	शू	०२/५६	५६/५६	७/२८	१७/५७	ब	१६	५	१२	३३	३१	२३	६	७	१८	४०	२४	९	6	सिंह	११	२२	२०	१९	१	१५	३७	२८	२३	अश्विन्यां मेषे बुधः २१।२६, पू.भा. ४ मीने हर्षल २३।३३, शुक्र H
१७	मं	१३	४०	३६	२२	२०	पूफा	२५	५६	१६	२८	वृ	५१	२६	२६	४०	कौ	१२	१८	११	१	३१	२८	६	६	१८	४१	२५	१०	7	कं. २२।१९	११	२३	१९	२०	५८/५९	१६	३९	२८	५५	अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर ज. (जैन), भौम प्रदोष व्रत
१८	बु	१४	३७	५०	२१	१३	उफा	२४	४४	१५	५८	ध्रु	४६	३४	२४	४३	ग	९	८	९	४४	३१	३२	६	५	१८	४२	२६	११	8	कन्या	११	२४	१८	१९	५६	१७	३९	२९	२८	भ. २१।१३ से, दमनक चतुर्दशी, फातिहा यजदहूम (मु.)
१९	गु	१५	३६	१	२०	२८	ह	२४	२५	१५	५०	व्या	४२	२९	२३	३	वि	६	४९	८	४७	३१	३६	६	४	१८	४२	२७	१२	9	तु. २७।५५	११	२५	१७	१५	५५	१८	३९	३०	१	भ. ८।४७ तक, धनिष्ठायां २ गुरुः २०।१८, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं J
																																									J पुण्यं च, चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमान ज., मेला सालासर (राज.), K

पूर्वोदयं शुक्रः ३ अप्रैल

A पूजनं च, गुड़ी पड़वा, गौतम ज., आर्य समाज स्थापना दि., वासन्तीय नवरात्रारंभ, घट स्थापनं, वृष लग्ने C पूजन, मत्स्य ज., मनोरथ ३, आंदोलन ३ (बिहार), सौभाग्य ३ व्रत, मन्वादि ३
D नाग पंचमी व्रत, श्री राम जन्मोत्सव प्रा., डोलोत्सव, हय ५, स्कन्द ६ व्रतं F श्री रामनवमी, श्रीराम ज., नवरात्र पूर्ति, मां तारा ज. H बाल्यत्व पूर्ण १५।५३, हरिदमनोत्सव K मन्वादि १५, आयंबिल ओली पूर्ण (जैन), वैशाख स्नान प्रा.

चैत्र शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	१०	११	९	११	४	९	३	१०	१०	८
१९	२४	२०	२२	२५	९	२२	१२	१२	२९	१	९
२३	३१	४६	२५	२८	३२	२९	५	५	४७	३९	१८
३	२६	१९	४	५९	४५	५२	४७	४७	४८	३५	३२
५९	७८४	४६	१२४	११	३२	३	३	३	३	०१	०
०८	२७	५२	०२	०१	१२	५६	११	११	१७	४०	०३
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
४	२	१	२	१	२	३	१	३	३	३	३
उ.भा.	पुन.	पू.भा.	रेवती	धनि.	उ.भा.	पू.फा.	श्रवण	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

१ | मं.ह.११ ने. | १० गु.रा. | २ | सू.बु. शु.१२ | ९ प्लू. | ३ चं. | ६ | के. ४ | ८ | ५ श. | ७

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार प्रतिपदा से शुरू होने से वर्ष में सुभिक्ष योग बनेगा। पूर्णिमा हस्त युक्त होने से महंगाई में नूतन परिवर्तन यानि मंदी का योग चलेगा। रेवती में बुध ग्रह का होना शृंगार संबंधी सामग्री महंगी होगी। व्यापारी एवं नौका चलाने वाले व्यापारी, वैद्य, डॉक्टर, जल में द्रव्य उत्पन्न करने वाले तथा घोड़े (अश्व) आदि में पीड़ा। पूर्वा भाद्रपद पर मंगल ग्रह के योग से तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी, अस्त्र-शस्त्र महंगे होने का योग बनता है। पांचै रोहिणी सप्तमी आर्द्रा नौमी क्षय हो जाय। चैत्र पूर्णिमा हस्त युक्त वर्षा गर्भ सुभाय॥ इन तिथियों में वर्षे नहीं अग्र उत्तम वर्षा योग। जै वर्षे तो मानलो आगे वर्षा कुयोग॥ अश्विनी में बुध का होना रोग योग गेहूं में बनेगा। फल, ईख, रस, घी, दूध में महंगाई की न्यूनता बनेगी। मीन राशि में शुक्रोदय का योग संसार में शांति का संदेश देता है। लेकिन चैत्र मास में शुक्रोदय होना राजनैतिक एवं महिलाओं में उपद्रव का योग करता है। व्यापार-सोना, चांदी, जेवरात, स्त्रीपयोगी शृंगार सामग्री में विशेष तेजी बनेगी। शेयर्स बाजार भी उछाला में चलेगा। चना, गेहूं के भावों में कुछ मंदी बनेगी। गुवार, गम, ज्वार में तेजी का विशेष योग। कपास, खल व घास तृण में अच्छी तेजी बनेगी। शकुन-चैत्र उजेरी पंचमी दिन भर बादल छाय। गेहूं को संग्रह करो सावण दुगुना भाव॥ चैत्र सुदी साते दिना जै वर्षा हो जाय। आगे वर्षा ना बने सभी रहे तरसाय॥ आकाश लक्षण-असम, उड़ीसा, पंजाब, गंगटोक, गोआ में तूफान योग या प्राकृतिक आपदा का भय रहेगा। उपद्रवों का प्रभाव भी प्राकृतिक आपदा का घटक होगा। अंधड़, तूफान से मछुआरों को हानि होगी।

ता. ९ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१बु. | मं.११ ने. | १० गु.रा. | २ | सू.ह. शु.१२ | ९ प्लू. | ३ | ६ चं. | के. ४ | ८ | ५ श. | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	१०	०	९	११	४	९	३	११	१०	८
२५	१७	२५	४	२६	६	२२	११	११	०	१	९
१७	३५	२७	४७	३३	४७	७	४६	४६	७	४९	१८
१५	१५	१८	३९	३५	१३	१०	४३	४३	११	१३	१७
५८	८१०	४६	१२२	१०	२२	३	३	३	३	१	०
५६	२९	४८	३३	३१	३१	३७	११	११	११	३३	०८
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
३	३	२	२	१	२	३	१	३	४	३	३
रेवती	हस्त	पू.भा.	अश्वि.	धनि.	उ.भा.	पू.फा.	श्रवण	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १० से २५ अप्रैल सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति २० चैत्र से ४ वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
२०	शु	१	३५	२३	२०	१२	चि	२५	१३	१६	८	ह	३९	२१	२१	४७	बा	५	३३	८	१६	३१	४०	६	३	१८	४३	२८	१३	10	तुला	११	२६	१६	१०	५८	१९	३९	६	३८	गुड फ्राइ डे A मु.१५, भरण्यां बुधः १३।२९, कृष्ण चतुर्थी व्रत
२१	श	२	३६	७	२०	२८	स्वा	२७	२०	१६	५८	व	३७	२०	२०	५७	तै	५	३५	८	१६	३१	४४	६	२	१८	४३	२९	१४	11	तुला	११	२७	१५	२	५१	२०	३९	७	१८	B बुधः ८।२५, वैशाखी उत्सव (पं., हरि., हिमा.), विशु (केरल), ❖
२२	र	३	३८	२३	२१	२२	वि	३०	५५	१८	२२	सि	३६	२८	२०	३६	व	७	५	८	५०	३१	४८	६	०	१८	४४	३०	१५	12	वृ.११।५८	११	२८	१३	५३	४८	२१	३८	८	२	भ. ८।५० से २१।२२ तक, अनसुइया ज., ईस्टर सण्डे
२३	चं	४	४२	८	२२	५१	अनु	३५	५८	२०	२२	व्य	३६	४७	२०	४२	ब	१०	६	१०	२	३१	५३	५	५९	१८	४४	वै१	१६	13	वृश्चिक	११	२९	१२	४१	४७	२२	३५	८	५१	व्यतिपात पुण्यं, सौर वैशाख प्रा., अश्विन्यां मेषेऽर्कः २४।४९, संक्रांति A
२४	मं	५	४७	१५	२४	५२	ज्ये	४२	१९	२२	५४	वरि	३८	९	२१	१४	कौ	१४	३४	११	४८	३१	५७	५	५८	१८	४५	२	१७	14	ध. २२।५४	०	०	११	२८	४५	२३	२७	९	४३	संक्रांति पुण्यकाल ७।१३ तक, मीने भौमः २६।२८, पश्चिमोदयं B
२५	बु	६	५३	२०	२७	१७	मू	४९	३९	२५	४९	प	४०	१७	२२	४	ग	२०	१३	१४	३	३२	१	५	५७	१८	४६	३	१८	15	धनु	०	१	१०	१३	४४	२४	१५	१०	३७	भ. २७।१७ से, D भौमः ८।२८, ग्रीष्म ऋतु प्रा.
२६	गु	७	५९	५०	२९	५२	पू.षा	५७	२५	२८	५४	शि	४२	५२	२३	५	वि	२६	३५	१६	३४	३२	५	५	५६	१८	४६	४	१९	16	धनु	०	२	८	५७	४१	२४	५८	११	३२	भ. १६।३४ तक, शीतला पूजन, बूढ़ा बासौड़ा (ठंडा बासी भोजन C
२७	शु	८	६०	०	-	-	उ.षा	६०	००	-	-	सिद्ध	४५	२३	२४	४	बा	३३	४	११	९	३२	९	५	५५	१८	४७	५	२०	17	म. ११।४०	०	३	७	३८	४०	२५	३६	१२	२७	कालाष्टमी C करना चाहिये), गुरु अर्जुनदेव ज. (प्रा. मत से)
२८	श	८	६	९	८	२२	उ.षा.	५	२	७	५५	सा	४७	२३	२४	५२	कौ	६	९	८	२२	३२	१३	५	५४	१८	४८	६	२१	18	मकर	०	४	६	१८	३९	२६	११	१३	२२	अष्टमी तिथि वृद्धिः, मार्गी शुक्रः २४।३९
२९	र	९	११	३३	१०	३०	श्र	११	४७	१०	३६	शुभ	४८	२७	२५	१६	ग	११	३३	१०	३०	३२	१७	५	५३	१८	४८	७	२२	19	कुं. २३।४४	०	५	४	५७	३६	२६	४३	१४	१८	भ. २३।१७ से, पंचक २३।४४ से, सायन वृषे सूर्यः २८।२, उभायां D
३०	चं	१०	१५	३०	१२	४	ध	१७	९	१२	४४	शु	४८	१५	२५	१०	वि	१५	३०	१२	४	३२	२१	५	५२	१८	४८	८	२३	20	कुम्भ	०	६	३	३३	३५	२७	१३	१५	१४	भ. १२।४ तक, मुनि सुब्रतनाथ जन्म-तप (जैन)
३१	मं	११	१७	३९	१२	५५	श	२०	४६	१४	९	ब्र	४६	३३	२४	२८	बा	१७	३९	१२	५५	३२	२५	५	५१	१८	४९	९	२४	21	कुम्भ	०	७	२	८	३३	२७	४४	१६	११	कृतिकायां बुधः १४।५४, वरूथिनी ११ व्रत सबका, श्री वल्लभाचार्य ज.
वै.१	बु	१२	१७	५०	१२	५८	पू.भा	२२	२८	१४	४९	ऐं	४३	१९	२३	१०	तै	१७	५०	१२	५८	३२	२९	५	५०	१८	५०	१०	२५	22	मी. ८।४४	०	८	०	४१	३२	२८	१५	१७	११	रा. वैशाख प्रा., प्रदोष व्रत E बाबू कुंवर सिंह ज. (बिहार)
२	गु	१३	१६	६	१२	१६	उ.भा	२२	१९	१४	४५	वै	३८	३८	२१	१६	व	१६	६	१२	१६	३२	३१	५	४९	१८	५०	११	२६	23	मीन	०	८	५९	१३	२९	२८	५०	१८	१४	भ. १२।१६ से २३।३४ तक, वृषे बुधः २९।४७, मास शिवरात्री व्रत, E
३	शु	१४	१२	३९	१०	५२	रे	२०	३१	१४	०	वि	३२	४०	१८	५२	श	१२	३९	१०	५२	३२	३६	५	४८	१८	५१	१२	२७	24	मे. १४।०	०	९	५७	४२	२८	२९	२८	१९	२१	पंचक १४।० तक, पितृकार्याऽमावस्या
४	श	३०	७	४९	८	५५	अ	१७	२२	१२	४४	प्री	२५	३९	१६	३	ना	७	४९	८	५५	३२	४०	५	४७	१८	५१	१३	२८	25	मेष	०	१०	५६	१०	२६	-	-	२०	२९	देवकार्याऽमावस्या, श्री शुकदेव ज., मेला पिंजौर (हरि.), F

F शनैश्चरी अमावस्या, अगस्त्यास्तं २९।३५ ❖ वैशाख बिहु (असम), डॉ. अम्बेडकर ज., गुरु तेगबहादुर ज. (प्रा. मत से)

वैशाख कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	८	११	०	९	११	४	९	३	११	१०	८
३	२६	१	१९	२७	५	२१	११	११	०	२	९
७	५७	४०	५४	५३	१३	४०	२१	२१	३२	०	१६
३८	३५	५९	५८	५०	१७	५९	१६	१६	०	३८	१२
५८	७१०	४६	९९	९	०	२	३	३	३	०	०
४०	३१	३८	२२	३१	४४	५४	११	११	००	१८	२३
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि. १	उ.षा. १	पू.भा. ४	भरणी २	धनि. २	उ.भा. १	पू.फा. ३	श्रवण १	पुष्य ३	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

२ | म. १२ शु. ह. | ने. ११ | ३ | १ सू. बु. | १० गु. रा. | ४ के. | ७ | ५ श. | प्लू. ९ चं. | ६ | ८

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार से प्रारंभ हो रहा है। मांगलिक कार्यों में अधिकता रहेगी। सामाजिक संस्थानों का वर्चस्व बढ़ेगा। इस पक्ष में वैशाख कृष्ण ४ सोमवार को मेष संक्रांति प्रवेश भा.स्टै.टा. २४।०७ घं.मि. से। वारात् ३, नक्षत्रात् ४, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा। नक्षत्र नाम राक्षसी सुखदा, मध्य रात्रि व्यापिनी। राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमन। ईशान में दृष्टि। कौलव करणे प्रवेश योग से महंगाई का योग बनेगा। सिंह वाहन, वृषभ उपवाहन कष्टदायी योग, ऊभी १५ मुहूर्ती होने से विश्व में अराजकता को बढ़ावा मिलेगा। राजतंत्र में अशांति का वातावरण भी बनेगा। व्यक्तिवाद भावना का उदय ज्यादा होगा। पश्चिमोत्तर प्रांतों में अचानक भय का वातावरण एवं कृषक वर्ग को विशेष हानि का योग बनता है। शनि ग्रह की वक्री चाल से विस्फोट जन्य घटना तथा संगठनों का उपद्रव बढ़ेगा। मीने शुक्र भौम युक्ति महंगाई का योग। तैल, साबुन, पाऊडर सभी भाव आकाशे भोग॥ द्वादशी तिथौ वृद्धि शुभ संयोग फल पाय। सुभिक्ष के लक्षण बने वर्षा जन हरसाय॥ इस पक्ष में राजनैतिक हलचलों के प्रभाव से जनता चिन्तित रहेगी। व्यापार–मशीनरी व अनाजों के भावों में जैसे–मक्का, गेहूं, बाजरा, तिलहन, मूंगफली, सूत, कपास, तांबा, टीवी आदि में तेजी का योग। जाही पखवारे तिथि बढ़ै अरु नहीं घटे पक्ष माहि। तो सुख सुविधा मिले हानि होवे नाहि॥ वक्री चलते हुए शनि जब मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय॥ इस माह में यह योग बनता है। शकुन–बैशाखी पड़वा प्रथम दिन बादल निकसे भानु। संवत उत्तम होवहि यही जानो पहिचान॥ आदे चौदस वदी या सुदी बैशाख मास माय। चाले दक्षिण वायु तो उत्तम खेती भाय॥ आकाश लक्षण–इस माह के कृष्ण पक्ष में ता. १०, १३, १४ अप्रैल को हल्की वर्षा का योग बनता है। दिनांक २०, २३ [illegible]

ता. २५ अप्रैल ❖ वैशाख कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

२ बु. | म. १२ शु. ह. | ११ ने. | ३ | १ सू. चं. | १० रा. गु. | ४ के. | ७ | ५ श. | ९ प्लू. | ६ | ८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	११	१	९	११	४	९	३	११	१०	८
१०	९	७	१	२९	६	२१	१०	१०	०	२	९
५६	३	५३	६	६	११	२०	५५	५५	५५	१०	१२
१०	३५	१९	३६	३७	२	१२	५१	५१	१९	१७	१२
५८	८५५	४६	६२	९	१६	२	३	३	२	१	०
२६	५४	२५	२६	३२	४५	११	११	११	४८	५	३८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि. ४	अश्वि. ३	उ.भा. २	कृत्ति. २	धनि. २	उ.भा. १	पू.फा. ३	श्रवण १	पुष्य ३	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

वैशाख शुक्ल पक्ष-3

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता.२६ अप्रैल से ९ मई सन् २००९ ई.,राष्ट्रीय मिति ५ से १८ वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
५	र	१	१	५६	६	३३	भ	१३	१४	११	४	आ	१७	५४	१२	५६	ब	१	५६	६	३३	३२	४४	५	४६	१८	५२	१४	२९	26	वृ. १६।३७	०	११	५४	३६	५८ २५	६	११	२०	२९	चन्द्रदर्शनम् मु. ३०, साम्यावं:, देवदामोदर पुण्यं, गुरु अंगद देव जी ज. A
०	र	२	५५	२१	२७	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथि क्षयः A (प्रा. मत से), श्री शिवाजी ज.
६	चं	३	४८	३१	२५	१०	कृ	८	३२	९	१०	सौ	९	४२	९	३८	तै	२१	५८	१४	३३	३२	४८	५	४५	१८	५३	१५	जउ अ१	27	वृष	०	१२	५३	१	२२	७	२	२१	३७	जमादि-उल-अव्वल मु. मा. ५ प्रा., भरण्यां सूर्यः १६।३६, अक्षय ३, B
७	मं	४	४१	४२	२२	२५	रो	३ ५८	३८ ४८	७ २९	२२ २६	शो	१ ५७	२० १	६ २६	१७ ५७	व	१५	६	११	४७	३२	५१	५	४५	१८	५३	१६	२	28	मि. १८।२३	०	१३	५१	२३	२०	८	१	२२	४२	भ. ११।४७ से २२।२५ तक, विनायक ४ व्रत
८	बु	५	३५	१२	१९	४८	आ	५४	२३	२७	२९	सु	४५	२	२३	४५	ब	८	२५	९	६	३२	५५	५	४४	१८	५४	१७	३	29	मिथुन	०	१४	४९	४३	१८	९	६	२३	३९	आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ज., श्री सूरदास ज., C
९	गु	६	२९	१२	१७	२४	पुन	५०	३२	२५	५६	धृ	३७	३०	२०	४३	कौ	२	९	६	३४	३२	५९	५	४३	१८	५४	१८	४	30	क. २०।१८	०	१५	४८	१	१६	१०	१४	२४	३०	श्री रामानुजाचार्य ज., चन्दन षष्ठी (बिहार)
१०	शु	७	२३	५१	१५	१५	पु	४७	२३	२४	३९	शू	३०	३१	१७	५४	व	२३	५१	१५	१५	३३	२	५	४२	१८	५५	१९	५	M1	कर्क	०	१६	४६	१७	१४	११	२२	२५	१३	भ. १५।१५ से २६।१९ तक, मई मा. ५ ता. ३१ प्रा., धनि. ३ कुंभे गुरुः D
११	श	८	१९	१५	१३	२३	श्ले	४४	५८	२३	४१	गं	२८	८	१५	२०	ब	१९	१५	१३	२३	३३	६	५	४१	१८	५६	२०	६	2	सिं. २३।४१	०	१७	४४	३१	१२	१२	२८	२५	५०	श्री दुर्गाष्टमी, माँ बगलामुखी ज. C श्री रामानुजाचार्य ज. (द. भा.)
१२	र	९	१५	२३	११	५०	म	४३	२०	२३	०	वृ	१८	२३	१३	१	कौ	१५	२३	११	५०	३३	१०	५	४०	१८	५६	२१	७	3	सिंह	०	१८	४२	४३	१०	१३	३१	२६	२४	श्री सीता नवमी, श्री जानकी जयंती
१३	चं	१०	१२	१९	१०	३५	पूफा	४२	२७	२२	३८	ध्रु	१३	१५	१०	५७	ग	१२	१९	१०	३५	३३	१३	५	३९	१८	५७	२२	८	4	कं. २८।३६	०	१९	४०	५३	८	१४	३२	२६	५७	भ. २२।७ से, श्री महावीर स्वामी कैवल्य ज्ञान दि. (जैन)
१४	मं	११	१०	१	९	३९	उफा	४२	२३	२२	३६	व्या	८	४५	९	९	वि	१०	१	९	३९	३३	१७	५	३९	१८	५७	२३	९	5	कन्या	०	२०	३९	१	६	१५	३१	२७	२८	भ. ९।३९ तक, मोहिनी ११ व्रत (सबका), श्री हितहरिवंश महाप्रभु ज.
१५	बु	१२	८	३३	९	३	ह	४३	९	२२	५४	ह	४	५५	७	३६	बा	८	३३	९	३	३३	२०	५	३८	१८	५८	२४	१०	6	कन्या	०	२१	३७	७	४	१६	३०	२८	१	रेवत्यां भौमः १४।५२, प्रदोष व्रत, रुक्मणी द्वादशी
१६	गु	१३	७	५९	८	४९	चि	४४	५१	२३	३४	व	१ ५९	४८ २५	६ २९	२० २३	तै	७	५९	८	४९	३३	२३	५	३७	१८	५९	२५	११	7	तु. ११।११	०	२२	३५	११	३	१७	२९	२८	३६	पश्चिमास्तं बुधः २१।४५, वक्री बुधः ६।४६, अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा., E
१७	शु	१४	८	२४	८	५८	स्वा	४७	३५	२४	३९	व्य	५७	५५	२८	४७	व	८	२४	८	५८	३३	२७	५	३६	१८	५९	२६	१२	8	तुला	०	२३	३३	१४	०	१८	२८	२९	१४	भ. ८।५८ से, २१।१६ तक, व्यतिपात पुण्यं, माँ छिन्नमस्ता ज., गुरु F
१८	श	१५	९	५५	९	३४	वि	५१	२७	२६	११	वरि	५७	२१	२८	३२	ब	९	५५	९	३४	३३	३०	५	३६	१९	०	२७	१३	9	वृ. १९।४५	०	२४	३१	१४	०	१९	२७	-	-	पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पूजन, यमाय जलकुम्भ दान, G — G अशोक त्रिरात्री व्रत व वैशाख स्नान पूर्ण

B श्री परशुराम ज., श्री बांके बिहारी जी के चरण दर्शन (वृन्दावन), त्रेतायुगादि ३ , कल्पादि ३, मातंगी ज. D १८।४३, श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति दिवस), गंगा पूजनम्, विश्व मजदूर दि.

E श्री नृसिंह चतुर्दशी, श्री रविन्द्रनाथ टैगोर ज. F अमरदास ज. (प्रा. मत से), सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, श्री कूर्म ज.

वैशाख शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	११	१	१०	११	४	९	३	११	१०	८
१७	१९	१३	६	०	८	२१	१०	१०	१	२	९
४४	२९	१७	३३	३	४६	६	३३	३३	१४	१७	७
३१	१५	३२	१२	२८	१०	५७	३५	३५	१५	११	१२
५८	८३१	४६	२५	७	२८	१	३	३	२	०	०
१२	२६	११	०९	३४	४७	३०	११	११	३५	५१	४९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
२	१	३	३	३	२	३	१	३	४	३	३
भरणी	[illegible]	उ.भा.	कृत्ति.	धनि.	उ.भा.	पू.फा.	श्रवण	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

३ · २ बु. · मं.शु.ह. १२ · ११ने. गु. · १ मं. · १०रा. · ४ चं.के. · ७ · ९ प्लू. · श.५ · ६ · ८

[पक्ष फलम्]
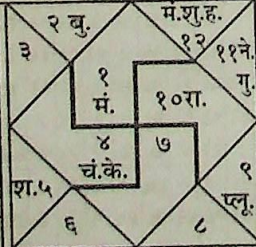
इस पक्ष में द्वितीया क्षय होना राजनैतिक संकट होने का आसार बनता है। चन्द्रदर्शन (मु.३०) के योग तथा किसी विश्व विख्यात नेता का देहावसान बनेगा। इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा में वृद्धि होगी। यथा-प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे। पांच शनिवार होने से महंगाई का योग बनेगा। विश्व व्यापार संगठनों का वर्चस्व बढ़ेगा। कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी शुक्रवार होने से पृथ्वी पर उत्तम अन्न पैदा होने का योग बनता है। बैशाखी शनिचरी अमावस्या अश्विनी होना उछाला एवं गिरावट दोनों स्थिति बनी रहेगी। शुक्ला तृतीया को कृतिका के कारण वर्ष का फल मध्यम बनेगा। शुक्ला पंचमी बुधवार होने से पवन अधिक चलेगी। शुक्ला अष्टमी शनिवार होने से जल-शोष, प्रजा पीड़ित और राजनीति में हलचल, अविश्वास प्रस्ताव जैसा वातावरण बनेगा। बैशाख शुक्ला नौमी होने से पृथ्वी पर कष्ट योग बनेगा। शुक्ला को चतुर्दशी शुक्रवार होने से पृथ्वी पर अन्नोत्पत्ति उत्तम होगी। पूर्णिमा को शनिवार होना दुर्भिक्ष योग भी बनता है। अशांति का वातावरण पूर्वी देशों में विशेष बनेगा। वायु विशेष से विन्ता जनक वातावरण बनेगा। पक्ष में तिथौ क्षय। प्रजा में हो भय॥ शुक्र ग्रह की सौम्यता। वस्तुओं की महंगता॥ व्यापार-रसकस, शक्कर, दवा, कपड़ा, आभूषण, सर्राफा, बर्फ, पशुचारा, शृंगार प्रसाधन महंगा होगा। कोयला, रसोई की सामग्री, किराना में तेजी बनेगी। चांदी-सोना में मंदी का झटका होगा। अगरबत्ती, चना, ग्वार, चमड़ा में तेजी का योग विशेष बनता है। शकुन-सुदी पाचै बैशाख में जब हो सूरज अस्त। पुरवा पवन चलै करो धान्य संग्रह समस्त॥ बैशाख सुदी एक में, घटा टोप होई मेंह। धान्य इकट्ठा करो सपना होसी तेंह॥ आकाश लक्षण-यत्र-तत्र हल्की वर्षा का योग बनेगा। गाज, आंधी, तूफान के साथ समुद्री तूफान भी। अग्निदाह का उत्तर भारत में त्राहि-त्राहि का योग भी बनता है।

ता. ९ मई ❖ वैशाख शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

३ · २ बु. · मं.शु.ह. १२ · ११ गु.ने. · १ सू. · १० रा. · ४ के. · ७ चं. · ९ प्लू. · ५ श. · ६ · ८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	११	१	१०	११	४	९	३	११	१०	८
२४	२२	१८	७	०	१२	२०	१०	१०	१	२	९
३१	३३	४०	३७	५३	३७	५८	११	११	३१	२२	०
१४	१३	२	३	२२	४	३६	२०	२०	३७	३३	५५
५८	७४१	४५	११	६	३८	०	३	३	२	०	०
००	४६	५५	०९	३२	०७	४८	११	११	२१	३८	५९
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
४	१	१	४	३	३	३	१	३	४	३	३
भरणी	विशा.	रेवती	कृत्ति.	धनि.	उ.भा.	पू.फा.	श्रवण	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १० से २४ मई सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति १९ वैशाख से २ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१९	र	१	१२	३७	१०	३८	अनु	५६	२९	२८	११	प	५७	४२	२८	४०	कौ	१२	३७	१०	३८	३३	३३	५	३५	१९	०	२८	१४	10	वृश्चिक	०	२५	२९	१४	५७/५७	२०	२५	५	५७
२०	चं	२	१६	३१	१२	११	ज्ये	६०	०	-	-	शि	५८	५८	२९	१०	ग	१६	३१	१२	११	३३	३६	५	३४	१९	१	२९	१५	11	वृश्चिक	०	२६	२७	११	५६	२१	१९	६	४४
२१	मं	३	२१	३४	१४	११	ज्ये	२	४१	६	३८	सिद्ध	६०	०	-	-	वि	२१	३४	१४	११	३३	४०	५	३४	१९	२	३०	१६	12	ध. ६।३८	०	२७	२५	७	५५	२२	९	७	३५
२२	बु	४	२७	३०	१६	३३	मू	९	४८	९	२८	सिद्ध	१	१	५	५८	बा	२७	३०	१६	३३	३३	४३	५	३३	१९	२	३१	१७	13	धनु	०	२८	२३	२	५३	२२	५४	८	२८
२३	गु	५	३३	५७	१९	७	पूषा	१७	३१	१२	३३	सा	३	३४	६	५८	कौ	०	४२	५	४९	३३	४६	५	३३	१९	३	ज्ये १	१८	14	म. १९।२०	०	२९	२०	५५	५२	२३	३४	९	२३
२४	शु	६	४०	२३	२१	४१	उषा	२५	२१	१५	४०	शुभ	६	१८	८	३	ग	७	१३	८	२५	३३	४९	५	३२	१९	३	२	१९	15	मकर	१	०	१८	४७	५१	२४	९	१०	१८
२५	श	७	४६	१०	२३	५९	श्र	३२	४२	१८	३६	शु	८	४९	९	२	वि	१३	२४	१०	५३	३३	५२	५	३१	१९	४	३	२०	16	मकर	१	१	१६	३८	५०	२४	४१	११	१३
२६	र	८	५०	४३	२५	४८	ध	३९	०	२१	७	ब्र	१०	३७	९	४६	बा	१८	३९	१२	५८	३३	५४	५	३१	१९	५	४	२१	17	कुं. ७।५६	१	२	१४	२८	४८	२५	१२	१२	७
२७	चं	९	५३	३४	२६	५६	श	४३	४३	२३	०	ऐं	११	२०	१०	२	तै	२२	२४	१४	२८	३३	५७	५	३०	१९	५	५	२२	18	कुम्भ	१	३	१२	१६	४७	२५	४१	१३	१
२८	मं	१०	५४	२४	२७	१५	पूभा	४६	३१	२४	६	वै	१०	३६	९	४५	व	२४	१६	१५	१२	३४	०	५	३०	१९	६	६	२३	19	मी. १७।५४	१	४	१०	३	४६	२६	१२	१३	५७
२९	बु	११	५३	७	२६	४४	उभा	४७	१४	२४	२३	वि	८	२०	८	४९	ब	२४	२	१५	६	३४	३	५	२९	१९	६	७	२४	20	मीन	१	५	७	४९	४५	२६	४४	१४	५४
३०	गु	१२	४९	४९	२५	२४	रे	४५	५८	२३	५२	प्री	४/५८	२१/४६	७/२८	१३/५९	कौ	२१	४३	१४	१०	३४	५	५	२९	१९	७	८	२५	21	मे. २३।५२	१	६	५	३४	४४	२७	२०	१५	५५
३१	शु	१३	४४	४४	२३	२२	अ	४२	५४	२२	३८	सौ	५१	४७	२६	११	ग	१७	२९	१२	२८	३४	८	५	२८	१९	८	९	२६	22	मेष	१	७	३	१८	४३	२८	१	१६	५९
ज्ये १	श	१४	३८	१३	२०	४५	भ	३८	२३	२०	४९	शो	४३	४०	२२	५६	वि	११	३८	१०	७	३४	१०	५	२८	१९	८	१०	२७	23	वृ. २६।१७	१	८	१	१	४१	२८	४९	१८	७
२	र	३०	३०	४०	१७	४३	कृ	३२	४९	१८	३५	अ	३४	४३	१९	२१	चतु	४	३३	७	१७	३४	१३	५	२८	१९	९	११	२८	24	वृष	१	८	५८	४२	४१	-	-	१९	१७

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- 10: ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा. (जैन) — A वाद्य यंत्र दानम्
- 11: भ. २५।११ से, कृतिकायां सूर्यः १०।४९, श्री नारद ज., वीणादि A
- 12: भ. १४।११ तक, उषायां ४ राहु पुष्ये २ केतुः १८।५६, B
- 13: C संक्रांति पुण्यकाल १५।१८ से, रेवत्यां शुक्रः २८।२५
- 14: सौर ज्येष्ठ प्रा., वृषे सूर्यः २१।४२, संक्रांति मु.४५ बैठी, C
- 15: भ. २१।४१ से, B मां आनन्दमयी ज., कृष्ण चतुर्थी व्रतम्
- 16: भ. १०।५३ तक — D श्री दादूदयाल पुण्य दिवस
- 17: पंचक ७।५६ से, मार्गी शनिः १३।५५, कालाष्टमी, D
- 18: E जन्म-तप (जैन)
- 19: भ. १५।१२ से २७।१५ तक — F व्रत प्रा. (अमा. पक्ष)
- 20: सायन मिथुने सूर्यः २७।१०, अपरा एकादशी व्रत (सबका)
- 21: पंचक २३।५२ तक, मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्त नाथ E
- 22: भ. २३।२२ से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत, वट सावित्री F
- 23: भ. १०।७ तक, रा. ज्येष्ठ प्रा., अश्विन्यां मेषे भौमः २७।२७
- 24: देवपितृ कार्या भावुका अमावस्या, श्री शनैश्चर जयंती, G — G वट सावित्री व्रत पूजन

ज्येष्ठ कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	९	११	१	१०	११	४	९	३	११	१०	८
२	२८	२४	४	१	१८	२०	९	९	१	२	८
१४	४६	४६	२५	४१	११	५५	४५	४५	४९	२६	५२
२८	४७	२०	४१	१४	२९	१२	५३	५३	२१	४६	२२
५७	७३०	४५	३४	५	४६	०	३	३	२	०	१
४८	०२	३६	३१	१६	०५	०२	११	११	०३	२३	१०
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
कृत्ति. २	धनि. २	रेवती ३	कृत्ति. ३	धनि. ३	रेवती १	पू.फा. ३	उ.षा. ४	पुष्य २	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

३ | १ मं. | ४ के. | २ सू.बु. | ११ गु.ने. | शु.ह. १२ | ५ श. | ८ | ६ | १० चं.रा. | ७ | ९ प्लू.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष रविवार से प्रारंभ होकर रविवार को ही समाप्त हो रहा है। अतः अग्निकाण्डों का भय यत्र-तत्र बना रहेगा। जेहि पखवारे तीन रविवार आ जाये। तपे गगन कहीं अग्नि भी भड़क जाये। इस माह में ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरुवार को दिनांक १४ मई २००९ को भुवन भास्कर सूर्यदेव वृषभ राशि में प्रवेश भा.स्टै.टा. २१।०२ घं.मि. पर करेंगे। वारात् ४, नक्षत्रात् ४, वारनाम नन्दा, गणकान सुखदा, नक्षत्र नाम नन्दा, गणकान सुखदा, प्रदोष व्यापिनी, पिशाचान हन्ति, दक्षिणे गमन, नैऋत्य दृष्टि। गर करणे प्रविष्ठा मध्यम फलम। हस्ती वाहन, खर उपवाहन, लक्ष्मी कारक रक्त वस्त्र। धनुष्यायुध, लौह पात्रं, दुग्ध भक्षण। गोरोचन लेपनम्, प्रौढ़ावस्था (बैठी) मु.४५, धान्य भावे समर्घा शुभ। इस संक्रांति के प्रभाव से विश्व में कुछ भीषण वातावरण एवं युद्धादि के संकेत बनते हैं। जन-धन की हानि का योग भी बनता है। **बुधास्त पश्चिम दिशा व्यापार जगत हो तेज। कृषक वर्ग दुखी हो भारी गरीब हो निस्तेज॥** विश्व व्यापार संगठन एवं शेयर्स बाजार का तालमेल परस्पर विपरीत चलेगा। अरब, इजराईल, मक्का-मदीना में भगदड़ का विशेष योग बनता है। व्यापार-चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, सीमेन्ट, तृण, सुपारी, नारियल, बादाम, सरसों, जीरा, तिल में तेजी बनेगी। बाजरा, ज्वार, ग्वार, उड़द में तेजी-मंदी चलेगी। पानी का मूल्य भी बढ़ेगा। शेयर्स बाजार में झटका लगेगा। बैंकिंग स्थिति चिन्ताजनक रहेगी। **शकुन-जेठे मासे रवि तपे उष्ण चलत जग वाय। तो जानो घन बहुत परत धरती सकै न माय॥ मावस, पूनम ज्येष्ठ की रंजनी बादल छाय। चौमासा बरसे नहीं ऐसा योग बताय॥ आकाश लक्षण**-आसाम, बंगाल, कर्नाटका, चैन्नई, गंगटोक, सिक्किम, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, पूर्वी भाग में अंधड़, तूफान [illegible] तथा जनता में राजनैतिक उत्तेजना भी भड़केगी।
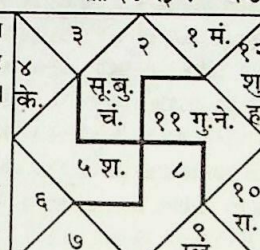
ता. २४ मई ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

३ | २ | १ मं. | १२ शु. ह. | ४ के. | सू.बु. चं. | ११ गु.ने. | ५ श. | ८ | ६ | १० रा. | ७ | ९ प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	०	१	१०	११	४	९	३	११	१०	८
८	१	०	०	२	२३	२०	९	९	२	२	८
५८	५७	४	३५	१४	५०	५७	२३	२३	२	२८	४३
४२	३४	३८	६	३०	१५	४०	३८	३८	४९	४४	४८
५७	८८६	४५	२५	४	५१	०	३	३	१	०	१
४१	१७	१७	४१	०३	१३	४६	११	११	४६	१०	१८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
कृत्ति. ४	कृत्ति. २	अश्वि. १	कृत्ति. २	धनि. ३	रेवती ३	पू.फा. ३	उ.षा. ४	पुष्य २	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. २५ मई से ७ जून सन् २००९ ई., रा. मिति ३ से १६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.अं.	दिनांक
३	चं	१	२२	२९	१४	२७	रो.	२६	३९	१६	७	सु	२५	१६	१५	३४	ब	२२	२९	१४	२७	३४	१५	५	२७	१९	९	१२	२९	25
४	मं	२	१४	५	११	५	मृ	२०	१७	१३	३४	धृ	१५	४०	११	४३	कौ	१४	५	११	५	३४	१७	५	२७	१९	१०	१३	ज/२	26
५	बु	३	५	५१	७	४७	आ	१४	९	११	६	शू.	६/५७	१३/१२	७/२८	५६/१९	ग	५	५१	७	४७	३४	२०	५	२६	१९	१०	१४	२	27
०	बु	४	५८	८	२८	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0
६	गु	५	५१	१३	२५	५६	पुन	८	३५	८	५२	वृ	४८	५१	२४	५८	ब	२४	३४	१५	१६	३४	२२	५	२६	१९	११	१५	३	28
७	शु	६	४५	२०	२३	३४	पु	३	५३	६	५९	ध्रु	४१	२०	२१	५८	कौ	१८	९	१२	४१	३४	२४	५	२६	१९	११	१६	४	29
८	श	७	४०	३७	२१	४०	श्ले	०/५७	१४/[illegible]	५/२८	३२/३२	व्या	३४	४७	१९	२०	ग	१२	५०	१०	३३	३४	२६	५	२६	१९	१२	१७	५	30
९	र	८	३७	७	२०	१६	पूफा	५६	३४	२८	३	ह	२९	१४	१७	७	वि	८	४३	८	५५	३४	२८	५	२५	१९	१२	१८	६	31
१०	चं	९	३४	५४	१९	२३	उफा	५६	३६	२८	४	व	२४	४३	१५	१८	बा	५	५२	७	४६	३४	२९	५	२५	१९	१३	१९	७	J1
११	मं	१०	३३	५५	१८	५९	ह	५७	५१	२८	३३	सि	२१	११	१३	५३	तै	४	१६	७	७	३४	३१	५	२५	१९	१३	२०	८	2
१२	बु	११	३४	८	१९	४	चि	६०	०	-	-	व्य	१८	३७	१२	५२	व	३	५३	६	५८	३४	३३	५	२५	१९	१४	२१	९	3
१३	गु	१२	३५	२९	१९	३६	चि	०	१५	५	३१	वरि	१६	५८	१२	१२	ब	४	४०	७	१७	३४	३४	५	२५	१९	१४	२२	१०	4
१४	शु	१३	३७	५५	२०	३४	स्वा	३	४४	६	५४	प	१६	११	११	५३	कौ	६	३४	८	२	३४	३६	५	२५	१९	१५	२३	११	5
१५	श	१४	४१	२३	२१	५९	वि	८	१५	८	४३	शि	१६	१३	११	५४	ग	९	३१	९	१३	३४	३७	५	२४	१९	१५	२४	१२	6
१६	र	१५	४५	४९	२३	४४	अनु	१३	४५	१०	५४	सि	१७	२	१२	१३	वि	१३	२९	१०	४८	३४	३९	५	२४	१९	१६	२५	१३	7

दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
25	मि.२६।५०	१	९	५६	२३	५७/३९	५	४६	२०	२५	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घः, मेषे वक्री बुधः १५।७, रोहिण्यां A
26	मिथुन	१	१०	५४	२	३८	६	५०	२१	२८	जमादि उस्सानी मु.मा. ६ प्रा., रम्भा तृतीया व्रतम्
27	क.२७।२४	१	११	५१	४०	३६	८	०	२२	२३	भ. १८।१४ से २८।४२ तक, श्री महाराणा प्रताप ज., मेला हल्दी B
0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथि क्षयः C मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)
28	कर्क	१	१२	४९	१६	३५	९	१०	२३	१०	पूर्वोदयं बुधः २४।८, श्रुति पंचमी (जैन)
29	कर्क	१	१३	४६	५१	३४	१०	१९	२३	५१	वक्री नेपच्यून १५।३३, अरण्य षष्ठी, जामित्र ६, विन्ध्यवासिनी पूजन
30	सिं. ५।३१	१	१४	४४	२५	३२	११	१५	२४	२७	भ. २१।४० से, अश्विन्यां मेषे शुक्रः २९।०५
31	सिंह	१	१५	४१	५७	३१	१२	२७	२५	०	भ. ८।५५ तक, मार्गी बुधः १२।१८, श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती ज., C
J1	कं. १०।००	१	१६	३९	२८	२९	१३	२६	२५	३१	जून मा. ६ ता. ३० प्रा., महेश नवमी (माहेश्वरीणामुत्पत्ति)
2	कन्या	१	१७	३६	५७	२८	१४	२५	२६	३	श्री गंगा दशहरा (गंगावतरण), मेला हरिद्वार, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा D
3	तु. १६।५९	१	१८	३४	२५	२७	१५	२३	२६	३७	भ. ६।५८ से १९।४ तक, व्यतिपात पुण्यं, निर्जला एकादशी व्रत E
4	तुला	१	१९	३१	५२	२६	१६	२१	२७	१३	चंपक द्वादशी E (सबका), मेला बरहे (भटिण्डा)
5	वृ. २६।१३	१	२०	२९	१८	२५	१७	२०	२७	५४	वृषे बुधः १६।६, प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रा. (पूर्णिमा पक्ष), F
6	वृश्चिक	१	२१	२६	४३	२३	१८	१७	२८	३९	भ. २१।५९ से, F विश्व पर्यावरण दिवस
7	वृश्चिक	१	२२	२४	६	२३	१९	१२	-	-	भ. १०।४८ तक, मृगे सूर्यः २८।५३, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं, G

A सूर्यः ७।९, करवीर व्रतं, करिदिनं, दशहरा व्रत प्रा., दशाश्वमेध घाटे गंगा स्नान प्रा. (काशी) B घाटी (राज.), पं. जवाहर लाल नेहरू पुण्य दि., विनायक ४ व्रत, गुरु अर्जुनदेव बलिदान दि. (प्रा. मत से)
D दि., दशहरा व्रत पूर्ण, दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ण (काशी) G मन्वादि १५, ज्येष्ठी पूर्णिमा, संत कबीर ज., वट सावित्री व्रत पूजन, ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण (जैन)

ज्येष्ठ शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३१ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	०	०	१०	०	४	९	३	११	१०	८
१५	१३	५	२८	२	०	२१	१	१	२	२	८
४१	५३	२०	५२	३९	०	५	१	१	१४	२९	३४
५७	८	३२	३४	९	५७	१४	२२	२२	१४	७	२४
५७	८१५	४४	१	२	५६	०	३	३	१	०	१
३१	४१	५४	५८	४७	०६	२९	११	११	२८	५	२४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
२ रोहि.	४ पू.फा.	२ अश्वि.	२ कृति.	३ धनि.	४ अश्वि.	३ पू.फा.	४ उ.षा.	२ पुन.	४ पू.भा.	३ धनि.	३ मूल

कुण्डली (३१ मई): ३; मं.बु.शु. १; १२ हृ.; ११ ने. गु.; २ सू.; ४ के.; ५ चं. श.; ६; ७; ८; ९ प्लू.; १० रा.

[पक्ष फलम्]

इस मास में पांच रविवार आने से अशुभ फल का संकेत ज्यादा बनता है। यथा–एक मासे रवेर्वाराः पचतस्युः शुभा वहाः॥ कृष्ण प्रतिपदा को रविवार होने से पवन अधिक चलेगा। कृष्णा १२ को रेवती होने से राजनैतिक संकट बढ़ेगा। केन्द्रीय सत्ता दल का प्रभाव क्षीण तथा आतंकवाद का बोलवाला अधिक होगा। अमावस्या रविवार कृतिका योग सुखद योग बनने का संकेत बनता है। शुक्ला चतुर्थी का क्षय होना मूंग, घी के भाव तेज होंगे। ज्येष्ठ सुदी तीज को आर्द्रा नक्षत्र होना और वर्षा होवे तो दुर्भिक्ष का संकेत बनता है। पूर्णिमा अनुराधा युक्त होने से दुर्भिक्ष योग बनता है। गुरुवार की संक्रांति का होना पीत वर्ण की वस्तुओं के भाव तेज हों। धान्यादि भावों में घटबढ़ चलेगी। धार्मिक कार्यों का वर्चस्व बढ़ेगा। प्रशासन वर्ग भी जनता से सम्पर्क साधेंगे। विदेशी संबंध बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में नयी तकनीक का प्रभाव बढ़ेगा। अपहरण जैसी घटनाएं उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं नेपाल में घटेंगी। चांदी, अलसी, जीरा के भावों में घटबढ़ योग। आस्ट्रेलिया में कुछ अशांति का वातावरण बनेगा। भीषण गर्मी के प्रकोप से रोग ब्याधि, हैजा का प्रभाव बढ़ेगा। पिशाच योग भी बढ़ेगा। व्यापार–रुई, गुड़, सोना, अफीम, कालीमिर्च, अखरोट, श्रीफल, सुपारी, मजीठ में घटाबढ़ी का योग है। ज्वार, बाजरा, चना, लकड़ी, कोयला, चावल, सूत, सण, कपास के भावों में तेजी योग बनेगा। ज्येष्ठ बदी एकम पड़े, रवि मंगल बुधवार। संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥ शकुन–द्वितीया तृतीया जेठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी, दर्से दुःख दुर्भिक्ष॥ जेठ अमावस पूर्णिमा बादल हो आकाश। भयकारी वायु वहे, तो है वर्षा का नाश॥ आकाश लक्षण–भीषण गर्मी के प्रकोप से जनता में त्राहि–त्राहि योग। महंगी वस्तु सभी मिले, जनता सुखी न भोग॥ हि. प्र., श्रीनगर, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात में कहीं–कहीं प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा। भीषण बीमारी से लोग परेशान रहेंगे।

ता. ७ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (७ जून): ३; १ मं.शु.; १२ हृ.; ४ के.; २ सू.बु.; ११ गु.ने.; ५ श.; ८ चं.; ६; ७; ९ प्लू.; १० रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	०	१	१०	०	४	९	३	११	१०	८
२२	१३	१०	०	२	६	२१	८	८	२	२	८
२४	५५	३३	३९	५४	३६	१७	३९	३९	२३	२७	२४
६	४८	४६	५४	५०	१४	४५	६	६	२९	५३	२२
५७	७२५	४४	३२	१	५८	२	३	३	१	०	१
२३	२१	३२	४६	२९	१०	११	११	११	०८	१८	२९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
४ रोहि.	४ अनु.	४ अश्वि.	२ कृति.	३ धनि.	२ अश्वि.	३ पू.फा.	४ उ.षा.	२ पुन.	४ पू.भा.	३ धनि.	३ मूल

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ८ से २२ जून सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३१ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने-दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.अं.	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट (५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१७	चं	१	५१	८	२५	५१	ज्ये	२०	९	१३	२८	सा	१८	३३	१२	५०	बा	१८	२३	१२	४५	३४	४०	५	२४	१९	१६	२६	१४	8	ध. १३।२८	१	२३	२१	२९	५७/२२	२०	४	५	२९	गुरु हरगोविंद सिंह जयंती (प्रा. मत से)
१८	मं	२	५७	७	२८	१५	मू	२७	१७	१६	१९	शुभ	२०	४१	१३	४१	तै	२४	३	१५	२	३४	४१	५	२४	१९	१७	२७	१५	9	धनु	१	२४	१८	५१	२१	२०	५१	६	२२	B सूर्यः २७।५४, मास शिवरात्री व्रत, दक्षिणायन व वर्षा ऋतु प्रा.
१९	बु	३	६०	०	-	-	पूषा	३४	५८	१९	२३	शु	२३	१५	१४	४२	व	३०	१८	१७	३१	३४	४२	५	२४	१९	१७	२८	१६	10	म. २६।११	१	२५	१६	१२	२१	२१	३२	७	१६	भ. १७।३१ से, भरण्यां भौमः २३।१५
२०	गु	३	३	३२	६	४९	उषा	४२	५१	२२	३३	ब्र	२६	२	१५	४९	वि	३	३२	६	४९	३४	४३	५	२४	१९	१७	२९	१७	11	मकर	१	२६	१३	३३	२०	२२	९	८	११	भ. ६।४९ तक, तृतीया तिथि वृद्धिः, कृष्ण चतुर्थी व्रत
२१	शु	४	९	५९	९	२४	श्र	५०	३०	२५	३६	ऐं	२८	४४	१६	५४	बा	९	५९	९	२४	३४	४४	५	२४	१९	१८	३०	१८	12	मकर	१	२७	१०	५३	१९	२२	४२	९	६	A२८।१९, संक्रांति मु. १५ बैठी, मेला भुन्तर (हि.प्र.)
२२	श	५	१६	०	११	४८	ध	५७	२७	२८	२३	वै	३०	५९	१७	४८	तै	१६	०	११	४८	३४	४५	५	२४	१९	१८	३१	१९	13	कुं. १५।३	१	२८	८	१२	१९	२३	१२	१०	०	पंचक १५।३ से, भरण्यां शुक्रः २५।५
२३	र	६	२१	४	१३	५०	श	६०	०	-	-	वि	३२	२७	१८	२३	व	२१	४	१३	५०	३४	४५	५	२४	१९	१९	आ१	२०	14	कुम्भ	१	२९	५	३१	१९	२३	४२	१०	५३	भ. १३।५० से २६।५४ तक, सौर आषाढ़ प्रा., मिथुने सूर्यः A
२४	चं	७	२४	४५	१५	१८	श	२	१२	६	४१	प्री	३२	४७	१८	३१	ब	२४	४५	१५	१८	३४	४६	५	२५	१९	१९	२	२१	15	मी. २६।०	२	०	२	५०	१८	२४	११	११	४७	संक्रांति पुण्यकाल १०।४३ तक, वक्री गुरुः १९।५१
२५	मं	८	२६	३८	१६	४	पूभा	७	२०	८	२१	आ	३१	४०	१८	५	कौ	२६	३८	१६	४	३४	४७	५	२५	१९	१९	३	२२	16	मीन	२	१	०	५८	१८	२४	४१	१२	४२	कालाष्टमी
२६	बु	९	२६	३०	१६	०	उभा	९	३३	९	१४	सौ	२८	५८	१७	०	ग	२६	३०	१६	०	३४	४७	५	२५	१९	१९	४	२३	17	मीन	२	१	५७	२६	१७	२५	१४	१३	३९	भ. २८।१८ से, रोहिण्यां बुधः २४।२६
२७	गु	१०	२४	१६	१५	७	रे	९	४३	९	१८	शो	२४	३५	१५	१५	वि	२४	१६	१५	७	३४	४७	५	२५	१९	२०	५	२४	18	मे. ९।१८	२	२	५४	४३	१८	२५	५२	१४	४०	भ. १५।७ तक, पंचक ९।१८ तक
२८	शु	११	२०	४	१३	२०	अ	७	५३	८	३४	अ	१८	३६	१२	५१	बा	२०	४	१३	२७	३४	४७	५	२५	१९	२०	६	२५	19	मेष	२	३	५२	१	१७	२६	३६	१५	४५	योगिनी एकादशी व्रत (सबका), गोपद्म व्रतोद्यापन
२९	श	१२	१४	७	११	४	भ	४/५९	१४/६	७/२९	७/४	सु	११	११	९	५३	तै	१४	७	११	४	३४	४८	५	२५	१९	२०	७	२६	20	वृ. १२।३९	२	४	४९	१८	१६	२७	२८	१६	५४	शनि प्रदोष व्रत
३०	र	१३	६	४४	८	७	रो	५२	५०	२६	३४	धृ	२/५३	३३/२	६/२६	२७/२८	व	६	४४	८	७	३४	४८	५	२५	१९	२०	८	२७	21	वृष	२	५	४६	३४	१७	२९	२९	१८	३	भ. ८।७ से १८।२६ तक, सायन कर्के सूर्यः ११।७, आर्द्रायां B
०	र	१४	५८	१८	२८	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः
३१	चं	३०	४९	१४	२५	७	मृ	४५	५४	२३	४७	गं	४२	५७	२२	३६	चतु	२३	४९	१४	५७	३४	४८	५	२६	१९	२१	९	२८	22	मि. १३।१२	२	६	४३	५१	१६	-	-	१९	९	देवपितृकार्या-सोमवत्याऽमावस्या

आषाढ़ कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
[illegible]	११	०	१	१०	०	४	९	३	११	१०	८
[illegible]	१	१७	७	३	१५	२१	८	८	२	२	८
[illegible]	५०	१२	५७	१	३२	४०	१०	१०	३२	२४	१०
[illegible]	८	३१	१८	२५	४०	४९	२९	२९	४	४	४९
[illegible]	७६८	४४	१२७	०	६१	२	३	३	०	०	१
[illegible]	१३	०१	१४	१३	१४	०२	११	११	४३	३५	३२
[illegible]	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
[illegible]	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	४ [illegible]	२ भरणी	३ अश्वि.	३ धनि.	१ भरणी	३ पू.फा.	४ उ.षा.	१ पुष्य	४ पू.भा.	३ धनि.	३ मूल

४ के. | २ बु. | ५ श. | ३ सू. | १२ चं. ह. | १ मं. शु. | ६ | ९ प्लू. | ७ | ११ गु. ने. | ८ | १० रा.

[पक्ष फलम्]

इस पक्ष का शुभारंभ सोमवार से तथा सोमवती अमावस्या के योग से पुण्य दान के कारण धार्मिक आयोजन ज्यादा होंगे। तीर्थों का महत्व ज्यादा बढ़ेगा। कुरुक्षेत्र में दान पुण्य में घोटाला या धोखा जैसा वातावरण बनेगा। इस पक्ष में आषाढ़ बदी ६ रविवार को भगवान सूर्यदेव मिथुन राशि में प्रवेश भा.स्टै.टा. २७।४३ घं.मि. से करेंगे। वारात् ४, नक्षत्रात् ४, वारनाम घोरा, शूद्रान सुखदा, नक्षत्र नाम महोदरी, चोरान सुखदा, प्रभात रात्रि ४ प्रहर व्यापिनी। गोरक्षकान हन्ति, पश्चिमे गमनं, वायव्यां दृष्टि, बव करणे प्रविष्टा, मध्यम फल। सिंह वाहन, गज उपवाहन, भीति कारक, श्वेत वस्त्रं, भुशुण्डयायुधं, स्वर्ण पात्रं, अन्न भक्षणम्, कस्तूरी लेपनं, दैवत जातिः पुन्नाग पुष्प, बालावस्था बैठी १५ मुहूर्त्ती। शुक्रोदय पूर्वस्याम्। शुभ योग में पुण्य काल १८।०७ घं.मि. तक। इस पक्ष में अफ्रीका, चीन, जापान, इजराईल, पाक, बंगलादेश में सैनिक हलचल का वातावरण अशांत बनेगा। साम्प्रदायिक दंगे उड़ीसा में होने
...ंकेत बनता है। सोम बदी प्रतिपदा सुखद योग का भाव। सोमवती अमावस्या पुण्य धर्म का दाव॥ अतः शांति भी स्वतः ही बनेगी। व्यापार–तेल, सरसों, गेहूं, घी, किराना, सोना, चांदी, तांबा, विद्युत सामग्री में विशेष
...का योग बनता है। वाहन, मशीनरी के भाव मंदे होंगे। लाख, बादाम, अलसी, पतासा, शक्कर, घी, गुड़ के भावों में तेजी का योग बनेगा। बारदाना के भावों में भी वृद्धि होगी। शकुन–पड़वा दोयज तीज तक प्रथम पक्ष आषाढ़।
...धनिष्ठा होय तो अन्न संग्रहो गाढ़॥ तेरस दिन जो रोहिणी एक घड़ी जो होय। घणी अंधेरी चाल है वर्षा भी नहीं जोय॥ चाय कहवा जौ चना भाव आकाश छाय। कहे भड्डरी व्यापारी खुशी से सभी हर्षाय॥ आकाश लक्षण–
...म, बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, नैनीताल, गढ़वाल, नेपाल, आस्ट्रेलिया, [illegible]

ता. २२ जून ❖ आषाढ़ कृ. ३० सोम प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

४ के. | २ चं.बु. | ५ श. | ३ सू. | १२ ह. | १ मं. शु. | ६ | ९ प्लू. | ७ | ११ गु.ने. | ८ | १० रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	१	०	१	१०	०	४	९	३	११	१०	८
६	२५	२१	१५	२	२१	२२	७	७	२	२	८
४३	१०	३५	३१	५७	४४	०	५१	५१	३५	२०	१
५१	२१	४०	५६	९	१२	२१	२४	२४	३८	९	३४
५७	१०६	४३	८७	१	६२	३	३	३	०	०	१
१६	००	३८	२७	२३	४९	३४	११	११	२६	४५	३३
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
२ आर्द्रा	२ मृग.	३ भरणी	२ रोहि.	३ धनि.	३ भरणी	३ पू.फा.	४ उ.षा.	२ पुष्य	४ पू.भा.	३ धनि.	३ मूल

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. २३ जून से ७ जुलाई सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १५ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.मु.अं.		दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	द. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
आषा	मं	१	३९	५७	२१	२५	आ	३८	४१	२०	५४	वृ	३२	३७	१८	२८	किं	१४	३६	११	१६	३४	४७	५	२६	१९	२१	१०	२९	23	मिथुन	२	७	४१	७	५७/२६	५	३७	२०	९	चन्द्रदर्शनम् मु. १५ महर्घता, रा. आषाढ़ प्रा.
२	बु	२	३०	५१	१७	४६	पुन	३१	४०	१८	६	ध्रु	२२	२३	१४	२३	बा	५	२१	७	३४	३४	४७	५	२६	१९	२१	११	२	24	क. १२।४७	२	८	३८	२३	१५	६	४९	२१	१	रज्जब मु.मा. ७ प्रा., श्री जगदीश रथयात्रा (जगन्नाथपुरी), मनोरथ A
३	गु	३	२२	१९	१४	२२	पु	२५	१४	१५	३२	व्या	१२	३६	१०	२९	ग	२२	१९	१४	२२	३४	४७	५	२६	१९	२१	१२	२	25	कर्क	२	९	३५	३८	१५	८	२	२१	४६	भ. २४।५० से, A द्वितीया (बंगाल), उर्स मेला प्रा. (अजमेर)
४	शु	४	१४	४१	११	१९	श्ले	१९	४४	१३	२०	ह	३	३१ २५	६ २७	५१ ३७	वि	१४	४१	११	१९	३४	४६	५	२७	१९	२१	१३	३	26	सिं. १३।२०	२	१०	३२	५३	१४	९	११	२२	२५	भ. ११।१९ तक, मृगे बुधः २९।१२, कृतिकायां शुक्रः २१।४५, B
५	श	५	८	१७	८	४६	म	१५	२९	११	३८	सिद्ध	४८	२८	२४	५०	बा	८	१७	८	४६	३४	४६	५	२७	१९	२१	१४	४	27	सिंह	२	११	३०	७	१४	१०	१७	२३	०	कुमार षष्ठी व्रत B विनायक ४ व्रत
६	र	६	३	१९	६	४७	पूफा	१२	४१	१०	३२	व्य	४२	४७	२२	३४	तै	३	१९	६	४७	३४	४५	५	२७	१९	२१	१५	५	28	कं. १६।२१	२	१२	२७	२१	१३	११	१९	२३	३३	भ. २९।२६ से, व्यतिपात पुण्यं, विवस्वत् सप्तमी, सूर्य पूजनम्
०	र	७	५९	५७	२९	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथि क्षयः D शरीफ भवानी (कश्मीर)
७	चं	८	५८	२५	२८	४५	उफा	११	३१	१०	४	वरि	३८	२६	२०	५०	वि	२८	५३	१७	१	३४	४५	५	२८	१९	२१	१६	६	29	कन्या	२	१३	२४	३४	१३	१२	१९	२४	५	भ. १७।१ तक, वृषे शुक्रः २४।४०, कृतिकायां भौमः ५।४०, C
८	मं	९	५८	११	२८	४४	ह	११	५९	१०	१५	परि	३५	२६	१९	३८	बा	२८	०	१६	४०	३४	४४	५	२८	१९	२१	१७	७	30	तु. २२।३६	२	१४	२१	४७	१२	१३	१८	२४	३९	मिथुने बुधः २२।४१, भड्डुली नवमी, शूद्रादि ९, कन्दर्प ९, मेला D
९	बु	१०	५९	४०	२९	२०	चि	१४	३	११	६	शि	३३	४१	१८	५७	तै	२८	४४	१६	५८	३४	४३	५	२८	१९	२१	१८	८	Jul1	तुला	२	१५	१८	५९	१२	१४	१७	२५	१४	जुलाई मा. ७ ता. ३१ प्रा., पूर्वास्तं बुधः १२।४१, वक्री हर्षल E
१०	गु	११	६०	०	-	-	स्वा	१७	३६	१२	३१	सि	३३	५	१८	४३	व	३०	५६	१७	५१	३४	४२	५	२९	१९	२१	१९	९	2	तुला	२	१६	१६	११	११	१५	१५	२५	५३	भ. १७।५१ से, देवशयनी ११ व्रत (स्मार्त), चातुर्मास्य व्रत F
११	शु	११	२	३१	६	३०	वि	२२	२७	१४	२८	सा	३३	२९	१८	५३	वि	२	३१	६	३०	३४	४१	५	२९	१९	२१	२०	१०	3	वृ. ७।५६	२	१७	१३	२२	१२	१६	१२	२६	३७	भ. ६।३० तक, एकादशी तिथि वृद्धिः, वृषे भौमः १९।२२, G
१२	श	१२	६	३४	८	७	अनु	२८	२२	१६	५०	शुभ	३४	४२	१९	२२	बा	६	३४	८	७	३४	४०	५	२९	१९	२१	२१	११	4	वृश्चिक	२	१८	१०	३४	११	१७	८	२७	२४	आर्द्रायां बुधः ८।४५, शनि प्रदोष व्रत F नियमादि प्रा.
१३	र	१३	११	३४	१०	७	ज्ये	३५	७	१९	३३	शु	३६	३५	२०	८	तै	११	३४	१०	७	३४	३९	५	३०	१९	२१	२२	१२	5	ध. १९।३३	२	१९	७	४५	११	१८	०	२८	१६	पुन. सूर्यः २७।२६ ❖ सन्यासीनां चातुर्मासारम्भः, मेला नैमिषारण्य
१४	चं	१४	१७	१७	१२	२५	मू	४२	२९	२२	३०	ब्र	३८	५६	२१	५	व	१७	१७	१२	२५	३४	३७	५	३०	१९	२१	२३	१३	6	धनु	२	२०	४	५६	११	१८	४८	२९	१०	भ. १२।२५ से २५।३९ तक, चौमासी १४ (जैन), सत्यव्रत, H
१५	मं	१५	२३	२७	१४	५४	पूषा	५०	१२	२५	३५	ऐं	४१	३४	२२	८	ब	२३	२७	१४	५४	३४	३६	५	३१	१९	२१	२४	१४	7	धनु	२	२१	२	७	११	१९	३१	-	-	आषाढ़ी पूर्णिमा पुण्यं, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजन, मन्वादि १५,❖

C श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा), अष्टान्हिका पर्व प्रा. (जैन) E २३।३९, आशा १० व्रत, मन्वादि १०, गिरिजा पूजनं, श्री जगदीश पुनर्रथयात्रा (पुरी) G देवशयनी ११ व्रत (वैष्णव), हरिवासरः १४।२८ से २३।३९ तक
H पूर्णिमा व्रत, कोकिला व्रत, वायु परीक्षा, हजरत अली जन्म (मु.), चातुर्मास प्रा. (जैन)

आषाढ़ शु. ८ सोम प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	०	१	१०	०	४	९	३	११	१०	८
१३	७	२६	२६	२	२९	२२	७	७	२	२	७
२४	२६	३९	५०	४३	८	२७	२९	२९	३७	१४	५०
३३	३३	४१	५०	२६	३८	७	८	८	३६	१८	४४
५७	८३७	४३	१२१	२	६४	४	३	३	०	०	१
१३	४८	०९	१२	४२	१९	०९	११	११	०५	५६	३२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
३	४	४	१	३	१	३	४	१	४	३	३

[पक्ष फलम्]
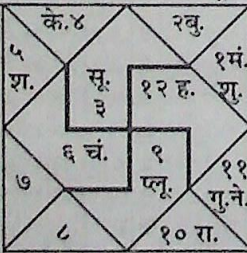
यह पक्ष मंगल प्रतिपदा से प्रारंभ हो रहा है। तथा माह में पांच मंगल तथा पांच सोम का योग बना है। इन योग से अशांति जनक वातावरण विश्व में बढ़ेगा। विस्फोट कार्यों का प्रभाव बढ़ेगा। विश्व शांति वार्ता हेतु सम्मेलन भी हो सकता है। यदा पंचवारा कुज शनिवारा संयोगिता। विघ्न बाधा अग्नि तुल्य जनोपद्रविता॥ क्रूर पाप के मध्य में रवि के भौम अगार। राजनीति सह द्वन्द्व से नैतिक पतन विचार॥ अर्थात् राजनीति में अकल्पित उलट-फेर की स्थिति बनेगी। गृह युद्ध के संकेत बनते हैं। प्रभावी राष्ट्रकुल या पदासीन राष्ट्र नेता के लिए समय इस माह में प्रतिकूल बनता है। जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु महंगी बिके, मंदी योग हट जाय॥ सम सप्तक बहुत ग्रह हो अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति जन विग्रह का रंग॥ अर्थात् प्राकृतिक आपदा पश्चिमोत्तर देशों में बढ़ेगी। भय एवं आतंक से भी जनता भागेगी। विदेशी मेहमानों का आगमन शुभदायक नहीं रहेगा। बड़े देश छोटे देशों को अपना बनाने में यानि धाक जमाने में जुटे रहेंगे। खेल विभाग को विशेष प्रोत्साहन राशि प्राप्त होगी। व्यापार-बुध स्वराशि का होकर तृण, ग्वार, मक्का, मोठ, मूंग, बारदाना में महंगाई करेगा। तेल, तिल, अलसी, गुड़, चीनी, शक्कर के भावों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, शेयर्स बाजार के भाव गिरकर तेजी में आयेंगे। चौपाया जानवर सस्ता होगा। तकनीकी शिक्षा एवं खेल सामग्री के भाव बढ़ेंगे। विश्व व्यापार में भी तेजी आयेगी। शकुन-सातम सुदी हुई निर्मानी, आठम बादल जोय। तो श्रावण में जानियो बरखा बहुत संजोय॥ षाढ़ी पूनम में घटा हो, सुभिक्ष सुख साज। नभ निर्मल तेजी करें संग्रह करो अनाज॥ पून नौमी आषाढ़ सुदी निर्मल निशा मयंक। दुर्भिक्ष निश्चय जानिये दु:खे भूखे रंक॥ आकाश लक्षण-इस पक्ष में अचानक वर्षा, अंधड़, तेज वायु का योग बनेगा। खण्ड वृष्टि का योग बनता है। आसाम, भूटान, सिक्किम में प्राकृतिक आपदा, भू-स्खलन जैसा योग बनता है। उत्तर प्रदेश में तूफान या अंधड़ से अग्निभय भी बनता है। मेघ गर्जना ज्यादा तथा वर्षा न्यून होगी।

ता. ७ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	१	२	१०	१	४	९	३	११	१०	८
२१	१६	२	१२	२	७	२३	७	७	२	२	७
२	४७	२२	३४	१६	४८	२	३	३	३६	६	३८
७	२	५५	३५	४४	२९	३३	४२	४२	५६	४	३४
५७	७०८	४२	१२६	४	६५	४	३	३	०	१	१
११	१४	३५	५०	०८	४८	४६	११	११	१८	०८	२९
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
१	१	१	१	३	४	३	४	१	४	३	३

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ८ से २२ जुलाई सन् २००९ ई., रा. मिति १६ से ३० आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक सौर	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
१६	बु	१	२९	५०	१७	२७	उषा	५७	५९	२८	४३	वै	४४	१८	२३	१४	कौ	२९	५०	१७	२७	३४	३४	५	३१	१९	२१	२५	१५	8	म. ८।२२	२	२१	५९	१८	१७/२१	२०	९	६	६	रोहिण्यां शुक्रः २९।२५ A१६।५९, पूफायां ४ शनिः १९।३४
१७	गु	२	३६	८	१९	५९	श्र	६०	०	-	-	वि	४६	५५	२४	१८	तै	३	०	६	४४	३४	३३	५	३२	१९	२१	२६	१६	9	मकर	२	२२	५६	२९	११	२०	४४	७	१	अशून्य शयन व्रतारंभ (बंगाल)
१८	शु	३	४२	१	२२	२०	श्र	५	३३	७	४६	प्री	४९	११	२५	१२	व	९	८	९	११	३४	३१	५	३२	१९	२१	२७	१७	10	कुं. २१।१२	२	२३	५३	४०	१२	२१	१५	७	५५	भ. ९।११ से २२।२० तक, पंचक २१।१२ से, पुनर्वसोः बुधः A
१९	श	४	४७	९	२४	२४	ध	१२	३६	१०	३५	आ	५०	५१	२५	५३	ब	१४	४१	११	२५	३४	२९	५	३३	१९	२०	२८	१८	11	कुम्भ	२	२४	५०	५२	१२	२१	४५	८	४८	कृष्ण चतुर्थी व्रत, विश्व जनसंख्या दिवस
२०	र	५	५१	१२	२६	२	श	१८	४७	१३	४	सौ	५१	३९	२६	१३	कौ	१९	१९	१३	१७	३४	२८	५	३३	१९	२०	२९	१९	12	कुम्भ	२	२५	४८	४	१२	२२	१३	९	४२	नाग पंचमी (मरुस्थले) B शीतला सप्तमी (उड़ीसा)
२१	चं	६	५३	५१	२७	६	पूभा	२३	४५	१५	३	शो	५१	२२	२६	६	ग	२२	४२	१४	३९	३४	२६	५	३४	१९	२०	३०	२०	13	मी. ८।३७	२	२६	४५	१७	१२	२२	४२	१०	३५	भ. २७।६ से, श्रावण सोमवार व्रत
२२	मं	७	५४	४९	२७	३०	उभा	२७	१२	१६	२७	अ	४९	४७	२५	२९	वि	२४	३३	१५	२३	३४	२४	५	३४	१९	२०	३१	२१	14	मीन	२	२७	४२	२९	१४	२३	१३	११	३१	भ. १५।२३ तक, उषायां ३ राहुः पुष्ये १ केतुः १६।१८, B
२३	बु	८	५३	५९	२७	१०	रे	२८	५६	१७	९	सु	४६	४६	२४	१७	बा	२४	३७	१५	२५	३४	२२	५	३५	१९	१९	३२	२२	15	मे. १७।९	२	२८	३९	४३	१४	२३	४८	१२	२९	पंचक १७।९ तक, कर्के बुधः ८।२७, मन्वादि ८, कालाष्टमी
२४	गु	९	५१	१६	२६	५	अ	२८	५०	१७	७	धृ	४२	१४	२२	२९	तै	२२	५०	१४	४३	३४	२०	५	३५	१९	१९	श्रा१	२३	16	मेष	२	२९	३६	५७	१५	२४	२७	१३	३०	सौर श्रावण प्रा., कर्केऽर्कः १५।१०, संक्रांति मु. ३० बैठी,C
२५	शु	१०	४६	४६	२४	१८	भ	२६	५४	१६	२१	शू	३६	१५	२०	६	व	१९	१३	१३	१७	३४	१७	५	३६	१९	१९	२	२४	17	वृ. २२।३	३	०	३४	१२	१५	२५	१४	१४	३५	भ. १३।१७ से २४।१८ तक, रोहिण्यां भौमः २५।१६
२६	श	११	४०	३९	२१	५२	कृ	२३	१८	१४	५५	गं	२८	५४	१७	१०	ब	१३	५३	११	९	३४	१५	५	३६	१९	१८	३	२५	18	वृष	३	१	३१	२७	१६	२६	९	१५	४२	कामदा एकादशी व्रत (सबका)
२७	र	१२	३३	१२	१८	५३	रो	१८	१५	१२	५५	वृ	२०	२३	१३	४६	कौ	७	४	८	२६	३४	१३	५	३७	१९	१८	४	२६	19	मि. २३।४४	३	२	२८	४३	१७	२७	१३	१६	४८	पुष्ये सूर्यः २७।०, प्रदोष व्रतम्
२८	चं	१३	२४	४३	१५	३१	मृ	१२	४	१०	२७	धु	१०	५७	१०	०	व	२४	४३	१५	३१	३४	१०	५	३७	१९	१७	५	२७	20	मिथुन	३	३	२६	०	१७	२८	२३	१७	५१	भ. १५।३१ से २५।४१ तक, मृगे शुक्रः २८।१५, मास D
२९	मं	१४	१५	३५	११	५२	आ	५/५७	८/५२	७/२८	४२/४६	व्या	०/५०	५२/३०	५/२५	५९/५०	श	१५	३५	११	५२	३४	८	५	३८	१९	१७	६	२८	21	क. २३।३०	३	४	२३	१७	१८	२९	३६	१८	४७	पितृकार्याऽमावस्या
३०	बु	३०	६	११	८	७	पुष्य	५०	३८	२५	५४	वज्र	४०	६	२१	४१	ना	६	११	८	७	३४	५	५	३८	१९	१६	७	२९	22	कर्क	३	५	२०	३६	१८	-	-	१९	३६	सायन सिंहे सूर्यः २२।३, देवकार्या-हरियाली अमावस्या, E

C पुण्यकाल सूर्योदय से, पुष्ये बुधः २२।७, मंगला गौरी पूजन, केर पूजा (त्रिपुरा), गुरु हरकिशन सिंह ज. (प्रा. मत से) D शिवरात्री व्रत, शब-ए-मिराज (मु.), श्रावण सोमवार व्रत E चितलगी ३० (उड़ीसा), मन्वादि ३०, सरस माधुरी ज., लक्ष्मीपोल यात्रा (पुष्कर जी), नक्तव्रत प्रा.

श्रावण कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	१	२	१०	१	४	९	३	११	१०	८
२८	२३	८	२९	१	१६	२३	६	६	२	१	७
३९	३९	१	४४	३९	३९	४२	३८	३८	२३	५६	२६
४३	४५	३५	१५	८	१७	४२	१६	१६	१४	२२	५५
५७	७८१	४२	१२७	५	६७	५	३	३	०	१	१
१४	२३	००	५०	२४	०२	१९	११	११	४०	१८	२५
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
३	३	४	३	३	१	४	३	१	४	३	३
पुन.	रेवती	कृति.	पुन.	धनि.	भरणी	पू.फा.	उ.षा.	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

४ के. | २ मं.शु. | ३ | १ | ५ श. | सू.बु. | १२ चं. ह. | ६ | ९ प्लू. | ११ गु.ने. | ७ | ८ | १० रा.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बुधवार से प्रारंभ हो रहा है। तथा पू.फा. में शनि (४ चरण में) का प्रवेश होना व्यापार जगत में नयी क्रांति जैसा योग बनाता है। **बुध का रेवती योग श्रेष्ठ बने व्यापार। गल्ला तिल रसकस में लाभ कमावे अपार॥** इस पक्ष में भगवान भुवन भास्कर कर्क राशि में श्रावण कृष्ण नवमी गुरुवार को भा.स्टै.टा. १४।४० घं.मि. पर प्रवेश कर रहा है। वारात् ५, नक्षत्रात् ५, वारनाम नन्दा, गणकान सुखदा, नक्षत्र नाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, मध्याह्न दूसरे प्रहर व्यापिनी, द्विजान हन्ति, पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टि। तैतिल करणे प्रविष्टा, नेष्ट फलम्। रासभ वाहन, मेष उपवाहन, सुभिक्ष कारक दण्डायुध, कांस्य पात्रम्, पकवान् भक्षणम्, युवावस्था (सूती) मु. ३०, धान्य भाव सम, उत्तरे राहु, पश्चिमा मूलं भूमौ। शुक्रोदय पूर्वादि दिशायाम्। इस पक्ष में ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण एवं देव कार्य अमावस्या बुधवारी होना शांति व अशांति दोनों की स्थिति बराबर बनती है। पुष्ये रवि नक्षत्रे संचरण अनुसार वर्षा योग से तबाही मचेगी। खण्ड वृष्टि, अति वृष्टि दोनों प्रभाव बनेंगे। पाकिस्तान, अफगानिस्तान व मुस्लिम देशों में विशेष बीमारी का प्रभाव भी बढ़ेगा। सूर्य ग्रहण से प्रोद्योगिकी सामग्री महंगी होगी। व्यापार–घी, तेल, अलसी, गुड़, चीनी, शक्कर में मंदी का योग बनता है। सोना, चांदी, तांबा के भाव सम रहेंगे। पशुचारा, खल, कपास, बारदाना में तेजी बनेगी। जीरा, ग्वार, मूंग, मोठ में तेजी का झटका बनेगा। शेयर्स बाजार में उछाला बनेगा। **शकुन**–श्रावण पहली चौथ में जो मेघा बरसाय। तो भाखे यों भड्डरी फसल सवाई जाय॥ श्रावण में संक्रांति को यदि वर्षा हो जाय। धान्य [illegible] जाय। चार मास वर्षा घणी मंदा धान्य बिकाय॥ **आकाश लक्षण**–ता. ८ से ११ जुलाई तक हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर-पश्चिमी भागों में वर्षा योग बनेगा। चैन्नई, कर्नाटका, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व बिहार में [illegible] योग एवं वर्षा अधिक होने का योग बनता है।

ता. २२ जुलाई ❖ श्रावण कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

५ श. | ३ | सू.चं. | २ मं. शु. | ६ | बु. के. ४ | १ | ७ | १० रा. | १२ ह. | ८ | ९ प्लू. | ११ गु.ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	१	३	१०	१	४	९	३	११	१०	८
५	३	१२	१४	०	२४	२४	६	६	२	१	७
२०	४७	५३	१३	५८	३१	२१	१५	१५	२७	४६	१७
३६	३४	५७	५३	१८	२२	२०	५९	५९	३४	५१	२०
५७	१०८	४१	११८	६	६७	५	३	३	०	१	१
१८	३०	२६	२७	२२	५७	४६	११	११	५९	२६	१९
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
१	१	१	४	३	१	४	३	१	४	३	३
पुष्य	पुष्य	आश्ले.	पुष्य	धनि.	मृग.	पू.फा.	उ.षा.	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

श्रावण शुक्ल पक्ष-९

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. २३ जुलाई से ६ अगस्त सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ३१ आषाढ़ से १४ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	द. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
०	बु	१	५६	५७	२८	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षयः A लो. मा. बाल गंगाधर ति. ज.
३१	गु	२	४८	१३	२४	५६	श्ले	४३	५४	२३	१२	सि	३०	३	१७	४०	बा	२२	२९	१४	३८	३४	३	५	३९	१९	१६	८	३०	23	सिं. २३।१२	३	६	१७	५४	५७/२९	६	४८	२०	१८	चन्द्रदर्शनम् मु. १५ महर्घता, श्लेषायां बुधः ११।९, सिंधारा, A
श्रा१	शु	३	४०	२४	२१	४९	म	३८	४	२०	५३	व्य	२०	३९	१३	५५	तै	१४	१०	११	१९	३४	०	५	३९	१९	१५	९	शा१	24	सिंह	३	७	१५	१३	२०	७	५७	२०	५६	शावान मु.मा. ८ प्रा., रा. श्रावण प्रा., व्यतिपात पुण्यं, मधुश्रवा B
२	श	४	३३	५२	१९	१३	पूफा	३३	२९	१९	४	वरि	१२	१२	१०	३३	व	६	५७	८	२७	३३	५७	५	४०	१९	१५	१०	२	25	कं. २४।४२	३	८	१२	३३	२०	९	३	२१	३१	भ. ८।२७ से १९।१३ तक, विनायक ४ व्रत, वरद चतुर्थी
३	र	५	२८	५४	१७	१४	उफा	३०	३०	१७	५२	प	४/५९	५८/१०	७/२९	४०/२०	ब	१	९	६	८	३३	५५	५	४०	१९	१४	११	३	26	कन्या	३	९	९	५३	२०	१०	७	२२	५	मिथुने शुक्रः २५।१२, नाग ५ (देशाचारे), भित्ती चित्रित नाग पूजन, C
४	चं	६	२५	४४	१५	५८	ह	२९	१७	१७	२४	सि	५४	५१	२७	३८	तै	२५	४४	१५	५८	३३	५२	५	४१	१९	१४	१२	४	27	तु. २९।२७	३	१०	७	१३	२१	११	८	२२	३९	पश्चिमोदयं बुधः २७।१६, वर्ण शृयाल षष्ठी, अश्वत्थ मारुति ६, D
५	मं	७	२४	२९	१५	२९	चि	३०	०	१७	४१	सा	५२	६	२६	३२	व	२४	२९	१५	२९	३३	४९	५	४२	१९	१३	१३	५	28	तुला	३	११	४	३४	२१	१२	९	२३	१४	भ. १५।२९ से २७।३७ तक, शीतला सप्तमी (सिन्ध), गोस्वामी E
६	बु	८	२५	१०	१५	४६	स्वा	३२	३५	१८	४४	शुभ	५०	५०	२६	२	ब	२५	१०	१५	४६	३३	४६	५	४२	१९	१३	१४	६	29	तुला	३	१२	१	५५	२२	१३	८	२३	५३	श्री दुर्गाष्टमी, मेला नयना देवी व चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)
७	गु	९	२७	४०	१६	४७	वि	३६	५४	२०	२८	शु	५०	५४	२६	४	कौ	२७	४०	१६	४७	३३	४३	५	४३	१९	१२	१५	७	30	वृ. १३।५९	३	१२	५९	१७	२२	१४	७	२४	३५	मघायां सिंहे बुधः १५।५५, धनि. २ मकरे वक्री गुरुः १९।४८
८	शु	१०	३१	४१	१८	२४	अनु	४२	४०	२२	४७	ब्र	५२	४	२६	३३	ग	३१	४१	१८	२४	३३	४०	५	४३	१९	११	१६	८	31	वृश्चिक	३	१३	५६	३९	२३	१५	३	२५	२१	श्री कल्की जयंती E तुलसीदास जयन्ती, पार्श्वनाथ मोक्ष (जैन)
९	श	११	३६	५४	२०	२९	ज्ये	४९	३१	२५	३२	ऐं	५४	२	२७	२१	व	४	१०	७	२४	३३	३७	५	४४	१९	११	१७	९	A1	ध. २५।३२	३	१४	५४	२	२३	१५	५६	२६	१२	भ. ७।२४ से २०।२९ तक, अगस्त मा. ८ ता. ३१ प्रा., आर्द्रायां शुक्रः F
१०	र	१२	४२	५४	२२	५४	मू	५७	२	२८	३३	वै	५६	३१	२८	२१	ब	९	४९	९	४०	३३	३४	५	४४	१९	१०	१८	१०	2	धनु	३	१५	५१	२५	२५	१६	४६	२७	५	श्लेषायां सूर्यः २५।४९, पवित्रार्पण द्वादशी, दधि भक्षण व्रतारंभ
११	चं	१३	४९	१६	२५	२७	पूषा	६०	०	-	-	वि	५९	१३	२९	२६	कौ	१६	३	१२	१०	३३	३०	५	४५	१९	९	१९	११	3	धनु	३	१६	४८	५०	२५	१७	३०	२८	०	सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत D श्रावण सोमव्रत
१२	मं	१४	५५	३९	२८	१	पूषा	४	४८	७	४१	प्री	६०	०	-	-	ग	२२	२८	१४	४५	३३	२७	५	४५	१९	८	२०	१२	4	म. १४।२८	३	१७	४६	१५	२५	१८	१०	२८	५५	भ. २८।१ से, हयग्रीव ज. H (ऋग्वेदीनाम्)
१३	बु	१५	६०	०	-	-	उषा	१२	३२	१०	४७	प्री	१	५३	६	३१	वि	२८	४४	१७	१५	३३	२४	५	४६	१९	८	२१	१३	5	मकर	३	१८	४३	४०	२७	१८	४५	-	-	भ. १७।१५ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं, श्री गायत्री ज., G
१४	गु	१५	१	४१	६	२७	श्र	१९	५३	१३	४४	आ	४	१६	७	२९	ब	१	४१	६	२७	३३	२१	५	४७	१९	७	२२	१४	6	कुं. २७।७	३	१९	४१	७	२८	१९	१८	५	५०	पूर्णिमा तिथि वृद्धिः, पंचक २७।७ से, मृगे भौमः ७।३७, उपाकर्म H

B (छोटी) तीज, हरियाली तीज C जीवंतिका पूजन, अमरनाथ यात्रा F २०।४८, पवित्रा एकादशी व्रत (सबका), लो.मा. तिलक पुण्य दि. G अमरनाथ दर्शन (कश्मीर), उपाकर्म (यजुर्वेदीनाम्), रक्षाबन्धन (भद्रोत्तरे)

श्रावण शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	१	३	१०	२	४	९	३	११	१०	८
१२	१३	१७	२७	०	२	२५	५	५	२	१	७
१	०	४२	२७	११	२९	२	५३	५३	१९	३६	८
५५	३	१५	४०	२३	२६	५५	४४	४४	४५	३३	३१
५७	७५६	४०	१०६	७	६८	६	३	३	१	१	१
२२	५३	५०	३६	०६	४४	०९	११	११	१७	३२	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

५ श. | ३ शु. | ६ | २ मं. | ४ बु. सू.के. | १ | ७ चं. | १० रा. | ८ | १२ ह. | ९प्लू. | ११गु.ने.

[पक्ष फलम्]

इस पक्ष में सूर्य ग्रहण का प्रभाव २२ जुलाई वाला प्रभावित रहेगा। फलतः पाकृतिक आपदा योगों में वृद्धि बनेगी। पांच बुधवार होना शुभ दायक योग तथा पांच गुरुवार होना छत्र भंग योग भी बनता है। बुधवारा पंचवाराश्च जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुख मत्यन्तं सुभिक्ष च प्रजायते॥ गुरौर्वारा पंच वाराश्च जायन्ते च निरन्तरम्। राजानां दुःखद मत्यन्तं दुर्भिक्ष युद्धादि हानि प्रजायते॥ कृष्णा प्रतिपदा को धृति योग न होने से धान्यादि भाव मंदे होंगे। कृष्णा एकादशी को कृतिका होने से मध्यम फल हो। कृष्णा १४ को आर्द्रा होने से अन्नादि भावों में तेजी होगी। बुधवारी अमावस्या के योग से दुर्भिक्ष का योग बनता है। पूर्णिमा गुरुवार और श्रवण नक्षत्र युक्त होने से शुभ फल दायिनी होगी। इस पक्ष एवं माह में राजनैतिक चाल में घोटाला घटक का भण्डा फोड़ भी होगा। प्राकृतिक प्रकोप में सूडान, इटली, आसाम, पश्चिमी बंगाल, बिहार, मुम्बई, उड़ीसा तथा आस्ट्रेलिया में अशांति के बादल मण्डरायेंगे। ईरान, ईराक का मामला पुनः भड़कने का योग भी इस पक्ष में बनता है। वर्षा योग से जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। व्यापार-पक्ष में महंगाई का रुख रहेगा। शेयर्स एवं वायदा बाजार तेज रहेगा। गुड़, शक्कर में कुछ मंदी बनेगी। चांदी, सोना, खाण्ड, ज्वार, बाजरा, सरसों आदि में जोरदार उछाला योग है। बारदाना, रुई, सूत, घी में सम भाव बने रहेंगे। घास, तृण, काष्ठ, कोयला महंगे होंगे। शकुन-सावण शुक्ला सप्तमी छिपे कै उगे भान। तब लग देव बरसीस है तब लग देव उठान॥ सावन सुदी दशमी दिना सूर्यास्त पश्चात। यदि बादल दीखे नहीं मत समझो बरसात॥ आकाश लक्षण-चण्डीगढ़, दिल्ली, भोपाल, मथुरा, गया, डिब्रूगढ़, कोलकाता, अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी, जापान में वर्षा की श्रेष्ठता तथा बाढ़ का प्रभाव एवं प्राकृतिक आपदा बनेगी। कुछ स्थानों पर झगड़ा-फसाद साम्प्रदायिक विवाद भी बढ़ेंगे।

ता. ६ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

५बु.श. | ३शु. | ६ | २ मं. | ४ सू.के. | १ | ७ | १०गु. चं.रा. | ८ | १२ ह. | ९प्लू. | ११ ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	१	४	९	२	४	९	३	११	१०	८
१९	१९	२३	१०	२९	११	२५	५	५	२	१	६
४१	१५	६	५३	१२	४२	५३	२८	२८	८	२४	५९
७	२	३०	२४	२६	२०	३३	१३	१३	२४	४	३७
५७	७१६	४०	९३	७	६९	६	३	३	१	१	१
२८	२४	०८	१३	३९	३५	३३	११	११	३५	३६	०१
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१०

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ७ से २० अगस्त सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २८ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१५	शु	१	७	१०	८	३९	ध	२६	३६	१६	२६	सौ	६	१३	८	१७	कौ	७	१०	८	३९
१६	श	२	११	५१	१०	३२	श	३२	३१	१८	४८	शो	७	३४	८	४९	ग	११	५१	१०	३२
१७	र	३	१५	३४	१२	२	पूभा	३७	२५	२०	४६	अ	८	१०	९	४	वि	१५	३४	१२	२
१८	चं	४	१८	८	१३	४	उभा	४१	११	२२	१७	सु	७	५३	८	५८	बा	१८	८	१३	४
१९	मं	५	१९	२७	१३	३६	रे	४३	३९	२३	१७	धृ	६	३९	८	२९	तै	१९	२७	१३	३६
२०	बु	६	१९	२२	१३	३५	अ	४४	४५	२३	४४	शू	४	२०	७	३४	व	१९	२२	१३	३५
२१	गु	७	१७	५१	१२	५९	भ	४४	४३	२३	३६	गं	०/५६	५२/१५	६/२८	११/२०	ब	१७	५१	१२	५९
२२	शु	८	१४	५१	११	४७	कृ	४२	३५	२२	५३	ध्रु	५०	२५	२६	१	कौ	१४	५१	११	४७
२३	श	९	१०	२५	१०	२	रो	३९	२३	२१	३७	व्या	४३	२९	२३	१५	ग	१०	२५	१०	२
२४	र	१०	४	४०	७	४४	मृ	३४	५७	१९	५१	ह	३५	३१	२०	५	वि	४	४०	७	४४
०	र	११	५७	४७	२८	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	चं	१२	४९	५७	२५	५२	आ	२९	२९	१७	४०	व	२६	४३	१६	३४	कौ	२३	५७	१५	२७
२६	मं	१३	४१	३१	२२	३०	पुन	२३	१६	१५	१२	सि	१७	१६	१२	४८	ग	१५	४७	१२	१२
२७	बु	१४	३२	४७	१९	१	पु	१६	३८	१२	३३	व्य	७/५३	२७/३४	८/२८	५२/५५	वि	७	९	८	४५
२८	गु	३०	२४	९	१५	३४	श्ले	९	५८	९	५४	प	४७	५३	२५	३	ना	२४	९	१५	३४

दिनांक अं.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
7	३३	१७	५	४७	१९	६	२३	१५	कुम्भ	३	२०	३८	३५	५७/२९	१९	४८	६	४४
8	३३	१४	५	४९	१९	५	२४	१६	कुम्भ	३	२१	३६	४	३०	२०	१७	७	३८
9	३३	१०	५	४८	१९	४	२५	१७	मी. १४।१९	३	२२	३३	३४	३१	२०	४६	८	३१
10	३३	७	५	४९	१९	४	२६	१८	मीन	३	२३	३१	५	३२	२१	१६	९	२६
11	३३	३	५	४९	१९	३	२७	१९	मे. २३।१७	३	२४	२८	३७	३४	२१	४९	१०	२२
12	३३	०	५	५०	१९	२	२८	२०	मेष	३	२५	२६	११	३५	२२	२६	११	२२
13	३२	५६	५	५०	१९	१	२९	२१	वृ. २१।२८	३	२६	२३	४६	३७	२३	८	१२	२३
14	३२	५२	५	५१	१९	०	३०	२२	वृष	३	२७	२१	२३	३८	२३	५८	१३	२८
15	३२	४९	५	५२	१८	५९	३१	२३	वृष	३	२८	१९	१	४०	२४	५६	१४	३२
16	३२	४५	५	५२	१८	५८	भा१	२४	मि. ८।४७	३	२९	१६	४१	४१	२६	१	१५	३५
0	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
17	३२	४१	५	५३	१८	५७	२	२५	मिथुन	४	०	१४	२२	४३	२७	११	१६	३२
18	३२	३७	५	५३	१८	५६	३	२६	क. ९।५०	४	१	१२	५	४४	२८	२२	१७	२३
19	३२	३४	५	५४	१८	५५	४	२७	कर्क	४	२	९	४९	४६	२९	३३	१८	८
20	३२	३०	५	५४	१८	५४	५	२८	सिं. ९।५४	४	३	७	३५	४७	-	-	१८	४८

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

पूफायां बुधः १९।२६, अशून्य शयन व्रत पूर्ति (बंगाल), शब-ए-बारात A
भ. २३।१७ से, सिंधारा A (मु.), श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर पुण्य दि.
भ. १२।२ तक, कज्जली (बड़ी) तीज, सातूड़ी तीज, कृष्ण चतुर्थी B
B व्रत, संकष्ट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी, भा. क्रांति दिवस
पंचक २३।१७ तक, रक्षा पंचमी (उड़ीसा), चन्द्र ६ व्रत, ऊभी ६, C
भ. १३।३५ से २५।१७ तक, उफायां १ शनिः २८।४५, माधव देव D
पुनर्वसोः शुक्रः ८।२४, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त), मां E
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव), मन्वादि ८, संत ज्ञानेश्वर ज.
भ. २०।५१ से, गोगा ९, नंदोत्सव (गोकुल), भा. स्वतंत्रता दि. ६३वाँ वर्ष
भ. ७।४४ तक, सौर भाद्रपद प्रा., मघायां सिंहे सूर्यः २३।३१, F
एकादशी तिथि क्षयः G व्रत, पर्यूषण पर्वारंभ (जैन)
उफायां बुधः १०।२०, अजा एकादशी व्रत (वैष्णव), वत्स १२
भ. २२।३० से, भौम प्रदोष व्रतम्, कलियुगादि १३, मासशिवरात्री G
भ. ८।४५ तक, व्यतिपात पुण्यं, कन्यायां बुधः २९।२६, अघोरा १४, H
देवपितृकार्याऽमावस्या, कुशोत्पाटिनी ३० (ॐ हुँ फट् स्वाहा ❖
H कैलाश यात्रा

C ललही छठ, हल ६, पुत्रार्थी व्रत D तिथि (असम) E आद्यकाली ज., मेला द्रौण (दनकौर), कालाष्टमी F संक्रांति मु. १५ बैठी, पुण्यकाल १७।७ से, मिथुने भौमः १५।२९, अजा एकादशी व्रत (स्मार्त)
❖ मंत्र से), पिठौरी ३०, मन्वादि ३०, मेला राणी सती (झुंझनू), लोहर्गल स्नान (राज.), मेला सुथरेशाह (दिल्ली)

भाद्रपद कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	१	१	४	९	२	४	९	३	११	१०	८
२७	०	२८	२२	२८	२१	२६	५	५	१	१	६
२१	०	२५	३२	१०	१	४७	२	२	५४	११	५२
२३	५६	०	२	१६	४७	२	५२	५२	४३	७	९
५७	८३०	३९	७९	७	७०	६	३	३	१	१	०
३८	०१	२४	३२	५१	२२	५२	११	११	५१	३८	५०
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
श्ले. ४	कृत्ति. २	मृग. २	पू.फा. ३	धनि. २	पुन. १	उ.फा. १	उ.षा. ३	पुष्य १	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

६	५ बु.श.	४	३ शु.	२ चं. मं.
७	सू.के.	१	१२ ह.	
८	१० रा.गु.	९ प्लू.	११ ने.	

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार से शुरू हो रहा है। पक्ष में एकादशी का क्षय योग भी है। शनि+बुध की युक्ति सिंह राशि में होना रहस्यमय घटनाओं का पर्दाफाश होगा। विश्व में नयी आश्चर्य जनक घटना का उदय होगा। पांच शुक्र होना मुस्लिम देशों में काफी खुशियों का महोत्सव चलेगा। जनता में वृद्धि तथा अपहरण का मामला ज्यादा होगा। इस पक्ष में भगवान भुवन भास्कर सिंह राशि में भादवा बदी १० रविवार को भा.स्टै.टा. २३।९ घं.मि. पर प्रवेश करेगा। वारात् ४, नक्षत्रात् ६, वारनाम घोरा, शूद्रान सुखदा, नक्षत्र नाम राक्षसी, चाण्डालान् सुखदा। मध्यरात्रि दूसरा प्रहर व्यापिनी, राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमन, ऐशान्य दृष्टि, बालव करणे प्रविष्टा। मध्यम फल, व्याघ्र वाहन, अश्व उपवाहन, भीति कारक, पीत वस्त्रम्, गदायुधम्, रौप्य पात्रम्, पायस भक्षणम्, कुंकुम लेपनं, भूत जाति, जाति पुष्पम्, कनक भूषणम्। पर्ण कंचुकी, कुमारिका अवस्था (बैठी) मु.१५, धान्य भाव महंगा। शुक्रोदय पूर्वस्याम्। योगानुसार बाढ़ ग्रस्त स्थानों में जन-धन की हानि का प्रभाव बनेगा। प्राकृतिक उत्पात में मलेशिया, तुर्की, जापान, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान आदि क्षेत्र प्रभावित होंगे। व्यापार-उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर तेज रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी होगी। चांदी में मंदी। सोना में एकदम उछाला। तांबा, पीतल, लोहा के भावों में तेजी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड, जीरा, तारामीरा, सरसों, मूंगफली, तिल, तैलवाना में तेजी का योग बनेगा। शकुन-दोयज भादवा बदी में घटा घोप आकाश। अन्न खरीदो खूब ही तेजी फागुन मास॥ चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षे भादव मास। वर्षा काल समाप्त है रखो न आगे आस॥ [illegible] महंगा होवे सुनलो मेरे भाई॥ आकाश लक्षण-इस माह में नदियां अपनी सीमा के बाहर चलेंगी। कोसी, ब्रह्मपुत्र, गंगा, गोदावरी, माही, यमुना में जलस्तर सीमा से अधिक भय प्राकृतिक आपदा भी बनेगी। पंजाब में भी संकट का योग बनेगा। नया उत्पात भी मचेगा।

ता. २० अगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

७	६ बु.	५ सू. श.	४ चं.के.	३ मं. शु.
८	२			
९ प्लू.	१० गु.रा.	११ ने.	१२ ह.	१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	३	२	५	९	२	४	९	३	११	१०	८
३	२७	२	०	२७	२८	२७	४	४	१	१	६
७	१५	१९	०	२३	५	२८	४३	४३	४३	१	४७
३५	२९	५१	१२	१४	२२	४३	४७	४७	८	१७	३६
५७	८१४	३८	६६	७	७०	७	३	३	२	१	०
४७	३९	४७	२८	४६	५४	०४	११	११	१	३८	४०
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
मघा १	श्ले. ४	मृग. ३	उ.फा. २	धनि. २	पुन. ३	उ.फा. १	उ.षा. ३	पुष्य १	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. २१ अग. से ४ सितं. सन् २००९ ई., रा. मिति २९ श्रावण से १२ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	भाद्रपद	श्रावण	अंग्रेजी दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
२९	शु	१	१५	५९	१२	१८	म	३/५८	४२/२२	७/२९	२२/२१	शि	३८	४५	२१	२५	ब	१५	५९	१२	१८	३२	२६	५	५५	१८	५३	६	२९	21	सिंह	४	४	५	२२	५७/४२	६	४१	१९	२५
३०	श	२	८	४२	९	२४	उफा	५३	५३	२७	२८	सि	३०	२९	१८	७	कौ	८	४२	९	२४	३२	२२	५	५५	१८	५२	७	[illegible]/१	22	कं. १०।४३	४	५	३	११	४९	७	४७	२०	०
३१	र	३	२	४०	७	०	ह	५१	६	२६	२२	सा	२३	२२	१५	१७	ग	२	४०	७	०	३२	१८	५	५६	१८	५१	८	२	23	कन्या	४	६	१	०	५१	८	५१	२०	३५
०	र	४	५८	१५	२९	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
भा१	चं	५	५५	४२	२८	१३	चि	५०	१०	२६	०	शुभ	१७	३९	१३	०	ब	२६	४३	१६	३८	३२	१४	५	५६	१८	५०	९	३	24	तु. १४।५	४	६	५८	५१	५३	९	५४	२१	११
२	मं	६	५५	११	२८	१	स्वा	५१	१३	२६	२६	शु	१३	३०	११	२१	कौ	२५	१०	१६	१	३२	१०	५	५७	१८	४९	१०	४	25	तुला	४	७	५६	४४	५३	१०	५६	२१	५०
३	बु	७	५६	४३	२८	३८	वि	५४	१६	२७	४०	ब्र	१०	५९	१०	२१	ग	२५	४१	१६	१४	३२	६	५	५७	१८	४८	११	५	26	वृ. २१।१७	४	८	५४	३७	५५	११	५६	२२	३१
४	गु	८	६०	०	-	-	अनु	५९	९	२९	३८	ऐं	१०	३	९	५९	वि	२८	११	१७	१४	३२	२	५	५८	१८	४७	१२	६	27	वृश्चिक	४	९	५२	३२	५६	१२	५५	२३	१७
५	शु	८	०	६	६	१	ज्ये	६०	०	-	-	वै	१०	३०	१०	११	ब	०	६	६	१	३१	५८	५	५८	१८	४६	१३	७	28	वृश्चिक	४	१०	५०	२८	५७	१३	५०	२४	७
६	श	९	५	२	८	०	ज्ये	५	२९	८	११	वि	१२	५	१०	४९	कौ	५	२	८	०	३१	५४	५	५९	१८	४५	१४	८	29	ध. ८।११	४	११	४८	२५	५९	१४	४१	२४	५९
७	र	१०	११	०	१०	२३	मू	१२	५१	११	८	प्री	१४	२४	११	४५	ग	११	०	१०	२३	३१	५०	५	५९	१८	४४	१५	९	30	धनु	४	१२	४६	२४	५८/०	१५	२८	२५	५४
८	चं	११	१७	२८	१२	५९	पूषा	२०	३९	१४	१५	आ	१७	४	१२	५०	वि	१७	२८	१२	५९	३१	४६	६	०	१८	४२	१६	१०	31	म. २१।३	४	१३	४४	२४	१	१६	९	२६	४९
९	मं	१२	२३	५३	१५	३४	उषा	२८	२३	१७	२२	सौ	१९	४२	१३	५३	बा	२३	५३	१५	३४	३१	४२	६	०	१८	४१	१७	११	S1	मकर	४	१४	४२	२५	३	१६	४६	२७	४३
१०	बु	१३	२९	४७	१७	५६	श्र	३५	३६	२०	१५	शो	२१	५८	१४	४८	तै	२९	४७	१७	५६	३१	३८	६	१	१८	४०	१८	१२	2	मकर	४	१५	४०	२८	५	१७	१९	२८	३८
११	गु	१४	३४	५१	१९	५८	ध	४१	५९	२२	४९	अ	२३	३६	१५	२८	ग	२	२६	७	०	३१	३४	६	१	१८	३९	१९	१३	3	कुं. ९।३५	४	१६	३८	३३	६	१७	५०	२९	३१
१२	शु	१५	३८	५३	२१	३५	श	४७	२१	२४	५८	सु	२४	२७	१५	४९	वि	७	०	८	५०	३१	३०	६	२	१८	३८	२०	१४	4	कुम्भ	४	१७	३६	३९	७	१८	२०	-	-

चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घ:, कर्के शुक्र: २० ।१७, नक्त व्रत पूर्ण, A
रमजान मु. मा. ९ प्रा., सायन कन्यायां सूर्य: २९ ।०४, बाबा रामदेव B
भ. १८ ।७ से २९ ।१४ तक, उपाकर्म (सामगानाम्), श्री गणेश जन्म C
चतुर्थी तिथि क्षय: D जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष) A कल्पसूत्र पाठ (जैन)
रा. भाद्रपद प्रा., पुष्ये शुक्र: १५ ।४८, ऋषि ५ व्रत, क्षमावणी पर्व (जैन),D
धनि. १ वक्री गुरु: २० ।४९, सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता ६ व्रत (गुज.), E
भ. २८ ।३८ से, आर्द्रायां भौम: २३ ।४९, मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान ७
भ. १७ ।१४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, दधीची ज., श्री राधाष्टमी, श्री राधा ज., F
अष्टमी तिथि वृद्धि:, अगस्त्योदयं २९ ।३२ G भागवत ज. H मे. पूर्ण (रुणीचा)
पश्चिमास्तं शनि: १२ ।३०, श्री चन्द ९, अदु:ख ९ (उदासीन सम्प्र.),G
भ. २३ ।४१ से, पूफायां सूर्य: १९ ।२५, दशावतार १०, बाबा रामदेव H
भ. १२ ।५९ तक, हस्ते बुध: ९ ।१५, पद्मा (जलझूलनी) ११ व्रत (सबका),J
सितम्बर मा.९ ता.३० प्रा., श्री वामन ज., श्रवण १२ व्रत, भौम प्रदोष K
गोत्रिरात्री व्रत प्रा. K व्रत, मेला अंबाला व पटियाला (पं.), भुवनेश्वरी ज.
भ. १९ ।५८ से, पंचक ९ ।३५ से, अनन्त १४ व्रत, मेला सोढ़ल व छपार (पं.)
भ. ८ ।५० तक, श्लेषायां शुक्र: १९ ।४७, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत पुण्यं च, ❖

B मेला प्रा. (रुणीचा), तेलाधर तप (जैन), शरद ऋतु प्रा., वाराह ज., मन्वादि ३, हरितालिका ३, गौरी ३ व्रत, रोजे प्रा. (मु.) C ४, विनायक ४, सिद्धि विनायक व्रत, कलंकी ४, पत्थर ४ (चन्द्रदर्शन निषेध), श्री गणेश जन्मोत्सव (महा.), संवत्सरी जैन (च.पक्ष), पर्यूषण पर्व पूर्ण (जैन) E बलदेव ६, श्रीबलराम ज., मेला ब्रजमण्डल (उ.प्र.) F मेला बरसाना (उ.प्र.), महालक्ष्मी व्रतारंभ J मे. चारभुजा नाथ गढ़भोर (राज.), हरिवासरऽभाव: ❖ गोत्रिरात्री व्रत पूर्ति, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, महालय प्रा., पूर्णिमा श्राद्ध, उपाकर्म (अथर्वानाम्)

भाद्रपद शु. ८ गुरु प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	२	५	९	२	४	९	३	११	१०	८
९	४	६	७	२६	६	२८	४	४	१	०	६
५२	१७	४९	०	२९	२३	१८	२१	२१	२८	४९	४३
३२	१४	१	१७	४९	२१	४३	३२	३२	२५	५३	३२
५७	७३८	३८	४८	७	७१	७	३	३	२	०	०
५६	५४	००	४५	२४	२७	१५	११	११	११	३७	२८
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
३	१	१	४	१	१	१	३	१	४	३	३
मघा	पू.फा.	आर्द्रा	उ.फा.	धनि.	पुष्य	उ.फा.	उ.भा.	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

[पक्ष फलम्]

पक्षारंभ शुक्रवार से होना प्रजा में काम भावना-वासना का द्योतक बनता है। तथा माह में पांच शुक्रवार होना मलेच्छों-कामियों की वृद्धि तथा प्रजा वृद्धि का संकेत बनता है। यथा-प्रजावृद्धिरस्तु भार्गवे। चैत्र से लेकर भाद्रपद तक शुक्ल पक्ष में क्षय तिथियां होने से धान्योत्पत्ति न्यून होने का योग बनता है। गुरुवारी अमावस्या के प्रभाव से सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष होने का योग बनता है। आश्लेषा योग समर्घता यानि उतार-चढ़ाव समभाव के रूप में फल देगा। शुक्ल पक्ष में चतुर्थी का क्षय होना विश्व बाजार में महंगाई का वातावरण बनेगा। मूंग, घी, मोठ, तैल में वृद्धि यानि तेजी आयेगी। सुदी ६ को अनुराधा नहीं होना यत्र-तत्र दुर्भिक्ष (अकाल) का योग करता है। पूर्णिमा शुक्रवार और शतभिषा युक्त होने से शुभ फलदायिनी यानि विद्रोह हो तो भी शांति होगी। रविवारीय संक्रांति विश्व में युद्ध का तनाव भी बनायेगी। सूर्य का तपन भी तेज तथा रोग व्याधि लायेगी। धान्य भाव महंगे होंगे। सामाजिक अपराध बढ़ेंगे। शुक्रवारी पूर्णिमा शतभिषा भाद्रपद का योग। सुलभ फल दायिनी काम भाव वृद्धि योग॥ व्यापार-सोना, चादी, शेयर्स बाजार में घटाबढ़ी चलेगी। पशु एवं वाहनों के भावों में तेजी का योग बनेगा। तेल, तिल, रुई, घी के भावों में तेजी बनेगी। रिलायंस एवं अपर तेल में भारी तेजी का योग बनता है। किराना सामग्री, कालीमिर्च, साबुदाना, मैंथी, बारदाना के भाव सम रहेंगे। शकुन-भादवा सुदी पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल में चन्दा उदय हो बेचो शीघ्र अनाज॥ भादवा सुदी पंचमी जो बादल नहीं बरसन्त। तो निश्चय जानिये जलचर हुओ अन्त॥ भादव सुदी सप्तमी बादल गाज न बीज। यह लक्षण दुर्भिक्ष का महंगी हो सब चीज॥ आकाश लक्षण-कहीं-कहीं अतिवृष्टि से फसलों को हानि होगी। तूफानी वायु तथा वर्षा के प्रभाव से जन-धन असंतुलित होंगे। राजस्थान, पूर्वी भाग, दिल्ली, मिजोरम, आसाम, पंजाब, तुर्की, मलेशिया, मॉरीशस में भी प्राकृतिक आपदा का प्रभाव बनेगा।

ता. ४ सितंबर ❖ भाद्रपद शु. १५ शुक्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	२	५	९	३	४	९	३	११	१०	८
१७	१०	११	११	२५	१५	२९	३	३	१	०	६
३६	३	४९	४४	३३	५७	१७	५६	५६	१०	३७	४०
३९	७	५२	१	४	८	१२	६	६	२४	१२	३९
५८	७३६	३७	१५	६	७२	७	३	३	२	१	०
०७	४६	४	१८	३९	४	२३	११	११	१९	३३	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ		अ	अ	अ	-	-	-
२	२	२	१	१	४	१	३	१	४	३	३
पू.फा.	शत.	आर्द्रा	हस्त	धनि.	पुष्य	उ.फा.	उ.भा.	पुष्य	पू.भा.	धनि.	मूल

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ५ से १८ सितम्बर सन् २००९ ई., रा. मिति १३ से २६ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

रा. मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१३	श	१	४१	४६	२२	४५	पूभा	५१	३६	२६	४१	धृ	२४	२६	१५	४९	बा	१०	२७	१०	१३	३१	२६	६	२	१८	३७	२१	१५	5	मी. २०।१८	४	१८	३४	४६	५८/२०	१८	४९	६	२६	प्रतिपदा श्राद्ध, शिक्षक दिवस, डॉ. श्री राधाकृष्णन जयंती
१४	र	२	४३	३०	२३	२७	उभा	५४	४५	२७	५७	शू	२३	३२	१५	२८	तै	१२	४६	११	९	३१	२२	६	३	१८	३६	२२	१६	6	मीन	४	१९	३२	५६	११	१९	१९	७	२१	द्वितीया श्राद्ध A १६।९, वक्री बुध: ९।५१, तृतीया श्राद्ध
१५	चं	३	४४	७	२३	४२	रे	५६	४९	२८	४७	गं	२१	४५	१४	४५	व	१३	५६	११	३८	३१	१७	६	३	१८	३४	२३	१७	7	मे. २८।४७	४	२०	३१	७	१३	१९	५२	८	१७	भ. ११।३८ से २३।४२ तक, पंचक २८।४७ तक, मूले २ वक्री प्लूटो A
१६	मं	४	४३	४१	२३	३२	अ	५७	५१	२९	१२	वृ	१९	६	१३	४२	ब	१४	१	११	४०	३१	१३	६	४	१८	३३	२४	१८	8	मेष	४	२१	२९	२०	१५	२०	२७	९	१६	कृष्ण ४ व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, दशरथ ललिता व्रत, विश्व साक्षरता दिवस
१७	बु	५	४२	१३	२२	५८	भ	५७	५३	२९	१४	ध्रु	१५	३८	१२	२०	कौ	१३	४	११	१८	३१	९	६	४	१८	३२	२५	१९	9	मेष	४	२२	२७	३५	१७	२१	७	१०	१७	उफायां २ कन्यायां शनि: २४।१, पंचमी श्राद्ध
१८	गु	६	३९	४६	२१	५९	कृ	५६	५७	२८	५२	व्या	११	२२	१०	३८	ग	११	६	१०	३१	३१	५	६	५	१८	३१	२६	२०	10	वृ. ११।१०	४	२३	२५	५२	१९	२१	५४	११	२०	भ. २१।५९ से, षष्ठी श्राद्ध
१९	शु	७	३६	२०	२०	३७	रो	५३	३	२८	७	ह	६	१९	८	३७	वि	८	९	९	२१	३१	१	६	५	१८	३०	२७	२१	11	वृष	४	२४	२४	११	२१	२२	४८	१२	२३	भ. ९।२१ तक, सप्तमी श्राद्ध, शहादत-ए-हजरत अली (मु.)
२०	श	८	३१	५८	१८	५३	मृ	५२	१५	२७	०	व	०/५३	२९/५५	६/२७	१७/४०	बा	४	१५	७	४८	३०	५७	६	६	१८	२८	२८	२२	12	मि. १५।३६	४	२५	२२	३२	२३	२३	४९	१३	२५	पश्चिमास्तं बुध: २३।८, मार्गी प्लूटो १५।२८, कालाष्टमी, B
२१	र	९	२६	४३	१६	४८	आ	४८	३४	२५	३२	व्य	४६	३८	२४	४५	ग	२६	४३	१६	४८	३०	५२	६	६	१८	२७	२९	२३	13	मिथुन	४	२६	२०	५५	२५	२४	५५	१४	२२	भ. २७।३५ से, व्यतिपात पुण्यं, उफायां सूर्य: १३।२१, उफायां वक्री C
२२	चं	१०	२०	४०	१४	२३	पुन	४४	९	२३	४६	वरि	३८	४३	२१	३६	वि	२०	४०	१४	२३	३०	४८	६	७	१८	२६	३०	२४	14	क. १८।१४	४	२७	१९	२०	२८	२६	३	१५	१४	भ. १४।२३ तक, दशमी श्राद्ध, गुरु नानक देव शहीदी दिवस, D
२३	मं	११	१३	५७	११	४२	पु	३९	८	२१	४७	प	३०	१८	१८	१५	बा	१३	५७	११	४२	३०	४४	६	७	१८	२५	३१	२५	15	कर्क	४	२८	१७	४८	३०	२७	१२	१६	०	मघायां सिंहे शुक्र: २०।४१, उषायां २ राहु: पुनर्वसो: ४ केतु: १३।५५, E
२४	बु	१२	६	४७	८	५०	श्ले	३३	४७	१९	३८	शि	२१	३४	१४	४६	तै	६	४७	८	५०	३०	४०	६	८	१८	२४	आ१	२६	16	सिं. १९।३८	४	२९	१६	१८	३२	२८	१९	१६	४१	भ. २९।५४ से, सौर आश्विन प्रा., कन्यायां सूर्य: २३।२५, संक्रांति F
०	बु	१३	५९	२५	२९	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय: D भारतीय हिन्दी दिवस
२५	गु	१४	५२	८	२७	०	म	२८	२२	१७	२९	सिद्ध	१२	४४	११	१४	वि	२५	४४	१६	२६	३०	३५	६	८	१८	२२	२	२७	17	सिंह	५	०	१४	५०	३३	२९	२५	१७	१८	भ. १६।२६ तक, पुन. भौम: १७।३९, चतुर्दशी श्राद्ध, मास शिवरात्री G
२६	शु	३०	४५	१९	२४	१७	पूफा	२३	१५	१५	२७	सा	४/५५	३/५०	७/२८	३/२९	चतु	१८	३८	१३	३६	३०	३१	६	९	१८	२१	३	२८	18	कं. २०।५८	५	१	१३	२३	३६	-	-	१७	५४	देवपितृ कार्याऽमावस्या, गजच्छाया पर्व (स्नान दानार्थ), सर्वपितृ H H श्राद्ध विसर्जन च, जमात-उल्ल-विदा (मु.)

B जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति, अष्टमी श्राद्ध C बुध: २१।५, मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध E इन्दिरा एका. व्रत (सवका), एकादशी व द्वादशी श्राद्ध, सन्यासीनां श्राद्ध, भा. इंजीनियर्स डे F मु. ३० बैठी पुण्यकाल १७।१ से, मूले ३ प्लूटो १०।४९, त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, विश्वकर्मा पूजन G व्रत, कात्यायनी ज., विषाग्नि शस्त्रादि हतानां श्राद्ध, शव-ए-कद्र (मु.)

आश्विन कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	२	५	९	३	५	९	३	११	१०	८
२५	२४	१६	११	२४	२५	०	३	३	०	०	६
२२	८	४३	०	४३	३५	१६	३०	३०	५१	२५	३९
३२	९	४	१	११	४४	३७	४०	४०	३३	११	४२
५८	८४०	३६	३४	५	७२	७	३	३	२	१	०
२३	०९	५	१९	३८	३९	२८	११	११	२४	२६	१
मा -	मा -	मा उ	व उ	व उ	मा	मा अ	व अ	व अ	व -	व -	मा -
पू.फा. ४	मृग. १	आर्द्रा ४	हस्त १	धनि. १	श्लेषा ३	उ.फा. २	उ.षा. ३	पुष्य १	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

श.६बु. ४ शु.के. ७ ५ सू. २ चं. ३ मं. ८ ११ ने. ९ प्लू. १ १०गु.रा. १२ ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष श्राद्ध एवं तर्पण का है। तथा शनिवार से प्रारंभ होने से विविध प्रकार के आतंकों का प्रभाव बढ़ेगा। बुधास्त पश्चिम में होना, व्यापारी वर्ग को चिन्तित करेगा। त्रयोदशी का श्राद्ध शुभ सुभिक्ष का योग करता है। पक्ष में चं+शु+के की युति कर्क राशि में होना पेय पदार्थों के भावों में वृद्धि कारक होगा। **चन्द्र+शुक्र+केतु युक्ति की दृष्टि गुरु पर होय। राहु भी दृष्ट है जग में चिन्ता होय॥** इस पक्ष में आश्विन बदी १२ बुधवार को भुवन भास्कर देव कन्या राशि में भा.स्टै.टा. २३।०९ घं. मि. पर प्रवेश करेंगे। वारात् ४, नक्षत्रात् ५, वारनाम मंदाकिनी, नृपतीन् सुखदा, नक्षत्र नाम घोरा, शूद्रान सुखदा, मध्य रात्रि दूसरे प्रहर व्यापिनी, राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमन, ऐशान्यां दृष्टि, वणिज करणे प्रविष्टा मध्यम फलदायिनी। महिष वाहन, उष्ट्र उपवाहन होना क्लेश कारक योग। श्याम वस्त्रं, तोमरायुधं, खप्पर पात्र, दधि भक्षणम्, पाणु कंचुकी, प्रगल्भावस्था (बैठी) मु. ३० धान्ये भाव सम। वत्स पूर्वे। राहु उत्तरे योगानुसार उपद्रवों का बोलवाला ज्यादा बढ़ेगा। वस्तुओं के भावों में वृद्धि भी ज्यादा होगी। राजनैतिक एवं साम्प्रदायिक मुद्दों का प्रभाव विशेष रूप से बढ़ेगा। अग्नि काण्ड का योग भी है। व्यापार–वायदा बाजार में तेजी। सोना, चांदी के भाव सम रहेंगे। अनाजों में घटाबढ़ी चलेगी। कपास, सूत, हरड़, हींग, धनियां, हल्दी और नमक के भावों में तेजी। घी, तेल, अलसी के भाव कम होंगे। तिलहन बाजार में मंदी का दौर चलेगा। ईंट, पत्थर, सीमेन्ट व चूना कली में तेजी होगी। **शकुन–आश्विन में बुधास्त का योग ऐसा जानिये। महंगी वस्तु सस्ती हो, सस्ती महंगी मानिये॥ सूर संक्रमण समय में सम सप्तक राकेश। छटे मास तक अन्न में तेजी रहे विशेष॥ किसी राशि ' संक्रमण करे बुध दिन को सूर। घटाबढ़ी का पक्ष है रोना हंसना जरूर॥ आकाश लक्षण–**जम्मू-काश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ेंगी। हि. प्रदेश, उत्तर पूर्वी लंका एवं ... में अतिवृष्टि का योग भी है। प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव भी बनेगा। बिजली गिरने एवं बादल फटने का योग भी है।

ता. १८ सितंबर ❖ आश्विन कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

७ ५शु. ८ ६सू. चं.बु. श. ४के. ३ मं. ९ प्लू. १२ ह. १० गु.रा. २ ११ ने. १

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	२	५	९	४	५	९	३	११	१०	८
१	२०	२०	६	२४	२	१	३	३	०	०	६
१३	३८	१७	९	११	५२	१	११	११	३७	१६	४०
२३	३३	२८	१०	५३	४०	२९	३५	३५	८	४७	१८
५८	८६८	३५	६२	४	७३	६	३	३	२	१	०
३६	३६	१४	५३	४१	०३	२९	११	११	२५	२०	१२
मा -	मा -	मा उ	व अ	व उ	मा	मा अ	व अ	व अ	व -	व -	मा -
उ.फा. २	हस्त ४	पुन. १	उ.फा. ३	धनि. १	मघा १	उ.फा. २	उ.षा. २	पुन. ४	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ३

आश्विन शुक्ल पक्ष-13

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १९ सितं. से ४ अक्टू. सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति २७ भाद्रपद से ११ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२७	श	१	३९	२१	२१	५४	उफा	१८	४९	१३	४१	शु	४८	२०	२५	२९	किं	१२	१२	११	२	३०	२७	६	९	१८	२०	४	२९	19	कन्या	५	२	११	५९	५८/३८	६	३०	१८	२९	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन, अग्रसेन ज.
२८	र	२	३४	३५	२०	०	ह	१५	२७	१२	२०	ब्र	४१	५३	२२	५५	बा	६	४७	८	९	३०	२३	६	१०	१८	१९	५	३०	20	तु. २३।५३	५	३	१०	३७	३९	७	३४	१९	५	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घः A चतुर्थी व्रत, सूर्य दक्षिण गोल में
२९	चं	३	३१	२४	१८	४४	चि	१३	३१	११	३५	ऐं	३६	४३	२०	५२	तै	२	४६	७	१७	३०	१९	६	१०	१८	१८	६	१	21	तुला	५	४	९	१६	४१	८	३७	१९	४३	सव्वाल मु.मा. १० प्रा., ईद-उल-फितर मीठी ईद (मु.)
३०	मं	४	३०	२	१८	१२	स्वा	१३	२०	११	३१	वै	३३	२	१९	२३	व	०	२८	६	२२	३०	१४	६	११	१८	१६	७	२	22	वृ. २९।५८	५	५	७	५७	४३	९	४०	२०	२५	भ. ६।२२ से १८।१२ तक, सायन तुला में सूर्यः २६।४६, विनायक A
३१	बु	५	३०	४१	१८	२८	वि	१५	४	१२	१३	वि	३०	५५	१८	३३	व	०	६	६	१४	३०	१०	६	११	१८	१५	८	३	23	वृश्चिक	५	६	६	४०	४५	१०	४१	२१	१०	उपांग ललिता व्रत, पंचमी व्रत D विसर्जन, श्री माधवाचार्य ज.
आ१	गु	६	३३	१८	१९	३१	अनु	१८	४४	१३	४१	प्री	३०	२०	१८	२०	कौ	१	४४	६	५४	३०	६	६	१२	१८	१४	९	४	24	वृश्चिक	५	७	५	२५	४७	११	३९	२१	५९	रा. आश्विन प्रा., सिंहे वक्री बुधः ८।१६ ❖भरत मिलाप
२	शु	७	३७	४०	२१	१६	ज्ये	२४	१०	१५	५२	आ	३१	६	१८	३९	ग	५	१७	८	१९	३०	२	६	१२	१८	१३	१०	५	25	ध.१५।५२	५	८	४	१२	४८	१२	३३	२२	५१	भ. २१।१६ से, सरस्वती आवाहन्, आयंबिल औली प्रा. (जैन)
३	श	८	४३	२२	२३	३४	मू	३०	५८	१८	३६	सौ	३२	५४	१९	२२	वि	१०	२३	१०	२२	२९	५७	६	१३	१८	१२	११	६	26	धनु	५	९	३	०	५०	१३	२२	२३	४६	भ. १०।२२ तक, हस्ते सूर्यः २८।४६, पूफायां शुक्रः १९।००, B
४	र	९	४९	४८	२६	८	पूषा	३८	३४	२१	३९	शो	३५	१९	२०	२१	बा	१६	३१	१२	५०	२९	५३	६	१३	१८	११	१२	७	27	म. २८।२६	५	१०	१	५०	५१	१४	६	२४	४१	महानवमी, दुर्गानवमी, नवरात्र पूर्ति, सरस्वती बलिदानम्, C
५	चं	१०	५६	१८	२८	४५	उषा	४६	२१	२४	४६	अ	३७	५४	२१	२४	तै	२३	४	१५	२८	२९	४९	६	१४	१८	९	१३	८	28	मकर	५	११	०	४१	५४	१४	४४	२५	३५	विजया दशमी (रावणदाह), अपराजिता व शमी पूजन, सरस्वत्यै D
६	मं	११	६०	०	-	-	श्र	५३	४१	२७	४३	सु	४०	१२	२२	१९	व	२९	२२	१७	५९	२९	४६	६	१४	१८	८	१४	९	29	मकर	५	११	५९	३५	५५	१५	१९	२६	३०	भ. १७।५९ से, पूर्वोदयं बुधः ८।४८, पापांकुशा एका. व्रत (स्मार्त), ❖
७	बु	११	२	१४	७	८	ध	६०	०	-	-	धृ	४१	४९	२२	५८	वि	२	१४	७	८	२९	४०	६	१५	१८	७	१५	१०	30	कुं. १७।३	५	१२	५८	३०	५७	१५	५१	२७	२३	भ. ७।८ तक, पंचक १७।३ से, एकादशी तिथि वृद्धिः, मार्गी बुधः E
८	गु	१२	७	९	९	७	ध	०	३	६	१७	शू	४२	२९	२३	१५	बा	७	९	९	७	२९	३६	६	१५	१८	६	१६	११	अ1	कुम्भ	५	१३	५७	२७	५९	१६	२१	२८	१७	अक्टूबर मा. १० ता. ३१ प्रा., धनि. २ मकरे वक्री नेपच्यून २९।३०, F
९	शु	१३	१०	४४	१०	३४	श	५	११	८	२०	गं	४२	३	२३	५	तै	१०	४४	१०	३४	२९	३२	६	१६	१८	५	१७	१२	2	मी. २७।३१	५	१४	५६	२६	५९/१	१६	५०	२९	१२	महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री ज. F प्रदोष व्रतम्
१०	श	१४	१२	५२	११	२५	पूभा	८	५५	९	५१	वृ	४०	२९	२२	२८	व	१२	५२	११	२५	२९	२८	६	१६	१८	३	१८	१३	3	मीन	५	१५	५५	२७	३	१७	२१	३०	८	भ. ११।२५ से २३।३३ तक, पू.भा. ३ कुम्भे हर्षल २३।११, श्रवणे ४ G
११	र	१५	१३	३४	११	४२	उभा	११	१६	१०	४७	ध्रु	३७	५२	२१	२६	ब	१३	३४	११	४२	२९	२३	६	१७	१८	२	१९	१४	4	मीन	५	१६	५४	३०	४	१७	५२	-	-	कन्यायां बुधः ९।१५, पूर्णिमा पुण्यं, महर्षि बाल्मीकि ज., कार्तिकH

B श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, भद्रकाल्यावतार, सरस्वती पूजन, मेला तारादेवी व ज्वालामुखी (हि.प्र.) C मन्वादि ९, अस्त्र-शस्त्रादि पूजन, विश्व पर्यटक दिवस E १८।२१, पापांकुशा एका. व्रत (वैष्णव), बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबंदी
G वक्री गुरुः ११।७, सत्य व्रत, शरद पूर्णिमा व्रत, कोजागर व्रत, मेला शाकम्भरी देवी (उ.प्र.), रास पूर्णिमा (वृन्दावन) H स्नान प्रा., आयंबिल ओली पूर्ति (जैन)

आश्विन शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ सितम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	२	९	९	४	५	९	३	११	१०	८
९	६	२४	२८	२३	१२	२	२	२	०	०	६
३	४९	५५	४०	३९	३८	१	४६	४६	१७	६	४२
०	३२	१	१०	१८	३९	१६	९	९	५९	३९	५२
५८	७१३	३३	३०	३	७३	७	३	३	२	१	०
५०	३३	५९	१४	१६	३०	२६	११	११	२२	१०	२८
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ		अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

७ | ५ शु. बु. | ४ के. | ८ | ६ सू. श. | ३ मं. | ९ चं. प्लू. | १२ ह. | २ | गु. १० रा. | ११ ने. | १

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवार से शुरू हो रहा है। नवरात्र स्थापना अभिजित वेलायां, अग्रसेन जयंति, मातामह श्राद्ध योग तथा चन्द्रदर्शन ३० मु. होना परिवर्तन दायक स्थिति सभी वर्गों में बनेगी! इस माह में पांच शनिवार एवं पांच रविवार होने से नेष्ट फल का योग बनता है। **शनिवारा यदा पंच पाताल कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥ रविवारो यदा पंच जायते। द्वेष घृणा विवाद सर्वत्र विद्यते॥** पांच शनि व पांच रवि के अनुसार पाताल में शेष नाग कम्पित होकर भूमि में भूकम्प आदि का योग करता है। जापान, जर्मनी, नेपाल, चीन आदि देशों की सरकारों को खतरा या कलंक लगेगा। अग्निकाण्ड का भय रहेगा। शुक्रवारी अमावस्या होने से जल भ्रंश योग और पूर्वा फाल्गुन नक्षत्र के कारण महंगाई बढ़ेगी। आश्विन सुदी पड़वा को शनिवार से धान्यादि भावों में मंदी करेगा। पूर्णिमा उत्तरा भाद्रपद को होने से शुभ एवं सुख दायिनी योग करेगी। लेकिन महंगाई का प्रभाव यथावत चलेगा। बुधवारी संक्रांति के कारण रसकस पदार्थ महंगे होंगे। वस्त्रादि एवं रुई के भाव मंदे होंगे। अतिवृष्टि का योग ज्यादा बनता है। व्यापार–शुक्र+केतु की युक्ति से बाजार का संतुलन बिगड़ेगा। खाद्यान्न महंगे होंगे। सरकार द्वारा नियंत्रण मूल्य की नौबत बन सकती है। जीरा, ग्वार, ज्वार, मूंग, मोठ के भावों में अस्थिरता रहेगी। सोना, चांदी, ताम्बा, पीली वस्तुएं, पीतल तथा जेवरात सामग्री का भाव उछाला में रहेगा। **शकुन–आश्विन शुक्ल पूर्णिमा बादल निर्मल आकाश! अन्न मंदा का योग बने ऐसी राखो आस॥ बिजली चमके जल बरसे और वायु चाल। यों भाखे भड्डरी चार मास में मिले दलाल॥ बुध+सूर्य की युक्ति कन्या में संग शनि महाराज। राजतंत्र में आपदा सावधान गणराज॥ आकाश लक्षण**–शीत ऋतु का प्रभाव चलेगा। छिटपुट वर्षा से फसलों में हानि, उल्कापात एवं प्राकृतिक आपदा पश्चिमी देशों में विशेष बनेगी। उत्तरी भारत में बम ब्लास्ट योग भी बनता है। कृषक वर्ग को सामान्य लाभ योग बनेगा। हिंसाओं का अम्बार चलेगा।

ता. ४ अक्टूबर ❖ आश्विन शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

७ | ५ शु. बु. | ४ के. | ८ | ६ सू.श. | ३ मं. | ९ प्लू. | १२ चं. | २ | ने. १० गु. रा. | ११ ह. | १

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	२	४	९	४	५	९	३	१०	९	८
१६	१३	२९	२९	२३	२२	३	२	२	२९	२९	६
५४	४८	२२	१५	१८	२८	०	२०	२०	५९	५७	४७
३०	५४	८	५६	३३	७	२७	४४	४४	२४	५८	२८
५९	७८२	३२	४७	१	७३	७	३	३	२	०	०
४	०६	३६	३५	४४	५५	१९	११	११	१५	५८	४३
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ		अ	अ	अ	-	-	-
हस्त	उ.भा.	पुनर्वसु	उ.फा.	श्रवण	पू.फा.	उ.फा.	उ.षा.	[illegible]	पू.भा.	[illegible]	[illegible]

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ५ से १८ अक्टूबर सन् २००९ ई.। राष्ट्रीय मिति १२ से २५ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१२	चं	१	१२	५९	११	२९	रे	१२	२१	११	१४	व्या	३४	१६	२०	०	कौ	१२	५९	११	२९
१३	मं	२	११	१८	१०	४९	अ	१२	२१	११	१५	ह	२९	५३	१८	१५	ग	११	१८	१०	४९
१४	बु	३	८	४४	९	४८	भ	११	३०	१०	५५	व	२४	५०	१६	१५	वि	८	४४	९	४८
१५	गु	४	५	२८	८	३०	कृ	९	५७	१०	१८	सि	१९	१५	१४	१	बा	५	२८	८	३०
१६	शु	५	१	३९	६	५९	रो	७	५२	९	२८	व्य.	१३	१५	११	३८	तै	१	३९	६	५९
०	शु	६	५७	२५	२९	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	श	७	५२	४६	२७	२७	मृ	५	२१	८	२९	वरि	६	५३	९	६	वि	२५	७	१६	२३
१८	र	८	४७	४७	२५	२८	आ	२ / ५९	२७ / १५	७ / ३०	२० / ३	प	० / ५३	१४ / १९	६ / २७	२७ / ४१	बा	२०	१८	१४	२८
१९	चं	९	४२	३०	२३	२२	पु	५५	४४	२८	३९	सि.	४६	९	२४	४९	तै	१५	१०	१२	२५
२०	मं	१०	३६	५९	२१	१०	श्ले	५२	०	२७	१०	सा	३८	४७	२१	५३	व	९	४५	१०	१६
२१	बु	११	३१	२०	१८	५५	म	४८	१२	२५	३९	शुभ	३१	१९	१८	५४	ब	४	९	८	२
२२	गु	१२	२५	४४	१६	४१	पूफा	४४	२९	२४	११	शु	२३	५३	१५	५६	तै	३५	४४	१६	४१
२३	शु	१३	२०	२४	१४	३४	उफा	४१	७	२२	५१	ब्र	१६	३९	१३	३	व	२०	२४	१४	३४
२४	श	१४	१५	३७	१२	३९	ह	३८	२५	२१	४६	ऐं	९	५०	१०	२१	श	१५	३७	१२	३९
२५	र	३०	११	४१	११	५	चि	३६	४१	२१	५	वै	३ / ५८	४१ / २७	७ / २९	५३ / ४८	ना	११	४१	१५	५

दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
२९	१९	६	१८	१८	१	२०	१५	5	मे. ११।१४	५	१७	५३	३४	२९ / ०७	१८	२७	७	७	पंचक ११।१४ तक, कर्के भौमः ९।२३ — A गुरु रामदास जयंती
२९	१५	६	१८	१८	०	२१	१६	6	मेष	५	१८	५२	४१	९	१९	७	८	८	भ. २२।१८ से, उफायां ३ शनिः २१।४२, पूर्वोदयं शनिः २९।४५, A
२९	११	६	१९	१७	५९	२२	१७	7	वृ. १६।४७	५	१९	५१	५०	११	१९	५२	९	१२	भ. ९।४८ तक, उफायां शुक्रः १५।१३, श्रीकृष्ण चतुर्थी व्रत, B
२९	६	६	१९	१७	५८	२३	१८	8	वृष	५	२०	५१	१	१३	२०	४४	१०	१६	भारतीय वायुसेना दिवस
२९	२	६	२०	१७	५७	२४	१९	9	मि. २१।०	५	२१	५०	१४	१६	२१	४३	११	१९	भ. २९।४४ से, व्यतिपात पुण्यं
०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथि क्षयः — C (पं.), राधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन)
२८	५८	६	२०	१७	५६	२५	२०	10	मिथुन	५	२२	४९	३०	१८	२२	४७	१२	१७	भ. १६।२३ तक, कन्यायां शुक्रः ७।५९, चित्रायां सूर्यः १७।५१
२८	५४	६	२१	१७	५४	२६	२१	11	क. २४।२३	५	२३	४८	४८	२१	२३	५४	१३	१०	पुष्ये भौमः १५।५६, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, कालिका पूजन C
२८	५०	६	२१	१७	५३	२७	२२	12	कर्क	५	२४	४८	९	२२	२५	४१	१३	५७	हस्ते बुधः २६।२७ — D द्वादशी (गोवत्स पूजन)
२८	४६	६	२२	१७	५२	२८	२३	13	सिं. २७।१०	५	२५	४७	३१	२५	२६	६	१४	३८	भ. १०।१६ से २१।१० तक, मार्गी गुरुः १९।१८
२८	४१	६	२३	१७	५१	२९	२४	14	सिंह	५	२६	४६	५६	२८	२७	१०	१५	१५	पूर्वास्तं बुधः २५।४१, रमा एकादशी व्रत (सबका), गोवत्स D
२८	३७	६	२३	१७	५०	३०	२५	15	कं. २९।५०	५	२७	४६	२४	२९	२८	१४	१५	५०	प्रदोष व्रतम्, धन १३, धनतेरस, धन्वन्तरी ज., यम प्रीत्यर्थं दीपदानम्
२८	३३	६	२४	१७	४९	३१	२६	16	कन्या	५	२८	४५	५३	३२	२९	१६	१६	२५	भ. १४।३४ से २५।३६ तक, मासशिवरात्री व्रत, नरक हारिणी E
२८	२९	६	२५	१७	४८	का१	२७	17	कन्या	५	२९	४५	२५	३४	३०	१९	१७	०	सौर कार्तिक प्रा., तुलायां सूर्यः ११।२२ संक्रांति मु. ३० ऊभी, F
२८	२५	६	२५	१७	४७	२	२८	18	तु. ९।२२	६	०	४४	५९	३६	-	-	१७	३७	हस्ते शुक्रः ९।३७, देवकार्याऽमावस्या, श्री महावीर निर्वाण दि., G

G गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बलीपूजा, द्यूत क्रीड़ा, गो-क्रीड़ा

B करवा चौथ, कर्क ४, दशरथ चौथ, उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो (दिल्ली) E रूप चतुर्दशी (तैलाभ्यंगः), श्री पद्म प्रभु जन्म-तप (जैन)

F पुण्यकाल सूर्योदय से, पितृकार्याऽमावस्या, दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, कमला जयन्ती

कार्तिक कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	३	५	९	५	५	९	३	१०	९	८
२३	१८	३	७	३	१	३	१	१	२९	२९	६
४८	५५	६	११	१०	६	५१	५८	५८	४४	५१	५३
४८	४५	२५	४४	३६	३३	१९	२८	२८	०	४४	६
५९	८३४	३१	८८	०	७४	७	३	३	२	०	०
२१	५१	१५	२७	२१	१५	१०	११	११	०७	४७	५५
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
२	४	४	४	२	२	३	२	४	४	२	३
चित्रा	आर्द्रा	पुन.	उफा.	उषा.	उफा.	उफा.	उषा.	पुन.	पू.भा.	धनि.	मूल

७ ५ ८ सू. शु. ६ ४ मं. के. श.बु. ३ चं. गु. रा.१० ९ प्लू. १२ २ ने. ११ ह १

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार प्रतिपदा रेवती नक्षत्र से शुरू हो रहा है। तथा चतुर्थ ग्रह योग कन्या राशि में अमावस्या को (श+बु+सू+शु) बन रहा है। फलतः सुभिक्ष–दुर्भिक्ष दोनों योग बनते हैं। यत्र मासे पंचग्रहा (खेचरा) युक्ति योग। विग्रह व्याधि विनाश निश्चय भोग॥ धन–धान्य सस्ता होगा। लेकिन हिंसा का प्रभाव बढ़ेगा। अनावृष्टि योग से जनता दुःखी होगी। इस माह में भुवन भास्कर (सूर्यदेव) तुला राशि (नीच क्षेत्र) में प्रवेश भा.स्टै.टा. ११।०६ धं.मि. पर कर रहे हैं। वार शनिवार का होना कलंक योग भी बनायेगा। वारात् ४, नक्षत्रात् ४, वारनाम राक्षसी, चाण्डालानां सुखदा, नक्षत्रनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, मध्याह्न व्यापिनी, द्विजानि हन्ति। पश्चिमे गमनं, वायव्यां दृष्टि। शकुनि करणे प्रविष्टा, महर्घ फलम्, श्वान वाहन, उपवाहन शार्दूल, सुभिक्ष कारक चित्रक वस्त्रम्, पाशायुधं, वस्त्र पात्रम्, गुड़ भक्षणम्, हरिद्रा लेपनम्, क्षत्रीय जाति, कमल पुष्पम्। कोदी भूषणम्, कृष्णा कंचुकी, बन्ध्यावस्था (उभी) मु.३०, धान्ये भाव सम। शुक्रोदय पूर्वस्याम। माह में शनिवारी दीपावली भी अशुभ संकेत का कारक बनेगी। विविध स्थानों में सामाजिक, साम्प्रदायिक उपद्रव, बाधाएं बढ़ेंगी। किसी भी वरिष्ठ राजनेता का देवलोक गमन योग शनि ग्रह के प्रभाव से बनता है। संतुलन बिगड़ेगा। व्यापार–तिल, तेल, रुई, वस्त्रादि में तेजी का रूख बनेगा। सोना, चांदी में धोखाबाजी का सौदा चलेगा। स्टॉक इस माह में करना हानि कारक रहेगा। किराना बाजार, सूखा मेवा विशेष तेज होगा। चना, गेहूं, सरसों, जीरा, गुवार, मूंग, मोठ के भावों में काफी फेर बदल चलेगा। शकुन–शनिवारी होय दिवाली। रोवे किसान हंसे लिवाली॥ कन्या राशि का बुध सोमवार युक्ति योग। न जाने कब विग्रह हो व्यापारियों में रोग॥ कार्तिकस्य अमावस्या रवि चित्रा सुयोग। शनि+सूर्य युक्ति से काफी बने कुयोग॥ प्राकृतिक आपदा योग। सावधान रहें सभी लोग॥ आकाश लक्षण–आकाश स्वच्छ तो यत्र-तत्र मेघादि छाये रहेंगे। पर्वतीय क्षेत्रों में बून्दा-बांदी व[illegible] से रोगोत्पत्ति का प्रभाव बनेगा। पाकिस्तान के हालात बिगड़ने का योग है।

ता. १८ अक्टूबर ❖ कार्तिक कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

८ ६ चं.बु.शु. ९ ५ प्लू. सू. ७ ४ के. मं. १० गु. ने. रा. १ ११ ह. ३ १२ २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	५	३	५	९	५	५	९	३	१०	९	८
०	२७	६	१८	२३	९	४	१	१	२९	२९	७
४४	४६	४०	२०	१२	४७	४०	३६	३६	२९	४६	०
५९	४७	३७	१८	२५	१४	५७	१३	१३	४३	५३	१०
५९	८१७	२९	१	१	७४	६	३	३	१	०	१
३६	४१	४१	११	०४	३२	५८	११	११	५६	३४	८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
३	२	२	३	४	४	३	२	४	४	२	३
चित्रा	चित्रा	पुष्य	हस्त	श्रवण	उफा.	उफा.	उषा.	पुन.	पू.भा.	धनि.	मूल

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १९ अक्टू. से २ नवं. सन् २००९ ई., रा. मिति २६ आश्विन से १० कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिन मान घ	प	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
२६	चं	१	८	५६	१०	०	स्वा	३६	१४	२०	५५	प्री	५४	२०	२८	१०	ब	८	५६	१०	०	२८	२१	६	२६	१७	४६	३	२९	19	तुला	६	१	४४	३५	५९/३८	७	२२	१८	१७	चन्द्रदर्शनम् मु. १५ महर्घता:, यम द्वितीया, भैया दूज, यमुना स्नान, A
२७	मं	२	७	३९	९	३०	वि	३७	२१	२१	२३	आ	५१	३०	२७	३	कौ	७	३९	९	३०	२८	१७	६	२६	१७	४५	४	जि.१	20	वृ. १५।१२	६	२	४४	१३	४०	८	२४	१९	१	जिल्काद मु. मा. ११ प्रा., चित्रायां बुध: २८।१७, गोसंवर्धन सप्ताह प्रा.
२८	बु	३	८	५	९	४१	अनु	४०	११	२२	३१	सौ	५०	४	२६	२९	ग	८	५	९	४१	२८	१३	६	२७	१७	४४	५	२	21	वृश्चिक	६	३	४३	५३	४१	९	२५	१९	४९	भ. २२।८ से, श्री विनायक चतुर्थी व्रत A विश्वकर्मा चित्रगुप्त पूजन
२९	गु	४	१०	१९	१०	३५	ज्ये	४४	४४	२४	२१	शो	४९	५९	२६	२७	वि	१०	१९	१०	३५	२८	९	६	२८	१७	४३	६	३	22	ध. २४।२१	६	४	४३	३४	४४	१०	२२	२०	४१	भ. १०।३५ तक, सूर्य षष्ठी व्रत प्रा. C डाला छठ, सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण
३०	शु	५	१४	१७	१२	११	मूल	५०	४९	२६	४८	अ	५१	६	२६	५५	बा	१४	१७	१२	११	२८	५	६	२८	१७	४२	७	४	23	धनु	६	५	४३	१८	४५	११	१३	२१	३६	सायन वृश्चिके सूर्य: १२।१२, स्वात्यां सूर्य: २८।१७, धनि. १ गुरु: ८।२७, B
का१	श	६	१९	४१	१४	२१	पूषा	५८	१	२९	४१	सु	५३	५	२७	४३	तै	१९	४१	१४	२१	२८	१	६	२९	१७	४१	८	५	24	धनु	६	६	४३	३	४७	१२	०	२२	३१	रा. कार्तिक प्रा., तुलायां बुध: २६।१९, सूर्य षष्ठी, छठ पूजा (बिहार), C
२	र	७	२६	१	१६	५४	उषा	६०	०	-	-	धृ	५५	३२	२८	४२	व	२६	१	१६	५४	२७	५७	६	३०	१७	४१	९	६	25	म. १२।२७	६	७	४२	५०	४८	१२	४०	२३	२६	भ. १६।५४ से ३०।१४ तक, कल्पादि ७, सहस्त्रार्जुन ज., अष्टान्हिका D
३	चं	८	३२	३९	१९	३४	उषा	५	४४	८	४८	शू	५७	५८	२९	४१	ब	३२	३९	१९	३४	२७	५३	६	३०	१७	४०	१०	७	26	मकर	६	८	४२	३८	५०	१३	१७	२४	२०	श्रीदुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गौ पूजा, गौशालादि निर्माण, यवधान्यादि E
४	मं	९	३८	५३	२२	४	श्र	१३	२२	११	५२	गं	५९	५४	३०	२९	बा	५	५१	८	५१	२७	४९	६	३१	१७	३९	११	८	27	कुं. २५।१७	६	९	४२	२८	५२	१३	४९	२५	१३	पंचक २५।१७ से, अक्षय ९, कूष्माण्ड ९, आंवला ९, कृतयुगादि ९,F
५	बु	१०	४४	४	२४	९	ध	२०	१३	१४	३७	वृ	६०	०	-	-	तै	११	३८	११	११	२७	४५	६	३२	१७	३८	१२	९	28	कुम्भ	६	१०	४२	२०	५४	१४	२०	२६	७	स्वात्यां बुध: २५।१२, चित्रायां शुक्र: २६।३९ H श्रीमती गांधी पुण्य दि.
६	गु	११	४७	४६	२५	३९	श	२५	४७	१६	५१	वृ	०	५३	६	५४	व	१६	७	१२	५९	२७	४२	६	३२	१७	३७	१३	१०	29	कुम्भ	६	११	४२	१४	५५	१४	४९	२७	१	भ. १२।५९ से २५।३९ तक, देव प्रबोधिनी ११व्रत (सबका), तुलसी G
७	शु	१२	४९	४२	२६	२६	पूभा	२९	४३	१८	२६	ध्रु	० / ५९	४२ / २२	६ / २०	५० / १४	ब	१८	५७	१४	८	२७	३८	६	३३	१७	३६	१४	११	30	मी. १२।६	६	१२	४२	९	५७	१५	१९	२७	५६	मन्वादि १२, हरिवासराऽभाव:, कालिदास ज. D पर्व प्रा. (जैन)
८	श	१३	४९	५२	२६	३१	उभा	३१	५६	१९	२०	ह	५६	१७	२९	५	कौ	१९	५९	१४	३४	२७	३४	६	३४	१७	३५	१५	१२	31	मीन	६	१३	४२	६	५९	१५	५०	२८	५४	शनि प्रदोष व्रतम्, मेला वीर वैरागी नकोदर (पं.), सरदार पटेल ज., H
९	र	१४	४८	२२	२५	५५	रे	३२	२९	१९	३४	व	५२	५	२७	२४	ग	१९	१८	१४	१८	२७	३०	६	३५	१७	३५	१६	१३	न.1	मे. १९।३४	६	१४	४२	५	६०/१	१६	२४	२९	५४	भ. २५।५५ से, पंचक १९।३४ तक, नवम्बर मा. ११ ता. ३० प्रा., J
१०	चं	१५	४५	२७	२४	४६	अ	३१	३४	१९	१३	सि	४६	४६	२५	१८	वि	१७	३	१३	२५	२७	२७	६	३५	१७	३४	१७	१४	2	मेष	६	१५	४२	६	२	१७	२	-	-	भ. १३।२५ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, कार्तिकी पूर्णिमा, K J वैकुण्ठ १४ व्रत, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दि.

B सौभाग्य ५, पांडव ५, ज्ञान ५ (जैन), गुरु गोविंद सिंह बलिदान दि. (प्रा. मत से), हेमन्त ऋतु प्रा. E दानम्, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ण F जगद्धातृ पूजन, जुगल जोड़ी परिक्रमा (मथुरा-वृंदावन) G विवाह, चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ति, भीष्म पंचक प्रा., मेला पुष्कर (राज.), पुण्डरपुर यात्रा (महा.) K मन्वादि १५, गुरु नानकदेव ज., निंबार्काचार्य ज., देव दीपोत्सव, भीष्म पंचक पूर्ण, कार्तिक स्नान पूर्ण, अष्टान्हिका पूर्ण (जैन), मेला पुष्कर (राज.) व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, रथयात्रा व चातुर्मास व्रत पूर्ति (जैन)

कार्तिक शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	३	६	९	५	५	९	३	१०	९	८
८	८	१०	१	२३	१९	५	१	१	२९	२९	७
४२	२२	३१	५५	२६	४४	३५	१०	१०	१५	४३	९
३८	३७	७	८	३३	२७	३८	४७	४७	१०	१३	५८
५९	७०८	२७	१०१	०२	७४	६	३	३	१	०	१
५०	४२	३९	१८	३९	५८	३९	११	११	३९	१९	२१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ता. २६ अक्टूबर की कुण्डली: ८ | ६ शु.श. | प्लू. ९ | ७ सू.बु. | ४ के.मं. | ५ | १० रा.ने. चं.गु. | १ | ११ ह. | ३ | १२ | २

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार से शुरू तथा सोम पूर्णिमा को समाप्त हो रहा है। जो कि व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का प्रभाव करेगा। धार्मिक आयोजन ज्यादा होंगे। सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्तिहि। धन-धान्य समृद्धि स्यात् सुखम् भवति सर्वदा॥ के अनुसार विज्ञान के बढ़ते चरण का लाभ भी जनता को मिलेगा। पारिवारिक संबंधों में जन-जन में उत्साह रहेगा। कार्तिकी अमावस्या रविवारी होने से राजाओं में युद्ध, भारत-पाक या चीन के संबंध में अशांति का वातावरण बनेगा। पूर्णिमा अश्विनी युक्त होने से सुभिक्ष योग तथा शांति का द्योतक बन सकते हैं। शनिवारी संक्रांति के प्रभाव से रोगोपद्रव का प्रभाव बढ़ेगा। वस्तुओं की पैदायश न्यून तथा अन्य मशीनरी योग में तेजी का प्रभाव रहेगा। दुर्भिक्ष कारक प्रभाव बढ़ेगा। यत्र-तत्र वृष्टि के प्रभाव से जनता दुःखी होगी। मंगल+केतु की युक्ति कर्तरी भाव बढ़ाय। चलते चलते राही भी आपस में मर जाय॥ चन्द्रदर्शन ४५ मु. होना जनोपयोगी वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। क्रूराणां सम सप्तक सौम्य च यदा स्यात् अनावृष्टि योग हो ज्ञेया

ता. २ नवम्बर ❖ कार्तिक शु. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. २ नवम्बर की कुण्डली: ८ | ६ शु.श. | ९ प्लू. | ७ सू.बु. | ४ के.मं. | ५ | १० रा.ने. गु. | १ चं. | ११ ह. | ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	३	६	९	५	५	९	३	१०	९	८
१५	५	१३	१३	२३	२८	६	०	०	२९	२९	७
४२	३३	३८	३५	४९	२८	२१	४८	४८	४	४१	१९
६	४२	३६	५६	९	३३	१३	३२	३२	१९	४३	५४
६०	८१९	२५	९८	०३	७४	६	३	३	१	०	१
०२	२३	३६	२४	५९	५८	१९	११	११	२३	०५	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जाय॥ चन्द्रदर्शन ४५ मु. होना जनोपयोगी वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। ... रुई, लोहा, जस्ता, कांसी, खाण्ड, शक्कर, लालमिर्च, गुड़ में मंदी का योग

लोक विमात्॥ प्राकृतिक आपदाएं, भूकम्प का प्रभाव भी यत्र-तत्र बनेगा। व्यापार-ग्रह चालानुसार अनाज, तैल, तिलहन, सोना, चांदी, तांबा में तेजी का योग है। रुई, लोहा, जस्ता, कांसी, खाण्ड, शक्कर, लालमिर्च, गुड़ में मंदी का योग बनता है। हल्दी, धागा, जीरा, कपास, शेयर्स बाजार के भावों में घटाबढ़ी चलेगी। ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ में मंदी का योग बनेगा। रवौ अमावस्या चित्रा युक्त देव कार्य योग। पूर्णिमा अश्विनी सोम युक्त मूल्य मन्दा जोग॥ शकुन-अश्विनी भरणी का बने पूनम से संयोग। गुवार जुवार मकई मटर महंगाई अरु रोग॥ कार्तिक सुदी एकादशी बादल जल बरसाय। आगे वर्षा काल में वर्षा काल सुहाय॥ कार्तिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ घटा आकाश। गल्ला घी संग्रह करो लाभ पांचवे मास॥ आकाश लक्षण-जम्मू, नेपाल, सिक्किम, हिन्द चीन, आस्ट्रेलिया में प्राकृतिक आपदा का प्रभाव, शीत, वृष्टि एवं भूकम्प का प्रभाव बढ़ेगा। पश्चिमी देशों में विद्रोह या हंगामा का योग बनेगा। तूफान, बाढ़ादि योग भी बनेगा।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ३ से १६ नवंबर सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
११	मं	१	४१	२५	२३	१०	भ	२९	२९	१८	२४	व्य	४०	३४	२२	५०	बा	१३	३२	१२	१	२७	२३	६	३६	१७	३३	१८	१५	3	वृष २४।८	६	१६	४२	८	६०/०४	१७	४६	६	५८
१२	बु	२	३६	३६	२१	१५	कृ	२६	३३	१७	१४	वरि	३३	४४	२०	६	तै	९	४	१०	१५	२७	१९	६	३७	१७	३२	१९	१६	4	वृष	६	१७	४२	१२	६	१८	३७	८	४
१३	गु	३	३१	१६	१९	८	रो	२३	४	१५	५१	प	२६	२९	१७	१३	व	३	५८	८	१३	२७	१६	६	३८	१७	३२	२०	१७	5	मि. २७।७	६	१८	४२	१८	८	१९	३५	९	९
१४	शु	४	२५	४३	१६	५६	मृ	१९	१९	१४	२२	शि	१९	१	१४	१५	बा	२५	४३	१६	५६	२७	१२	६	३८	१७	३१	२१	१८	6	मिथुन	६	१९	४२	२६	१०	२०	३९	१०	१०
१५	श	५	२०	९	१४	४२	आ	१५	३१	१२	५२	सिद्ध	११	३१	११	१५	तै	२०	९	१४	४२	२७	९	६	३९	१७	३०	२२	१९	7	क. २९।४५	६	२०	४२	३६	१२	२१	४६	११	६
१६	र	६	१४	४२	१२	३३	पुन	११	५०	११	२४	सा	४/५६	५/५२	८/२९	२८/२५	व	१४	४२	१२	३३	२७	५	६	४०	१७	३०	२३	२०	8	कर्क	६	२१	४२	४८	१४	२२	५४	११	५५
१७	चं	७	९	२९	१०	२८	पु	८	२३	१०	२	शु	४९	५१	२६	३७	ब	९	२९	१०	२८	२७	२	६	४१	१७	२९	२४	२१	9	कर्क	६	२२	४३	२	१६	२४	०	१२	३८
१८	मं	८	४	३५	८	३१	श्ले	५	१२	८	४६	ब्र	४३	४	२३	५५	कौ	४	३३	८	३१	२६	५८	६	४१	१७	२९	२५	२२	10	सिं. ८।४६	६	२३	४३	१८	१९	२५	३	१३	१६
०	मं	९	५९	५९	३०	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९	बु	१०	५५	४८	२९	१	म	२/५९	२१/५६	७/३०	३९/४०	ऐं	३६	३६	२१	२१	व	२७	४९	१७	५०	२६	५५	६	४२	१७	२८	२६	२३	11	सिंह	६	२४	४३	३७	२०	२६	५	१३	५१
२०	गु	११	५२	५	२७	३३	उफा	५७	५७	२९	५४	वै	३०	२९	१८	५४	ब	२३	५१	१६	१५	२६	५२	६	४३	१७	२८	२७	२४	12	कं.१२।२८	६	२५	४३	५७	२२	२७	६	१४	२५
२१	शु	१२	४८	५८	२६	१९	ह	५६	३५	२९	२२	वि	२४	४८	१६	३९	कौ	२०	२५	१४	५४	२६	४८	६	४४	१७	२८	२८	२५	13	कन्या	६	२६	४४	१९	२४	२८	७	१४	५९
२२	श	१३	४६	३७	२५	२३	चि	५५	५९	२९	८	प्री	१९	३९	१४	३६	ग	१७	४०	१३	४९	२६	४५	६	४४	१७	२७	२९	२६	14	तु. १७।१२	६	२७	४४	४३	२६	२९	९	१५	३४
२३	र	१४	४५	१४	२४	५१	स्वा	५६	२१	२९	१७	आ	१५	११	१२	५०	वि	१५	४७	१३	४	२६	४२	६	४५	१७	२७	३०	२७	15	तुला	६	२८	४५	९	२८	३०	१०	१६	१२
२४	चं	३०	४५	००	२४	४६	वि	५७	५२	२९	५५	सौ	११	३३	११	२३	चतु	१४	५७	१२	४५	२६	३९	६	४६	१७	२६	मा.१	२८	16	वृ. २३।४३	६	२९	४५	३७	२९	-	-	१६	५४

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- व्यतिपात पुण्यं, तुलायां शुक्रः १०।४६
- उफायां ४ शनिः २९।२६
- भ. ८।१३ से १९।८ तक, विशाखायां बुधः २७।४७, मार्गी A
- विशाखायां सूर्यः १२।३१
- A नेपच्यून १७।००, **कृष्ण चतुर्थी व्रत**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
- भ. १२।३३ से २३।३० तक, स्वात्यां शुक्रः १८।४१
- श्लेषायां भौमः १४।५०, **श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव जी** B
- B **दर्शन पूजन, कालाष्टमी, प्रथमाष्टमी** (उड़ीसा)
- नवमी तिथि क्षयः
- भ. १७।५० से २९।१ तक, **महावीर स्वामी दीक्षा दि.** (जैन)
- वृश्चिके बुधः १०।११, **उत्पत्ति एका. व्रत** (सबका), **वैतरणी व्रत**
- **संत ज्ञानेश्वर पुण्य दि.** D स्नान (कश्मीर), **श्री बालाजी ज.**
- भ. २५।२३ से, अनुराधायां बुधः १३।३, **शनि प्रदोष व्रत,** C
- भ. १३।४ तक, **मास शिवरात्रि व्रत,** मेला पुरमण्डल देविका D
- सौर मार्गशीर्ष प्रा., वृश्चिके सूर्यः ११।१२ संक्रांति मु. ४५ E
- E सूती, पुण्यकाल सूर्योदय से, **देवपितृकार्याऽमावस्या**

C पं. जवाहर लाल नेहरु जन्म दि., बाल मेला (दिल्ली)

मार्गशीर्ष कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	३	६	९	६	५	९	३	१०	९	८
२३	२८	१६	२६	२४	८	७	०	०	२८	२९	७
४३	५	५४	३१	२६	२९	१०	२३	२३	५४	४२	३२
१८	१४	१२	२४	७	१	१७	५	५	२१	१	४१
६०	८३१	२२	९५	०५	७५	५	३	३	१	०	१
१९	५८	५३	१४	२६	१०	५२	११	११	०४	१२	४१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
विशा. २	श्ले. ४	आर्द्रा ४	विशा. २	धनि. १	स्वा. १	उ.फा. ४	उ.षा. २	पु. ४	पू.भा. ३	धनि. २	मूल ३

कुण्डली (ता. १० नवम्बर): ८ | श. ६ | ५ | ९ प्लू. | सू.बु. शु.७ | ४ चं.मं. के. | १० | गु. रा. ने. | १ | ह.११ | ३ | १२ | २

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष मंगलवार भरणी नक्षत्र से सोमवती अमावस्या योग विशाखा नक्षत्र गत तक चलेगा। इस पक्ष में प्रांतीय एवं क्षेत्रीय विवाद, दंगा–फसाद तथा गृह क्लेश बढ़ेगा। धार्मिक मुद्दा या राजनैतिक मुद्दा से जनता को परेशानी होगी। यत्र–तत्र हड़तालों का बोलबाला बढ़ेगा। **नवमी तिथौ क्षय आश्लेषा भौमवार। सर्प दंश जैसे योग बने चिन्तित सब संसार॥** इस पक्ष में अमावस्या तिथि को सूर्य देव तुला राशि में प्रवेश भा.स्टै.टा. १०।५१ घं. मि. पर करेंगे। वारात् ३, नक्षत्रात् ४, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, मध्याह्न दूसरे प्रहर व्यापिनी। द्विजान हन्ति, पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टि, चतुष्पाद करणे प्रविष्टा फलम् अशुभ दायक। मेष वाहन। महिषो (भैंसा) उपवाहन, पीड़ा कारक, कंबल वस्त्र, अकुंशायुधं, कर पात्रं, मधु भक्षणम्, अंचन लेपनम्, चर्म कंचुकी, अति बन्ध्यावस्था (सूती) मु. ४५ अन्नादि भावों में काफी तेजी का प्रभाव करेगी। उत्तरी देशों में विदेशी संस्थाओं में काफी अशांति व धार्मिक आंदोलनों का बोलबाला रहेगा। नेपाल राष्ट्र संकट से गुजरेगा। राजनैतिक पार्टियों में विद्रोह बढ़ेगा। अफगानिस्तान में वयोवृद्ध नेता की हत्या का योग बनता है। **व्यापार**–चावल, बाजरा, मक्का, मूंग, तिल, जायफल, ईलायची, रेशम, कालीमिर्च, लहसुन के भावों में घटाबढ़ी, रूख मंदी का बनेगा। उड़द, सरसों, तेल, घी, कपास, खल के भावों में तेजी का अच्छा अवसर बनेगा। सोना, चांदी व शेयर्स बाजार अस्थिर रहेगा। शकुन–मंगसिर बदी त्रयोदशी के दिन पड़े बर्फ। **बढ़े धान्य धन सम्पदा मंगलमय चोतर्फ॥ कृष्ण पक्ष में तिथि घटे नक्षत्र आश्लेषा योग। इस योग फल जानो यत्र–तत्र कुयोग॥ सोमवती अमावस्या संक्रांति तुला विशाखा माहि। जन–जन में हीनता बढ़े करे त्राहि–त्राहि॥** आकाश लक्षण–यत्र–तत्र बादल गाज, बिजली चमक की दमक। बिजली गिरने का योग भी बनता है। रंगमंच जैसी अश्लील [illegible] पंजाब व कश्मीर में समस्याएं बढ़ेंगी।

ता. १६ नवंबर ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १६ नवंबर): बु. ८ | श. ६ | ५ | प्लू. ९ | ७ सू.चं. शु. | ४ मं. के. | १० | गु. रा. ने. | ११ ह. | १ | ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	३	७	९	६	५	९	३	१०	९	८
२९	२०	११	५	२५	१६	७	०	०	२८	२९	७
४५	६	५	५८	१	०	४४	४	४	४८	४३	४३
३७	४७	४०	७	१६	१९	३४	१	१	४३	४१	९
६०	७७१	२०	९३	६	७४	५	३	३	०	०	१
२९	५०	२९	२८	२७	१७	२९	११	११	४६	२४	४९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
विशा. ३	विशा. १	श्ले. १	अनु. १	धनि. १	स्वाति ३	उ.फा. ४	उ.षा. २	पुनर्वसु ४	पू.भा. ३	धनि. २	मूल ३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १७ नवं. से २ दिसं. सन् ०९ ई., रा. मिति २५ कार्तिक से १० मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२५	मं	१	४६	७	२५	१४	अनु	६०	०	-	-	शो	८	५२	१०	२०	किं	१५	२२	१२	५६
२६	बु	२	४८	४२	२६	१६	अनु	०	४१	७	४	अति	७	१६	९	४२	बा	१७	१२	१३	४१
२७	गु	३	५२	४५	२७	५४	ज्ये	४	५७	८	४७	सु	६	४८	९	३२	तै	२०	३१	१५	१
२८	शु	४	५८	६	३०	४	मू	१०	३६	११	४	धृ	७	२४	९	४७	व	२५	१५	१६	५५
२९	श	५	६०	०	-	-	पूषा	१७	२४	१३	४८	शू	८	५६	१०	२५	ब	३१	९	११	१८
३०	र	५	४	२३	८	३६	उषा	२५	०	१६	५१	गं	११	८	११	१८	बा	४	२३	८	३६
मार्गशीर्ष	चं	६	११	१०	११	२०	श्र	३२	५१	२०	०	वृ	१३	३८	१२	१९	तै	११	१०	११	२०
२	मं	७	१७	४५	१३	५९	ध	४०	११	२३	०	ध्रु	१५	५७	१३	१५	व	१७	४५	१३	५९
३	बु	८	२३	३०	१६	१७	श	४६	४७	२५	३६	व्या	१७	४०	१३	५७	ब	२३	३०	१६	१७
४	गु	९	२७	५०	१८	२	पूभा	५१	४५	२७	३६	ह	१८	२१	१४	१५	कौ	२७	५०	१८	२
५	शु	१०	३०	२१	१९	३	उभा	५४	५२	२८	५२	व	१७	४२	१४	०	ग	३०	२१	१९	३
६	श	११	३०	५१	१९	१६	रे	५६	२	२९	२०	सि	१५	३२	१३	८	व	०	५१	७	१५
७	र	१२	२९	२२	१८	४१	अ	५५	१९	२९	४	व्य	११	४८	११	४०	ब	०	२०	७	५
८	चं	१३	२६	३	१७	२२	भ	५२	५५	२८	७	वरि	६	३५	९	३५	तै	२६	३	१७	२२
९	मं	१४	२१	१२	१५	२७	कृ	४९	१०	२६	३८	प	०/५२	४/३०	६/२७	५९/५८	व	२१	१२	१५	२७
१०	बु	१५	१५	१०	१३	३	रो	४४	२६	२४	४५	सिद्धि	४४	८	२४	३८	ब	१५	१०	१३	३

रा. मि.	दिनमान 1	दिनमान 2	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	नाडी	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
२५	२६	३६	६	४७	१७	२५	२	२९	17	वृश्चिक	७	०	४६	६	३०/३१	७	११	१७	४०	उषा. १ धनुषी राहुः, पुन. ३ मिथुने केतुः ११।४६
२६	२६	३३	६	४८	१७	२५	३	३०	18	वृश्चिक	७	१	४६	३७	३२	८	१०	१८	३१	चन्द्रदर्शनम् मु. १५ महर्घता A ९।५४, श्रीमती इन्दिरा गांधी जयन्ती
२७	२६	३०	६	४८	१७	२५	४	जिल्हे १	19	ध. ८।४७	७	२	४७	९	३४	९	४	१९	२५	जिल्हेज मु.मा. १२ प्रा., अनुराधायां सूर्यः १८।३२, विशाखायां शुक्रः A
२८	२६	२७	६	४९	१७	२४	५	२	20	धनु	७	३	४७	४३	३५	९	५२	२०	२०	भ. १६।५५ से ३०।४ तक, विनायक चतुर्थी व्रत, संत घासीदास ज.
२९	२६	२५	६	५०	१७	२४	६	३	21	म. २०।३२	७	४	४८	१८	३६	१०	३५	२१	१६	गुरु तेगबहादुर सिंह बलिदान दि., नागपंचमी (द.भा.), श्रीराम B
३०	२६	२२	६	५१	१७	२४	७	४	22	मकर	७	५	४८	५४	३८	११	१३	२२	१०	पंचमी तिथि वृद्धिः, सायन धनुषी सूर्यः ९।५३, ज्येष्ठायां बुधः २७।२९, C
मार्गशीर्ष	२६	१९	६	५२	१७	२३	८	५	23	मकर	७	६	४९	३२	३९	११	४७	२३	४	रा. मार्गशीर्ष प्रा., मूलक रुपीणी ६, श्रीराम कलेवा, श्री सांई बाबा जयन्ती
२	२६	१७	६	५२	१७	२३	९	६	24	कुं. ९।३२	७	७	५०	११	३९	१२	१८	२३	५७	भ. १३।५९ से २७।८ तक, पंचक ९।३२ से, मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज.
३	२६	१४	६	५३	१७	२३	१०	७	25	कुम्भ	७	८	५०	५०	४१	१२	४८	२४	४९	श्री दुर्गाष्टमी
४	२६	१२	६	५४	१७	२३	११	८	26	मी. २१।१०	७	९	५१	३१	४३	१३	१७	२५	४३	महानन्दा नवमी, कल्यादि ९ C चम्पा षष्ठी व्रत, गुह (स्कन्द) षष्ठी
५	२६	१०	६	५५	१७	२३	१२	९	27	मीन	७	१०	५२	१४	४३	१३	४७	२६	३२	वृश्चिके शुक्रः ९।०, हज्ज (मु.)
६	२६	७	६	५६	१७	२३	१३	१०	28	मे. २१।२०	७	११	५२	५७	४४	१४	१९	२७	३७	भ. ७।१५ से १९।१६ तक, पंचक २९।२० तक, मोक्षदा एकादशी व्रत D
७	२६	५	६	५६	१७	२२	१४	११	29	मेष	७	१२	५३	४१	४५	१४	५५	२८	३९	व्यतिपात पुण्यं, धनि. २ गुरुः १२।३०, अनुराधायां शुक्रः २४।४०, E
८	२६	३	६	५७	१७	२२	१५	१२	30	मेष	७	१३	५४	२६	४६	१५	३६	२९	४४	गुरु ग्रन्थ साहिब वार्षिकोत्सव E व्यंजन द्वादशी, प्रदोष व्रत
९	२६	१	६	५८	१७	२२	१६	१३	दि.1	वृ. ९।४८	७	१४	५५	१२	४७	१६	२४	३०	५१	भ. १५।२७ से २६।१५ तक, दिसंबर मा.१२ ता. ३१ प्रा., मूले धनुषी F
१०	२५	५९	६	५९	१७	२२	१७	१४	2	वृष	७	१५	५५	५९	४९	१७	२०	-	-	ज्येष्ठायां सूर्यः २२।५३, मार्गी हर्षल १४।६, पूर्णिमा पुण्यं

B विवाहोत्सव, श्री बांके बिहारी जी प्रादुर्भावोत्सव (वृन्दा.) D (सबका), मौनी ११, श्री गीता ज, ईद-उल-जुहा बकरीद (मु.)

F बुधः २२।५, पश्मिोदयं बुधः २८।०, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, श्री दत्तात्रेय ज., मां अन्नपूर्णा व षोडशी त्रिपुर सुन्दरी ज., पिशाच मोचन श्राद्ध, विश्व एड्स दिवस

मार्गशीर्ष शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	३	७	९	६	५	८	२	१०	९	८
८	९	२१	१९	२६	२७	८	२९	२९	२८	२८	८
५०	५४	५३	५१	५	१८	३१	३५	३५	४३	४८	०
५०	०	४८	३१	९	१४	२२	२४	२४	३२	३०	६
६०	७२४	१६	९१	७	७५	४	३	३	०	०	१
४१	३६	१८	३६	५२	२३	४९	११	११	१९	४२	५८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९ रा. प्लू.
७ शु.
६ शा.
गु. १० ने.
सू. बु. ८
५
११ ह. चं.
२
१२
४ मं.
१
३ के.

[पक्ष फलम्]
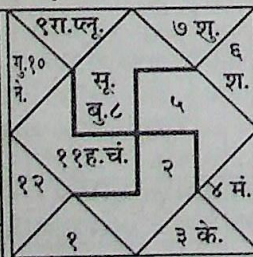
यह पक्ष भी मंगलवार से शुभारंभ हो रहा है। चन्द्रदर्शन (मु. ४५) योग॥ पंचमी तिथी वृद्धि योग॥ के अनुसार पक्ष हानि कारक रहेगा। शीत प्रकोप बढ़ेगा। पशुओं में रोग बढ़ेगा। अपहरण जन्य घटनाएं घटेंगी। कृष्ण पक्ष में तिथि घटे शुक्ल पक्ष में बढ़ जाय। एक वस्तु तो क्या बढ़े सभी वस्तुएं बढ़ जाय॥ पांच भौम भय कारक द्वेष क्लेश को बढ़ाय। कलह बाढ़े जन–जन में चरित्र वान दुःख पाय॥ बुधस्य पंचवाराश्च जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजा सुख सम्पन्ना सुभिक्षम् च प्रदायते॥ इन योग एवं ग्रहादि प्रभाव से जनता में विषमता का वातावरण बढ़ेगा। जापान, कनाडा, अमेरिका, अफ्रिका में राज विद्रोह का योग तथा पाकिस्तान में नेताओं को फंसाने एवं मारने का जाल बना रहेगा। आतंकवादी भय। मंगसिर पूनम निर्मला अलवा योग मयंक। लाभ मिले संग्रह करो नाज आगे निशंक॥ तथा यत्र मासे महिसूतोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥ वार मंगल पांच आवे ऐसा करे विचार। अग्नि वायु से आपदा जन–धन क्षति प्रहार॥ युद्ध जैसी वार्ता का प्रभाव बनने की संभावना विशेष बनती है। शीत लहर का योग भी प्रभावित करेगा। व्यापार–सरसों, घी, तेल, दही, दूध, सोना, चांदी, गुड़ में मंदी का योग। गेहूं, मसूर, गुड़, रुई में मंदी का योग घटाबढ़ी के रूप में चलेगा। कस्तूरी, चन्दन, मेवा, काजू में अच्छी तेजी बनेगी। बारदाना, नमक, तिल, तैल आदि में तेजी। बिनौला, सुपारी, अलसी की तेजी बनेगी। शकुन–मंगसिर शुक्ला पंचमी जो बादल घटा उठ जाय। कहे भड्डरी खाद्यान्न में तेजी बहुत बढ़ जाय॥ मंगसिर सुदी दोयज दिवस जो आवे बुधवार। पश्चिम की वायु चले, तेजी बहुत अपार॥ मगर माह में जो ज्येष्ठा तपे न सूर। तो यो बोले भड्डरी निपाते सातो नूर॥ आकाश लक्षण–उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, बिहार, नेपाल, सिक्किम, भूटान, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली में शीत लहर तथा वृष्टि योग बनता है। अमेरिका में नयी घटना से लोग चिन्तित होंगे। वायु के बहाव से शीतोष्णता बढ़ेगी।

ता. २ दिसम्बर ❖ मार्गशीर्ष शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

बु. रा. प्लू. ९
७
६ श.
गु. १० ने.
८ सू. शु.
५
११ ह.
२ चं.
१२
४ मं.
१
३ के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	३	८	९	७	५	८	२	१०	९	८
१५	११	२३	०	२७	६	९	२९	२९	२८	२९	८
५५	४२	३६	२७	३	६	३	१३	१३	४२	५४	१४
५९	५३	४५	४९	१९	१	२८	८	८	१८	६	७
६०	८६९	१२	८९	८	७५	४	३	३	०	०	२
४९	५७	३०	४४	५३	२५	१६	११	११	०२	५६	०३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ३ से १६ दिसंबर सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
११	गु	१	८	२०	१०	१९	मृ	३९	७	२२	३८	सा	३५	१६	२१	६	कौ	८	२०	१०	१९
१२	शु	२	१	३	७	२६	आ	३३	३४	२०	२६	शुभ	२६	१२	१७	२९	ग	१	३	७	२६
०	शु	३	५३	४३	२८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१३	श	४	४६	३६	२५	३९	पुन	२८	७	१८	१६	शु	१७	१२	१३	५४	ब	२०	६	१५	३
१४	र	५	३९	५८	२३	१	पु	२३	५	१६	१६	ब्र	८	२८	१०	२५	कौ	१३	११	१२	१८
१५	चं	६	३४	२	२०	३९	श्ले	१८	४१	१४	३१	ऐं	०/५२	१३/३७	७/२८	८/५	ग	६	५३	९	४८
१६	मं	७	२८	५७	१८	३८	म	१५	६	१३	५	वि	४५	४२	२५	२०	वि	१	२२	७	३६
१७	बु	८	२४	४९	१७	०	पूफा	१२	२५	१२	२	प्री	३९	३३	२२	५३	कौ	२४	४९	१७	०
१८	गु	९	२१	४३	१५	४६	उफा	१०	४४	११	२२	आ	३४	१३	२०	४६	ग	२१	४३	१५	४६
१९	शु	१०	१९	४०	१४	५७	ह	१०	४	११	७	सौ	२९	४३	१८	५८	वि	१९	४०	१४	५७
२०	श	११	१८	४२	१४	३५	चि	१०	२७	११	१७	शो	२६	४	१७	३१	बा	१८	४२	१४	३५
२१	र	१२	१८	५०	१४	३९	स्वा	११	५४	११	५२	अ	२३	१६	१६	२५	तै	१८	५०	१४	३९
२२	चं	१३	२०	६	१५	१०	वि	१४	२७	१२	५४	सु	२१	२०	१५	३९	व	२०	६	१५	१०
२३	मं	१४	२२	३१	१६	८	अनु	१८	५	१४	२२	धृ	२०	१६	१५	१४	श	२२	३१	१६	८
२४	बु	३०	२६	५	१७	३४	ज्ये	२२	४९	१६	१६	शू	२०	४	१५	१०	ना	२६	५	१७	३४

रा.मि.	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
११	२५	५७	६	५९	१७	२२	१८	१५	3	मि. ११।४३	७	१६	५६	४८	६०/६०	१८	२४	७	५६
१२	२५	५६	७	०	१७	२२	१९	१६	4	मिथुन	७	१७	५७	३८	५१	१९	३२	८	५६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१३	२५	५४	७	१	१७	२३	२०	१७	5	क. १२।४८	७	१८	५८	२९	५२	२०	४२	९	५०
१४	२५	५२	७	२	१७	२३	२१	१८	6	कर्क	७	१९	५९	२१	५३	२१	५१	१०	३६
१५	२५	५१	७	२	१७	२३	२२	१९	7	सिं. १४।३१	७	२१	०	१४	५५	२२	५७	११	१७
१६	२५	४९	७	३	१७	२३	२३	२०	8	सिंह	७	२२	१	९	५६	२४	०	११	५३
१७	२५	४८	७	४	१७	२३	२४	२१	9	कं. १८।५०	७	२३	२	५	५७	२५	२	१२	२८
१८	२५	४७	७	५	१७	२३	२५	२२	10	कन्या	७	२४	३	२	५९	२६	२	१३	१
१९	२५	४६	७	५	१७	२४	२६	२३	11	तु. २३।०९	७	२५	४	१	६१/०	२७	२	१३	३५
२०	२५	४५	७	६	१७	२४	२७	२४	12	तुला	७	२६	५	१	०	२८	२	१४	१२
२१	२५	४४	७	७	१७	२४	२८	२५	13	वृ. ३०।३६	७	२७	६	१	२	२९	२	१४	५१
२२	२५	४३	७	७	१७	२४	२९	२६	14	वृश्चिक	७	२८	७	३	३	३०	१	१५	३५
२३	२५	४२	७	८	१७	२५	पौ.१	२७	15	वृश्चिक	७	२९	८	६	३	३०	५६	१६	२४
२४	२५	४२	७	८	१७	२५	२	२८	16	ध. १६।१६	८	०	९	९	४	-	-	१७	१६

- 3: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दि., विकलांग दिवस
- 4: भ. १७।५६ से २८।३० तक, भारतीय नौ सेना दिवस
- 0: तृतीया तिथि क्षयः
- 5: कृष्ण चतुर्थी व्रत
- 7: भ. २०।३९ से, धनि. ३ कुंभे नेपच्यून २५।४८, भा. झण्डा दिवस
- 8: भ. ७।३६ तक
- 9: कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
- 10: भ. २७।२१ से, पूषायां बुधः २५।३६, ज्येष्ठायां शुक्रः १५।९, A
- 11: भ. १४।५७ तक — A मानवाधिकार दिवस
- 12: सफला एकादशी व्रत (सबका), शुक्र वृद्धत्वारंभः २०।४१
- 13: स्वरूप द्वादशी व्रत, प्रदोष व्रत
- 14: भ. १५।१० से २७।३९ तक, मास शिवरात्री व्रत
- 15: सौर पौष प्रा., मूले धनुषी सूर्यः २५।५४ संक्रांती मु. १५ सूती, B
- 16: संक्रांती पुण्यकाल ८।१८ तक, देवपितृ कार्याऽमावस्या, C

C वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

पूर्वास्तं शुक्रः १५ दिसं.

B सरदार पटेल पुण्य दि., धनु मलमास प्रा., पूर्वास्तं शुक्रः २०।४१

पौष कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	३	८	९	७	५	८	२	१०	१०	८
२३	२२	२४	१०	२८	१४	९	२८	२८	२८	०	८
२	५३	५१	४४	८	५४	३१	५०	५०	४३	१	२८
५	३१	२८	४४	१३	१०	२७	५२	५२	३५	१७	४१
६०	८२६	८	८५	९	७५	३	३	३	०	१	२
५७	३४	०७	००	५७	२९	३९	११	११	२३	०९	७
मा -	मा -	मा उ	मा उ	मा उ	मा	मा उ	व अ	व अ	मा -	मा -	मा -
ज्येष्ठा १	पू.फा. ३	आश्ले. ३	मूल ४	धनि. १	अनु. ४	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३	पू.भा. ३	धनि. ३	मूल ३

बु. रा. प्लू. ९ | सू. ८ शु. | ७ | ६ श. | १० गु. | ५ चं. | ह. ११ ने. | २ | १२ | ४ मं. | १ | ३ के.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष गुरुवार से बुधामावस्या तक चलेगा। तृतीया का क्षय होना संकट कालीन स्थिति का संकेत है। अमावस्या बुधवारी दुर्भिक्ष कारक तथा ज्येष्ठा युक्त होने से पशुओं में रोग व्याधि का घटक बनेगा। शुक्रास्त रविवारीय योग में होने से स्त्री पक्ष को विशेष बल मिलेगा। किसी विशिष्ट स्त्री नेता का अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी होगा। एवं स्त्री आभूषणों की वृद्धि तथा मांग बढ़ेगी। यत्र-तत्र स्त्री पक्ष का सम्मेलन भी चलेगा। इस पक्ष में पौष बदी १४ मंगलवार को भुवन भास्कर सूर्यदेव धनु राशि में प्रवेश (दि.१५.१२.२००९) को भा.स्टै.टा. २५।२५ घं. मि. पर करेंगे। वारात् २, नक्षत्रात् ३, वारनाम महोदरी, चोरान सुखदा, नक्षत्रनाम राक्षसी, चाण्डालान सुखदा, अपर रात्रि तृतीय प्रहर व्यापिनी। नरान हन्ति, पूर्वे गमन, आग्नेय दृष्टि। अग्नि तत्व की प्रधानता से विद्रोह भड़केगा। चतुष्पाद करणे प्रविष्टा नेष्ट फलम। मेष वाहनम्, उपवाहनम् महिषो। जनता में पीड़ा कारक दुर्घटना कारक योग घटित होंगे। चर्म कंचुकी, अति बंध्यावस्था (सूती) मु. १५ धान्य भावों में विशेष वृद्धि का योग बनेगा। शुक्रास्त पूर्वस्याम। स्त्री पक्ष का वर्चस्व बढ़ेगा। नागालैण्ड, न्यूजीलैण्ड, हॉलैण्ड, ईराक, ईरान, पाक, अफगानिस्तान, हिन्द चीन, इण्डोनेशिया में गुप्त रहस्यों का पर्दाफाश से विश्व व्यापार एवं राजनैतिक स्थिति में उपद्रव बढ़ेगा। व्यापार-श+बु की युक्ति से धोखाधड़ी व्यापार चलेगा। मिश्री, शक्कर, नमक, तम्बाकू, अफीम, बारदाना, प्लास्टिक, कागज उद्योग, प्रिंटिंग स्याही, मिठाई आदि में तेजी-मंदी के झटके लगेंगे। शेयर्स बाजार में अधिक चढ़ाव का योग बनता है। सूती वस्त्र, ताम्बा, जस्ता, लोहा, मशीनरी, मोटर वाहन सस्ते होंगे। शकुन-पौष बदी दशमी रात्रि वर्षा जो होय। आगे भाद्र मास में अच्छी वृष्टि होय॥ पौष बदी तृतीया का जब क्षय हो जाय। अनहोनी का योग है सभी सावधान हो जाय॥ कारी पांचे पौष की तारे निर्मल देख। माघ तुषार निहारिये प्रजा सकल दु:ख पेख॥ भौम संक्रांति। लावे क्रांति॥ आकाश लक्षण-मौसम में स्वच्छता रहेगी। स्वच्छ बादलों की धूप छा... से प्रभावित होंगे। आतंकवादी प्रभावित होंगे।

ता. १६ दिसंबर ❖ पौष कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

गु. १० | चं. ८ शु. | ने. ११ ह. | सू. प्लू. ९ रा. बु. | ६ श. | ७ | १२ | ३ के. | १ | ५ | २ | ४ मं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	७	३	८	९	७	५	८	२	१०	१०	८
०	२४	२५	२०	२९	२३	९	२८	२८	२८	०	८
९	२८	३३	५	१९	४२	५४	२८	२८	४७	९	४३
९	५९	३९	३०	१५	४०	५८	३७	३७	२२	५८	३९
६१	७३४	३	६५	१०	७५	२	३	३	०	१	२
४	२९	०७	३८	३७	३०	५८	११	११	४५	२२	१०
मा -	मा -	मा उ	मा उ	मा उ	मा	मा उ	व अ	व अ	मा -	मा -	मा -
मूल १	ज्येष्ठा ३	आश्ले. ३	पू.षा. ३	धनि. १	ज्येष्ठा ३	उ.फा. ३	उ.षा. १	पुन. ३	पू.भा. ३	धनि. ३	मूल ३

लावे क्रांति॥ आकाश लक्षण–मौसम में स्वच्छता रहेगी। स्वच्छ बादलों की धूप छाव चलती रहेगी। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश भूकम्प या तूफान या प्राकृतिक आपदा से प्रभावित होंगे। आतंकवादी प्रभावित होंगे।

पौष शुक्ल पक्ष-१९

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १७ से ३१ दिसं. सन. २००९ ई., रा. मिति २५ मार्गशीर्ष से ९ पौष तक। रवि दक्षिणायने-उत्तरायने, दक्षिण गोले, हेमंत-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	नाड़ी	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
२५	गु	१	३०	४५	११	२७	मू	२८	३७	१८	३६	गं	२०	४३	१५	२६	ब	३०	४५	१९	२७	२५	४१	७	९	१७	२६	३	२९	17	धनु	८	१	१०	१३	५	७	४६	१८	११	हस्ते १ शनिः २२।३५ ❖ शिशिर ऋतु प्रा.
२६	शु	२	३६	२६	२१	४४	पूषा	३५	२२	२१	१८	वृ	२२	७	१६	०	बा	३	२८	८	३३	२५	४१	७	१०	१७	२६	४	३०	18	म. २८।२	८	२	११	१८	५	८	३१	१९	६	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घः
२७	श	३	४२	५२	२४	१९	उषा	४२	५०	२४	१८	ध्रु	२४	७	१६	४९	तै	९	३३	११	०	२५	४१	७	१०	१७	२६	५	मु१	19	मकर	८	३	१२	२३	६	९	११	२०	२	मुहर्रम मु.मा. १ हिजरी सन् १४३१ प्रा., धनि. ३ कुम्भे गुरुः A
२८	र	४	४९	४३	२७	४	श्र	५०	४२	२७	२८	व्या	२६	३१	१७	४७	व	१६	१५	१३	४१	२५	४०	७	११	१७	२७	६	२	20	मकर	८	४	१३	२९	७	९	४६	२०	५६	भ. १३।४१ से २७।४ तक, मूले धनुषी शुक्रः २९।२५, वक्री B
२९	चं	५	५६	३१	२९	४८	ध	५८	३१	३०	३६	ह	२९	०	१८	४७	ब	२३	९	१६	२७	२५	४०	७	११	१७	२७	७	३	21	कुं. १७।२	८	५	१४	३६	६	१०	१८	२१	४८	पंचक १७।२ से, सायन मकरे सूर्यः २३।१९, उत्तरायण व ❖
३०	मं	६	६०	०	-	-	श	६०	०	-	-	व	३६	१४	१९	४१	कौ	२९	४४	१९	५	२५	४०	७	१२	१७	२८	८	४	22	कुंभ	८	६	१५	४२	७	१०	४८	२२	४१	उषायां बुधः २८।४१ Bभौमः ३०।३१, विनायक चतु. व्रत
पौ१	बु	६	२	४४	८	१८	श	५	४४	९	३०	सि	३२	४९	२०	२०	तै	२	४४	८	१८	२५	४०	७	१२	१७	२८	९	५	23	मी.२९।२४	८	७	१६	४९	७	११	१७	२३	३३	रा. पौष प्रा., षष्ठी तिथि वृद्धिः, बलिदान दिवस, किसान दिवस
२	गु	७	७	५०	१०	२१	पूभा	११	५४	११	५८	व्य	३३	२४	२०	३४	व	७	५०	१०	२१	२५	४१	७	१३	१७	२९	१०	६	24	मीन	८	८	१७	५६	७	११	४६	२४	२६	भ. १०।२१ से २३।३ तक, व्यतिपात पुण्यं, गुरु गोविन्द सिंह C
३	शु	८	११	२०	११	४५	उभा	१६	३१	१३	५०	वरि	३२	४०	२०	१७	ब	११	२०	११	४५	२५	४१	७	१३	१७	३०	११	७	25	मीन	८	९	१९	३	७	१२	१६	२५	२२	**श्री दुर्गाष्टमी, क्रिसमस डे** (बड़ा दिन), ईसा ज., D
४	श	९	१२	५५	१२	२४	रे	१९	१७	१४	५६	परि	३०	२४	१९	२३	कौ	१२	५५	१२	२४	२५	४१	७	१४	१७	३०	१२	८	26	मे. १४।५६	८	१०	२०	१०	७	१२	४९	२६	२१	पंचक १४।५६ तक
५	र	१०	१२	२५	१२	१२	अ	२०	२	१५	१५	शिव	२६	३२	१७	५१	ग	१२	२५	१२	१२	२५	४२	७	१४	१७	३१	१३	९	27	मेष	८	११	२१	१७	८	१३	२६	२७	२३	भ. २३।४४ से, वक्री बुधः १८।४८, **शाम्ब दशमी** (उड़ीसा)
६	चं	११	९	५१	११	११	भ	१८	४६	१४	४५	सि	२१	४	१५	४०	वि	९	५१	११	११	२५	४३	७	१४	१७	३१	१४	१०	28	वृ.२०।३०	८	१२	२२	२५	७	१४	१०	२८	२९	भ. ११।११ तक, पूषायां सूर्यः २८।७, पश्चिमास्तं बुधः E
७	मं	१२	५	२४	९	२४	कृ	१५	४२	१३	३१	सा	१४	८	१२	५४	बा	५	२४	९	२४	२५	४३	७	१५	१७	३२	१५	११	29	वृष	८	१३	२३	३२	७	१५	२	२९	३५	पूषायां वक्री बुधः ३०।७, **भौम प्रदोष व्रत**
०	मं	१३	५९	२०	३०	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षयः
८	बु	१४	५१	५९	२८	३	रो	११	५	११	४१	शुभ	५ / ५८	५६ / ४६	९ / २९	३८ / ५८	ग	२५	४७	१७	३४	२५	४४	७	१५	१७	३३	१६	१२	30	मि.२२।३५	८	१४	२४	३९	८	१६	२	३०	३८	भ. २८।३ से,
९	गु	१५	४३	४५	२४	४५	मृ	५ / ५८	४८ / ४४	९ / ३०	२२ / ४१	ब्र	४६	५३	२८	१	वि	१७	५७	१४	२६	२५	४५	७	१५	१७	३३	१७	१३	31	मिथुन	८	१५	२५	४७	७	१७	९	-	-	भ. १४।२६ तक, पूषायां शुक्रः १९।४२, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत F

A २४।१६, यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य व त्रिस्तुति (जैन) C ज. (प्रा. मत से), श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य (जैन) D पं. मदन मोहन मालवीय जन्म दि., मेला जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)
E १८।४३, पवित्रा (पुत्रदा) एका. व्रत (सबका), मन्वादि ११, वैकुण्ठ११ (द.भा.), मुहर्रम ताजिया (मु.) F पुण्यं च, शाकंभरी ज., माघ स्नानारम्भः, पौषी पूर्णिमा, गंगासागर यात्रा, न्यु इयर इवनिंग डे (ईस्वी नववर्ष की पूर्व संध्या)

पौष शुक्ल ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	३	८	१०	८	५	८	२	१०	१०	८
९	१२	२५	२७	०	५	१०	२७	२७	२८	०	९
१९	१९	३३	३३	५८	२	१८	५९	५९	५५	२३	३
३	५३	५०	४४	४०	१९	७	५९	५९	५६	११	१२
६१	७५६	३	११	११	७५	२	३	३	१	१	२
७	२३	५७	५३	३३	३०	४	११	११	१२	३६	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

११ ह. ने. गु. | १० | सू. बु. ९ रा. शु. प्लू. | ८ | ७ | ६ श. | १२ चं. | ३ के. | १ | ५ | २ | ४ मं.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष भी शुक्रवार मूल नक्षत्र की युक्ति से शुभारंभ हुआ है। चन्द्र दर्शन द्वितीया को मु. ३० अत्यधिक तेजी का संकेत करता है। इस पक्ष में चन्द्र ग्रहण दर्शन का योग गुरुवार आर्द्रा नक्षत्र में होना विश्व में जलस्तर संकट व अतिवृष्टि का प्रतीक बनेगा। **यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पते। विग्रह पश्चिमे देशे खड्ग युद्धश्च जायते॥ गुरुवासरे पूर्णिमा चन्द्र ग्रहण का योग। अंधाधुंध गोली चले होवे अति रोग॥** इन योगों से इस पक्ष में पश्चिमी देशों की सीमाओं पर संकट के बादल मण्डरायेंगे। तथा यत्र-तत्र उपद्रव भी चलेंगे। मक्का-मदीना में भी चन्द्र ग्रहण के प्रभाव से आतंकवादी प्रभावित होंगे। **जेही पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय। सभी वस्तुएं महंगी बिकै सस्ताई हट जाय॥** नेताओं को तो आस्तीन का सांप जैसी व्यथा चलेगी। शुक्ला ४ रविवारीय होने से बीमारी का प्रभाव बढ़ेगा। शुक्ला नवमी को शनिवार होने से मशीनरी, अस्त्र-शस्त्र, सीमेन्ट, पत्थरों में वृद्धि होगी। पूर्णिमा गुरुवारी मृगशिरा नक्षत्र युक्त होना शुभ दायक योग वाली है। मंगलवारी संक्रांति के कारण लालरंग की वस्तुओं में तेजी तथा विद्रोह एवं विवाद का मामला बढ़ेगा। न्यायालयों में भीड़ रहेगी। **व्यापार**–दूध, दही, शहद, दवाईयां, मक्खन, उड़द, दाख, बादाम, मिर्ची, धागा, जीरा, गुड़ व मिश्री में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, जेवराती बाजार एवं शेयर्स बाजार विशेष तेज होगा। शृंगार संबंधी विक्रेता इस पक्ष में अच्छा लाभ कमायेंगे। टेन्ट, विद्युत एवं आभूषणों का भाव भी तेज रहेगा। **शकुन**–तेरह चौदह तीज दिन पौषे गर्भ धरन्त। पावस होय सुहावनी वृक्षा सकल फलन्त॥ उत्तरा भाद्रपद जल बरसे रेवती चित्रा स्वाती निहार। सूखा जाय नहीं प्रति पक्षी जो पावस में जुहार॥ पौषे उजेली सप्तमी आठे नवमी गाज। मेघ होय तो जान लें अब सदिये सब काज॥ **आकाश लक्षण**–भारत में शीत लहर का योग बनता है। कोहरा का प्रभाव भी बढ़ेगा। पूर्वी भारत में प्राकृतिक आपदा का प्रभाव भी बनेगा। गो हत्या का मामला नया रुख धारण करेगा। साम्प्रदायवाद से हिंसा योग भी मं+के+श से बनता है।

ता. ३१ दिसम्बर ❖ पौष शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

गु. ११ ने. ह. | १० | सू. बु. ९ प्लू. शु. रा. | ८ | ७ | श. ६ | १२ | ३ के. चं. | १ | ५ | २ | ४ मं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	३	८	१०	८	५	८	२	१०	१०	८
१५	४	२४	२५	२	१२	१०	२७	२७	२९	०	९
२५	१६	५७	५५	९	३५	२८	४०	४०	३	३३	१६
४७	४	५२	४५	२१	१९	५४	५४	५४	५१	८	१४
६१	८१६	८	५५	१२	७५	१	३	३	१	१	२
०७	५७	५२	५९	०५	३०	२६	११	११	२९	४५	१०
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघ कृष्ण पक्ष-२०

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १ से १५ जनवरी सन् २०१० ई.। रा. मिति १० से २४ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१०	शु	१	३५	२	२१	१६	पुन	५१	४८	२७	५९	ऐं	३६	३८	२१	५५	बा	९	२५	११	२	२५	४६	७	१६	१७	३४	१८	१४	1	क.२२।४१	८	१६	२६	५४	५३ ८	१८	२१	७	३६
११	श	२	२६	१५	१७	४६	पु	४४	५६	२५	१४	वै	२६	२१	१७	४८	तै	०	३७	७	३१	२५	४७	७	१६	१७	३५	१९	१५	2	कर्क	८	१७	२८	२	७	१९	३२	८	२७
१२	र	३	१७	४७	१४	२३	श्ले	३८	३१	२२	४०	वि	१६	१८	१३	४७	वि	१७	४७	१४	२३	२५	४८	७	१६	१७	३५	२०	१६	3	सिं.२२।४०	८	१८	२९	९	८	२०	४२	९	१२
१३	चं	४	१०	०	११	१६	म	३२	५५	२०	२६	प्री	६ ५८	४९ ९	१० ३०	० ३२	बा	१०	०	११	१६	२५	५०	७	१६	१७	३६	२१	१७	4	सिंह	८	१९	३०	१७	८	२१	४९	९	५१
१४	मं	५	३	१४	८	३४	पूफा	२८	२६	१८	३९	सौ	५०	२९	२७	२८	तै	३	१४	८	३४	२५	५१	७	१६	१७	३७	२२	१८	5	क. २४।२७	८	२०	३१	२५	९	२२	५३	१०	२८
०	मं	६	५७	४५	३०	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	बु	७	५३	४३	२८	४६	उफा	२५	१९	१७	२४	शो	४३	५९	२४	५२	वि	२५	३२	१७	२९	२५	५३	७	१६	१७	३८	२३	१९	6	कन्या	८	२१	३२	३४	८	२३	५५	११	२
१६	गु	८	५१	१८	२७	४८	ह	२३	४३	१६	४६	अति	३८	४४	२२	४६	बा	२२	१८	१६	१२	२५	५४	७	१७	१७	३८	२४	२०	7	तु. २८।४१	८	२२	३३	४२	९	२४	५७	११	३७
१७	शु	९	५०	३१	२७	२९	चि	२३	४२	१६	४६	सु	३४	४६	२१	११	तै	२०	४२	१५	३४	२५	५६	७	१७	१७	३९	२५	२१	8	तुला	८	२३	३४	५१	९	२५	५७	१२	१३
१८	श	१०	५१	१९	२७	४८	स्वा	२५	१६	१७	२३	धृ	३२	२	२०	६	व	२०	४३	१५	३४	२५	५८	७	१७	१७	४०	२६	२२	9	तुला	८	२४	३६	०	९	२६	५७	१२	५१
१९	र	११	५३	३६	२८	४३	वि	२८	१८	१८	३६	शू	३०	[illegible]	१९	२८	ब	२२	१७	१६	१२	२५	५९	७	१७	१७	४१	२७	२३	10	वृ. १२।१५	८	२५	३७	९	९	२७	५६	१३	३४
२०	चं	१२	५७	१०	३०	९	अनु	३२	३९	२०	२०	गं	२९	५७	१९	१५	कौ	२५	१४	१७	२२	२६	१	७	१७	१७	४१	२८	२४	11	वृश्चिक	८	२६	३८	१८	८	२८	५१	१४	२०
२१	मं	१३	६०	०	-	-	ज्ये	३८	७	२२	३२	वृ	३०	१८	१९	२४	ग	२९	२३	१९	२	२६	४	७	१७	१७	४२	२९	२५	12	ध. २२।३२	८	२७	३९	२६	९	२९	४३	१५	११
२२	बु	१३	१	५१	८	१	मू	४४	३०	२५	५	ध्रु	३१	२४	१९	५१	व	१	५१	८	१	२६	६	७	१७	१७	४३	३०	२६	13	धनु	८	२८	४०	३५	९	३०	२९	१६	४
२३	गु	१४	७	२४	१०	१४	पूषा	५१	३६	२७	५५	व्या	३३	६	२०	३१	श	७	२४	१०	१४	२६	८	७	१७	१७	४४	मा.१	२७	14	धनु	८	२९	४१	४४	८	३१	१०	१७	०
२४	शु	३०	१३	३८	१२	४४	उषा	५९	१०	३०	५७	ह	३५	१२	२१	२२	ना	१३	३८	१२	४४	२६	१०	७	१७	१७	४५	२	२८	15	म. १०।४०	९	०	४२	५२	८	-	-	१७	५५

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

जनवरी मा. १ ता. ३१ सन् २०१० ई. प्रा., दशाश्वमेध घाटे स्नान A
भ. २८।४ से, A प्रा. (काशी)
भ. १४।२३ तक, **कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकष्ट चतुर्थी**
B एकादशी व्रत (सबका)
भ. ३०।२२ से, धनि. ४ गुरुः २३।३०
षष्ठी तिथि क्षयः
भ. १७।२९ तक, **स्वामी विवेकानंद ज., श्री रामानन्दाचार्य ज.**
कालाष्टमी, अष्टकाश्राद्ध
C जन्म-तप (जैन), **श्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दि.**
भ. १५।३४ से २७।४८ तक
उषायां सूर्यः ३०।११, मूले वक्री बुधः २७।१, षट्तिला B
उषायां शुक्रः १०।३, पूर्वोदयं बुधः २१।१२, श्री शीतल नाथ C
भौम प्रदोष व्रत, मेरु १३ (जैन), आदिनाथ निर्वाण कल्याणंक
भ. ८।१ से २१।७ तक, त्रयोदशी तिथि वृद्धिः, मकरे शुक्रः D
सौर माघ प्रा., मकरे सूर्यः १२।४० संक्रांती मु.३० सूती, पुण्यकाल E
शनि वक्री २४।२८, देवपितृकार्याऽमावस्या, मौनी अमावस्या, F

D २५।३९, **मास शिवरात्री व्रत, लोहड़ी उत्सव** (पं., हरि., हिमा.) E सम्पूर्ण दिवस, रटन्ति कालिका पूजन, **ऋषभ देव मोक्ष** (जैन), **माघ बिहु** (असम), **पोंगल पर्व** (केरला)
F द्वापर युगादि ३०, विशाल मेला (हरिद्वार व प्रयाग), भा. थलसेना दिवस

माघ कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	३	८	१०	८	५	८	२	१०	१०	८
२२	१६	२३	१७	३	२१	१०	२७	२७	२९	०	९
३३	५७	३८	२३	३५	२३	३६	१८	१८	१५	४५	३१
४२	०	५२	२५	४१	४४	३८	३८	३८	१३	४७	१८
६१	८१०	१४	७३	१२	७५	०	३	३	१	१	२
९	१४	२८	२९	३९	३०	४१	११	११	४९	५४	०८
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
पू.षा. ३	हस्त ३	आश्ले. ३	पू.षा. २	धनि. ४	पू.षा. ३	हस्त [illegible]	उ.षा. १	पुन. ३	पू.भा. ३	धनि. ३	मूल ३

१० | ८ | ९सू. | ७ | ने. ११गु. ह. | बु.शु. रा.प्लू. | श. ६ चं. | १२ | ३ के. | १ | ५ | २ | ४ मं.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार से शुक्रवार तक चलेगा। पक्ष में षष्ठी मंगल का क्षय तथा तिथि त्रयोदशी बुध की वृद्धि भी है। अतः तिथि क्षय एवं वृद्धि योग बनता है। **जेही पखचारे तिथि घटे बाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु महंगी बिके मंदी योग मिट जाय॥** सभी वस्तुओं के तेजी का योग बनता है। बुधोदय के प्रभाव से रसकस, मिठाई, तिल, घी में तेजी तथा व्यापारी वर्ग चिन्तित रहेगा। ग्रस्तास्त सूर्य ग्रहण योग से प्राकृतिक आपदा भी शुक्रवारी अमावस्या के योग से उषा नक्षत्रे प्राकृतिक-राजनैतिक बाधाओं का प्रतीक रहेगा। इस पक्ष में माघ कृष्ण चौदस गुरुवार दिनांक १४ जनवरी २०१० को भुवन भास्कर सूर्यदेव मकर राशि में प्रवेश करेगा। एवं उत्तरायण योग स्टै.टा. घं.मि. १२।०५ पर प्रवेश करेगा। वारात् ३, नक्षत्रात् ३, वारनाम नंदा, गणकान सुखदा, नक्षत्र नाम घोरा, शूद्रान सुखदा, मध्याह्न दो प्रहर व्यापिनी, द्विजान हन्ति। पश्चिमे गमनम्, वायव्यां दृष्टि, चतुष्पाद करणे प्रविष्ठा, नेष्ट फलम्। मेष वाहन, उपवाहन महिष, पीड़ा कारक योग। अति बंध्यावस्था (सूती) मु. ३० के योग से धान्य भावों में वृद्धि होगी। प्राकृतिक वातावरण अशुभ दायक रहेगा। राजनेताओं में खलबली तथा शीत लहर का प्रभाव ज्यादा होगा। हड़तालें क्रांतिकारी होने का योग है। व्यापार-दवाईयां, शृंगार सामग्री, दाख, बादाम, वस्त्र, मशीनरी, बारदाना, रेशम, कत्था के भावों में वृद्धि होगी। सर्राफा बाजार एवं शेयर्स बाजार भी बढ़ेगा। जीरा, सरसों, तिल, मूंग, मोठ के भावों में घटाबढ़ी योग बनेगा। भाव अस्थिर रहेंगे। गल्ला, ईख, ज्वार, बाजरा, ग्वार के भावों में एकाएक परिवर्तन योग बनता है। **शकुन**-माघ माह बादल साज धरे। तब सच मानो पथरा परै॥ माघ अमावस जल पड़े तो भादो सुखकार। पावस भरणी न जानिये जो नहीं माघ तुषार॥ माघ अंधेरी सप्तमी व अष्टमी दिन चीन। बादल बिजली लखि पड़ै श्रावण अति परवीन॥ ग्रहण योग अमावस्या शुक्रवार। स्त्री हिंसा का होवे अत्याचार॥ **आकाश लक्षण**-ग्रह [illegible] का योग। शीत प्रकोप से सिक्किम, असम, हि. प्रदेश, जम्मू आदि में अशांति रहेगी।

ता. १५ जनवरी ❖ माघ कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

गु.ह.ने.११ | ९ चं. बु. रा. प्लू. | सू. | १२ | ८ | शु. १० | ७ | १ | ४ मं. | २ | ६ श. | ३ के. | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	८	३	८	१०	९	५	८	२	१०	१०	८
०	२७	२१	११	५	१	१०	२६	२६	२९	१	९
४२	२६	२२	३५	१८	२७	३८	५३	५३	३०	१	४८
५२	५५	५८	१६	५२	३४	५७	१२	१२	५३	२६	७
६१	७१०	१९	१	१३	७५	०	३	३	२	२	२
८	२१	५६	४६	१२	२८	१३	११	११	०९	२	३
मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
उ.षा. २	उ.षा. २	आश्ले. २	मूल ४	धनि. ४	उ.षा. २	हस्त १	उ.षा. १	पुन. ३	पू.भा. ३	धनि. ३	मूल ३

…कहीं-कहीं वर्षा, बर्फ गिरने का योग। शीत प्रकोप से सिक्किम, असम, हि. प्रदेश, जम्मू आदि में अशांति रहेगी।

माघ शुक्ल पक्ष-२१ श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १६ से ३० जनवरी सन् २०१० ई., राष्ट्रीय मिति २५ पौष से ९ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२५	श	१	२०	१७	१५	२३	श्र	६०	०	-	-	व	३७	३५	२२	१८	ब	२०	१७	१५	२३
२६	र	२	२७	६	१८	७	श्र	६	५९	१०	४	सि	४०	१	२३	१७	कौ	२७	६	१८	७
२७	चं	३	३३	४८	२०	४७	ध	१४	४७	१३	११	व्य	४२	२०	२४	१२	तै	०	३०	७	२८
२८	मं	४	४०	२	२३	१७	श	२२	१३	१६	९	वरि	४४	१६	२४	५८	व	७	०	१०	४
२९	बु	५	४५	२७	२५	२६	पूभा	२८	५९	१८	५१	प	४५	३४	२५	२९	ब	१२	५२	१२	२५
३०	गु	६	४९	३८	२७	७	उभा	३४	४१	२१	८	शि	४५	५९	२५	३९	कौ	१७	४३	१४	२१
मा१	शु	७	५२	१७	२८	१०	रे	३८	५८	२२	५१	सि	४५	१४	२५	२१	ग	२१	११	१५	४४
२	श	८	५३	८	२८	३०	अ	४१	३५	२३	५३	सा	४३	८	२४	३०	वि	२२	५७	१६	२६
३	र	९	५२	२	२८	३	भ	४२	२१	२४	११	शुभ	३९	३३	२३	४	बा	२२	५०	१६	२३
४	चं	१०	४८	५९	२६	५०	कृ	४१	११	२३	४३	शु	३४	२७	२१	१	तै	२०	४५	१५	३२
५	मं	११	४४	५	२४	५२	रो	३८	१३	२२	३१	ब्र	२७	५०	१८	२२	व	१६	४५	१३	५६
६	बु	१२	३७	३४	२२	१५	मृ	३३	३६	२०	४०	ऐं	१९	५३	१५	१०	ब	११	१	११	३८
७	गु	१३	२९	४३	१९	६	आ	२७	३९	२८	१६	वै	१०	४५	११	३१	कौ	३	४८	८	४४
८	शु	१४	२०	५५	१५	३५	पुन	२०	४३	१५	३०	वि	०/५०	४४/७	७/२७	३०/२५	व	२०	५५	१५	३५
९	श	१५	११	३५	११	५०	पु	१३	१५	१२	३०	आ	३९	१६	२२	५४	ब	११	३५	११	५०

दिनांक अं.	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	चरण	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
16	२६	१२	७	१६	१७	४५	३	२९	मकर	९	१	४४	०	६१/७	७	४७	१८	४९	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० साम्यार्घः, मार्गी बुधः २४।२१
17	२६	१५	७	१६	१७	४६	४	सफर	कु.२३।३८	९	२	४५	७	७	८	२०	१९	४२	सफर मु.मा. २ प्रा., पंचक २३।३८ से, बाबा लालदयाल ज.
18	२६	१७	७	१६	१७	४७	५	२	कुम्भ	९	३	४६	१४	६	८	५०	२०	३५	व्यतिपात पुण्यं, **गौरी तृतीया व्रत**, गोंत्तरी (पंजाब)
19	२६	२०	७	१६	१७	४८	६	३	कुम्भ	९	४	४७	२०	५	९	१९	२१	२७	भ. १०।४ से २३।१७ तक, पूषायां ४ राहुः पुनर्वसोः २ केतुः A
20	२६	२३	७	१६	१७	४९	७	४	मी.१२।१३	९	५	४८	२५	५	९	४७	२२	१९	सायन कुम्भे सूर्यः १०।०३, मूले ४ प्लूटो २६।६, **वसन्त (श्री)** B
21	२६	२५	७	१५	१७	५०	८	५	मीन	९	६	४९	३०	३	१०	१६	२३	१३	पूषायां बुधः ७।४७, शते १ गुरुः ७।२३, श्रवणे शुक्रः २४।३१, C
22	२६	२८	७	१५	१७	५०	९	६	मे.२२।५१	९	७	५०	३३	३	१०	४१	२४	९	भ. २८।१० से, पंचक २२।५१ तक, रा. माघ प्रा., **रथ सप्तमी**, D
23	२६	३१	७	१५	१७	५१	१०	७	मेष	९	८	५१	३६	१	११	२२	२५	८	भ. १६।२६ तक, **श्री दुर्गाष्टमी, भीष्म ८, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ज.**
24	२६	३४	७	१५	१७	५२	११	८	वृ.३०।८	९	९	५२	३७	१	१२	२	२६	१०	श्रवणे सूर्यः ८।२५ E भा. गणतन्त्र दिवस ६१ वां वर्ष
25	२६	३७	७	१४	१७	५३	१२	९	वृष	९	१०	५३	३८	६०/५९	१२	४८	२७	१४	D आरोग्य सप्तमी, अचल ७, मन्वादि ७, चंद्रभाग ७
26	२६	४०	७	१४	१७	५४	१३	१०	वृष	९	११	५४	३७	५९	१३	४२	२८	१७	भ. १३।५६ से २४।५२ तक, **जया एकादशी व्रत** (सबका), E
27	२६	४३	७	१३	१७	५५	१४	११	मि.९।४०	९	१२	५५	३६	५७	१४	४५	२९	१७	पू.भा. ४ मीने हर्षल १३।२०, **भीष्म १२**, भीष्म तर्पण, **प्रदोष** F
28	२६	४६	७	१३	१७	५५	१५	१२	मिथुन	९	१३	५६	३३	५७	१५	५३	३०	११	कल्पादि १३, गुरु हरराय ज. (प्रा. मत से), मेला पंचखण्ड G
29	२६	४९	७	१२	१७	५६	१६	१३	क.१०।१३	९	१४	५७	३०	५५	१७	५	३१	०	भ. १५।३५ से २५।४२ तक, **श्री रामचरण स्नेही ज.**, सत्य H
30	२६	५३	७	१२	१७	५७	१७	१४	कर्क	९	१५	५८	२५	५४	१८	१७	-	-	पूर्णिमा पुण्यं, संत रैदास ज., श्री ललिता ज., माघ स्नान ❖ H व्रत, पूर्णिमा व्रत, श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन)

A९।८, विनायक ४ व्रत, वरद ४, तिल ४, कुन्द ४ B पंचमी, सरस्वती पूजन, रति कामोत्सव, तक्षक पूजा C दारिद्रय हरण षष्ठी, शीतला ६ (बं.) F व्रत, वेणेश्वर मेला प्रा. (बांसवाड़ा) G पीठ विराट नगर (राज.), डेजर्ट उत्सव प्रा. ३ दिन का (जैसलमेर), लाला लाजपतराय ज. ❖पूर्ण, दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ण (काशी), महात्मा गांधी पुण्य दि.

माघ शुक्ल ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	३	८	१०	९	५	८	२	१०	१०	८
८	३	१८	१४	७	११	१०	२६	२६	२९	१	१०
५१	३०	२९	३८	६	३१	३४	२७	२७	४९	१८	४
३६	२५	५४	४७	३	३	१६	४६	४६	९	७	१४
६१	७७२	२३	४७	१३	७५	१	३	३	२	२	१
१	१५	१९	४९	३९	२३	५	११	११	२७	९	५७
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१२ | गु. ह. ने.११ | १० सू. शु. | ९ बु.प्लू. रा. | ८ | ७ | १ चं. | ४ मं. | ६ श. | २ | ३ के. | ५

[पक्ष फलम्]

शनिवार से शुभारंभ यह पक्ष श्रवण नक्षत्र योग में चन्द्रदर्शन (मु.३०) श्री वल्लभ जयन्ती से हो रहा है। तथा इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा में वृद्धि का योग बनता है। प्रजा वृद्धिस्तु भार्गव। शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्षः च सुखम् तत्र प्रवर्तते॥ पांच शनिवार होने से महंगाई बढ़ेगी। शनिवारा यदा पंच जायन्ते, पाताल कम्पति फणे योग। ईशान देशः संकट योगा वह्नि– दाहो महर्घता भोग॥ शुक्रवारी अमावस्या के योग से जलभ्रंश योग बनेगा। उत्तराषाढ़ा योग से दुर्भिक्ष बनता है। शुक्ल प्रतिपदा शनिवारीय योग से सब धान्योत्पत्ति अच्छी हो। उत्तम खेती का योग बनता है। शुक्ला अष्टमी को कृतिका नहीं होने से फाल्गुन में रोली रोग लगेगा। पूर्णिमा पुष्य नक्षत्र के योग से होने के कारण और मघा नक्षत्र का अभाव के कारण महंगाई विशेष बनेगी। गुरुवार की संक्रांति के योग से पीले रंग की वस्तुएं महंगी होंगी। धान्यादि भाव मंदा। शेयर्स बाजार विशेष उछलेगा। मेघालय, अरुणाचल, अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा, मारिशस में धार्मिक कार्यों का वातावरण बढ़ेगा। व्यापार–चीनी, बूरा, पताशा, रसकस, तेल, दूध, दही, खोआ, पनीर, पत्थर, सीमेन्ट, लोहा, खड्डी, लकड़ी, वस्त्र तथा गुवार के भावों में तेजी बनेगी। गेहूं, मूंग, मूंगफली, सोयाबीन, सोना, चांदी, ताम्बा, जस्ता, प्लास्टिक के भावों में उतार–चढ़ाव बना रहेगा। चौपाया जानवर तथा भैंस, घोड़ा, ऊंट का मूल्य भी तेज होगा। शकुन–माघी सप्तमी शुक्ला बादल मेघ करन्त। तो आषाढ़ में भड़डरी घनो मेघ बरसन्त॥ माघ सुदी पूनम दिना चन्द्र निर्मल होय। पशु बेचो संग्रह करो काल हलाहल होय॥ माघ सुदी नौमी दिना चौथे प्रहर निहार। बादल हो तो भादवा वर्षे भली प्रकार॥ आकाश लक्षण–यत्र–तत्र मेघ गर्जन, हल्की वर्षा, ओले गिरना, सर्द–गर्म वातावरण का प्रभाव बढ़ेगा। मरुस्थलों में आंधी–तूफान का जोर भी बनेगा। समुद्री तूफान से मछुआरों को भय रहेगा। हत्याएं इस पक्ष में अधिक होंगी।

ता. ३० जनवरी ❖ माघ शुक्ल १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

११ गु. ने. | बु. रा. | १० सू. ९ प्लू. | ८ | १२ ह. | शु. | ७ | १ | ४ चं.मं. | ६ श. | २ | ३ के. | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	३	८	१०	९	५	८	२	११	१०	८
१५	१२	१५	२१	८	२०	१०	२६	२६	०	१	१०
५८	१२	४३	२३	४२	१८	२४	५	५	७	३३	१७
२५	४९	२५	३१	२८	३२	३५	३०	३०	३	२१	३५
६०	११६	२३	६८	१३	७५	१	३	३	२	२	१
५४	१४	५९	३२	५६	१९	४७	११	११	४१	१३	५०
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. ३१ जन. से १४ फरवरी सन् २०१० ई., राष्ट्रीय मिति १० से २४ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
१०	र	१	२	७	८	२	श्ले	५/५८	४०/२५	९/३०	२८/३३	सौ	२८	३०	१८	३६	कौ	२	७	८	२	२६	५६	७	११	१७	५८	१८	१५	31	सिं. ९।२८	९	१६	५९	१९	५०/५३	१९	२७	७	४३
०	र	२	५२	५६	२८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	चं	३	४४	३१	२५	०	पूफा	५१	५८	२७	५८	शो	१८	१२	१४	२८	व	१८	३७	१४	३८	२६	५९	७	११	१७	५९	१९	१६	फ.1	सिंह	९	१८	०	१२	५३	२०	३५	८	२२
१२	मं	४	३७	१६	२२	५	उफा	४६	४४	२५	५२	अति	८	४०	१०	३९	ब	१०	४४	११	२८	२७	३	७	१०	१८	०	२०	१७	2	कं. ९।२४	९	१९	१	५	५१	२१	४१	८	५९
१३	बु	५	३१	३२	१९	४७	ह	४३	४	२४	२४	सु	०/५३	१४/६	७/२८	१५/२४	कौ	४	१२	८	५१	२७	६	७	१०	१८	०	२१	१८	3	कन्या	९	२०	१	५६	५१	२२	४५	९	३४
१४	गु	६	२७	३७	१८	१२	चि	४१	१४	२३	३९	शू	४७	३१	२६	१०	व	२७	३७	१८	१२	२७	१०	७	९	१८	१	२२	१९	4	तु. ११।५६	९	२१	२	४७	५०	२३	४८	१०	११
१५	शु	७	२५	४२	१७	२६	स्वा	४१	२४	२३	४२	गं	४३	३२	२४	३४	ब	२५	४२	१७	२६	२७	१३	७	९	१८	२	२३	२०	5	तुला	९	२२	३	३७	४९	२४	४९	१०	५०
१६	श	८	२५	५१	१७	२८	वि	४३	३२	२४	३३	वृ	४१	९	२३	३५	कौ	२५	५१	१७	२८	२७	१७	७	८	१८	३	२४	२१	6	वृ.१८।१६	९	२३	४	२६	४८	२५	४९	११	३२
१७	र	९	२७	५७	१८	१८	अ	४७	३०	२६	७	धु	४०	१३	२३	१२	ग	२७	५७	१८	१८	२७	२१	७	७	१८	४	२५	२२	7	वृश्चिक	९	२४	५	१४	४७	२६	४६	१२	१७
१८	चं	१०	३१	४७	१९	४९	ज्ये	५३	१	२८	१९	व्या	४०	३३	२३	२०	वि	३१	४७	१९	४९	२७	२४	७	७	१८	४	२६	२३	8	ध. २८।१९	९	२५	६	१	४६	२७	३९	१३	७
१९	मं	११	३६	५८	२१	५३	मू	५९	४३	३०	५९	ह	४१	५१	२३	५०	ब	४	१५	८	४८	२७	२८	७	६	१८	५	२७	२४	9	धनु	९	२६	६	४७	४६	२८	२७	१४	०
२०	बु	१२	४३	७	२४	२०	पूषा	६०	०	-	-	व	४३	५२	२४	३८	कौ	९	५८	११	४	२७	३२	७	५	१८	६	२८	२५	10	धनु	९	२७	७	३३	४४	२९	१०	१४	५४
२१	गु	१३	४९	४८	२७	०	पूषा	७	१३	९	५८	सि	४६	१६	२५	३५	ग	१६	२६	१३	३९	२७	३६	७	४	१८	७	२९	२६	11	म.१६।४४	९	२८	८	१७	४३	२९	४८	१५	५९
२२	शु	१४	५६	४०	२९	४४	उ	१५	४	१३	५	व्य	४८	४८	२६	३५	वि	२३	१५	१६	२२	२७	३९	७	४	१८	७	फा.१	२७	12	मकर	९	२९	९	०	४१	३०	२२	१६	४४
२३	श	३०	६०	०	-	-	श्र	२२	५७	१६	१४	वरि	५१	१६	२७	३३	चतु	३०	४	१९	४	२७	४३	७	३	१८	८	२	२८	13	कुं. २९।४६	१०	०	९	४१	४०	३०	५३	१७	३७
२४	र	३०	३	२४	८	२४	ध	३०	३६	१९	१७	परि	५३	२९	२८	२५	ना	३	२४	८	२४	२७	४७	७	२	१८	९	३	२९	14	कुम्भ	१०	१	१०	२२	३९	-	-	१८	३०

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

पूर्वास्तंगुरोः १३ फरवरी

पश्चिमोदयं शुक्रः ७ फर.

- 31: —
- 0: द्वितीया तिथि क्षयः
- फ.1: भ. १४।३८ से २५।० तक, फरवरी मा.२ ता. २८ प्रा., A
- 2: कृष्ण चतुर्थी व्रत
- 3: उपायां बुधः १५।२०
- 4: भ. १८।१२ से २९।४९ तक, शते २ गुरुः १८।११, चेहल्लुम (मु.)
- 5: मकरे बुधः २९।१७ — B अष्टका श्राद्ध
- 6: कुम्भे शुक्रः २२।५३, धनिष्ठायां सूर्यः ११।३९, कालाष्टमी, B
- 7: भ. ३१।३ से, समर्थ गुरु रामदास ज., पश्चिमोदयं शुक्रः ७।५८
- 8: भ. १९।४९ तक, महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
- 9: उफायां ४ वक्री शनिः २५।२८, विजया एकादशी व्रत (सबका)
- 10: गुरु वृद्धत्वारम्भः १६।२१, शुक्र बाल्यत्व पूर्ण ७।५८
- 11: भ. २७।० से, शते शुक्रः ३०।३२, प्रदोष व्रतम्
- 12: भ. १६।२२ तक, व्यतिपात पुण्यं, सौर फाल्गुन प्रा., कुम्भे C
- 13: पंचक २९।४६ से, संक्रांती पुण्यकाल ८।४ तक, श्रवणे बुधः D
- 14: अमावस्या तिथि वृद्धिः, वेलेन्टाइन डे

A धनिष्ठायां शुक्रः १५।२०, मेला मस्तुआणा (पं.) **C** सूर्यः २५।४० संक्रांती मु.३० ऊभी, **श्री महाशिवरात्री व्रत** (ज्योतिर्लिंगानां अभिषेक पूर्वक पूजनम्), **श्री वैद्यनाथ ज.**
D ९।४२, पूर्वास्तं गुरोः १६।२१, **देवपितृकार्याऽमावस्या, शिव खप्पर पूजन, सहादते इमाम हसन व आखरी चाहर शम्बा** (मु.)

फाल्गुन कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	३	९	१०	९	५	८	२	११	१०	८
२३	२३	१२	०	१०	२९	१०	२५	२५	०	१	१०
४	८	५८	०	२०	५	९	४३	४३	२६	४९	३०
२६	५८	५४	४२	४८	३०	५९	१५	१५	३०	०	३
६०	७६७	२२	७९	१४	७५	३	३	३	३	२	१
४८	४२	२८	५७	११	१४	११	११	११	०६	१७	३२
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ		उ	अ	अ	-	-	-
श्रवण ४	विशा. १	पुष्य ३	उ.षा. २	शत. २	धनि. २	हस्त १	पू.षा. ४	पुन. २	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ४

कुण्डली (ता. ६ फरवरी): गु.ने.११, ९ प्लू.रा., १२ ह., १०सू. शु.बु., ७ चं., ८, १, ४ मं., २, श. ६, ३ के., ५

[पक्ष फलम्]
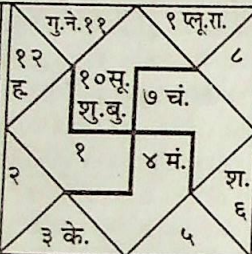
यह पक्ष रविवार से शुभारंभ हो रहा है। द्वितीया तिथौ क्षयः तथा अमावस्या वृद्धि के योग से जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु तेजी बिके मन्दापन हट जाय॥ कुंभ राशि स्थित शुक्रेः सुभिक्षः प्रचुरं धनं जलं। भवत्यत्र न सन्देहा लोके सर्व निरामया॥ यानि इस पक्ष में धार्मिक आयोजनों की भारत में भरमार रहेगी। इसी पक्ष में भुवन भास्कर सूर्यदेव दिनांक १२ फरवरी २०१० को वार शुक्रवार को भा.स्टै.टा. २४।५९ घं. मि. पर कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। वारात् २, नक्षत्रात् ३, वारनाम महोदरी, चोरान सुखदा, अपर रात्रि तृतीय प्रहर व्यापिनी, नरान हन्ति। पूर्व गमनम्, आग्नेया दृष्टि, अशुभ स्थाने दृष्टि योग। शकुनि करणे प्रविष्टा। श्वान वाहन, शार्दूलोपवाहन अशुभ फलदायक योग बनेगा। पाशायुधं, गुड़ भक्षणम्, बंध्यावस्था (ऊभी) मु. ३० धान्ये भावों में महंगाई बढ़ेगी। आसाम, अरुणाचल, वाराणसी, नोएडा, चैन्नई, विशाखापटनम, जयपुर एवं जैसलमेर में विस्फोट जन्य वारदात बनेंगी। प्राकृतिक आपदा योग भी है। व्यापार–मूंग, मोठ, जीरा, तिल, चना के भावों में कुछ गिरावट आयेगी। सट्टा बाजार, शेयर्स बाजार भी घटेगा। तिलहन, दलहन, सरसों के भावों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, तांबा, लोहा के भाव स्थिर रहेंगे। हींग, प्याज, अरण्ड, बारदाना में तेजी योग।
शकुन–फागुन बदी जू दूज दिन बादल होय तीज। बरसे श्रावण भादों खेलो छोटी तीज॥ फागुन बदी पंचमी जो बादल गाज करन्त। अन्न भावों में मंदी तिलहन तेज बनंत॥ आकाश लक्षण–भू–स्खलन, शीत लहर या तूफान (वायु वेग) चलेगा। फसलों को नुकसान का योग बनेगा। दक्षिण प्रांतों में, पूर्वी देशों में प्राकृतिक आपदा योग घटेगा।

ता. १४ फरवरी ❖ फाल्गुन कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १४ फरवरी): ह.१२, ११, १०चं.बु., १, सू.गु. शु.ने., रा. ९ प्लू., ८, २, ५, ३ के., ७, ४ मं., ६ श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	९	३	९	१०	१०	५	८	२	११	१०	८
१	२९	१०	११	१२	९	९	२५	२५	०	२	१०
१०	५१	१२	१२	१५	७	४७	१७	१७	५०	७	४३
२२	५९	१०	२३	०	५	४०	४८	४८	२३	११	५
६०	७७१	१८	९८	१४	७५	३	३	३	३	२	१
३९	३८	२१	३९	२३	८	११	११	११	०६	१७	३२
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	अ		उ	अ	अ	-	-	-
धनि. ३	धनि. १	पुष्य ३	श्रवण १	शत. १	शत. १	उ.फा. ४	पू.षा. ४	पुन. १	पू.भा. ४	धनि. ३	मूल ४

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

श्री सं. २०६६ शाके १९३१

ता. १५ से २८ फरवरी सन् २०१० ई., रा. मिति २५ माघ से ८ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
२५	चं	१	९	४३	१०	५५	श	३७	३८	२२	९	शि	५५	१७	२९	८	ब	९	४३	१०	५५	२७	५१	७	१	१८	१०	४	३०	15	कुम्भ	१०	२	११	१	६०/३७	७	२२	१९	२२	चन्द्रदर्शनम् मु. १५ महर्घता
२६	मं	२	१५	२७	१३	११	पूभा	४४	२३	२४	४६	सि	५६	३४	२९	३८	कौ	१५	२७	१३	११	२७	५५	७	०	१८	१०	५	रज्ब १	16	मी.१८।८	१०	३	११	३८	३६	७	५१	२०	१५	रवि-उल-अव्वल मु.मा.३ प्रा., फुलरिया दूज, श्री रामकृष्ण परमहंस ज.
२७	बु	३	२०	२४	१५	९	उभा	५०	९	२७	३	सा	५७	११	२९	५२	ग	२०	२४	१५	९	२७	५९	७	०	१८	११	६	२	17	मीन	१०	४	१२	१४	३४	८	२०	२१	८	भ. २७।५७ से, **पं. लेखराम वीर तृतीया**
२८	गु	४	२४	२५	१६	४५	रे	५४	५७	२८	५७	शुभ	५७	२	२९	४७	वि	२४	२५	१६	४५	२८	३	६	५९	१८	१२	७	३	18	मे.२८।५७	०	५	१२	४८	३३	८	५०	२२	३	भ. १६।४५ तक, पंचक २८।५७ तक, सायन मीने सूर्यः २४।१७, **A**
२९	शु	५.	२७	१७	१७	५३	अ	५८	३३	३०	२३	शु	५५	५५	२९	२०	बा	२७	१७	१७	५३	२८	७	६	५८	१८	१३	८	४	19	मेष	१०	६	१३	२१	३०	९	२३	२३	०	शते. सूर्यः १६।५, **महर्षि याज्ञवल्क जयंती**
३०	श	६	२८	५०	१८	२९	भ	६०	०	-	-	ब्र	५३	४५	२८	२७	तै	२८	५०	१८	२९	२८	११	६	५७	१८	१३	९	५	20	मेष	१०	७	१३	५१	२९	१०	०	२४	०	**गोरूपिणी षष्ठी** (बंगाल)
फा.१	र	७	२८	५३	१८	२९	भ	०	५०	७	१६	ऐं	५०	२२	२७	५	व	२८	५३	१८	२९	२८	१५	६	५६	१८	१४	१०	६	21	वृ. १३।२४	१०	८	१४	२०	२७	१०	४२	२५	१	भ. १८।२९ से ३०।९ तक, रा. फाल्गुन प्रा., धनिष्ठायां बुधः २७।२८
२	चं	८	२७	१८	१७	५०	कृ	१	३४	७	३३	वै	४५	४२	२५	१२	ब	२७	१८	१७	५०	२८	१९	६	५५	१८	१५	११	७	22	वृष	१०	९	१४	४७	२५	११	३२	२६	२	पूभायां शुक्रः २२।१५, **श्री दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रारम्भ, B**
३	मं	९	२४	४	१६	३२	रो	०/५८	४१/९	७/३०	१०/२०	वि	३९	४४	२२	४८	कौ	२४	४	१६	३२	२८	२३	६	५४	१८	१५	१२	८	23	मि. १८।४५	१०	१०	१५	१२	२३	१२	२८	२७	१	**B श्री दादूदयाल ज., अष्टान्हिका प्रा. (जैन)**
४	बु	१०	१९	१३	१४	३४	आ	५४	७	२८	३२	प्री	३२	३०	१९	५३	ग	१९	१३	१४	३४	२८	२८	६	५३	१८	१६	१३	९	24	मिथुन	१०	११	१५	३५	२२	१३	३२	२७	५६	भ. २५।२१ से, पूर्वास्तं बुधः ८।८
५	गु	११	१२	५३	१२	१	पुन	४८	४५	२६	२२	आ	२४	५	१६	३०	वि	१२	५३	१२	१	२८	३२	६	५२	१८	१७	१४	१०	25	क. २०।५७	१०	१२	१५	५७	१९	१४	४०	२८	४६	भ. १२।१ तक, कुम्भे बुधः २९।४९, **आमलकी एकादशी व्रत C**
६	शु	१२	५	१८	८	५८	पु	४२	२१	२३	४८	सौ	१४	४३	१२	४४	बा	५	१८	८	५८	२८	३६	६	५१	१८	१७	१५	११	26	कर्क	१०	१३	१६	१६	१७	१५	५१	२९	३१	**प्रदोष व्रतम्, गोविन्द १२, मेला श्याम जी पूर्ति खाटू** (राज.)
०	शु	१३	५६	४३	२९	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षयः
७	श	१४	४७	३७	२५	५३	श्ले	३५	१६	२०	५६	शो	४/५४	३७/४	८/२८	४१/२८	ग	२२	१४	१५	४४	२८	४०	६	५०	१८	१८	१६	१२	27	सिं.२०।५६	१०	१४	१६	३३	१६	१७	१	३०	१२	भ. २५।५३ से, **ईद-ए-मिलाद** (मु.)
८	र	१५	३८	२२	२२	१०	म	२७	५६	१७	५९	सु	४३	२९	२४	१३	वि	१३	०	१२	१	२८	४४	६	४९	१८	१९	१७	१३	28	सिंह	१०	१५	१६	४९	१४	१८	१०	-	-	भ. १२।१ तक, **सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत पुण्यं च, हालिका D**

A शते ३ गुरुः १७।४६, **वसंत ऋतु प्रा., विनायक चतुर्थी व्रत**, संत ४ (उड़ीसा) **C** (सबका), मेला श्याम जी २ दिन का, श्रीराम चरण स्नेही फूलडोल, मेला शाहपुरा (मेवाड़)
D **दहन, होलाष्टक पूर्ति, मन्वादि १५**, अष्टान्हिका पूर्ति (जैन), **श्री चैतन्य महाप्रभु ज., डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दि.**

फाल्गुन शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	३	९	१०	१०	५	८	२	११	१०	८
९	८	८	२३	१४	१९	९	२४	२४	१	२	१०
१४	५१	४	२८	१०	७	२०	५२	५२	१५	२५	५४
४७	५०	५२	८	२६	३९	४	२२	२२	४१	२४	३६
६०	८१०	१२	९६	१४	७४	३	३	३	३	२	१
२५	४२	३५	१२	२८	५९	४६	११	११	१५	१५	१९
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	अ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ह.१२ | १० बु. | १ | ११ शु.सू. ने.गु. | ९प्लू. रा. | ८ | २चं. | ३ के. | ५ | ७ | ४ मं. | ६ श.

[पक्ष फलम्]

इस पक्ष का शुभारंभ सोमवार से हो रहा है। चन्द्रदर्शन मु. १५, मंगलवार, फुलेरिया दूज योग तथा गुरु भी अस्त हो रहा है। फलतः पक्ष में अशांति दायक योग घटेंगे। गृह युद्ध अथवा पारिवारिक विवाद योग बनेंगे। इस माह में पांच रविवारों का फल भी नेष्ट बनता है। **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्ष छत्र भंगश्च तथाऽस्ते च महद् भयम्॥** पांच रविवारों से दुर्भिक्ष राजकीय कार्यों में बाधक तथा राष्ट्रीय ध्वज का झुकना, विचित्र घटनाओं का प्रभाव बढ़ना आदि अशुभ घटनाएं घटेंगी। मार्गशीर्ष से फागुन शुक्ल तक तिथियों की वृद्धि होने से स्वास्थ्य योग अच्छा बनेगा। बीमारियों का योग कम होगा। कृष्ण षष्ठी को चित्रा नक्षत्र होने से तीन मास तक सुभिक्ष योग बनेगा। अमावस्या रविवार और धनिष्ठा के योग से दुर्भिक्ष की घटनाएं बनेंगी। शुक्ला अष्टमी को कृतिका उदय वेला में होने से सुभिक्ष योग बनता है। शुक्ला दशमी को आर्द्रा नक्षत्र के योग से अवर्षण योग बनेगा। पूर्णिमा मघा युक्त होने से समर्धता का योग बनेगा। शुक्रवार की संक्रांति होने से प्रजा सुखी। स्त्री वर्ग मनमानी योग से भी जीतेगी। सोना, चांदी के भावों में तेजी बनेगी। गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी आदि भी जोरदार तेजी के क्रम में होंगे। विश्व में अपहरण जन्य घटना एवं तलाक योग ज्यादा प्रभावित होंगे। तिलहन बाजार में घटाबढ़ी रहेगी। व्यापार–जस्ता, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, रुई, जीरा, सरसों, कपड़ा, तिल, तेल, हींग, लहसुन, गुड़, चना, गेहूं आदि के भावों में तेजी होगी। गुड़, शक्कर, बारदाना के भावों में घटाबढ़ भी रहेगी। मशीनरी सामग्री में तेजी का अवसर तेज बनेगा। सोयाबीन का भाव अचानक तेजी में जायेगा। **शकुन–शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त। किसी पक्ष की प्रतिपदा को महंगा धान्य समस्त॥ सत अठ नव दस ग्यारसी फागुन सुदी में जोय। कृतिका करे सुभिक्ष अरु आर्द्रा उपज न होय॥ फाल्गुन पूनम को रहे वर्षा बादल गाज। लाभ सातवे मास में हो खूब खरीदो अनाज॥ आकाश लक्षण–ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ योग। बीमारी का बढ़े प्रकोप॥** हल्के बादल छाये रहने का योग है। कुछ देशों नेपाल, चीन, इण्डोनेशिया, तुर्की, हिन्द चीन, बर्मा, श्रीलंका में क्षेत्रीयता के दंगों का प्रभाव भी बनेगा। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ेगा।

ता. २८ फरवरी ❖ फाल्गुन शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१२ह. | १० | ११सू. | १ | शु.गु. ने.बु. | ९प्लू. रा. | ८ | २ | ५ चं. | ३ के. | ७ | ४ मं. | ६ श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	३	१०	१०	१०	५	८	२	११	१०	८
१५	५	७	३	१५	२६	८	२४	२४	१	२	११
१६	२५	१	१९	३७	३७	५६	३३	३३	३५	३८	२
४९	११	१०	४९	२१	१०	३०	१८	१८	२३	५५	८
६०	१११	७	१०२	१४	७४	४	३	३	३	२	१
१४	२४	५१	०५	२९	५१	०८	११	११	२०	१४	१९
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	अ		उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०६६ शाके १९३१ | दिनमान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. १ से १५ मार्च सन् २०१० ई., रा. मिति ९ से २३ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्र उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
९	चं	१	२९	२५	१८	३४	पूफा	२०	४८	१५	७	धृ	३३	११	२०	५	बा	३	५१	८	२१	२८	४८	६	४८	१८	१९	१८	१४	1	क. २० ।२६	१०	१६	१७	३	५०/२२	१९	१८	६	५०	मार्च मा. ३ ता. ३१ प्रा., शते बुधः २८ ।२०, **वसन्त प्रतिपदा**, A
१०	मं	२	२१	१४	१५	१७	उफा	१४	२१	१२	३१	शू	२३	३३	१६	१२	ग	२१	१४	१५	१७	२८	५३	६	४७	१८	२०	१९	१५	2	कन्या	१०	१७	१७	१५	१०	२०	२४	७	२७	भ. २५ ।५२ से, मीने शुक्रः २२ ।३४, सन्त तुकाराम जयन्ती
११	बु	३	१४	१४	१२	२८	ह	९	३	१०	२३	गं	१४	५४	१२	४४	वि	१४	१४	१२	२८	२८	५७	६	४६	१८	२१	२०	१६	3	तु. २१ ।३२	१०	१८	१७	२५	९	२१	३०	८	५	भ. १२ ।२८ तक, **कल्पादि ३, कृष्ण ४ व्रत, आशा ४ व्रत** (राज.)
१२	गु	४	८	५१	१०	१७	चि	५	१९	८	५२	वृ	७	३५	९	४७	बा	८	५१	१०	१७	२९	१	६	४५	१८	२१	२१	१७	4	तुला	१०	१९	१७	३४	७	२२	३४	८	४४	पूभायां सूर्यः २२ ।२७, शते ४ गुरुः १३ ।१५, **ईद-ए-मौलाद** (मु.)
१३	शु	५	५	२५	८	५४	स्वा	३	२९	८	७	धु	१/५७	४९/४३	७/२९	२७/४९	तै	५	२५	८	५४	२९	५	६	४४	१८	२२	२२	१८	5	वृ. २६ ।७	१०	२०	१७	४१	५	२३	३७	९	२६	उभायां शुक्रः १४ ।४६, **रंग पचंमी**
१४	श	६	४	९	८	२२	वि	३	४६	८	१३	ह	५५	२४	२८	५२	व	४	९	८	२२	२९	१०	६	४३	१८	२३	२३	१९	6	वृश्चिक	१०	२१	१७	४६	४	२४	३७	१०	११	भ. ८ ।२२ से २० ।३३ तक, **एकनाथ षष्ठी**
१५	र	७	५	६	८	४४	अनु	६	१३	९	११	व	५४	४३	२८	३५	ब	५	६	८	४४	२९	१४	६	४२	१८	२३	२४	२०	7	वृश्चिक	१०	२२	१७	५०	३	२५	३३	११	१	**शीतला पूजन**, मेला शीतला माता (कुराली), **शीतलाष्टमी**, B
१६	चं	८	८	९	९	५६	ज्ये	१०	४१	१०	५७	सि	५५	२६	२८	५१	कौ	८	९	९	५६	२९	१८	६	४१	१८	२४	२५	२१	8	ध. १० ।५७	१०	२३	१७	५३	०	२६	२३	११	५३	**श्री ऋषभदेव ज.**, मेला केशरीया (मेवाड़), वर्षी तप प्रारंभ C
१७	मं	९	१२	५६	११	५०	मू	१६	४७	१३	२२	व्य	५७	१२	२९	३२	ग	१२	५६	११	५०	२९	२२	६	३९	१८	२४	२६	२२	9	धनु	१०	२४	१७	५३	०	२७	७	१२	४८	भ . २५ ।२ से, व्यतिपात पुण्यं, पूभायां बुधः १४ ।५०
१८	बु	१०	१८	५८	१४	१४	पूषा	२४	४	१६	१६	वरि	५९	३७	३०	२९	वि	१८	५८	१४	१४	२९	२७	६	३८	१८	२५	२७	२३	10	म. २३ ।२	१०	२५	१७	५३	५९/५७	२७	४७	१३	४३	भ. १४ ।१४ तक, **दशामाता व्रत**
१९	गु	११	२५	४२	१६	५४	उषा	३१	५८	१९	२४	प	६०	०	-	-	बा	२५	४२	१६	५४	२९	३१	६	३७	१८	२६	२८	२४	11	मकर	१०	२६	१७	५०	५६	२८	२२	१४	३८	मार्गी भौमः १९ ।५८, पाप मोचनी D
२०	शु	१२	३२	३५	१९	३८	श्र	३९	५७	२२	३५	प	२	२२	७	३३	तै	३२	३५	१९	३८	२९	३५	६	३६	१८	२६	२९	२५	12	मकर	१०	२७	१७	४६	५४	२८	५५	१५	३२	D ११ व्रत (सबका), मेला कैला देवी १५ दिन का प्रा. (करोली)
२१	श	१३	३९	८	२२	१४	ध	४७	३६	२५	३७	शि	४	५७	८	३४	ग	५	५७	८	५८	२९	४०	६	३५	१८	२७	३०	२६	13	कुं. १२ ।८	१०	२८	१७	४०	५२	२९	२५	१६	२५	भ. २२ ।१४ से, पंचक १२ ।८ से, **शनि प्रदोष व्रत, रंग तेरस**
२२	र	१४	४५	१	२४	३४	श	५४	३४	२८	२४	सिद्ध	७	११	९	२६	वि	१२	११	११	२६	२९	४४	६	३४	१८	२७	चै१	२७	14	कुम्भ	१०	२९	१७	३२	५८	२९	५४	१७	१७	भ. ११ ।२६ तक, सौर चैत्र प्रा., मीने सूर्यः २२ ।३२ संक्रांती मु. E
२३	चं	३०	५०	२	२६	३३	पूभा	६०	०	-	-	सा	८	५०	१०	५	चतु	१७	३९	१३	३७	२९	४८	६	३३	१८	२८	२	२८	15	मी. २४ ।१६	११	०	१७	२३	१८	३०	२३	१८	१०	पश्चिमोदयं गुरोः १९ ।३८, देवपितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि ३०, F

पश्चिमोदये गुरोः १५ मार्च

F चांद्र संवत्सर २०६६ पूर्ण

A वसन्तोत्सव, छारेड़ी, **धूलि वन्दन**, गणगौरी पूजनारंभ (राज), मेला होला आनंदपुर साहिब (पं.) **B बासौड़ा** (ठंडा वासी भोजन करना), **कालाष्टमी**, सूरज रोटा व्रत (राज.)
C (जैन), अष्टका श्राद्ध, विश्व महिला दिवस E १५ ऊभी, पुण्यकाल १६ ।८ से, मीने बुधः २० ।४३, **मीन मलमास प्रा., मास शिवरात्री व्रत**, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.)

चैत्र कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	३	१०	१०	११	५	८	२	११	१०	८
२३	२७	६	१७	१७	६	८	२४	२४	२	२	११
१७	१२	२०	२६	३३	३५	२२	७	७	२	५६	१०
५३	४३	१३	४	१३	१५	६	५२	५२	१७	३२	३६
६०	७३०	०१	११०	१४	७४	४	३	३	३	२	०
०	४०	४०	३९	२७	४०	३०	११	११	२५	१०	५६
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	अ		उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा.	ज्येष्ठा	पुष्य	शत.	शत.	उ.भा.	उ.फा.	पू.षा.	पुन.	पू.भा.	धनि.	मृग.

शु.१२ह. | १० | १ | सू.ने. ११ बु.गु. | ८ चं. | ९ रा. प्लू. | ३ के. | २ | ५ | ७ | ४ मं. | ६ श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार पूर्वा फाल्गुनी योग से शुरू हो रहा है। वसन्त प्रारंभ, छारेण्डी उत्सव योग, बसन्तोत्सव, फागोत्सव की लहर का प्रभाव बढ़ेगा। **पक्ष में तिथौ घटी न बढ़ी। सम भाव व्यापार की वृद्धि बढ़ी॥ एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचरा। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥** अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारी हलचल होगी। कहीं जलाधिक्य तो कहीं प्राकृतिक आपदा, अग्निदाह, युद्धोत्पात, भयातंक से जनता त्राहि-त्राहि भी कर सकती है। **कुंभे राशि क्षेत्रे शुक्र सूर्य बुध गुरु। भ्रष्टाचार अराजकता योग शुरू॥** इसी पक्ष में चैत्र बदी १४ रविवार ता. १४ मार्च २०१० को भगवान सूर्यदेव मीन राशि (मीनेऽर्क) भा.स्टै.टा. २१ ।४८ घं.मि. पर प्रवेश करेंगे। वारात् ३, नक्षत्रात् ३, वारनाम घोरा, शूद्रान सुखदा, मध्य रात्रि दूसरे प्रहर व्यापिनी राक्षसान् हन्ति। उत्तरे गमन, ऐशान्य दृष्टि, शकुनि करणे प्रविष्टा-महंगाई का योग। श्वान वाहन, शार्दूला उपवाहन, सुभिक्ष कारकम्। कौड़ी भूषणम्, बंध्यावस्था मु. १५ धान्य भावे महर्घता के योग महंगाई का वर्चस्व रहेगा। शशि युक्ति कन्यायाम् शनि बदी बीज का योग। सावधान रहो! प्रशासका अकाल मृत्यु का भोग॥ दुर्घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। बड़े प्रशासकों की अकाल मृत्यु योग भी। व्यापार-चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, दूध, पनीर, मसाला, काजू, पंसारी सामग्री, सोना, चांदी, जीरा, ज्वार, ग्वार, गोंद, कागज, कोयला, सरसों, रायरा आदि के भावों में अस्थिरता रहेगी। एकाएक तेजी तो एकाएक मंदी भी होगी। स्टॉक करने का पक्ष नहीं है। आटा, मिठाई सामग्री में तेजी रहेगी। **शकुन-चैत्र बदी चौथ दिन तक जो बरसे दिन चार। वर्षा ऋतु में जानिये वर्षा भली प्रकार॥ चैत्र बदी पांचे दिना मेघ झुके आकाश, सभी वस्तुएं सस्ती बिके फल जानो दो मास॥ चैत्र कृष्ण पक्ष में निर्मल रहे आकाश। समय अगवा अच्छा हो यह कृषकों की आश॥ आकाश लक्षण-**गर्मी का तपन योग चालू हो गया। यत्र-तत्र गर्मी के प्रभाव से हानि होगी। प्राकृतिक [illegible] बनता है। एकाएक वर्षा का योग व वातावरण बनेगा।

ता. १५ मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१ | ११चं.गु.ने. | १२ | २ | सू.ह. बु.शु. | रा.९प्लू. | १० | ३ के. | ४ मं. | ६ श. | ८ | ५ | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	१०	३	११	१०	११	५	८	२	११	१०	८
०	२०	६	०	१९	१५	७	२३	२३	२	३	११
१७	३३	२४	४२	१४	१७	५०	४५	४५	२६	११	१६
२३	१३	७	५४	१०	२३	२	३७	३७	१३	२५	२८
५९	७२६	३	११७	१४	७४	४	३	३	३	२	०
४८	०९	२५	४५	२१	२९	४०	११	११	२६	०५	४३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	अ		उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा.	पू.भा.	पुष्य	पू.भा.	शत.	उ.भा.	उ.फा.	पू.षा.	पुन.	उ.भा.	धनि.	मृग.

ज्योतिष शास्त्र में भौगोलिक महत्व

एक सामान्य अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में खगोल ज्ञान के साथ भौगोलिक जानकारी परमावश्यक है। ग्रहों का देशान्तरीय भेद से उदयास्त, ग्रहणादि का स्थानीय दृश्य काल एवं उसका मान तथा पृथ्वी पर दिखाई देने वाली खगोलीय चमत्कृति का सूक्ष्म समय काल जानने के लिये अक्षांश रेखांशादि भेदिक परिवर्तन समय हेतु भौगोलिक ज्ञान का विशेष महत्व होता है। उत्तर दक्षिण गोलार्द्ध, भूमध्य रेखा, कर्क मकर वृत्त, अक्षांश व रेखांशादि की जानकारी आवश्यक है जिसका सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

अक्षांश व उसका अभिप्राय:- पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा "भू मध्य रेखा" कहलाती है। यहां पर अक्षांश (0) शून्य होता है। इसके उत्तर विभाग को "उत्तर गोल" व दक्षिणी विभाग को "दक्षिण गोल" कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर विभाग (उत्तर गोल) में ९० एवं दक्षिण विभाग (दक्षिण गोल) में भी ९० अक्षांश होते हैं।

यह "श्री आर्य भट्ट पंचांगम्" दिल्ली के स्थानीय समय काल हेतु आधारित किया गया है। भौगोलिक स्थित्यानुसार दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर है। भू मध्य रेखा से उत्तर गोल में दिल्ली नगर २८ व २९ अक्षांश के बीच में है। प्रत्येक अक्षांश को ६० भाग में विभाजित किया गया है जिसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर स्थित है।

एक अक्षांश की दूरी ७५ मील होती है। पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अण्डाकार वस्तु को लंबाई में अर्थात् उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटेंगे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित भाग पर आयेगा। इसलिए पृथ्वी के इसी मध्य भाग को भू मध्य रेखा कहा जाता है। भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर है इससे दक्षिण में ९० अक्षांश है जो दक्षिणी अक्षांश होते हैं। और इसी प्रकार भू मध्य रेखा (0) शून्य से उत्तर में ९० अक्षांश उत्तरी अक्षांश कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा अथवा घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है और घूमते हुए एक अण्डाकार गोल परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते हुए वह अपने केन्द्र स्थान की ओर थोड़ा झुका हुआ रहता है। इसी तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसी बदले झुकाव के कारण ही सूर्य "उत्तरायण" तथा "दक्षिणायन" होता प्रतीत होता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया गया है परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में आधार हीन अधर में ही घूमती है।

ता. २१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात प्रथम राशि में प्रवेश करता है उस समय पृथ्वी का भू मध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है जहां रवि की क्रांति शून्य होती है। पृथ्वी पर उस समय दिन रात बराबर होते हैं। इस दिन के बाद से सूर्य उत्तर गोल में चलता है और रवि की उत्तर क्रांति प्रति दिन बढ़ती है। ता. २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है अर्थात् सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और रवि क्रांति अपनी चरम सीमा २३अंश हो जाती है। आकाशी क्रांति पथ के साथ पृथ्वी का क्रांति पथ २३.५ अंश का कोण होता है। उस समय दिन का मान अधिक व रात्री का मान न्यून होता है। विश्व का मानचित्र देखें कि भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर भारत से दक्षिण में लम्बी दूरी पर दूर समुन्द्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब इस रेखा पर आता है तो भारत का मध्य भाग सूर्य के सीधे प्रभाव में होने से वहां पर अधिकतम गर्मी की ऋतु का पूर्ण आभास होता है। ता. २१ जून को सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो जाता है। इसे ही "दक्षिणायन" कहते हैं। जो ता. २१ सितम्बर तक दक्षिणावृत्ति से पुन: भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर पहुंच जाता है तथा उसकी उत्तर क्रांति भी क्रमश: कम होकर शून्य हो जाती है और दिन रात बराबर होते हैं। इसके बाद सूर्य दक्षिणावृत्ति से ही चलता है परन्तु ता. २१ सितम्बर तक तो सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में ही होता है तत्पश्चात दक्षिण गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से लम्बी दूरी पर होने से यहां शरद ऋतु का आरंभ हो जाता है।

सूर्य निरन्तर दक्षिणायन रहकर दक्षिणी गोलार्द्ध में अग्रसर होता है। जो ता. २१ दिसम्बर को मकर रेखा पर पहुंच जाता है तथा सूर्य की दक्षिण क्रांति अपनी चरम सीमा पर होती है। ता. २१-२२ दिसम्बर को दिन का मान छोटा व रात्री का मान बड़ा होता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) भारत से बहुत दूर हिन्द महासागर के उपर से दक्षिणी अमेरिका के मध्य भाग, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है तो उस समय इन सभी देशो में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूरी होने के कारण यहां मौसम अत्यधिक ठण्डा होता है। ता. २१ दिसम्बर के बाद से सूर्य उत्तर की ओर चलनारंभ होता है। इसे ही "उत्तरायण" कहते हैं।

(**नोट:-** सूर्य आकाश में स्थिर है परंतु पृथ्वी की गति में क्रांति के परिवर्तन होने पर वह इस प्रकार परिवर्तन करता प्रतीत होता है तो प्रचलित बोल चाल तथा लिखने की भाषा में सूर्य चल रहा है यही कहा जाता है।)

ता. २१-२२ दिसंबर से सूर्य उत्तरावृत्ति से पुन: ता. २१ मार्च को दक्षिणी गोलार्द्ध की यात्रा करते हुए भू मध्य रेखा (शून्य अक्षांश) पर आता है। इस दिन रवि की दक्षिण क्रांति भी शून्य होती है। इस दिन सूर्य उत्तरावृत्ति से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है।

अत: सूर्य की स्थिति ता. २१ मार्च से २१ सितंबर तक उत्तर गोल में और ता. २१ सितम्बर से ता. २१ मार्च तक दक्षिण गोल में होती है। ता. २१ दिसंबर से ता. २१ जून तक सूर्य उत्तरायण एवं ता. २१ जून से ता. २१ दिसंबर तक दक्षिणायन होता है।

सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूर्व पश्चिम क्षितिज पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखकर अथवा ऊपर आकाश में सूर्य भमण पर ध्यान देकर या घर में आने वाली धूप की किरणों के बदलते कोण देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायन होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रति दिन जो अंतर आता है उसे चरांतर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रांति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरांतर सारणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है। और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरांतर सारणी पृष्ठ संख्या ९६ तथा रवि क्रांति सारणी इस पंचांग के पृष्ठ संख्या ९५ पर दी हुई है।

रेखांश व उसकी उपयोगिता- जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अक्षांशों में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार इसको पूर्व-पश्चिम ३६० रेखांशों में विभाजित किया गया है। जिस प्रकार उत्तर व दक्षिण का विभाजन करने के लिए भू मध्य रेखा को (0) शून्य अक्षांश माना गया है। उसी प्रकार पूर्व व पश्चिम का विभाजन करने के लिए मध्यमान होना आवश्यक है और इसके लिए कोई भी रेखा को (0) शून्य रेखांश माना जा सकता है। पहले कभी भारत के उज्जैन नगर को शून्य रेखांश के लिए सम्मान प्राप्त था परन्तु वर्तमान में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला के कारण लंदन के पास ग्रीनविच को यह महत्व दिया गया है। ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे (0) शून्य रेखांश मान कर पूर्व के रेखांशों के पूर्व रेखांश व पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है।

पृथ्वी की परिधि भू मध्य रेखा पर २९४०० मील है। अत: भू मध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी ७० मील होती है। पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात ३६० रेखांश २४ घण्टे में सूर्य के सामने से गुजरते हैं। तदनुसार एक रेखांश अंतर चार मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। उदाहरणार्थ माना कि दिल्ली में सूर्योदय ६।३० बजे हुआ है और दिल्ली का रेखांश ७७।१३ पूर्व है तो ७८।१३ पूर्व रेखांश पर स्थित नगर का सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा अथवा पूर्व रेखांश ७६।१३ हो तो ४ मिनट दिल्ली के बाद होगा। इसी प्रकार प्रति रेखांश में ४ मिनट कम अथवा अधिक रेखांशानुसार होगा। यदि रेखांश कम होंगे तो सूर्योदय बाद में तथा रेखांश अधिक होने पर पहले होगा।

प्राचीन काल में प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण धूप घड़ियों ,जल घड़ियों अथवा शंकु छायादि उपकरणों की सहायता से मध्यान्ह और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे।

सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाइम (मानक समय) रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टे आगे था और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितंबर १९१७ से लागू कर दिया गया परंतु बंगाल प्रांत और आस-पास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रांतों ने सितंबर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाइम को व्यवहार में लाना आरंभ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितंबर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में (जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे) समय १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात ग्रीनविच समय से ६.३० घण्टा आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टा आगे है और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो काम-काज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से संपादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है। उसका समय उतने ही अंतर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अंतर होता है। अत: १५ रेखांश पर १ घण्टे का अंतर हुआ। जो ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टे के अंतर पर निर्धारित है। हौलेण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेल्जियम, हंगरी, यूगोस्लाविया, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराईल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय २ घण्टे आगे है। ये देश २ घण्टे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, ईथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घण्टे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४.३० घण्टे तथा पाकिस्तान ५ घण्टे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घण्टे तथा वर्मा ६.३० घण्टे आगे है। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घण्टे के क्षेत्र में हैं। चीन, हॉंगकोंग, फिलिपिन्स ८ घण्टे तथा कोरिया व जापान ९ घण्टे के अंतर पर है। आस्ट्रेलिया १० घण्टे और न्यूजीलैण्ड १२ घण्टे के अंतर पर है। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है। उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टोरंटो, ओटावा, वॉस्टन आदि नगर ५ घण्टे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घण्टे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लॉसएन्जिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घण्टे कम है। किसी भी एटलस में दुनियां का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमाएं लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घण्टे के समय क्षेत्र में रखा गया है। और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगला देश को ६ घण्टे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५.३० घण्टा समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि १ रेखांश पर ४ मिनट का अंतर आता है तो ५.३० घण्टे का अंतर ८२।३० रेखांश पर ही आता है। भारत में ८२।३० रेखांश इलाहाबाद, अयोध्या के आस-पास उत्तर से दक्षिण काकीनाड़ा, मच्छलीपटनम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है परंतु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है। तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है। जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है (कुछ आचार्य ७७।१२, कुछ ७७।१४ भी मानते हैं) यह रेखांश ८२।३० से ५।१७ कम हैं। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय [illegible]

८५।१३ है जो ८२।३० से २।४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय १० मिनट ५२ सैकेण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारणी इस पंचांग में पृष्ठ ९७ पर दी गई है। इसमें मुख्य-मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अंतर तथा दिल्ली के समय से देशांतर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांश आदि सारणी में यह नाम नहीं हैं। मानचित्र में यह धौलपुर और ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर हैं अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है यह स्थान मानचित्र में धौलपुर व ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सेन्टीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नाप कर उनके अक्षांश रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है।

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको [illegible] बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन एवं उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्नका समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक केअक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जु. को वृश्चि. समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया (१३।४८ मि. आधे से अधिक होने से १४ लिये)	+०।१४
मध्यम लग्न समाप्त	=१७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने १७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान --	—०।१७
अतः नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल	१७।११

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें. लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सै. एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान कोगुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारंभ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

अ/लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

सन्\राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२००० फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००० फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४ फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८फप.	-१	-१	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१
२००९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२ फप	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

पंचांग में दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल की तालिका प्रति मासिक दी गई है। उनमें पृथ्वी की अयनगति वश प्रति वर्ष परिवर्तन होता है। इसलिए लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल जानने के लिए वार्षिक संस्कार देकर शुद्ध करे लें। अतः वार्षिक लग्नों में संस्कारार्थ तालिका दी जा रही है।

जिन वर्षों में तिथ्याधिक वर्ष हो अर्थात् २९ दिनों का फरवरी मास होता है। (यह प्रति चार से आता है।) उन वर्षों की तालिका में दो बार पंक्तियां दी गई। जिसके सन् के आगे फ.प. लगाया गया है। इसका अभिप्राय है कि १ जनवरी से २८ फरवरी तक इस पंक्ति के संस्कारों को काम में लें तथा उसी सन् को लिखकर आगे फ.बा. लगाया गया है। इन संस्कारों का उपयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक करें।

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८ १५	८ ५३ १०	१० २८ १५	१२ २३ ३७	१४ ३८ ०८	१६ ५८ २७	१९ १५ ४६	२१ ३२ ०३	२३ ५१ ३१	२ १४ ०५	४ १८ १५	६ ०० ४३
२	७ २४ १९	८ ४९ १४	१० २४ २०	१२ १९ ४१	१४ ३४ १२	१६ ५४ ३१	१९ ११ ५०	२१ २८ ०७	२३ ४७ ३५	२ १० ०९	४ १४ १९	५ ५६ ४७
३	७ २० २३	८ ४५ १८	१० २० २४	१२ १५ ४५	१४ ३० १६	१६ ५० ३६	१९ ०७ ५५	२१ २४ १२	२३ ४३ ४०	२ ०६ १३	४ १० २३	५ ५२ ५२
४	७ १६ २७	८ ४१ २३	१० १६ २८	१२ ११ ४९	१४ २६ २०	१६ ४६ ४०	१९ ०३ ५९	२१ २० १६	२३ ३९ ४४	२ ०२ १७	४ ०६ २७	५ ४८ ५६
५	७ १२ ३२	८ ३७ २७	१० १२ ३२	१२ ०७ ५४	१४ २२ २४	१६ ४२ ४४	१९ ०० ०३	२१ १६ २०	२३ ३५ ४८	१ ५८ २१	४ ०२ ३१	५ ४५ ००
६	७ ०८ ३६	८ ३३ ३१	१० ०८ ३६	१२ ०३ ५८	१४ १८ २८	१६ ३८ ४८	१८ ५६ ०७	२१ १२ २४	२३ ३१ ५२	१ ५४ २५	३ ५८ ३६	५ ४१ ०४
७	७ ०४ ४०	८ २९ ३५	१० ०४ ४०	१२ ०० ०२	१४ १४ ३२	१६ ३४ ५२	१८ ५२ ११	२१ ०८ २८	२३ २७ ५६	१ ५० २९	३ ५४ ४०	५ ३७ ०८
८	७ ०० ४४	८ २५ ३९	१० ०० ४४	११ ५६ ०६	१४ १० ३६	१६ ३० ५६	१८ ४८ १५	२१ ०४ ३२	२३ २४ ००	१ ४६ ३४	३ ५० ४४	५ ३३ १२
९	६ ५६ ४८	८ २१ ४३	९ ५६ ४८	११ ५२ १०	१४ ०६ ४०	१६ २७ ००	१८ ४४ १९	२१ ०० ३६	२३ २० ०४	१ ४२ ३८	३ ४६ ४८	५ २९ १६
१०	६ ५२ ५२	८ १७ ४७	९ ५२ ५२	११ ४८ १४	१४ ०२ ४४	१६ २३ ०४	१८ ४० २३	२० ५६ ४०	२३ १६ ०८	१ ३८ ४२	३ ४२ ५२	५ २५ २०
११	६ ४८ ५६	८ १३ ५१	९ ४८ ५६	११ ४४ १८	१३ ५८ ४९	१६ १९ ०८	१८ ३६ २७	२० ५२ ४४	२३ १२ १२	१ ३४ ४६	३ ३८ ५६	५ २१ २४
१२	६ ४५ ००	८ ०९ ५५	९ ४५ ०१	११ ४० २२	१३ ५४ ५३	१६ १५ १२	१८ ३२ ३१	२० ४८ ४८	२३ ०८ १६	१ ३० ५०	३ ३५ ००	५ १७ २८
१३	६ ४१ ०४	८ ०५ ५९	९ ४१ ०५	११ ३६ २६	१३ ५० ५७	१६ ११ १७	१८ २८ ३६	२० ४४ ५३	२३ ०४ २१	१ २६ ५४	३ ३१ ०४	५ १३ ३२
१४	६ ३७ ०८	८ ०२ ०४	९ ३७ ०९	११ ३२ ३०	१३ ४७ ०१	१६ ०७ २१	१८ २४ ४०	२० ४० ५७	२३ ०० २५	१ २२ ५८	३ २७ ०८	५ ०९ ३७
१५	६ ३३ १२	७ ५८ ०८	९ ३३ १३	११ २८ ३४	१३ ४३ ०५	१६ ०३ २५	१८ २० ४४	२० ३७ ०१	२२ ५६ २९	१ १९ ०२	३ २३ १२	५ ०५ ४१
१६	६ २९ १७	७ ५४ १२	९ २९ १७	११ २४ ३९	१३ ३९ ०९	१५ ५९ २९	१८ १६ ४८	२० ३३ ०५	२२ ५२ ३३	१ १५ ०६	३ १९ १७	५ ०१ ४५
१७	६ २५ २१	७ ५० १६	९ २५ २१	११ २० ४३	१३ ३५ १३	१५ ५५ ३३	१८ १२ ५२	२० २९ ०९	२२ ४८ ३७	१ ११ १०	३ १५ २१	४ ५७ ४९
१८	६ २१ २५	७ ४६ २०	९ २१ २५	११ १६ ४७	१३ ३१ १७	१५ ५१ ३७	१८ ०८ ५६	२० २५ १३	२२ ४४ ४१	१ ०७ १५	३ ११ २५	४ ५३ ५३
१९	६ १७ २९	७ ४२ २४	९ १७ २९	११ १२ ५१	१३ २७ २१	१५ ४७ ४१	१८ ०५ ००	२० २१ १७	२२ ४० ४५	१ ०३ १९	३ ०७ २९	४ ४९ ५७
२०	६ १३ ३३	७ ३८ २८	९ १३ ३३	११ ०८ ५५	१३ २३ २५	१५ ४३ ४५	१८ ०१ ०४	२० १७ २१	२२ ३६ ४९	० ५९ २३	३ ०३ ३३	४ ४६ ०१
२१	६ ०९ ३७	७ ३४ ३२	९ ०९ ३७	११ ०४ ५९	१३ १९ ३०	१५ ३९ ४९	१७ ५७ ०८	२० १३ २५	२२ ३२ ५३	० ५५ २७	२ ५९ ३७	४ ४२ ०५
२२	६ ०५ ४१	७ ३० ३६	९ ०५ ४२	११ ०१ ०३	१३ १५ ३४	१५ ३५ ५३	१७ ५३ १२	२० ०९ २९	२२ २८ ५७	० ५१ ३१	२ ५५ ४१	४ ३८ ०९
२३	६ ०१ ४५	७ २६ ४०	९ ०१ ४६	१० ५७ ०७	१३ ११ ३८	१५ ३१ ५८	१७ ४९ १७	२० ०५ ३४	२२ २५ ०२	० ४७ ३५	२ ५१ ४५	४ ३४ १३
२४	५ ५७ ४९	७ २२ ४४	८ ५७ ५०	१० ५३ ११	१३ ०७ ४२	१५ २८ ०२	१७ ४५ २१	२० ०१ ३८	२२ २१ ०६	० ४३ ३९	२ ४७ ४९	४ ३० १८
२५	५ ५३ ५३	७ १८ ४९	८ ५३ ५४	१० ४९ १६	१३ ०३ ४६	१५ २४ ०६	१७ ४१ २५	१९ ५७ ४२	२२ १७ १०	० ३९ ४३	२ ४३ ५३	४ २६ २२
२६	५ ४९ ५७	७ १४ ५३	८ ४९ ५८	१० ४५ २०	१२ ५९ ५०	१५ २० १०	१७ ३७ २९	१९ ५३ ४६	२२ १३ १४	० ३५ ४७	२ ३९ ५७	४ २२ २६
२७	५ ४६ ०२	७ १० ५७	८ ४६ ०२	१० ४१ २४	१२ ५५ ५४	१५ १६ १४	१७ ३३ ३३	१९ ४९ ५०	२२ ०९ १८	० ३१ ५१	२ ३६ ०२	४ १८ ३०
२८	५ ४२ ०६	७ ०७ ०१	८ ४२ ०६	१० ३७ २८	१२ ५१ ५८	१५ १२ १८	१७ २९ ३७	१९ ४५ ५४	२२ ०५ २२	० २७ ५५	२ ३२ ०६	४ १४ ३४
२९	५ ३८ १०	७ ०३ ०५	८ ३८ १०	१० ३३ ३२	१२ ४८ ०२	१५ ०८ २२	१७ २५ ४१	१९ ४१ ५८	२२ ०१ २६	० २० ०४	२ २८ १०	४ १० ३८
३०	५ ३४ १४	६ ५९ ०९	८ ३४ १४	१० २९ ३६	१२ ४४ ०६	१५ ०४ २६	१७ २१ ४५	१९ ३८ ०२	२१ ५७ ३०	० १६ ०८	२ २४ १४	४ ०६ ४२

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५१ १७	८ २६ २३	१० २१ ४४	१२ ३६ १५	१४ ५६ ३४	१७ १३ ५३	१९ ३० १०	२१ ४९ ३८	० ०८ १६	२ १६ २२	३ ५८ ५०	५ २६ २२
२	६ ४७ २१	८ २२ २७	१० १७ ४८	१२ ३२ १९	१४ ५२ ३९	१७ ०९ ५८	१९ २६ १५	२१ ४५ ४३	० ०४ २०	२ १२ २६	३ ५४ ५४	५ २२ २६
३	६ ४३ २५	८ १८ ३१	१० १३ ५२	१२ २८ २३	१४ ४८ ४३	१७ ०६ ०२	१९ २२ ११	२१ ४१ ४७	० ०० २४	२ ०८ ३०	३ ५० ५९	५ १८ ३०
४	६ ३९ ३०	८ १४ ३५	१० ०९ ५७	१२ २४ २७	१४ ४४ ४७	१७ ०२ ०६	१९ १८ २३	२१ ३७ ५१	२३ ५६ २८	२ ०४ ३४	३ ४७ ०३	५ १४ ३४
५	६ ३५ ३४	८ १० ३९	१० ०६ ०१	१२ २० ३१	१४ ४० ५१	१६ ५८ १०	१९ १४ २७	२१ ३३ ५५	२३ ५२ ३२	२ ०० ३८	३ ४३ ०७	५ १० ३८
६	६ ३१ ३८	८ ०६ ४३	१० ०२ ०५	१२ १६ ३५	१४ ३६ ५५	१६ ५४ १४	१९ १० ३१	२१ २९ ५९	२३ ४८ ३६	१ ५६ ४३	३ ३९ ११	५ ०६ ४३
७	६ २७ ४२	८ ०२ ४७	९ ५८ ०९	१२ १२ ३९	१४ ३२ ५९	१६ ५० १८	१९ ०६ ३५	२१ २६ ०३	२३ ४४ ४१	१ ५२ ४७	३ ३५ १५	५ ०२ ४७
८	६ २३ ४६	७ ५८ ५१	९ ५४ १३	१२ ०८ ४३	१४ २९ ०३	१६ ४६ २२	१९ ०२ ३९	२१ २२ ०७	२३ ४० ४५	१ ४८ ५१	३ ३१ १९	४ ५८ ५१
९	६ १९ ५०	७ ५४ ५५	९ ५० १७	१२ ०४ ४७	१४ २५ ०७	१६ ४२ २६	१८ ५८ ४३	२१ १८ ११	२३ ३६ ४९	१ ४४ ५५	३ २७ २३	४ ५४ ५५
१०	६ १५ ५४	७ ५० ५९	९ ४६ २१	१२ ०० ५२	१४ २१ ११	१६ ३८ ३०	१८ ५४ ४७	२१ १४ १५	२३ ३२ ५३	१ ४० ५९	३ २३ २७	४ ५० ५९
११	६ ११ ५८	७ ४७ ०३	९ ४२ २५	११ ५६ ५६	१४ १७ १५	१६ ३४ ३४	१८ ५० ५१	२१ १० १९	२३ २८ ५७	१ ३७ ०३	३ १९ ३१	४ ४७ ०३
१२	६ ०८ ०२	७ ४३ ०८	९ ३८ २९	११ ५३ ००	१४ १३ २०	१६ ३० ३९	१८ ४६ ५६	२१ ०६ २४	२३ २५ ०१	१ ३३ ०७	३ १५ ३५	४ ४३ ०७
१३	६ ०४ ०६	७ ३९ १२	९ ३४ ३३	११ ४९ ०४	१४ ०९ २४	१६ २६ ४३	१८ ४३ ००	२१ ०२ २८	२३ २१ ०५	१ २९ ११	३ ११ ३९	४ ३९ ११
१४	६ ०० ११	७ ३५ १६	९ ३० ३८	११ ४५ ०८	१४ ०५ २८	१६ २२ ४७	१८ ३९ ०४	२० ५८ ३२	२३ १७ ०९	१ २५ १५	३ ०७ ४४	४ ३५ १५
१५	५ ५६ १५	७ ३१ २०	९ २६ ४२	११ ४१ १२	१४ ०१ ३२	१६ १८ ५१	१८ ३५ ०८	२० ५४ ३६	२३ १३ १३	१ २१ १९	३ ०३ ४८	४ ३१ १९
१६	५ ५२ १९	७ २७ २४	९ २२ ४६	११ ३७ १६	१३ ५७ ३६	१६ १४ ५५	१८ ३१ १२	२० ५० ४०	२३ ०९ १७	१ १७ २४	२ ५९ ५२	४ २७ २४
१७	५ ४८ २३	७ २३ २८	९ १८ ५०	११ ३३ २०	१३ ५३ ४०	१६ १० ५९	१८ २७ १६	२० ४६ ४४	२३ ०५ २२	१ १३ २८	२ ५५ ५६	४ २३ २८
१८	५ ४४ २७	७ १९ ३२	९ १४ ५४	११ २९ २४	१३ ४९ ४४	१६ ०७ ०३	१८ २३ २०	२० ४२ ४८	२३ ०१ २६	१ ०९ ३२	२ ५२ ००	४ १९ ३२
१९	५ ४० ३१	७ १५ ३६	९ १० ५८	११ २५ २८	१३ ४५ ४८	१६ ०३ ०७	१८ १९ २४	२० ३८ ५२	२२ ५७ ३०	१ ०५ ३६	२ ४८ ०४	४ १५ ३६
२०	५ ३६ ३५	७ ११ ४०	९ ०७ ०२	११ २१ ३३	१३ ४१ ५२	१५ ५९ ११	१८ १५ २८	२० ३४ ५६	२२ ५३ ३४	१ ०१ ४०	२ ४४ ०८	४ ११ ४०
२१	५ ३२ ३९	७ ०७ ४४	९ ०३ ०६	११ १७ ३७	१३ ३७ ५६	१५ ५५ १५	१८ ११ ३२	२० ३१ ००	२२ ४९ ३८	० ५७ ४४	२ ४० १२	४ ०७ ४४
२२	५ २८ ४३	७ ०३ ४९	८ ५९ १०	११ १३ ४१	१३ ३४ ०१	१५ ५१ २०	१८ ०७ ३७	२० २७ ०४	२२ ४५ ४२	० ५३ ४८	२ ३६ १६	४ ०३ ४८
२३	५ २४ ४७	६ ५९ ५३	८ ५५ १४	११ ०९ ४५	१३ ३० ०५	१५ ४७ २४	१८ ०३ ४१	२० २३ ०९	२२ ४१ ४६	० ४९ ५२	२ ३२ २०	३ ५९ ५२
२४	५ २० ५१	६ ५५ ५७	८ ५१ १८	११ ०५ ४९	१३ २६ ०९	१५ ४३ २८	१७ ५९ ४५	२० १९ १३	२२ ३७ ५०	० ४५ ५६	२ २८ २५	३ ५५ ५६
२५	५ १६ ५६	६ ५२ ०१	८ ४७ २३	११ ०१ ५३	१३ २२ १३	१५ ३९ ३२	१७ ५५ ४९	२० १५ १७	२२ ३३ ५४	० ४२ ००	२ २४ २९	३ ५२ ००
२६	५ १३ ००	६ ४८ ०५	८ ४३ २७	१० ५७ ५७	१३ १८ १७	१५ ३५ ३६	१७ ५१ ५३	२० ११ २१	२२ २९ ५८	० ३८ ०५	२ २० ३३	३ ४८ ०४
२७	५ ०९ ०४	६ ४४ ०९	८ ३९ ३१	१० ५४ ०१	१३ १४ २१	१५ ३१ ४०	१७ ४७ ५७	२० ०७ २५	२२ २६ ०३	० ३४ ०९	२ १६ ३७	३ ४४ ०९
२८	५ ०५ ०८	६ ४० १३	८ ३५ ३५	१० ५० ०५	१३ १० २५	१५ २७ ४४	१७ ४४ ०१	२० ०३ २९	२२ २२ ०७	० ३० १३	२ १२ ४१	३ ४० १३
२९	५ ०१ १२	६ ३६ १७	८ ३१ ३९	१० ४६ ०९	१३ ०६ २९	१५ २३ ४८	१७ ४० ०५	१९ ५९ ३३	२२ १८ ११	० २६ १७	२ ०८ ४५	३ ३६ १७

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाइम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २८ २५	८ २३ ४७	१० ३८ १८	१२ ५८ ३८	१४ १५ ५७	१७ ३२ १३	१९ ५१ ४१	२२ १० १९	० १४ २१	२ ०० ५३	३ २८ २५	४ ५३ २०
२	६ २४ ३०	८ १९ ५१	१० ३४ २२	१२ ५४ ४२	१५ १२ ०१	१७ २८ १८	१९ ४७ ४६	२२ ०६ २३	० १० ३३	१ ५६ ५७	३ २४ २९	४ ४९ २४
३	६ २० ३४	८ १५ ५५	१० ३० २६	१२ ५० ४६	१५ ०८ ०५	१७ २४ २२	१९ ४३ ५०	२२ ०२ २७	० ०६ ३७	१ ५३ ०१	३ २० ३३	४ ४५ २८
४	६ १६ ३८	८ १२ ००	१० २६ ३०	१२ ४६ ५०	१५ ०४ ०९	१७ २० २६	१९ ३९ ५४	२१ ५८ ३१	० ०२ ४१	१ ४९ ०६	३ १६ ३७	४ ४१ ३२
५	६ १२ ४२	८ ०८ ०४	१० २२ ३४	१२ ४२ ५४	१५ ०० १३	१७ १६ ३०	१९ ३५ ५८	२१ ५४ ३५	२३ ५८ ४६	१ ४५ १०	३ १२ ४१	४ ३७ ३७
६	६ ०८ ४६	८ ०४ ०८	१० १८ ३८	१२ ३८ ५८	१४ ५६ १७	१७ १२ ३४	१९ ३२ ०२	२१ ५० ३९	२३ ५४ ५०	१ ४१ १४	३ ०८ ४५	४ ३३ ४१
७	६ ०४ ५०	८ ०० १२	१० १४ ४२	१२ ३५ ०२	१४ ५२ २१	१७ ०८ ३८	१९ २८ ०६	२१ ४६ ४४	२३ ५० ५४	१ ३७ १८	३ ०४ ५०	४ २९ ४५
८	६ ०० ५४	७ ५६ १६	१० १० ४६	१२ ३१ ०६	१४ ४८ २५	१७ ०४ ४२	१९ २४ १०	२१ ४२ ४८	२३ ४६ ५८	१ ३३ २२	३ ०० ५४	४ २५ ४९
९	५ ५६ ५८	७ ५२ २०	१० ०६ ५०	१२ २७ १०	१४ ४४ २९	१७ ०० ४६	१९ २० १४	२१ ३८ ५२	२३ ४३ ०२	१ २९ २६	२ ५६ ५८	४ २१ ५३
१०	५ ५३ ०२	७ ४८ २४	१० ०२ ५५	१२ २३ १४	१४ ४० ३३	१६ ५६ ५०	१९ १६ १८	२१ ३४ ५६	२३ ३९ ०६	१ २५ ३०	२ ५३ ०२	४ १७ ५७
११	५ ४९ ०६	७ ४४ २८	९ ५८ ५९	१२ १९ १९	१४ ३६ ३८	१६ ५२ ५४	१९ १२ २२	२१ ३१ ००	२३ ३५ १०	१ २१ ३४	२ ४९ ०६	४ १४ ०१
१२	५ ४५ ११	७ ४० ३२	९ ५५ ०३	१२ १५ २३	१४ ३२ ४२	१६ ४८ ५९	१९ ०८ २७	२१ २७ ०४	२३ ३१ १४	१ १७ ३८	२ ४५ १०	४ १० ०५
१३	५ ४१ १५	७ ३६ ३६	९ ५१ ०७	१२ ११ २७	१४ २८ ४६	१६ ४५ ०३	१९ ०४ ३१	२१ २३ ०८	२३ २७ १८	१ १३ ४२	२ ४१ १४	४ ०६ ०९
१४	५ ३७ १९	७ ३२ ४१	९ ४७ ११	१२ ०७ ३१	१४ २४ ५०	१६ ४१ ०७	१९ ०० ३५	२१ १९ १२	२३ २३ २२	१ ०९ ४७	२ ३७ १८	४ ०२ १३
१५	५ ३३ २३	७ २८ ४५	९ ४३ १५	१२ ०३ ३५	१४ २० ५४	१६ ३७ ११	१८ ५६ ३९	२१ १५ १६	२३ १९ २७	१ ०५ ५१	२ ३३ २२	३ ५८ १८
१६	५ २९ २७	७ २४ ४९	९ ३९ १९	११ ५९ ३९	१४ १६ ५८	१६ ३३ १५	१८ ५२ ४३	२१ ११ २०	२३ १५ ३१	१ ०१ ५५	२ २९ २६	३ ५४ २२
१७	५ २५ ३१	७ २० ५३	९ ३५ २३	११ ५५ ४३	१४ १३ ०२	१६ २९ १९	१८ ४८ ४७	२१ ०७ २५	२३ ११ ३५	० ५७ ५९	२ २५ ३१	३ ५० २६
१८	५ २१ ३५	७ १६ ५७	९ ३१ २७	११ ५१ ४७	१४ ०९ ०६	१६ २५ २३	१८ ४४ ५१	२१ ०३ २९	२३ ०७ ३९	० ५४ ०३	२ २१ ३५	३ ४६ ३०
१९	५ १७ ३९	७ १३ ०१	९ २७ ३२	११ ४७ ५१	१४ ०५ १०	१६ २१ २७	१८ ४० ५५	२० ५९ ३३	२३ ०३ ४३	० ५० ०७	२ १७ ३९	३ ४२ ३४
२०	५ १३ ४३	७ ०९ ०५	९ २३ ३६	११ ४३ ५५	१४ ०१ १४	१६ १७ ३१	१८ ३६ ५९	२० ५५ ३७	२२ ५९ ४७	० ४६ ११	२ १३ ४३	३ ३८ ३८
२१	५ ०९ ४७	७ ०५ ०९	९ १९ ४०	११ ४० ००	१३ ५७ १९	१६ १३ ३५	१८ ३३ ०३	२० ५१ ४१	२२ ५५ ५१	० ४२ १५	२ ०९ ४७	३ ३४ ४२
२२	५ ०५ ५२	७ ०१ १३	९ १५ ४८	११ ३६ ०४	१३ ५३ २३	१६ ०९ ४०	१८ २९ ०८	२० ४७ ४५	२२ ५१ ५५	० ३८ १९	२ ०५ ५१	३ ३० ४६
२३	५ ०१ ५६	६ ५७ १७	९ ११ ४८	११ ३२ ०८	१३ ४९ २७	१६ ०५ ४४	१८ २५ १२	२० ४३ ४९	२२ ४७ ५९	० ३४ २३	२ ०१ ५५	३ २६ ५०
२४	४ ५८ ००	६ ५३ २२	९ ०७ ५२	११ २८ १२	१३ ४५ ३१	१६ ०१ ४८	१८ २१ १६	२० ३९ ५३	२२ ४४ ०३	० ३० २७	१ ५७ ५९	३ २२ ५४
२५	४ ५४ ०४	६ ४९ २६	९ ०३ ५६	११ २४ १६	१३ ४१ ३५	१५ ५७ ५२	१८ १७ २०	२० ३५ ५७	२२ ४० ०८	० २६ ३२	१ ५४ ०३	३ १८ ५९
२६	४ ५० ०८	६ ४५ ३०	९ ०० ००	११ २० २०	१३ ३७ ३९	१५ ५३ ५६	१८ १३ २४	२० ३२ ०२	२२ ३६ १२	० २२ ३६	१ ५० ०७	३ १५ ०३
२७	४ ४६ १२	६ ४१ ३४	८ ५६ ०४	११ १६ २४	१३ ३३ ४३	१५ ५० ००	१८ ०९ २८	२० २८ ०६	२२ ३२ १६	० १४ ४४	१ ४६ १२	३ ११ ०७
२८	४ ४२ १६	६ ३७ ३८	८ ५२ ०८	११ १२ २८	१३ २९ ४७	१५ ४६ ०४	१८ ०५ ३२	२० २४ १०	२२ २८ २०	० १० ४८	१ ४२ १६	३ ०७ ११
२९	४ ३८ २०	६ ३३ ४२	८ ४८ १३	११ ०८ ३२	१३ २५ ५१	१५ ४२ ०८	१८ ०१ ३६	२० २० १४	२२ २४ २४	० ०६ ५२	१ ३८ २०	३ ०३ १५
३०	४ ३४ २४	६ २९ ४६	८ ४४ १७	११ ०४ ३७	१३ २१ ५५	१५ ३८ १२	१७ ५७ ४०	२० १६ १८	२२ २० २८	० ०२ ५६	१ ३४ २४	२ ५९ १९
३१	४ ३० २८	६ २५ ५०	८ ४० २१	११ ०० ४१	१३ १८ ००	१५ ३४ १७	१७ ५३ ४५	२० १२ २२	२२ १६ ३२	२३ ५९ ००	१ ३० २८	२ ५५ २३

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाइम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ २१ ५४	८ ३६ २५	१० ५६ ४५	१३ १४ ०४	१५ ३० २१	१७ ४९ ४९	२० ०८ २६	२२ १२ ३६	२३ ५५ ०४	१ २६ ३२	२ ५१ २७	४ २६ ३३
२	६ १७ ५८	८ ३२ २९	१० ५२ ४९	१३ १० ०८	१५ २६ २५	१७ ४५ ५३	२० ०४ ३०	२२ ०८ ४०	२३ ५१ ०८	१ २२ ३६	२ ४७ ३१	४ २२ ३७
३	६ १४ ०३	८ २८ ३३	१० ४८ ५३	१३ ०६ १२	१५ २२ २९	१७ ४१ ५७	२० ०० ३४	२२ ०४ ४४	२३ ४७ १३	१ १८ ४०	२ ४३ ३५	४ १८ ४१
४	६ १० ०७	८ २४ ३७	१० ४४ ५७	१३ ०२ १६	१५ १८ ३३	१७ ३८ ०१	१९ ५६ ३८	२२ ०० ४९	२३ ४३ १७	१ १४ ४४	२ ३९ ४०	४ १४ ४५
५	६ ०६ ११	८ २० ४१	१० ४१ ०१	१२ ५८ २०	१५ १४ ३७	१७ ३४ ०५	१९ ५२ ४३	२१ ५६ ५३	२३ ३९ २१	१ १० ४८	२ ३५ ४४	४ १० ४९
६	६ ०२ १५	८ १६ ४५	१० ३७ ०५	१२ ५४ २४	१५ १० ४१	१७ ३० ०९	१९ ४८ ४७	२१ ५२ ५७	२३ ३५ २५	१ ०६ ५३	२ ३१ ४८	४ ०६ ५३
७	५ ५८ १९	८ १२ ४९	१० ३३ ०९	१२ ५० २८	१५ ०६ ४५	१७ २६ १३	१९ ४४ ५१	२१ ४९ ०१	२३ ३१ २९	१ ०२ ५७	२ २७ ५२	४ ०२ ५७
८	५ ५४ २३	८ ०८ ५४	१० २९ १३	१२ ४६ ३२	१५ ०२ ४९	१७ २२ १७	१९ ४० ५५	२१ ४५ ०५	२३ २७ ३३	० ५९ ०१	२ २३ ५६	३ ५९ ०१
९	५ ५० २७	८ ०४ ५८	१० २५ १८	१२ ४२ ३७	१४ ५८ ५४	१७ १८ २१	१९ ३६ ५९	२१ ४१ ०९	२३ २३ ३७	० ५५ ०५	२ २० ००	३ ५५ ०५
१०	५ ४६ ३१	८ ०१ ०२	१० २१ २२	१२ ३८ ४१	१४ ५४ ५८	१७ १४ २६	१९ ३३ ०३	२१ ३७ १३	२३ १९ ४१	० ५१ ०९	२ १६ ०४	३ ५१ ०९
११	५ ४२ ३५	७ ५७ ०६	१० १७ २६	१२ ३४ ४५	१४ ५१ ०२	१७ १० ३०	१९ २९ ०७	२१ ३३ १७	२३ १५ ४५	० ४७ १३	२ १२ ०८	३ ४७ १४
१२	५ ३८ ४०	७ ५३ १०	१० १३ ३०	१२ ३० ४९	१४ ४७ ०६	१७ ०६ ३४	१९ २५ ११	२१ २९ २१	२३ ११ ४९	० ४३ १७	२ ०८ १२	३ ४३ १८
१३	५ ३४ ४४	७ ४९ १४	१० ०९ ३४	१२ २६ ५३	१४ ४३ १०	१७ ०२ ३८	१९ २१ १५	२१ २५ २६	२३ ०७ ५४	० ३९ २२	२ ०४ १६	३ ३९ २२
१४	५ ३० ४८	७ ४५ १८	१० ०५ ३८	१२ २२ ५७	१४ ३९ १४	१६ ५८ ४२	१९ १७ २०	२१ २१ ३०	२३ ०३ ५८	० ३५ २५	२ ०० २१	३ ३५ २६
१५	५ २६ ५२	७ ४१ २२	१० ०१ ४२	१२ १९ ०१	१४ ३५ १८	१६ ५४ ४६	१९ १३ २४	२१ १७ ३४	२३ ०० ०२	० ३१ २९	१ ५६ २५	३ ३१ ३०
१६	५ २२ ५६	७ ३७ २६	९ ५७ ४६	१२ १५ ०५	१४ ३१ २२	१६ ५० ५०	१९ ०९ २८	२१ १३ ३८	२२ ५६ ०६	० २७ ३४	१ ५२ २९	३ २७ ३४
१७	५ १९ ००	७ ३३ ३१	९ ५३ ५०	१२ ११ ०९	१४ २७ २६	१६ ४६ ५४	१९ ०५ ३२	२१ ०९ ४२	२२ ५२ १०	० २३ ३८	१ ४८ ३३	३ २३ ३८
१८	५ १५ ०४	७ २९ ३५	९ ४९ ५४	१२ ०७ १३	१४ २३ ३०	१६ ४२ ५८	१९ ०१ ३६	२१ ०५ ४६	२२ ४८ १४	० १५ ४६	१ ४४ ३७	३ १९ ४२
१९	५ ११ ०८	७ २५ ३९	९ ४५ ५९	१२ ०३ १८	१४ १९ ३५	१६ ३९ ०३	१८ ५७ ४०	२१ ०१ ५०	२२ ४४ १८	० ११ ५०	१ ४० ४१	३ १५ ४६
२०	५ ०७ १२	७ २१ ४३	९ ४२ ०३	११ ५९ २२	१४ १५ ३९	१६ ३५ ०७	१८ ५३ ४४	२० ५७ ५४	२२ ४० २२	० ०७ ५४	१ ३६ ४५	३ ११ ५१
२१	५ ०३ १६	७ १७ ४७	९ ३८ ०७	११ ५५ २६	१४ ११ ४३	१६ ३१ ११	१८ ४९ ४८	२० ५३ ५८	२२ ३६ २६	० ०३ ५८	१ ३२ ४९	३ ०७ ५५
२२	४ ५९ २१	७ १३ ५१	९ ३४ ११	११ ५१ ३०	१४ ०७ ४७	१६ २७ १५	१८ ४५ ५२	२० ५० ०२	२२ ३२ ३१	० ०० ०२	१ २८ ५३	३ ०३ ५९
२३	४ ५५ २५	७ ०९ ५५	९ ३० १५	११ ४७ ३४	१४ ०३ ५१	१६ २३ १९	१८ ४१ ५६	२० ४६ ०७	२२ २८ ३५	२३ ५६ ०६	१ २४ ५७	३ ०० ०३
२४	४ ५१ २९	७ ०५ ५९	९ २६ १९	११ ४३ ३८	१३ ५९ ५५	१६ १९ २३	१८ ३८ ०१	२० ४२ ११	२२ २४ ३९	२३ ५२ १०	१ २१ ०२	२ ५६ ०७
२५	४ ४७ ३३	७ ०२ ०३	९ २२ २३	११ ३९ ४२	१३ ५५ ५९	१६ १५ २७	१८ ३४ ०५	२० ३८ १५	२२ २० ४३	२३ ४८ १५	१ १७ ०६	२ ५२ ११
२६	४ ४३ ३७	६ ५८ ०८	९ १८ २७	११ ३५ ४६	१३ ५२ ०३	१६ ११ ३१	१८ ३० ०९	२० ३४ १९	२२ १६ ४७	२३ ४४ १९	१ १३ १०	२ ४८ १५
२७	४ ३९ ४१	६ ५४ १२	९ १४ ३१	११ ३१ ५०	१३ ४८ ०७	१६ ०७ ३५	१८ २६ १३	२० ३० २३	२२ १२ ५१	२३ ४० २३	१ ०९ १४	२ ४४ १९
२८	४ ३५ ४५	६ ५० १६	९ १० ३६	११ २७ ५५	१३ ४४ १२	१६ ०३ ३९	१८ २२ १७	२० २६ २७	२२ ०८ ५५	२३ ३६ २७	१ ०५ १८	२ ४० २३
२९	४ ३१ ४९	६ ४६ २०	९ ०६ ४०	११ २३ ५९	१३ ४० १६	१५ ५९ ४४	१८ १८ २१	२० २२ ३१	२२ ०४ ५९	२३ ३२ ३१	१ ०१ २२	२ ३६ २७
३०	४ २७ ५३	६ ४२ २४	९ ०२ ४४	११ २० ०३	१३ ३६ २०	१५ ५५ ४८	१८ १४ २५	२० १८ ३५	२२ ०१ ०३	२३ २८ ३५	० ५७ २६	२ ३२ ३२

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३८ २८	८ ५८ ४८	११ १६ ०७	१३ ३२ २४	१५ ५१ ५२	१८ १० २१	२० १४ ३१	२१ ५७ ०७	२३ २४ ३९	० ५३ ३०	२ २८ ३६	४ २३ ५७
२	६ ३४ ३२	८ ५४ ५२	११ १२ ११	१३ २८ २८	१५ ४७ ५६	१८ ०६ ३३	२० १० ४३	२१ ५३ ११	२३ २० ४३	० ४९ ३४	२ २४ ४०	४ [illegible] ०२
३	६ ३० ३६	८ ५० ५६	११ ०८ १५	१३ २४ ३२	१५ ४४ ००	१८ ०२ ३८	२० ०६ ४८	२१ ४९ १६	२३ १६ ४७	० ४५ ३८	२ २० ४४	४ १६ ०६
४	६ २६ ४०	८ ४७ ००	११ ०४ १९	१३ २० ३६	१५ ४० ०४	१७ ५८ ४२	२० ०२ ५२	२१ ४५ २०	२३ १२ ५१	० ४१ ४३	२ १६ ४८	४ १२ १०
५	६ २२ ४४	८ ४३ ०४	११ ०० २३	१३ १६ ४०	१५ ३६ ०८	१७ ५४ ४६	१९ ५८ ५६	२१ ४१ २४	२३ ०८ ५६	० ३७ ४७	२ १२ ५२	४ ०८ १४
६	६ १८ ४९	८ ३९ ०८	१० ५६ २७	१३ १२ ४४	१५ ३२ १२	१७ ५० ५०	१९ ५५ ००	२१ ३७ २८	२३ ०५ ००	० ३३ ५१	२ ०८ ५६	४ ०४ १८
७	६ १४ ५३	८ ३५ १२	१० ५२ ३१	१३ ०८ ४८	१५ २८ १६	१७ ४६ ५४	१९ ५१ ०४	२१ ३३ ३२	२३ ०१ ०४	० २९ ५५	२ ०५ ००	४ ०० २२
८	६ १० ५७	८ ३१ १७	१० ४८ ३६	१३ ०४ ५३	१५ २४ २१	१७ ४२ ५८	१९ ४७ ०८	२१ २९ ३६	२२ ५७ ०८	० २५ ५९	२ ०१ ०४	३ ५६ २६
९	६ ०७ ०१	८ २७ २१	१० ४४ ४०	१३ ०० ५७	१५ २० २५	१७ ३९ ०२	१९ ४३ १२	२१ २५ ४०	२२ ५३ १२	० २२ ०३	१ ५७ ०८	३ ५२ ३०
१०	६ ०३ ०५	८ २३ २५	१० ४० ४४	१२ ५७ ०१	१५ १६ २९	१७ ३५ ०६	१९ ३९ १६	२१ २१ ४४	२२ ४९ १६	० १४ ११	१ ५३ १३	३ ४८ ३४
११	५ ५९ ०९	८ १९ २९	१० ३६ ४८	१२ ५३ ०५	१५ १२ ३३	१७ ३१ १०	१९ ३५ २०	२१ १७ ४८	२२ ४५ २०	० १० १५	१ ४९ १७	३ ४४ ३९
१२	५ ५५ १३	८ १५ ३३	१० ३२ ५२	१२ ४९ ०९	१५ ०८ ३७	१७ २७ १४	१९ ३१ २४	२१ १३ ५२	२२ ४१ २४	० ०६ १९	१ ४५ २१	३ ४० ४३
१३	५ ५१ १७	८ ११ ३७	१० २८ ५६	१२ ४५ १३	१५ ०४ ४१	१७ २३ १९	१९ २७ २९	२१ ०९ ५७	२२ ३७ २८	० ०२ २४	१ ४१ २५	३ ३६ ४७
१४	५ ४७ २१	८ ०७ ४१	१० २५ ००	१२ ४१ १७	१५ ०० ४५	१७ १९ २३	१९ २३ ३३	२१ ०६ ०१	२२ ३३ ३२	२३ ५८ २८	१ ३७ २९	३ ३२ ५१
१५	५ ४३ २६	८ ०३ ४५	१० २१ ०४	१२ ३७ २१	१४ ५६ ४९	१७ १५ २७	१९ १९ ३७	२१ ०२ ०५	२२ २९ ३६	२३ ५४ ३२	१ ३३ ३३	३ २८ ५५
१६	५ ३९ ३०	७ ५९ ४९	१० १७ ०८	१२ ३३ २५	१४ ५२ ५३	१७ ११ ३१	१९ १५ ४१	२० ५८ ०९	२२ २५ ४१	२३ ५० ३६	१ २९ ३७	३ २४ ५९
१७	५ ३५ ३४	७ ५५ ५४	१० १३ १२	१२ २९ २९	१४ ४८ ५७	१७ ०७ ३५	१९ ११ ४५	२० ५४ १३	२२ २१ ४५	२३ ४६ ४०	१ २५ ४१	३ २१ ०३
१८	५ ३१ ३८	७ ५१ ५८	१० ०९ १७	१२ २५ ३४	१४ ४५ ०२	१७ ०३ ३९	१९ ०७ ४९	२० ५० १७	२२ १७ ४९	२३ ४२ ४४	१ २१ ४५	३ १७ ०७
१९	५ २७ ४२	७ ४८ ०२	१० ०५ २१	१२ २१ ३८	१४ ४१ ०६	१६ ५९ ४३	१९ ०३ ५३	२० ४६ २१	२२ १३ ५३	२३ ३८ ४८	१ १७ ४९	३ १३ ११
२०	५ २३ ४६	७ ४४ ०६	१० ०१ २५	१२ १७ ४२	१४ ३७ १०	१६ ५५ ४७	१८ ५९ ५७	२० ४२ २५	२२ ०९ ५७	२३ ३४ ५२	१ १३ ५४	३ ०९ १५
२१	५ १९ ५०	७ ४० १०	९ ५७ २९	१२ १३ ४६	१४ ३३ १४	१६ ५१ ५१	१८ ५६ ०१	२० ३८ २९	२२ ०६ ०१	२३ ३० ५६	१ ०९ ५८	३ ०५ २०
२२	५ १५ ५४	७ ३६ १४	९ ५३ ३३	१२ ०९ ५०	१४ २९ १८	१६ ४७ ५५	१८ ५२ ०६	२० ३४ ३४	२२ ०२ ०५	२३ २७ ००	१ ०६ ०२	३ ०१ २४
२३	५ ११ ५८	७ ३२ १८	९ ४९ ३७	१२ ०५ ५४	१४ २५ २२	१६ ४४ ००	१८ ४८ १०	२० ३० ३८	२१ ५८ ०९	२३ २३ ०५	१ ०२ ०६	२ ५७ २८
२४	५ ०८ ०२	७ २८ २२	९ ४५ ४१	१२ ०१ ५८	१४ २१ २६	१६ ४० ०४	१८ ४४ १४	२० २६ ४२	२१ ५४ १३	२३ १९ ०९	० ५८ १०	२ ५३ ३२
२५	५ ०४ ०७	७ २४ २६	९ ४१ ४५	११ ५८ ०२	१४ १७ ३०	१६ ३६ ०८	१८ ४० १८	२० २२ ४६	२१ ५० १७	२३ १५ १३	० ५४ १४	२ ४९ ३६
२६	५ ०० ११	७ २० ३०	९ ३७ ४९	११ ५४ ०६	१४ १३ ३४	१६ ३२ १२	१८ ३६ २२	२० १८ ५०	२१ ४६ २२	२३ ११ १७	० ५० १८	२ ४५ ४०
२७	४ ५६ १५	७ १६ ३४	९ ३३ ५४	११ ५० ११	१४ ०९ ३९	१६ २८ १६	१८ ३२ २६	२० १४ ५४	२१ ४२ २६	२३ ०७ २१	० ४६ २२	२ ४१ ४४
२८	४ ५२ १९	७ १२ ३९	९ २९ ५८	११ ४६ १५	१४ ०५ ४३	१६ २४ २०	१८ २८ ३०	२० १० ५८	२१ ३८ ३०	२३ ०३ २५	० ४२ २६	२ ३७ ४८
२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ १९	१४ ०१ ४७	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२१ ३४ ३४	२२ ५९ २९	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ ४४ २७	७ ०४ ४७	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२१ ३० ३८	२२ ५५ ३३	० ३४ ३५	२ २९ ५७
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५६ ५५	९ १४ १४	११ ३० ३१	१३ ४९ ५९	१६ ०८ ३७	१८ १२ ४६	१९ ५५ १४	२१ २२ ४६	२२ ४७ ४१	० २६ ४३	२ २२ ०५	४ ३६ ३५
२	६ ५२ ५९	९ १० १८	११ २६ ३५	१३ ४६ ०३	१६ ०४ ४१	१८ ०८ ५१	१९ ५१ १९	२१ १८ ५०	२२ ४३ ४६	० २२ ४७	२ १८ ०९	४ ३२ ३९
३	६ ४९ ०३	९ ०६ २२	११ २२ ३९	१३ ४२ ०७	१६ ०० ४५	१८ ०४ ५५	१९ ४७ २३	२१ १४ ५४	२२ ३९ ५०	० १४ ५५	२ १४ १३	४ २८ ४३
४	६ ४५ ०७	९ ०२ २६	११ १८ ४३	१३ ३८ ११	१५ ५६ ४९	१८ ०० ५९	१९ ४३ २७	२१ १० ५८	२२ ३५ ५४	० १० ५९	२ १० १७	४ २४ ४८
५	६ ४१ १२	८ ५८ ३०	११ १४ ४७	१३ ३४ १५	१५ ५२ ५३	१७ ५७ ०३	१९ ३९ ३१	२१ ०७ ०३	२२ ३१ ५८	० ०७ ०३	२ ०६ २१	४ २० ५२
६	६ ३७ १६	८ ५४ ३५	११ १० ५२	१३ ३० २०	१५ ४८ ५७	१७ ५३ ०७	१९ ३५ ३५	२१ ०३ ०७	२२ २८ ०२	० ०३ ०७	२ ०२ २५	४ १६ ५६
७	६ ३३ २०	८ ५० ३९	११ ०६ ५६	१३ २६ २४	१५ ४५ ०१	१७ ४९ ११	१९ ३१ ३९	२० ५९ ११	२२ २४ ०६	२३ ५९ ११	१ ५८ २३	४ १३ ००
८	६ २९ २४	८ ४६ ४३	११ ०३ ००	१३ २२ २८	१५ ४१ ०५	१७ ४५ १५	१९ २७ ४३	२० ५५ १५	२२ २० १०	२३ ५५ १६	१ ५४ ३३	४ ०९ ०४
९	६ २५ २८	८ ४२ ४७	१० ५९ ०४	१३ १८ ३२	१५ ३७ ०९	१७ ४१ १९	१९ २३ ४७	२० ५१ १९	२२ १६ १४	२३ ५१ २०	१ ५० ३७	४ ०५ ०८
१०	६ २१ ३२	८ ३८ ५१	१० ५५ ०८	१३ १४ ३६	१५ ३३ १३	१७ ३७ २३	१९ १९ ५१	२० ४७ २३	२२ १२ १८	२३ ४७ २४	१ ४६ ४२	४ ०१ १२
११	६ १७ ३६	८ ३४ ५५	१० ५१ १२	१३ १० ४०	१५ २९ १७	१७ ३३ २७	१९ १५ ५५	२० ४३ २७	२२ ०८ २२	२३ ४३ २८	१ ४२ ४६	३ ५७ १६
१२	६ १३ ४०	८ ३० ५९	१० ४७ १६	१३ ०६ ४४	१५ २५ २२	१७ २९ ३२	१९ १२ ००	२० ३९ ३१	२२ ०४ २६	२३ ३९ ३२	१ ३८ ५०	३ ५३ २०
१३	६ ०९ ४४	८ २७ ०३	१० ४३ २०	१३ ०२ ४८	१५ २१ २६	१७ २५ ३६	१९ ०८ ०४	२० ३५ ३५	२२ ०० ३१	२३ ३५ ३६	१ ३४ ५४	३ ४९ २४
१४	६ ०५ ४८	८ २३ ०७	१० ३९ २४	१२ ५८ ५२	१५ १७ ३०	१७ २१ ४०	१९ ०४ ०८	२० ३१ ३९	२१ ५६ ३५	२३ ३१ ४०	१ ३० ५८	३ ४५ २९
१५	६ ०१ ५३	८ १९ ११	१० ३५ २८	१२ ५४ ५६	१५ १३ ३४	१७ १७ ४४	१९ ०० १२	२० २७ ४४	२१ ५२ ३९	२३ २७ ४४	१ २७ ०२	३ ४१ ३३
१६	५ ५७ ५७	८ १५ १६	१० ३१ ३३	१२ ५१ ०१	१५ ०९ ३८	१७ १३ ४८	१८ ५६ १६	२० २३ ४८	२१ ४८ ४३	२३ २३ ४८	१ २३ ०६	३ ३७ ३७
१७	५ ५४ ०१	८ ११ २०	१० २७ ३७	१२ ४७ ०५	१५ ०५ ४२	१७ ०९ ५२	१८ ५२ २०	२० १९ ५२	२१ ४४ ४७	२३ १९ ५२	१ १९ १०	३ ३३ ४१
१८	५ ५० ०५	८ ०७ २४	१० २३ ४१	१२ ४३ ०९	१५ ०१ ४६	१७ ०५ ५६	१८ ४८ २४	२० १५ ५६	२१ ४० ५१	२३ १५ ५७	१ १५ १४	३ २९ ४५
१९	५ ४६ ०९	८ ०३ २८	१० १९ ४५	१२ ३९ १३	१४ ५७ ५०	१७ ०२ ००	१८ ४४ २८	२० १२ ००	२१ ३६ ५५	२३ १२ ०१	१ ११ १९	३ २५ ४९
२०	५ ४२ १३	७ ५९ ३२	१० १५ ४९	१२ ३५ १७	१४ ५३ ५४	१६ ५८ ०४	१८ ४० ३२	२० ०८ ०४	२१ ३२ ५९	२३ ०८ ०५	१ ०७ २३	३ २१ ५३
२१	५ ३८ १७	७ ५५ ३६	१० ११ ५३	१२ ३१ २१	१४ ४९ ५९	१६ ५४ ०८	१८ ३६ ३६	२० ०४ ०८	२१ २९ ०३	२३ ०४ ०९	१ ०३ २७	३ १७ ५७
२२	५ ३४ २१	७ ५१ ४०	१० ०७ ५७	१२ २७ २५	१४ ४६ ०३	१६ ५० १३	१८ ३२ ४१	२० ०० १२	२१ २५ ०७	२३ ०० १३	० ५९ ३१	३ १४ ०१
२३	५ ३० २५	७ ४७ ४४	१० ०४ ०१	१२ २३ २९	१४ ४२ ०७	१६ ४६ १७	१८ २८ ४५	१९ ५६ १६	२१ २१ ११	२२ ५६ १७	० ५५ ३५	३ १० ०६
२४	५ २६ २९	७ ४३ ४८	१० ०० ०५	१२ १९ ३३	१४ ३८ ११	१६ ४२ २१	१८ २४ ४९	१९ ५२ २०	२१ १७ १६	२२ ५२ २१	० ५१ ३९	३ ०६ १०
२५	५ २२ ३४	७ ३९ ५२	९ ५६ ०९	१२ १५ ३७	१४ ३४ १५	१६ ३८ २५	१८ २० ५३	१९ ४८ २४	२१ १३ २०	२२ ४८ २५	० ४७ ४३	३ ०२ १४
२६	५ १८ ३८	७ ३५ ५७	९ ५२ १४	१२ ११ ४२	१४ ३० १९	१६ ३४ २९	१८ १६ ५७	१९ ४४ २९	२१ ०९ २४	२२ ४४ २९	० ४३ ४७	२ ५८ १८
२७	५ १४ ४२	७ ३२ ०१	९ ४८ १८	१२ ०७ ४६	१४ २६ २३	१६ ३० ३३	१८ १३ ०१	१९ ४० ३३	२१ ०५ २८	२२ ४० ३३	० ३९ ५१	२ ५४ २२
२८	५ १० ४६	७ २८ ०५	९ ४४ २२	१२ ०३ ५०	१४ २२ २७	१६ २६ ३७	१८ ०९ ०५	१९ ३६ ३७	२१ ०१ ३२	२२ ३६ ३७	० ३५ ५५	२ ५० २६
२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४१	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४१	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३५	१६ १८ ४५	१८ ०१ १३	१९ २८ ४५	२० ५३ ४०	२२ २८ ४६	० २८ ०४	२ ४२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२ २१	९ २८ ३८	११ ४८ ०६	१४ ०६ ४४	१६ १० ५४	१७ ५३ २२	१९ २० ५३	२० ४५ ४८	२२ २० ५४	० १६ १६	२ ३४ ४२	४ ५५ ०२
२	७ ०८ २५	९ २४ ४२	११ ४४ १०	१४ ०२ ४८	१६ ०६ ५८	१७ ४९ २६	१९ १६ ५७	२० ४१ ५३	२२ १६ ५८	० १२ २०	२ ३० ४७	४ ५१ ०६
३	७ ०४ २९	९ २० ४६	११ ४० १४	१३ ५८ ५२	१६ ०३ ०२	१७ ४५ ३०	१९ १३ ०१	२० ३७ ५७	२२ १३ ०२	० ०८ २४	२ २६ ५१	४ ४७ १०
४	७ ०० ३३	९ १६ ५०	११ ३६ १८	१३ ५४ ५६	१५ ५९ ०६	१७ ४१ ३४	१९ ०९ ०५	२० ३४ ०१	२२ ०९ ०६	० ०४ २८	२ २२ ५५	४ ४३ १५
५	६ ५६ ३८	९ १२ ५५	११ ३२ २३	१३ ५१ ००	१५ ५५ १०	१७ ३७ ३८	१९ ०५ १०	२० ३० ०५	२२ ०५ १०	० ०० ३२	२ १८ ५९	४ ३९ १९
६	६ ५२ ४२	९ ०८ ५९	११ २८ २७	१३ ४७ ०४	१५ ५१ १४	१७ ३३ ४२	१९ ०१ १४	२० २६ ०९	२२ ०१ १४	२३ ५६ ३६	२ १५ ०३	४ ३५ २३
७	६ ४८ ४६	९ ०५ ०३	११ २४ ३१	१३ ४३ ०८	१५ ४७ १८	१७ २९ ४६	१८ ५७ १८	२० २२ १३	२१ ५७ १८	२३ ५२ ४०	२ ११ ०७	४ ३१ २७
८	६ ४४ ५०	९ ०१ ०७	११ २० ३५	१३ ३९ १२	१५ ४३ २२	१७ २५ ५०	१८ ५३ २२	२० १८ १७	२१ ५३ २३	२३ ४८ ४५	२ ०७ ११	४ २७ ३१
९	६ ४० ५४	८ ५७ ११	११ १६ ३९	१३ ३५ १६	१५ ३९ २६	१७ २१ ५४	१८ ४९ २६	२० १४ २१	२१ ४९ २७	२३ ४४ ४९	२ ०३ १५	४ २३ ३५
१०	६ ३६ ५८	८ ५३ १५	११ १२ ४३	१३ ३१ २१	१५ ३५ ३०	१७ १७ ५८	१८ ४५ ३०	२० १० २५	२१ ४५ ३१	२३ ४० ५३	१ ५९ १९	४ १९ ३९
११	६ ३३ ०२	८ ४९ १९	११ ०८ ४७	१३ २७ २५	१५ ३१ ३४	१७ १४ ०२	१८ ४१ ३४	२० ०६ २९	२१ ४१ ३५	२३ ३६ ५७	१ ५५ २३	४ १५ ४३
१२	६ २९ ०६	८ ४५ २३	११ ०४ ५१	१३ २३ २९	१५ २७ ३९	१७ १० ०७	१८ ३७ ३८	२० ०२ ३३	२१ ३७ ३९	२३ ३३ ०१	१ ५१ २८	४ ११ ४७
१३	६ २५ १०	८ ४१ २७	११ ०० ५५	१३ १९ ३३	१५ २३ ४३	१७ ०६ ११	१८ ३३ ४२	१९ ५८ ३८	२१ ३३ ४३	२३ २९ ०५	१ ४७ ३२	४ ०७ ५१
१४	६ २१ १४	८ ३७ ३१	१० ५६ ५९	१३ १५ ३७	१५ १९ ४७	१७ ०२ १५	१८ २९ ४६	१९ ५४ ४२	२१ २९ ४७	२३ २५ ०९	१ ४३ ३६	४ ०३ ५६
१५	६ १७ १९	८ ३३ ३६	१० ५३ ०४	१३ ११ ४२	१५ १५ ५१	१६ ५८ १९	१८ २५ ५१	१९ ५० ४६	२१ २५ ५१	२३ २१ १३	१ ३९ ४०	३ ६० ००
१६	६ १३ २३	८ २९ ४०	१० ४९ ०८	१३ ०७ ४५	१५ ११ ५५	१६ ५४ २३	१८ २१ ५५	१९ ४६ ५०	२१ २१ ५५	२३ १७ १७	१ ३५ ४४	३ ५६ ०४
१७	६ ०९ २७	८ २५ ४४	१० ४५ १२	१३ ०३ ४९	१५ ०७ ५९	१६ ५० २७	१८ १७ ५९	१९ ४२ ५४	२१ १७ ५९	२३ १३ २१	१ ३१ ४८	३ ५२ ०८
१८	६ ०५ ३१	८ २१ ४८	१० ४१ १६	१२ ५९ ५३	१५ ०४ ०३	१६ ४६ ३१	१८ १४ ०३	१९ ३८ ५८	२१ १४ ०४	२३ ०९ २६	१ २७ ५२	३ ४८ १२
१९	६ ०१ ३५	८ १७ ५२	१० ३७ २-	१२ ५५ ५७	१५ ०० ०७	१६ ४२ ३५	१८ १० ०७	१९ ३५ ०२	२१ १० ०८	२३ ०५ ३०	१ २३ ५६	३ ४४ १६
२०	५ ५७ ३९	८ १३ ५६	१० ३३ २४	१२ ५२ ०१	१४ ५६ ११	१६ ३८ ३९	१८ ०६ ११	१९ ३१ ०६	२१ ०६ १२	२३ ०१ ३४	१ २० ००	३ ४० २०
२१	५ ५३ ४३	८ १० ००	१० २९ २८	१२ ४८ ०६	१४ ५२ १६	१६ ३४ ४३	१८ ०२ १५	१९ २७ १०	२१ ०२ १६	२२ ५७ ३८	१ १६ ०४	३ ३६ २४
२२	५ ४९ ४७	८ ०६ ०४	१० २५ ३२	१२ ४४ १०	१४ ४८ २०	१६ ३० ४८	१७ ५८ १९	१९ २३ १४	२० ५८ २०	२२ ५३ ४२	१ १२ ०८	३ ३२ २८
२३	५ ४५ ५१	८ ०२ ०८	१० २१ ३६	१२ ४० १४	१४ ४४ २४	१६ २६ ५२	१७ ५४ २३	१९ १९ १९	२० ५४ २४	२२ ४९ ४६	१ ०८ १३	३ २८ ३२
२४	५ ४१ ५५	७ ५८ १२	१० १७ ४०	१२ ३६ १८	१४ ४० २८	१६ २२ ५६	१७ ५० २७	१९ १५ २३	२० ५० २८	२२ ४५ ५०	१ ०४ १७	३ २४ ३७
२५	५ ३८ ००	७ ५४ १७	१० १३ ४५	१२ ३२ २२	१४ ३६ ३२	१६ १९ ००	१७ ४६ ३१	१९ ११ २७	२० ४६ ३२	२२ ४१ ५४	१ ०० २१	३ २० ४१
२६	५ ३४ ०४	७ ५० २१	१० ०९ ४९	१२ २८ २६	१४ ३२ ३६	१६ १५ ०४	१७ ४२ ३६	१९ ०७ ३१	२० ४२ ३६	२२ ३७ ५८	० ५६ २५	३ १६ ४५
२७	५ ३० ०८	७ ४६ २५	१० ०५ ५३	१२ २४ ३०	१४ २८ ४०	१६ ११ ०८	१७ ३८ ४०	१९ ०३ ३५	२० ३८ ४०	२२ ३४ ०२	० ५२ २९	३ १२ ४९
२८	५ २६ १२	७ ४२ २९	१० ०१ ५७	१२ २० ३४	१४ २४ ४४	१६ ०७ १२	१७ ३४ ४४	१८ ५९ ३९	२० ३४ ४५	२२ ३० ०७	० ४८ ३३	३ ०८ ५३
२९	५ २२ १६	७ ३८ ३३	९ ५८ ०१	१२ १६ ३८	१४ २० ४८	१६ ०३ १६	१७ ३० ४८	१८ ५५ ४३	२० ३० ४९	२२ २६ ११	० ४४ ३७	३ ०४ ५७
३०	५ १८ २०	७ ३४ ३७	९ ५४ ०५	१२ १२ ४२	१४ १६ ५२	१५ ५९ २०	१७ २६ ५२	१८ ५१ ४७	२० २६ ५३	२२ २२ १५	० ४० ४१	३ ०१ ०१

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३० ४१	९ ५० ०९	१२ ०८ ४७	१४ १२ ५७	१५ ५५ २४	१७ २२ ५६	१८ ४७ ५१	२० २२ ५७	२२ १८ १९	० ३६ ४५	२ ५७ ०५	५ १४ २४
२	७ २६ ४५	९ ४६ १३	१२ ०४ ५१	१४ ०९ ०१	१५ ५१ २८	१७ १९ ००	१८ ४३ ५५	२० १९ ०१	२२ १४ २३	० ३२ ४९	२ ५३ ०९	५ १० २८
३	७ २२ ४९	९ ४२ १७	१२ ०० ५५	१४ ०५ ०५	१५ ४७ ३३	१७ १५ ०४	१८ ३९ ५९	२० १५ ०५	२२ १० २७	० २८ ५४	२ ४९ १३	५ ०६ ३२
४	७ १८ ५३	९ ३८ २१	११ ५६ ५९	१४ ०१ ०९	१५ ४३ ३७	१७ ११ ०८	१८ ३६ ०४	२० ११ ०९	२२ ०६ ३१	० २४ ५८	२ ४५ १७	५ ०२ ३६
५	७ १४ ५८	९ ३४ २६	११ ५३ ०३	१३ ५७ १३	१५ ३९ ४१	१७ ०७ १२	१८ ३२ ०८	२० ०७ १३	२२ ०२ ३५	० १७ ०६	२ ४१ २२	४ ५८ ४१
६	७ ११ ०२	९ ३० ३०	११ ४९ ०७	१३ ५३ १७	१५ ३५ ४५	१७ ०३ १७	१८ २८ १२	२० ०३ १७	२१ ५८ ३९	० १३ १०	२ ३७ २६	४ ५४ ४५
७	७ ०७ ०६	९ २६ ३४	११ ४५ ११	१३ ४९ २१	१५ ३१ ४९	१६ ५९ २१	१८ २४ १६	१९ ५९ २१	२१ ५४ ४३	० ०९ १४	२ ३३ ३०	४ ५० ४९
८	७ ०३ १०	९ २२ ३८	११ ४१ १५	१३ ४५ २५	१५ २७ ५३	१६ ५५ २५	१८ २० २०	१९ ५५ २५	२१ ५० ४८	० ०५ १८	२ २९ ३४	४ ४६ ५३
९	६ ५९ १४	९ १८ ४२	११ ३७ १९	१३ ४१ २९	१५ २३ ५७	१६ ५१ २९	१८ १६ २४	१९ ५१ ३०	२१ ४६ ५२	० ०१ २२	२ २५ ३८	४ ४२ ५७
१०	६ ५५ १८	९ १४ ४६	११ ३३ २४	१३ ३७ ३३	१५ २० ०१	१६ ४७ ३३	१८ १२ २८	१९ ४७ ३४	२१ ४२ ५६	२३ ५७ २६	२ २१ ४२	४ ३९ ०१
११	६ ५१ २२	९ १० ५०	११ २९ २८	१३ ३३ ३७	१५ १६ ०५	१६ ४३ ३७	१८ ०८ ३२	१९ ४३ ३८	२१ ३९ ००	२३ ५३ ३०	२ १७ ४६	४ ३५ ०५
१२	६ ४७ २६	९ ०६ ५४	११ २५ ३२	१३ २९ ४२	१५ १२ ०९	१६ ३९ ४१	१८ ०४ ३६	१९ ३९ ४२	२१ ३५ ०४	२३ ४९ ३५	२ १३ ५०	४ ३१ ०९
१३	६ ४३ ३०	९ ०२ ५८	११ २१ ३६	१३ २५ ४६	१५ ०८ १४	१६ ३५ ४५	१८ ०० ४०	१९ ३५ ४६	२१ ३१ ०८	२३ ४५ ३९	२ ०९ ५४	४ २७ १३
१४	६ ३९ ३४	८ ५९ ०२	११ १७ ४०	१३ २१ ५०	१५ ०४ १८	१६ ३१ ४९	१७ ५६ ४५	१९ ३१ ५०	२१ २७ १२	२३ ४१ ४३	२ ०५ ५९	४ २३ १७
१५	६ ३५ ३९	८ ५५ ०७	११ १३ ४४	१३ १७ ५४	१५ ०० २२	१६ २७ ५३	१७ ५२ ४९	१९ २७ ५४	२१ २३ १६	२३ ३७ ४७	२ ०२ ०३	४ १९ २२
१६	६ ३१ ४३	८ ५१ ११	११ ०९ ४८	१३ १३ ५८	१४ ५६ २६	१६ २३ ५७	१७ ४८ ५३	१९ २३ ५८	२१ १९ २०	२३ ३३ ५१	१ ५८ ०७	४ १५ २६
१७	६ २७ ४७	८ ४७ १५	११ ०५ ५२	१३ १० ०२	१४ ५२ ३०	१६ २० ०२	१७ ४४ ५७	१९ २० ०२	२१ १५ २४	२३ २९ ५५	१ ५४ ११	४ ११ ३०
१८	६ २३ ५१	८ ४३ १९	११ ०१ ५६	१३ ०६ ०६	१४ ४८ ३४	१६ १६ ०६	१७ ४१ ०१	१९ १६ ०६	२१ ११ २९	२३ २५ ५९	१ ५० १५	४ ०७ ३४
१९	६ १९ ५५	८ ३९ २३	१० ५८ ००	१३ ०२ १०	१४ ४४ ३८	१६ १२ १०	१७ ३७ ०५	१९ १२ ११	२१ ०७ ३३	२३ २२ ०३	१ ४६ १९	४ ०३ ३८
२०	६ १५ ५९	८ ३५ २७	१० ५४ ०४	१२ ५८ १४	१४ ४० ४२	१६ ०८ १४	१७ ३३ ०९	१९ ०८ १५	२१ ०३ ३७	२३ १८ ०७	१ ४२ २३	३ ५९ ४२
२१	६ १२ ०३	८ ३१ ३१	१० ५० ०९	१२ ५४ १८	१४ ३६ ४६	१६ ०४ १८	१७ २९ १३	१९ ०४ १९	२० ५९ ४१	२३ १४ ११	१ ३८ २७	३ ५५ ४६
२२	६ ०८ ०७	८ २७ ३५	१० ४६ १३	१२ ५० २३	१४ ३२ ५०	१६ ०० २२	१७ २५ १७	१९ ०० २३	२० ५५ ४५	२३ १० १६	१ ३४ ३१	३ ५१ ५०
२३	६ ०४ ११	८ २३ ३९	१० ४२ १७	१२ ४६ २७	१४ २८ ५५	१५ ५६ २६	१७ २१ २१	१८ ५६ २७	२० ५१ ४९	२३ ०६ २०	१ ३० ३५	३ ४७ ५४
२४	६ ०० १५	८ १९ ४३	१० ३८ २१	१२ ४२ ३१	१४ २४ ५९	१५ ५२ ३०	१७ १७ २६	१८ ५२ ३१	२० ४७ ५३	२३ ०२ २४	१ २६ ४०	३ ४३ ५८
२५	५ ५६ २०	८ १५ ४८	१० ३४ २५	१२ ३८ ३५	१४ २१ ०३	१५ ४८ ३४	१७ १३ ३०	१८ ४८ ३५	२० ४३ ५७	२२ ५८ २८	१ २२ ४४	३ ४० ०३
२६	५ ५२ २४	८ ११ ५२	१० ३० २९	१२ ३४ ३९	१४ १७ ०७	१५ ४४ ३८	१७ ०९ ३४	१८ ४४ ३९	२० ४० ०१	२२ ५४ ३२	१ १८ ४८	३ ३६ ०७
२७	५ ४८ २८	८ ०७ ५६	१० २६ ३३	१२ ३० ४३	१४ १३ ११	१५ ४० ४३	१७ ०५ ३८	१८ ४० ४३	२० ३६ ०५	२२ ५० ३६	१ १४ ५२	३ ३२ ११
२८	५ ४४ ३२	८ ०४ ००	१० २२ ३७	१२ २६ ४७	१४ ०९ १५	१५ ३६ ४७	१७ ०१ ४२	१८ ३६ ४७	२० ३२ १०	२२ ४६ ४०	१ १० ५६	३ २८ १५
२९	५ ४० ३६	८ ०० ०४	१० १८ ४१	१२ २२ ५१	१४ ०५ १९	१५ ३२ ५१	१६ ५७ ४६	१८ ३२ ५२	२० २८ १४	२२ ४२ ४४	१ ०७ ००	३ २४ १९
३०	५ ३६ ४०	७ ५६ ०८	१० १४ ४५	१२ १८ ५५	१४ ०१ २३	१५ २८ ५५	१६ ५३ ५०	१८ २८ ५६	२० २४ १८	२२ ३८ ४८	१ ०३ ०४	३ २० २३
३१	५ ३२ ४४	७ ५२ १२	१० १० ५०	१२ १४ ५९	१३ ५७ २७	१५ २४ ५९	१६ ४९ ५४	१८ २५ ००	२० २० २२	२२ ३४ ५२	० ५९ ०८	३ १६ २७

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४८ १६	१० ०६ ५४	१२ ११ ०४	१३ ५३ ३१	१५ २१ ०३	१६ ४५ ५८	१८ २१ ०४	२० १६ २६	२२ ३० ५७	० ५५ १२	३ १२ ३१	५ २८ ४८
२	७ ४४ २०	१० ०२ ५८	१२ ०७ ०८	१३ ४९ ३५	१५ १७ ०७	१६ ४२ ०२	१८ १७ ०८	२० १२ ३०	२२ २७ ०१	० ५१ १६	३ ०८ ३५	५ २४ ५२
३	७ ४० २४	९ ५९ ०२	१२ ०३ १२	१३ ४५ ४०	१५ १३ ११	१६ ३८ ०६	१८ १३ १२	२० ०८ ३४	२२ २३ ०५	० ४७ २१	३ ०४ ३९	५ २० ५६
४	७ ३६ २९	९ ५५ ०६	११ ५९ १६	१३ ४१ ४४	१५ ०९ १५	१६ ३४ ११	१८ ०९ १६	२० ०४ ३८	२२ १९ ०९	० ४३ २५	३ ०० ४४	५ १७ ०१
५	७ ३२ ३३	९ ५१ १०	११ ५५ २०	१३ ३७ ४८	१५ ०५ १९	१६ ३० १५	१८ ०५ २०	२० ०० ४२	२२ १५ १३	० ३९ २९	२ ५६ ४८	५ १३ ०५
६	७ २८ ३७	९ ४७ १४	११ ५१ २४	१३ ३३ ५२	१५ ०१ २४	१६ २६ १९	१८ ०१ २४	१९ ५६ ४६	२२ ११ १७	० ३५ ३३	२ ५२ ५२	५ ०९ ०९
७	७ २४ ४१	९ ४३ १८	११ ४७ २८	१३ २९ ५६	१४ ५७ २८	१६ २२ २३	१७ ५७ २८	१९ ५२ ५१	२२ ०७ २१	० ३१ ३७	२ ४८ ५६	५ ०५ १३
८	७ २० ४५	९ ३९ २२	११ ४३ ३२	१३ २६ ००	१४ ५३ ३२	१६ १८ २७	१७ ५३ ३३	१९ ४८ ५५	२२ ०३ २५	० २७ ४१	२ ४५ ००	५ ०१ १७
९	७ १६ ४९	९ ३५ २७	११ ३९ ३६	१३ २२ ०४	१४ ४९ ३६	१६ १४ ३१	१७ ४९ ३७	१९ ४४ ५९	२१ ५९ २९	० २३ ४५	२ ४१ ०४	४ ५७ २१
१०	७ १२ ५३	९ ३१ ३१	११ ३५ ४०	१३ १८ ०८	१४ ४५ ४०	१६ १० ३५	१७ ४५ ४१	१९ ४१ ०३	२१ ५५ ३४	० १५ ५३	२ ३७ ०८	४ ५३ २५
११	७ ०८ ५७	९ २७ ३५	११ ३१ ४५	१३ १४ १२	१४ ४१ ४४	१६ ०६ ३९	१७ ४१ ४५	१९ ३७ ०७	२१ ५१ ३८	० ११ ५७	२ ३३ १२	४ ४९ २९
१२	७ ०५ ०१	९ २३ ३९	११ २७ ४९	१३ १० १६	१४ ३७ ४८	१६ ०२ ४३	१७ ३७ ४९	१९ ३३ ११	२१ ४७ ४२	० ०८ ०२	२ २९ १६	४ ४५ ३३
१३	७ ०१ ०५	९ १९ ४३	११ २३ ५३	१३ ०६ २१	१४ ३३ ५२	१५ ५८ ४७	१७ ३३ ५३	१९ २९ १५	२१ ४३ ४६	० ०४ ०६	२ २५ २०	४ ४१ ३७
१४	६ ५७ १०	९ १५ ४७	११ १९ ५७	१३ ०२ २५	१४ २९ ५६	१५ ५४ ५२	१७ २९ ५७	१९ २५ १९	२१ ३९ ५०	० ०० १०	२ २१ २५	४ ३७ ४२
१५	६ ५३ १४	९ ११ ५१	११ १६ ०१	१२ ५८ २९	१४ २६ ००	१५ ५० ५६	१७ २६ ०१	१९ २१ २३	२१ ३५ ५४	२३ ५६ १४	२ १७ २९	४ ३३ ४६
१६	६ ४९ १८	९ ०७ ५५	११ १२ ०५	१२ ५४ ३३	१४ २२ ०५	१५ ४७ ००	१७ २२ ०५	१९ १७ २७	२१ ३१ ५८	२३ ५२ १८	२ १३ ३३	४ २९ ५०
१७	६ ४५ २२	९ ०३ ५९	११ ०८ ०९	१२ ५० ३७	१४ १८ ०९	१५ ४३ ०४	१७ १८ ०९	१९ १३ ३२	२१ २८ ०२	२३ ४८ २२	२ ०९ ३७	४ २५ ५४
१८	६ ४१ २६	९ ०० ०३	११ ०४ १३	१२ ४६ ४१	१४ १४ १३	१५ ३९ ०८	१७ १४ १४	१९ ०९ ३६	२१ २४ ०६	२३ ४४ २६	२ ०५ ४१	४ २१ ५८
१९	६ ३७ ३०	८ ५६ ०८	११ ०० १७	१२ ४२ ४५	१४ १० १७	१५ ३५ १२	१७ १० १८	१९ ०५ ४०	२१ २० १०	२३ ४० ३०	२ ०१ ४५	४ १८ ०२
२०	६ ३३ ३४	८ ५२ १२	१० ५६ २१	१२ ३८ ४९	१४ ०६ २१	१५ ३१ १६	१७ ०६ २२	१९ ०१ ४४	२१ १६ १५	२३ ३६ ३४	१ ५७ ४९	४ १४ ०६
२१	६ २९ ३८	८ ४८ १६	१० ५२ २६	१२ ३४ ५३	१४ ०२ २५	१५ २७ २०	१७ ०२ २६	१८ ५७ ४८	२१ १२ १९	२३ ३२ ३९	१ ५३ ५३	४ १० १०
२२	६ २५ ४२	८ ४४ २०	१० ४८ ३०	१२ ३० ५७	१३ ५८ २९	१५ २३ २४	१६ ५८ ३०	१८ ५३ ५२	२१ ०८ २३	२३ २८ ४३	१ ४९ ५७	४ ०६ १४
२३	६ २१ ४७	८ ४० २४	१० ४४ ३४	१२ २७ ०२	१३ ५४ ३३	१५ १९ २८	१६ ५४ ३४	१८ ४९ ५६	२१ ०४ २७	२३ २४ ४७	१ ४६ ०२	४ ०२ १९
२४	६ १७ ५१	८ ३६ २८	१० ४० ३८	१२ २३ ०६	१३ ५० ३७	१५ १५ ३३	१६ ५० ३८	१८ ४६ ००	२१ ०० ३१	२३ २० ५१	१ ४२ ०६	३ ५८ २३
२५	६ १३ ५५	८ ३२ ३२	१० ३६ ४२	१२ १९ १०	१३ ४६ ४१	१५ ११ ३७	१६ ४६ ४२	१८ ४२ ०४	२० ५६ ३५	२३ १६ ५५	१ ३८ १०	३ ५४ २७
२६	६ ०९ ५९	८ २८ ३६	१० ३२ ४६	१२ १५ १४	१३ ४२ ४५	१५ ०७ ४१	१६ ४२ ४६	१८ ३८ ०८	२० ५२ ३९	२३ १२ ५९	१ ३४ १४	३ ५० ३१
२७	६ ०६ ०३	८ २४ ४०	१० २८ ५०	१२ ११ १८	१३ ३८ ५०	१५ ०३ ४५	१६ ३८ ५०	१८ ३४ १३	२० ४८ ४३	२३ ०९ ०३	१ ३० १८	३ ४६ ३५
२८	६ ०२ ०७	८ २० ४४	१० २४ ५४	१२ ०७ २२	१३ ३४ ५४	१४ ५९ ४९	१६ ३४ ५५	१८ ३० १७	२० ४४ ४७	२३ ०५ ०७	१ २६ २२	३ ४२ ३९
२९	५ ५८ ११	८ १६ ४९	१० २० ५८	१२ ०३ २६	१३ ३० ५८	१४ ५५ ५३	१६ ३० ५९	१८ २६ २१	२० ४० ५१	२३ ०१ ११	१ २२ २६	३ ३८ ४३
३०	५ ५४ १५	८ १२ ५३	१० १७ ०२	११ ५९ ३०	१३ २७ ०२	१४ ५१ ५७	१६ २७ ०३	१८ २२ २५	२० ३६ ५६	२२ ५७ १५	१ १८ ३०	३ ३४ ४७

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०८ ५७	१० १३ ०७	११ ५५ ३४	१३ २३ ०६	१४ ४८ ०१	१६ २३ ०७	१८ १८ २९	२० ३३ ००	२२ ५३ २०	१ १४ ३४	३ ३० ५१	५ ५० १९
२	८ ०५ ०१	१० ०९ ११	११ ५१ ३८	१३ १९ १०	१४ ४४ ०५	१६ १९ ११	१८ १४ ३३	२० २९ ०४	२२ ४९ २४	१ १० ३८	३ २६ ५५	५ ४६ २३
३	८ ०१ ०५	१० ०५ १५	११ ४७ ४३	१३ १५ १४	१४ ४० ०९	१६ १५ १५	१८ १० ३७	२० २५ ०८	२२ ४५ २८	१ ०६ ४३	३ २३ ००	५ ४२ २८
४	७ ५७ ०९	१० ०१ १९	११ ४३ ४७	१३ ११ १८	१४ ३६ १४	१६ ११ १९	१८ ०६ ४१	२० २१ १२	२२ ४१ ३२	१ ०२ ४७	३ १९ ०४	५ ३८ ३२
५	७ ५३ १३	९ ५७ २३	११ ३९ ५१	१३ ०७ २२	१४ ३२ १८	१६ ०७ २३	१८ ०२ ४५	२० १७ १६	२२ ३७ ३६	० ५८ ५१	३ १५ ०८	५ ३४ ३६
६	७ ४९ १७	९ ५३ २७	११ ३५ ५५	१३ ०३ २६	१४ २८ २२	१६ ०३ २७	१७ ५८ ५०	२० १३ २०	२२ ३३ ४०	० ५४ ५५	३ ११ १२	५ ३० ४०
७	७ ४५ २१	९ ४९ ३१	११ ३१ ५९	१२ ५९ ३१	१४ २४ २६	१५ ५९ ३१	१७ ५४ ५४	२० ०९ २४	२२ २९ ४४	० ५० ५९	३ ०७ १६	५ २६ ४४
८	७ ४१ २६	९ ४५ ३५	११ २८ ०३	१२ ५५ ३५	१४ २० ३०	१५ ५५ ३६	१७ ५० ५८	२० ०५ २८	२२ २५ ४८	० ४७ ०३	३ ०३ २०	५ २२ ४८
९	७ ३७ ३०	९ ४१ ३९	११ २४ ०७	१२ ५१ ३९	१४ १६ ३४	१५ ५१ ४०	१७ ४७ ०२	२० ०१ ३३	२२ २१ ५२	० ४३ ०७	२ ५९ २४	५ १८ ५२
१०	७ ३३ ३४	९ ३७ ४४	११ २० ११	१२ ४७ ४३	१४ १२ ३८	१५ ४७ ४४	१७ ४३ ०६	१९ ५७ ३७	२२ १७ ५६	० ३९ ११	२ ५५ २८	५ १४ ५६
११	७ २९ ३८	९ ३३ ४८	११ १६ १५	१२ ४३ ४७	१४ ०८ ४२	१५ ४३ ४८	१७ ३९ १०	१९ ५३ ४१	२२ १४ ०१	० ३५ १५	२ ५१ ३२	५ ११ ००
१२	७ २५ ४२	९ २९ ५२	११ १२ १९	१२ ३९ ५१	१४ ०४ ४६	१५ ३९ ५२	१७ ३५ १४	१९ ४९ ४५	२२ १० ०५	० ३१ २०	२ ४७ ३७	५ ०७ ०५
१३	७ २१ ४६	९ २५ ५६	११ ०८ २४	१२ ३५ ५५	१४ ०० ५०	१५ ३५ ५६	१७ ३१ १८	१९ ४५ ४९	२२ ०६ ०९	० २७ २४	२ ४३ ४१	५ ०३ ०९
१४	७ १७ ५०	९ २२ ००	११ ०४ २८	१२ ३१ ५९	१३ ५६ ५५	१५ ३२ ००	१७ २७ २२	१९ ४१ ५३	२२ ०२ १३	० २३ २८	२ ३९ ४५	४ ५९ १३
१५	७ १३ ५४	९ १८ ०४	११ ०० ३२	१२ २८ ०३	१३ ५२ ५९	१५ २८ ०४	१७ २३ २६	१९ ३७ ५७	२१ ५८ १७	० १५ ३६	२ ३५ ४९	४ ५५ १७
१६	७ ०९ ५८	९ १४ ०८	१० ५६ ३६	१२ २४ ०८	१३ ४९ ०३	१५ २४ ०८	१७ १९ ३१	१९ ३४ ०१	२१ ५४ २१	० ११ ४०	२ ३१ ५३	४ ५१ २१
१७	७ ०६ ०२	९ १० १२	१० ५२ ४०	१२ २० १२	१३ ४५ ०७	१५ २० १२	१७ १५ ३५	१९ ३० ०५	२१ ५० २५	० ०७ ४४	२ २७ ५७	४ ४७ २५
१८	७ ०२ ०७	९ ०६ १६	१० ४८ ४४	१२ १६ १६	१३ ४१ ११	१५ १६ १७	१७ ११ ३९	१९ २६ १०	२१ ४६ २९	० ०३ ४८	२ २४ ०१	४ ४३ २९
१९	६ ५८ ११	९ ०२ २०	१० ४४ ४८	१२ १२ २०	१३ ३७ १५	१५ १२ २१	१७ ०७ ४३	१९ २२ १४	२१ ४२ ३३	२३ ५९ ५२	२ २० ०५	४ ३९ ३३
२०	६ ५४ १५	८ ५८ २५	१० ४० ५२	१२ ०८ २४	१३ ३३ १९	१५ ०८ २५	१७ ०३ ४७	१९ १८ १८	२१ ३८ ३८	२३ ५५ ५६	२ १६ ०९	४ ३५ ३७
२१	६ ५० १९	८ ५४ २९	१० ३६ ५६	१२ ०४ २८	१३ २९ २३	१५ ०४ २९	१६ ५९ ५१	१९ १४ २२	२१ ३४ ४२	२३ ५२ ०१	२ १२ १३	४ ३१ ४२
२२	६ ४६ २३	८ ५० ३३	१० ३३ ०१	१२ ०० ३२	१३ २५ २७	१५ ०० ३३	१६ ५५ ५५	१९ १० २६	२१ ३० ४६	२३ ४८ ०५	२ ०८ १८	४ २७ ४६
२३	६ ४२ २७	८ ४६ ३७	१० २९ ०५	११ ५६ ३६	१३ २१ ३१	१४ ५६ ३७	१६ ५१ ५९	१९ ०६ ३०	२१ २६ ५०	२३ ४४ ०९	२ ०४ २२	४ २३ ५०
२४	६ ३८ ३१	८ ४२ ४१	१० २५ ०९	११ ५२ ४०	१३ १७ ३६	१४ ५२ ४१	१६ ४८ ०३	१९ ०२ ३४	२१ २२ ५४	२३ ४० १३	२ ०० २६	४ १९ ५४
२५	६ ३४ ३५	८ ३८ ४५	१० २१ १३	११ ४८ ४४	१३ १३ ४०	१४ ४८ ४५	१६ ४४ ०८	१८ ५८ ३८	२१ १८ ५८	२३ ३६ १७	१ ५६ ३०	४ १५ ५८
२६	६ ३० ३९	८ ३४ ४९	१० १७ १७	११ ४४ ४८	१३ ०९ ४४	१४ ४४ ४९	१६ ४० १२	१८ ५४ ४२	२१ १५ ०२	२३ ३२ २१	१ ५२ ३४	४ १२ ०२
२७	६ २६ ४४	८ ३० ५३	१० १३ २१	११ ४० ५३	१३ ०५ ४८	१४ ४० ५३	१६ ३६ १६	१८ ५० ४६	२१ ११ ०६	२३ २८ २५	१ ४८ ३८	४ ०८ ०६
२८	६ २२ ४८	८ २६ ५७	१० ०९ २५	११ ३६ ५७	१३ ०१ ५२	१४ ३६ ५८	१६ ३२ २०	१८ ४६ ५१	२१ ०७ १०	२३ २४ २९	१ ४४ ४२	४ ०४ १०
२९	६ १८ ५२	८ २३ ०१	१० ०५ २९	११ ३३ ०१	१२ ५७ ५६	१४ ३३ ०२	१६ २८ २४	१८ ४२ ५५	२१ ०३ १४	२३ २० ३३	१ ४० ४६	४ ०० १४
३०	६ १४ ५६	८ १९ ०६	१० ०१ ३३	११ २९ ०५	१२ ५४ ००	१४ २९ ०६	१६ २४ २८	१८ ३८ ५९	२० ५९ १९	२३ १६ ३८	१ ३६ ५०	३ ५६ १८
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ १० १३	९ ५२ ४१	११ २० १३	१२ ४५ ०८	१४ २० १४	१६ १५ ३५	१८ ३० ०५	२० ५० ३५	२३ ०७ ४४	१ २७ ५७	३ ४७ २५	६ ०६ ०३
२	८ ०६ १७	९ ४८ ४६	११ १६ १७	१२ ४१ १३	१४ १६ १८	१६ ११ ३९	१८ २६ १०	२० ४६ २९	२३ ०३ ४८	१ २४ ०१	३ ४३ २९	६ ०२ ०७
३	८ ०२ २१	९ ४४ ५०	११ १२ २२	१२ ३७ १७	१४ १२ २२	१६ ०७ ४३	१८ २२ १४	२० ४२ ३४	२२ ५९ ५३	१ २० ०५	३ ३९ ३३	५ ५८ ११
४	७ ५८ २५	९ ४० ५४	११ ०८ २६	१२ ३३ २१	१४ ०८ २६	१६ ०३ ४७	१८ १८ १८	२० ३८ ३८	२२ ५५ ५७	१ १६ १०	३ ३५ ३७	५ ५४ १५
५	७ ५४ ३०	९ ३६ ५८	११ ०४ ३०	१२ २९ २५	१४ ०४ ३०	१५ ५९ ५२	१८ १४ २२	२० ३४ ४२	२२ ५२ ०१	१ १२ १४	३ ३१ ४२	५ ५० १९
६	७ ५० ३४	९ ३३ ०२	११ ०० ३४	१२ २५ २९	१४ ०० ३४	१५ ५५ ५६	१८ १० २६	२० ३० ४६	२२ ४८ ०५	१ ०८ १८	३ २७ ४६	५ ४६ २३
७	७ ४६ ३८	९ २९ ०६	१० ५६ ३८	१२ २१ ३३	१३ ५६ ३८	१५ ५२ ००	१८ ०६ ३०	२० २६ ५०	२२ ४४ ०९	१ ०४ २२	३ २३ ५०	५ ४२ २७
८	७ ४२ ४२	९ २५ १०	१० ५२ ४२	१२ १७ ३७	१३ ५२ ४२	१५ ४८ ०४	१८ ०२ ३४	२० २२ ५४	२२ ४० १३	१ ०० २६	३ १९ ५४	५ ३८ ३२
९	७ ३८ ४६	९ २१ १४	१० ४८ ४६	१२ १३ ४१	१३ ४८ ४६	१५ ४४ ०८	१७ ५८ ३८	२० १८ ५८	२२ ३६ १७	० ५६ ३०	३ १५ ५८	५ ३४ ३६
१०	७ ३४ ५०	९ १७ १८	१० ४४ ५०	१२ ०९ ४५	१३ ४४ ५१	१५ ४० १२	१७ ५४ ४२	२० १५ ०२	२२ ३२ २१	० ५२ ३४	३ १२ ०२	५ ३० ४०
११	७ ३० ५४	९ १३ २३	१० ४० ५४	१२ ०५ ५०	१३ ४० ५५	१५ ३६ १६	१७ ५० ४७	२० ११ ०६	२२ २८ २५	० ४८ ३८	३ ०८ ०६	५ २६ ४४
१२	७ २६ ५८	९ ०९ २७	१० ३६ ५८	१२ ०१ ५४	१३ ३६ ५९	१५ ३२ २०	१७ ४६ ५१	२० ०७ १०	२२ २४ ३०	० ४४ ४२	३ ०४ १०	५ २२ ४८
१३	७ २३ ०२	९ ०५ ३१	१० ३३ ०३	११ ५७ ५८	१३ ३३ ०३	१५ २८ २४	१७ ४२ ५५	२० ०३ १५	२२ २० ३४	० ४० ४७	३ ०० १४	५ १८ ५२
१४	७ १९ ०६	९ ०१ ३५	१० २९ ०७	११ ५४ ०२	१३ २९ ०७	१५ २४ २९	१७ ३८ ५९	१९ ५९ १९	२२ १६ ३८	० ३६ ५१	२ ५६ १९	५ १४ ५६
१५	७ १५ ११	८ ५७ ३९	१० २५ ११	११ ५० ०६	१३ २५ ११	१५ २० ३३	१७ ३५ ०३	१९ ५५ २३	२२ १२ ४२	० ३२ ५५	२ ५२ २३	५ ११ ००
१६	७ ११ १५	८ ५३ ४३	१० २१ १५	११ ४६ १०	१३ २१ १५	१५ १६ ३७	१७ ३१ ०७	१९ ५१ २७	२२ ०८ ४६	० २८ ५९	२ ४८ २७	५ ०७ ०४
१७	७ ०७ १९	८ ४९ ४७	१० १७ १९	११ ४२ १४	१३ १७ १९	१५ १२ ४१	१७ २७ ११	१९ ४७ ३१	२२ ०४ ५०	० २१ ०७	२ ४४ ३१	५ ०३ ०८
१८	७ ०३ २३	८ ४५ ५१	१० १३ २३	११ ३८ १८	१३ १३ २३	१५ ०८ ४५	१७ २३ १५	१९ ४३ ३५	२२ ०० ५४	० १७ ११	२ ४० ३५	४ ५९ १३
१९	६ ५९ २७	८ ४१ ५५	१० ०९ २७	११ ३४ २२	१३ ०९ २७	१५ ०४ ४९	१७ १९ १९	१९ ३९ ३९	२१ ५६ ५८	० १३ १५	२ ३६ ३९	४ ५५ १७
२०	६ ५५ ३१	८ ३७ ५९	१० ०५ ३१	११ ३० २६	१३ ०५ ३२	१५ ०० ५३	१७ १५ २४	१९ ३५ ४३	२१ ५३ ०२	० ०९ १९	२ ३२ ४३	४ ५१ २१
२१	६ ५१ ३५	८ ३४ ०३	१० ०१ ३५	११ २६ ३०	१३ ०१ ३६	१४ ५६ ५७	१७ ११ २८	१९ ३१ ४७	२१ ४९ ०६	० ०५ २३	२ २८ ४७	४ ४७ २५
२२	६ ४७ ३९	८ ३० ०८	९ ५७ ३९	११ २२ ३४	१२ ५७ ४०	१४ ५३ ०१	१७ ०७ ३२	१९ २७ ५२	२१ ४५ ११	० ०१ २८	२ २४ ५१	४ ४३ २९
२३	६ ४३ ४३	८ २६ १२	९ ५३ ४४	११ १८ ३९	१२ ५३ ४४	१४ ४९ ०५	१७ ०३ ३६	१९ २३ ५६	२१ ४१ १५	२३ ५७ ३२	२ २० ५५	४ ३९ ३३
२४	६ ३९ ४७	८ २२ १६	९ ४९ ४८	११ १४ ४३	१२ ४९ ४८	१४ ४५ १०	१६ ५९ ४०	१९ २० ००	२१ ३७ १९	२३ ५३ ३६	२ १७ ००	४ ३५ ३७
२५	६ ३५ ५२	८ १८ २०	९ ४५ ५२	११ १० ४७	१२ ४५ ५२	१४ ४१ १४	१६ ५५ ४४	१९ १६ ०४	२१ ३३ २३	२३ ४९ ४०	२ १३ ०४	४ ३१ ४१
२६	६ ३१ ५६	८ १४ २४	९ ४१ ५६	११ ०६ ५१	१२ ४१ ५६	१४ ३७ १८	१६ ५१ ४८	१९ १२ ०८	२१ २९ २७	२३ ४५ ४४	२ ०९ ०८	४ २७ ४५
२७	६ २८ ००	८ १० २८	९ ३८ ००	११ ०२ ५५	१२ ३८ ००	१४ ३३ २२	१६ ४७ ५२	१९ ०८ १२	२१ २५ ३१	२३ ४१ ४८	२ ०५ १२	४ २३ ४९
२८	६ २४ ०४	८ ०६ ३२	९ ३४ ०४	१० ५८ ५९	१२ ३४ ०४	१४ २९ २६	१६ ४३ ५६	१९ ०४ १६	२१ २१ ३५	२३ ३७ ५२	२ ०१ १६	४ १९ ५४
२९	६ २० ०८	८ ०२ ३६	९ ३० ०८	१० ५५ ०३	१२ ३० ०८	१४ २५ ३०	१६ ४० ००	१९ ०० २०	२१ १७ ३९	२३ ३३ ५६	१ ५७ २०	४ १५ ५८
३०	६ १६ १२	७ ५८ ४०	९ २६ १२	१० ५१ ०७	१२ २६ १३	१४ २१ ३४	१६ ३६ ०५	१८ ५६ २४	२१ १३ ४३	२३ ३० ००	१ ५३ २४	४ १२ ०२
३१	६ १२ १६	७ ५४ ४४	९ २२ १६	१० ४७ ११	१२ २२ १७	१४ १७ ३८	१६ ३२ ०९	१८ ५२ २८	२१ ०९ ४७	२३ २६ ०४	१ ४९ २८	४ ०८ ०६

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५० ४९	९ १८ २०	१० ४३ १६	१२ १८ २१	१४ १३ ४२	१६ २८ १३	१८ ४८ ३३	२१ ०५ ५२	२३ २२ ०९	१ ४५ ३२	४ ०४ १०	६ ०८ २०
२	७ ४६ ५३	९ १४ २४	१० ३९ २०	१२ १४ २५	१४ ०९ ४६	१६ २४ १७	१८ ४४ ३७	२१ ०१ ५६	२३ १८ १३	१ ४१ ३६	४ ०० १४	६ ०४ २४
३	७ ४२ ५७	९ १० २९	१० ३५ २४	१२ १० २९	१४ ०५ ५१	१६ २० २१	१८ ४० ४१	२० ५८ ००	२३ १४ १७	१ ३७ ४१	३ ५६ १८	६ ०० २८
४	७ ३९ ०१	९ ०६ ३३	१० ३१ २८	१२ ०६ ३३	१४ ०१ ५५	१६ १६ २५	१८ ३६ ४५	२० ५४ ०४	२३ १० २१	१ ३३ ४५	३ ५२ २२	५ ५६ ३३
५	७ ३५ ०५	९ ०२ ३७	१० २७ ३२	१२ ०२ ३७	१३ ५७ ५९	१६ १२ २९	१८ ३२ ४९	२० ५० ०८	२३ ०६ २५	१ २९ ४९	३ ४८ २६	५ ५२ ३७
६	७ ३१ ०९	८ ५८ ४१	१० २३ ३६	११ ५८ ४१	१३ ५४ ०३	१६ ०८ ३३	१८ २८ ५३	२० ४६ १२	२३ ०२ २९	१ २५ ५३	३ ४४ ३१	५ ४८ ४१
७	७ २७ १३	८ ५४ ४५	१० १९ ४०	११ ५४ ४५	१३ ५० ०७	१६ ०४ ३७	१८ २४ ५७	२० ४२ १६	२२ ५८ ३३	१ २१ ५७	३ ४० ३५	५ ४४ ४५
८	७ २३ १७	८ ५० ४९	१० १५ ४४	११ ५० ४९	१३ ४६ ११	१६ ०० ४१	१८ २१ ०१	२० ३८ २०	२२ ५४ ३७	१ १८ ०१	३ ३६ ३९	५ ४० ४९
९	७ १९ २१	८ ४६ ५३	१० ११ ४८	११ ४६ ५४	१३ ४२ १५	१५ ५६ ४६	१८ १७ ०५	२० ३४ २४	२२ ५० ४१	१ १४ ०५	३ ३२ ४३	५ ३६ ५३
१०	७ १५ २५	८ ४२ ५७	१० ०७ ५२	११ ४२ ५८	१३ ३८ १९	१५ ५२ ५०	१८ १३ ०९	२० ३० २९	२२ ४६ ४५	१ १० ०९	३ २८ ४७	५ ३२ ५७
११	७ ११ ३०	८ ३९ ०१	१० ०३ ५७	११ ३९ ०२	१३ ३४ २३	१५ ४८ ५४	१८ ०९ १४	२० २६ ३३	२२ ४२ ५०	१ ०६ १३	३ २४ ५१	५ २९ ०१
१२	७ ०७ ३४	८ ३५ ०५	१० ०० ०१	११ ३५ ०६	१३ ३० २७	१५ ४४ ५८	१८ ०५ १८	२० २२ ३७	२२ ३८ ५४	१ ०२ १८	३ २० ५५	५ २५ ०५
१३	७ ०३ ३८	८ ३१ १०	९ ५६ ०५	११ ३१ १०	१३ २६ ३२	१५ ४१ ०२	१८ ०१ २२	२० १८ ४१	२२ ३४ ५८	० ५८ २२	३ १६ ५९	५ २१ ०९
१४	६ ५९ ४२	८ २७ १४	९ ५२ ०९	११ २७ १४	१३ २२ ३६	१५ ३७ ०६	१७ ५७ २६	२० १४ ४५	२२ ३१ ०२	० ५४ २६	३ १३ ०३	५ १७ १४
१५	६ ५५ ४६	८ २३ १८	९ ४८ १३	११ २३ १८	१३ १८ ४०	१५ ३३ १०	१७ ५३ ३०	२० १० ४९	२२ २७ ०६	० ५० ३०	३ ०९ ०७	५ १३ १८
१६	६ ५१ ५०	८ १९ २२	९ ४४ १७	११ १९ २२	१३ १४ ४४	१५ २९ १४	१७ ४९ ३४	२० ०६ ५३	२२ २३ १०	० ४६ ३४	३ ०५ १२	५ ०९ २२
१७	६ ४७ ५४	८ १५ २६	९ ४० २१	११ १५ २६	१३ १० ४८	१५ २५ १८	१७ ४५ ३८	२० ०२ ५७	२२ १९ १४	० ४२ ३८	३ ०१ १६	५ ०५ २६
१८	६ ४३ ५८	८ ११ ३०	९ ३६ २५	११ ११ ३०	१३ ०६ ५२	१५ २१ २२	१७ ४१ ४२	१९ ५९ ०१	२२ १५ १८	० ३८ ४२	२ ५७ २०	५ ०१ ३०
१९	६ ४० ०२	८ ०७ ३४	९ ३२ २९	११ ०७ ३५	१३ ०२ ५६	१५ १७ २७	१७ ३७ ४६	१९ ५५ ०५	२२ ११ २२	० ३४ ४६	२ ५३ २४	४ ५७ ३४
२०	६ ३६ ०६	८ ०३ ३८	९ २८ ३३	११ ०३ ३९	१२ ५९ ००	१५ १३ ३१	१७ ३३ ५१	१९ ५१ १०	२२ ०७ २६	० ३० ५०	२ ४९ २८	४ ५३ ३८
२१	६ ३२ ११	७ ५९ ४२	९ २४ ३८	१० ५९ ४३	१२ ५५ ०४	१५ ०९ ३५	१७ २९ ५५	१९ ४७ १४	२२ ०३ ३१	० २६ ५४	२ ४५ ३२	४ ४९ ४२
२२	६ २८ १५	७ ५५ ४६	९ २० ४२	१० ५५ ४७	१२ ५१ ०८	१५ ०५ ३९	१७ २५ ५९	१९ ४३ १८	२१ ५९ ३५	० १९ ०३	२ ४१ ३६	४ ४५ ४६
२३	६ २४ १९	७ ५१ ५१	९ १६ ४६	१० ५१ ५१	१२ ४७ १३	१५ ०१ ४३	१७ २२ ०३	१९ ३९ २२	२१ ५५ ३९	० १५ ०७	२ ३७ ४०	४ ४१ ५०
२४	६ २० २३	७ ४७ ५५	९ १२ ५०	१० ४७ ५५	१२ ४३ १७	१४ ५७ ४७	१७ १८ ०७	१९ ३५ २६	२१ ५१ ४३	० ११ ११	२ ३३ ४४	४ ३७ ५५
२५	६ १६ २७	७ ४३ ५९	९ ०८ ५४	१० ४३ ५९	१२ ३९ २१	१४ ५३ ५१	१७ १४ ११	१९ ३१ ३०	२१ ४७ ४७	० ०७ १५	२ २९ ४८	४ ३३ ५९
२६	६ १२ ३१	७ ४० ०३	९ ०४ ५८	१० ४० ०३	१२ ३५ २५	१४ ४९ ५५	१७ १० १५	१९ २७ ३४	२१ ४३ ५१	० ०३ १९	२ २५ ५२	४ ३० ०३
२७	६ ०८ ३५	७ ३६ ०७	९ ०१ ०२	१० ३६ ०७	१२ ३१ २९	१४ ४५ ५९	१७ ०६ १९	१९ २३ ३८	२१ ३९ ५५	२३ ५९ २३	२ २१ ५७	४ २६ ०७
२८	६ ०४ ३९	७ ३२ ११	८ ५७ ०६	१० ३२ ११	१२ २७ ३३	१४ ४२ ०३	१७ ०२ २३	१९ १९ ४२	२१ ३५ ५९	२३ ५५ २७	२ १८ ०१	४ २२ ११

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		१।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय घं.मि.से.

	६।००।००
चर	+०।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६।२४।४८
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६।११।२७

सूर्यास्त घं.मि.से.

	६।००।००
चर	— ०।११।१२
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ०।१३।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६।०२।२४
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५।४९।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	— ०।५६
दिनमान नागपुर	२९।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— २९।०४
रात्रिमान	३०।५६

उदाहरण २—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+००।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+००।३४
अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय घं.मि.से.

	६।००।००
चर	— ०।२३।१२
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५।४५।४०
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५।४६।५४

सूर्यास्त घं.मि.से.

	६।००।००
चर	+०।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६।३२।०४
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६।३३।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	+०१।५६
दिनमान मद्रास	३१।५६

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— ३१।५६
रात्रिमान	२८।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	२५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२)	२५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	,,
		६	०९	,,
	६।९ को ढाई से गुना किया	६	०९	
		३	०४	३०
	इष्टकाल घटी फल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	१० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
	मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२)	१० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	,,
	शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
		१४	४०	
		७	२०	३०
(३)	इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	,,
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२२	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४०	४९	३	२०	४८	१०	५८	४९	४७	५५	१४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२५	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११४	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२६
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	५९	०	२	९	२०	३७	१	३६	२१	१९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३६	१९	१५	३४	४४	४०

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	-० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द.० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ १९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ४२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	—०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार बेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में बेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टे. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण— दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अत: यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट										चरान्तर सारिणी													क्रांति दक्षिण हो तो धन							
	यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६
असिनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+२।४८	+२३।५२
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२
ओरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२
इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०
इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०
इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२
ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६
इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८
इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२
उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४
उतरोला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६
ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८
उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०
उदय मण्डलम	तमिलनाडू	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०
उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८
उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६
एचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६
एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८
कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६
कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६
कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२
कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०
कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८
करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८
कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८
कल्पाद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४
करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८
कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८
काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२
कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४
काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४
कांचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।०	—४।४
किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
घाटमशर	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागकोविंल	तमिलनाडु	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चित्तौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।८	ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।८	+३०।१२	तलागंग	तलांगगा	३२।५६	७२।२८	—४०।८	—१९।४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छत्तरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।८	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छबरांटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।८
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।८
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।८
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।८	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	दिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।८	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।८	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०	पेशाबर	प. पाकि.	३४।१	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।८	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२।८	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझुनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।८	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२.५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६	फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।८	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।८	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८	वरंगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।८	—१४।४	नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५८	—४२।२४	—२१।२०	बलिया	उ. प्र.	२४।४४	८४।०९	+६।३६	+२७।४०
डिबाई	यू. पी.	२८।१२	७८।२५	—१७।०	[illegible]												

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।८
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४
बालू घाट	प. दिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५।८	+४६।१२
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४
बैतूल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।३	+२।३२
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२।८	+३३।१२
बीकानेर	राजस्थान	२८।१	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।८
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।२	—४१।५२	—२०।४८
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४
भरूच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—९।८
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।८	—२५।२८	—४।२४
भावनगर	गुजरात	२१।४४	४२।१०	—४२।२०	—२०।१६

नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टे. अन्तर मि. से.	देशान्तर अंतर मि. से.
भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२
भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८
भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४
भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२
मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८
मद्रास	तमिलनाडू	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२
मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६
मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।८	—१।४
मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०
मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४
मुगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४
मुजफ्फरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२
फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।८
मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४
मैसूर	कर्नाटक	१२।२९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६
मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४
मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२
मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।८	+१९।५६
यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४
यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।८	—१७।२८	+३।३६
यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।८	—१७।२८	+ ३।३६
रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०
राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६
राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८
राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०
रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२
रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०
रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।८	+१५।५६
राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६
रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६
राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०
राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५
रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।१४	+१५।०
ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३ २
शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।८	—२७।४
सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२
सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।१	—२१।२४	—०।२०
सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।८	+३।५६
हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।८	+१।५६
हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	−२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	−१।३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।२५द.	१४९।८पू.	−३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।२७पू.	−१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।१०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	−३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिय	३९।०उ.	१२५।३०पू.	−३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	−५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिर्जादीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	−१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	−२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	−८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	−३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बेंगकांक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	−१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	−५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	−५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+१।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
काडी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	−०।०	" ५।३०	− ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	−२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	− १।००	−०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	−३२।०	" ५।०	" ०।३०	−०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	−४।१२	" ३।३०	" २।०	−१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१२ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	−२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	−२।०	" ३।०	" २।३०	−२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	−०।०	" ३।०	" २।३०	−२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	−२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	−२९।४०	" ३।०	" २।३०	−२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	−३३।४	" २।३०	" ३।०	−२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	−२।४३।४४	" ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	−२।४५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	−२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	−३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	−२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	−३।१२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	−३।२३।४८	" ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	−२६।४०	" २।०	" ३।३०	−३।३५।३६	" ०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+ १।०	− ४।३०	−३।४६।२८	+०।३८
बुढ़ापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	−३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	−६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	−७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	−१०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।१९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	−३१।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	−३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	−४२।३६	+ १।०	− ४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	−५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	−०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	−०।२०	− ०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	−७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	−८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	−३६।४०	− ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	−२।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	−८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।१६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	−३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथाथ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को [illegible]

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
अक्षांश	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	अक्षांश
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जन. १	६ १४	५ ५४	६ १६	५ ५२	६ १७	५ ५०	६ १९	५ ४९	६ २१	५ ४७	६ २३	५ ४५	६ २४	५ ४३	६ २६	५ ४१	६ २८	५ ४०	६ ३०	५ ३८	६ ३१	५ ३६	६ ३३	५ ३४	जुला.३
७	१६	५७	१८	५५	१९	५३	२१	५२	२३	५०	२५	४८	२६	४७	२८	४५	३०	४३	३१	४१	३३	४०	३५	३८	९
१३.	१८	६ ०	२०	५८	२१	५७	२३	५५	२४	५३	२६	५१	२८	५०	२९	४८	३१	४७	३३	४५	३४	४३	३६	४२	१५
१९	१९	३	२१	६ १	२२	६ ०	२४	५८	२५	५७	२७	५५	२८	५४	३०	५२	३१	५०	३३	४९	३५	४७	३६	४६	२२
२५	२०	५	२२	३	२३	२	२४	६ १	२६	५९	२७	५८	२८	५७	३०	५५	३१	५४	३३	५२	३४	५१	३६	४९	२८
३१	२०	७	२२	६	२३	५	२४	३	२५	६ २	२७	६ ०	२८	५९	२९	५८	३१	५७	३२	५५	३३	५४	३५	५३	अग. ४
फर. ६	२०	९	२१	८	२२	७	२३	५	२४	४	२६	३	२७	६ २	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५८	३१	५७	३३	५६	१०
१२	१९	१०	२०	९	२१	८	२२	७	२३	६	२४	५	२५	४	२६	३	२७	२	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५९	१६
१८	१७	११	१८	१०	१९	९	२०	८	२१	८	२२	७	२२	६	२३	५	२४	४	२५	३	२६	२	२७	६ २	२२
२४	१५	११	१६	१०	१७	१०	१७	९	१८	९	१९	८	१९	७	२०	७	२१	६	२२	५	२२	५	२३	४	२९
मार्च २	१३	१२	१४	११	१४	११	१५	१०	१५	१०	१६	९	१६	९	१७	८	१७	८	१८	७	१८	७	१९	६	सितं. ४
८	१०	१२	११	११	११	११	११	११	१२	१०	१२	१०	१२	१०	१३	९	१३	९	१४	९	१४	८	१४	८	१०
१४	८	११	८	११	८	११	८	११	८	११	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	९	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२
२६	१	१०	१	१०	१	११	१	११	१	११	१	११	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	५ ५१	१३	२८
अप्रै. २	५ ५८	१०	५ ५८	१०	५ ५७	११	५ ५७	११	५ ५६	११	५ ५६	११	५ ५५	१२	५ ५५	१३	५ ५५	१३	५ ५४	१३	५ ५४	१४	५३	१४	अक्टू. ६
८	५५	९	५५	९	५४	१०	५३	११	५२	१२	५२	१२	५१	१३	५१	१३	५०	१४	५०	१४	५०	१५	४९	१६	११
१४	५२	९	५१	९	५०	१०	५०	११	४९	१२	४९	१२	४८	१३	४७	१४	४६	१५	४५	१६	४५	१६	४४	१७	१७
२०	४९	९	४८	१०	४७	११	४७	१२	४६	१२	४५	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१८	३९	१९	२३
२६	४७	९	४६	१०	४५	११	४४	१२	४३	१३	४२	१४	४१	१५	४०	१६	३९	१७	३७	१८	३६	१९	३५	२१	२९
मई १	४५	९	४४	१०	४३	१२	४२	१३	४१	१४	४०	१५	३८	१६	३७	१७	३६	१९	३५	२०	३३	२१	३२	२२	नवं. ३
७	४३	१०	४२	११	४१	१२	४०	१४	३८	१५	३७	१६	३६	१८	३४	१९	३३	२०	३२	२२	३०	२३	२९	२४	९
१३	४२	११	४१	१२	३९	१३	३८	१५	३७	१६	३६	१७	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२३	२८	२५	२६	२७	१५
१९	४१	१२	४०	१३	३८	१५	३७	१६	३५	१८	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२४	२८	२६	२६	२७	२४	२९	२०
२५	४१	१३	४०	१४	३८	१६	३६	१८	३५	१९	३३	२१	३१	२३	३०	२४	२८	२६	२६	२८	२५	२९	२३	३१	२६
३१	४१	१४	४०	१६	३८	१८	३६	१९	३४	२१	३३	२२	३१	२४	२९	२६	२७	२८	२६	३०	२४	३२	२२	३३	दिसं. २
जून ६	४१	१६	४०	१७	३८	१९	३६	२१	३४	२३	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	३०	२५	३२	२४	३४	२२	३६	७
१२	४२	१७	४१	१९	३९	२१	३७	२३	३५	२४	३३	२६	३१	२८	३०	३०	२८	३२	२६	३४	२४	३६	२२	३८	१३
१८	४३	१९	४२	२०	४०	२२	३८	२४	३६	२६	३४	२८	३२	३०	३१	३२	२९	३३	२७	३५	२५	३७	२३	३९	१९
२४	४५	२०	४३	२२	४१	२४	३९	२५	३८	२७	३६	२९	३४	३१	३२	३३	३०	३५	२८	३७	२६	३९	२४	४१	२४
३०	४६	२१	४५	२३	४३	२५	४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१	२६

उत्तर अक्षांश	१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जन. १	६ ३५	५ ३२	६ ३७	५ ३०	६ ३९	५ २८	६ ४१	५ २६	६ ४३	५ २४	जुला. ३
७	३७	३६	३९	३४	४१	३२	४३	३०	४५	२८	९
१३	३८	४०	४०	३८	४१	३६	४३	३४	४५	३३	१५
१९	३८	४४	४०	४२	४१	४१	४३	३९	४५	३७	२२
२५	३७	४८	३९	४६	४०	४५	४२	४३	४४	४१	२८
३१	३६	५१	३७	५०	३९	४९	४०	४७	४२	४६	अग.४
फर. ६	३४	५५	३५	५४	३६	५२	३८	५१	३९	५०	१०
१२	३१	५८	३२	५७	३३	५६	३४	५५	३६	५३	१६
१८	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५९	३०	५८	३१	५७	२२
२४	२४	३	२४	३	२५	६ २	२६	६ १	२७	६ ०	२९
मार्च २	१९	५	२०	५	२०	४	२१	४	२२	३	सितं. ४
८	१५	७	१५	७	१५	७	१६	६	१६	६	१०
१४	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२
२६	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५८	१४	२८
अप्रै. २	५३	१५	५३	१५	५२	१५	५२	१६	५१	१६	अक्टू.६
८	४८	१६	४७	१७	४७	१७	४६	१८	४६	१९	११
१४	४३	१८	४२	१९	४२	१९	४१	२०	४०	२१	१७
२०	३८	२०	३८	२१	३७	२२	३६	२३	३५	२४	२३
२६	३४	२२	३३	२३	३२	२४	३१	२५	३०	२६	२९
मई १	३१	२३	३०	२५	२९	२६	२७	२७	२६	२९	नवं. ३
७	२८	२६	२६	२७	२५	२९	२३	३०	२२	३२	९
१३	२५	२८	२३	३०	२२	३१	२०	३३	१९	३४	१५
१९	२३	३०	२१	३२	१९	३४	१८	३६	१६	३७	२०
२५	२१	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	४०	२६
३१	२०	३५	१८	३७	१६	३९	१४	४१	१२	४३	दिसं. २
जून ६	२०	३८	१८	४०	१६	४२	१४	४४	१२	४६	७
१२	२०	४०	१८	४२	१६	४४	१४	४६	१२	४८	१३
१८	२१	४१	१९	४३	१७	४५	१५	४७	१२	५०	१९
२४	२२	४३	२०	४५	१८	४७	१६	४९	१४	५१	२४
३०	२४	४३	२२	४५	२०	४७	१८	५०	१६	५२	३०

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जन. १	६ ४५	५ २२	६ ४७	५ २०	६ ४९	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १४	जुला. ३
७	४७	२६	४९	२४	५१	२२	५३	२०	५५	१८	९
१३	४७	३१	४९	२९	५१	२७	५३	२५	५५	२३	१५
१९	४७	३५	४८	३३	५०	३२	५२	३०	५४	२८	२२
२५	४५	४०	४७	३८	४९	३६	५०	३५	५२	३३	२८
३१	४३	४४	४५	४३	४६	४१	४८	३९	५०	३८	अग.४
फर. ६	४०	४८	४२	४७	४३	४६	४४	४४	४६	४३	१०
१२	३७	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४२	४८	१६
१८	३२	५६	३३	५५	३४	५४	३५	५३	३६	५२	२२
२४	२८	६ ०	२८	५९	२९	५८	३०	५७	३१	५६	२९
मार्च २	२२	३	२३	६ २	२३	६ २	२४	६ १	२५	६ ०	सितं. ४
८	१७	६	१७	५	१७	५	१८	५	१८	४	१०
१४	११	८	११	८	११	८	११	८	११	८	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२
२६	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१५	५ ५७	१५	२८
अप्रै. २	५१	१७	५१	१७	५०	१८	५०	१८	४९	१९	अक्टू.६
८	४५	१९	४४	२०	४४	२१	४३	२१	४२	२२	११
१४	३९	२२	३८	२३	३७	२४	३७	२५	३६	२५	१७
२०	३४	२५	३३	२६	३१	२७	३०	२८	२९	२९	२३
२६	२८	२८	२७	२९	२६	३०	२५	३१	२३	३३	२९
मई १	२५	३०	२३	३१	२२	३३	२०	३४	१९	३६	नवं. ३
७	२०	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	३९	९
१३	१७	३६	१५	३८	१३	४०	१२	४१	१०	४३	१५
१९	१४	३९	१२	४१	१०	४३	८	४५	६	४७	२०
२५	१२	४२	१०	४४	८	४६	६	४८	४	५०	२६
३१	१०	४५	८	४७	६	४९	४	५१	२	५४	दिसं. २
जून ६	१०	४८	७	५०	५	५२	३	५४	१	५७	७
१२	१०	५०	७	५२	५	५४	३	५७	१	५९	१३
१८	१०	५२	८	५४	६	५६	३	५९	१	७ १	१९
२४	१२	५३	९	५५	७	५८	५	७ ०	२	२	२४
३०	१३	५४	११	५६	९	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जन. १	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ १	५ ७	७ ३	५ ४	७ ६	५ २	जुला. ३
७	५७	१६	५९	१४	२	११	४	९	६	७	९
१३	५७	२१	५९	१९	१	११	४	१४	६	१२	१५
१९	५६	२६	५८	२४	०	२२	२	२०	४	१८	२२
२५	५४	३१	५६	२९	६ ५८	२७	०	२५	२	२३	२८
३१	५१	३६	५३	३५	५५	३३	६ ५६	३१	६ ५८	२९	अग.४
फर. ६	४७	४१	४९	४०	५०	३८	५२	३७	५३	३५	१०
१२	४३	४६	४४	४५	४५	४४	४७	४२	४८	४१	१६
१८	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४१	४८	४२	४७	२२
२४	३२	५५	३२	५५	३३	५४	३४	५३	३५	५२	२९
मार्च २	२५	६ ०	२६	५९	२७	५८	२७	५८	२८	५७	सितं. ४
८	१९	४	१९	६ ३	१९	६ ३	२०	६ २	२०	६ २	१०
१४	१२	८	१२	७	१२	७	१२	७	१३	७	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	१२	२२
२६	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१६	५ ५६	१६	५ ५६	१६	२८
अप्रै. २	४९	१९	४८	२०	४८	२०	४७	२१	४७	२१	अक्टू.६
८	४२	२३	४१	२४	४०	२४	३९	२५	३९	२६	११
१४	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	१७
२०	२८	३०	२७	३१	२६	३३	२५	३४	२३	३५	२३
२६	२२	३४	२१	३५	१९	३७	१८	३८	१७	४०	२९
मई १	१७	३७	१६	३९	१४	४०	१३	४२	११	४३	नवं. ३
७	१२	४१	११	४३	९	४५	७	४६	५	४८	९
१३	८	४५	६	४७	४	४९	२	५१	०	५३	१५
१९	४	४९	२	५१	०	५३	४ ५८	५५	४ ५६	५७	२०
२५	२	५२	४ ५९	५५	४ ५७	५७	५५	५९	५३	७ २	२६
३१	०	५६	५७	५८	५५	७ ०	५३	७ ३	५०	५	दिसं. २
जून ६	४ ५९	५९	५६	७ १	५४	४	५१	६	४९	९	७
१२	५८	७ १	५६	४	५३	६	५१	९	४८	१२	१३
१८	५९	३	५६	६	५४	८	५१	११	४८	१४	१९
२४	५ ०	५	५७	७	५५	१०	५२	१२	५०	१५	२४
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०

उत्तर	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४				अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७				अक्षांश २८				अक्षांश २९				अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला.६	५	२६	६	४४	५	२४	६	४६	५	२२	६	४८	५	२०	६	५०	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१३	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	०	५	७	७	३	५	४	७	५	५	२	७	७	५	०	७	१०	४	५७	७	१२	४	५४	७	१५	जन. ४
१२		२८		४३		२६		४५		२४		४७		२२		४९		२०		५१		१८		५३		१६		५५		१४		५७		१२	६	५९		१०		१		७		४		५		६		३		८	५	०		११		५८		१३	१०
१८		३०		४२		२८		४४		२६		४६		२५		४८		२३		४९		२१		५१		१९		५३		१७		५५		१५		५७		१३	६	५९		१०		२		८		४		६		६		४		८	५	१		११	१५
२४		३२		४०		३१		४२		२९		४४		२७		४६		२५		४७		२४		४९		२२		५१		२०		५३		१८		५५		१६		५७		१४	६	५९		१२		१		१०		३		८		५		५		७	२१
३०		३१		३८		३३		४०		३१		४१		३०		४३		२८		४४		२६		४६		२५		४८		२३		४९		२१		५१		१९		५३		१८		५५		१६	६	५७		१४	६	५९		१२		१		१०		३	२७
अग. ५		३७		३५		३५		३६		३४		३८		३२		३९		३१		४१		२९		४२		२८		४४		२६		४५		२५		४७		२३		४९		२१		५०		१९		५२		१८		५४		१६	६	५६		१४	६	५७	फर. १
११		३९		३२		३७		३३		३६		३४		३५		३५		३३		३७		३२		३८		३१		३९		२९		४१		२८		४२		२६		४४		२५		४५		२३		४७		२२		४८		२०		५०		१८		५२	७
१७		४०		२८		३९		२९		३८		३०		३७		३१		३६		३२		३५		३३		३३		३४		३२		३६		३१		३७		३०		३८		२८		३९		२७		४१		२६		४२		२४		४४		२३		४५	१३
२३		४२		२३		४१		२४		४०		२५		३९		२६		३८		२७		३७		२८		३६		२९		३५		३०		३४		३१		३३		३२		३२		३३		३१		३४		२९		३५		२८		३७		२७		२८	१८
२९		४४		१८		४३		१९		४२		२०		४१		२०		४०		२१		४०		२२		३९		२३		३८		२४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	२४
सित. ४		४५		१३		४४		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१७		४०		१८		३९		१९		३८		१९		३८		२०		३७		२१		३६		२१		३५		२२	मार्च २
१०		४६		८		४६		८		४५		८		४५		९		४५		९		४४		१०		४४		१०		४३		११		४३		११		४२		११		४२		१२		४१		१२		४१		१३		४०		१३		४०		१४	८
१६		४८		२		४७		२		४७		३		४७		३		४७		३		४६		३		४६		४		४६		४		४५		४		४५		४		४५		५		४५		५		४४		५		४४		५		४४		६	१४
२२		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७	२०
२८		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५१		५१		५१		५१		५१		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५०		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९	२६
अक्टू.३		५१		४७		५२		४६		५२		४६		५२		४६		५२		४५		५३		४५		५३		४५		५३		४४		५४		४४		५४		४४		५४		४३		५५		४३		५५		४३		५५		४२		५६		४२	३०
९		५३		४२		५३		४१		५४		४१		५४		४०		५५		४०		५५		३९		५६		३८		५६		३८		५७		३७		५७		३७		५८		३६		५८		३६		५९		३५	६	०		३५	६	०		३४	अप्रै.५
१५		५५		३७		५५		३६		५६		३५		५७		३५		५७		३४		५८		३३		५९		३३	६	०		३२	६	०		३१	६	१		३०	६	२		३०	६	२		२९	६	३		२८		४		२७		५		२६	१२
२१		५७		३२		५८		३१		५८		३१		५९		३०	६	०		२९	६	१		२८	६	२		२७		३		२६		४		२५		५		२४		६		२३		७		२२		८		२१		९		२०		१०		१९	१८
२७		५९		२९	६	०		२७	६	१		२६	६	२		२५		३		२४		४		२३		५		२२		७		२१		८		२०		९		१९		१०		१८		११		१६		१२		१५		१४		१४		१५		१३	२४
नवं. २	६	२		२५		३		२४		४		२३		५		२२		७		२०		८		१९		९		१८		१०		१७		१२		१५		१३		१४		१४		१२		१६		११		१७		१०		१९		८		२०		७	३०
८		५		२३		६		२१		८		२०		९		१८		१०		१७		१२		१६		१३		१४		१५		१३		१६		११		१८		१०		१९		८		२१		७		२२		५		२४		३		२६		२	मई ६
१४		८		२१		१०		१९		११		१८		१३		१६		१४		१५		१६		१३		१७		११		१९		१०		२१		८		२२		६		२४		५		२६		३		२८		१		२९	४	५९		३१	४	५७	१२
२०		१२		२०		१३		१८		१५		१६		१७		१५		१८		१३		२०		११		२२		९		२४		८		२५		६		२७		४		२९		२		३१		०		३३	४	५८		३५		५६		३७		५४	१९
२६		१५		१९		१७		१७		१९		१६		२१		१४		२२		१२		२४		१०		२६		८		२८		६		३०		४		३२		२		३४		०		३६	४	५८		३८		५६		४०		५४		४३		५२	२५
दिस.२		१९		२०		२१		१८		२३		१७		२५		१४		२७		१२		२९		१०		३१		५८		३३		६		३५		४		३७		२		३९		०		४१		५८		४३		५५		४६		५३		४८		५१	३१
८		२३		२१		२५		१९		२७		१७		२९		१५		३१		१३		३३		११		३५		९		३७		७		३९		५		४१		३		४३		०		४६		५८		४८		५६		५०		५३		५३		५१	जून ७
१४		२७		२३		२८		२१		३०		१९		३२		१७		३५		१५		३७		१३		३९		११		४१		८		४३		६		४५		४		४८		२		५०		५९		५२		५७		५५		५५		५०		५२	१३
२०		३०		२५		३२		२३		३४		२१		३६		१९		३८		१७		४०		१५		४२		१३		४४		११		४७		९		४९		६		५१		४		५३	५	२		५६		५९		५८		५७		०		५४	१९
२६		३३		२८		३५		२६		३७		२४		३९		२२		४१		२०		४३		१८		४५		१६		४७		१४		४९		१५		५२		१०		५४		७		५६		५		५९	५	२	७	१	५	०	७	४		५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के न ीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय — ५-५८

१५ अक्टूबर का सूर्योदय — ६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२) — ६ ०० ००

स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११ — ६-०४=७ मिनट का।

अतएव— १५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घं.	मि.	सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५ — २९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ लग्न आई ५।३।४९।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३४	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३४	४३	५१	५८

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, राँची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, ... आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	[illegible]	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८		११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशयारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१°-३० से ३२°-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगर लग्न सारिणी अक्षांश २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	११	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	(१) मेष	(२) वृषभ	(३) मिथुन	(४) कर्क	(५) सिंह	(६) कन्या
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य
हंसक	अग्नि	भूमि	वायु	वारि	अग्नि	भूमि
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर	वनचर	मानव

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३				रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५				आर्द्रा-६.				पुनर्वसु-७		
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	ऊ	अे	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
वर्ग	सिंह	:	:	मृग	:	:	:	:	गरुड़	:	:	:	:	मृग	:	:	:	:	मार्जार	:	:	:	:	सिंह	मार्जार	:	मेष
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	पुनर्वसु-७	पुष्य-८				आश्लेषा-९				मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२				हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	:	:	:	:	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	:	उंदर	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	मेष	श्वान	:	उंदर	:
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	(७) तुला	(८) वृश्चिक	(९) धनु	(१०) मकर	(११) कुंभ	(१२) मीन
वर्ण	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
हंसक	वायु	वारि	अग्नि	भूमि	वायु	वारि
वश्य	मानव	कीट	मानव/चत	चत/जल	मानव	जलचर

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६				अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८				मूल-१९				पू.षा.-२०				उ.षा.-२१
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा	भे
वर्ग	मृग	:	:	:	:	सर्प	:	:	:	:	:	:	:	:	:	मृग	:	:	:	:	उंदर	:	:	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	मध्य	मध्य	महिष	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य	नकुल
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	उ.षा.-२१			श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३				शत.-२४				पू.भा.-२५				उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	:	सिंह	:	मार्जार	:	:	:	:	:	:	:	:	मेष	:	:	:	:	सर्प	:	:	मेष	सिंह	सर्प	:	:	सिंह	:
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसंत

योग	हर्षण	वज्र	सिद्धि	व्यतिपात	वरीयान	परिघ	शिव	सिद्ध	साध्य	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	ऐंद्र	वैधृति

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११	१२	११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०			
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

रा.	चक्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

रा.	चक्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भोंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्से आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान—सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भूजा, चौथे से हदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, वदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होंठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्राय: सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरष्टि योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे— चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष— तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल— बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल— पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 121
कष्ट जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा

अथ आश्लेषा चक्रम्

स्थान	पादे	गुदे	नाभौ	हृदये	हस्ते	स्कंधे	ग्रीवायां	नेत्रे	मुखे	शिरसि
घट्यः	७	७	६	१०	८	४	४	२	७	५
फलम्	धन हानि	तपस्वी	भ्रमः	आत्म हानि	बली	गुरु भक्त	स्त्री लाभ	मातृ नाश	पितृ नाश	पुत्रादि

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

स्कन्धे	लतायां	त्वचायां	शाखायां	दले	पुष्पे	फले
४	१२	१३	७	९	५	१०
अल्पायुः	पितृ हानिः	मातृ हानिः	हानिः	राजभयम्	धनम्	धनम्

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

विभागः	६	५	४	३	२	१
फलम्	धन हानिः	कुल हानिः	मातुल नाश	मातृ नाश	पितृ नाश	शुभम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली—अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐहीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुं २ हन २ दुष्टाना हां हुं फट स्वाहा

अथ नक्षत्र कष्टावली

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षु: प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रयम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नम:॥	५ सहस्त्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यम:)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे॥ ॐ यमाय नम:॥	१० सहस्त्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्नि:)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिजिन्वति॥ ॐ अग्नये नम:॥	१० सहस्त्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरूचोवेनआव: सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठा: सतश्चयोनिमसतश्चविधव:॥ ॐ ब्रह्मणेनम:॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्र:)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नम:॥	१० सहस्त्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: बाहुभ्यामुतते नम: ॥ ॐ रुद्राय नम:॥	१० सहस्त्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्र: विश्वे देवा अदिति: पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नम:॥	१० सहस्त्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छ्वत्र सत्रृतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नम:॥	१० सहस्त्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्प:)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:॥ ॐसर्प्पेभ्यो नम:॥	१० सहस्त्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितर:)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितर: पितर: शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरम्ये नम:॥	१० सहस्त्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्न्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भग:)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्न: भगये प्रणोजनयगोभिरश्चैर्भयप्रनृभिनृवैन: स्याम॥ ॐभगाय नम:॥	१० सहस्त्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नम:॥	१० सहस्त्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजा: पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नम:॥	५ सहस्त्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा- छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदध:॥ ॐ विश्वकर्मणे नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यंम्। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशंठसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ठं हवे हवे सुहवठंशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रठंस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्त्रृतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यठंसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवा: श्रृणुतेमठंहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वहिंपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नेप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य श्रृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अघन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृंङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ठं सी निन नवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोध (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हडफूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड्फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोध, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), धृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिदृव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॡ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश-- ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण**—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्राय: शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते है। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्याक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताक के मध्य में रखकर क्रमश: अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र

५ ४ ३
६ २
७ १
८ १२
९ १० ११

मुद्दा दशा
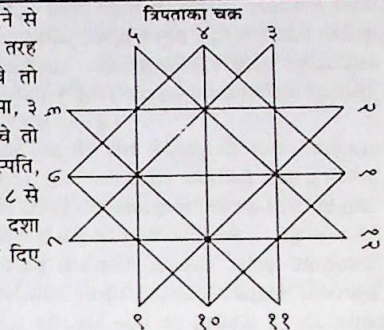
सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कसत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी	नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप	कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश	कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दु:ख	मृति	स्थिति	हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर	गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	....	......	रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत,	विद्वानों से	विद्वानों से	जलचर	पर्वत,	पर्वत,	पर्वत,	धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
			वनचर	युक्तग्रा.चर	युक्तग्रा.चर		वनचर	वनचर	वनचर	वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	....	......	काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रात:	प्रात:	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा	पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य	भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक	स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध	शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र	पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र	ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८	दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक	सम	तिर्यक	अधो	अधो	अधो

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्ववूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११ १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्पित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अगस्त ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहयता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५५ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ १२	५६ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	५९ ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६३ ०	६३ ५	६३ १	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६५ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	२०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२५	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	[illegible]	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (वृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३१	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शिताततमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम् 145

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैत्य	विजय:	मार्ग:गमन	पीड़ा:	सुकृ नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्र कष्ट	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.लाभ	पुत्र: प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनि:	बातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्म हानि	विजय:	सुलाभं	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म: १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतित:
बुध:	विद्वान	धनी	दुर्जन:	सुखी	मंत्री	दु:शील	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्म हानि	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दु:खार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौम:	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दंक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि.	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१ ॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३½	½	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

बुध	शुक्र	चंद्र
१. मूंग २. हरितवस्त्र ३. सुवर्ण ४. कांस्य ५. मृगमद ६. आज्य ७. पंचरत्न ८. दासी ९. हस्तिदंत	१. चित्रांबर २. श्वेताश्व ३. धनु ४. हीरा ५. रौप्य ६. सुवर्ण ७. तंदुल ८. सुगंध ९. धृत	१. वशपात्र २. तंदुल ३. कर्पूर ४. मौक्तिक ५. श्वेतवस्त्र ६. वृषभ ७. रौप्य ८. घृतकुंभ ९. शंख
ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००	पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००	आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

गुरु	रवि	मंगल
१. अश्व २. शर्करा ३. हलद ४. पीतधान्य ५. पीतवस्त्र ६. पुष्पराग ७. लवण ८. कांचन	१. माणिक २. गेहूं ३. धेनु ४. कुसुंभ ५. गुड़ ६. ताम्र ७. रक्तवस्त्र ८. रक्तपुष्प ९. सुवर्ण	१. प्रस्त्रल २. गेहूं ३. मसूर ४. ताम्रवस्त्र ५. गुड़ ६. सुवर्ण ७. ताम्र ८. कणहेर ९. वृषभ
उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००	मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००	द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशाद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

केतु	शनि	राहु
१. वैडूर्य २. तिल ३. कंबल ४. कस्तूरी ५. शस्त्र ६. कृष्णवस्त्र ७. तैल ८. कृष्णपुष्प ९. छाग १०. लाहपात्र	१. माष २. तिल ३. तैल ४. कुलित्थ ५. महिषी ६. लोहू ७. कृष्णागौ ८. इंद्रनील ९. श्यामवस्त्र	१. गोमेदरत्न २. अश्व ३. नीलवस्त्र ४. कंबल ५. तिल ६. तैल ७. लोह ८. अंभ्रक
वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००	प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००	नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कष्णवर्ण जप १८०००
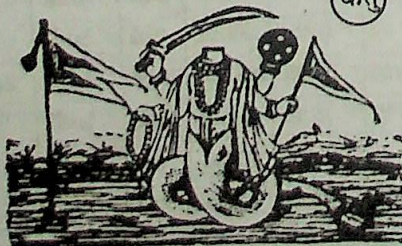
ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवै नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रुग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कुष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिर्वेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्य विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र.और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, [illegible]
शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य
करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें।
शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो।
शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-
क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि
अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८,
१२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न
शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो।
लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु
के घर नें हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष
कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८,
१ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ
होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण
ग्रह ११ भाव में श्रेष्ट होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति
या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप
ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा
राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का
१ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १००
और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को
विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर
एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर
ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि दुष्ट तिथि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन १, ३, ७	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा २-११	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले. ३-९-१२	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग. ७-९-११	रेव.,अनु., अश्वि.,पुन. पुष्य —	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव. —	श्रवण रोहिणी स्वाति ११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्त्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अतः इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि— "**प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा**" तथा "**पुंसवनवत्**" कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। ***मन्त्र*—ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलतः दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय के बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मू., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा:
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा पुन. शत. पू.फा. चित्रा मूल	मृग. आर्द्रा ज्ये. धनि मघा हस्त	अश्वि. मृग. ज्ये. पुष्य हस्त रेव.	कृत्ति. आर्द्रा विशा. पू.फा उ.भा पू.भा	भर. मृग. शत. पू.भा स्वा. भर.	कृत्ति. श्रव. धनि पु. हस्त रेव.	अनु आर्द्रा उ.षा. पू.भा पू.षा पू.फा	रोहि. ज्ये धनि आ भर. उ.भा	भर. पुन. शत. वि अनु उ.षा	भर. शत. विशा. उ.फा पू.फा भर.	अश्वि. ज्ये धनि म पू.फा स्वा	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध— पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल— विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य— जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि— जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार— लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)— रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना— आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष— दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु— जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु— जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु— जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार— जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

नेष्ट रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र—जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र—जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न—हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त—विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त—विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ—कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त—व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण,. देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाह मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**—वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**—राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**—वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**—राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**—राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**—राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**—वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**—अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य [illegible]

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति— कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गो	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

भाग-१

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पाश्र्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

↓कन्या	वर→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	११॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	११॥ ३	१५॥ ३.६	११॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	११ १	१७॥ १.४	११॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले.४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा.४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा.१	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा.३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह.४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तता नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखे हैं।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓ / वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४
तुला चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥
तुला स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३
तुला वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३
वृश्चिक वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५
वृश्चिक अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५
वृश्चिक ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५
धन मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६
धन पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६
धन उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३
मकर उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३
मकर श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३
मकर ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७
कुम्भ ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६
कुम्भ श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६
कुम्भ पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६
मीन पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५
मीन उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५
मीन रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५

कन्या ↓ / वर →	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र चरण	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४
तुला चि.२	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४
तुला स्वा.४	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४
तुला वि.३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४
वृश्चिक वि.१	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥
वृश्चिक अनु.४	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०
वृश्चिक ज्ये.४	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३
धन मू.४	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२
धन पू.षा.४	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-
धन उ.षा.१	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४
मकर उ.षा.३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १
मकर श्र.४	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२
मकर ध.२	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६
कुम्भ ध.२	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५
कुम्भ श.४	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३
कुम्भ पू.भा.३	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३
मीन पू.भा.१	१७॥ -२६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५
मीन उ.भा.४	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५
मीन रे.४	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५

कन्या ↓ / वर →	धन			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र चरण	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला चि.२	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
तुला स्वा.४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
तुला वि.३	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक वि.१	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
वृश्चिक अनु.४	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
वृश्चिक ज्ये.४	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन मू.४	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
धन पू.षा.४	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
धन उ.षा.१	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर उ.षा.३	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
मकर श्र.४	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
मकर ध.२	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ ध.२	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
कुम्भ श.४	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
कुम्भ पू.भा.३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन पू.भा.१	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
मीन उ.भा.४	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
मीन रे.४	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

तारबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्
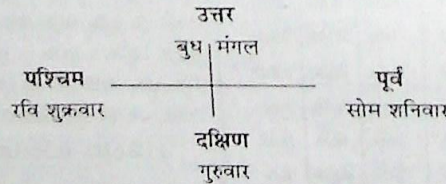
दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।
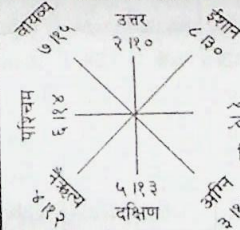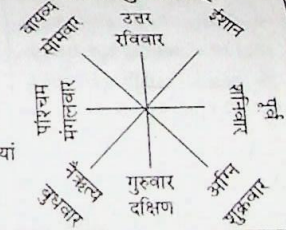
दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। य'दे मुहूर्त्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त्त स ıय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	घृत	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पृ.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रर्यपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये. मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग्र.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ षट् याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुऔ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा. श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पचिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में लग्न से १२५७९१० में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में स्वामी न शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मृ.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।६।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७. १०. ११. १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र. वारेषु २. ३. ५. ६. ७. ८. १०. ११. १३. १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७. १०. ११. १३. १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु.१, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २. ३. ५. ६. ७. १०. ११. १२. १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्वलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २. ३. ५. ६. ७. १०. ११. १२. १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा. स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २. ३. ५. ६. ७. १०. ११. १२. १३. १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारों ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गोऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरेहणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्शांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त— अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त— चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त— तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना— उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त— विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त— अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्तः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर में तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीर मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. मं. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. चं. गु.	अश्विन, रहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. मं. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू. मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषेधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. मं. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. चं. बुगुशु	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियमः— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

करदर्शन-योग

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ट पर गोविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

विवाहे पंचशलाका चक्रम

गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार— जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल— नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय— गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार— लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार— चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास— पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय— ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय— मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध— ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल— कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार— इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३— जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामतः जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठिका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्र्य कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्राय: व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दु:ख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दु:ख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है —

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा — प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।
२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।
३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।
२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा	वस्तु	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३	धान्य	७७
भरणी	५	प्रीति	१२	कनक	१००
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७	ज्वार	१३३
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९	मूंग	४१
मृगशिर	४	शोभन	३६	चणा	३५
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७	झोना	७५
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८	तोरी	७७
पुष्य	३६	धृति	४४	तेल	३९
अश्लेषा	३६	शूल	१३	घृत	९९
मघा	१५	गंड	२५	खाण्ड	९९
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७	गुड़	४७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२	शक्कर	१०१
हस्त.	१८	व्याघात	२५	कपास	१२९
चित्रा	२५	हर्षण	२५	रुई	४४
स्वाति	१४	वज्र	१४	कांस्य	३७
विशाखा	२४	सिद्धि	२२	वस्त्र	१०९
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३	स्वर्ण	९६
ज्येष्ठा.	३७	वरीयान	३९	हल्दी	७३
मूल	१८	परिधि	१५	चंदन	१८७
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३	चांदी	८१
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९	मिर्च	६८
श्रवण	२५	साध्य	१२	पित्तल	९९
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५	जौ	५०७
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२	कस्तू.	१३४
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्म	१३		
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७		
रेवती	२८	वैधृति	२६		

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं- जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफ़ेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफ़ेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ़ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सापों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियां का ईलाज भी होता है जैसेः—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए । पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	.७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुंई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ ॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ ॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। *गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥*

श्री भैरव भविष्य ज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व '' ॐ नमो भैरवाय'' मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या ई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अत: यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अत: केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ यह बत्तीस की संख्या से अधिक है अत: इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ ''इन्द्र'' और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला ''पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी'' इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है, होशियार!
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी।
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान!
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे में जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।

५. मुकदमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गढ़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गढ़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गढ़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गढ़ा धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय हेतु स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गढ़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विस्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गढ़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।

१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नही लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गढ़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गढ़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण हेतु परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगा।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गढ़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा मेंपास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट आयेगा।
४. खोई हुई वस्तु जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गढ़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गढ़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अत: उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कूआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

मंत्रों द्वारा कामना सिद्धि प्रयोग

पुत्र प्राप्ति के लिये:- "ऊँ हां हीं हूं पुत्र करू स्वाहा" इस द्वादशक्षर मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है, उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान शंकर जी ने कहा है।

पत्नी की प्राप्ति के लिए:- पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागस्य कुलाद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्तसती) इस मंत्र का सवा लाख जप स्वयं करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाता है और 'पत्नी मनोरमां देहि.' इस मंत्र के सम्पुट से दुर्गा के 100 पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है। स देवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाणः। दृढ़व्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृतप्रयत्नः॥ (बाल्मीकीय रामायण, सुदंरकांड 36/46) इस यंत्र का सवा लाख जप करने और इसी मंत्र के सम्पुटित बाल्मीकीय रामायण के सुदंर कांड का कम से कम 1 पाठ स्वयं अथवा ब्राह्मण से कराने पर शीघ्र विवाह हो जाता है।

वर प्राप्ति के लिये:- हे, गौरि! शकड़रार्धाङ्गि! तथा त्वं शड़करप्रियाता। तथा मां कुरु कल्याणि! कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्॥ भगवती पार्वतीजी का पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का प्रतिदिन 5 माला जप करने से शीघ्र पति (वर की) की प्राप्ति हो जाती है। पार्वती जी का पूजन कर जो कन्या श्री रामचरित मानस के बालकाण्ड के 234 दोहे के बाद 'जय जय गिरिराज किशोरी' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे' यहां तक 236 दोहों का प्रतिदिन श्रद्धा विश्वास पूर्वक पाठ करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है। **कात्यायनि महामाये महायोगिनीधीश्वरी। नन्दगोपसुतं देवि पतिं में कुरु ते नमः॥** (श्री मद्भागवत 10/ 22/ 4) कात्यायनि देवी अथवा पार्वती देवी की फोटो सामने रखकर जो कन्या उसका पूजन कर उपर्युक्त मंत्र की 1 माला जप प्रतिदिन करती है, उसका विवाह शीघ्र हो जाता है। **ऊँ देवेन्द्रामणि नमस्तुभ्यं देवन्द्रप्रियभामिनी। विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥** उपर्युक्त मंत्र का 108 बार कन्या को जप करना चाहिए। जप करने की विधि यह है कि तुलसी के पौधे का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर 108 बार जप पूर्ण होने पर तुलसी के पौधे की 12 बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए 'ऊँ देवेंद्राणि नमस्तुभ्यम्' मंत्र को भी पढ़ना चाहिए। कन्या को चाहिए कि वह अपने दाहिनी हाथ में दूध और बांए हाथ में जल से अर्घ्य दें। दूध और जल से अर्घ्य एक साथ ही 12 बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती हैं, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है। **ऊँ शं शंकराय सकल जन्मर्जितपापविध्वंसनाय। पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरू कुरू स्वाहा॥** उपर्युक्त मंत्र का जप तीन माला तुलसी की माला पर करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है। जप की विधि यह है कि भगवान् शंकर और अन्न पूर्णा की फोटो सामने रखकर उसका प्रतिदिन पूजन करके धूप बत्ती जलाकर जप करे। जप जहां किया जाय, वहां मिट्टी के गमले में अथवा टीन में केले के स्तंभ को रखकर उसको मौजी (नाला) से 9 अथवा 11 बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जप के बाद केले के स्तंभ की 4 बार अथवा 9 बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान नित्य करती है उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

ज्वर से मुक्त होने के लिए:- ऊँ भस्मायुधाय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो ज्वरः प्रचोदयात॥ इस मंत्र की उत्पत्ति संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान् से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है। दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्टैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ (श्रीमद्भागवद् गीता 11/25) इस मंत्र का उत्पत्ति संहारोत्पति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए:- ऊँ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा। इस मंत्र से बाल्मीकीय रामायण के सुदंरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिए। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर 'ऊँ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते।' इस मंत्र का पाठ करना चाहिए। 'ऊँ श्रीं श्रियै नम: मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा।' इससे बाल्मीकि रामायण के सुदंरकांड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिए। विधिः- इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीपावली की रात्रि को दीपक जलाने के बाद करना चाहिए। 8 दिनों तक प्रतिदिन सात सर्ग का और 9 वें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिन में पाठ पूरा करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन सात, पांच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सठ दिनों में सुन्दरकाण्ड का 7, 3 अथवा 1 पाठ पूर्ण करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति और वृद्धि होती है।

भूत प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए:- स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनु च। रक्षांसि भतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा॥ (गीता 11/36) इस मंत्र का सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मंत्र काम करता है। भूत-प्रेत आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गंगाजल लेकर अथवा कूप का जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मंत्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिला देना चाहिए। बा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी की भूत-प्रेत बाधा शांत न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रातः और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

मस्तक पीड़ा की निवृत्ति के लिए :- ऊँ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल, कपाल में भेजी, भेजी में कीड़ा करे पीड़ा, सोने का शाला का रूप का हथोड़ा, ईश्चर गढ़े गौरिया तोड़े इनका श्राप श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा। अपने बाएं हाथ में 7 बार थोडी-थोड़ी पवित्र राख (भस्म) को लेकर दाहिने हाथ से ढककर उपर्युक्त मंत्र को 7 बार पढ़कर दर्द वाले मस्तक पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

मित्रता के लिए:- ऊँ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोभ्यहम। अभिवादी भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः॥1॥ ऐकतत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथधियाम्। निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद में ॥2॥ उपर्युक्त दोनों मंत्रों से अलग-अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम 61 दिन का है।

शत्रुता कराने के लिए:- ऊँ महाभैरवाय श्मशान- अमुको- विद्वेषं कुरु फट्। इस मंत्र का 41 दिन तक 108 बार जप करने से प्रेमियों का प्रेम हटकर परस्पर शत्रुता हो जाती है। मंत्र में जिन जगहों पर अमुक-अमुक शब्द लिखा है, उस स्थान पर प्रेमियों का नाम लिखना चाहिए जिसकी शत्रुता करानी हो।

शूल निवृत्ति के लिए:- ऊँ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भवः। परमे वृक्षऽआयुधं कृत्तिंवसानऽआचार पिनाकं विभ्रदागहि॥ (शुक्ल यजुर्वेद 16/51) इस मंत्र का पाठ अथवा जाप करने से मनुष्य के दर्द दूर हो जाते हैं।

सुख से प्रसव होने के लिए:- ऊँ मुक्तापाशा विपाशाश्च् मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तसर्वभयाद् गर्भ त्राहिहि मारीच स्वाहा॥ इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

पति को वश में करने के लिए:- ऊँ नमो महायक्षिणि पति में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा। इस मंत्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध कर लें। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

जलती अग्नि शीतल हो:- ऊँ नमो कोरा करावा जल सा भरिया, ले गौरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥ इस मंत्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें। **विधिः-** कुंए के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर फेंके।

नजर झाड़ने का मंत्रः- गुरु चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख टुकरियाजय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मंत्र को झाड़ने का विधान है।

सर्प विषनाशक मंत्र औषधिः- गरुड़ास्य मंत्र ऊँ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरे वक्षी। सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूंविषनाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञयज्ञियम्युच्छन्धिष्ठायाऽशम्या सपुर्णोसि गरुश्रममान्दिवं गच्छ स्वः पत ऊँ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झाड़े का विधान है। दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृंगवेरं, मीरचमपि कूटो प्रतिहंन्सा सुकेशी। यदि दसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा, यमस दनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणम्॥ गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय को दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा।

चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मंत्रः- ऊँ ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

स्थायी धनस्थिति मंत्रः-ऊँ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

प्रसव समये जल मंत्रः- आकाश टले पवन राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े। **विधिः-** ताजा शुद्ध जल को सात बार मंत्र पढ़कर परोसने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मृत्युंजय मंत्रः- ऊँ हौ ऊँ जूं सः भूर्भव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिपुष्टिर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भवः स्वरो जूं सः ह्रौं ऊँ। पुराणोक्तमृत्युंजय मंत्र- मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शवाय महादेवाय ते नमः।

धनधान्य पूर्ण कर अन्नपूर्णा मंत्रः- ऊँ ह्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहां क्लीं श्रीं ह्रीं ऊँ। इस मंत्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या ताबीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

सर्वसिद्धि हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मंत्रः- ऊँ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, उखरस, पला, पीपल, शैर की लकड़ी से हवन एक लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के लिए अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिए।

बिच्छु झाड़ने का मंत्रः- ऊँ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना। आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणबलेन च तार्क्ष्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष॥ **विधिः** राई से उतारना।

आंख झाड़ने का मंत्रः- शर्यातिंच संकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ। संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति॥ मंत्र पढ़कर जल से धुलवायें।

ज्वर झाड़नाः- 1. ऊँ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुय स्वाहा। इस मंत्र को सात बार पढ़कर झाड़ें तो ज्वर न रहे। 2. ऊँ नमों अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।२

अन्तर तिजारा चौथिया का मंत्रः-ऊँ लंकायाम तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥ से पीपल के पत्ते पर लिखकर डोर से बांध देवे।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्रः-यः स्मरेततुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह। कार्य कृत्वा रिपूंजित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥ थोड़ा सा दही खाकर यात्रा आरंभ करें और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहें।

बीमारी दूर भगाने के लिएः- गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बीमारी नहीं होगी। **मंत्रः-** अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः। कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडीव कृष्णसारथिः। एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्र प्रजायते।

झाड़ फूंक शाबर मंत्र -सिरपीड़ा दूर करने के लिएः- लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय दूरत॥ बैठी सीता देवी अशोकवन में। देखि हनुमान को आनंद भई मन में॥ गई उर विषाद देवी सिथर दरशाय। 'अमुक' के नहीं कछू पीर नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई॥ सिर के पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले लें।

आधासीसी दूर करने के लिएः-1. बन में ब्याई कच्चे वनफल खाय। हाँक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधा सीसी उतर जाय॥ 2. ऊँ नमों वन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखानरी, कच्चे वनफल खाय॥ आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमान जी, आधासीसी जाय॥ किसी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़ें।

नेत्र रोग शमन करने के लिएः- ऊँ नमों वने बिआई बानरी जहां-हजां हनुमंत आँखि पीड़ा कषवरी गिहिया थनै लाई चरिउ जाइ। भस्मन्तन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्चरोवाचा॥ आंख पर हाथ फेरते हुए सात बार मंत्र पढ़कर मंत्र फूंके। व्यथा मिट जाएगी॥

कर्णमूल पीड़ा दूर करने के लियेः- वनरा गांठि वावरी तो डांटे हनुमान कंठ। बिलारी बाघी थनैजी कर्णमूल सम जाइ॥ श्री रामचन्द्र की बानी पानी पथ होई जाइ॥ विभूति से सात बार झाड़ने से कर्णरोग नष्ट होता है।

बिच्छू का विष झाड़ने के लिएः- 1. पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइ की चमरी पूछी तेकरे गोबरे बिछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छ रत्नपवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरू का बिछी हाड-हाड पोर-पोर ते। कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेव की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शंडार बन छाइ उतरहिं बीडी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की। 2. ऊँ हरमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥ मंगलवार को एक लाख जप तथा दशांश हवन करने से सिद्धि होती है।

अंड वृद्धि रोग दूर करने के लिएः- ऊँ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओई करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ बाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री षीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर॥ मंत्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हल्के हाथ से मलें तथा अभिमंत्रित जल पिलायें तो अण्डवृद्धि शांत हो जाती है। मिट्टी दे। आंगन और बरामदों में सिर्फ उड़द के दाने ही बिखेरना चाहिए। मात्र इतनी ही क्रिया से ग्रह दोष सदा के लिए दूर हो जाता है। ■

यंत्र-मंत्र-तंत्र एक साधना एवं सफलता

लेखक–वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, मेड़ता सिटी (राज.)

विश्वासम् फलमदायकम्। श्रद्धारूपेण कर्म साधनम्॥ गुरुत्व गुरु ग्राह्य मंत्रम्। आज्ञानुसारेण साधना सफलम्॥

साधक को आवश्यकतानुसार अपने जीवन में तंत्र साहित्य का प्रयोग मंत्र-यंत्र के रूप में करना हो तो भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हां उसमें अपने भाव समर्पित होना नितान्त आवश्यक है। तंत्र में शक्ति का योगदान, मंत्र में गुरु का योगदान तथा यंत्र में बुद्धि सरस्वती का योगदान प्राप्त करके अपना कदम रखा जाय या शाबर तंत्र की सामान्य प्रक्रिया को भी यदि अपनाया जाय तो कोई भी यंत्र-मंत्र-तंत्र में विफलता का आना संभव नहीं है। अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जरूरत है साधना के नियमों-उपनियमों एवं सीमांकन की। शिव+शक्ति=साधना का आधार। इसीलिए **सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्** की उक्ति चरितार्थ होती है।

आईये जन हिताय-सुरक्षाय-लाभाय कुछ सरल यंत्रों एवं मंत्रों की जानकारी सर्व कल्याण की भावना से परीक्षित यंत्रों की जानकारी आप भी प्रयोग करके देखें। तथा अपनी मंजिल प्राप्त होने पर हमें जरूर संकेत डाक द्वारा/फोन द्वारा बतायें। जिससे विश्वास, श्रद्धा भावना एवं कर्म का सटीक प्रमाण मिल सके। स्वयं करें, फिर लिखें। अनुभव की पाठशाला में जीवन पर्यन्त पढ़ना पड़ता है। यंत्र इस प्रकार है:–

मनोकामना पूर्ण करने के लिए-विधि-इस यंत्र को हल्दी के रस से कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें तथा इस यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही मंत्र का नित्य हल्दी की माला से जप करें तो शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होगा। मंत्र-ॐ ह्रीं ह्रां स:॥ सूर्य का पूजन भी करें। अवश्य ही लाभ होगा। प्रत्येक मनोरथ की पूर्ति अलग-अलग करें।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि-इस यंत्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन २१००० यंत्र लिखकर (२४ घंटों में) फिर २१००० आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने पर यह यंत्र सिद्ध होगा। तब इस सिद्ध यंत्र को भोजपत्र या चांदी में या सोने की पतरी पर लगायें तो दिन-प्रतिदिन लाभ होगा।

५०	५७	२	६
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
४	५	५२	५५

बूरी नजर दूर करने का यंत्र-विधि-हल्दी के द्वारा पीले रंग से रंगे सूती कपड़े पर यंत्र लिखकर पोटली सी बनाकर अजवायन डालकर काले धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर दूर होती है। अथवा इस यंत्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से नजर दोष का निवारण होता है।

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
६३	७	१४०	१
२०	१३४	९	१४७

गर्भ धारण के लिए यंत्र-विधि-इस ताबीज (यंत्र) को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में शुभ समय में बांधे तो गर्भ धारण होगा। रजस्वला समय को त्यागना है। तथा गौरी शंकर की पूजा स्त्री २१ दिन तक करें। अवश्य लाभ होगा।

३४२	३४९	२	८
५	३	३४६	३४१
४४८	२४३	८	१
४	५	३४४	३४४

प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर रविपुष्य / गुरुपुष्य / सर्वार्थ सिद्धि योग में शुभ की होरा में केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखें। तथा अपने पास रखें तो लाभ होगा। गुरु मंत्र जपें।

विद्या प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि-इस यंत्र को सरस्वती मंत्र से सिद्ध करके अपनी भुजा पर बांधे तो लाभ होगा। यंत्र केसर से भोजपत्र के ऊपर गुरु पुष्य, रवि हस्त बसंत पंचमी को तैयार करें। अनार की कलम से तथा ५१ दिन तक सरस्वती उपासना करें, लाभ होगा।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३
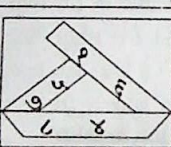
भाग्योन्नति

भाग्योन्नतिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन भोजपत्र पर केशर से 625 यंत्र लिखें। जितने दिनों में संख्या दस हजार पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यंत्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करते रहें, तो भाग्य की उन्नति होती हैं। एवं कामनाएं पूर्ण होती है।

परीक्षा में सफलताः- परीक्षा आरंभ होने से 15 दिन पूर्व इस यंत्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। सोलहवें दिन एक यंत्र को यथा विधि पूजकर ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा गले में धारण कर लें और परीक्षा देने जायें तो उसमें सफलता मिलती है।

२	१	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

परीक्षा में सफलता

य हाफज	३३३	३३८	३३१
य हाफज	३२२	३३४	३३६
९९	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम मां का नाम	९९	या हाफज	या हाफज

बंधन मुक्ति

बंधन मुक्तिः-इस यंत्र को रविवार के दिन कागज या भोजपत्र के ऊपर चंदन से लिखकर एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यंत्र में जिस स्थान पर कैदी का नाम लिखा है, वहां 'कैदी के नाम' का तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है वहां कैदी की मां का नाम लिखना चाहिए। बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

कारावास मुक्तिः- इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जो जेल में पड़ा हो। गंध, पुष्प आदि से यंत्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुआ उस कैदी व्यक्ति को खिला दें। इस यंत्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह भी बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

ह्रीं
ह्रीं देवदत्त ह्रीं
ह्रीं

कारावास मुक्ति

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
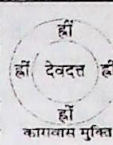
गये हुए व्यक्ति का लौटना

गये हुए व्यक्ति का लौटनाः- घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप बाहर चला गया हो और न आ रहा हो तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चंदन से लिखकर चरखे पर बांध दें और कुंवारी कन्या के हाथ से उल्टा चरख चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

क्रोध शमनः- इस यंत्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़ पत्र पर सोमवार के दिन लिखें। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जिसका क्रोध शांत करना हो फिर यंत्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर 7 दिन तक पूजन करें। अंत में ब्राह्मण को भोजन करावें। इसके प्रभाव से शत्रु मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

देवदत्त

क्रोध शमन

११	१	८
४	७	९
५	१२	३
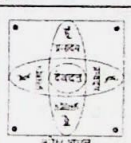
विद्या प्राप्ति

विद्या प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखें और उन यंत्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दें। 15 दिन तक इसी प्रकार निरंतर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यंत्र ताबीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

		१२	
६	१०	४	
	१०		
	९	३	८
	१		

आजीविका प्राप्ति

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें। जब 5 हजार लिखे जा चुके हों तो उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का यंत्रः- खोए या भागे हुए व्यक्ति के पहने हुए, बिना धुले हुए वस्त्र पर गुरु से इस यंत्र को बनायें और पत्थर की सिर के नीचे दबा कर रख दें। व्यक्ति के वापस आने तक रोज सांयकाल इसके ऊपर दीप जलाकर रखें। ऐसा करने से व्यक्ति आ जाता है। शीघ्र न लौटे तो पत्थर को कोड़े से मारें। इस तरह वह व्यक्ति जीवित होगा तो लौट आवेगा। नहीं तो समाचार तो मिल ही जाएगा।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

भागे व्यक्ति को बुलाना

राजदंड से मुक्ति
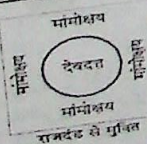
राजदण्ड से मुक्तिः- इस यंत्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र पर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। फिर यंत्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गिलोह के ताबीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करें तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा वंदन (कैद भय से) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबरदस्ती रोक रखा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.

शत्रु विजय

शत्रु विजयः- इस यंत्र को शमशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र पर लिखकर उसे धूप, दीप दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को जमीन में गाड़ दें या किसी नदी में बहा दें तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता छोड़ देता है।

खोई हुई वस्तु का मिलनाः- इस यंत्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी पर 108 बार लिखें। तत्पश्चात् भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करें तो इसके प्रभाव से खोई वस्तु मिल जाती है। इस यंत्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

हं.	हं.	हं.	हं.
इं.	इं.	इं.	इं.
जं.	जं.	जं.	जं.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

खोई हुई वस्तु का मिलना

पुत्री का विवाहः- इस यंत्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से लिखें। जब तक पांच हजार यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

पुत्री का विवाह

३			२
	७	८	
	९	४	
१			६
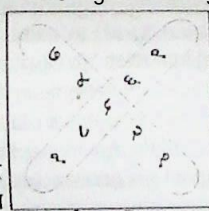
पारिवारिक सुख

पारिवारिक सुखः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना प्रारंभ करें। यंत्र को भोजपत्र पर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब 5000 की संख्या पूरी हो जाय तब से यंत्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दें। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

यश प्राप्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन प्रातःकाल 5 बजे से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र भोजपत्र पर केशर या गोरोचन से लिखें। जब 2400 यंत्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दें तो इसके प्रभाव से यश और संतान की प्राप्ति होती है।

९	५	६
	१	६
	८	७
२		३

यश प्राप्ति

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	मं.
अं.	अं.	अं.	अं.

सम्मान प्राप्ति

सम्मान प्राप्तिः-यंत्र को केसर अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर सवा लाख की संख्या में लिखें। लिखने का प्रारंभ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यंत्र लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यंत्र लिखते समय धूप दीप भी जलानी चाहिए।

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

संतान सुख

संतान सुखः-इस यंत्र को रविवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र लिखें। जब 2500 यंत्र पूरे हो जायें, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से संतान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई संतान सुधर जाती है।

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना आरंभ करें। सफेद कागज या भोजपत्र पर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब 2400 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो साधक व्यक्ति का स्थानांतरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।
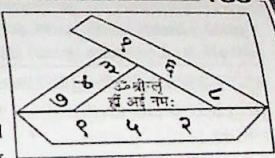
स्थानान्तरण
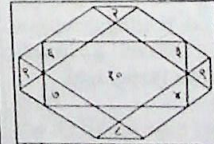
आत्म रक्षा

आत्म रक्षाः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर यथाविधि धूप दीप आदि से पूजा कर त्रिलोहर के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा कंठ में धारण करें तो आत्म रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

धन प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 125 यंत्र लिखें, जब 5000 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दें तथा एक यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा में धारण करें, तो धन की प्राप्ति होती है।

धन प्राप्ति

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

शत्रु विनाश

शत्रु विनाश :- शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यंत्र को लोहे की कलम से तांबे के यंत्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन करें तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करें तो यंत्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है। वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

सर्वकामना सिद्ध, इक्कीसा यंत्रः- इस इक्कीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से लिखकर भुजा में बांधे। इससे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण होकर सर्वकार्य सिद्ध होते हैं।

इक्कीसा यंत्र

रमल ज्योतिष बताएगा नग मोती कब पहनें

लेखक–डा. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक नग मोती चन्द्रमा ग्रह का अधिष्ठाता रत्न है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में चन्द्रमा ग्रह की दो शक्लें (आकृतियां) होती हैं। प्रथम ब्याज और द्वितीय तरीख। बारीकी से देखने के बाद जानना आवश्यक है कि यह दोनों शक्लें एक ही ग्रह की होने के बावजूद भी अलग-अलग राशियों से संबध रखती हैं मगर दोनों ही शक्लें रात्रिकालीन हैं। प्रथम ब्याज साबित शक्ल है और दूसरी तरीख मुनकलिब शक्ल है। यह दोनों शक्लें शुभ शक्लें रमल ज्योतिष शास्त्र के मतानुसार मानी जाती हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र की यह शक्लें कर्क राशि से तथा तरीख शक्ल मिथुन राशि से संबंधित हैं। इसी प्रकार ब्याज शक्ल पुनर्वसु नक्षत्र और पुष्य नक्षत्र से से है। द्वितीय शक्ल तरीख एक आर्द्रा नक्षत्र से संबंधित है। ब्याज शक्ल में एक बिन्दु होता है। तरीख शक्ल में चार बिन्दु होते हैं। मगर यह बिन्दु अलग-अलग तत्वों के होते हैं। इन दोनों शक्लों में किसी प्रकार व किसी स्थिति में एक बिन्दु और तीन बिन्दु कदापि नहीं होते हैं। यह दोनों शक्लें प्रस्तार यानि कि जायचे के प्रथम घर में आने से भाग्य की भाग्यहीनता को दर्शाते हैं, साथ ही सभी कार्यों में मात्र हानि की ओर इंगित करते हैं, क्योंकि अग्नि तत्व के घर और जल तत्व की शक्लें हैं। इन बातों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की नजरों को भी बराबर गणित के अनुसार देखा जाता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार यानि कि जायचे में यह चन्द्रमा ग्रह की अलग-अलग कार्य व अलग-अलग समय के मुताबिक फल देता है कि कौन सा कार्य कब, किस प्रकार और कैसे होगा? ताकि प्रश्नकर्ता को सही समय पर बांछित लाभ प्राप्त हो सके। रमल ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चन्द्रमा ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) वाले जातक को नग मोती की अंगूठी विधि-विधान द्वारा धारण करनी चाहिए। इसके धारण करने से पूर्व विद्वान रमलाचार्य द्वारा यह जानकारी अवश्य करनी चाहिए कि वर्तमान में कौन से ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) कब तक कायम रहेगी। और क्या-क्या लाभ-हानि होने की संभावना है। इस प्रश्न का उत्तर पासे जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं, के माध्यम से किया जाता है। विद्वान रमलाचार्य पासे को किसी शुद्ध-पवित्र स्थान पर जातक द्वारा डलवाए जाते हैं। उन पासों के मुताबिक प्रस्तार यानि कि जायचा बनाया जाता है। यह कार्य प्रणाली रमलाचार्य के सम्मुख होती है। यदि जातक रमलाचार्य के सम्मुख ना हो तो नवीन शोध विषय के मुताबिक 'प्रश्न फार्म' के माध्यम से भी यह कार्य किया जा सकता है। यह दोनों प्रश्न करने की पद्धति अलग-अलग अवश्य है मगर दोनों कार्य प्रणाली का गणितय एक ही है। साथ ही फलादेश भी एक आता है। जो समय आने पर सटीक प्राप्त होता है। रमल ज्योतिष शास्त्र में जातक द्वारा प्रश्न करने की विधि अनेक हैं, मगर सभी का फलादेश व समाधान एक ही आता है। रमल (अरबी ज्योतिष) में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम, घड़ी, वार, तिथि, जन्म कुण्डली और तो और पंचांग की आवश्यकता कदापि नहीं होती है। जातक के समस्त कार्य प्रणाली पासे डलवाकर ही किए जाते हैं। मोती नग सफेद रंग का गोल, चपटा, सुन्दर चमकदार होता है। इसका जन्म समुद्र के अन्दर एक शीपी नुमा कवच में होती है। जिसे वैद्य हकीम लोग भस्म बनाकर रोगी को रोगानुसार सेवन करने की सलाह देते हैं। इसको चन्द्रमा ग्रह की शांति की बावत् चांदी की अंगूठी में जड़वाकर धारण भी किया जाता है। इसके विधि-विधान द्वारा धारण करने पर मानसिक तनाव, मानसिक द्वन्द में शांति की प्राप्ति होती है। मन की उचाटता, मन में विभिन्न प्रकार की द्वन्द्वता साथ ही विशेषकर यात्रा में भी बराबर लाभ प्रदान करता है। यदि प्रश्नकर्ता के प्रस्तार यानि कि जायचे के प्रथम घर में और सप्तम घर में चन्द्रमा ग्रह नजर-ए-तसदीक रखता हो तो दाम्पत्य जीवन में मधुरता साथ दम्पति का बराबर स्नेहमय में व सुखी में रहना पाया जाता है। मगर किसी भी स्थिति में अशुभ शक्ल (आकृति) पड़ौसी घर में कदापि नहीं होनी चाहिए। चन्द्रमा ग्रह की शांति की बावत् चन्द्रमणि भी पहनी जाती है मगर चन्द्रमणि द्वारा लाभ वांछित प्राप्त नहीं होता है। रत्न मोती सबसे अच्छा बसरा का होता है। बसरा का मोती विश्व में दुर्लभ व सबसे महंगा होता है। नग मोती तब ही धारण करने का विधान है जब चन्द्रमा ग्रह की प्रतिकूलता बराबर चल रही हो। नग मोती कितने वजन का होना चाहिए। यह जानकारी प्रश्नकर्ता द्वारा प्रश्न करने पर ही तय किया जाता है। मोती को अनामिका अंगुली में चांदी धातु में जड़वाकर सोमवार को प्राण प्रतिष्ठा कराकर विधि-विधान द्वारा धारण करने का रमल शास्त्रिक विधान है। इस रत्न को धारण करने से पूर्व इस बात का ध्यान विशेष रखना जरूरी है कि रत्न किसी भी स्थिति में खण्डित ना हो। मोती नग सफेद रंग के अतिरिक्त अन्य किसी रंग का नहीं होता है। मोती नग देखने में सफेद सुन्दर व चमकदार होता है। यदि जातक मोती की अंगूठी किसी कारणवश नहीं धारण कर सकता है तो उसे रमल सिद्ध यंत्र धारण करना चाहिए। अथवा चन्द्रमा ग्रह का अधिष्ठाता मंत्र का जाप विधि-विधानुसार करना चाहिए। ताकि समयानुसार लाभ वांछित प्राप्त हो।

रमल ज्योतिष से जानें धन लाभ कब, कैसे?

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में यह द्वितीय घर का सवाल है। जबकि रमल ज्योतिष शास्त्र में 16 घर होते हैं और यह सभी घर जीवन की समस्त स्थिवर और जंगम साथ ही भूत-भविष्य-वर्तमान बातों से संबंध रखते हैं। प्रश्नकर्ता इसी नियत से प्रश्न करें कि मुझे या अमुक व्यक्ति को धन लाभ और धन से संबंधित शांति कब और कैसे प्राप्त होगी। यदि प्रस्तार यानि कि जायचे के द्वितीय घर में शुभ शक्ल हो और गवाहन भी शुभ हो, साथ ही नजर-ए-मिकारना हो तो उसे धन लाभ और धन से संबंधित प्राप्ति आसानी से व शांति से शीघ्र होती है। यह स्थिति जीवन के आधे से अधिक समय तक कायम बराबर रहेगी। यदि प्रस्तार के द्वितीय घर में महान अशुभ शक्ल हो तो धन लाभ व शांति प्राप्ति नहीं होती है। यदि शक्ल साबित हो तो देरी और परेशानी विशेष के बाद ही धन की प्राप्ति होती है। साथ ही जितना जो चाहते हैं, प्राप्ति का योग नहीं होना पाया जाता है। यदि प्रस्तार के प्रथम घर में शक्ल लहियान जो कि गुरु ग्रह की शक्ल है साथ ही शकुन पंक्ति की प्रथम घर की मालिक है। नुस्तुल खारिज यह भी गुरु ग्रह की शक्ल है और दो बिन्दुओं को विद्यमान रखने वाली है। तो धन की बावत् भाग्य का उत्थान का प्रतीक होना पाया जाता है। लेकिन अंतिम समय तक टिकाऊ नहीं होना दिखाई देता है। यदि शक्ल अतबे खारिज, कब्जुल खारिज प्रथम घर में हो तो प्रश्नकर्ता का भाग्य कमजोरी की स्थिति में होना स्थिति तौर पर पाया जाता है। जिससे धन लाभ प्राप्ति का योग नहीं बनता है। यदि प्रस्तार के द्वितीय घर में अंकिश शक्ल हो, जो कि शनि ग्रह की शक्ल है और एक बिन्दु वाली शक्ल है। भाग्य की भाग्यहीनता के कारण भाग्य निर्बल है और आगामी समय में भी यह स्थिति रहेगी। अतः कभी किसी स्थिति में धन लाभ व स्थायी सम्पत्ति की प्राप्ति का योग नहीं होना पाया जाता है। यदि प्रस्तार के द्वितीय घर में व चतुर्थ घर में उक्ला शक्ल हो जो कि शनि ग्रह की महान अशुभ शक्ल है। साथ ही नजर-ए-मिकरना और नजर-ए-तसरीक रखती हो तो दफीना यानि कि खजाना प्राप्त होता है। जिसमें स्वर्ण मुद्राएं या स्वर्ण के आभूषण की प्राप्ति होती है। मगर शर्त है कि सारी शक्लें शुभ दाखिल होनी अवश्य चाहिए। यदि प्रस्तार के द्वितीय घर में कब्जुल दाखिल शक्ल हो या अतबे दाखिल शक्ल हो तो इनकी नजर गवाहन पर बराबर पड़े साथ ही नजर-ए-तरबीर की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता को आजीवन धन की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ किसी ना किसी कार्य और बात द्वारा स्थिति तौर पर धन की प्राप्ति, एकत्रित धन और स्थिति सम्पत्ति का योग भी नहीं पाया जाता है। यदि प्रस्तार के द्वितीय घर में महान अशुभ शक्लें और उन महान अशुभ शक्लों की दृष्टि हो तो जातक जीवन भर हर वक्त दरिद्रता की स्थिति में बराबर कायम रहेगा। वह दाने-दाने को मुंहताज रहेगा। अन्य कोई व्यक्ति मदद के लिए तैयार भी नहीं होगा।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में बिना कुण्डली के भविष्य कथन जाना जाता है। इस शास्त्र में किसी प्रकार की जन्म कुण्डली की आवश्यकता कभी किसी स्थिति में नहीं होती है। रमल शास्त्र में प्रश्नकर्ता के हाथ पर पासे जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं, पासे को किसी शुद्ध पवित्र स्थान पर डलवाए जाते हैं। इन पासों से प्राप्त शक्लों यानि कि आकृतियों के मुताबिक जो शक्ल आती है उससे रमल ज्योतिष शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम, वार, दिन, तिथि और पंचांग की आवश्यकता नहीं होती है। यह सारी स्थिति प्रश्नकर्ता द्वारा विद्वान के समक्ष होने पर होती है। यदि प्रश्नकर्ता रमल विद्या के विद्वान के समक्ष में ना हो तो प्रश्नकर्ता को 'प्रश्न फार्म' के माध्यम से अमुक धन से संबंधित अथवा अन्य किसी सवाब के जवाब मय फलादेश के समाधान से किया जा सकता है। ❖

डा. नरेन्द्र कुमार 'भैया' रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान
३. महल खास, किला भरतपुर (राज.)
फोन– ०५६४४–२२३२१६. मो.–०९४१४२६८१७२

(पृष्ठ २७ का शेष) धीमी रहेगी। शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। सन्तान से कुछ कलह भी होगा। स्वास्थ्य मध्यम। स्त्री पक्ष का सहारा बनेगा। नया व्यवसाय रोजगार नौकरी का योग है। ता. १०, १३, २०, २९ अशुभ हैं।

वृश्चिक–तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

नग मूंगा
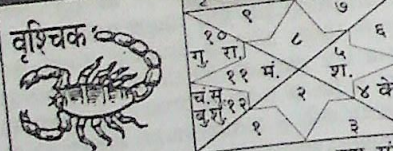
स्वामी मंगल

मंगल ४था। सू+बु+शु+चं पांचवां–यह वर्ष आपके लिए काफी शुभदायक, विजय कारक एवं लाभदायक होगा। मान-सम्मान भी मिलेगा। यात्राएं अच्छी होंगी। धार्मिक एवं मार्मिक कार्य योग बनते हैं।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–शुभ समाचार मिलेंगे। कुछ लोग बाधा डालेंगे। पशुओं से सावधान रहें। सम्पत्ति लाभ बनेगा।

अप्रैल २००९–सन्तान पक्ष से शुभ कार्य बनेगा। विवाद में विजय योग। पूर्वी यात्रा का लाभ बनता है। स्त्री सुख योग बनेगा। कार्य में भी प्रगति। सन्तान पक्ष को रोजगार प्राप्ति का योग। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। गुप्त चिन्ता बनेगी। परिवार में मांगलिक कार्य होगा। विभिन्न कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी। ता. १०, ११, १५, २५, २७ अशुभ हैं। **मई**–निजी जनों का सहयोग अच्छा मिलेगा। वाहन प्राप्ति का योग। रोजगार प्राप्ति का भी अवसर बनेगा। कोर्ट कचहरी के मामला में विजय योग बनता है। मांगलिक कार्यों में अनुमान से भी अधिक व्यय। कफ वायु विकार एवं सांस संबंधी परेशानी भी बनेगी। पत्नी के सहयोग से स्थाई संपत्ति में लाभ होगा। ता. ८, ९, १४, २०, २२, २६ व २९ अशुभ हैं। **जून**–मानसिक अशांति बनेगी। सामाजिक आक्षेप भी लगेंगे। नवीन कार्यों की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति का योग भी है। देश विदेश की यात्राओं का योग बनता है। शत्रु कमजोर होंगे। धार्मिक कथाओं का आयोजन संबंधी कार्य होगा। राज पक्ष से परिलाभ मिलेगा। नेत्र पीड़ा बढ़ेगी। ता. ४, ८, १६, २४ व ३० अशुभ हैं। **जुलाई**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निजी जनों का सहयोग होगा। वाणिज्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव बनेगा। प्रेम संबंध परेशान कर सकते हैं। अचानक कोई परेशानी बनेगी। भूमि भवन का लेन-देन शुभदायक रहेगा। पशु क्रय विक्रय का योग अच्छा बनेगा। पारिवारिक कार्यों में शुभता रहेगी। ता. ३, ९, १४, २२, २४ अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–गृह कार्य में अशांति का वातावरण रहेगा। पिता-पुत्र का वैचारिक मत भेद बनेगा। सन्तान को भी कार्य में बाधा आयेगी। आय-व्यय का तालमेल न्यून (कमजोर) रहेगा। लाभ की स्थिति तीसरे सप्ताह में बनेगी। विदेश यात्रा योग भी बनता है। जीवन साथी द्वारा आर्थिक लाभ मिलेगा। ता. ८, १३, २१, २७ व ३१ अशुभ हैं। **सितम्बर**–किसी पर अधिक विश्वास करना अमंगलदायी होगा। नौकरी में भी कुछ परेशानी बनेगी। मास के उत्तरार्ध में कोई प्रोपर्टी डीलर से सम्पर्क बढ़ेगा। झगड़े का अचानक योग है। सोचा गया कार्य होगा। तबादला योग भी बनता है। यात्रा में नये सम्पर्क से लाभ होगा। ता. ४, ८, १४, २०, २४ अशुभ रहेंगी। **अक्टूबर**–राजनैतिक गतिविधियों में आप व्यस्त रहेंगे। स्वास्थ्य में गिरावट योग बनेगा। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। बाहरी प्रवास का योग ज्यादा बनता है। कोई शुभ समाचारों की प्राप्ति तथा मांगलिक कार्य बनेंगे। वाहन से आप इस माह में सावधान रहें। ता. १६, २०, २२, २७ अशुभ हैं। **नवम्बर**–कार्यों में सफलता का योग है। तथा पदोन्नति का अवसर भी मिलेगा। खर्चा अधिक होगा। पुस्तक लेखन एवं प्रकाशन का योग बनता है। सन्तान को भी लाभदायक योग बनेगा। प्रेम संबंध से नयी विचार धारा का योग बनेगा। आर्थिक लाभ भी। ता. ७, १०, १४, १७, २४ अशुभ हैं। **दिसम्बर**–सरकारी कर्मचारी चिंतित रहेंगे। व्यापारी वर्ग खुश रहेगा। किसी के साथ तकरार हो सकती है। यात्रा में भी कुछ असामाजिक तत्व परेशान करेंगे। मनोबल बढ़ेगा। किसी निजी कम्पनी से मान सम्मान की प्राप्ति होगी। नये कार्य हेतु वातावरण भी बनेगा। ता. ४, १०, १८, २२ व २७ अशुभ हैं। **जनवरी २०१०**–संघर्ष के बाद सफलता मिलेगी। भाई बंधु सहयोग प्रदान करेंगे। शिक्षा का वातावरण अच्छा बनेगा। मान सम्मान की स्थिति भी बनेगी। किसी के साथ तकरार करने से बचें। मित्र वर्ग अच्छा सहयोग देंगे। पत्नि का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। शिव पूजन करें। ता. २, ६, १३, २४, २७ अशुभ हैं। **फरवरी**–मन चित्त प्रसन्न रहेगा। आपका मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। बंधुओं से कुछ मतभेद हो सकते हैं। फिजूल खर्चा एवं साहित्यिक संघ की स्थापना कर सकते हैं। आप चलते-चलते भी लाभ प्राप्त करेंगे। अनावश्यक खर्चा से बचने का प्रयास करें। ता. ३, १७, १८, २२, २८ अशुभ हैं। **मार्च**–आपकी कोई मनोकामना पूर्ण होगी। तथा लाभदायक आर्थिक स्थिति बनेगी। राज पक्ष से लाभ, लेकिन नया कार्य सम्पादन में मित्र वर्ग मदद करेंगे। विवादित कार्य भी सफलता के योग में। भूमि भवन का लाभ एवं वाहन प्राप्ति का भी अवसर बनेगा। ता. ५, १०, १७, २३, २७ अशुभ हैं।

धनु–ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

धनु

धनु राशि चक्रं

१० गु.रा.
८
११ मं.
९
७
१२
चं.शु.सू.बु.
६
१
३
५ श.
२
४ के.

स्वामी गुरु नग पुखराज

अर्द्ध काल सर्प योग। चतुर्थ भाव में चार ग्रह आपको वर्ष में काफी परेशान करेंगे विशेषकर पारिवारिक एवं माता-पिता को रोग व्याधि बनेगी। आर्थिक संकट भी बनेगा।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–नवीन धार्मिक कार्य का आयोजन होगा। सत्संग का लाभ मिलेगा। ता. २७ व ३१ अशुभ रहेंगी।

अप्रैल २००९–वायु विकार रोग का योग बनेगा। निजी लोग भी अनबन करने का प्रयास करेंगे। अनावश्यक विवाद भी होगा। पारिवारिक कार्यों की वृद्धि होगी एवं दायित्व बढ़ेगा। चोरी का योग भी। सावधान। कूप निर्माण का योग बनेगा। वाहन प्राप्ति के साथ वर्चस्व बढ़ेगा। ता. ३, ४, १७, २०, २७ अशुभ हैं। **मई**–मानसिक अशांति है। सामाजिक कार्यों में अनादर का योग बनेगा। विदेशी सामग्री वस्तु का क्रय-विक्रय योग है। पारिवारिक कार्यों में खुशी जन्य समाचार मिलेगा। नवीन मित्र वर्ग से राजनैतिक लाभ बनेगा। स्त्री पक्ष का योग ठीक रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर होगा। ता. ५, ७, १४, २२, ३० अशुभ हैं। **जून**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निजी लोगों से मदद मिलेगी। कार्यों में सावधानी बरतें। भूमि भवन का लाभ बनेगा। शत्रु पक्ष का वर्चस्व बढ़ने से तंगी आयेगी। निराशा भी बनेगी। वाहन से शुभ यात्राएं बनेंगी। धार्मिक कार्यों में भी अच्छा लाभ मिलेगा। शत्रु कमजोर होंगे। ता. ४, ५, १३, २३, २५ अशुभ हैं। **जुलाई**–रक्त पित्त विकार बढ़ेगा। नया सम्पर्क बनेगा। नयी योजना का लाभ मित्रों के सहयोग से मिलेगा। स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा। नये कार्य में संबंधी वर्ग भी मदद करेंगे। कुछ चिन्तादायक समाचार भी बनेंगे। अचानक यात्रा योग भी बनेगा। वाहन एवं पशुओं से सावधान। ता. ४, ९, १२, २४, २७ अशुभ रहेंगी। **अगस्त**–मानसिक अशांति योग। व्यापार-व्यवसाय में वृद्धि होगी। भूमि भवन का सुख योग एवं प्राप्ति लाभ बनेगा। आर्थिक समाचारों से यानि शेयर्स बाजार में भी लाभ होगा। परिवार में क्लेश भी होगा। शत्रुओं से सावधान रहें। खर्चा विशेष योग भी। राजकाज में लाभ बनेगा। ता. ३, १०, १६, २२, २३ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–इस माह में खर्चा विशेष होगा। धार्मिक कार्यों में भाग-दौड़ रहेगी। नौकरी में पदोन्नति का योग भी बनता है। स्त्री एवं सन्तान को रोग बाधा बढ़ेगी। मित्र वर्गों द्वारा अच्छा सहयोग तन, मन, धन से प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में भी गड़बड़ योग बनता है। पशुओं से सावधान। ता. ९, १६, २३, २९

अशुभ हैं। **अक्टूबर**–परिजनों से सहयोग मिलेगा। आन्तरिक कलह से बचें। व्यापार-व्यवसाय में पत्नि का सहयोग एवं लाभ होगा। रोजगार के अवसर बनेंगे। नये कार्य में भागदौड़ ज्यादा होगी। प्रशासनिक लोगों को भय रहेगा। मित्र, वर्ग से मिलाप एवं पूर्वी यात्रा का शुभ लाभ मिलेगा। ता. ८, १२, १९, २४, २७ अशुभ हैं। **नवम्बर**–पुराना कार्य बनेगा। नये व्यक्ति से सम्पर्क होगा। शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। मित्र वर्ग काफी मदद करेंगे। सोचा गया कार्य में लाभ होगा। राजपक्ष प्रबल बनेगा। नवीन स्थानों में भ्रमण एवं रोजगार का लाभ मिलेगा। लेखन एवं प्रकाशन का माह शुभ रहेगा। अग्नि से सावधान। ता. ३, १३, २१, २८, ३० अशुभ हैं। **दिसम्बर**–सन्तान सुख, व्यापार-रोजगार अच्छा चलेगा। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। कोर्ट कचहरी के मामला में सावधान। कुछ स्थानों पर कीर्ति घटेगी। अनावश्यक यात्रा नहीं करें। शिक्षा का स्तर बढ़ेगा। दुर्घटना की आशंका बनती है। व्यर्थ विवाद से बचें तो शुभ रहेगा। ता. २, ८, २३, २८ व ३१ अशुभ रहेंगी। **जनवरी २०१०**–स्त्री पक्ष द्वारा आर्थिक लाभ। परिश्रम विशेष करना पड़ेगा। नवीन कार्य की योजना से मित्र वर्ग को भी लाभ। मन में अशांति का योग बनेगा। गुप्त शत्रुओं से तंत्र बंधन का योग भी बनता है। मं+रा+के. के कारण पारिवारिक संबंधों में कटुता बढ़ेगी। चोट योग भी। ता. ६, १४, २४, २८ अशुभ हैं। **फरवरी**–मन प्रसन्नचित रहेगा। मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ हो सकती है। उत्तरार्द्ध में भाइयों से मतभेद भी हो सकते हैं। अनावश्यक खर्चा का योग तथा तर्क-वितर्क से परिवार में कटुता बढ़ेगी। कार्यों में रुकावट भी बनेगी। मित्र वर्ग रोमांस दायक प्रस्तुति देंगे। ता. ४, ११, १७, २५, २७ अशुभ हैं। **मार्च**–जमीन जायदाद का विवाद लम्बा तूल पकड़ सकता है। प्रेम संबंधों के कारण कारावास जन्य बाधा भी बनेगी। रोजगार का अवसर अच्छा बनेगा। तीर्थाटन का खर्चा होगा। सरकारी सेवा कर्त्ताओं को संकटदायक योग बनेगा। निलम्बन योग बनता है। ता. २, ८, १६, २०, २४ अशुभ हैं।

मकर–भो, जा, जी, खी, खु, खे, खो, गा, गी

स्वामी शनि **नग नीलम**

शनि की ढैय्या-दुर्घटना का योग बनता है। गुरु+रा की लग्न में युक्ति होना सामाजिक क्षति तथा रोग कारक योग बनेगा। मंगल+शनि का समसप्तक योग मृत्यु तुल्य कष्ट भी देगा।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–इस वेला में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य होगा। अचानक यात्रा योग से लाभ भी मिलेगा। राजकाज में लाभ होगा। ता. २८, ३० अशुभ रहेंगी। **अप्रैल २००९**–वायु विकार बढ़ेगा। अर्थ हानि व चोरी का भय रहेगा। राजनैतिक कारणों से बचाव पक्ष मजबूत बनेगा। निजी संबंधी अपको अपयश देंगे। सन्तान को भी रोग व्याधि होगी। माह में अशांति ज्यादा रहेगी। ग्रह शांति कराना शुभ रहेगा। वाहन से पूरे माह में सावधान रहें। ता. १, ८, ९, १४, १७, २२ अशुभ हैं। **मई**–आर्थिक स्थिति सुधरेगी। विविध कार्यों में लाभ भी होगा। अनावश्यक यात्रा एवं अपयश से बचें। घरेलू झंझट बढ़ेगा। राजकीय सेवा का योग बनेगा। कारोबार भी अच्छा चलेगा। कृषि कार्यकर्त्ता को विशेष चिन्ता बनेगी। सामाजिक सेवा का अवसर बनेगा। लाभ लेवें। ता. ८, ९, १०, २३, २४, २५ अशुभ हैं। **जून**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्त्री पक्ष से लाभ मिलेगा। कारोबार (धंधा) परिवर्तन का योग बनता है। व्यथा विकार का योग बनेगा। राज पक्ष में वैचारिक मतभेद तथा दावा संबंधी योग बनता है। विजय पक्ष आपका बनेगा। पूर्वी देशों की यात्रा का योग बनता है। ता. १, २, ३, १२, १३, १४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई**–मानसिक अशांति का योग बनेगा। नवीन कार्यों में मित्र वर्ग लाभ प्रदान करेंगे। रोजगार का अवसर माह के मध्य में बनेगा। निजी जनों के द्वारा नये निर्देश एवं सुझाव प्राप्त होंगे। उनकी पालना से भाग्योदय होगा। स्टेशनरी कार्यों का योग-प्रकाशन योग बनता है। ता. ५, ६, ७, १७, १८, १९ अशुभ हैं। **अगस्त**–कार्यक्रमों में बाधा योग। धन का नुकसान हो। स्त्री एवं सन्तान पक्ष का सहयोग अच्छा रहेगा। मित्रों से मिलाप, भाईयों से बंटवारा विवाद बनेगा। उदर पीड़ा का योग भी है। राजकीय कार्यों में काफी लाभदायक योजनाएं प्राप्त होंगी। पशुओं से सावधान रहें। ता. ४, ९, १३, १५, १८ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–कारोबार मध्यम चलेगा। आर्थिक लाभ फुटकर वस्तुओं से होगा। आशा के अनुसार इस माह में कार्य बनेगा। विविध स्थानों का भ्रमण होगा। धार्मिक यात्राएँ भी होंगी। शारीरिक कष्ट शनि ग्रह से बनता है। शुभ समाचार प्राप्ति। स्थान परिवर्तन योग बनता है। रोजगार लाभ भी। ता. १०, १२, १५, १७, २२ अशुभ हैं। **अक्टूबर**–घर में मंगल कार्य होंगे। नया स्थान का लाभ मिलेगा। राज पक्ष एवं सामाजिक पक्ष का लाभ मिलेगा। परिवार में अशांति शनि के कारण बन सकती है। व्यापारिक गतिशीलता निजी जनों के द्वारा बढ़ेगी। अचानक विदेश यात्रा योग भी बनेगा। सन्तान का सुख मिलेगा। ता. ३, ७, ९, १५, १८, २३ अशुभ हैं। **नवम्बर**–वृथा व्यय होगा। बंधुओं से मदद मिलेगी। धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। सन्तति सुख का योग बनता है। राजकीय सेवा का योग बनता है। मांगलिक कार्यों में काफी भागदौड़ रहेगी। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। स्वास्थ्य में गड़बड़ भी-वात व्याधि पीड़ा होगी। ता. ४, ६, ९, १४, २० अशुभ हैं। **दिसम्बर**–उदर विकार एवं वात व्याधि बढ़ेगी। दुर्घटना का योग प्रथम सप्ताह में बनता है। कोर्ट कचहरी का भी पुराना विवाद उभर कर बन सकता है। यात्रा कष्ट भी। माह चिन्ता जनक रहेगा। नवग्रह की शांति या शिवाभिषेक रुद्री का पाठ कराना आवश्यक है। ता. ९, १२, १४, २२, २४ अशुभ हैं। **जनवरी २०१०**–आर्थिक लाभ होगा। भूमि भवन का लेन-देन भी बनेगा। रोग व्याधि में कफ विकार-हृदय विकार का योग बनता है। स्थान परिवर्तन का योग बनता है। वाहन प्राप्ति का योग भी। परिवार में नये सदस्य का आगमन होगा। मित्र वर्ग प्रत्येक कार्य में मदद करेंगे। ता. ९, १६, २६, २८, २९ अशुभ हैं। **फरवरी**–स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रु पक्ष कमजोर होंगे। मांगलिक कार्य का, विवाहादि का अच्छा योग बनता है। भूमि भवन का लाभ। पुराने विवाद में विजय योग भी बनता है। नवीन मित्रों के मिलन से आशातीत कार्यों में प्रगति बनेगी। ता. १३, १४, १९, २०, २२ अशुभ रहेंगी। **मार्च**–सम्पत्ति लाभ बनेगा। कर्जा बढ़ेगा। नये स्थान में व्यवसाय योग बनेगा। स्थान परिवर्तन का योग भी है। सामाजिक सेवा में पदेन अधिकारी कार्यकारणी में चुनाव एवं विजय होगी। परम्परागत स्थान में भी आर्थिक योग से शुभ माह रहेगा। ता. ३, ४, १०, १२, २९, ३० अशुभ हैं।

कुम्भ–गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

स्वामी शनि **नग नीली नीलम**

शनि-मंगल का समसप्तक योग लग्न एवं सप्तम भाव में होना दाम्पत्य सुख में इस वर्ष अशुभ घटनाएं घटेंगी। केतु शत्रु एवं रोग बढ़ायेगा। आर्थिक लाभ अच्छा है।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–इसमें पारिवारिक संकट का योग तथा धार्मिक खर्चा बढ़ेगा। आर्थिक योग में बाधाएं बनेंगी। ता. २७ व ३१ अशुभ हैं।

अप्रैल २००९–निजी लोग साथ छोड़ेंगे। कारोबार में हानि का योग। रोजगार प्राप्ति का अवसर बनेगा। सामाजिक मान सम्मान की प्राप्ति होगी। नया कार्य एवं फाइनेंस कम्पनियों से सम्पर्क बढ़ेगा। मित्र वर्गों के द्वारा आपकों धार्मिक यात्राएं भी होंगी। जन सम्पर्क बढ़ेगा। क्रोध न करें। ता. १, २, ६, १४, २३ अशुभ रहेंगी। **मई**–नेत्र रोग का योग बनता है। शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। साझेदारी में कार्य करने का अवसर बनेगा। सामाजिक सेवा में अपयश योग बनता है। मित्र वर्ग भी साथ नहीं

देंगे। पारिवारिक कार्यों में काफी परेशानी होगी। पशुओं से, वाहन से सावधान रहें। नया कार्य इसमें न करें। ता. १, ७, ९, १३, २४, २७ अशुभ हैं। **जून**–कफ-वायु-विकार बढ़ेगा। कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। पारिवारिक वर्चस्व भी अच्छा होगा। दक्षिणी यात्रा से लाभ भी। आर्थिक योग अच्छा बनेगा। नजला-रोग जुखाम का प्रभाव रहेगा। मांगलिक कार्यों में खर्चा होगा। पत्नी का भाग्योदय भी होगा। शुभ समाचार मिलेंगे। ता. १०, ११, १९, २४, २९ अशुभ हैं। **जुलाई**–भूमि भवन का लाभ बनेगा। राक्षस प्रवृति के लोगों से सावधान। व्यापार धंधा में लाभ होगा। व्यापार में नयापन होगा। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। रोजगार का अवसर बनेगा। यात्रा में शुभ योग भी। मान सम्मान का भी अच्छा योग बनेगा। ता. १, ३, ६, १३, १४, १९, २४ अशुभ हैं। **अगस्त**–आमदनी ठीक। सन्तान सुख का योग। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट बनेगी। शत्रु पक्ष से भी परेशानी बनेगी। भूमि भवन का विवाद योग बनेगा। राजकीय सेवाओं से कार्य में बाधाएं आयेंगी। कोर्ट के मामले से भी परेशानी होगी। ता. ४, ९, १४, १९, २५ अशुभ हैं। **सितम्बर**–कार्य व्यवहार उत्तम रहेगा। आय की बजाय व्यय बढ़ेगा। विवादित पुराना मामला आपके हित में निर्णय होकर शुभ संकेत करता है। भाइयों एवं मित्रों का सहयोग होगा। राज दरबार में मान सम्मान की प्राप्ति होगी। धार्मिक आयोजनों में भागदौड़ भी रहेगी। ता. ४, १२, १४, २२, २९ अशुभ हैं। **अक्टूबर**–सन्तान का भाग्योदय होगा। लोकप्रियता बढ़ेगी। शत्रु पक्ष हार मानेगा। आर्थिक योग अच्छा है। सवारी पशु (घोड़ा) लेन-देन में लाभ होगा। स्त्री वर्ग से नया-नया ऑफर तथा प्रेम संबंध से भाग्योदय बनेगा। विदेश यात्रा का भी योग है। ता. २, ३, ८, १५, २३, २७ अशुभ हैं। **नवम्बर**–आमदनी अच्छी होगी। व्यापार धंधा भी शुभ लेकिन गृह क्लेश बढ़ेगा। मित्र वर्ग आपको अच्छा सहयोग देंगे। प्रतिष्ठा कराने का योग-देव मन्दिर का बनता है। सन्तान को रोजगार का अवसर बनेगा। विदेश यात्रा का, हज यात्रा का लाभ बनेगा। ता. ८, ९, १७, १८, २६ अशुभ हैं। **दिसम्बर**–निजी लोगों से मेल-मिलाप बढ़ेगा। कुछ स्थानों में आपको मान-सम्मान मिलेगा। चिन्तादायक स्थिति, वाहन से सावधान रहें। मित्र वर्ग कुछ नाराज भी होंगे। लेन-देन में मधुरता बरतें तो अच्छा रहेगा। भाइयों से स्नेह बढ़ेगा। साझेदारी एवं शेयर्स में भी लाभ होगा। ता. १, २, ८, १५, १९ अशुभ हैं। **जनवरी २०१०**–मन अशान्त। घर में नया कार्य के लिए काफी भाग दौड़ करनी पड़ेगी। फाइनेंस कम्पनियों से सम्पर्क बढ़ेगा। स्वास्थ्य में गड़बड़ होगी। रोजगार का योग तो बनेगा, लेकिन पारिवारिक कार्यों में चिन्ता या बीमारी का योग बनेगा। वाहन से सावधान रहें। ता. २, ८, १६, २०, २७ अशुभ हैं। **फरवरी**–आपकी कोई मनोकामना पूर्ण होगी। पदोन्नति का योग अथवा व्यवसाय में नया-पन बनेगा। सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि के कारण पारिवारिक परेशानियां रहेंगी। आवेश से बचें। कारोबारी हालात अच्छे होंगे। नया मित्र मण्डल से लाभ होगा। ता. ३, ८, १४, २३, २८ अशुभ रहेंगी। **मार्च**–संघर्ष के बाद सफलता मिलेगी। धन हानि का योग भी शनि+मंगल से बनता है। राजनैतिक दायरा (क्षेत्र) बढ़ेगा। अचानक नये कार्य में धन खर्चा होगा। होशियारी से लूटपाट से बच जायेंगे। रोजगार का अवसर अच्छा बनता है। पशुओं के लेन-देन से लाभ बनता है। त. ७, १०, १३, २०, २३ अशुभ हैं।

मीन–दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन राशि चक्र

मीन

१ सू.बु. | ११मं. | १० गु.रा. | २ | १२चं.श. | ३ | ९ | ४ के. | ६ | ८ | ५ श. | ७

स्वामी गुरु — **नग पुखराज पीला**

लग्न में चार ग्रहों की युक्ति होना शुभाशुभ दोनों योग करते हैं। पांचवां केतु शिक्षा में बाधक बनेगा। शनि+मंगल का समसप्तक मृत्यु तुल्य कष्ट भी करेगा। नीच का गुरु ११वां होना आर्थिक पक्ष कमजोर या चोरी करायेगा।

दिनांक २७ से ३१ मार्च २००९ तक–परिवार में नया कार्य का योग बनेगा। धार्मिक कार्यों में अच्छा खर्चा भी होगा। ता. २८, २९ अशुभ है। यात्रा योग भी।

अप्रैल २००९–जमीन जायदाद सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। लेकिन विवाद में विजय होने पर। मातृ पक्ष को कष्ट योग। स्वयं को उदर शूल का योग बनता है। प्रेम संबंध बनेगा और भाग्योदय जैसा योग भी। रोजगार का अवसर-राज पक्ष से भी अच्छा लाभ होगा। ता. १, २, ४, ८, १४, २०, २२ अशुभ हैं। **मई**–वाणिज्य, व्यवसाय, कृषि धंधा अच्छा रहेगा। रोजगार की समस्या का हल होगा। कार्य शक्ति बढ़ेगी। कुछ स्थानों पर मान सम्मान का योग बनेगा। कोर्ट कचहरी का योग पुराना जो है, निपटारा आपके पक्ष में होगा। कुछ स्थानों की यात्रा का योग है। ता. ३, १०, १४, २३, २७ अशुभ हैं। **जून**–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आय अच्छी होगी। घर में या मन्दिर में प्रतिष्ठा कार्य जैसा मंगल कार्य होगा। सन्तान पक्ष का भी योगदान अनुकूल होगा। शत्रु पक्ष प्रबल होने का योग है। कुछ स्थानों पर यात्रा एक संकट योग बनता है। राजकीय कार्यों का सम्पादन अच्छा रहेगा। ता. ३, ६, १८, २७, २९ अशुभ हैं। **जुलाई**–धंधा में अधिक परिश्रम करना होगा। स्त्री पक्ष से भी आपको आर्थिक लाभ की योजना मिलेगी। अचानक विवाद से अशांति भी मंगल ग्रह से बनेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। प्रिय जनों से मिलाप होगा। पत्नि से विवाद योग भी है। धार्मिक कार्य में खर्चा होगा। ता. ९, १०, १९, २०, २४, २५ अशुभ हैं। **अगस्त**–सन्तान पक्ष से चिन्ता योग। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव चलेगा। लज्जा भंग का लांछन भी लग सकता है। घरेलु कार्यों की अधिकता से अशांतिदायक योग बनेगा। नया धंधा में मित्र मदद करेंगे। पशुओं से सावधान। कोई अप्रिय घटना के योग से स्वास्थ्य गड़बड़ होगा। ता. ८, १०, २४, २९ अशुभ हैं। **सितम्बर**–मित्रों से अच्छा मेल-मिलाप होगा। राजकाज से भयभीत रहेंगे। स्थान परिवर्तन तथा मान सम्मान का भी शुभ समय रहेगा। परिवार में कुछ नया कार्य के प्रति चिन्तन होगा। गुप्त चिन्ता से सेहत कमजोर होगी। कार्य परिवर्तन का योग बनेगा। ता. ११, १२, २६, २८, ३० अशुभ रहेंगी। **अक्टूबर**–स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। राजनैतिक भागेदारी बढ़ेगी। लेखन प्रकाशन का अच्छा योग बनेगा। विदेश यात्रा भी होगी। आर्थिक तंगी का निवारण होगा। निजी लोग प्रत्यक्ष रूप से मदद करेंगे। स्त्री पक्ष की आशा का सुझाव मानने से लाभ होगा। ता. ८, ९, १६, १८, २४, २५ अशुभ रहेंगी। **नवम्बर**–सिर व नेत्र रोग बाधा। आर्थिक योग शुभ घर में मांगलिक खर्चा होगा। माता-पिता के स्वास्थ्य में कुछ चिन्तादायक गड़बड़ बनेगी। सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। दक्षिणी यात्रा से लाभ होगा। पत्नि से विवाद भी होगा। तथा असामाजिक साधना का लाभ भी होगा। ता. ९, १७, २३, २४, २७ अशुभ हैं। **दिसम्बर**–अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। राजनैतिक परिवर्तन योग यानि पार्टी का परिवर्तन बनेगा। घरेलू कार्य बढ़ेंगे। नया कार्य का निवेश बढ़ेगा। सामाजिक दायित्व भी बढ़ेगा। मित्र वर्ग का अच्छा सहयोग बनेगा। साझेदारी का भी बनेगा। शत्रुओं से सावधान। ता. १९, २०, २४, २५, २९ अशुभ हैं। **जुनवरी २०१०**–नया कार्य की योजना बनेगी। सन्तान पक्ष से सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा। वाहन प्राप्ति का योग बनेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। क्रोधावेश बढ़ेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। रोजगार का भी योग बनेगा। धार्मिक अनुष्ठान का योग भी बनता है। ता. १, २, ९, १०, १८, २०, २७ अशुभ हैं। **फरवरी**–निजी लोगों से सम्पर्क बनेगा। सामाजिक कार्यों में राशि खर्च होगी। परिवार में नया सदस्य का आगमन होगा। कुछ धार्मिक स्थानों की यात्रा एवं संस्मरणों की अभिवृद्धि होगी। जन सम्पर्क बढ़ेगा। मित्र वर्ग के योग से विदेश यात्रा का योग बनेगा। परिवार में शुभ कार्य होंगे। ता. १, ३, ६, २०, २४, २७ अशुभ हैं। **मार्च**–मेल मिलाप बढ़ेगा। राजनीति में लाभ होगा। नया स्थान में यात्रा से भी लाभ बनेगा। मांगलिक कार्यों में संबंधी अच्छी मदद करेंगे। लेन-देन में सावधानी रखें। पशुओं से भय बनेगा। सामाजिक कार्यों की अधिकता से कुछ अशांति परिवार में बनेगी। ता. २, ४, ८, १३, १४, २७, २९ अशुभ हैं।

नोटः यह राशिफल ग्रह गोचर तथा जन्म नक्षत्र एवं प्रसिद्ध नाम से मेदनीय ज्योतिष गणना से लिखा गया है। पाठक वर्ग इससे अवगत होंवे।

भारतवर्ष को आगामी संवत् 2066 कैसा रहेगा

लेखक—डॉ. नरेन्द्र कुमार "भैया"

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक गत संवत् के मुकाबले आगामी संवत् २०६६ कैसा रहेगा? इस वास्ते पासा जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। डालकर निम्न प्रस्तार बनाया।

रमल (अरबी ज्योतिष) के उक्त प्रस्ताव यानी कि जायचे के १५वें घर यानी कि "मिजाने-उल-रमल" में कब्जुल दाखिल शक्ल है। द्वितीय फलादेश बिन्दु को गति दी। जो प्रस्तार के अष्टम् घर में जाकर रुका। उस घर में शक्ल उक्ला है जो शनि ग्रह की अशुभ मुनकलिब शक्ल है। इसकी तकरार छठे घर में है जो अशुभ घर में अशुभ शक्ल होना पाया जाता है। यह कुम्भ राशि की शक्ल है और बलावल के मुताबिक भी कमजोर शक्ल है। यह शक्ल श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र से सम्बन्धित है। कब्जुल खारिज शक्ल अश्विनी नक्षत्र की शक्ल है। अतः ये उक्ला शक्ल शनिवार व बुधवार से भी सम्बन्धित रखती है। यह दोनों बार भारतवर्ष के वास्ते प्रत्येक कार्य और बात में परेशानियां व शनि से सम्बन्धित कार्यों में हानिकारक व तेजीमय वस्तु साथ ही नित नई गम्भीर बीमारी मानसिक व हृदय रोग, चर्म रोग (त्वचा से सम्बन्धित बिमारी) कैन्सर, मानसिक तनाव, रक्त चाप, जिगर से सम्बन्धित बीमारी का होना दिखाई देता है।

प्रस्तार के द्वितीय घर में ब्याज शक्ल है जो शुभकारी है साथ ही एक जल तत्व का बिन्दु रखने वाली शक्ल है। यह संवत् व्यापारियों को लाभार्थ तेजी कारक योग बनता है। मगर आम भारत वासियों को आर्थिक विषमताओं की ओर ढकेलता है।

प्रस्तार के छठे घर में उक्ला शक्ल स्वयं के घर में बैठी है। इस वास्ते शनि ग्रह के ग्रस्त जातक (याचक) शारीरिक-मानसिक-आर्थिक साथ ही पारिवारिक सुख-शान्तिमय जीवन आनन्दकारी भी नहीं होना नजर आता है। इनका धन एकत्रित का योग कदापि नहीं होना पाया जाता है। गत वर्ष की तुलना में आकाश से गर्मी अधिक गिरे साथ ही वर्षा का योग कम होना नजर आता है। राजनैतिक पतन, राजनैतिक में बराबर उतार-चढ़ाव, भौतिक साधनों में गिरावट, देश में नैतिक पतन, चरित्र पतन, भ्रष्टाचार, वाद-विवाद, झूठे मुकदमे, दंगा-असमय आंधी-तूफान, आकाशीय हल-चल, भू-स्खलन, सड़क-रेल दुर्घटनाएं, भाड़ा में तेजी, तेल, पैट्रोल, डीजल, शेयर बाजार, सोना-चांदी में तेजी का अच्छा रुख, नवीन तकनीकी में रुकावट, वाहनों की बिक्री तेजी और वाहन द्वारा दुर्घटनाओं में जन-हानि साथ ही आर्थिक गिरावट, मोबाइल व इससे सम्बन्धित कार्यों में बढ़त का योग बराबर होना पाया जाता है। सरकारी व गैर सरकारी के साधनों में वृद्धि का योग नहीं, ना ही उक्त साधनों की प्राप्ति का योग। बेरोजगार युवकों को रोजगार के साधनों की प्राप्ति का योग नहीं होना पाया जाता है। इस वास्ते बराबर देश में परेशानी होना दिखाई देता है। देश में मार-काट, लूट-पाट, हत्याओं का योग भी होना पाया जाता है।

देश में पर्यटन उद्योग में बराबर परेशानी और कमी का योग होना भी दिखाई देता है।

प्रस्तार के १०वें घर में नकी शक्ल है जो कि १२, ०१ घर में है जो अशुभकारी है साथ ही मुनकलिब शक्ल है। नवयुवकों को शुभ-विवाह का योग गत संवत् के मुकाबले कम होना नजर आता है। साथ ही जिन नवयुवकों का विवाह होने का योग बनता है। उनका दाम्पत्य जीवन शारीरिक-मानसिक-आर्थिक और पारिवारिक क्षेत्र में शुभकारी नहीं होना स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अधिकांशतः आधुनिक कल कारखाने बन्द होना नजर आता है। नवीन कारखाने खुलने का योग कम होना पाया जाता है।

प्रस्तार के १०वें घर में तरीक है जो कि मुनकलिब शक्ल चन्द्रमा ग्रह की शुभ शक्ल है। अतः शिक्षा, चिकित्सा, ज्ञान की वृद्धि हो, इससे सम्बन्धित व्यक्तियों को इस कार्य में आर्थिक लाभ-बढ़त, शान्ति और बराबर ख्याति का योग कायम होना नजर आता है। मुनकलिब शक्ल होने के कारण वर्तमान संवत् में चुनावी स्थिति जन हानि, मानसिक तनाव, प्रशासनिक कार्य में तनाव ग्रस्त, आर्थिक बोझलता की ओर होना दिखाई देता है।

अतः रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक गत वर्ष की तुलना में आगामी संवत् प्रत्येक क्षेत्र में परेशानीमय गिरावट की ओर होना पाया जाता है।

रमल ज्योतिष से जानें सन्तान सुख कब

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में बिना जन्म पत्रिका के यानी कि रमल ज्योतिष शास्त्र के पासे जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। यदि स्त्री प्रश्नकर्ता हो तो सबसे अच्छा रहता है। यदि किसी कारण वश स्त्री प्रश्नकर्ता नहीं हो तो उसके पति के द्वारा उक्त प्रश्न पासे के द्वारा किया जा सकता है। यदि ये महाशय भी ना हों तो माता-पिता के द्वारा भी पासे डाले जा सकते हैं। उन पासों के मुताबिक बनाए गये प्रस्तार यानी कि जायचे के अनुसार मार्ग दर्शन व समाधान प्राप्त होता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में इस प्रश्न के अतिरिक्त किसी भी प्रश्न में जातक का नाम, माता-पिता का नाम, जन्म-तिथि, वार, घटी और तो पंचांग की आवश्यकता कभी किसी स्थिति में नहीं होती है। मात्र पासे द्वारा ही प्रश्न करवाकर उक्त प्रश्न का सन्तान सुख कब और कैसे की बाबत् मार्ग दर्शन व समाधान प्राप्त किया जा सकता है। यह सारी कार्य प्रणाली जातक के रमलाचार्य के सम्मुख होती है। मगर रमल ज्योतिष का विद्वान ना होने की स्थिति में "प्रश्न-फार्म" के माध्यम से भी उक्त कार्य को सम्पादित किया जा सकता है। यह दोनों कार्य प्रणाली एक ही हैं मगर गणितीय स्थिति अलग-अलग है। जो कि प्रत्येक कार्य बात में विभिन्न समयानुसार आती रहती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार यानी कि जायचे के प्रथम, पांचवें, छठे घर में यदि शुभ शक्लें (आकृति) हों और साक्षी घर भी शुभ हो साथ ही नजर-ए-तस्वीर हो, बलावल भी शुभ हो तो प्रश्नकर्ता के सन्तान सुख व सन्तान से लाभ प्राप्ति का होता है। इसी स्थिति में प्रश्नकर्ता को पंचम घर में नजर-ए-मिकारना साथ ही निकटवर्ती व दूरवर्ती साक्षी भी शुभ हो तो सन्तान विशेष सुन्दर-सुशील, स्वयं भाग्यशाली और परिवारजनों की भाग्यहीनता को नष्ट करने वाली, रंग साफ (गोरा) होती है। यदि इसके विपरीत हो और नजर-ए-तसदीर की दृष्टि हो तो सन्तान परिवार की खुशीयालता, भाग्यशालिता को भाग्यहीनता में तब्दील करने में अच्छी सहायक होती है। शिशु का रंग कुरूप होता है। यदि प्रश्नकर्ता के प्रस्तार में जमात शक्ल लग्न पर दृष्टि रखती हो तो सन्तान विकलांग होती है। यदि पंचम घर में अशुभ शक्लें हों व छठे घर में किसी प्रकार से अशुभ शक्ल हो तो सन्तान के अतिरिक्त स्त्री की किसी दुष्ट आत्मा की नजर यानी कि छाया (साया) होना स्पष्ट रूप से होना पाया जाता है। जिससे प्रश्नकर्ता स्त्री को शारीरिक-मानसिक-आर्थिक और पारिवारिक साथ ही दाम्पत्य जीवन में बराबर परेशानी व टकराव रहने का योग स्थायी तौर पर कायम होता है। प्रश्नकर्ता को सन्तान सुख के अतिरिक्त मन का उदासीनता व तनावग्रस्त स्थिति भी होना पायी जाती है। साथ ही जीवन बराबर असन्तुष्ट और टकरावमय जिससे शोकाकुल की स्थिति में स्थायी तौर पर होना दिखाई देता है। यदि प्रस्तार के अष्टम् घर में शक्ल फरह हो यह शक्ल तुला राशि की है व स्त्री संज्ञक से सम्बन्धित रखती है साथ ही मुनकलिब शक्ल है। इस स्थिति में प्रश्नकर्ता को सन्तान सुख विशेष ही परेशानी से साथ ही वृद्ध अवस्था में होगी। यदि प्रस्तार में अधिकांशतः शक्लें इज्जतमा और जमात हो तो पुरुष के वीर्य में सन्तानोत्पत्ती के शुक्राणु की कमी होने के कारण सन्तान सुख प्राप्ति का योग नहीं होता है। यदि उसी प्रस्तार के दशम् घर में महान अशुभ शक्लें कब्जुल खारिज, अतबे खारिज हो व मिकारना की दृष्टपात हो तो प्रश्नकर्ता को इस वास्ते चिकित्सक द्वारा दी जाने वाली दवाओं से लाभ और वांछित शान्ति का योग भी नहीं होना पाया जाता है।

यदि प्रश्नकर्ता के प्रस्तार के छठे घर में इज्जतमा व जमात शक्ल हो, जो कि बुध ग्रह की साबित शक्लें हैं। जो उक्त जातक को किसी प्रेत-आत्मा (मसान) की कुदृष्टिता (नजर) का स्पष्ट रूप से संकेत देती है। जिससे गर्भाधान में परेशानी व गर्भपात का बराबर भय साथ ही गर्भपात से होने वाली बीमारियों की आशंका बराबर बनी रहती है। जिससे शिशु (सन्तान) को तो हानि होती है। यदि प्रस्तार के अष्टम् घर में उक्ला शक्ल हो जो शनि ग्रह की महान शक्ल हैं माता को भी जीवनकाल की बावत् मृत्यं योग भी बनाती है।

प्रश्नकर्ता को इन समस्त स्थिति द्वारा मार्ग दर्शन होने के बावजूद यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही है। जिससे उक्त सन्तान सुख की बावत् लाभ-शान्ति द्वारा समाधान हो सके। इस वास्ते जातक रमल सिद्धयंत्र धारण करे अथवा उस ग्रह के वास्ते नग या ग्रह शान्ति विधि-विधान द्वारा कराने से लाभ व शान्ति प्राप्ति हो सके।

डॉ. नरेन्द्र कुमार "भैया"
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान (रजि.) ३, महल खास, किला भरतपुर (राजस्थान)
फोन-(०५६४४) २२३२१६, मो.-९४१४२६८१७२

जनोपयोगी घरेलू नुस्खे

ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, ज्योतिषायुर्वेदाचार्य शास्त्री

भारतीय चिकित्सा पद्धति का सरलतम उपयोग हम घरेलू सामग्री के रूप में आयुर्वेदिक सिद्धान्त को मानकर करते रहे तो सहज लाभ मिल सकता है। औषधि का प्रयोग विश्वास का भी एक संकेत देती है कि अब मुझे लाभ मिलेगा। आराम मिलेगा। अनेक वस्तुएँ हैं, जिनका प्रयोग नुस्खे के रूप में करते हुए अपनी समस्या का समाधान-रोग का निदान कर सकते हैं। हाँ जानकारी न हो तो उसके बारे में हमें अनुभवी व्यक्ति या वैद्य जी से सम्पर्क भी कर लेना चाहिए। सोच समझ कर किया गया प्रयोग एवं नुस्खा विफल नहीं होता है। मानव रोग व्याधि का पुतला है, न जाने कौन-कौन सी बीमारियाँ अचानक अनेक घटकों से आकर शरीर को क्षीण कर देती हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति या भारतीय चिकित्सा पद्धति या देशी चिकित्सा प्रणाली का नाम लेवें तीनों एक ही गुण सूत्रों से निर्मित औषधियों का संकेत करती हैं। जिसमें नुस्खा भी एक प्राथमिक उपचार का काम करता है। किसी भी व्यक्ति को योग हो तो नुस्खा भी बड़ा उपयोगी हो सकता है। अतः **'सर्व जन हिताय-बहुजन सुखाय' रोग व्यायि हटाय, स्वास्थ्यं लाभ प्रदाय॥** के अनुसार प्रस्तुति कर रहा हूँ। आशा है कि आप इसका प्रयोग करके लाभान्वित होंगे।

(१) मोटापा होने पर–(सभी प्रकार का मोटापा) प्रयोग करें–खट्टे फल, फल जूस, नींबू, बिजोड़ा नींबू। हरी सब्जियाँ। पत्तेदार सब्जियां, साग, टमाटर, पत्तेदार सब्जियों का रस या सूप, दही, छाछ, डाभ का पानी, लाल चावल, चौकर युक्त आटा, ब्राऊन ब्रेड, अखण्डित अन्न को सेवन करना चाहिए। यह सभी चीजें भोजन की हैं। अतः भोजन करते समय करें। **(२) मोटापा जिन्हें हो–उन्हें ये चीजें नहीं खानी चाहिए**–(१) नमक और चीनी, (२) तले हुए पदार्थ, (३) मसाला, घी, तेल और मक्खन, (४) मैदा से बनी हुई चीजें, चावल, भूसी रहित आटा, (५) मिठाई, केक, आईसक्रीम, चॉकलेट, (६) पेस्ट्रीज बिस्कुट (७) साफ्ट ड्रिंक्स, शराब, तम्बाकू, गुटका, (८) मास, चिकन, अण्डा, (९) आलू, शकर कन्द, चुकन्दर, (१०) आम, केला, चीकू तथा बासी भोजन नहीं करना चाहिए। **(३) त्रिफला का उपयोग**–यह योग आयुर्वेद में राम बाण है–कहा है कि–हरड़े, बेहरड़े, आंवला, घी, शक्कर से खाय। हाथी दबाके कांख में सौ कोस ले जाय॥ अतः एक चम्मच त्रिफला, एक चम्मच शक्कर, घी युक्त नियमित खाये तो धीरे-धीरे रोग नाश एवं शक्ति का संचार होता है। त्रिफला अनेकों रोगों का नाश करता है। **(४) पेट में एसीडीटी या अलसर होने पर**–(१) रोजाना पचास ग्राम जीरा दिन भर में थोड़ा-थोड़ा करके चबायें–जरूर आराम मिलेगा। (२) खाना खाने के एक घण्टे बाद पानी पीयें। (३) आंकड़े के फूल का स्टार ५ से ७ नग, ५ से ७ दिन तक रोज सुबह खाना खाने के बाद खाएं। एसीडीटी जड़ मूल से नष्ट हो जायेगी। **(५) सभी रोगों के ईलाज के लिए**–(उदर संबंधी) आंकड़ों के फूल ५ स्टार, नीम की कोमल पत्तियां ५, तुलसी के पत्ते ५ खाकर पानी पीयें। ५, १०, १५ दिन लेने से निरोग रहेंगे। **(६) बाला (नेरू)**–मकड़ी का जाला सफेद जो किवाड़ों के पीछे या पास में होता है। उसके ३-४ जाले गुड़ और कलमी सोडा तीनों मिलाकर एक गोली प्रातः (सुबह) पानी के साथ लेने से बाला (नेरू) खत्म हो जायेगा। वर्तमान में इसका प्रचलन नियंत्रण में हो गया है। **(७) त्वचा में कांटा चुभने पर**–गुड़+अजवाईन गर्म करके पोटाश बनाकर बांधने पर त्वचा में कांटा, कांच, पत्थर आदि चुभ गया हो तो बाहर निकल जाता है। **(८) सूखी खांसी में, दमा में**–गुड़ में सरसों का तेल गर्म करके मिलाकर खाने से सूखी खांसी-दमा से आराम मिलता है। **(९) आधा सीसी दर्द में**–दस ग्राम गुड़ रात को सोते समय एवं प्रातः सूर्योदय से पहले खाने से राहत मिलती है। **(१०) बच्चों द्वारा रात्रि में सोने के बाद पेशाब आने पर**–काला तिल व गुड़ मिलाकर (तिल या लड्डू) लड्डूओं का सेवन करने से फायदामन्द रहेगा। धीरे-धीरे नहीं मूतने पर बंद करें। **(११) हिचकी में**–पुराना गुड़ पीसकर इसमें सोंठ पीसकर मिलाकर खाने से हिचकी चलना बन्द हो जाता है। **(१२) निम्न रक्त चाप में (BP Low)**–पुराना गुड़ भोजन के उपरान्त थोड़ा खाने से लोह तत्व की शक्ति से निम्न रक्त चाप में थोड़ा ऊँचा होता है। यानि लाभ आराम मिलता है। **(१३) पेशाब की रुकावट में**–गर्म दूध में गुड़ डालकर पीने से पेशाब की रुकावट संबंधी तकलीफों में लाभ होता है। **(१४) हृदय की कमजोरी व थकावट में**–गुड़ का सेवन हृदय की कमजोरी व थकावट को दूर करता है। अतः गुड़ उपयोगी है। नोटः मधुमेह रोगी को गुड़ का उपयोग नहीं करना चाहिए। (१५) गर्भवती स्त्रियों को गुड़ खिलाने से प्रसव सुविधा रहती है। (१६) मजदूरों, खिलाड़ियों, शारीरिक, श्रम करने वालों के लिए गुड़ लाभदायक माना गया है। (१७) मांगलिक कार्यों में गुड़ का प्रथम प्रयोग विभिन्न कार्यों में शुभता एवं रोग निदान हेतु किया जाता है।

अनेकों लघु उपाय हमारे स्वास्थ्य सुधार एवं रक्षार्थ उपयोग में लिये जाते हैं।

कालसर्प योग की कैसे करें शान्ति

जन्म कुण्डली में जब सभी ग्रह राहु और केतु के बीच दाईं अथवा बाईं ओर आ जाते हैं तो "कालसर्प योग" की उत्पत्ति मानी जाती है। यदि कालसर्प योग जन्म कुण्डली में हो तो मनुष्य परेशानियों, उलझनों आदि में घिरा रहता है। जन्म कुण्डली में कालसर्प योग होने पर निम्नलिखित प्रतिकूल फल जीवन में मिलते हैं।

१. घर में कलह अथवा लड़ाई-झगड़े का वातावरण रहना। २. व्यापार या नौकरी में समुचित उन्नति न होना। ३. विवाह न होना अथवा विवाह में देरी होना। ४. संतान न होना अथवा पुत्र संतान का अभाव रहना। ५. कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बने रहना। ६. अचानक दुर्घटनायें होना। ७. मानसिक तनाव बना रहना। ८. आर्थिक परेशानी रहना।

जिन जातकों की जन्म कुण्डली में पूर्ण अथवा अपूर्ण काल सर्प योग होता है उनके जीवन में ४८ की आयु तक संघर्ष, परेशानी आदि चलती रहती है। १०० प्रतिशत मेहनत करने पर ३०-४० प्रतिशत लाभ मिलता है। जीन में सुख-दुःख का अनुपात ३०-७० प्रतिशत का होता है। वैसे तो कालसर्प योग १४४ प्रकार का होता है। किन्तु मुख्य कालसर्प योग बारह प्रकार के होते हैं जो निम्न हैं–

१. अनन्त कालसर्प योग २. कुलिक कालसर्प योग ३. वासुकि कालसर्प योग ४. शंखपाल कालसर्प योग ५. पदम काल सर्पयोग ६. महापदम कालसर्प योग ७. तक्षक कालसर्प योग ८. कर्कोटक कालसर्प योग ९. शंखनाद कालसर्प योग १०. पातक कालसर्प योग ११. विषाक्त कालसर्प योग १२. शेषनाग कालसर्प योग।

आंशिक अथवा पूर्ण कालसर्प योग का जन्म कुण्डली में किसी भी रूप में होना जीवन में असफलता, अभाव, निर्धनता और अपमान प्रदान करता है।

कैसे करें कालसर्प योग की शान्ति

वैसे तो ज्योतिष विद्वानों ने कालसर्प योग की शान्ति के अनेकों उपायों का वर्णन अनेक शास्त्रों में किया है। किन्तु यहाँ सुलभ और सटीक उपाय लिखा जा रहा है। आप इस उपाय को प्रयोग कर काल सर्प योग के कुप्रभावों को ७०-८० प्रतिशत कम कर सकते हैं। कालसर्प योग से छुटकारा पाने के लिये अथवा शान्ति के लिये सबसे उपयुक्त माध्यम है **कालसर्प योग यंत्र** अथवा **नाग पाश यंत्र**। इस यंत्र को आप शुद्ध करा कर अपने नाम से प्राण प्रतिष्ठित करायें और शुभ समय में लाल अथवा पीले मल-मल अथवा रेशमी वस्त्र पर सिंहासन पर बिछा कर यंत्र को स्थापित करें। इस यंत्र की आप को नित्य पूजा अर्चना करनी है। प्रतिदिन दूर्वा, पीपल, अशोक और आम के पत्तों से इस यंत्र पर गंगा जल मिश्रित जल छिड़क कर इसे स्नान करायें। चन्दन, अक्षत, पुष्प, दीपक, धूप आदि से इसका पूजन करें और **नव नाग-नामस्त्रत्रम्** का नौ बार पाठ एवम् **नाग गायत्री मंत्र** का १०८ बार जप रुद्राक्ष की माला से करें।

नाग पाश यंत्र/कालसर्प योग यंत्र

कालसर्प नागपाश यंत्र

(कालसर्प यंत्र)
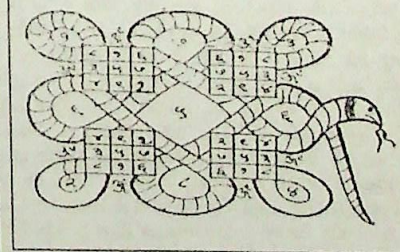
"नव नाग नामस्त्रत्रम्"

**"अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षक कालियं तथा॥
एतानि नवनामानि, नागानां च महात्मनाम।
सांयकाले पठेन्नित्यं, प्रातः काले विशेषतः॥
तस्मै विष भयं नास्ति, सर्वत्र विजयी भवेत॥"**

नाग स्त्रोम को नौ बार पढ़ना है तत्पश्चात् नाग गायत्री मंत्र का १०८ बार जप करें।

"नाग गायत्री मंत्र"

"ॐ नाग कुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्"॥

नाग गायत्री मंत्र का जप कम से कम १०८ बार या उससे अधिक कर सकते हैं किन्तु ध्यान रखें कि प्रथम बार जितना जप करें आगे भी उतना ही जप करें। जप को बढ़ाया तो जा सकता है किन्तु कम या घटाया नहीं जा सकता है।

डॉ. नीरज पाण्डे (दादा)
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्री व लेखक,
ज्योतिष भवन, एल.आई.जी.-६५१ सैक्टर-१०,
आवास-विकास, सिकन्दरा, आगरा-२८२००७

सामूहिक व्यापार भविष्य, सम्वत् २०६६ विक्रमी

लेखक–पं. विश्व बन्धु शर्मा एवं जयवर्द्धन शर्मा

अथ सम्वत् २०६६ विचार–विक्रमादित्य सम्वत् २०६६ में वर्ष के राजा शुक्र देव बनते हैं, मन्त्री-चन्द, सस्येश-गुरु, धान्येश-भौम, मेघेश-रवि, रसेश-शनि, नीरसेश-गुरु, फलेश-रवि, धनेश-बुध, दुर्गेश-रवि दस अधिकारी बनते हैं। वर्ष के राजा शुक्र होने से आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि होगी। मन्त्री चन्द्र होने से प्रशासन कड़े निर्णय नहीं ले पाएगा, ढुलमुल नीति का पालन होगा। सस्येश गुरु होने से पृथ्वी पर हरियाली का प्रभाव बढ़ेगा। धान्येश मंगल के प्रभाव से धान्यों की प्रचुरता होते हुए भी महंगाई का प्रभाव देखने में आएगा। मेघेश रवि होने से वर्षा की कमी होगी। साथ ही नीरसेश-गुरु होने से पानी की कमी नहीं हो पाएगी। रसेश-शनि के प्रभाव से रस पदार्थों में विशेष तेजी देखने को मिलेगी। राजा-मंत्री के मध्य संबंध शत्रुता व समता के हैं जो प्रशासन में असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न करेगा। व्यापारी भाईयों के लिए यह वर्ष व्यापार की दृष्टि से सामान्य ही रहने की धारणा है।

चैत्र शुक्ल पक्ष–सं. २०६६ विक्रम ता. २७ मार्च २००९ शुक्रवार से प्रारम्भ होकर ता. १५ मार्च सन् २०१० को समाप्त होगा। शुक्रदेव के राजा होने से तथा ता. २९ मार्च को शुक्रोदय रात्रि में होने से सफेद पदार्थों की तेजी को ब्रेक लगाएंगे। परन्तु पहले-पहले तेजी आएगी। इससे पंहले चन्द्र-दर्शन शनिवारी होने से नरमी का रुख मार्केटों पर पड़ेगा। गेहूं, गुड़, खाण्ड में मन्दी की चाल बनेगी। काले रंग के पदार्थ तेजी में रहेंगे। ता. ३१ मार्च को ११ घटी पर रेवती में सूर्य के प्रभाव से रुई, चावल, चांदी, नमक, सरसों, अलसी, सोयाबीन, क्रूड-पाम-ऑयल, गेहूं, जौ, चना में तेजी का रुख बनने की धारणा है। साथ ही वायदा वस्तुओं में ता. १ अप्रै. से विशेष व इकतरफा मोटी तेजी या मोटी मन्दी की लाइन चार दिन की बनेगी। ग्वार, हल्दी, सोयाबीन, गुड़, सरसों, मेंथा ऑयल, जिंक, कॉपर, क्रूड-आयल, खल-बिनौला व जीरा के वायदा बाजारों में जोरदार मंदी की धारणा है। **नोट**-अगर ता. १ अप्रै. २००९ को ता. ३१ मार्च के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ जाएं तब यह चांस तेजी में परिवर्तित हो जाएगा। ता. ४ अप्रै. से पुनः चाल पलट जाएगी। ता. ६ अप्रै. को मेष राशि में बुधदेव प्रवेश करेंगे, जो विशेष तेजी गेहूं, जौ, चना, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड आदि धातुओं में करेंगे, साथ ही रसादि पदार्थ गुड़, खाण्ड, तेल, तिल, सरसों, घी, रुई, कपास में मन्दी का बोलबाला होगा।

वैशाख–माह में पांच शुक्रवार और पांच ही शनिवार हैं। पांच शुक्रवार होने से अच्छी वर्षा होगी। प्रजा में सुख व शान्ति की वृद्धि होगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ साथ मन्दी का रुख बनेगा। रसादि पदार्थों में मन्दी का प्रभाव रहेगा। माह के प्रथम पक्ष में अष्टमी तिथि की वृद्धि होगी। और दूसरे पक्ष में रविवारी चन्द्र दर्शन होगा। द्वितीया तिथि का क्षय होगा। यह स्थिति प्रथम पक्ष में वस्तुओं के भावों में तेजी का प्रभाव बनाएगी। और दूसरे पक्ष में भी तेजी कायम रहेगी। वैखाख बदी चतुर्थी ता. १३ अप्रै. को रात्रि में मेष संक्रांति लगेगी। यह गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिल, सरसों, रुई, सूत, नारियल, सुपारी, बादाम, चांदी, सोना, तांबा, जिंक में विशेष तेजी कारक होगी। गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल के भावों में मन्दी का रुख बनेगा। जो ता. ५ मई तक चलता रहेगा। ता. १४ अप्रै. को मीन राशि में मंगल रात्रि में प्रवेश करेंगे। यह प्रवेश सोना-चांदी, कपास, खल-बिनौला, ग्वार, जिंक, तांबा, जीरा, हल्दी, जूटपाट, बारदाना में तेजी का प्रभाव ता. १५ अप्रै. से दिखाएगा तथा लाल रंग की वस्तुओं में भी विशेष तेजी होगी। कम से कम एक सप्ताह की तेजी चलने की धारणा है। **नोट**-अगर ता. १५ अप्रै. को ता. १४ के बने नीचे भाव से जिस वायदा वस्तु के भाव टूट जाएं तब उसी वस्तु में मन्दी का चांस ता. २१ अप्रै. तक सम्पन्न होगा। ता. २४ अप्रै. की शाम को वृष राशि में बुध के प्रभाव से तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर में तेजी का प्रभाव बनने की धारणा है। तब भी अगर ता. २५ अप्रै. को २४ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा तब ता. ५ मई तक मन्दी ही जारी रहेगी। आगे एक एटम बम चांस है कि ता. ६ मई को १० घटी ४८ पल पर बुध देव वक्री होंगे, तब से विशेष तेजी की चाल ४ दिन की बनेगी। और वैशाख शुदि पूर्णिमा को प्रातः बुधास्त पश्चिम दिशा में होने से धुंआधाड़ तेजी का चांस सम्पन्न होगा। खास तौर से इस फसल की वस्तुएँ मन्दी में नीचे स्तर के भावों पर मिल रही हों तब उनका स्टॉक करना आगे के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, मोंठ, रुई, कपास, सोना, चांदी आदि धातु पदार्थ का स्टाक करें।

ज्येष्ठ–इस माह में ५ रविवारों का होना जनता व प्रशासन के बीच में मतभेद कारक होगा। वर्षा की कमी इस माह में होगी। हाजिर व वायदा वस्तुओ के भावों में तेजी का प्रभाव रहेगा। मीठा, चांदी, सोना, मैटीरियल, लौंग, इलायची, मखमल, शृंगार का सामान, मेहन्दी, बासमती चावल, रोली, रुई, कपास, सूत, वस्त्र के भावों में तेजी की जबरदस्त चाल ता. १४ मई की शाम को वृष संक्रांति के प्रभाव से चलेगी। ता. १६ मई को शनिदेव दोपहर बाद मार्गी अवस्था में चलने लगेंगे। जो सरसों, मजीठ, हींग में पहले पहले मन्दी आकर बाद तेजी का प्रभाव बनाएंगे। लोहा, कोयला, स्टील व मशीनरी के भावों में अगर पहले से ही अच्छी तेजी आ चुकी हो तब आगे मन्दी की लाईन बन जाएगी। जो ४० दिन चलेगी। ता. २४ मई से मेष राशि में मंगल के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, ग्वार, अरहर में मन्दी का चांस सम्पन्न होगा। यह मन्दी तमाम माह चलेगी। लेकिन जिस वस्तु में ता. २५ मई को ता. २३ मई के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ जाएगा। उसमें ७ जून तक तेजी ही चलती रहेगी। सोना, चांदी आदि धातु गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, कपास, पाट, बारदाना में तेजी का रुख बना रहेगा। वायदा वस्तुओं में विशेष चाल ता. ११ मई से ग्वार, जीरा, कालीमिर्च, हल्दी, लालमिर्च, खल बिनौला, सोना, चांदी में एकतरफा तेजी। ता. २२ मई तक चलेगी, जोकि जोरदार होगी। नोट-अगर ता. ११ मई को ता. ९ मई के बने नीचे भाव से मार्केट जिस भाव से भी टूट जाए तब उसी वस्तु में मन्दी। ता. १२ मई तक होगी। बाद ता. १३ मई को १२ के बने नीचे भाव से टूटने पर १९ मई तक मन्दी का चांस ही सम्पन्न होगा। ता. १९ मई से ता. ५ जून तक मंगल देव वर्गोत्तम में रहेंगे, जो लाल रंग की वस्तुओं में तथा मेष राशि व वृश्चिक राशि के अधिकार की वस्तुओं में भारी तेजी कारक होंगे।

आषाढ़–माह में पांच सोमवार होने से कृषि का उत्पादन अच्छा होता है और व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ के साथ मन्दी का रुख बना करता है, लेकिन पांच मंगलवार भी होने से विशेष रूप से लाल रंग की वस्तुओं में व धान्यों में अच्छी तेजी देखने में आती है। इस माह में बुध ग्रह वृष राशि पर चल रहे हैं। जो अनाजों के भावों में अच्छी तेजी कारक होंगे। अतः अनाजों का स्टाक रखना फायदेमंद साबित होगा। यह स्टाक आषाढ़ कृष्ण पक्ष के अन्त में करना बेहद लाभप्रद होगा। प्रथम पक्ष में तृतीया तिथि की वृद्धि होकर चतुर्दशी तिथि का क्षय होना भयंकर मन्दीकारक अधिकांश वायदा वस्तुओं में सिद्ध होगा। यहाँ पर विशेष रूप से गुड, चीनी, सोना, चांदी, ग्वार, जीरा, लालमिर्च, सोयाबीन, सरसों, के वायदा मार्किटों में ता १० जून से १९ जून तक भयंकर मन्दी की चाल चलेगी। हर बढ़े भाव बेचकर घटे भाव खरीदकर लाभ उठाएं। यहाँ पर अगर ता. १० जून को ९ जून के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ जाए तब तेजी की धारणा बनाकर ता. १९ जून तक लाभ उठा लेना। ता. १५ जून सोमवार से मिथुन संक्रांति के प्रभाव से कंद, मूल, फल, सरसों, लोहा, तिल, तेल, रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, उड़द, मूंग, चावल, चीनी में तेजी की चाल चलने की धारणा ३० दिन की है। आयरन, स्टील में लम्बी मन्दी की चाल चलती रहेगी। ता. १३ जून की शाम को गुरु देव के बक्री होने के प्रभाव से धान्यों में ता. १५ जून से ३ माह में मन्दी का योग बनेगा। आषाढ़ शुक्ल पक्ष में षष्ठी तिथि का क्षय होकर एकादशी तिथि की वृद्धि होगी। बुधवारी चन्द्रदर्शन के प्रभाव से तेजी का प्रभाव अधिकांश वस्तुओं में चलेगा। खासतौर से वायदा वस्तुओं में तो जोरदार तेजी दो सप्ताह की चलेगी। ता. २६ जून की रात्रि में कृतिका में शुक्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, हींग, तिल, तेल, सरसों में मन्दी १३ दिन चलेगी। ता. २९ जून को वृष में शुक्र के प्रभाव से तथा ता. ३० जून को मिथुन में बुध के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई में मन्दी की चाल चलेगी। जो ता. १ जुला. से ७ जुला. तक होगी। **नोट**-अगर ता. १ जुला. को ता. ३० जून के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ जाए तब तेजी में ही ता. ७ जुला. तक भाव चलते रहेंगे। क्रूड ऑयल में भी यही चाल लागू होगी।

श्रावण–माह में पांच बुधवार व पांच ही गुरुवार हैं। रसादि पदार्थों को छोड़कर सभी व्यापारिक वस्तुएं मन्दी के प्रभाव में चलेंगी। पिछले माह में ता. ३ जुला. को दोपहर बाद बुधास्त का प्रभाव विशेष मन्दी कारक है। आगे ता. १५ जुला. को कर्क राशि में बुध का प्रभाव गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, धान, दूध, दही, तेल, मूंगफली, सोयाबीन, सरसों, क्रूड, पामोलिन आयल, सोना में तेजी होगी। जोकि स्थिर होगी। रुई में मन्दी की लम्बी लाईन चलती रहेगी। अगले दिन ता. १६ जुला. गुरुवार को कर्क संक्रांति के प्रभाव से नारियल, तिल, तेल, मजिष्ठ, सोयाबीन, सरसों, क्रूड, पामोलिन आयल में जोरदार मन्दी की चाल पक्ष के अन्त तक चलती रहेगी। एम.सी. एक्स., एन.सी.डी.ई.एक्स के वायदा बाजारों में मन्दी की लाईन ता. २५ जुला. तक जारी रहेगी। **नोट**-जिस वायदा वस्तु में ता. १५ जुला. को ता. १४ को बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए, तब उस वस्तु में एक सप्ताह की मन्दी निश्चित चलेगी। खास-तौर से तिलहनों में विशेष मन्दी की धारणा है। किन्तु अगर ऊँचे बने भाव कटे तब तेजी ही

उस वस्तु में चलेगी। श्रावण शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय होना। ता. २५ जुला. को बुधोदय पश्चिम दिशा में होना। आगे ता. ३० जुला. को १० घटी २५ पल पर सिंह राशि में बुध का प्रवेश और आज ही रात्रि में गुरु देव का वक्री होकर मकर राशि में प्रवेश करना विशेष तेजी व मन्दी के योग बनाएंगे। ता. २३ जुला. को चन्द्रदर्शन के प्रभाव से घटबढ़ की प्रधानता होगी। ता. २६ जुला. की रात्रि में मिथुन में शुक्र का प्रभाव गेहूँ, जौ, चना व धान्यों में विशेष तेजी कारक होगा। आगे ता. ३० जुला. की रात्रि में मकर में गुरु देव का वक्री होकर प्रवेश करना विशेष रूप से पीले रंग की वस्तुओं में मन्दी कारक है। वायदा बाजारों में एक विशेष चांस है कि ता. २३ जुला. से ४ अग. तक हल्दी, जीरा, धनिया, सोयाबीन, सरसों, ग्वार, कालीमिर्च, चीनी, गुड़, क्रूड ऑयल, जिंक, लेड, मेंथा ऑयल के भावों में विशेष तेजी होगी। नोट-सावधानी हेतु यह नोट है कि ता. २३ जुला. को ता. २१ व २२ जुला. को बने लोएस्ट भाव से मार्केट अगर टूट जाए, तब यह चांस उसी वस्तु में मन्दी में परिवर्तित हो जाएगा।

भाद्रपद–माह में पांच शुक्रवार होने से वर्षा श्रेष्ठ होगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ के बाद मन्दी का रूख रहेगा। खासतौर से ता. १६ अग. की शाम में मिथुन राशि में मंगल का प्रवेश होगा। जो मशीनरी शेयरों के भावों में आगे मन्दी करेगा। लेकिन अगर अभी तक तेजी चल रही होगी तभी मन्दी आगे चलेगी। स्टील, लोहा के भावों में भी मन्दी का रुख आगे बन जाएगा। वायदा मार्केटों में जीरा, हल्दी, लालमिर्च में विशेष रूप से ता. ८ अग. से ११ अग. तक जोरदार तेजी होगी। बाद ता. १२ से १४ तक चाल पलट कर चलेगी। नोट-अगर ता. ८ अग. को ता. ७ अग. के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए। तब ता ११ तक उसी वस्तु में मन्दी चलती रहेगी। बाद ता. १२ अग. को ११ के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ जाएंगे तब उसी वस्तु में ता. १४ अग. तक तेजी चलती रहेगी। भादों बदी दशमी रविवार को रात्रि में सिंह संक्रांति के प्रभाव से गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, लालमिर्च, सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, खल बिनौला, गेहूं, जौ, चना, ग्वार, ज्वार, मूंग, उड़द, मोठ के भावों में मन्दी की चाल माह के अन्त तक चलेगी। भाद्रपद शुक्लपक्ष में तृतीया तिथि का क्षय और बाद में नवमी तिथि की वृद्धि होने से हाजिर वस्तुओं में तेजी का रुख बनने की धारणा है। लेकिन यह तेजी तभी पक्की माननी चाहिए जबकि ता. २२ अग. को ता. २१ के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ जाए। तब ता. ४ सितं. तक उसी वस्तु में तेजी की चाल बन जाएगी। विपरीत में विपरीत चाल ही चलेगी। चांदी में एटम बम चांस ता. १७ अग. से २१ अग. तक ७०० से ८०० रुपये की तेजी का चांस चलने की धारणा है। हल्दी में यह चांस ता. १७ अग. से चालू होकर ४ सितं. तक चलेगा। ता. ३१ अग. को १२ घटी २८ पल पर शनि देव अस्त हो जाएंगे। जोकि शेयर मार्किटों में विशेष तेजी कारक होंगे। सोना, चांदी, तांबा, निकिल के हाजिर व वायदा बाजारों में लम्बी तेजी की लाईन २० दिन की चलने की धारणा है।

आश्विन–माह में पांच शनिवारों का होना खेती को नुकसानदायक होने से अति तेजी का प्रभाव रहने की धारणा है। साथ ही पांच ही रविवार होने से आग में घी के समान तेजी का प्रभाव बढ़ेगा। वर्षा की कमी का योग भी बनेगा। माह के प्रारम्भ में बदि प्रतिपदा को शाम वक्री बुध के प्रभाव से चन्दन, सुपारी, नारियल, जीरा, सुपारी, कालीमिर्च, लालमिर्च, हल्दी में मन्दी का प्रभाव बनेगा। आगे ता. ८ सिंत. की शाम को कन्या राशि में शनि देव प्रवेश करेंगे। तब से सोना, चांदी, मोती व रत्न पदार्थों में मन्दी का विशेष रुख बनेगा। रुई, कपास, खल बिनौला, गुड़, खाण्ड, चीनी, नमक, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी की चाल चलेगी। ता. १२ सितं. की रात्रि में बुधास्त का होना किराने की वस्तुओं में विशेष तेजी के उछाले देगा। अतः किराने की जो भी वस्तुएं नीचे स्तर के भावों पर हो उन वस्तुओं में स्टॉक करके तेजी आने पर मोटा लाभ उठाया जा सकता है। वायदा वस्तुओं में रुई, कपास, खल बिनौला, सोना, चांदी, क्रूड ऑयल, मेंथा ऑयल, जीरा, काली मिर्च, चना, गेहूं में विशेष तेजी की चाल २० दिन की बनने की धारणा है। **नोट**-ता. १४ सितं. को ता. १२ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जाएं तब उसी में ता. १५ तक तूफानी मन्दी होगी। बाद ता. १६ सितं. को ता. १५ सितंबर के बने नीचे भाव से मार्केट के टूटने पर दुगुना या तीन गुना बेचकर ता. २८ सितं. तक लाभ उठाना। विपरीत में विपरीत ही चाल चलेगी। ग्रह चालीय धारणा से ता. १६ सितं. की शाम को कन्या संक्रांति के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल व शेयरों में मन्दी का योग है। साथ ही सरसों, तिल, तेल, अरन्डा, नारियल, सुपारी, बादाम, काजू में भी मन्दी की धारणा ता ४ अक्टू. तक बनेगी। यहाँ पर इस चांस में विशेष धारणा है कि ता. ९ सितं. से १६ सितं. के बीच बने हाइएस्ट भाव में जिस उपरोक्त लिखित हाजिर वस्तु के भाव बढ़े तब यह चांस उसी वस्तु में तेजी में परिवर्तित हो जाएगा। जिंक, कॉपर, लैड, निकिल के व्यापारियों के लिए एक खास चांस है कि ता २३ सितं. से ता. २५ सितं. के ४ बजकर ४ मिनट तक विशेष तेजी का चांस चलेगा। नोट-अगर ता. २३ सितं. को ता. २२ के बने नीचे भाव से मार्किट टूट जाए तब मन्दी की धारणा बनाकर व्यापार करें। माह के प्रारम्भ में मेंथा आयल, पीतल, ग्वार का स्टॉक करना लाभप्रद होगा।

कार्तिक–माह में पांच सोमवार होने से कृषि उत्पादन अच्छा होगा। मन्दी की प्रधानता रहेगी। इस माह में बुध का रथ सूर्य के पीछे चलेगा। अतः तिलहन आदि पदार्थों में मन्दी का वातावरण बनेगा। वायदा बाजारों में ता. ६ अक्टू. से चली चाल ता. ९ अक्टू. तक चलकर ता. १० अक्टू. से चाल पलट जाएगी और यह पलट ता. १७ तक चलेगी। अगर ता. ६ अक्टू. को ता. ५ के बने नीचे भाव से मार्किट टूटेगा। तब बेचकर ता. ९ अक्टू. तक लाभ उठा लेना। आगे ता. १० अक्टू. को ९ को बने ऊंचे भाव से मार्केट के बढ़ने पर तेजी का व्यापार ता. १७ तक कर लेना। ता. ५ अक्टू. को १० घटी ४ पल पर कर्क राशि में मंगल के प्रवेश के प्रभाव से सरसों, अलसी, अरण्डा, गेहूं, जौ, चना, गुड़, ऊन, खाण्ड, शक्कर, रुई, बिनौला के भावों में तेजी होगी। इन वस्तुओं का स्टाक करके आगे लाभ तेजी से उठाना चाहिए। आगे ता. १० अक्टू. की प्रातः कन्या राशि में शुक्र देव के प्रवेश के प्रभाव से सभी अनाजों में, चावल, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्रों में विशेष तेजी का प्रभाव बनेगा। जीरा में मन्दी होगी। चांदी में घटबढ़ की प्रधानता एक सप्ताह रहेगी। आगे ता. १४ अक्टू. की शाम को गुरुदेव मार्गी होंगे। धान्यों के भावों में विशेष मन्दी आकर कल से तेजी का रुख बन जाएगा। आगे ता. १७ अक्टू. को तुला संक्रांति ११ घटी २१ पल पर लगेगी। तब से गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों के भावों में विशेष तेजी ४० से ५० दिन में बनेगी। ता. १८ अक्टू. को ५ घटी २८ पल पर बुधास्त का प्रभाव ता. १९ अक्टू. से पड़ेगा। जोकि वायदा वस्तुओं में भयंकर मन्दी का दौर विशेष रूप से रुई, बिनौला, सोना, चांदी, चना, खल बिनौला, तांबा, गेहूं, ग्वार, बाजरा, मक्का, मेंथा ऑयल आदि में १५ दिन की चलेगी। यहाँ पर सावधानी हेतु विशेष नोट है कि ता. १९ अक्टू. को ता. १७ के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु में भी भाव बढ़ जाए उसी में आगामी ४ दिन में ही विशेष तेजी का योग बन जाएगा। विपरीत में विपरीत चाल ही समझनी चाहिए। आगे ता. २४ अक्टू. को रात्रि में तुला राशि में बुध देव का प्रवेश होगा, यह प्रवेश सरसों, अलसी, बिनौला, मूंगफली व चांदी में मन्दी कारक है। यह मन्दी अगले माह मार्गशीर्ष बदी अष्टमी तक चलेगी। गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना व रुई के भावों में तेजी की चाल बनेगी।

मार्गशीर्ष–माह में पाँच मंगलवारों का होना व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजी कारक है। इस माह में बदि तीज से सुपीरियर लाइन का चालू होना तिलहन आदि पदार्थों के भावों में विशेष पलट करेगा। यहां तक अगर मन्दी चली आ रही हो तब नीचे भावों में स्टॉक करके आगामी दो माह में ही मोटा लाभ उठाया जा सकता है। किन्तु अगर पहले से ही बाजार ऊंचे स्तर पर हो तब स्टॉक करने की गलती न करना। इस माह के प्रथम पक्ष में नवमी तिथि का क्षय मन्दी की रूपरेखा बनाता है। ता. ३ नवं. को ९ घटी ४८ पल पर तुला राशि में शुक्र देव का प्रवेश सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, चीनी में साधारण तेजी कारक होगा। दलहनों का स्टॉक करना लाभप्रद होगा। साथ ही किराना की जो वस्तुएँ नीचे भावों पर मिले उनका भी स्टॉक किया जा सकता है। खास तौर से जीरा, धनिया, सौंफ का स्टॉक लाभप्रद होगा। ता. ११ नवं. को रात्रि में वृश्चिक राशि में बुध का प्रवेश घी, सरसों, तेल, तिल व अनाजों में मन्दी कारक है। और ता. १६ नवं. को वृश्चिक संक्रांति का प्रभाव सोना, चांदी, तांबा, रुई, सरसों में तेजी का पड़ेगा। लाल मिर्च में भयंकर मन्दी का सिलसिला चलता रहेगा। लाल चन्दन व लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव बनेगा। जो मार्गशीर्ष माह में कायम रहेगा। शुदि पक्ष में बुधवारी चन्द्रदर्शन घटाबढ़ी कारक रहेगा। वायदा बाजारों में विशेष व उछालेदार तेजी की चाल ता. १८ नवं. से एक सप्ताह की चलने की धारणा है। खास तौर से गुड़, चीनी, सोयाबीन, सरसों, खल बिनौला, मेंथा, जीरा, क्रूड ऑयल, पाम ऑयल, काली मिर्च, जिंक कॉपर के भावों में चलेगी। **विशेष नोट**–सावधानी हेतु यहाँ पर विशेष नोट यह है कि अगर ता. १८ नवं. को १७ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जाए और नीचा ही बन्द हो जाए उस वस्तु में आगामी ६ दिन मन्दी में रहेंगे। इसी माह में दूसरा चांस यह है कि ता. २७ नवं को प्रातः वृश्चिक राशि में शुक्र देव का प्रवेश होगा। यह प्रवेश चांदी में, कपास में व अलसी में विशेष तेजीकारक है। यहाँ पर खरीदकर ता. २ दिसं. तक लाभ उठाएं। **नोट**-अगर ता. २८ नवं. को ता. २७ के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब डबल बेचकर ता. २ दिसं. तक लाभ उठाना।

पौष–माह में पांच गुरुवारों की प्रधानता होने से व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का रुख रहेगा। माह के प्रारम्भ में पौष बदी तीज का टूटना मन्दी को बल प्रदान करेगा। ता. ३ दिसं. की प्रातः ज्येष्ठा में सूर्य का प्रवेश सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़, खाण्ड, चीनी, सरसों, अलसी, अरण्डा, हींग, पारा के भावों में तेजीकारक है। १५ दिनों में तेजी का चाल चलेगी किन्तु अगर ता. ३ दिसं. से ५ दिसं. में मार्किट मन्दी में रह जाए, तब यह चांस मन्दी का ही सम्पन्न होगा। **विशेष चांस**–वायदा मार्किटों में ता. ५ दिसं. से सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, चीनी, सरसों, ग्वार के वायदा मार्किटों में ता. १५ दिसं. तक जोरदार तेजी की चाल चलने की धारणा है।

यहां पर सावधानी हेतु **विशेष नोट** है कि अगर ता. ५ दिसं. को ता. ४ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटे और नीचा ही बन्द हो तब उस वस्तु में मन्दी की चाल ता. ८ दिसं. तक बन जाएगी। **बाद नोट है** कि ता. ९ दिसं. को ता. ८ के बने नीचे भाव से मार्किट के टूटने पर मन्दी ता. १५ दिसं. तक चल पड़ेगी। ता. १५ दिसं. की रात्रि में धनु संक्रांति के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना आदि धान्यों में मन्दी की चाल चलेगी। यह मन्दी कम से कम ता. २९ दिसं. तक चलेगी। सोना, चांदी, रुई, तिल, तेल, कपास, खल बिनौला, निकिल में तेजी का चांस। ता. २९ दिसं. तक सम्पन्न होने की धारणा है। यहाँ पर सावधानी हेतु **विशेष नोट है** कि ता. १६ दिसं. को जिस वस्तु में ता. १५ के बने नीचे भाव से मार्किट टूट जाए तब उसी वस्तु में ता. १७ दिसं. तक बेचकर लाभ उठानां बाद ता. १८ दिसं. को १७ दिसं. के बने नीचे भाव से मार्किट के टूटने पर मन्दी की धारणा बनाकर ता. १८ को लाभ उठाना। बाद १९ को १८ के बने नीचे भाव से टूटने पर ता. २९ दिसं. तक मन्दी की चाल ही चलती रहेगी। ता. १९ दिसं. की शाम को कुम्भ राशि में गुरुदेव के प्रवेश का प्रभाव सोना, चांदी, तांबा, रुई, खल बिनौला व वस्त्रों के भावों में विशेष तेजी कारक होगा। अन्त में **एटम बम चांस** है कि ता. २६ दिसं. की प्रात: बुध देव के वक्री होने के बाद भयंकर तेजी का चांस रुई, चांदी, पाट, सोना, बारदाना, हैसियन, गुड़, चीनी, गेहूँ, जौ, चना, बाजरा के भावों में आरम्भ होगा और आगामी १५ दिन में ही विशेष तेजी की चाल बनेगी। **नोट**-अगर ता. ३० दिसं. को २९ के बने नीचे भाव से किसी वस्तु के भाव टूट जाए तब मन्दी ही १ जन. तक चलती रहेगी।

माघ–महिना पांच शुक्रवार तथा पांच ही शनिवारों से युक्त है। यह महीना रसादि पदार्थों में नरमी कारक रहेगा। लेकिन पांच शनिवारों का प्रभाव विशेष तेजी को बल देने वाला है। माघ कृष्ण पक्ष में षष्ठी तिथि का क्षय होकर त्रयोदशी तिथि की वृद्धि हो रही है जोकि विशेष तेजी कारक है। ता. १ जन. से ५ जन. तक पिछली चाल ही चलती रहेगी। ता. ६ जन. से १४ जन. ११ घटी ४५ पल तक चाल के पलट कर चलने की धारणा है। ता. ५ जन. धनिष्ठा में गुरु के चतुर्थ चरण में प्रवेश के प्रभाव से ता. ६ जन. से ९ जन. तक अच्छी तेजी का चांस गेहूं, जौ, चना आदि अन्नों में तथा जिंक, लैड, निकिल, पीतल के भावों में मन्दी की चाल चलेगी। दलहनों में जोरदार तेजी का बोलबाला होगा। बाद ता. ११ जन. से १४ जन. के ११ घटी ४५ पल तक घटबढ़ साथ तेजी का रुख बनेगा। ता. १४ जन. को प्रात: मकर संक्रांति का प्रभाव सोना, चांदी तथा शेयर बाजारों में मन्दी का बनेगा जोकि तमाम माघ माह में चलने की धारणा है। ता. १४ जन. को मकर संक्रांति के ही प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, तुवर, उड़द, मूंग, मोट, बारदाना में भी मन्दी का रुख कायम रहेगा। लेकिन गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, रुई, खल बिनौला, कपास, ग्वार के भावों में अच्छी तेजी की चाल तमाम माघ माह में चलेगी। ता. १४ जन. को रात्रि में शनि देव के वक्री होने के प्रभाव से रस, तेल, कपूर के भावों में तेजी होगी। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, क्रूड आयल, मेंथा आयल, सरसों, सोयाबीन, लोहा के भावों में विशेष तेजी की धारणा बनेगी जोकि तमाम माह में चलेगी। उपरोक्त चांस में अलग-अलग प्रभावकारी चांस होने से यह विशेष धारणा अवश्य ध्यान रखें कि ता. ७ जन. से १४ जन. के बीच बने हाइएस्ट भाव से जिस वस्तु के भाव ता. १५ जन. को या बाद में बढ़ जाए तब उसी वस्तु में ता. ३० जन. तक तेजी का निश्चित चांस चलता रहेगा। विपरीत दिशा के भाव कटने पर विपरीत ही चाल चलेगी। माघ शुक्ल पक्ष में ता. १६ जन. की शाम को मार्गी बुध के प्रभाव से तथा चन्द्रदर्शन के प्रभाव से ता. १८ जन. से २४ जन. तक घटाबढ़ी की प्रधानता होगी। बाद ता. २५ जन. से सोना, चांदी, रुई, चावल, जौ, गेहूं, सूत, सन, गुड़, खाण्ड, जूट के भावों में अच्छी तेजी चलने की धारणा है। यह तेजी एक सप्ताह चलेगी। **वायदा विचार**–ता. २ जन. से ५ जन. तक एकतरफा चाल चलकर ता. ६ जन. से १३ जन. की प्रात: १० बजकर ३० मिनट तक चाल पलटकर चलेगी। बाद १० बजकर ३१ मिनट से पुन: चाल पलट जाएगी और ता. २० जन. के खुलते-खुलते तक जोरदार तेजी चलने की धारणा है। बाद २० जन. के ११ बजे से २२ जन. तक मन्दी होगी। बाद २३ जन. से २५ जन. तक पुन: भाव तेजी में रहेंगे। बाद ता. २७ जन. से ३० जन. तक घटबढ़ साथ नरमी होगी।

फाल्गुन–महीने में पांच रविवार हैं जो व्यापारिक वायदा व हाजिर वस्तुओं में विशेष तेजी कारक होंगे। माह के प्रथम पक्ष में प्रारम्भ के दिन फाल्गुन बदि दोज का क्षय रविवार को ही हो रहा है जो कि जिस-जिस वायदा वस्तु में मन्दी आ चुकी हो उस वस्तु में खरीद करके दो सप्ताह में ही मोटा लाभ उठाया जा सकता है। **नोट**-अगर ता. १ फर. को ता. ३० जन. के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब बेचकर ता. २ फर. तक ही लाभ उठा लेना चाहिए। बाद ता. ३ फर. को २ फर. के बने नीचे भाव से मार्किट जिस वस्तु में टूटे उसी में बेचो और १२ फर. तक लाभ उठा लो। ता. १ फर. को दोपहर १८ घटी ८ पल पर धनिष्ठा में शुक्र के प्रवेश के प्रभाव से गेहूं में मन्दी की चाल चलेगी। जो आगामी १२ दिन तक रहेगी। सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ के भावों में भी बारह दिन तेजी का रुख रहेगा। सूर्य के अधिकार की वस्तुओं में जैसे मोती, मणि, सोना, तांबा, रेशम, अस्त्र, चर्म, तुष-धान्य, कड़वी वस्तु, अग्नि उत्पन्न करने वाली वस्तुएं, विष, बीज, सरसों, लाल रंग के पदार्थ व चिकने पदार्थ व सभी प्रकार के सुगन्धित पदार्थों के भावों में १२ फर. तक विशेष तेजी चलेगी। ता. ५ फर. को रात्रि में शुक्रोदय पश्चिम दिशा में होने से रुई, चावल, प्लेटेनियम, कागज, कपूर व सफेद रंग के पदार्थों में १० दिन में तेजी का बिगुल बजेगा। आगे ता. १२ फर. को रात्रि में कुम्भ संक्रांति के प्रभाव से अन्न, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी की चाल चलेगी। तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई, नमक, सोयाबीन, पाम ऑयल के भावों में तेजी का चांस १७ दिनों में सम्पन्न होगा। वायदा बाजारों में ता. १३ फर. से सरसों, सोयाबीन, पाम ऑयल, सोना, तांबा, गेहूं, जौ, चना, व लाल रंग के पदार्थों में विशेष तेजी चलेगी। जो ता. १७ फर. के खुलते-खुलते तक चलेगी। **नोट**-इन चांसों में सावधानी हेतु विशेष नोट हैं कि ता. १३ फर. को ता. १२ फर. के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जाए तब उस वस्तु में यह चांस मन्दी में परिवर्तित हो जाएगा। फाल्गुन शुदि पंचमी शुक्रवार को प्रात: गुरुदेव के अस्त होने के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में चलती तेजी में ब्रेक लग जाएगा। सोना, चांदी, रुई, कपास, तांबा के भावों में मन्दी का चांस सम्पन्न होगा जोकि आगे लम्बी मन्दी में बदल जाएगा। खास तौर से ता. २६ फर. को रात्रि में बुधास्त के प्रभाव से लम्बी मन्दी की लाइन बनेगी जो चैत्र माह में प्रवेश कर जाएगी। यहाँ पर वायदा वस्तुओं में भी विशेष गिरावट दर्ज होगी। तब भी सावधानी हेतु यह नोट ध्यान रखे कि ता. २७ फर. को २६ के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ेंगे तब उस वस्तु में तेजी की चाल आगे बढ़ जाएगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष–माह में पांच सोमवार मन्दी कारक व पाँच मंगलवार तेजी का रुख दिखाने वाले होंगे। ता. २ मार्च को रात्रि में मीन राशि में शुक्र देव संचार करेंगे। जो रुई व चांदी के मार्केटों में जोरदार तेजी करेंगे। सभी प्रकार के धान्य सरसों, सोयाबीन, तेल, अलसी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, चीनी में मन्दी का प्रभाव बनाएंगे। ता. ४ मार्च की शाम को पूर्वा भाद्रपदा में सूर्य देव के प्रवेश के प्रभाव से रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, गेहूं, चना, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, घी, चावल, ज्वार, ग्वार, बाजरा, गूग्गल, रेशम के भावों में तेजी का प्रभाव १० दिन में बनेगा। आगे ता. ११ मार्च को प्रात: मंगल देव मार्गी होकर चलेंगे, तब से सफेद रंग की वस्तुओं में जिनमें तेजी चली आ रही होगी उनमें तेजी समाप्त होकर चाल पलट जाएगी। इस माह में खास चांस है कि ता. १४ मार्च रविवार को मीन राशि में सूर्य तथा बुध का प्रवेश होगा। मीन राशि में इन दोनों ग्रहों का प्रवेश होना रुई, कपास, बिनौला, खल-बिनौला, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन के भावों में तेजी की चाल आगे चलेगी। अनाजों के भावों में भी तेजी का रुख रहेगा। लेकिन अनाजों की तेजी स्थिर न होगी।

सन् २००९-१० में गुरु-शनि का प्रवेश, अस्त-उदय, मार्गी-वक्री आदि द्वारा तेजी-मंदी का विचार

ता. १२ जनवरी को गुरु पश्चिम में अस्त होने से समस्त व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी बनती है। विशेष तौर पर हल्दी, तुअर, चना, सोना, कॉपर, तेल, तेलवाना तथा किराना की वस्तुओं में अच्छी तेजी बनती है। ता. ५ फरवरी को गुरु पूरब में उदय होने से समस्त व्यापारिक वस्तुओं में मंदी की धारणा बनती है। विशेष तौर पर सोना, चांदी, कॉपर, समस्त दाल, दालवाना, घी, हल्दी, मैंथोल आदि में। ता. ९ अप्रैल को गुरु धनिष्ठा नक्षत्र मकर राशि में प्रवेश करने से रुई में व्यापक घटाबढ़ी चलकर अंत में तेजी की धारणा बनती है। ५-१० माह के अन्दर रुई में व्यापक घटाबढ़ी चलती है। जो धारणा तेजी की ओर जा सकती है। जौ, चना, गेहूं आदि में एका-एक तेजी बनने से स्टॉक संग्रह करने से अच्छा लाभ प्राप्त होता है। कपूर, चन्दन, मूंगफली, सोना, कॉपर, चांदी, सरसों, तेल, तेलवाना में तेजी गंभीर बनती है। इस तेजी का लाभ गुरु के मकर राशि में प्रवेश करने से १५ दिन पहले ही स्टॉक करना ठीक है। अन्यथा पीछे मंदी होने से हानि होती है। ता. १ मई को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से रुई में ६ मास तक तेजी होकर पीछे मंदी बनती है। रुई और स्वेत वस्तुएं खरीद कर ६ मास में बेचने से काफी लाभ प्राप्त होता है। वस्त्र, सोना, कॉपर, कांशी, पीतल, लोहा, शीशा में तीन मास तक मंदी रह कर पुनः भयंकर तेजी बनती है। ता. ५ जनवरी २०१० को गुरु धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूँ, चावल, जौ, चना आदि में मंदी और रुई में घटाबढ़ी व्यापक चलती है। ता. २१ जनवरी को गुरु शतभिषा में प्रवेश करने से गेहूं आदि अन्न तथा हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ, सोना में मंदी की धारणा गंभीर बनती है। ता. ४ फरवरी को गुरु शतभिषा में तथा १८ फरवरी को शतभिषा में, ता. ४ मार्च को शतभिषा में विचरण करने से सोना, मजीठ, केसर, सुपारी, हल्दी तथा गेहूँ, चना में गंभीर मंदी की धारणा बनती है। ता. १५ जून को गुरु वक्री होगा। फलतः समस्त तेल, तेलवाना, पीतल का बर्तन संग्रह करें तो ८ मास बाद में बेचने से लाभ प्राप्त होता है। ता. १३ अक्टूबर को गुरु मार्गी होने से अनाजों के भावों में अच्छी तेजी बनती है। रुई में व्यापक उठापटक चलकर अंत में तेजी आती है। चांदी में मंदी, चावल अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू में भयंकर तेजी बनती है। किराना की वस्तुओं काली मिर्च, लहसुन, प्याज, जीरा, हल्दी, इलायची, धनिया आदि में गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है। यह फलाफल गुरु का नक्षत्र राशि संचार तथा उदय-अस्त, मार्गी-वक्री आदि के आधार पर तेजी-मंदी का एक सूक्ष्म आंकलन है। इसी प्रकार शनि का नक्षत्र राशि संचार, वक्री-मार्गी, उदय-अस्त आदि द्वारा पाठकों के लाभार्थ वर्ष २००९-१० का है। ता. १२ मई को शनि मार्गी होगा फलतः हींग, सरसों, मजीठ, लाल मिर्च, गमग्वार, कॉपर में मंदी बनकर बाद में तेजी की धारणा बनती है। ता. १५ जनवरी को शनि देव वक्री होंगे, फलतः चावल, गेहूं, चना, तूअर, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, काली मिर्च, बिनौला, कपास आदि में अच्छी तेजी बनती है। ता. १० जुलाई को शनि देव पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, सरसों, तिल, काली मिर्च, बिनौला, कपास में तेजी और रुई में घटाबढ़ी चलती है। शनि देव पूर्वा फाल्गुनी के चतुर्थ चरण में प्रवेश करने से रसकस पदार्थ अनाज आदि में विशेष तेजी की धारणा बनती है। ता. १२ अगस्त को शनि देव उत्तरा फाल्गुनी में प्रवेश करने से रुई में घटाबढ़ी विशेष होती है। पशु चारा, अनाज में तेजी बनती है। चावल में ६ माह के बाद भयंकर तेजी बनती है। उत्तरा फाल्गुनी का प्रथम चरण में प्रवेश समय घृत, शक्कर, सरसों, कपास में तेजी बनती है। ता. ९ सितम्बर को शनि देव उत्तरा फाल्गुनी, कन्या में राशि में प्रवेश करने से रुई में भयंकर तेजी सोना, चांदी, हीरा, जवाहरात में मंदी, गुड़, खाण्ड, नमक तथा अनाजों के भावों में तेजी बनती है। ता. ६ अक्टूबर को शनि देव उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के तीसरे चरण में अनाज, जीरा, काली मिर्च, उड़द, क्रूड आयल, पामोलिन में तेजी बनती है। ता. ४ नवम्बर को शनि देव उत्तरा फाल्गुनी के चतुर्थ चरण में प्रवेश करने से कपास, बिनौला, जीरा, काली मिर्च, धनिया, अजवायन, क्रूड आयल, समस्त तेल, तेलवाना, पाट, पटसन, इस्पात, सोना, कॉपर, सिल्वर में भयंकर तेजी बनती है। ता. १७ दिसम्बर को शनि देव हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रवेश करने से सभी अनाजों में तेजी तथा पशुओं में अच्छी तेजी बनती है। किराना की वस्तुओं तथा जिन्सों में राष्ट्रीय मांग निकलने से भड़कती तेजी बनती है।

सन् २००९-१० राहू का नक्षत्र राशि संचार

१२ मई को राहु उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में अच्छी तेजी बनती है। जबकि तेल, तेलवाना में भड़कती तेजी बनती है। ता. १४ जुलाई को राहू उत्तराषाढ़ के तीसरे चरण में प्रवेश करने से सोना, क्रूड आयल, पामोलिन, धनिया, अजवायन, लवण, इलाइची, गमग्वार, बिनौला, चीनी में अच्छी तेजी बनती है। ता. १५ सितम्बर को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दूसरे चरण में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी चलती है। ता. १७ नवम्बर को राहू उत्तरषाढ़ा नक्षत्र धनु राशि में प्रवेश करने से पाट, पटसन, वस्त्र, कॉटन, कपास में पहले मंदी हो तो संग्रह करें। राशि में प्रवेश से ५ मास के अन्दर प्रचुर तेजी आवे तथा हाथी, घोड़े में तेजी बनती है। ता. १२ मई को केतु पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करने से इस्पात, तेल, तेलवाना में तेजी बनती है। ता. १५ सितम्बर को केतु पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में तेजी बनती है। ता. १७ नवम्बर को केतु मिथुन में प्रवेश करने से रुई में तेजी, चांदी, सोना में भयंकर मंदी, घृत, अनाजों में तेजी बने परन्तु ७ माह के पश्चात् घृत, अनाज में मंदी आती है। पाट, पटसन, सूत में भयंकर तेजी बनती है।

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य–पं. टुनटुन शास्त्री

सन् २००९-१० में सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण द्वारा व्यापार भविष्य फलाफल

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य–पं. टुनटुन शास्त्री

कंकणाकृति सूर्य ग्रहण २६ जनवरी २००९ तदनुसार माघ कृष्ण अमावस्या सोमवार को श्रवण नक्षत्र मकर राशि पर लगेगा। यह ग्रहण भारत के पूर्वी और दक्षिण क्षेत्र में ही दिखेगा। वाराणसी सहित उत्तर एवं पश्चिम भारत में यह दिखाई नहीं देगा। भारत के पूर्वी क्षेत्र में धनवाद में ग्रहण बिल्कुल सा ही दिखेगा। भारतीय समय अनुसार घंटा ११ मिनट ३३ बजे मध्य घंटा १३ मिनट २९ बजे और मोक्ष घंटा १५ मिनट २५ बजे होगा। इस सूर्य ग्रहण का फलाफल माघ माह में होने से वर्षा अधिक होती है। तथा दुधारू पशुओं के दूध में वृद्धि होने के बावजूद भी घृत, दूध, दही, मक्खन, पनीर आदि में तेजी की धारणा बनती है। सूर्य ग्रहण सोमवार को होने से घृत, तिल, डिब्बा बंद तेल, मूंग, मोठ, उड़द काली, कपास, बिनौला, अफीम, काली मिर्च आदि का संग्रह करने से अगामी दिनों में भयंकर तेजी की धारणा बनती है। मकर राशि में यह ग्रहण लगने से सोना, कॉपर, चांदी, जिंक, इस्पात आदि धातुओं एवं रत्नों के मूल्यों में तेजी की धारणा बनती है। गमग्वार क्रूड आयल, पाट, पटसन आदि में भी भयंकर तेजी बनती है। श्रवण नक्षत्र में यह ग्रहण लगने से हाथी, घोड़ा, ऊंट सवारी के पशुओं में अत्यधिक तेजी बनती है। उड़द, तूअर, दाल, काली मिर्च, गमग्वार के संग्रह से आगे अच्छे लाभ की संभावना बनती है।

२२ जुलाई २००९ को दिन बुधवार, श्रावण कृष्ण पक्ष, पुष्य नक्षत्र, कर्क राशि में खग्रास सूर्य ग्रहण लगेगा। इस खग्रास ग्रहण का प्रभाव ६ मास तक व्यापार जगत में प्रलक्षित होता है। यह खग्रास सूर्य ग्रहण श्रावण मास में होने से चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, तूअर, उड़द, गमग्वार बेचने से लाभ तथा रसकस पदार्थ खान-पान की प्रत्येक वस्तुओं में अच्छी तेजी की धारणा बनती है। यह ग्रहण बुधवार को होने से ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, चना, चावल, रुई, कपास, कॉटन, लाल वस्त्र, लवण, इलायची, सुपारी, अफीम, इस्पात आदि का संग्रह करने से २ माह के बाद इनके मूल्यों में तेजी की धारणा बनती है। यह ग्रहण पुष्य नक्षत्र में होने से गुड़, खाण्ड, मेवा, सोना, कॉपर, सिल्वर, गमग्वार तथा अनाजों में तेजी की धारणा बनती है। यह ग्रहण कर्क राशि में प्रवेश करने से चना, घृत, तेल, गुड़, गमग्वार तथा धातुओं में प्रायः तेजी की धारणा बनती है। व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों का संग्रह करें तो दो मास में अच्छा लाभ प्राप्त होता है तथा अतिवृष्टि से जन जीवन किसी-किसी रूप में प्रभावित होते हैं। विषैले सर्पों के डसने से जगह-जगह शोक कारक स्थितियां बनती हैं।

१ जनवरी २०१० दिन शुक्रवार, माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि में खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण लगेगा। यह चन्द्र ग्रहण माघ मास में होने से घृत, तेल, डिब्बा बंद तेल, वनस्पति घी, गुड़, खाण्ड आदि रसकस पदार्थ संग्रह करने से अधिक लाभ प्राप्त होते हैं। और अनाजों के भावों में ६ माह के अन्दर अच्छी तेजी बनती है। यह चन्द्र ग्रहण शुक्रवार को होने से रुई, कपास में मंदी हो तो इसका संग्रह करने से आगे तीन माह के पश्चात् अच्छी तेजी के सुअवसर प्राप्त होते हैं। यह ग्रहण कर्क राशि में होने से गेहूं, चना, घृत, तेल, गुड़, दूध, दही, मक्खन, पनीर में तेजी बनती है। व्यापारिक जिन्सों का संग्रह करें तो दो मास में अच्छे लाभ की संभावना बनती है। यह ग्रहण पुनर्वसु नक्षत्र में होने से रुई, कपास चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर, तूअर, गमग्वार तथा पशुओं का भाव तीन माह के अंतर्गत भावों में तेजी बनती है। तेल का संग्रह करें तो ५ मास के बाद काफी लाभ प्राप्त होता है। ऐसा अनुमान मेरा कई वर्षों का परिक्षित प्रमाणित तथ्य है।

१५ जनवरी २०१० को दिन शुक्रवार, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में माघ मास में कंकण सूर्य ग्रहण लगेगा। ऐसे तो इस माह के कृष्ण पक्ष में दो ग्रहण लग रहे हैं। जो भारतीय अर्थ व्यवस्था के लिए शुभ प्रद नहीं हैं। इससे खाद्य तेलों तथा अखाद्य तेलों के मूल्यों में बेतहासा तेजी बनने से शेयर बाजार तथा धातुओं में विशेष उठापटक जारी रहेगी। अंतरराष्ट्रीय जगत में व्यापक जनहानि अथवा आतंकवादी घटना चक्र या प्राकृतिक उत्पात से जन जीवन प्रभावित होने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। माघ मास में कंकण सूर्य ग्रहण लगने से व्यापक वर्षा होने की संभावना बनती है। तेल, घी के भाव तेज होते हैं। यह ग्रहण शुक्रवार को होने से रुई, कपास, बिनौला, कॉटन, पशुचारा के भाव तेज होते हैं और अन्य के भाव मध्यम रहते हैं। यह ग्रहण मकर राशि में होने से सोना, चांदी, कॉपर, इस्पात आदि धातुओं तथा हीरे जवाहरात के मूल्यों में अत्यधिक मांग निकलने से तेजी की धारणा गंभीर बनती है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में यह ग्रहण लगने से किराना की वस्तुओं के संग्रह से ५ मास में भयंकर तेजी बनती है। जबकि सुपारी, नारियल, वारदाना, गमग्वार आदि में भी संग्रह करना भविष्य में लाभप्रद होना संभव है। कुल मिला कर इस ग्रहण से किराना की वस्तुओं में तथा धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी की धारणा बनती बिगड़ती रहती है। पशुओ में विभिन्न प्रकार के रोगों से मृत्यु दर का ग्राफ ऊपर उठेगा।

आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री,
विभिन्न राष्ट्रीय पंचांगकर्ता,
करौंदी, पोस्ट सराँव (नटवार) रोहतास, बिहार-802218
मो.-09431486216, 09801873719

सन् २००९-१० में कमोडिटी ट्रेडिंग एवं व्यापार भविष्य दर्शन के अचूक चान्स क्या होंगे?

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य–पं. टुनटुन शास्त्री

भारत में वायदा कारोबार का समर्थन करने वाले नेताओं एवं अधिकारियों यह करारा जबाव है कि अमेरिका की सिनेट जिन्स वायदे को सीमित करने अथवा रोकने पर विचार कर रही है। भारत में वायदा कारोबार पर रोक लगाने पर कृषि मंत्री, वायदा बाजार आयोग के अध्यक्ष तिल मिला उठे। वायदा कारोबार से महगांई का ग्राफ दिनों दिन ऊपर उठता जा रहा है। जब बाजार तेजी की दिशा में एकतरफा चलता है तो इसके कारोबारी अपनी बुद्धि, विवेक को श्रेय देते हैं। और कुछ ही दिनों में लखपति, करोड़पति बनने के सपने देखने लगते हैं। सारी बातों को सोच विचार कर ग्रहीय चाल पर आधारित यह आंकलन हम अपने विज्ञ पाठकों के बीच लिखने का प्रयास करते हैं।

सोना, चांदी, कॉपर आदि में तेजी-मंदी के चान्स तथा कमोडिटी ट्रेडिंग में तेजी-मंदी

सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में एक प्रबल निवेश उपकरण माना जाता है। इसलिए इसकी कीमतों को भी घटक बेहद प्रभावित करते हैं। भारत विश्व में सोने का सबसे बड़ा आयातक है। लेकिन देश में इसको मांग की मौजूदा स्थिति कमजोर बनी हुई है। इरान एवं इजरायल के बीच तनाव के चलते पश्चिम एशिया की स्थिति पहले काफी नाजुक थी पर अब अमेरिका के बीच कूद पड़ने से कुछ बेहतर हुई है। राजनीतिक आशंकाओं के चलते सोने में तेजी भविष्य में भी बनी रह सकती है। अगला प्रमुख घटक कच्चा तेल है। सोना में मौजूदा तेजी के पीछे कच्चे तेलों की आसमान छूती कीमतों का भी काफी योगदान है। जिससे भविष्य में सोना, चांदी के मूल्यों में तेजी की धारणा विशेष, परंतु मंदी की धारणा कमजोर प्रतीत हो रही है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सोना, चांदी को पवित्र धातु माना गया है। सूर्य, गुरु, मंगल आदि द्वारा तेजी-मंदी का सम्पूर्ण विचार किया जाता है। मंगल वृष राशी में, मंगल सिंह या कन्या अथवा मकर में प्रवेश करने पर अच्छी तेजी बनती है। जबकि शनि वक्री या अस्त गुरु का उदय अथवा मेष राशि गत गुरु का प्रवेश होने से सोना में भयंकर मंदी की धारणा बनती है।

जनवरी–मासारंभ में शनि वक्री हो गया है। शुक्र-शनि का समसप्तक योग और गुरु-शनि एवं मंगल-केतु का षडाष्टक योग इस माह सोना बाजार में व्यापक उठक पटक जारी रख सकता है। मासारंभ में ता. १ को शुक्र धनिष्ठा में मंगल मूल में प्रवेश करने से ता. ४ तक सोना, चांदी, कॉपर में तेजी की धारणा। ता. ५ को मंगल पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश करने से तथा ता. ६ को राहू श्रवण में प्रवेश करने से, ता. १० तक सोना, चांदी, कॉपर में अच्छी तेजी, ता. ११ को बुध वक्री होने से सोना, चांदी, कॉपर में ता. १३ तक घटाबढ़ी चल सकती है। ता. १४ को सूर्य मकर में प्रवेश करने से ता. २५ तक सोना, चांदी, कॉपर में व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। ता. २६ को बुध धनु में प्रवेश करने से जिंक, चांदी में मंदी, परंतु सोना में समभाव बना रह सकता है। ता. २७ को मंगल मकर में प्रवेश करने से मासांत तक अच्छी तेजी बन सकती है।

फरवरी–ता. १ को बुध मार्गी होने से जिंक, चांदी में व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। जबकि सोना, कॉपर में तेजी की धारणा ता. ४ तक चल सकती है। ता. ५ को गुरु उदय होने से सोना, चांदी, जिंक, कॉपर में अच्छी तेजी बन सकती है ता. ६ तक। ता. ७ को बुध मकर में प्रवेश करने से ता. ११ तक सोना, चांदी, कॉपर में अच्छी तेजी। ता. १२ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से सोना, चांदी, कॉपर में व्यापक घटाबढ़ी ता. १४ तक चल सकती है। ता. १५ को मंगल उदय होने से मासांत तक व्यापक घटाबढ़ी सभी धातुओं में चल सकती है। ता. १५, १९, २०, २२, २६ तथा २८ को किसी-किसी कारण से तेजी गंभीर हो सकती है।

मार्च–ता. ४ को बुध और ७ को मंगल कुंभ राशि में आ जाएंगे। शनि के साथ सूर्य-बुध-मंगल का समसप्तक योग और गुरु शनि के साथ षडाष्टक योग इस माह बन रहा है। फलत: मासारंभ में सभी धातुओं में अच्छी तेजी। ता. ४ को बुध कुंभ में प्रवेश करने से सोना, चांदी में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। ता. ६ को शुक्र वक्री होने से चांदी में घटबढ़, सोना कुछ मंदा। ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से जिंक, चांदी में घटाबढ़ी, सोना में भयंकर तेजी ता. १३ तक चल सकती है। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश करने से ता. २१ तक सोना, कॉपर में तेजी परंतु चांदी में सामान्य मंदी की धारणा बनती है। ता. २२ को बुध मीन में प्रवेश करने से ता. २३ तक व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। ता. २४ को शुक्र अस्त होने से चांदी, जिंक में मंदी परंतु सोना, कॉपर में भयंकर मंदी की धारणा बनती है। यह धारणा मासांत तक जारी रह सकती है।

अप्रैल–मासारंभ में शुक्र पूरव में उदय होने से सोना, चांदी, कॉपर में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. ३ को सूर्य रेवती में प्रवेश करने से ता. १२ तक सभी धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी चल कर धारणा मंदी की बन सकती है। ता. १३ को सूर्य अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करने से १३-१७, २०, २४ को सोना, चांदी, कॉपर में भयंकर तेजी। ता. २७ को सूर्य भरणी में प्रवेश करने से ता. २७, ३० को सभी धातुओं में भयंकर तेजी बन सकती है। फलत: कमोडिटी बाजार में ता. १२ के बाद तेजी का सौदा किया जाना लाभप्रद प्रतीत हो रहा है।

मई–मासारंभ में गुरु कुंभ में प्रवेश करने से सभी धातुओं में घटाबढ़ी। ता. ४ को सूर्य भरणी में प्रवेश करने से ता. ४-७ को सोना, चांदी, कॉपर में तेजी। ता. ७ को बुध वक्री होने से सोना, चांदी, कॉपर में ता. १३ तक खामोशी अथवा पूर्व भाव। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करने से सभी धातुओं में तेजी ता. १६ तक। ता. १७ को शनि मार्गी होने से सभी धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी, ता. १८, २१ को तेजी, ता. २२, २३, २४ को सामान्य घटाबढ़ी अधिक चलेगी। ता. २५ को बुध मेष में प्रवेश करने से ता. २५ से २८ तक मंदी की धारणा बन सकती है। ता. ३० को शुक्र मेष में प्रवेश करने से मासांत तक भयंकर तेजी की धारणा बन सकती है।

जून–मासारंभ में सभी धातुओं में अच्छी तेजी ता. ६ तक। ता. ७ को सूर्य मृगशिरा में प्रवेश करने से ता. १३ तक वायदा एवं हाजिर बाजार में सभी धातुओं में तेजी की धारणा भयंकर बन सकती है। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से ता. २० तक सोना, चांदी, कॉपर में सामान्य तेजी की धारणा बनी रह सकती है। ता. २१ को सूर्य आर्द्रा में प्रवेश करने से मासांत तक चांदी में अच्छी तेजी सोना, कॉपर में घटाबढ़ी चल सकती है।

जुलाई–मासारंभ में सोना, कॉपर में घटाबढ़ी, चांदी में तेजी, ता. ५ को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से ता. ५, ९, ११ को सभी धातुओं में अच्छी तेजी की धारणा, ता. १२ से १५ तक घटाबढ़ी, ता. १६ को सूर्य कर्क में प्रवेश करने से सभी धातुओं में तेजी ता. १८ तक। ता. १९ को सूर्य पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करने से ता. १९, २३, २६, ३० को सभी धातुओं में प्राय: तेजी की धारणा बनी रह सकती है। अत: कमोडिटी बाजार में सोना, कॉपर, सिल्वर के वर्तमान स्तर में तेजी का सौदा किया जाना लाभप्रद होगा।

अगस्त–मासारंभ में सभी धातुओं में तेजी, ता. २ को सूर्य अश्लेषा में प्रवेश करने से ता. २, ६, ९, १३ को सोना, चांदी में तेजी, कॉपर में घटाबढ़ी। ता. १६ को सूर्य मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, कॉपर आदि में ता. २७ तक एकतरफा तेजी की लंबी लाइन बन सकती है। ता. ३० को सूर्य पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना, कॉपर में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी मासांत तक चल सकती है। अत: कमोडिटी बाजार में सोना, कॉपर, सिल्वर के वर्तमान स्तर में तेजी का सौदा किया जाना सर्वथा उचित प्रतीत हो रहा है। हालांकि तारीख २१ से २४ तक थोड़ी सावधानी अपेक्षित है। अत: बाजार रुख देखते हुए काम करना लाभप्रद है। ऐसे ग्रह चाल शनि, शुक्र को छोड़कर सभी ग्रह तेजी सूचक प्रतीत हो रहे हैं।

सितम्बर–मासारंभ में सभी धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी। ता. ३ को सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में प्रवेश करने से ता. ३, ६, ९ को सोना, कॉपर में तेजी, परंतु चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। ता. ९ को शनि कन्या में प्रवेश करने से सभी धातुओं में मंदी की धारणा बनती है। यह धारणा ता. १४ तक चल सकती है। ता. १५ को शुक्र सिंह में प्रवेश करने से सोना, कॉपर में तेजी, परंतु चांदी में घटाबढ़ी ता. २३ तक चल सकती है। ता. २४ को बुध सिंह में प्रवेश करने से सभी धातुओं में ता. २९ तक तेजी चल सकती है। ता. ३० को बुध मार्गी होने से सोना, चांदी में घटाबढ़ी की तेजी की धारणा चल सकती है। कमोडिटी बाजार में मासारंभ में घटाबढ़ी चलेगी। ता. ९ से १४ तक अचानक मंदी। ता. १५ से २९ तक एकतरफा तेजी। ता. ३० को घटबढ़ पूर्ण तेजी की संभावना

अधिक प्रतीत हो रही है। ता. ३, ६, १६, २०, २३, २६, ३० को तेजी की संभावना अधिक।

अक्टूबर—मासारंभ में सभी धातुओं में घटाबढ़ी पूर्ण तेजी ता. ३ तक। ता. ४ से ९ तक घटाबढ़ी पूर्ण धारणा मंदी की बन सकती है। ता. १० को शुक्र कन्या में प्रवेश करने से सामान्य घटाबढ़ी। ता. १३ को गुरु मार्गी होने से सभी धातुओं में व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है। यदि ऐसा होता है तो आप हाजिर एवं कमोडिटी बाजार में तेजी के लिए अवश्य सौदा करें। आगे सोना, कॉपर में भड़कती तेजी बनेगी। जबकि चांदी में तेजी बनेगी। ता. १७ से २३ तक एकतरफा तेजी की लाइन गंभीर बन सकती है। ता. २४ को बुध तुला में प्रवेश करने से मासांत तक सोना, कॉपर में अच्छी तेजी, जबकि चांदी में मंदी की धारणा बन सकती है।

नवम्बर—मासारंभ में सोना, कॉपर में अच्छी तेजी, चांदी में घटाबढ़ी, ता. ३ को शुक्र तुला में प्रवेश करने से ता. १० तक चांदी में घटाबढ़ी, सोना में सामान्य तेजी की धारणा बन सकती है। ता. ११ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से ता. १५ तक चांदी में तेजी। सोना, कॉपर में समभाव। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश करने से सभी धातुओं में तेजी की धारणा ता. १६, १९, २२, २६ को। ता. २७ को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश करने से सभी धातुओं में घटाबढ़ी मासांत तक चल सकती है।

दिसम्बर—ता. १ को बुध धनु में प्रवेश करने से सिल्वर में मंदी, सोना, कॉपर में घटाबढ़ी चल सकती है। ता. २ को सूर्य ज्येष्ठा में प्रवेश करने से ता. २, ६, ९, १२ को सामान्य, सभी धातुओं में तेजी। ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से ता. २० तक सभी धातुओं में अच्छी तेजी। ता. २१ को मंगल वक्री होने से ता. २६ तक एकतरफा सभी धातुओं में भड़कती तेजी बन सकती है। ता. २७ तो बुध वक्री होने से मासांत तक तेजी की गंभीर लाइन बन सकती है। अतः कमोडिटी बाजार में तेजी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत होता है।

जनवरी २०१०—मासारंभ में सोना, कॉपर में भयंकर मंदी, परंतु चांदी में तेजी की धारणा ता. ९ तक चल सकती है। ता. १० को उत्तराषाढ़ा में प्रवेश करने से ता. २३ तक सभी धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी, मंदी की धारणा बन सकती है। ता. २४ को सूर्य श्रवण में प्रवेश करने तक सोना, चांदी में तेजी। परंतु कॉपर में घटाबढ़ी चल सकती है। अतः मासारंभ में मंदी का सौदा ता. २० तक किया जा सकता है।

फरवरी—मासारंभ में सोना, चांदी में तेजी ता. ५ तक। ता. ६ को सूर्य धनिष्ठा में प्रवेश करने से ता. ११ तक सोना, चांदी, कॉपर में तेजी। ता. १२ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से ता. १८ तक व्यापक घटाबढ़ी। ता. १९ को सूर्य शतभिषा में प्रवेश करने से ता. २६ तक सभी धातुओं में व्यापक तेजी की धारणा गंभीर हो सकती है।

मार्च—मासारंभ में सभी धातुओं में तेजी ता. ३ तक। ता. ४ को सूर्य पूर्वा भाद्रपद में प्रवेश करने से सभी धातुओं में तेजी ता. १३ तक। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश करने से सोना में अच्छी तेजी। परंतु चांदी में मंदी की धारणा बनी रह सकती है।

गमग्वार-ग्वारसीड, लाल मिर्च आदि में तेजी-मंदी समीक्षा २००९-१० ई.

गम-ग्वार, ग्वारसीड—नए सीजन २००९-२०१० ई. में ग्वार के घरेलू उत्पादन में गिरावट आने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। विगत कुछ वर्षों से इसके उत्पादन का अच्छा मूल्य किसानों को प्राप्त नहीं हो रहा है। क्योंकि पहले जैसी तेजी-मंदी इस जिन्स में ज्यादा नहीं बन रही है। ग्वार के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र राजस्थान अकेले लगभग ६० प्रतिशत ग्वार का उत्पादन करता है। जबकि हरियाणा, पंजाब, गुजरात तथा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के सीमित क्षेत्रों में इसका उत्पादन किया जाता है। ऐसे तो ग्वार गम एवं ग्वार सीड के कारोबार तथा मूल्यों को अधिकांशतः सटोरियों द्वारा आयात-निर्यात पर आधारित तेजी-मंदी संचालित किया जाता है। इन्हीं अफवाहों पर इसके मूल्यों में तेजी अथवा मंदी की धारणा बनती बिगड़ती रहती है। कुछ वर्ष पहले शेयर बाजार के सूचकांक जैसा इसमें भी भारी तेजी-मंदी पल-पल पर नीचे-ऊपर होती थी। वह प्रक्रिया विगत कुछ वर्षों से लुप्त सी होती जा रही है। निर्यात मांग निकलने पर ही इसके मूल्यों में तेजी की धारणा बनती है। अन्यथा मंडियों में इसके मूल्यों में खामोशी बनी रहती है। परंतु सन् २००९-२०१० में इसके मूल्यों में तेजी बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ज्योतिष्य दृष्टिकोण में इसकी राशि मिथुन कन्या मानी जाती है। मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन राशियों में पाप ग्रहों की युक्ति-प्रतियुक्ति गंभीर तेजी की धारणा बनाती है। जबकि मेष, कुंभ राशियों में राहु-मंगल की युति होने पर भयंकर तेजी की धारणा बनती है।

लाल मिर्च—लाल मिर्च में प्राकृतिक विपदा के कारण भारी क्षति हुई है। इसकी भरपाई पूरी करने में सन् २००९-२०१० में भारी चुनौती होगी। विश्व के उत्पादन करने वाले राष्ट्रों में चीन आदि में इसके उत्पादन गत वर्ष प्राकृतिक कारणों से भारी क्षति हुई है। वैसे ही भारतीय बाजार के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र की मंडी गुन्टूर में आग लगने से भारी क्षति हुई है। जिससे स्टॉक लगभग समाप्त सी स्थिति में है। इसलिए इस वर्ष भी कई प्रमुख आयातक भारतीय बाजार की ओर उन्मुख रहेंगे। जिससे इस वर्ष भी भविष्य में लाल मिर्च की लाली कम नहीं होगी। बल्कि किसी न किसी कारण से इसके मूल्यों में प्रायः तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। लाल मिर्च मंगल की राशि है। इसमें राहु-सूर्य-बुध तथा शनि की युति-प्रतियुति होने पर भयंकर तेजी-मंदी की धारणा बनती है। इस वर्ष ता. २७ जनवरी को मंगल मकर में, ता. १५ फरवरी को पूरव में उदय, ता. १७ मार्च को मंगल कुंभ में, ता. १४ अप्रैल को मंगल मीन में, ता. २३ मई को मंगल मेष में, ता. ३ जुलाई को वृष में, ता. १६ अगस्त को मिथुन में, ता. ५ अक्टूबर को कर्क में, ता. २१ दिसम्बर को मंगल वक्री होगा। इन्हीं स्थितियों पर तेजी अथवा मंदी की धारणा बनती बिगड़ती रहेगी।

जनवरी—मासारंभ में गमग्वार, लाल मिर्च में घटाबढ़ी की धारणा में बाजार चलेगा ता. १० तक। ता. ११ को बुध वक्री होने से गमग्वार तथा लाल मिर्च में मांग निकलने से अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है। ऐसी संभावना प्रतीत हो रही है। एक बात ध्यान देने योग्य है कि इस समय इन जिन्सों की नई फसल भी बाजार में पूरी तरह आ चुकी होगी। इसके आवक पर तेजी अथवा मंदी निर्भर होगी। परंतु ग्रहीय चाल के अनुसार तेजी ही प्रतीत हो रही है। ता. १५ से २४ तक सामान्य घटाबढ़ी भी चलेगी। परंतु ता. २५ से ३० तक जो भी लाईन बनेगी वह गंभीर हो सकती है। धारणा ऐसे तेजी की ओर विशेष प्रतीत हो रही है।

फरवरी—मासारंभ में बुध मार्गी होने से लाल मिर्च और गमग्वार में तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। यह धारणा घटाबढ़ी के बीच ता. १३ तक चलनी चाहिए। ता. १५ को मंगल पूरव में उदय होने से भड़कती तेजी की संभावना प्रतीत हो रही है। ता. २० से २५ तक घटाबढ़ी, ता. २६ से मासांत तक खामोशी अथवा संभव पर बाजार चलता रहेगा। इस माह की तेजी-मंदी निर्यात मांग अथवा आवक कम होने पर निर्भर करेगी।

मार्च—मासारंभ से ता. ५ तक घटाबढ़ी, ता. ६ को शुक्र वक्री होने से ता. ६ को भयंकर मंदी, ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से ता. १० तक अच्छी तेजी। ता. ११ से २२ तक खामोशी अथवा कभी-कभी तेजी का रुख जल्दी-जल्दी अदलता-बदलता रहेगा, फलतः बाजार पकड़ में नहीं रहेगा। मासांत में सामान्य सुधार की संभावना प्रतीत हो रही है।

अप्रैल—ता. १ को शुक्र उदय होने से ता. ७ तक घटाबढ़ी, ता. ८ से १२ तक मंदी, ता. १३ को सूर्य मेष में प्रवेश करने से तथा अगले दिन मंगल मीन में प्रवेश करने से, ता. २३ तक तेजी की लंबी लाइन बन सकती है। ता. २४ को बुध वृष में प्रवेश करने से मासांत तक कुछ मंदी की धारणा बन सकती है।

मई—ता. १ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से ता ६ तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. ७ को बुध वक्री होने से ता. १३ तक व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। धारणा मंदी की ओर ज्यादा रहेगी। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करने से ता. १६ तक भयंकर मंदी, ता. १७ को शनि मार्गी होने से ता. २४ तक भड़कती तेजी बन सकती है। ता. २५ को बुध मेष में प्रवेश करने से ता. ३० तक खामोशी अथवा सामान्य घटाबढ़ी के बीच बाजार चलेगा। ता. ३१ को बुध मार्गी होने से अचानक तेजी बन सकती है। इस माह मास के उतरार्द्ध में विशेष चान्स दोनों जिन्सों में तेजी सूचक प्रतीत हो रहा है।

जून—मासारंभ में दोनों जिन्सों में निर्यात मांग निकलने से अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। यह धारणा ता. १३ तक चलनी चाहिए। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से तथा अगले दिन गुरु वक्री होने से मासांत तक बाजार घटाबढ़ी के बीच धारणा मंदी की ओर जाने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है।

जुलाई–मासारंभ में बुध अस्त होने से दोनों जिन्सों में मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. १ से ५ तक मंदी, ता. ६ से १५ तक भयंकर मंदी, ता. १६ से २५ तक घटाबढ़ी, ता. २६ को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने से मासांत तक घटाबढ़ी के बीच बाजार चलता रहेगा। कोई खास तेजी-मंदी की धारणा प्रतीत नहीं हो रही है।

अगस्त–मासारंभ में ता. १ से ७ तक घटाबढ़ी, ता. ८ से १५ तक खामोशी अथवा मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. १६ को सूर्य सिंह में प्रवेश करने से तथा इसी तारीख को मंगल मिथुन में प्रवेश करने से ता. २० तक भड़कती तेजी बन सकती है। ता. २१ को शुक्र जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से ता. २७ तक कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। यदि ऐसा नहीं होता है तो भड़कती तेजी से इन्कार नहीं किया जा सकता। ता. २८ को शनि अस्त होने से मासांत तक अच्छी तेजी बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ऐसे इस माह ज्यादा ग्रहीय चाल तेजी के समर्थन में सहायक है।

सितम्बर–मासारंभ में ता. १ से आवक कम मांग अधिक निकलने से तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। ता. ६ को बुध वक्री होने से ता. १४ तक व्यापक घटाबढ़ी रोज-रोज का रुख परिवर्तनशील रहेगा। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। ता. १५ को शुक्र सिंह में प्रवेश करने से ता. २३ तक घटाबढ़ी के बीच बाजार चलेगा। ता. २४ को बुध सिंह में प्रवेश करने से मासांत तक दोनों जिन्सों में भड़कती तेजी बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है।

अक्टूबर–मासारंभ में ता. ४ तक अच्छी तेजी, ता. ५ को मंगल जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से ता. १२ तक भयंकर मंदी की धारणा बन सकती है। ता. १३ को गुरु मार्गी होने से ता. १८ तक आवक कम और मांग अधिक निकलने से तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। अतः इसमें तेजी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत हो रहा है। नीति से पहले सौदा काटकर बाहर हो जाना चाहिए। ता. १९ से मासांत तक भयंकर मंदी की धारणा होने से मांग तब तक के लिए वर्तमान स्तर में मंदी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत होता है।

नवम्बर–मासारंभ से ता. १० तक घटाबढ़ी धारणा मंदी की, ता. ११ को बुध वृश्चिक में तथा बुध-शुक्र भी वृश्चिक में प्रतियुति करने से बाजार का रुख मंदी सूचक प्रतीत हो रहा है। अतः इन दोनों के वर्तमान स्तर में मंदी का सौदा जोखिम रहित प्रतीत हो रहा है।

दिसम्बर–ता. १ को बुध धनु में प्रवेश करने से ता. १ से ७ तक अच्छी तेजी। ता. ८ से १४ तक घटबढ़, ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से ता. २० तक सामान्य तेजी, ता. २१ को मंगल वक्री होने से मासांत तक घटाबढ़ी अधिक चलेगी। फलतः कमोडिटी बाजार में ता. २० तक सामान्य तेजी के लिए सौदा किया जा सकता है।

जनवरी २०१०–मासारंभ में बाजार मंदी सूचक प्रतीत हो रहा है। ता. ७ से १३ तक घटाबढ़ी, ता. १४ से २१ तक सामान्य सुधार, ता. २२ से ३१ तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। ऐसे धारण तेजी सूचक ज्यादा प्रतीत हो रही है।

फरवरी–मासारंभ में बाजार तेजी में रहेगा। ता. ६ को बुध मकर में प्रवेश करने से ता. ६ से १२ तक घटाबढ़ी, ता. १३ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से ता. २१ तक सामान्य सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ता. २२ से मासांत तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। अतः बाजार देखकर काम करें।

मार्च–२ मार्च को शुक्र मीन में प्रवेश करने से मासारंभ से ता. १३ तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई एकतरफा लाइन नहीं बन पाएगी। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। ता. १४ को सूर्य मीन में, इसी ता. को बुध भी मीन में प्रवेश करने से ता. २१ तक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. २२ से २६ तक सामान्य तेजी, ता. २७ को शुक्र मीन से मेष राशि में प्रवेश करेगा। फलतः सामान्य तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। जबकि ता. ३० को बुध मेष में प्रवेश करने से मासांत तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कुल मिलाकर इस वर्ष की तेजी-मंदी जिन्सों का आयात-निर्यात, उपलब्धता-अनुपलब्धता, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष अन्य कारणों से तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी बन जाए तो आश्चर्य की बात नहीं।

सन् २००९-१० में तिलहन बाजार भविष्य

कुछ वर्षों से समस्त तेल, तेलवाना का उत्पादन पिछड़ता जा रहा है जिससे इसके मूल्यों में आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठता जा रहा है। मजबूरन भारत का खाद्य तेल आयात ३३ प्रतिशत तक बढ़ा है। वर्ष २००७-०८ के प्रथम ५ महीनों में देश में कुल खाद्य तेल आयात बढ़ कर १९.३४ लाख टन हुआ जो पिछले वर्ष इसी दौराना ३८ प्रतिशत कम १४.१ लाख टन हुआ था। इस दौरान खाद्य तेलों का भी आयात २.४२ टन से ३६ प्रतिशत बढ़ कर ३.३० लाख टन रहा। पामोलिन, सिपिओ, ओलिन, सूर्यमुखी, सोयाबीन आदि तेलों का आयात किया गया। भारत से मुश्किल से ४० हजार टन तक खाद्य तेल निर्यात किया जाता है। जबकि भारत में आयात ५०-५१ लाख टन तक होता है। इसके अलावा इक्विटी मार्केट उठने का असर भी कमोडिटी मार्केट पर पड़ रहा है और समय-समय पर इसके मूल्यों में व्यापक तेजी की धारणा बनती है। तिलहन, तेल, तेलवाना व्यापार भी आजकल हमारे देश में बहुत अधिक मात्रा में होने लगा है तो तिलहन के अंतर्गत अनेक जिन्स आते हैं। सिंगदाना, मूंगफली, एरंड, अलसी, खल, बिनौला, सरसों, सूर्यमुखी, कोकोनट आयल, राइस आयल आदि इस बाजार के लिए विशेष तौर पर वायु तत्व की तीन राशियों मिथुन, तुला, कुंभ से है। शनि, राहू, गुरु तथा मंगल समस्त तेल, तेलवाना बाजार पर अपना प्रभाव रखते हैं। जिसके कारण कभी तेजी, कभी मंदी की लाइन बनती है।

जनवरी–मासारंभ में तेल, तेलवाना में तेजी, ता. ११ को बुध वक्री होने से २४ दिन के अन्दर समस्त तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी। ता. १४ को सूर्य मकर में प्रवेश करने से तिलहन बाजार में प्रायः अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है। यह धारणा २५ तक चलेगी। ता. २६ को बुध धनु में प्रवेश करेगा। तेल, तेलवाना में खामोशी। ता. २७ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से मासांत तक मंदी की धारणा बन सकती है।

फरवरी–ता. १ को बुध मार्गी होने से मासारंभ में डिब्बा बंद तेल, तेलवाना में मंदी की धारणा, ता. ६ तक चल सकती है। ता. ७ को बुध मकर में प्रवेश करने से ता. ११ तक खामोशी, ता. १२ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से ता. १४ तक अच्छी तेजी, ता. १५ को मंगल उदय होने से तेल, तेलवाना मंदी की धारणा मासांत तक जारी रह सकती है, परंतु बुध की स्थिति सुदृढ़ होने से समस्त डिब्बा बंद तेलों में भड़कती तेजी से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। अतः बाजार रुख देख कर काम करें।

मार्च–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना में सामान्य मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. ४ को बुध कुंभ में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी अधिक चलेगी ता. ६ तक, ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से कोई भी एकतरफा लाइन ता. १३ तक नहीं चलेगी। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश करने से ता. २१ तक सामान्य तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. २२ को बुध मीन में प्रवेश करने से कुछ तेलों में तेजी, जबकि कुछ तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी चलेगी मासांत तक।

अप्रैल–ता. १ को शुक्र उदय होने से तेल, तेलवाना में खामोशी ता. ५ तक, ता. ६ को बुध मेष में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में मंदी की धारणा ता. १२ तक चल सकती है। ता. १३ को सूर्य मेष में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में ता. १७ तक, ता. १८ को मार्गी होने से ता. २३ तक खामोशी, ता. २४ को बुध वृष में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में मासांत तक तेजी की धारणा बन सकती है।

मई–ता. १ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में ता. ६ तक घटाबढ़ी अथवा खामोशी। ता. ७ को बुध वक्री होने से समस्त तेल, तेलवाना में सामान्य सुधार ता. १३ तक। सूर्य वृष में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में ता. १६ तक तेजी, ता. १७ को शनि मार्गी होने से समस्त तेल, तेलवाना में भड़कती तेजी बनेगी ता. २२ तक, २३ को मंगल मेष में प्रवेश करने से तेजी की धारणा मासांत तक जारी रह सकती है।

जून–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना में मंदी की धारणा बनी रहेगी ता. ४ तक, ता. ५ को बुध वृष में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना ता. १३ तक तेजी, ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से ता. २८ तक एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। ता. २९ को शुक्र वृष में प्रवेश करने से मासांत तक घटाबढ़ी जारी रह सकती है।

जुलाई–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना मंदी में रहेगा। ता. ३ को मंगल वृष में प्रवेश करने से ता. १४ तक डिब्बा बंद तेलों में प्रायः तेजी की धारणा, ता. १५ को बुध कर्क में तथा ता. १६ को सूर्य कर्क में तेल, तेलवाना में व्यापक घटाबढ़ी ता. २५ तक चलेगी। ता. २६ को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में मंदी का संचार हो सकता है।

अगस्त–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई भी एकतरफा लाइन नहीं चलेगी। ता. १६ को सूर्य सिंह में प्रवेश करने से तथा मंगल मिथुन में प्रवेश करने से मासांत तक समस्त तेल, तेलवाना में भड़कती तेजी बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है।

सितम्बर–मासारंभ में समस्त डिब्बा बंद तेलों में तेजी, ता. ८ को बुध वक्री होने से तेल, तेलवाना में तेजी। ता. ९ को शनि कन्या में प्रवेश करने से ता. १४ तक घटाबढ़ी, ता. १५ को शुक्र सिंह में प्रवेश करने से समस्त तेलों में सुधार, ता. १६ को सूर्य कन्या में प्रवेश करने से मासांत तक समस्त तेल, तेलवाना में अच्छी तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

अक्टूबर–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना में तेजी, ता. ४ को बुध कन्या में प्रवेश करने से तेलों में खामोशी, ता. ५ को मंगल कर्क में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में ता. ९ तक मंदी, ता. १० को शुक्र कन्या में प्रवेश करने से तेलों में गिरावट और अधिक जारी हो सकती है। यह धारणा १६ तक चल सकती है। ता. १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करने से सामान्य तेजी की धारणा ता. २३ तक चल सकती है। ता. २४ को बुध तुला में प्रवेश करने से मासांत तक मंदी का संचार होगा।

नवम्बर–मासारंभ में समस्त तेल, तेलवाना में व्यापक घटाबढ़ी ता. १० तक जारी रहेगी। ता. ११ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से ता. १५ तक अच्छी तेजी, ता. १६ को वृश्चिक में प्रवेश करने से ता. २६ तक घटाबढ़ी अधिक चलेगी। ता. २७ को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश करने से तेलों में सामान्य सुधार की संभावना जारी रहेगी।

दिसम्बर–ता. १ को बुध धनु में प्रवेश करने से ता. १४ तक समस्त तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी, ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से ता. २० तक तेजी, ता. २१ को मंगल वक्री होने से समस्त तेल, तेलवाना में तेजी ता. २६ तक, ता. २७ को बुध वक्री होने से मासांत तक प्रायः घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई भी एकतरफा लाइन नहीं बनेगी। यह सोच कर काम करें। ऐसे तो तेलों की उपलब्धता, अनुपलब्धता, आयात-निर्यात, उपज, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष आदि पर तेजी अथवा मंदी निर्भर करती है। अतः इन कारणों से तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी बन जाए तो इसमें आचर्श्य की बात नहीं।

जनवरी २०१०–मासारंभ में सूर्य-शुक्र मकर में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत होती है। यह धारणा ता. ११ तक चलनी चाहिए। ता. १३ को शुक्र मकर में प्रवेश करने से वनस्पति घी, तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। कोई एकतरफा लाइन नहीं चल पाएगी। शनि वक्री होने से समस्त तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी अधिक चलेगी परंतु आवक की कमी अथवा अन्य कारणों से इसमें गंभीर तेजी की धारणा भी बन सकती है। कुल मिलाकर मासांत तक घटाबढ़ी के रुख में सभी तेल, तेलवाना, डिब्बा बंद तेल, वनस्पति घी आदि में तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। हालांकि जो धारणा बनेगी वह गंभीर हो सकती है।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य-शुक्र-गुरु कुंभ राशि में विचरण करने से सरसों, सोयाबीन तेल, खल, क्रूड आयल, पामोलिन, मूंगफली में घटाबढ़ी जारी रहेगी। परंतु अधिकांश अवधारणा तेजी की ओर ही रहेगी ता. १२ तक, ता. १३ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में भड़कती तेजी बन सकती है। यह धारणा ता. २५ तक चल सकती है। ता. २६ को बुध कुंभ में प्रवेश करने से समस्त डिब्बा बंद तेलों में घटाबढ़ी होकर मासांत तक तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। कमोडिटी बाजार में भी खाद्य तथा अखाद्य तेलों में प्रायः अच्छी तेजी की धारणा बनी रह सकती है।

मार्च–मासारंभ में बुध-सूर्य मीन में प्रवेश करने से तथा ता. २ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से समस्त तेल, तेलवाना में धीरे-धीरे मंदी की धारणा बनने लगेगी यह धारणा ता. १३ तक चलनी चाहिए। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश करने से पुनः बाजार में सुधार होगा ता. २६ तक। घटाबढ़ी की धारणा कुछ मंदी की ओर जा सकती है। ता. २७ को शुक्र मेष में प्रवेश करने से मासांत तक अच्छी मंदी की धारणा बनने की प्रबल संभावना प्रतीत हो रही है। हालांकि अधिकांश ग्रह जलीय राशि में प्रवेश होने से अब तेल, तेलवाना में तेजी की धारणा कम, मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

सन् २००९-१० में काली मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, अजवायन, मगज तरबूज आदि किराना वस्तुओं की तेजी-मंदी समीक्षा

गत वर्ष के दौरान धनिया, जीरा, काली मिर्च, अजवायन, लाल मिर्च, हल्दी, मगज तरबूज में प्रायः तेजी बनी रही। जबकि सौंफ, लौंग, इलायची, अमचूर, इमली में घटाबढ़ी बनी रही। ऐसे ही लाल मिर्च, मेथी में प्रायः तेजी की धारणा बनी रहेगी। कुछ जिन्सों में हल्की मंदी की धारणा बनेगी। तो अधिकांश जिन्सों में तेजी की ही धारणा बनी रहेगी। इस वर्ष के प्रारंभ में सूर्य धनु राशि में, मंगल भी धनु राशि में, गुरु अपनी नीच राशि मकर में, शनि सिंह में फिर कन्या राशि में, शुक्र कुंभ में, बुध मकर में तथा राहू-केतु मकर में विचरण करेंगे। इस वर्ष काली मिर्च, जीरा, लाल मिर्च, मगज, इलायची, अजवायन, हल्दी में अच्छी तेजी की संभावना प्रतीत हो रही है। जब तक शनि सिंह राशि में रहेंगे तब तक किराना की अधिकतर वस्तुओं में बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. ९ सितम्बर से शनिदेव स्थान परिवर्तन कर कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। इस ग्रह चाल से अन्य ग्रहों की युति-प्रतियुति होने पर किसी-किसी कारण से तेजी-मंदी बिगड़ती रहेगी।

जनवरी–मासारंभ में जीरा, काली मिर्च, अजवायन, धनिया, मेथी, हल्दी, लाल मिर्च में तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। ता. ११ को बुध वक्री होने से किराना की वस्तुओं में कुछ मंदी की धारणा बनती है। यह धारणा ता. १६ तक चल सकती है। ता. १७ से २५ तक किराना की कुछ वस्तुओं में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। जबकि ता. २६ को बुध धनु में प्रवेश करने से धनिया, अजवायन, काली मिर्च, जीरा, मगज तरबूज, लवण, इलायची में तेजी। ता. २७ को मंगल मकर में प्रवेश करने से लाल मिर्च, काली मिर्च में भयंकर तेजी।

फरवरी–मासारंभ में बुध मार्गी होने से किराना की जिन वस्तुओं में मंदी चल रही हो उसमें और भयंकर मंदी बनेगी। जिनमें पहले से तेजी चल रही है। उसमें भयंकर तेजी बनेगी। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। हल्दी, धनिया, अजवायन में घटाबढ़ी, काली मिर्च, जीरा, लाल मिर्च में तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. ७ को बुध मकर में प्रवेश करने से सभी प्रकार की किराना वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। यह धारणा ता. ११ तक चलनी चाहिए। ता. १२ को सूर्य कुंभ प्रवेश करने से सभी किराना वस्तुओं में भयंकर तेजी बनती है। यह धारणा ता. १४ तक चलनी चाहिए। ता. १५ को मंगल उदय होने से काली मिर्च, जीरा, लाल मिर्च, लवण, इलायची, मेवा में अच्छी तेजी मासांत तक बनी रह सकती है।

मार्च–मासारंभ में किराना की वस्तुओं में घटाबढ़ी जारी रहेगी। ता. ४ को बुध कुंभ में प्रवेश करने से ता. ६ तक सामान्य तेजी, ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से ता. १३ तक प्रमुख वस्तुओं में तेजी, ता. १४ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से सभी जिन्सों में मासांत तक अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है।

अप्रैल–ता. १ शुक्र पूरब में उदय होने से किराना की वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। ता. ६ को बुध मेष में प्रवेश करने से किराना वस्तुओं में मंदी ता. १२ तक चलनी चाहिए। ता. १३ को सूर्य मेष में प्रवेश करने से काली मिर्च, जीरा, धनिया, लवण, इलायची, जायफल, तेजपात में घटाबढ़ी चल कर तेजी, ता. १८ को शुक्र मार्गी होने से मासांत तक किराना की वस्तुओं में तेजी जारी रहेगी।

मई–ता. १ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से सभी किराना की

वस्तुओं में आवक कम और अधिक मांग निकलने से प्रमुख जिन्सों में भड़कती तेजी। यह धारणा ता. १३ तक चल सकती है। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करने से काली मिर्च, जीरा, धनिया, अजवायन, मेवा, लवण, इलायची, दालचीनी आदि में भयंकर तेजी की धारणा बन सकती है। ता. १७ को शनि मार्गी होने से किराना की वस्तुओं में जो पहले से तेज हो उसमें मंदी, जो पहले से मंदी हो उसमें भड़कती तेजी बनती है। ऐसे इस माह में शनि-बुध दोनों मार्गी हो रहे हैं जो किराना बाजार के लिए अधिकांश तेजी सूचक प्रतीत हो रहा है। वायदा बाजार में काली मिर्च, जीरा, हल्दी के वर्तमान स्तर में तेजी का सौदा जोखिम रहित प्रतीत हो रहा है।

जून–गत माह के अंत में बुध मार्गी हो चुका है। फलतः समस्त किराना की वस्तुओं में तेजी की धारणा बनेगी। ता. ५ को बुध वृष में प्रवेश करने से दो सप्ताह के अन्दर काली मिर्च, जीरा, मगज तरबूज, धनिया, हल्दी में घटाबढ़ी चल कर तेजी ता. १३ तक चलेगी। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में अधिकतर तेजी की धारणा। ता. १५ को गुरु वक्री होने से किराना में हल्दी, जीरा, धनिया, अजवायन में अच्छी तेजी, परंतु काली मिर्च, जायफल तथा सूखी मेवा में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। इसका प्रभाव ता. २८ तक चल सकता है। ता. २९ को शुक्र वृष में प्रवेश करने से सभी किराना की वस्तुओं में मंदी की चाल मासांत तक बन सकती है। वायदा बाजार में काली मिर्च, जीरा, हल्दी में तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

जुलाई–मासारंभ में हल्दी धनिया, अजवायन, सौंफ, दाल चीनी, काजू, किसमिस, छुहाड़ा, अखरोट, पोस्ता आदि में तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. ३ को मंगल वृष में प्रवेश करने से एक मास के अंतर्गत लाल वर्ण के किराना की वस्तुओं में तथा काली मिर्च, जीरा, धनिया, अजवायन, हल्दी, लाल मिर्च, मेवा आदि में तेजी की लाइन ता. १४ तक चल सकती है। ता. १५ को बुध कर्क में तथा सूर्य भी कर्क में प्रवेश करने से किराना की प्रमुख वस्तुओं में भयंकर मंदी की धारणा बन सकती है। अतः सावधानी अपेक्षित है। यह धारणा ता. २५ तक चल सकती है। ता. २६ को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने से ता. २९ तक किराना की वस्तुओं में अचानक मंदी की धारणा बन सकती है। ता. ३० को बुध सिंह में प्रवेश करने से मासांत तक सभी किराना की वस्तुओं में मांग निकलने से तेजी की धारणा बन सकती है।

अगस्त–ता. १ को शुक्र आर्द्रा में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में भयंकर तेजी की धारणा लंबी लाइन में बन सकती है ता. १५ तक। ता. १६ को सूर्य सिंह में प्रवेश करने से काली मिर्च, जीरा, मगज तरबूज, सुपारी, नारियल, हल्दी, धनिया, अजवायन, दाल चीनी, कमरकस, अमचूर, मेवा, मखाना में भड़कती तेजी बन सकती है। ता. १९ को बुध कन्या में प्रवेश करने से हल्दी, धनिया, अजवायन, लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा आदि में भड़कती तेजी बन सकती है। ता. २१ को शुक्र कर्क में प्रवेश करने से प्रायः सभी किराना वस्तुओं में ता. २७ तक खामोशी अथवा मंदी की धारणा बन सकती है। ता. २८ को शनि अस्त होने से किराना की वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी चल कर विशेष तौर पर हल्दी, जीरा, काली मिर्च में अच्छी तेजी की धारणा मासांत तक बन सकती है।

सितम्बर–मासारंभ में किराना की अधिकांश वस्तुओं में आवक कम निकलने से प्रायः तेजी की धारणा बनेगी। ता. ९ को शनि कन्या में प्रवेश करने से किराना की वस्तुओं में अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। यह धारणा ता. १४ को चल सकती है। ता. १५ को सिंह में तथा १६ को सिंह कन्या में प्रवेश करने से ता २३ तक लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा, अजवायन, हल्दी, मेवा आदि में अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है। ता. २४ को बुध सिंह में प्रवेश करने से अमचूर, इमली, रसकस पदार्थ, लाल मिर्च, काली मिर्च, कमरकस, चिरौंजी, छुहाड़ा, दाख, काजू, अखरोट आदि में सामान्य तेजी की धारणा ता. २९ तक। ता. ३० को बुध मार्गी होने से किराना की सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी चल सकती है।

अक्टूबर–मासारंभ में सभी किराना की वस्तुओं में भारी उठा-पटक जारी रहेगी ता. ३ तक। ता. ४ को बुध कन्या में प्रवेश करने से रुख में परिवर्तन होगा। ता. १० को शुक्र कन्या में प्रवेश करने से लाल मिर्च, काली मिर्च, धनिया, जीरा, अजवायन, अमचूर, राजमा आदि में अच्छी तेजी, यह धारणा ता. १२ तक चल सकती है। ता. १३ को गुरु मार्गी होने से किराना की प्रत्येक वस्तुओं में अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। यह धारणा ता. १६ तक चल सकती है। ता. १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करने से किराना की प्रमुख वस्तुओं में आवक कम और मांग अधिक निकलने से तेजी की धारणा २३ तक चल सकती है। ता. २४ को बुध तुला में प्रवेश करने से मासांत तक किराना की प्रत्येक वस्तुओं में बारी-बारी से तेजी की धारणा।

नवम्बर–मासारंभ में कमोडिटी मार्केट के अंतर्गत अनेक जिन्सों में अच्छी तेजी-मंदी की धारणा बनती बिगड़ती रहेगी। लाल मिर्च, काली मिर्च, किराने की अन्य जिन्सों में प्रायः तेजी की धारणा दिखाई पड़ेगी। ता. ३ को शुक्र तुला में प्रवेश करने से ता. १० तक वायदा तथा हाजिर बाजार में किराना की प्रमुख जिन्सों में भड़कती तेजी बन सकती है। ता. ११ बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से प्रायः तेजी की धारणा, ता. १६ को सूर्य भी वृश्चिक में प्रवेश करने से काली मिर्च, मगज तरबूज, जीरा, हल्दी, लवण, इलायची, दालचीनी में प्रायः तेजी की धारणा ता. २६ तक चल सकती है। ता. २७ को शुक्र भी वृश्चिक में प्रवेश करने से समस्त किराना की प्रत्येक वस्तुओं में घटाबढ़ी मासांत तक जारी रहेगी।

दिसम्बर–ता. १ को बुध धनु में प्रवेश करने से ता. १४ तक जीरा, अजवायन, धनिया, दालचीनी, काली मिर्च, हल्दी, दाख, छुहाड़ा, चिरौंजी, अखरोट, केसर आदि में अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है। ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से सभी किराना की वस्तुओं में प्रायः तेजी की धारणा बनी रहेगी। यह धारणा २० तक चल सकती है। ता. २१ को मंगल वक्री होने से मासांत तक किराना की वस्तुओं में मंदी की धारणा चल सकती है।

जनवरी २०१०–मास के प्रारंभ में राहू-बुध-शुक्र-सूर्य का चतुर्ग्रही योग धनु राशी में होने से मासारंभ में किराना की अनेक वस्तुओं में सौंफ, इलायची, लवण, दालचीनी, जायफल, केसर, पोस्ता, काली मिर्च, जीरा आदि में व्यापक घटाबढ़ी। ता. १२ तक चल सकती है। ता. १३ को शुक्र धनु राशि छोड़कर मकर में प्रवेश करेगा तथा सूर्य भी धनु छोड़कर मकर में प्रवेश करेगा। फलतः किराना की वस्तुओं में धीरे-धीरे मंदी का संचार हो सकता है। ता. १६ को बुध मार्गी होने से धनिया, जीरा, हल्दी आदि में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. १८ को राहू पूर्वाषाढ़ा तथा केतु पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से किराना की अधिकांश वस्तुओं में तूफानी तेजी। ता. २६ तक चल सकती है। ता. २७ को मंगल पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करने से कुछ जिन्सों में व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है।

फरवरी–मासारंभ में शुक्र धनिष्ठा में प्रवेश करने से किराना को प्रत्येक वस्तुओं में मंदी का संचार होगा ता. ५ तक, ता. ६ को शुक्र कुंभ में प्रवेश करने से अधिकांश किराना वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। यह धारणा ता. ११ तक चल सकती है। ता. १२ को सूर्य कुंभ में प्रवेश करने से ता. २१ तक किराना की वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। ता. २२ को शुक्र पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करने से किराना में तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

मार्च–ता. १ को बुध शतभिषा में तथा कुंभ राशिगत शुक्र-बुध-सूर्य-गुरु की युति होने से किराना की अधिकांश वस्तुओं में घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई एकतरफा लाईन नहीं बनेगी। यदि बाजार मंदी में जाता है तो आगे के लिए वस्तुओं का संग्रह करना लाभप्रद है। ता. ११ को मंगल मार्गी होने से व्यापारिक वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। ता. १४ को सूर्य तथा बुध मीन में प्रवेश करने से जीरा, काली मिर्च, अजवायन, धनिया, लवण, इलायची, हल्दी आदि में मंदी का संचार हो सकता है। जबकि लाल मिर्च, मेवा आदि में तेजी की धारणा मासांत तक जारी रहेगी।

अथ व्यापार-विमर्श सम्वत् २०६६ वि.

चौ० पं० महेन्द्र कुमार जैन

चैत्र मास फल विचार

मास में ५ गुरु, कृ. पक्ष में तिथि घट कर वृद्धि, शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हुई है। चन्द्रदर्शन ३० मु. शनिवार, सं. मीन शनिवारी ३० मु., मावस- पूनम गुरुवारी, सूर्य-बुध ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्र उदयास्त, वक्री प्लूटो हुआ है। पक्ष में ५ गुरु नेष्टफल कारक, शु. पक्ष पड़वा को शुक्र प्रजा को सुख देगा। रेवती का बुध सिंगार की वस्तुओं में तेजी, व्यापरी, वैद्य, घोड़ों को पीड़ा, पू.भा. का मंगल तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी महंगी, अश्विनी बुध जौ, गेहूँ की पैदावार कम, ईख, दूध, रस, घी आदि मन्दे, शुक्रोदय प्रजा को सुख के साथ-साथ देश में कहीं उपद्रव कराएगा।

शुक्ल पक्ष-शु. १ शुक्र-अत्यन्त शुभ योग, देश व प्रजा के लिए पूरा वर्ष उत्तम, देश में धान्य-धन सम्पदा बढ़े, सभी खाद्यान्न में मन्दा रहेगा। **शु. २ शनि-शुक्रोदय, चन्द्रदर्शन**-रुई, सूत, सोना, चांदी, घी, चावल, अलसी, सरसों, लोहा, कपड़ा, कपास तेज, सिन्धु, गुजरात, कर्नाटक व दक्षिण भारत में प्रजा को भारी कष्ट उठाना होगा। **शु. ५ मंगल-रेवती सूर्य बुध**-सभी सुगन्धित वस्तु रुई, चांदी, नमक, अलसी, गेहूँ, जौ, चना, रत्न, फल-फूल आदि तेज, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, चांदी में मंदा। **शु. ६ बुधवार-पू. भा. मंगल**-रुई, सूत, कपड़ा, अरण्डी, सरसों, तेल, तिल, अलसी, कपास, नमक, गुड़, शक्कर, खाड, नारियल, सुपारी आदि तेज। **शु. ७ गुरु-तिथि क्षय**-रुई, सूत, कपास आदि में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. ११ रवि**-आगे ४ मास में सभी खाद्य पदार्थों-गेहूं, जौ आदि में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. १२ सोम-अश्विनी मेषे बुध**-सभी पशु, मोती, तेल, तिल में मन्दा होकर तेज, सोना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सूत सण में मन्दा, अन्न, गेहूं, जौ, चना आदि तेज। **शु. १५ गुरु-पूर्णिमा**-गेहूं, जौ, चना आदि में मन्दा, प्रजा को सुख मिले, कहीं-कहीं वर्षा हो-आगे चौमासे में उत्तम वर्षा होगी। **नोट-शु. १२ सोम**-सूर्य+बुध+शुक्र की युति सभी खाद्य पदार्थों में तेजी बनेगी।

विशेष योग

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा दिवस भृगु होय।
बहु जल बरसे गगन से अति तृण पैदा होय।।
कनक द्वार शुक्र उदय फल चित्त दीजे।
सर्व सुकालहि होय मेघ दृष्टि अति लीजे।।
अन्न बहुत ही उपजे सही प्रजा करै सुख चैन।
कनक द्वार ही जानियों आवै सुख देन।।
एक राशि में बुरे महाभय रवि बुध शुक्कर।
बुध भृगु रवि यह तीन एक घर बैठे झुक्कर।।

वैशाख मास फल विचार

मास में ५ शुक्र, ५ शनि, कृ. पक्ष तिथि वृद्धि, शुक्ला में तिथि क्षय, मावस-पूर्णिमा दोनों शनि की, चन्द्रदर्शन रविवार ३० मु., संक्रांति मेष १५ मु. सोमवार की है। सूर्य मंगल बुध गुरु ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम, शुक्र मार्गी, अगस्त ऋषि अस्त, बुध वक्री, पश्चिम अस्त हुआ है। मास में ५ शुक्र-प्रजावृद्धि, सफेद वस्तु तेज, अन्न मन्दा, ५ शनि महंगाई बढ़े, गुजरात आदि पश्चिम प्रदेशों में झगड़े, उपद्रव आदि बढ़ें, कृ. १४+शुक्रवार-देश में खाद्यान्न की पैदावार उत्तम, शनि-अमावस सभी खाद्यान्न मन्दा, सावन में लाभ। शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय घी, तेल तेज, शु. ५+बुधवार देश में तेज आंधीयां चलें। शु. ९ शनिवार मघा नक्षत्र सभी पैदावार कम, फसलों को हानि, प्रजा को कष्ट मिले। पूर्णिमा शनिवार विशाखा होने से देश में दुर्भिक्ष हों।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ शुक्र-आज रेवती नक्षत्र आगे चौमासे में वर्षा उत्तम होगी। देश में सुभिक्ष, रुई, सोना तेज, अन्न मन्दा। **कृ. ४ सोम**-अश्विनी मेषे सूर्य, भरणी बुध-रुई, कपास, सोना, चांदी, तेल, तिल, ईख, गुड़, खाण्ड, नारियल, सुपारी सभी फल, सरसों, अरण्डी तेज, सभी खाद्यान्न, गेहूँ, जौ, चना, उड़द, अरहर, मूंग, चावल में घट-बढ़ से मन्दी। देश में कहीं विग्रह हो, झगड़े हों। **कृ. ५ मंगल-मीने मंगल, बुधोदय पश्चिम**-सोना, चांदी, रुई, चारा, लकड़ी का सामान, अलसी, पशु, सुगन्धित पदार्थ, घी, तेल, अरण्डी, सरसों तेज, रुई, सूत, कपास में मन्दी। **कृ. ८ शुक्र-५-७** दिन रुई मन्दी रहकर तेज, रुई, सोना, चांदी, अन्न, घी में मन्दा। यहां सभी मन्दी वस्तुओं का संग्रह करें। आगे अच्छा लाभ मिलेगा। प्रजा सुखी रहे। **कृ. ९ रवि-उ. भा. मंगल**-वर्षा कम, सुगन्धित पदार्थ कपूर, चन्दन आदि सोना, चांदी, रुई, गेहूँ, जौ, चना आदि में घट-बढ़ होकर तेजी। **कृ. ११ मंगल-कृति. बुध**-पैदावार कम, वर्षा कम, देश में झगड़े विग्रह फैले, चांदी में मन्दा, रुई पदार्थ तेज, प्रजा बीमार हो। **कृ. १३ गुरु-वृषे बुध**-देश में आपसी झगड़े-विग्रह, कलह हो, प्रजा में भय, कहीं अग्निकाण्ड हो। रुई मन्दी, १५ दिन पीछे तेज, तिल, तेल, सूत, कपास, मटर, चना, जौ, गेहूं, तेज, रुई पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी। **कृ. १४ शुक्र**-देश में खाद्यान्न की पैदावार उत्तम हो। **कृ. ३० शनि**-सभी प्रकार के खाद्यान्न का संग्रह करो। आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

शुक्ल पक्ष-शु. १ रवि-चन्द्रदर्शन, तिथि क्षय-घी, तेल आदि में अच्छी तेजी बनेगी। अन्न, चांदी, सोना, सरसों, चारा, घास, उड़द, तेल, तिल, अन्न, मोठ, गेहूं, जौ, चना, मूंग, सरसों, गुड़ आदि तेज। **शु. ३ सोम-भरणी सूर्य**-चावल, जौ, चना, मूंग, मोठ, अरहर, अलसी, गुड़, घी, अफीम, सोना, चांदी, पीतल आदि तेज। रुई पदार्थों में मन्दी, प्रजा रोगी होगी। **कृ. ५ बुध**-घी, गोला, तेल, तिल, अरण्डी, सरसों, तांबा, पीतल, गेहूं आदि तेज। देश में आंधियों से जन हानि होगी। **शु. ७ शुक्र-कुम्भे बृहस्पति**-रुई, कांसी, पीतल, तांबा, शीशा, सोना, वस्त्र, कम्बल, हींग आदि तेज। आगे सावन भादों मास में सभी खाद्यान्न पदार्थों में तेजी आएगी। ध्यान रखना। देश के पूर्व भाग में उपद्रव हो। **शु. ८ शनि**-देश की राजनीति में उथल-पुथल हो, कहीं सत्ता परिवर्तन हो। **शु. ९ रवि**-आज मघा नक्षत्र, देश में पैदावार कम, प्रजा को कष्ट, राजनीति हल-चल बढ़े, कहीं सत्ता परिवर्तन हो। **शु. १२ बुध-रेवती मंगल**-चांदी में तेजी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, सोना आदि मन्दे, रुई घटबढ़ कर तेज हो। **शु. १३ गुरु**-आगे ज्येष्ठ मास में उत्तम वर्षा हो। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौले तेज, बाजार में अच्छी घटबढ़ होगी। **शु. १४ शुक्र-बुधास्त पश्चिम**-रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर हैसियन, बारदाना, रुई आदि मन्दी। रुई मन्दी में खरीदो विशेष लाभ होगा। पशुओं को पीड़ा हो, पैदावार उत्तम। **शु. १५ शनि**-पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र होने से सभी रुई पदार्थ, सभी अनाज, खाद्य पदार्थों में अच्छी मंदी, मंदी में माल का संग्रह करें। आगे विशेष लाभ मिलेगा।

विशेष योग

कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाय।
सभी वस्तु तेज हो सस्ता पन हट जाय।।
बदी चौदस वैशाख में जब हो भृगुवार।
उत्तम उपजे फसल मन्दा चले बाजार।।
पांचै वैशाख सुदी बुधवारी हो जिस वर्ष।
आंधी अथवा वायु का रहेगा संघर्ष।।
वैशाखी शुक्लाष्टमी शनिवारी इक संग।
जल सूखै प्रजा दुःखी हो मंत्री मण्डल भंग।।
शुक्र भौम इक राशि पर आवै करै सुकाल।
चौथे महीने बेचिये तब तुम हो निहाल।।
बुध चन्द्र की युति आवै करे सुकाल।
पांच मास में लाभ हो जब तुम हो निहाल।।
होवे शनि गुरु इक घर वा सप्तम घर वास।
प्रजा महा दुःख भोगती करै अन्न का नाश।।

ज्येष्ठ मास फल विचार

मास में ५ रवि, मावस पूर्णिमा रविवार की, चन्द्र दर्शन मंगलवार का ३० मु., संक्रांति वृष ४५ मु. भूखी गुरुवारी, शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हुआ है। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शनि मार्गी, वक्री नेपच्यून, बुधोदय पूर्व, मार्गी हुआ है। मास में ५ रवि संक्रामण बिमारियों से प्रजा को कष्ट हो। मावस को रविवार देश में अग्निकाण्ड हो। तेजी बने। शुक्ल पक्ष में आर्द्रा नक्षत्र के दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्ष पड़े। रोहिणी का सूर्य सेठ साहूकारों, योगी, किसान को भारी पड़े, चतुर्थी क्षयः मघ घी में तेजी करे। शनि मार्गी बाजारों को विपरीत दिशा में मोड़ेगा। पूर्णिमा को अनुराधा नक्षत्र दुर्भिक्षकारी है। गुरुवारी संक्रांति सभी पीली वस्तुओं में तेजी, धान्य व खाद्यान्नों में मन्दा, पैदावार उत्तम होगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ रवि-देश में रोगों की उत्पति, संक्रामण रोग फैले। अन्न तेज, कहीं-कहीं वर्षा, तेज हवा (आंधियां) चलेंगी। **कृ. २ सोम-कृति. सूर्य**-सभी सफेद वस्तुओं, जौ, चावल, गेहूं, मूंग, मोठ, राई, सरसों, सोना, चांदी तेज। तांत्रिक अग्निहोत्री, कुम्हार, नाई, ज्योतिषी, व्याकरणाचार्यों को कष्ट होगा। **कृ. ३ मंगल**-रोगों की वृद्धि से प्रजा को कष्ट, यवन, शवर भील आदि पहाड़ी जातियों को कष्ट, संक्रामण रोग फैले। **कृ. ४ बुधवार-उ.षा. ४ राहु**-सात मास तक सभी धान्य पदार्थ तेज, वर्षा कम, अन्न, छुआरे, रुई, कपास, चन्दन, लोहा आदि तेज। **कृ. ५ गुरु-वृषे सूर्य, रेवती शुक्र**-रुई, कपास, चन्दन, सूत, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी, चांदी में घटबढ़, सोना तेज, प्रजा को सुख मिले। **कृ. ८ रवि-मार्गी शनि**-हींग, मिर्च, तेल, तिल, सरसों तेज, रुई पदार्थ ६-७ दिन मन्दे रहकर तेज, चांदी घटबढ़ करे, अन्न मन्दा, देश में उपद्रव हो, कहीं-कहीं झगड़े बने। **कृ. १२ गुरु**-आज रेवती नक्षत्र देश व प्रजा के लिए कष्टकारी रहेगा। संसार में अनहोनी घटनाएं होंगी। **कृ. १४ शनि**-अश्विनी मेषे

मंगल–अन्न, जौ, गेहूं, चना, मूंग, मोठ, अरहर, मटर, बाजरा मन्दा, गुड़, शक्कर, खाण्ड में घटबढ़, सोना आदि धातु, रुई, सूत, कपास, मूंग, मक्का आदि तेज। कृ. ३० रवि–अग्नि भय, वर्षा कम, तेजी करें। इस समय अन्न में मन्दा आएगा। संग्रह करो आगे लाभ मिलेगा।

शुक्ल पक्ष–शु. १ सोम–रोहिणी सूर्य, वक्री मेष बुध–चावल सभी धान्य, अलसी, सरसों, राई, तेल, तिल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, रुई, सूत सभी तिलहन पदार्थ तेज, चांदी में मन्दा, सेठ साहूकार, योगी, कृषक, पशु, जल चरों को कष्ट। पशु, मोती, तेल, तिल मन्दी होकर तेज। अन्न, गेहूं, चना, तेज। **शु. २ मंगल**– चन्द्रदर्शन-अन्न, रुई, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि तेज, सोना, चांदी घटबढ़ कर मन्दा। **शु. ३ बुध–तिथि क्षय**–मघ, घी, मूंग आदि तेज। **शु. ५ गुरु–बुधोदय पूर्व**–रुई २५ दिन तेज, चांदी घटबढ़ से तेज, गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, लाल मिर्च तेज, सोना मन्दा। **शु. ७ शनि–अश्विन मेषे शुक्र**–कहीं वर्षा हो, रुई, कपास, ऊन, तेल, तिल, सरसों, अलसी में मन्दा, सोना, चांदी, गेहूँ, जौ, चना, पशु तेज, पशुओं में बीमारी फैले, तेज हवा चले। **शु. ८ रवि–मार्गी बुध**–रुई घटबढ़ से तेज, नारियल, सुपारी, अलसी, सण काठ (लकड़ी), गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों तेल, तिल, कपूर, चन्दन, अगर आदि मन्दे, सभी खाद्यान्न तेज। **शु. १३ शुक्र–वृषे बुध**–रुई मन्दी-१५ दिन पीछे तेज, तिल तेल, सूत, कपास, मटर, गेहूं, चना, जौ, तेज और वस्तुओं में घटबढ़ चले। देश में कलह-झगड़ों में वृद्धि हो। **शु. १५ रवि–मृग. सूर्य**–जलोत्पन्न वस्तु नारियल सभी फल, रुई, सूत, रेशम वस्त्र, कपूर, चन्दन, चना, सोना, चांदी, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा तेज। तेज वायु चले।

विशेष योग

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा संग रविवार।
व्याधि प्रबल लख जगत में दुःखी रहे संसार॥
वृष राशि के रवि करें सुख सम्पदा सुकाल।
दूध दही घी में रहे महंगाई की चाल॥
शुक्र सोम सुत भूमि सुत एक राशि पर होय।
सुख सुभिक्ष सस्ता हो शुभ जमाना होय॥
वक्री चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय।
चालू रुख व्यापार का इक दम पलटा खाय।
ज्येष्ठ मास कभी सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥
मावस से अधिक नखत सस्ता हो अन्न।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब अन्न॥
क्रूरवार तेजी करें मावस पूनम दोय।

आषाढ़ मास फल विचार

मास में ५ सोम ५ मंगल, कृ. पक्ष ति. बढ़कर घटी, शुक्ल पक्ष बढ़ कर घटी है। मावस सोम की, चन्द्रदर्शन बुध का, पूर्णिमा मंगल की, सं. मिथुन १५ मु. रविवार को है। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। हर्षल बृहस्पति वक्री, बुधास्त पूर्व में हुआ है। मास में ५ सोम उत्तम वर्षा करें। ५ मंगल देश में उत्पात करें। **कृ. २ मंगल**–मूल नक्षत्र सभी वस्तु में महंगाई हो। **कृ. ९ बुधवार**–सभी वस्तु सम रहे। **कृ. १३** को रोहिणी नक्षत्र प्रजा को बीमार करे। सोमवती मावस को मृगशिर मन्दा लाएगा। सुदी ५ को शनि, प्रजा दुःखी रखेगा। सुदी १२ शनिवार अनुराधायुत कहीं वर्षा हो कहीं न हो। पूर्णिमा को पू.षा. नक्षत्र सभी खाद्य पदार्थों को मन्दा, वक्री गुरु राजाओं को विजय श्री, सभी धान्य पदार्थ तेज, घी, तेल, बर्तन मन्दे, वायु से वर्षा हो।

कृष्ण पक्ष–कृ. ३ बुध–भरणी में मंगल–गेहूं, जौ, चना, ज्वार, मूंग, मोठ, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी तेज, रुई, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि मन्दे। **कृ. ५ शनि–भरणी शुक्र**–तेल, तिल, सरसों, गेहूं, जौ, चना घटबढ़ से मन्दा, सोना, चांदी मन्दी, बाजारों में मन्दी का बोलबाला रहे। **कृ. ६ रवि–मिथुने सूर्य**–रुई, सूत, कपास, रेशम, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, चावल, पाट, बारदाना, रेशम, सरसों, तेल, तिल, कन्द, मूल, गुड़, खाण्ड, चीनी तेज, गर्मी जोरदार रहे। **कृ. ७ सोम–वक्री गुरु**–चांदी, रुई, अरण्डी, सरसों, तिल, तेल, पाट बारदाना, नमक, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी तेज। रुई, जौ, चना, गेहूँ, घी, दूध में मन्दा, देश में सभी को सुख मिले। **कृ. ९ बुध**–तेल, तिल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चांदी, चावल तेज। ऊनी वस्त्रों में मन्दा आवें। **कृ. १३ रवि–आर्द्रा रवि, तिथि क्षय**–आज रोहिणी नक्षत्र देश में बीमारी फैलेगी, घी, गुड़, चीनी, चावल, चन्दन, नमक, कपास, रुई, हल्दी, सोंठ, लोहा, चांदी, कपूर, चना आदि अन्न और तेल पदार्थ तेज। वकीलों को कष्ट। **कृ. ३० सोम**–सोमवती अमावस सभी प्रकार के बाजारों में मन्दी का बोल-बाला रहेगा।

शुक्ल पक्ष–शु. २ बुध–चन्द्रदर्शन–गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई सभी सफेद वस्तु, सभी अन्न मन्दा, चांदी में घटबढ़, घी आदि तेज, वर्षा कम, देश में बीमारी फैले। **शु. ४ शुक्र**–कृतिका शुक्र, मृगशिर बुध-वर्षा हो, अन्न, गेहूं, चना, सरसों, अलसी, बिनौला तेलादि मन्दे, रुई पदार्थ तेज, जहाँ-तहाँ वर्षा हो, सभी मार्किटों में मन्दी का बोल-बाला रहेगा। **शु. ५ शनि**–प्रजा दुःखी सभी वस्तु तेज हो। **शु. ६ रवि**–कृतिका मंगल, तिथि क्षय–रुई मन्दी, गेहूं, जौ, चना, अन्न, तिल, सरसों, अलसी, चांदी, चावल, सूत, कपड़ा तेज। देश में जहाँ-तहाँ बीमारी फैले। **शु. ८ सोम**–वृषे शुक्र–रुई, चांदी मन्दी, १५ दिन पीछे तेज, शेयर मन्दे, जौ, अन्न, गेहूं, चना, मटर आदि तेज, देश में जहां-तहां झगड़े हों, जहां-तहां वर्षा हो। **शु. ९ मंगल**–मिथुने बुध–सोना, चांदी, रुई, सरसों में मन्दी होकर घटबढ़ रहे। तिल तेल अरण्डी तेज, तेज वायु चले। **शु. ११ गुरु**–बुधास्त पूर्व–रुई, चांदी में घटबढ़ से मन्दी, सोना, गेहूँ, अलसी तेज, अन्न ३० दिन (१ मास) मन्दा आगे तेज हो। देश में जहां-तहां झगड़े फैलें, प्रजा बीमारीयों से दुःखी रहेगी। **शु. ११ शुक्र**–वृषे मंगल-सभी धान्य गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, सरसों, तेल, तिल, अलसी, चन्दन, कुमकुम केसर, जूट बारदाना सभी धातु और लाल पदार्थ तेज, देश में झगड़े उत्पात आदि बढ़ेंगे। **शु. १२ शनि**–आर्द्रा बुध–छोटे-छोटे बच्चों को पीड़ा, रुई, सूत, कपास, सण, जूट, चांदी में अच्छी मन्दी, अन्न पदार्थ तेज होकर मन्दा। **शु. १३ रवि**–पूनर्वसु सूर्य–उड़द, मूंग, मोठ, चावल, मसर, नमक, सज्जी लाख नील, केसर, देवदारु, लौंग, नारियल, सफेद वस्तु, सोना, चांदी, बिनौला, गुड़, खाण्ड तेज, रूपवाण स्त्री पुरुष, सेवक-सेविकाओं को कष्ट हो। **शु. १५ मंगल**–पू.षा. नक्षत्र व्याधि से प्रजा दुःखी, देश में धान्य उत्पति उत्तम, सभी को सुख शान्ति की वृद्धि हो।

विशेष योग

आषाढ़ बदी चौदस दिन होय रोहिणी योग।
करफ्यू अरु कंट्रोल से दुःखी रहें सब लोग॥
आषाढ़ी मावस सोम दिन मृगशिरा आदि सात।
उत्तम उपजे फसल उतम हो बरसात॥
मावस गुरुवार की या गुरु को मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत हैं वर्षा हो सर्वत्र॥
बुध घर रवि चन्द्रमा आवे निश्चय मान।
वही मास तीखो हो मूंगा साती धान।
भौम शुक्र और चन्द्रमा इक राशि को प्राप्त।
अनावृष्टि के कारणे जग में धान्य समाप्त॥
गुरु जी वक्री हुए शनि चले अतिचार।
राज सुखी धन युत सुखी हो संसार॥
शशि कुंज भृगु यह इकट्ठे हो जब कीने।
प्रजा कष्ट अति सहे अन्न अकरे सब जीने॥
शुक्र मंगल इक राशि पर आवे करै सुकाल।
चौथे महीने बेचिये जब तुम हो निहाल॥

श्रावण मास फल विचार

मास में ५ बुध ५ गुरु, शुक्ल पक्ष में तिथि घट कर वृद्धि, मावस बुध की, पूर्णिमा, चन्द्रदर्शन १५ मु. और सं. कर्क ३० मु. तीनों गुरुवार की हैं। सूर्य बुध गुरु शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम, मावस को सूर्य ग्रहण हुआ है। मास में ५ बुध शुभ, ५ गुरु दुर्भिक्षकारी कहीं छत्र भंग हो। कृ. ११ को कृतिका मध्यम फलकारी, वर्षा कम, मावस को बुध, पुष्य नक्षत्र तथा सूर्य ग्रहण दुर्भिक्ष हो, आगे कार्तिक मास में बीमारी फैले, खाद्यान्न मन्दा, रुई, सूत, कपास, पशु, चावल तेज, गेहूं, तेल ३ मास में लाभ हो। शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय, आगे गंगा स्नान तक कहीं छत्र भंग, देश की राजनीति में उल्टफेर किसी गणमान्य व्यक्ति का वियोग। पूर्णिमा में श्रवण नक्षत्र होने से देश में खाद्यान्न की पैदावार उत्तम। ग्रहण से गल्ला, रुई, उड़द, तिल, तिलहन, वस्त्र, सुपारी, लौंग आदि में तेजी बनेगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ बुध–रोहिणी शुक्र–सोना, तांबा, जस्त मन्दे, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि मन्दे, देश में कहीं उपद्रव हो, कहीं वर्षा हो। **कृ. ३ शुक्र**–पुन. बुध, पू.फा. ४ शनि–रुई, सूत, कपास, सण, चांदी में अच्छी मन्दी, प्रजा के दुःख कम हों, वर्षा हो। **कृ. ८ बुध**–कर्के बुध–चांदी में घटबढ़, अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, रुई, कपड़ा मंदा, सरसों, मूंगफली, तेल, तिल, गुड़ आदि रसपदार्थ, दूध दही तेज। प्रजा को कष्ट, जहां-तहां वर्षा हो। **कृ. ९ गुरु**–कर्के सूर्य, पुष्य बुध–वर्षा हो तो दक्षिण में झगड़े बनें। अन्न कहीं तेज कहीं मंदा, तिल, तेल, अन्न, चांदी, कपड़ा, सूत, मोती, मूंग, धातु मन्दे, रुई पदार्थ घटबढ़ कर मन्दी तथा प्रजा में भय तथा चिन्ता बने। **कृ. १० शुक्र**–रोहिणी मंगल-रुई, कपास, सूत, कपड़ा, शेयर, गुड़, खाण्ड तेज, देश में जहां-तहां बीमारी फैले। **कृ. ११ शनि**–आज रोहिणी नक्षत्र होने से वर्षा कम तथा प्रजा दुःखी रहे। **कृ. १२ रवि**–पुष्य सूर्य–तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सुपारी, सोंठ, मोम, हींग, हल्दी, ऊनी, वस्त्र, शीशा, सोना, चांदी, नारियल तेज, रुई तेज होकर मन्दी रहे। **कृ. १३ सोम**–मृगशिर शुक्र–गेहूं, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, घी मन्दे, गुड़, शक्कर, चावल, खाण्ड में तेजी, कष्ट व भय से प्रजा दुःखी रहेगी। **कृ. ३० बुध**–अमावस सूर्य ग्रहण–चौला, मक्का धान्य पदार्थ, सोना, तांबा, पीतल तेज, नारियल, सुपारी, मोठ, चना, गेहूं, लौंग, कपास, कपड़ा, धान्य पदार्थ आदि संग्रह करें। विशेष लाभ होगा, देश के मध्य भाग में प्रजा को भारी कष्ट का सामना करना होगा।

शुक्ल पक्ष–पड़वा तिथि क्षय–आगे गंगा स्नान तक किसी गणमाण्य व्यक्ति का वियोग या कहीं छत्र भंग या कहीं सत्ता परिवर्तन होगा। **शु. २ गुरु**–श्लेषा

बुध, चन्द्रदर्शन, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेल, तिल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी, रुई, गुड़, खाण्ड तेज, पशु पीड़ा, अन्न भाव मन्दा, जहां-तहां वर्षा हो। **शु. ५ रवि–मिथुने** शुक्र–रुई, बारदाना, सिंगदाना, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी, तेल, तिल, में मन्दा, चांदी में घटबढ़, गेहूं, जौ, चना, तेज। **शु. ६ सोम**–बुधोदय पश्चिम-रुई, कपास, चांदी में मन्दी, चौखा, घी, सरसों, अन्न, चांदी तेज, आगे अति वृष्टि होने से अति तेजी बनेगी। **शु. ९ गुरु**–मघा सिंह बुध-वक्री मकरे गुरु-सभी प्रकार की वस्तुओं में मन्दी, मन्दे में माल लो, आगे लाभ होगा। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, कपूर तेज, ऊन, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, सरसों में मन्दी। **शु. ११ शनि**–आर्द्रा शुक्र-तेज हवा चले, वर्षा हो, अन्न मन्दा, देश में सुभिक्ष का वातावरण बने। **शु. १२ रवि**–ऽश्लेषा सूर्य-अलसी तिल, तेल, गुड़, शेयर, नील, अफीम, ज्वार, अरण्डी, मिर्च, सोना, चांदी, रुई, बिनौला आदि तेज। देश के ईशान कोण के प्रदेशों में उपद्रव हो। **शु. १५ बुध**–पूर्णिमा-धान्योत्पति उत्तम, सभी खाद्यान्न मन्दा। **शु. १५ गुरु**–मृगशिर मंगल–कपास की फसल में हानि होगी। वर्षा उत्तम, रुई मन्दी रहकर तेज, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी।

विशेष योग

गुरुवारी संक्रांति जब जब जग में आव।
सुखी प्रजा धन धान्य युक्त सभी वस्तु सम भाव॥
श्रावण में चार ग्रहों का बना एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहे सब लोग॥
श्रावण में जो ग्रहण किन्चित भलो ही देख।
चौपद पीड़ा होयगी इसका यू हीं लेख॥
बुधवार को सूरज ग्रहण या को फलत जान।
वस्त्र सुपारी लौंग फल अमल ही महिंगो जान॥
शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि को नाश।
छत्र भंग का योग है आगे कार्तिक मास॥
आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु की चाल।
गल्ला रुई उड़द तिल तेजी तिलहन माल॥
शुक्र मंगल इक राशि पर आवै करै सुकाल।
चौथे महीने बेचिये जब तुम हो निहाल॥
गुरु पूर्णिमा श्रवण योग श्रावण मास।
उत्तम बना है योग वर्षा होवे खास॥

भाद्रपद मास फल विचार

मास में ५ शुक्र, कृ. पक्ष में तिथि हानि, शुक्ल पक्ष में तिथि घट कर वृद्धि हुई है। मावस गुरुवार की, चन्द्रदर्शन शनिवार का ४५ मु., पूर्णिमा शुक्र की, संक्रांति सिंह रविवारी १५ मु. भूखी है। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शनि अस्त, अगस्त ऋषि उदय हुआ है। मास में पांच शुक्र धान्योत्पति उत्तम, देश में कहीं उत्पात झगड़े होंगे। कृष्ण एकादशी क्षय रुई पदार्थ, घी, तेलादि पदार्थ तेज होंगे। गुरुवारी अमावस वर्षा खूब समय पर सुभिक्षकारी होगी। देश की प्रजा सुखी व स्वस्थ रहे। शुक्ला चतुर्थी क्षय घी, तेल, मद्य आदि में तेजी लाएगी। शुदी अष्टमी को अनुराधा देश, प्रजा और राजनीतिज्ञों के लिए दोषकारक है। शुदी १० रविवार मूल युक्त होने से प्रजा को बीमारी से कष्ट होगा। पूर्णिमा शुक्रवारी शतभिषायुक्त होने से शुभ, सभी के लिए शुभ फलदायक है। सभी वस्तुओं में मन्दी बनेगी। सिंह की भूखी संक्रांति राजनीति में भारी उठक-पठक करेगी। कहीं राज विग्रह हो। सभी धान्य, रस पदार्थ ईख, शक्कर, मीठा, तिल, हल्दी, गुड़, तेल, सोना, तांबा आदि में तेजी बनेगी। गर्मी अधिक पड़ेगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ शुक्र–पू.फा. बुध-देश में कहीं झगड़े बनें, प्रजा में भय फैलता है। सभी अन्न और वस्तुओं में मन्दा आवे। **कृ. ६ बुध**–गुड़, नमक और सभी प्रकार के फलों में हानि। रुई, सूत, कपास में अच्छी घटबढ़ चले। महाराष्ट्र, मद्रास और देश के दक्षिण-पश्चिम भू-भाग पर आर्थिक विकास, कला-कोशल की वृद्धि होगी। **कृ. ७ गुरु**–पुनर्वसु शुक्र–रुई, सोना, चांदी, कपास में मन्दा, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर तेज। प्रजा में भय फैलता है। **कृ. १० रवि**–मघा-सिंहे सूर्य, मिथुने मंगल, तिथि क्षय-सभी रुई पदार्थ, घी, तेल, सरसों, तिल, अरण्डी, चांदी, सोना, शेयर आदि सभी लाल पदार्थ, सभी रत्न, तांबा, पीतल, गुड़, शक्कर, अलसी, जौ, चना, गेहूं, मिर्च आदि में तेजी। **कृ. १२ सोम**–उ.फा. बुध-रुई, चांदी में घटबढ़ से मंदी, मसूर, उड़द, तेल आदि में तेजी। **कृ. १४ बुध**–कन्या बुध-सोना, खाण्ड, शक्कर, गुड़, गेहूं, जौ, चना आदि तेज। चांदी, गुड़, शक्कर, सरसों आदि में मंदा। तांबा, पीतल आदि धातु तेज। **कृ. ३० गुरु**-उत्तम वर्षा, प्रजा में सुख की वृद्धि हो, प्रजा स्वास्थ्य लाभ करे। **नोट**–कृष्ण पक्ष में चांदी में अच्छी तेजी बनी रहेगी।

शुक्ल पक्ष–शु. १ शुक्र–कर्के शुक्र, चन्द्र दर्शन-तिल, गोला, गुड़, शक्कर सभी रस पदार्थ तेज। रुई पदार्थ मन्दे होकर तेज, अन्न, जौ, गेहूं, चना आदि में मन्दा। पैदावार उत्तम रहे। सोना तेज होगा। **शु. २ शनि**–तिथि क्षय-घी, तेल, तिलहन बाजार, मूंग आदि तेज रहें। **शु. ५ सोम**–पुष्य शुक्र–अन्न, रुई, सूत, कपास, सण, रेशम तेज। गुड़, खाण्ड, लाख, पारा, हींग आदि मन्दे, वर्षा हो। **शु. ६ मंगल**–वक्री धनिष्ठा गुरु–आज स्वाति नक्षत्र देश में दुर्भिक्ष पैदा करे। प्रजा को कष्ट व परेशानी रहे। **शु. ७ बुध**–आर्द्रा मंगल-रुई, सूत, कपास, अलसी, अरण्डी, सरसों, तेल, तिल, शक्कर, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न तेज, मन्दी नमक में आवे। **शु. ८ शुक्र**–शनि अस्त-रुई, शेयर, सोना मन्दा, सभी प्रकार का अन्न, तेल, पदार्थ, शेयर, सोना, चांदी धातु तेज। कहीं देश में बीमारी फैलने से रोगों की वृद्धि हो। प्रजा को कष्ट उठाना पड़े। **शु. ९ शनि**–अगस्त ऋषि उदय-देश में उत्तम वर्षा होगी। **शु. १० रवि**–पू.फा. सूर्य-सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, सुपारी, नील, अफीम, जूट, रुई, सूत, कपास, चावल, गेहूं, गुड़, खाण्ड, तिल, ज्वार, ऊनी वस्त्रादि तेज। **शु. ११ सोम**–हस्ते बुध-उत्तम वर्षा, उत्तम पैदावार, प्रजा को उत्तम सुख मिले। अन्न आदि सभी पदार्थों में मन्दा बने। **शु. १५ शुक्र**–ऽश्लेषा शुक्र-सभी बाजारों में मन्दी का माहौल रहेगा। वर्षा उत्तम, पैदावार उत्तम, भावों में घटबढ़ अधिक होगी।

विशेष योग

सूर संक्रामण सूर दिन राजाओं में रार।
धान्य तथा रस तेज हो दुःखी रहे संसार॥
ईख शर्करा मिष्ट रस गुड़ हल्दी तिल तेल।
सोना तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेल॥
सूरज चन्द्र बुध शनि सिंह में सहयोग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥
भाद्रपद मास कभी सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥
हीन नक्षत्र मावस घनी तेज बिकै अन्न।
मास नक्षत्र पूनम नहीं तेज रहें तब अन्न॥

आश्विन मास फल विचार

मास में पांच शनि, पांच रवि, कृष्ण पक्ष तिथि क्षय, शुक्ल पक्ष वृद्धि, मावस शुक्र की, पूर्णिमा व चन्द्र दर्शन ३० मु. रविवार का, संक्रांति कन्या भूखी ३० मु. बुधवार की, सूर्य बुध शुक्र शनि ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री, मार्गी प्लूटो, बुधास्त पश्चिम, उदय पूर्व, बुध मार्गी, शनि उदय हुआ है। मास में पांच शनि पांच रवि दोनों नेष्ट फलकारक हैं। सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। कृष्ण पक्ष त्रयोदशी क्षय घी, रुई में तेजी करे। शुक्रवारी अमावस वर्षा करे, मन्दी लावे। सुदी पड़वा शनिवारी सभी अन्न, धान्य, खाद्य पदार्थों में मन्दा, रविवारी चन्द्र दर्शन पशुओं में रोग वृद्धि करें। देश के दक्षिण-पश्चिम में झगड़े बढ़ें। सुदी नवमी मंगल की उड़द, कपास संग्रह करें। विशेष लाभ होगा। सिंह का शुक्र पाखण्डी सुख पावे, कन्या शनि देश में अराजकता फैलावे। राजस्थान में दुर्भिक्ष, रुई, कपास में तेजी, रविवारी पूर्णिमा सभी खाद्य पदार्थों में तेजी। बुध शुक्र की युति जल बरसाएगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ शनि–तिथि वार के संयोग से खाद्यान्न बेचो, आगे अच्छी मन्दी बनेगी। **कृ. ३ सोम**–वक्री बुध-रुई तेज होकर मन्दी। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला तेज, अन्न मन्दा, रुई पदार्थों में घटबढ़ हो। **कृ. ५ बुध**–कन्या शनि-सोना, चांदी, मोती, रत्न, अन्न, घी आदि मन्दे, रुई, सूत, कपास, कपड़ा, गुड़, खाण्ड, नमक आदि तेज, देश में राज संकट, कहीं छत्र भंग, धान्य व खाद्य पदार्थों में मन्दा, आगे ९ मास में अच्छी तेजी बनेगी। **कृ. ९ रवि**–उ.फा. सूर्य, वक्री उ.फा. बुध, बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर, हैसियन, बारदाना मन्दे, ज्वार, जौ, गुड़, चीनी, हल्दी, हरड़, क्षार पदार्थ, सोना, चांदी, लोहा, सुपारी तेज, प्रजा में रोग फैले। **कृ. ११ मंगल**–मघा सिंहे शुक्र, पुनर्वसु ४ केतु-रुई पदार्थ सभी खाद्यान्न तेज, तिल, तेल, सरसों में मन्दा, पंजाब, सिंध, सौराष्ट्र प्रदेशों की जनता को कष्ट, लाल वस्तु मिर्च, तिल, तेल, मूंगफली, सरसों, तांबा, पीतल, चांदी, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, गुवार और पशु तेज होंगे। **कृ. १२ बुध**–सूर्य कन्या, त्रयोदशी क्षय–घी एवं रुई पदार्थों में विशेष तेजी बनेगी। माल किराना, मेवा, लाल वस्तु, नारियल, तेल, सुपारी, सरसों तेज, अरण्डी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, शेयरों में मन्दा। **कृ. ३० शुक्र**–अमावस सभी वस्तुओं में मन्दा लाएगी। **नोट**–पक्ष में चांदी विशेष तेज होगी।

शुक्ल पक्ष–शु. १ शनि–पीछे किया स्टाक खाद्यान्न पदार्थों का बेचें। आगे सभी खाद्यान्न धान्य पदार्थों में मन्दा बनेगा। **शु. २ रवि**–चन्द्र दर्शन-रुई, अन्न, चांदी, सोना तेज, रुई पदार्थों में घटबढ़। देश में राज विग्रह, पशुओं में बीमारी फैले, देश के दक्षिण-पश्चिम भाग में झगड़े फैलें। **शु. ६ गुरु**–मघा सिंह बुध- सोना, खाण्ड, रुई, सूत, कपास तेज, ऊन, जौ, गेहूं, चना, गुड़, शक्कर, सरसों में मन्दी, १५ दिन बाद तेजी आएगी। **शु. ८ शनि**–हस्ते सूर्य, पू.फा. शुक्र-गेहूं, सरसों, चना, गुड़, खाण्ड, सूत, कपास, हल्दी, हींग, धनिया, लकडी, नमक, रुई आदि तेज। घी, ग्वार, बाजरा, ज्वार, जौ, चना, मूंग, उड़द आदि मन्दे। वर्षा हो। **शु. १० सोम**–बुधोदय पूर्व-रुई २५ दिन तेज, चांदी में घटबढ़ से तेज, गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, लाल मिर्च तेज, सोना मन्दा, चौपाए जानवरों में बिमारी फैले, देश में जहां-तहां झगड़े हों। **शु. ११ मंगल**–मार्गी बुध-रुई घटबढ़ कर तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेल, तिल, कपूर, चन्दन, अन्न, कपास,

जस्त, पीतल आदि में मन्दा। शु. १२ गुरु–शनि उदय-रुई, सूत, कपास, शेयर, अलसी, सरसों, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली, शीशा, रांग, काले पदार्थ, गुड़, खाण्ड तेज, वर्षा कम। शु. १४ शनि–वक्री श्रवण ४ गुरु-अन्न, गुड़, खाण्ड, सोना, धातु मन्दी, प्रजा सुखी रहे। शु. १५ रवि–आज उ.भा. नक्षत्र प्रजा व देश के लिए उत्तम, सभी खाद्य पदार्थों में तेजी करेगा।

विशेष योग

कन्या पे शनि आवसी दुर्भिक्ष उत्तर देश।
भाग पड़े वा देश में नहिं सुख चैन को लेश॥
नहीं सुख चैन को लेश वृष्टि बहु होसी थोड़ी।
मारवाड़ और बागड़ दोनों भागे छोड़ी॥
धन कन्या युग मीन राशि पर शनि जब आवे।
प्रजा महादु:ख सहै कष्ट राजा भी पावै॥
कन्या रवि नारियल तिलहन आदि मजिष्ठ।
लाल द्रव्य घी तेल सब महिंगे बिकै विशिष्ठ॥
बुधवार को जब कभी हो सूर्य संक्रांत।
रस पदार्थ गुड़ खाण्ड अरु तिलहन तेज नितान्त॥
आश्विन में शनि देव जब बदले अपनी राश।
तेज बिकै सण पाट अरु रुई सूत कपास॥
शुक्र बुध दोनों इक राशि पर होय।
जल योग बरसात में निश्चय लीजो जोय॥
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा जो शनिवारी होय।
अन्न बेचिये क्योंकि फिर मन्दी भारी होय॥

कार्तिक मास फल विचार

मास में ५ सोम, कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, शुक्ल पक्ष में वृद्धि, मावस रवि की, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा सोमवार की, संक्रांति तुला ३० मु. शनिवार की हैं। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। गुरु मार्गी, बुधास्त पूर्व में हुआ है। मास में पांच सोम सभी धान्य पदार्थ मन्दे, कृष्ण षष्ठी क्षय सभी रुई पदार्थों में तेजी लाएगी। मावस रविवारी प्रजा बीमार रहे। देश की राजनीति में उथल-पुथल हो। लोक में भय फैले। खाद्यान्न महंगा हो। चन्द्रदर्शन रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी में तेजी। सुदी पंचमी शुक्रवार मूल नक्षत्र होने से घास तृण चारा की कमी रहे। तेजी बने। पूर्णिमा में अश्विनी नक्षत्र प्रजा में बीमारी, चारा खाद्य पदार्थ धान्यों में तेजी, आगे पैदावार कम, शनिवारी तुला संक्रांति नेष्ट फलकारक, सभी वस्तुओं का क्षय, प्रजा में दुर्भिक्ष हो, सभी खाद्यान्न धान्य पदार्थों में तेजी तथा रोगों की बहुलता बनी रहेगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ सोम–कर्क मंगल–चांदी में अच्छी घटबढ़, भैंसादि पशु, सभी अन्न, सरसों, तांबा, पीतल, जस्त, मिर्च, सुपारी, अरण्डी, गुड़, शक्कर, ईख, रुई, घी, तेल, अलसी आदि में तेजी। कृ. २ मंगल–गुड़, नमक सभी फलों में तेजी, रुई में घटबढ़ हो। दक्षिण दिशा में विकास कार्य अधिक हों। कृ. ३ बुध–उ.फा. शुक्र–फसलों में हानि, सोना, चांदी में घटबढ़, धान्यों तथा रुई पदार्थों में तेजी बने। कृ. ५ शुक्र–तिथि क्षय-यहाँ रुई पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी। कृ. ६ शनि–चित्रा सूर्य, कन्या शुक्र-गेहूं, चना, कपास, अरहर, सूत, केसर, लाल चपड़ा, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, तिल, ऊनी वस्त्रों में तेजी, वर्षा कम। कृ. ८ रवि–पुष्य मंगल-रुई, सोना, चांदी, सरसों, सण में घटबढ़, देश में आपसी झगड़ों में बढ़ोत्तरी, नये-नये उपद्रव हों, राजनीति में विग्रह हो। कृ. ९ सोम–हस्ते बुध-वर्षा उत्तम पैदावार उत्तम, प्रजा को सुख मिले। सभी अनाज मंदे रहें कृ. १० मंगल–मार्गी गुरु-३-४ दिन रुई मन्दी रह कर तेज हो, चांदी, अलसी, सरसों, गेहूं, चना आदि तेज, तम्बाकू मन्दा रहेगा। कृ. १४ शनि–तुला सूर्य, बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी घटबढ़ कर मन्दी, सोना, अलसी, तांबा, आंवला, सरसों, सुपारी, नारियल आदि तेज। सभी माल किराना तेज। चोरियां अधिक होने से प्रजा में असन्तोष बढ़ेगा। कृ. ३० रवि–हस्ते शुक्र-अन्न, गुड़, शक्कर, सोना में घटबढ़, रुई मन्दी, प्रजा में बीमारी फैले, लोक में भय फैलता है।

शुक्ल पक्ष–शु. १ सोम–चन्द्रदर्शन-चांदी तेज होकर मन्दी, रुई, सूत, सोना, चांदी, कपड़ा, तेल, लौंग तेज, अन्न मन्दा रहे। शु. २ मंगल–चित्रा बुध-वर्षा सामान्य, रुई पदार्थ घटबढ़ से तेज, चांदी में घटबढ़, अन्न तेज, विद्वानों को कष्ट हो। शु. ३ गुरु–धनिष्ठा गुरु–प्रजा सुखी, देश में सभी स्थानों पर सम्पत्ति का विस्तार हो। गेहूं, जौ, चना आदि अन्न में मन्दा रहे। शु. ५ शुक्र–स्वाती सूर्य-सभी प्रकार की धातु, गुड़, खाण्ड, तेल, हींग, कपूर, लाख, हल्दी, रुई, जूट, कपड़ा, बिनौला, सुपारी, मिर्च, सोना-चांदी तेज। शु. ६ तुला बुध–गेहूँ, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अफीम, बारदाना, गोला तेज। चांदी, अलसी, सरसों, मूंगफली, बिनौला, मिर्च मन्दी। देश में जहां-तहां लड़ाई-झगड़े बनेंगे। कहीं विग्रह हो। शु. १० बुध–स्वाती बुध, चित्रा शुक्र–रुई पदार्थों में मन्दा, विद्वानों तथा गणमान्य लोगों को कष्ट होगा। शु. १५ सोम–आज अश्विनी नक्षत्र होने से सभी प्रकार का खाद्यान्न, धान्य पदार्थों में तेजी, पशु चारा अधिक तेज और प्रजा बीमार होगी।

विशेष योग

गुरु राहु से मंगल केतु सम सप्तम साथ।
वर्षा हो घनी नहीं हो वर्षा कवाथ॥
कार्तिक कृष्ण सप्तमी यदि होवे शनिवार।
तेजी अन्न में हो महंगा चले बाजार॥
शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥
हाथी हानि हेम की तुला राशि गत सूर।
सभी तरह के धान्यों में तेजी हो भरपूर॥
चार पांच ग्रहों का बना एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दु:खी रहें सब लोग॥
कार्तिक पूनों सकल दिन अश्विनी रहे विराज।
अन्न हो गड़बड़ उतर पश्चिम राज॥
हीन नक्षत्र मावस अधिक तो तेजी का राज।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकेगा नाज॥

अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार

मास में पांच मंगल, पांच बुध, कृ. पक्ष में तिथि हानि, शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि, मावस व वृश्चिक संक्रांति ४५ मु. दोनों सोमवार की, चन्द्रदर्शन १५ मु. और पूर्णिमा दोनों बुधवार की हैं। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। हर्षल नेपच्यून मार्गी, बुधोदय पश्चिम में हुआ है। मास में ५ सोम शुभ, पांच मंगल नेष्टफल कारक हैं। घी, तेल, कपास तेज, पश्चिम में झगड़े, प्रजा में भय बने। कृष्णा नवमी क्षय घी, रुई में तेजी लाएगी। वृश्चिक सूर्य चांदी, तांबा, पीतल, जस्त, ऊनी कपड़ों में तेजी, लाल पदार्थ मन्दे मिले तो संग्रह करो। आगे लाभ मिलेगा। धन का राहु देश में आपसी ईर्ष्या द्वेष वैमनस्य बढ़ाएगा। बुधोदय राजनीति विग्रह करेगा। मासान्त में सूर्य बुध शुक्र की युत्ति हर प्रकार की महंगाई को बढ़ाएगी। प्रजा में भय फैलेगा। पूर्णिमा को रोहिणी नक्षत्र भी सभी खाद्यान्न व धान्य पदार्थों में तेजी करेगा।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ मंगल–तुला, शुक्र-प्रजा में कुशलता-अरोग्यता बढ़े। रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सोना तेज, अन्न में गड़बड़ चले। ३ गुरु–विशाखा बुध-प्रजा सुखी, सभी अन्न गुड़ आदि मन्दे। कहीं-कहीं देश में झगड़े बनें और कहीं तेजी बने। कृ. ४ शुक्र–विशाखा सूर्य-चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल आदि तेज, देश के दक्षिण पूर्व में उपद्रव हों। कृ. ६ रवि–स्वाति शुक्र–गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेल, तिल आदि तेज, गेहूं, जौ, चना आदि मन्दा। देश में कहीं उपद्रव अधिक हो, कहीं चोरियां अधिक होंगी। कृ. ७ सोम–ऽलेषा मंगल–रुई, चांदी मन्दी, जौ, गेहूं, चना आदि सभी प्रकार का अन्न तेज। सर्प व टिड्डी का जोर, फसलों को हानि हो। कृ. ८ मंगल–तिथि क्षय-घी और रुई पदार्थों में अच्छी तेजी रहेगी। कृ. १२ गुरु–वृश्चिक बुध-चांदी, घी, पशु तेज। अफीम, घी, तेल, अन्न, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ग्वार, सरसों, अलसी, सोना मन्दा। रुई में घटबढ़ से मन्दी बने। मन्दी में माल खरीदो पांच मास में विशेष लाभ होगा। कृ. १३ शनि–ऽनुराधा बुध-अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़ा, सोना, चांदी में मन्दा, प्रजा को सुख मिले। कृ. ३० सोम–वृश्चिके सूर्य-चांदी, तांबा, पीतल, जस्त, ऊन, गर्म वस्त्र, सरसों तेज। लाल वस्तु, मिर्च, चन्दन आदि में मन्दा, अन्न में घटबढ़ रहे।

शुक्ल पक्ष–शु. १ मंगल–धनु में राहु–आगे चार मास तक सभी प्रकार के पशु, घोड़ा, खच्चर, हाथी, मोटरगाड़ी, कार, स्कूटर, साईकिल, रिक्शा, मोटर पार्ट्स में अच्छी तेजी बनेगी। प्रजा में आपसी द्वैष-उद्वेग-वैमनस्य बढ़ेगा। शु. २ बुध–चन्द्रदर्शन-गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सफेद वस्तु में मन्दा, चांदी में घटबढ़, घी, धान्य पदार्थ तेज होंगे। शु. ३ गुरु–ऽनुराधा सूर्य, विशाखा शुक्र-गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, सूत, कपास, रुई, सोना मन्दा। चांदी, चावल, सूत, अफीम, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न तेज। व्यापार में भारी उलटफेर से व्यापारियों में चिन्ता बने। भक्तजनों को कष्ट उठाना पड़े। शु. ४ शुक्र–बुधोदय पश्चिम-रुई, कपास, चांदी में मन्दी, यह मन्दी १५ दिन रहेगी। चौखा, घी, तेल, अरण्डी, सरसों, अन्न तेज, रुई, सूत, कपास में अच्छी घटबढ़ हो। देश में कहीं राज पीड़ा बनेगी। शु. ५ रवि–ज्येष्ठा बुध–गेहूं, जौ, चना, बाजरा, गुड़, मूंग, ग्वार, चावल आदि तेज, चौपाए जानवरों में बीमारी फैलेगी। शु. १० शुक्र–वृश्चिक शुक्र-लोक में खुशी फैले, देश में पैदावार उत्तम हो, ज्वार, बाजरा, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न में मन्दा, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर बाजार में घटबढ़ चलेगी। शु. ११ शनि–आगे समय में वर्षा कम, देश में कहीं झगड़े बढ़ेंगे, कहीं प्रजा हानि तथा कहीं छत्रभंग, राज परिवर्तन होगा। शु. १२ रवि–ऽनुराधा शुक्र-देश में जहां-तहां उपद्रव फैले, कहीं भूकम्प आवे, पशुओं में बीमारी फैले। रुई पदार्थ तेज, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, क्षार पदार्थों में मन्दा। शु. १४ मंगल–मूल धन बुध, हर्षल मार्गी-चांदी मंदी, रुई,सूत, कपास, कपड़ा तेज, हाथी आदि पशुओं को कष्ट। राजा-प्रजा में कहीं विरोध बने। शु. १५ बुध–ज्येष्ठा सूर्य–चावल, सरसों, वस्त्र, अफीम, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, हींग, पारा, अरण्डी, गुग्गल तेज। रुई मन्दी होकर तेज हो।

विशेष योग

अगहन पहले पाख में कोई तिथि घट जाय।
झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाय॥
वृश्चिक गत जब सूर्य हो ऊन वस्त्र सम भाव।
लाल द्रव्य मन्दे बिकें तौ खरीद कर लाव॥
छठे मास लाभ हो बेचो जब हो तेज।
तेज वस्तु लेना नहीं रखना यह परहेज॥
वृश्चिक संक्रांति को बादल वर्षा होय।
सोना पीतल मूंग में लाभ सवाया होय॥
किसी राशि पर होय जब शुक्र बुध अरु सूर।
बढ़ै प्रजा में भय तथा तेजी हो भरपूर॥
मावस से अधिक नखत सस्ता करै अन्न।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब कण॥

अथ पौष मास फल विचार

मास में गुरु ५ हैं, कृष्ण पक्ष तिथि की हानि, शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़ कर घटी है। मावस बुधवार की चन्द्रदर्शन ३० मु. शुक्र का, पूर्णिमा गुरुवार की है। सूर्य बुध गुरु शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्रास्त पूर्व, वक्री मंगल, बुधास्त पश्चिम में हुआ है। पूनम को चन्द्र ग्रहण भी होगा। अतः मास में ५ गुरु धान्य, सफेद वस्तु आदि मन्दे। शुक्र अस्त, राजनीति में विग्रह हो। बुधवारी मावस को ज्येष्ठा नक्षत्र दुर्भिक्ष करे। शुक्ला चौथ मंगलवारी प्रजा में बीमारी बढ़े। पूर्णिमा को मृगशिर नक्षत्र शुभ फलदायक है। वक्री मंगल सभी किराना बाजार में भयंकर तेजी कारक है। शुक्ला त्रयोदशी क्षय, घी, तेल आदि में तेजी बनेगी। ग्रहण तेल, गोला, खाण्ड, रस पदार्थ, अन्न तेज। देश के किन्हीं स्थानों पर उत्पात हो। ४ मास में लाभ मिले।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ गुरु–रुई, सूत, कपास, गेहूं, चना आदि तेज। **कृ. २ शुक्र**–तिथि क्षय-सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। **कृ. ६ सोम**–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, तेल, तिल पदार्थों में तेजी। **कृ. ८ बुध**–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, सरसों, जीरा, धनिया, लौंग, माल किराना तेज, रुई चांदी में मन्दा। **कृ. ९ गुरु**–पू. षा. बुध, ज्येष्ठा शुक्र–गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार, सरसों, सोना, चांदी, घी, तेल, चावल आदि तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास तेज, देश में कहीं बीमारी फैले, कहीं झगड़े हों। प्रजा को कष्ट हो। **कृ. १० शुक्र**–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, सरसों, मूंगफली, घी, चावल आदि में मन्दा। **कृ. १३ सोम**–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास में मन्दा। **कृ. १४ मंगल**–मूल धन सूर्य-सभी अन्न मन्दे, कपास, तेल, रुई, सोना, चांदी, अलसी आदि तेज। मालवा प्रदेश में उपद्रव हो। **कृ. ३० बुध**–शुक्रास्त पूर्व-देश के राजाओं को कष्ट, आपसी झगड़ों में बढ़ोत्तरी होगी। राजनीति में विग्रह। समुद्र में कार्य करने वालों की जान माल को खतरा हानि होगी। रुई मन्दी, सोना, पीतल, तांबा, जस्त, हींग, पारा, केसर तेज, चांदी घटबढ़ कर तेज होगी।

शुक्ल पक्ष–शु. १ गुरु–हस्ते शनि-देश में कहीं दुर्भिक्ष पड़े, अनेकों वस्तुओं में तेजी, शिल्पियों को कष्ट, देश के विकास कार्यों में बाधा पड़े। **शु. २ शुक्र**–चन्द्रदर्शन–गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, तेल, तिल, ऊन में मन्दा, सोना तेज, चांदी में घटबढ़ चले। **शु. ३ शनि**–कुम्भे गुरु-देश के पूर्व भाग में उपद्रव साल भर रहेंगे। कांसी, तांबा, पीतल, शीशा, सोना, वस्त्र, कम्बल, हींग आदि तेज, पैदावार कम। **शु. ४ रवि**–वक्री मंगल, मूल धन शुक्र–सभी प्रकार के किराना बाजार की वस्तुओं में भयंकर तेजी आएगी। अनावृष्टि के योग हैं। प्रजा ३ मास बीमार रहेगी। रुई, अलसी, चावल, गोला, गुड़, खाण्ड, सोना, शेयर बाजर, लाल वस्तु में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. ६ मंगल**–उ.षा. बुध-छोटे-छोटे बच्चों को पीड़ा, छोटे बच्चों की मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी होगी। वर्षा हो, पैदावार उत्तम रहे। **शु. ९ शनि**–वक्री बुध-देश में पैदावार उत्तम, अन्न मन्दा, अन्न संग्रह करें। आगे लाभ मिलेगा। रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, शेयर, बिनौला, मेवा आदि में तेजी। **शु. ११ सोम**–पू.षा. सूर्य–तिल, तेल, गुड़, गुग्गल, हल्दी, कपूर, ऊनी, वस्त्र, चांदी, सरसों, चीनी आदि तेज। सर्दी जोरदार पड़े। **शु. १२ मंगल**–बुधास्त पश्चिम–घी, तेल तेज, रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर, हैसियन, बारदाना मन्दा। गणमान्य लोगों को कष्ट हो। **शु. १४ बुध**–वक्री पू.षा. बुध, पू.षा. शुक्र–सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार मन्दे। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, सूत, कपड़ा तेज। **शु. १५ गुरु**–चन्द्र ग्रहण-उड़द, मूंग, तेल, तिल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक में मन्दा, सभी खाद्य पदार्थ तेज होंगे।

विशेष योग

पौष मावस ज्येष्ठा नक्षत्र हुई दुर्भिक्ष की चाल।
हीन नक्षत्र मावस घनी बना तेज काल॥
किसी राशि पर संक्रामण करै भौम दिन सूर।
तो महंगा होवे नमक रस घी तेल कपूर॥
धन राशि के भानु में मन्दा रहे अनाज।
तिलहन तेल कापस में महंगाई की चाल॥
चार ग्रहों का बना धन राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥
कर्क राशि में भ्रमण भौम का जब हो उसमें वक्र।
वक्री होने पर किराना में चलता तेजी का चक्र॥
सूर्य शुक्र इक राशि पर वस्तु वायु तेज।
मास नखत पूनम नहीं धान्य पदार्थ तेज॥

अथ माघ मास फल विचार

मास में पांच शुक्र, पांच शनि, कृष्ण पक्ष में तिथि घट कर वृद्धि हुई है। मावस शुक्र की, चन्द्रदर्शन रवि का ३० मु., पूर्णिमा शनि की, संक्रांति ३० मु. भूखी गुरुवार की है। सूर्य शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। सूर्य ग्रहण है। मास में पांच शुक्र, प्रजा वृद्धि, पीली वस्तु, सोना आदि तेज, पांच शनि सभी रस कस तेज, महंगाई बढ़े, देश के पश्चिम भू-भाग पर लड़ाई-झगड़े हों, दुर्भिक्ष पड़े। मावस को उ.षा. नक्षत्र भी दुर्भिक्षकारी हैं। देश में सूर्य ग्रहण लक्ष्मी की बढ़ोत्तरीकारी रहेगा। रुई, सूत, कपास तेज, श्री फल (नारियल) से आगे नव मास में अच्छा लाभ देगा। सुदी पड़वा को शनिवार से धान्योत्पति उत्तम हो। शुक्लाष्टमी को शनि आगे उत्तम वर्षा, प्रजा सुखी, पूनो को शनिवार, पुष्य नक्षत्र सभी खाद्य पदार्थ तेज, कहीं राज विग्रह, लोक में शोक, प्रजा में आपसी तकरार बढ़े। शनि मंगल एक साथ वक्री। अतः देश में युद्ध विग्रह भय व्याधी का वातावरण बनेगा। गुरुवारी मकर संक्रांति सभी पीली वस्तु तेज, धान्योत्पति उत्तम, प्रजा धर्मकर्म अधिक करेगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ शुक्र–सभी प्रकार का गल्ला मन्दा रहे। **कृ. ३ रवि**–चारा तेज, पशु बीमार हो। **कृ. ५ मंगल**–धनिष्ठा ४ गुरु, तिथि क्षय-देश में सुख समृद्धि की वृद्धि करे। वर्षा हो, जौ, चना आदि में मन्दा रहे। रुई पदार्थों में तेजी बनेगी। **कृ. ८ गुरु**–सोना, चांदी, रुई, सूत, सरसों, मूंगफली में मन्दा। **कृ. १० शनि**–बुधास्त पूर्व-रुई २५ दिन तेज, चांदी घटबढ़ से तेज, गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, गोला, उड़द तेज, सोना मन्दा रहे। **कृ. ११ रवि**–वक्री मूले बुध-छोटे-छोटे बच्चों और पशुओं को पीड़ा हो, सोना, चांदी मन्दी, रुई पदार्थों में घटबढ़ रहेगी। **कृ. १२ सोम**–उ.षा. सूर्य–उड़द, मूंग, जूट, सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, बांस, सरसों, खाण्ड, तिल, तेल, चीनी, हल्दी, गेहूं, घी आदि तेज। **कृ. १३ बुध**–मकरे शुक्र, वक्री शनि–गुड़, खाण्ड, घी सभी प्रकारा का अन्न, सोना, चांदी, मानक, मोती, लौंग, सुपारी, कलई, शीशा आदि तेज, रुई, चांदी घटबढ़ कर तेज, प्रजा में भय फैले, कहीं झगड़े और दुर्भिक्ष पड़े। **कृ. १४ गुरु**–मकरे सूर्य-शेयर, सोना, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ आदि में मन्दा। **कृ. ३० शुक्र**–मार्गी बुध, सूर्य ग्रहण–रुई घटबढ़ कर तेज। वर्षा हो। सभी स्थानों पर लक्ष्मी की बढ़ोत्तरी हो। रुई, सूत, कपास तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेल, तिल, कपूर, चन्दन, अगर तगर मन्दे। आगे ९ मास में श्रीफल (नारियल) विशेष लाभ देगा।

शुक्ल पक्ष–शु. १ शनि–देश में सभी धान्यों की उत्तम पैदावार होगी। प्रजा स्वस्थ रहेगी। **शु. २ रवि**–चन्द्रदर्शन–सभी तेल पदार्थ मन्दे, अन्न, सोना, तेल, रुई में घटबढ़, प्रजा दुःखी, कष्टों का सामना करना पड़े। **शु. ३ सोम**–पू.षा. राहु–धान्य पदार्थ मन्दे, लकड़ी का सामान मन्दा, बंगाल उ.प्र., हि.प्र., मध्य भारत के प्रजा जनों के लिए समय भयकारी , प्रजा को व्यापार में हानि हो। **शु. ५ बुध**–शतभिषा १ गुरु–उत्तम वर्षा, देश में सुख सुविधा की वृद्धि हो। प्रजा को सुख, सभी लाल पदार्थ और अन्न में मंदा रहे। **शु. ६ गुरु**–पूर्वाषाढ़ बुध, श्रवण शुक्र–गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, गवार, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, अरण्डी, सरसों आदि मन्दे। प्रजा बीमार रहे। **शु. ८ शनि**–श्रवण सूर्य-उड़द, मूंग, मोठ, जूट, सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, सरसों, रुई, जौ, सण, खाण्ड, चीनी आदि तेज। राजा प्रजा देश सुखी। उत्तम वर्षा हो। **शु. ९ रवि**–सभी प्रकार का गल्ला, धान्य पदार्थ तेज होगा। **शु. १२ बुध**–वक्री पुष्य मंगल-रुई, चांदी, सोना, सरसों, सण में घटबढ़, वर्षा कम, देश में नये-नये उपद्रव हों, आपसी झगड़ों में बढ़ोत्तरी हो। **शु. १५ शनि**–पूर्णिमा–सभी खाद्यान्न, धान्य पदार्थ तेज, लोक में शोक, राजाओं में तकरार राजनीति में विग्रह होगा।

विशेष योग

मकर राशि के भानु में तेज बिकै घी तेल।
धान्य भाव मन्दा रहे कुछ पीडा का खेल॥
गुरुवारी संक्रांति जब-जब जग में आव।
सुखी प्रजा धन धान्ययुत सभी वस्तु सम भाव॥
चार पांच ग्रहों का बना एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥
शनि देव वक्री हुए गुरु जी अतिचार।
झगड़े और फिसाद नित दुःखी रहे संसार॥
ग्रहण हो शुक्र को सब वस्तु सुकाल।
उत्तम समय और अधिक उपजे माल॥
माघ शुक्ला प्रतिपदा शनिवार सुखकार।
देश सुखी उत्तम उपज आनन्दित नर नार॥

मावस से अधिक नखत सस्ता रहे अन्न।
मास नखत पूनम नहीं बिकै तेज कण॥

अथ फाल्गुन मास फल विचार

मास में ५ रवि, कृष्ण पक्ष तिथि घट कर वृद्धि, शुक्ल में तिथि क्षय, मावस-पूनों रविवार की, चन्द्रदर्शन १५ मु. सोम का, संक्रांति कुम्भ ३० मु. शुक्र की है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्रोदय पश्चिम, गुरु अस्त हुआ है। मास में ५ रवि नेष्टफल कारक हैं। कृष्ण षष्ठी को चित्रा नक्षत्र तीन मास सुभिक्षकारी, रविवारी मावस धनिष्ठा मक्षत्र युत होने से दुर्भिक्षकारी, व्याधि को बढ़ावा देगी। शुक्रोदय देश में चोरियां अधिक कराएगा। शुक्ला दूज मंगलवारी सभी अन्न, सूत, कपड़ा तेज करे। शुक्लाष्टमी को कृतिका देश में सुकाल करे। शुक्ला त्रयोदशी क्षय देश में राज विग्रह कहीं छत्र भंग करेगा। रविवारी पूर्णिमा नेष्ट फलकारी खाद्य पदार्थो में तेजी करेगी। सूर्य गुरु शुक्र की युति कहीं अग्निकाण्ड से जन हानि कहीं प्राकृतिक आपदाओं से जन हानि करेगा।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ रवि-तिथि क्षय–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, तेलादि तेज, पशु बीमार हो। **कृ. ३ सोम**–धनिष्ठा शुक्र–मूंग, मोठ आदि अन्न, सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, उड़द तेज। पशुओं को कष्ट, प्रजा दुःखी, चोरियां अधिक हों। **कृ. ४ मंगल**–शुक्रोदय पश्चिम-रुई, सूत, कपास, वस्त्र, सण, तिल, चावल, सोना, चांदी, अन्न, पशु, धातु तेज। घी, खाण्ड, अन्न में मन्दा। **कृ. ५ बुध**–उ.षा. बुध–छोटे बच्चों को पीड़ा, इनकी मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी। घी, गेहूं में अच्छी तेजी बने। **कृ. ६ गुरु**–आज चित्रा नक्षत्र आगे तीन मास प्रजा स्वस्थ, देश खुशाल रहेगा। वर्षा उत्तम, रुई, सूत, कपास, वस्त्र, सण, तिल, चावल, सोना, चांदी, अन्न, पशु, धातु तेज। अन्न मन्दा भी रह सकता है। **कृ. ५ बुध**–उ.षा. बुध–घी, गुड़ में अच्छी तेजी बने, छोटे बच्चों को पीड़ा, मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी और वस्तुओं में मन्दा आवे। **कृ. ६ गुरु**–शतभिषा २ गुरु–रुई, सूत, कपास में घटबढ़, लाल वस्तुओं में मन्दा, प्रजा को सुख, पैदावार उत्तम रहे। **कृ. ७ शुक्र**–मकरे बुध-रुई, घी में मन्दा, सोना, चांदी तेज रहेगी। **कृ. ८ शनि**–धनिष्ठा सूर्य, कुंभे शुक्र-चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा अन्न, सफेद वस्तु, सभी रस पदार्थो में मन्दा, मूंग, मोठ, नील, सोना, चांदी आदि धातु, सभी तिलहन पदार्थो में तेजी। देश में सुभिक्ष का वातावरण बने। कहीं वर्षा हो। **कृ. १२ बुधवार**–वक्री उ.फा. ४ शनि–गुड़, नमक, सभी प्रकार के फल, सब्जी तेज, रुई में अच्छी घटबढ़ हो। **कृ. १४ शुक्र**–कुंभे सूर्य, शतभिषा शुक्र-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, मूंग, सरसों, शक्कर, खाण्ड आदि में मन्दा। मूंगफली, अरण्डी, घी, तेल, सरसों, अलसी, सोना, चांदी तेज। **कृ. ३० शनि**–श्रवण बुध-गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, गेहूं तेज। ओले गिरने से पैदावार कम होगी। **कृ. ३० रवि**–मावस-देश में बीमारी फैलेगी। प्रजा का स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा।

शुक्ल पक्ष–शु. १ सोम–चन्द्रदर्शन–अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़ा, सफेद वस्तु, चांदी तेज। चना, जौ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंग, मसूर, तेज, सभी अन्न मन्दे होंगे। **शु. ४ गुरु**–शतभिषा ३ गुरु–उत्तम वर्षा, पेदावार उत्तम, रुई में घटबढ़, अन्न, लाल वस्तु मंदी, प्रजा सुखी रहे। **शु. ५ शुक्र**–शतभिषा सूर्य-सरसों, चना, जूट, कपड़ा, तेल, नील, हींग, जायफल, दाख, छुआरा, सोठ, रुई, चांदी, कपास, गुड़, खाण्ड, हल्दी आदि तेज। **शु. ७ रवि**–धनिष्ठा बुध–पशुओं में बीमारी फैले, रुई में घट बढ़ हो, सोना-चांदी, तांबा, पीतल जस्त, सभी अन्न में मन्दा। **शु. ८ सोम**–पू.भा. शुक्र-रुई, सूत, कपास तेज, अन्न, गेहूं, चना, जौ आदि मन्दे। प्रजा को कष्ट, वर्षा हो, देश में सुकाल रहे। **शु. ९ मंगल**–आज रोहिणी होने से आने वाले समय में वर्षा मध्यम रहे। **शु. ११ गुरु**–कुम्भे बुध-घी, तेल, रसकस, गुड़, शक्कर आदि में घटबढ़ से मन्दा, सोना, चांदी, तांबा, पीतल मन्दा होकर तेज, अलसी, सरसों में घटबढ़ चले। **शु. १२ शुक्र**–त्रयोदशी क्षयः घी, रुई, सूत, कपास तेज, आगे ज्येष्ठ में प्रजा रोगों से पीड़ित रहे। लोगों का स्वास्थ्य बिगड़े, देश में कहीं राज विग्रह, कहीं छत्र भंग हो। **शु. १५ रवि**–बृहस्पति अस्त-सोना, चांदी सभी प्रकार का अन्न, रुई, सूत, कपास में मंदा, शेयर तेज। देश में जहां-तहां स्त्री जाति पर बीमारी फैले, गल्ला तेज।

विशेष योग

षष्ठी फाल्गुन बदी में चित्रा करै सुभिक्ष।
पड़वा फाल्गुन सुदी शतभिषा हो सुभिक्ष॥
एक जगह गुरु शुक्र हों बने युद्ध आसार।
अनावृष्टि अति वृष्टि से दुःखी रहे संसार॥
कुम्भ राशि पर साथ हो सूरज भृगु गुरु तीन।
आग लगे आंधी चले करै फसल को छीन॥
दिनकर शशि गुरु शुक्र यह एक राशि पर चार।
वात योग के कारणे बरसत धूल अपार॥
बृहस्पति जी अस्त हो फाल्गुन मास माहिं।
अन्न मास मन्दा रहे सभी लोग सुख पाहिं॥
क्रूर वार तेजी करै मावस पूनम दोय।
मास नखत पूनम नहीं अन्न तेज कर जाहिं॥

अथ चैत्र कृष्ण पक्ष फल विचार

मास में पांच सोम, पांच मंगल, मावस सोम की, चन्द्रदर्शन ३० मु. बुध का, पूर्णिमा मंगलवारी है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परविर्तन किया है। मंगल मार्गी, गुरु बुध उदय पश्चिम में हुआ है। मास में पांच सोम शुभ लेकिन पांच मंगल नेष्टप्रद हैं। कृष्ण पंचमी शुक्रवार को उ.भा. नक्षत्र सभी मूल पदार्थो में तेजी बने। कृष्ण १३ को शनिवार सभी वस्तुओं में महंगाई होगी। सोमवती मावस नक्षत्र से कम होने से सभी खाद्यान्न में मन्दी लाएगी। कृष्ण ४ को गुरुवार चित्रा नक्षत्र से आगे उत्तम बरसात होगी। मीन राशि में सूर्य बुध शुक्र की युति प्रजा में भय तथा हर वस्तु में तेजी करें। मास में घात योग होने से धूल भरी तेज आंधी (हवा) चलेगी।

कृष्ण पक्ष–कृ. १ सोम–शतभिषा बुध-वर्षा कम, झुंगी-झोंपड़ी वाले बीमार हों। सोना, चांदी, सण, सूत में तेजी। **कृ. २ मंगल**–मीने शुक्र-सभी को सुख मिले। देश में खुशी के कार्य हों। रुई, चांदी तेज। बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तेल, तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड सभी अन्न में मन्दा। **कृ. ४ गुरु**–पू.भा. सूर्य-सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, गुग्गल, सूत, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, चावल, ज्वार, बाजरा आदि तेज। प्रजा स्वभाविक रूप से शांत रहें। **कृ. ५ शुक्र**–उ.भा. शुक्र-मूल पदार्थ तेज, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, रुई, सूत, कपास, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक, कपूर, सोना, चांदी में मन्दा। **कृ. ९ मंगल**–पू. भा. बुध-देश में कहीं झगड़े फिसाद हों। अन्न, धातु, लोहा, तांबा आदि मन्दे, रुई, सूत, कपास में घटबढ़ रहे। **कृ. १० बुध**–मंगल मार्गी-रुई, सूत, कपास सभी किराना मार्किट में मंदी का जोर चले। देश में जहां-तहां बीमारी फैले, रोगों की वृद्धि होगी। **कृ. १४ रवि**–मीने सूर्य बुध-सोना, अन्न, तेल, तिल, सण, गुड़, नमक तेज होकर मन्दा, चांदी मंदी, प्रजा में आपसी द्वेष बढ़े। **कृ. १३ शनि**–सभी प्रकार की वस्तुओं में महंगाई बनेगी। **कृ. ३० सोम**–सभी वस्तुओं में मन्दी आएगी।

विशेष योग

मीन राशि पर साथ शुक्र बुध अरु सूर।
बढ़ै प्रजा में भय तेजी हो भरपूर॥
बुध गुरु भृगु सूर्य जबै हो इक्टठे इक ठौर।
धात योग के कारणे धूल उड़े चहूँ और॥
बुध भृगु रवि यह तीन एक राशि पर बैठे झुक्कर।
एक चरण हर बुरै महाभय करै रवि बुध शुक्कर॥
मावस से अधिक नक्षत्र सस्ता करै अन्न॥

व्यापारिक भविष्य वर्ष सन् २००९-१० ई.

प्रवीन कुमार जैन

चैत्र शुक्ल–२७ मार्च २००९ सुदी शुक्रवारी एकम् से धन धान्य वृद्धि तथा प्रजा में सुख-शांति का योग बन रहा है। २८ मार्च शनिवारी द्वितीया का चन्द्रदर्शन रुई में तेजी का योग बना रहा है। ३१ मार्च बुध तथा सूर्य रेवती में–गुड़, खांड, घी, तेल, तिल आदि में मंदा, रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, केसर, मजीठ, अलसी, लाख, लाल चन्दन, गेरू, लाल मिर्च तथा अन्य लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी। चांदी, सरसों में घटबढ़ होगी। २ अप्रैल मंगल पू.षा. में–सोना, चांदी, अलसी, सरसों, तिल, मूंगफली, नारियल, सुपारी, तेल, रुई, कपास, सूत में तेजी आयेगी। ३ अप्रैल वक्री शुक्रोदय मीन राशि में–उ.भा. में शुक्र स्वर्णद्वार में उदित हुआ है। अधिकांश वस्तुओं में पहले तेजी आकर मंदा होगा। शुक्र का चैत्र कृष्ण पक्ष में अस्त होकर शुक्ल पक्ष में उदित होना शुभ एवं शन्तिकारक है। ६ अप्रैल बुध अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में आकर गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, सोना, चांदी आदि धातुओं तथा मूंगा में तेजी बनायेगा। रसकस, गुड़, खांड, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास तथा चांदी में मंदा रहेगा।

बैशाख–मास का प्रारंभ शुक्रवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन प्रतिपदा का है। कृष्ण पक्ष में अष्टमी की वृद्धि, शुक्ल पक्ष में द्वितीया की हानि हुई है। मंगल का मीन में, बुध का वृष में, गुरु का कुंभ में प्रवेश हुआ है। बैशाख मास में पांच शुक्रवार आगे चलकर उत्तम वर्षा का योग बना रहे हैं। व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट के चलते महंगाई नियंत्रण में रहेगी। रसकस में भी मंदा आयेगा। **मास के पांच शनिवार कृषि में हानिकारक हैं। संक्रांति फल**–बैशाख कृष्ण पंचमी की मेष संक्रांति गेहूं, जौ, चना आदि अन्न पदार्थों में मंदे के बाद तेजी का योग बना रही है। केसर, मोम, मजीठ, सिंदूर, लाख, किराने की वस्तुओं में तेजी रहेगी। विदेशी व्यापार में हानि होगी और विदेशी मुद्रा भंडार का ह्रास होगा। १३ अप्रैल बुध भरणी में–अनाज में तेजी के योग हैं। १४ अप्रैल मेषस्थ बुधोदय पश्चिम में, सूर्य अश्विनी मेष में–सोना, चांदी, अलसी, तिल, तेल, अनाज, लोहा, तांबा, सूत, कपास, कपड़ा, सुपारी, नारियल, लाल चन्दन, मेथी, लौंग, इलायची, हींग, अरण्ड में तेजी बनेगी। रुई में मंदी के बाद तेजी आने का योग है। बादाम, सभी प्रकार के फल, गुड़, खांड, शक्कर, ईख, सरसों में तेजी आयेगी। सभी प्रकार के धान्यों गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में तेजी आयेगी। १५ अप्रैल मंगल मीन में–सोना, चांदी, रुई, पशु आहारों तथा लकड़ी के फर्नीचर में तेजी बनेगी। १९ अप्रैल मंगल उ.भा. में– सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों तथा चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी बनेगी। मीन राशि में मार्गी शुक्र समस्त वस्तुओं में मंदे का योग बना रहा है। २१ अप्रैल बुध कृतिका में–रुई में तेजी तथा चांदी में मंदा आयेगा। २४ अप्रैल बुध वृष में–बाजार में सभी वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर में तेजी बनेगी। २४ अप्रैल बैशाख कृष्ण शुक्रवारी चतुर्दशी से फसल की उत्तम उपज का योग बन रहा है। अन्न पदार्थों में मंदा बनेगा। इस योग की पुष्टि आगे बैशाख शुक्ल शुक्रवारी चतुर्दशी (१२ मई) से भी हो रही है। २७ अप्रैल सूर्य भरणी में–सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं में, चावल, गेहूं, जौ, चना, मोठ, अलसी, सरसों, राई, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी आयेगी। रुई में मंदा होगा। १ मई गुरु कुंभ में–सोना, चांदी, रुई, कपास, तांबा तथा कपड़े में तेजी बनेगी। ४ मई राहु उ.षा. में, ६ मई मंगल रेवती में–चांदी में अच्छी तेजी बनने का योग है। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा में गिरावट आयेगी। सोने में साधारण मंदा रहेगा तथा रुई में घटबढ़ के बाद तेजी का योग है। ८ मई बुध वक्री–चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

ज्येष्ठ–ज्येष्ठ मास का प्रारंभ रविवार से हुआ है। चन्द्र दर्शन सोमवारी प्रतिपदा का है। मंगल की प्रथम राशि मेष में मंगल, वक्री बुध तथा शुक्र का गोचर रहेगा। तत्पश्चात् बुध का ५ जून में वृष राशि में प्रवेश होगा। **संक्रांति फल**–ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी गुरुवार की वृष संक्रांति ४५ मुहूर्ति बैठी हुई धान्यादि के भावों में समताकारक है। गेहूं, जौ, चना में मंदा रहेगा। गुड़, खांड, शक्कर, रुई, कपास, घी, तेल, तिल, सरसों में तेजी बनेगी। ११ मई सूर्य कृतिका में–वृषस्थ बुध पश्चिम में अस्त–सोना, चांदी तथा शेयर्स में तेजी आयेगी। रसकस में सामान्य घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। १४ मई सूर्य वृष में–अन्न का उत्पादन अच्छा होगा फिर भी अन्न के भावों में साधारण तेजी आयेगी। रुई, सूत, कपास, कपड़ा, सोना में तेजी होगी। चांदी में घटबढ़ रहेगी। १५ मई शुक्र रेवती में–रुई, कपास, चावल, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदा होगा। १८ मई सिंह राशि में मार्गी शनि–हींग, सरसों, मजीठ तेज होकर मंदे में आयेगी। २४ मई मंगल अश्विनी मेष राशि में–गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, अरहर में घटाबढ़ी चलेगी। सोना, मोती, मूंगा आदि रत्नों, रसकस, रुई, कपास, पटसन, बारदाने में तेजी होगी। गुड़, खांड में घटाबढ़ी के बाद मंदा। चांदी में मंदा। **ज्येष्ठ शुक्ल**–२५ मई सूर्य रोहिणी में, वक्री बुध मेष में–गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, घी, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, तेल, अरण्डा, अलसी, सूत, सन के भावों में वृद्धि होगी। चांदी के भावों में गिरावट आयेगी। रुई में साधारण तेजी आयेगी। २७ मई शुक्ल चतुर्थी का क्षय, बुधोदय मेष में पूर्व में–धान्यों के भावों में तेजी आयेगी। मूंग, उड़द, घी में अत्याधिक तेजी बनेगी। ३१ मई शुक्र अश्विनी में–सोना, चांदी, रुई, कपास, उड़द, मूंग, मोठ, अरहर में मंदा होगा। सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना आदि अन्नों, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा घी में घटबढ़ बनेगी। पटसन, बारदाना में घटबढ़ के बाद तेजी आयेगी। तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में साधारण तेजी बनेगी। १ जून मेष में मार्गी बुध–अलसी, तिलहन तथा पशुओं में मंदा बनायेगा। ५ जून बुध वृष में–बाजार में सभी वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर में तेजी बनेगी।

आषाढ़–मास का प्रारंभ सोमवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन बुधवारी द्वितीया का है। कृष्ण पक्ष में तृतीया की वृद्धि होकर चतुर्दशी की हानि हुई है तो शुक्ल पक्ष में एकादशी की वृद्धि हुई है। मास में शुक्र का वृष में, बुध का मिथुन में, मंगल का वृष में राशि परिवर्तन हुआ है। मास के पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार उत्तम वर्षा का योग बना रहे हैं। कृषि उत्पादन में वृद्धि होने से बाजार में मंदे का रुख प्रबल होगा, परन्तु लाल वस्तुओं के भावों में तेजी आयेगी। मंगल के राशि परिवर्तन के साथ ही धान्यों के मूल्यों में वृद्धि का संकेत आने लगेगा। **आषाढ़ मास संक्रांति फल**–आषाढ़ कृष्ण सप्तमी की मिथुन संक्रांति धान्यादि के भावों में तेजीकारक है। सन तथा रेशम में तेजी का योग है। ८ जून सूर्य मृगशिरा में–सोना, चांदी, धान्य, रुई, रेशम, सूत, सन, कपास, कपूर, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, अलसी में तेजी बनेगी। १० जून मंगल भरणी में–सभी प्रकार के अन्नों, सोना, चांदी तथा रुई में तेजी बनेगी। १४ जून शुक्र भरणी में–सोना तथा चांदी में मंदा आयेगा। चना, मूंग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी चलेगी। रुई में तेजी बनेगी। सरसों, तेल, तिल में मंदा आयेगा। १५ जून सूर्य मिथुन में–रुई, सूत, कपास, जूट, बारदाना, सूत, रेशम, सरसों, लोहा, तिल, तेल, फल, गुड़, खांड, देशी शक्कर, चीनी, घी, उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, चना, अरहर, मटर, कन्दमूल में तेजी आयेगी। सोना, चांदी में साधारण तेजी रहेगी। शतभिषा नक्षत्र की संक्रांति अन्नों में तेजी का योग बना रही है। १६ जून कुंभ राशि का वक्री गुरु सभी वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट देगा। १८ जून बुध रोहिणी में–सोना, चांदी, सूत, कपास, तिल, तेल, सरसों,

चावल, गुड़, खांड में तेजी आयेगी। सन, ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों के भावों में गिरावट रहेगी। रुई में तेजी आकर मंदा होगा। २२ जून सूर्य आर्द्रा में–रुई, सूत, कपास, अलसी, सरसों, अरण्ड, गुड़, खांड, खल, चावल, मोती, धान्य, गेहूं, जौ, चना, कपूर तथा चांदी में तेजी आयेगी। सोने में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। २६ जून शुक्र कृतिका में–चांदी, सोना, रुई, सूत, कपास, कपड़ा, हींग, तिल, तेल, सरसों में मंदा होगा। २७ जून बुध मृगशिरा में–गेहूं, तिल, तेल, सरसों, उड़द में मंदा होगा। रुई में तेजी रहेगी। धान्य की कृषि उत्तम रहेगी। अच्छी वर्षा का योग है। २९ जून मंगल कृतिका में–चांदी, चावल, सूत, कपास, कपड़ा, तिल, तेल, सरसों, घी, गेहूं, राई, मसूर, मोंठ, मूंग में तेजी बनेगी। रुई तेज होकर मंदी होगी। ३० जून शुक्र वृष में, बुध मिथुन में–रुई में मंदी बनेगी। धान्यों में तेजी रहेगी। सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बरकरार रहेगा। सरसों में घटबढ़ चलेगी। ३ जुलाई मंगल वृष में, बुधास्त पूर्व में–लाल रंग की वस्तुओं, जूट, पटसन, बारदाना, रुई, कपास, सूत सभी प्रकार के अनाजों, कपूर, केसर, तेल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता आदि धातुओं तथा शेयर बाजार में तेजी आयेगी। ४ जुलाई बुध आर्द्रा में–गेहूं, जौ, चना, तिल, तेल, उडद, मूंग, मोठ के भावों में गिरावट आयेगी। ६ जुलाई सूर्य पुनर्वसु में–चांदी, सोना, कपास, बिनौला, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, अरण्ड, नील, सज्जी, मजीठ, माजूफल, केसर, कुसुम तथा सुगन्धित पदार्थों में तेजी बनेगी।

श्रावण–मास का प्रारम्भ बुधवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन गुरुवारी द्वितीया का है। शुक्ल में प्रतिपदा की हानि होकर पूर्णिमा की वृद्धि हुई है। बुध का कर्क तथा सिंह में, शुक्र का मिथुन में राशि परिवर्तन हुआ है। गुरु अपनी नीच राशि मकर में वक्री हुए हैं। रसकस पदार्थों में तेजी का योग है। **संक्रांति फल**–महंगाई बढ़ेगी, श्रावण कृष्ण गुरुवार नवमी की कर्क संक्रांति बैठी हुई प्रौढ़ावस्था में धान्यादि के भावों में समताकारक है। ९ जुलाई शुक्र रोहिणी में–नारियल, द्राक्ष, सुपारी, सोना, चांदी आदि धातुओं में मंदा रहेगा। १० जुलाई बुध पुनर्वसु में–रुई, कपास, सूत, सन, चांदी में अच्छी मंदी बनेगी। १५ जुलाई बुध कर्क में–रसकस, धान, गुड़, दूध, दही, तेल, तिल, मूंगफली, सरसों तथा सोना में तेजी आयेगी। चांदी में घटबढ़ चलेगी। रुई में मंदा होगा। १६ जुलाई सूर्य कर्क में, बुध पुष्य में–देश के कुछ भागों में अनाज के दामों में तेजी आयेगी तो कुछ भागों में गिरावट होगी। चांदी में तेजी होगी। सोना, चांदी, मूंगा तथा कीमती नगों एवं पत्थरों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद मंदा होगा। १८ जुलाई मंगल रोहिणी में–रुई, सूत, कपास, गुड़, खांड, रेशम, हींग, लाल मिर्च, सरसों, तेल, तिल में तेजी रहेगी। २० जुलाई सूर्य पुष्य में–तिल, तेल, सरसों, एल्कोहल, गुड़, खांड, ज्वार, बाजरा, सुपारी, नारियल, सोंठ, गुग्गल, सोना, चांदी में तेजी रहेगी। रुई में तेजी आकर मंदा होगा। २१ जुलाई शुक्र मृगशिरा में–गुड़, खांड, शक्कर तथा समस्त प्रकार के धान्यों में तेजी आयेगी। गेहूं, जौ, चना में मंदा रहेगा। २१-२२ जुलाई पूर्ण सूर्य ग्रहण–श्रावण की अमावस्या में घटित पूर्ण सूर्यग्रहण कश्मीर, पंजाब, मध्य प्रदेश के निवासियों के लिये कष्टकारी है। अन्य स्थानों पर धान्यों की वृद्धि कारक है। फसलों में चावल का नाश, धातुओं में सोना तथा पीतल में तेजी होगी। सुपारी तथा लाल रंग के वस्त्रों के संग्रह से लाभ होगा। ज्वार, बाजरा, मोठ, चना, सुपारी, कपास, कपड़ा, लौंग के संग्रह से दो मास के पश्चात् लाभ होगा। गेहूं, जौ, चावल, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, मजीठ में तेजी बनेगी। गेहूं के संग्रह से तीन मास में लाभ होगा। २३ जुलाई बुध आश्लेषा में, शुक्ल प्रतिपदा का क्षय–गुड़, खांड, तिल, तेल, सरसों, मूंग, उड़द, मूंगफली में तेजी बनेगी। २७ जुलाई शुक्र मिथुन में–गेहूं, जौ, चना में तेजी रहेगी। अरहर, गुवार, रुई, कपास, सूत, पटसन, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल सरसों में मंदा रहेगा। गुड़, घी में घटाबढ़ी चलेगी। २८ जुलाई बुधोदय पश्चिम दिशा कर्क में। ३० जुलाई बुध मघा नक्षत्र सिंह में–गेहूं, जौ, चना, चांदी, रुई, सूत, सूती तथा ऊनी वस्त्र, कपास में तेजी रहेगी। धान्यों के भावों में स्थिरता रहेगी। गुड़, खांड, शक्कर में मंदा आयेगा। वक्री गुरु मकर में। १ अगस्त शुक्र आर्द्रा में–अन्नों में अचानक मंदा आयेगा। ३ अगस्त सूर्य आश्लेषा में–सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सरसों, तिल, चना, उड़द में तेजी आयेगी। ६ अगस्त मंगल मृगशिरा में–चांदी एवं रुई तेज होगी। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा की वृद्धि रस, गुड़, खाण्ड, तिलहनों में तेजी देगी। रुई, सूत, कपास तथा अन्न की उपज अच्छी होने से इन वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट आयेगी।

भाद्रपद–मास का प्रारंभ शुक्रवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन शनिवारी द्वितीया का है। कृष्ण एकादशी की हानि तथा शुक्ल नवमी की वृद्धि हुई है। मंगल का मिथुन में, बुध का अपनी राशि कन्या में तथा शुक्र का कर्क में राशि परिवर्तन हुआ है। मास के पांच शुक्रवार उत्तम वर्षा का योग बना रहे हैं। व्यापारिक जिन्सों में घटाबढ़ी के बाद मंदे का रुख बना रहेगा। **सूर्य संक्रांति फल**–भाद्रपद कृष्ण द्वादशी की रविवारी संक्रांति १५ मुहूर्ति खड़ी अवस्था में धान्यादि के भावों में तेजीकारक है। गेहूं, जौ, चावल, चना, उड़द, मूंग आदि के भावों में तेजी के बाद मंदा बनेगा। ७ अगस्त बुध पू.फा. में–सभी प्रकार के अन्नों, गुड़, खांड में मंदा होगा। १३ अगस्त शनि उ.फा. में–धान्यों के भावों में तेजी आयेगी। शुक्र पुनर्वसु में–सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत में मंदा। अनाजों में तेजी बनेगी। १६ अगस्त–सूर्य मघा में–ज्वार, बाजरा, अरण्ड, द्राक्ष, मिर्च, चांदी, रुई, कपास, सरसों में तेजी होगी। १६ अगस्त मंगल मिथुन में, सूर्य सिंह में–ईख, गुड, खांड, शक्कर, अलसी, सरसों, तिल, तेल, रत्नों, रुई तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी। अनाज के भावों कुछ गिरावट आयेगी। सोना, चांदी तथा शेयर्स बाजार में तेजी बनेगी। २० अगस्त बुध कन्या में–सोना, चांदी आदि धातुओं, गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना में तेजी रहेगी। रुई में मंदा चलेगा। २१ अगस्त शुक्र कर्क में–समस्त रसकसों गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल में तेजी आयेगी। चांदी में मंदा होगा। रुई में मंदे के बाद तेजी का योग है। अच्छी वर्षा के कारण गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर में मंदा आयेगा। २२ अगस्त–भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी का क्षय मूंग, उड़द, घी में तेजी बनायेगा। २४ अगस्त शुक्र पुष्य में–गुड़, खांड, शक्कर, कपूर, पारा, हींग, लाख, चमड़े में तेजी आयेगी। रुई, सूत, सन, रेशम, ऊन एवं धान्य तेज होंगे। २६ अगस्त मंगल आर्द्रा में–गुड़, खांड, अलसी, रुई, सूत, कपास, नमक, तिल, तेल, सरसों में तेजी। १ सितम्बर सिंह राशि का अस्त शनि सोना, चांदी, शेयर्स में तेजी का योग बना रहा है। ४ सितम्बर शुक्र आश्लेषा में–चावल, मोठ, चना, धान्य, रुई में साधारण मंदा।

आश्विन–मास का प्रारंभ शनिवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन रविवारी द्वितीया का है। मास में शनि का कन्या में, शुक्र का सिंह में, वक्री बुध का सिंह में परिवर्तन हुआ है। कृष्ण में त्रयोदशी की हानि होकर शुक्ल में एकादशी की वृद्धि हुई है। बाजार में सामान्य रूप से घटाबढ़ी चलेगी। **सूर्य संक्रांति फल**–आश्विन कृष्ण द्वादशी की कन्या संक्रांति प्रगल्लभावस्था में ३० मुहूर्ति बैठी हुई धान्यों के भावों में समताकारक है। रुई, सूत, कपड़े, चांदी के भावों में गिरावट रहेगी। देश के पश्चिमी भागों में अन्न के भावों में तेजी के योग हैं। ता. ८ कन्या में वक्री बुध–सभी वस्तुओं में मंदीकारक है। परन्तु रुई में तेजी के बाद मंदा होगा। ९ सितम्बर शनि कन्या में–सोना, चांदी तथा रत्नों म मंदा आयेगा। रुई, कपास, गुड़, खांड, नमक तथा अनाजों में तेजी बनेगी। ता. १३–सूर्य उ.फा. में–सोना, चांदी, लोहा, तिल, तेल, सरसों, घी, चावल, उड़द, नारियल, सुपारी, मूंज, बांस, नील में तेजी आयेगी। वक्री बुध उ.फा. में–उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, मसूर में साधारण मंदा होगा। चांदी में तेजी होगी। रुई के भावों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ता. १५ शुक्र मघा सिंह राशि में–कन्या का वक्री बुध पश्चिम में अस्त–गेहूं, जौ, चना आदि अन्नों तथा सोना, चांदी, तांबा, मजीठ, लाल चन्दन तथा लाल मिर्च, लाल वस्तुओं, रसकस के भावों में तेजी आयेगी। किराने की वस्तुओं में तेजी बनेगी। ता. १६ सूर्य कन्या में–रुई, सूत, कपड़ा, नारियल, सुपारी, मेवा, मजीठ, लाल वस्तुओं, अरण्ड, तेल, तिल, सरसों, सोना,

चांदी, लोहा, तांबा, पीतल तथा शेयर्स बाजार में गिरावट आयेगी। १७ सितम्बर मंगल पुनर्वसु में–रुई, कपास, चांदी, नमक, खांड, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। ता. १९ आश्विन शुक्ल की शनिवारी प्रतिपदा आने वाले समय में अन्न पदार्थों में मंदे का योग बना रही है। ता. २४ वक्री बुध सिंह में–ता. २६ शुक्र पू.फा. में–गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग में मंदा रहेगा। ता. २७ सूर्य हस्त में–गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, सूत, कपास, जूट, हल्दी, हींग, धनिया, घास, लकड़ी, नमक, रुई में तेजी आयेगी। ३ अक्टूबर वक्री गुरु श्रवण में–सभी प्रकार के अनाजों, गुड़, खांड, सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी होगी।

कार्तिक–मास का प्रारंभ सोमवार से हुआ है। चन्द्रदर्शन रविवारी द्वितीया का है। कृष्ण में षष्ठी तिथि की हानि हुई है। मास में वक्री बुध का स्वयं की राशि कन्या तत्पश्चात तुला में, मंगल का अपनी नीच राशि कर्क में, शुक्र का भी अपनी नीच राशि कन्या में राशि परिवर्तन हुआ है। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी होकर मंदे का रुख रहेगा। **सूर्य संक्रांति फल**–कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की शनिवारी तुला संक्रांति बन्ध्यावस्था में खड़ी हुई ३० मुहूर्ति धान्यादि के भावों में समता कारक है। रुई, कपास, बिनौला के भावों में समता रहेगी। गेहूं, जौ, चना के भावों में समता के बाद तेजी का रुख बनेगा। ज्वार, बाजरा, मूंग, मक्का, अरहर, मोठ, उड़द में साधारण तेजी होगी। गुड़, खांड, शक्कर, चावल, चांदी के भावों में गिरावट आयेगी। तिल, तेल, सरसों, लोहा, अलसी तथा पशुओं के भावों में तेजी बनेगी। ता. ५ बुध कन्या में–सोना, चांदी आदि धातुओं, गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना में तेजी रहेगी। रुई में मंदा चलेगा। मंगल कर्क में–सभी प्रकार के धान्यों में, गुड़, खांड, शक्कर, रुई, घी, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी तथा अनाजों में तेजी आयेगी। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। ता. ६ शनि कन्या में उदय–कन्या राशि में उदित शनि, उड़द, तिलहन, शेयर्स तथा रसादि पदार्थों में तेजी देगा। धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। ता. ७ शुक्र उ.फा. में–धान्यो तथा रुई में तेजी बनेगी। सोना, चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। ता. १० शुक्र कन्या में–चावल, गुड़, खांड, ऊनी वस्त्रों में तेजी रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। कार्तिक कृष्ण की शनिवारी सप्तमी से अन्न में तेजी का योग बना है। ता. १३ बुध हस्त में–समस्त अन्नों के भावों में गिरावट आयेगी। ता. १४ मकर राशि में मार्गी गुरु–धान्यों में मंदी बनायेगा। ता. १७ सूर्य तुला में–सोना, गेहूं, जौ, चना तथा अन्य अनाजों के भावों में तेजी होगी। नारियल, सुपारी, लाल चन्दन तथा मजीठ में साधारण तेजी रहेगी। रुई, चांदी के भावों में गिरावट आयेगी। ता. १८ शुक्र हस्त में–चांदी, रुई, चावल में मंदा होगा। सोने में साधारण तेजी आयेगी। गुड, खांड में घटाबढ़ी चलेगी। ता. २१ बुध चित्रा में–रुई, चांदी में घटबढ़ चलेगी। धान्यों में तेजी आयेगी। ता. २३ गुरु धनिष्ठा में–गेहूं, जौ, चना आदि अन्नों में मंदा आयेगा। ता. २४ सूर्य स्वाति में–सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, सरसों, अलसी, राई, हींग में तेजी बनेगी। ता. २९ बुध स्वाति में–रुई में मंदा होगा। शुक्र चित्रा में–सोना, चांदी आदि धातुओं तथा धान्यों के भावों में समता रहेगी। ता. २५ बुध तुला में–गुड़, खांड, सोना, रुई में तेजी आयेगी। चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली में मंदा होगा।

मार्गशीर्ष–मास की सोमवारी संक्रांति तथा अमावस्या खप्पर योग बना रही है। भड्ली का कथन है कि जिस दिन की संक्रांति हो यदि उसी दिन की अमावस्या भी हो तो अन्न का अभाव रहता है। तथापि किसी दिन अन्य मंदीकारक योग न होने पर मास में सामान्य रूप से तेजी बनी रहेगी। **सूर्य संक्रांति फल**–मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या में सूर्य की वृश्चिक संक्रांति अति वन्ध्यावस्था में ४५ मुहूर्ति सुप्तावस्था में धान्यादि के भावों में तेजीकारक है। सोना, तांबा, लोहा, तिल, तेल, सरसों में तेजी रहेगी। गेहूं, जौ, चना, मटर, चांदी, घी में मंदा आयेगा। लकड़ी, चावल, सूत, सन, रेशमी वस्त्रों तथा गरम वस्त्रों में साधारण तेजी आयेगी। ३ नवम्बर राहु धनु में, केतु मिथुन में तथा शुक्र तुला में–सोना, गुड़, खांड में साधारण तेजी रहेगी। चांदी में घटबढ़ होगी। रुई में तेजी के बाद मंदा आयेगा। धान्यो में गिरावट रहेगी। ६ नवम्बर बुध विशाखा में–धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। रुई में तेज मंदा होगा। किन्हीं स्थानों पर अन्न तथा खाद्य पदार्थों का अभाव होगा। सूर्य विशाखा में–चांदी, चावल, गुड़, खांड, रुई, सूत, कपास, गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल में तेजी आयेगी। ता. ८ शुक्र स्वाति में–गुड़, खांड आदि रसकसों में तेजी आयेगी। अन्नों में मंदा रहेगा। ता. ९ मंगल आश्लेषा में–रुई तथा चांदी में मंदा आयेगा। सभी प्रकार के अन्नों में तेजी होगी। ता. १२ बुध वृश्चिक में–सभी प्रकार के अनाजों, घी, सरसों, तिल, तेल में मंदा होगा। सोना, चांदी के भावों में स्थिरता रहेगी। रुई में घटबढ़ चलेगी। चौपायों के भाव बढ़ेंगे। ता. १४ बुध अनुराधा में–सोना, चांदी, रुई, सूत, सन में मंदा होगा। धान्यों के भावों में समता रहेगी। ता. १६ सूर्य वृश्चिक में–अन्न के भावों में स्थिरता रहेगी। सोना, चांदी, तांबा, ऊनी वस्त्र, सरसों तथा रुई तेज होगी। लाल मिर्च, लाल चन्दन तथा लाल रंग की अन्य वस्तुओं में गिरावट आयेगी। ता. १९ शुक्र विशाखा में–धान्यों में मंदा होगा। रुई में अच्छी मंदी होगी। ता. २३ बुध ज्येष्ठा में–गुड़, खांड, घी, चावल में तेजी बनेगी। ता. २७ शुक्र वृश्चिक में–गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, ज्वार में मंदा रहेगा। रुई, अलसी, चांदी में तेजी बनेगी। गुड़ में घटाबढ़ी चलेगी। ३० नवम्बर शुक्र अनुराधा में–गुड़, खांड, चावल, नमक तथा क्षार पदार्थों में मंदा होगा। १ दिसम्बर बुध मूल धनु में–चांदी, सोना, रुई, कपास, सूत, वस्त्रों तथा रुई में घटाबढ़ी चलेगी। सोना, चांदी, धान्यों में मंदा रहेगा। पशुओं तथा शिशुओं को कष्ट रहेगा। ता. २ सूर्य ज्येष्ठा में–सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, गुड़, खांड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, अरण्ड, गूगल में तेजी बनेगी। ता. २ धनु में पश्चिम दिशा का बुधोदय सुखकारी रहेगा।

पौष–पौष का प्रारंभ गुरुवारी प्रतिपदा से हुआ है। चन्द्रदर्शन शुक्रवारी द्वितीया का है। मास में बुध का गोचर वृश्चिक के पश्चात् धनु में, गुरु का गोचर कुंभ में, शुक्र का गोचर अपनी राशि तुला के पश्चात् वृश्चिक तथा धनु में तथा राहु का प्रवेश धनु में हुआ है। मास के पांच गुरुवार व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी कर मंदे का रुख बनाये रखेंगे। **संक्रांति फल**–पौष कृष्ण की धनु संक्रांति मंगलवारी सुप्तावस्था में है। ज्येष्ठा नक्षत्र की संक्रांति सामान्यतया सभी वस्तुओं के भावों में वृद्धि करेगी। १५ मुहूर्ती संक्रांति सरसों, अलसी, तिल, तेल आदि तिलहनों में तथा रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना में तेजी कारक है। नमक रसकस, गुड़, खांड, घी, कपूर में तेजी रहेगी। ता. ४ पौष कृष्ण तृतीया का क्षय–मूंग, उड़द, घी में अत्यधिक तेजी का योग बना रहा है। ता. १० शुक्र ज्येष्ठा में–सोना, चांदी, तिल, तेल, चावल, सरसों में मंदा आयेगा। ता. ११ बुध पू.षा. में–धान्यों में मंदा होगा। सोना, चांदी में गिरावट आयेगी। ता. १६ सूर्य मूल धनु में–अन्न के भावों में गिरावट रहेगी। सोना, चांदी, रुई, तिल, तेल, कपास, सूत, अलसी में तेजी रहेगी। परन्तु पौष की अमावस्या का ज्येष्ठा नक्षत्र दुर्भिक्षकारी होने से आगे चलकर अन्न की कमी बनेगी। मास में शुक्ल की शनिवारी नवमी ता. २६ आगे सूर्य के आर्द्रा प्रवेश तक अर्थात् २१ जून तक अनाज के स्टाक से लाभ का योग बना रही है। ता. २७ से शुक्र वृश्चिक में सूर्य के साथ होगा तथा इन दोनों पर शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि होगी। इस समय में महंगाई अपने चरम पर होगी। ता. १७ शनि हस्त में–सभी प्रकार के पदार्थों में तेजी बनायेगा। ता. २० गुरु कुंभ में–सोना, चांदी, रुई, कपास, तांबा तथा कपड़े में तेजी बनेगी। ता. २१ शुक्र मूल धनु में–सूत, कपास, कपड़ा, जौ, चना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में तेजी आयेगी। सोना में घटाबढ़ी होगी। रुई में तेजी आकर मंदा आयेगा। ता. २१ कर्क का वक्री मंगल–गेहूं, अलसी के भावों में घटाबढ़ी बनायेगा। ता. २३ बुध उ.षा. में–धान्यों के भावों में गिरावट रहेगी। ता. २७ धनु का वक्री बुध–मेवा तथा फलों में तेजी देगा। ता. २९–सूर्य पू.षा. में–तिल, तेल, सरसों, गुड़, खांड, हल्दी, गूगल, चांदी, कपूर, ऊनी वस्त्रों तथा सन में तेजी बनेगी। ता. ३० वक्री बुध पू.षा. में–सोना, चांदी तथा धान्यों में तेजी। ता.

३१ शुक्र पू.षा. में–उड़द, मूंग, मोठ, तिल, तेल, सरसों, नमक में मंदा। आज का सम्पूर्ण चन्द्रग्रहण रुई में चार मास के बाद तेजी का योग बना रहा है।

माघ २०१०–शुक्र का मकर में राशि परिवर्तन हुआ है। कृष्ण में षष्ठी की हानि, त्रयोदशी की वृद्धि हुई है। पुष्य का क्षय, शुक्ल में उ.षा. की वृद्धि हुई है। चन्द्रदर्शन शनिवारी प्रतिपदा का है। मास प्रथम पक्ष में तेजी और बाद में मंदी आयेगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के बाद मंदे का रुख रहेगा। चांदी, सोना, रुई, सरसों, सूत तथा कपड़े में तेजी आयेगी। गुड़, खांड, लाल रंग की वस्तुओं मजीठ आदि में तेजी, घी मे घटाबढ़ी चलेगी। चांदी के भावों में तेजी आयेगी। वाहनों, पशु, सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं, मूंग, मटर, उड़द, घी तथा किराने की वस्तुओं, मेवा आदि में मंदी के बाद तेजी। श्रेष्ठ वर्षा से गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार आदि धान्यों का उत्पादन संतोषजनक रहेगा। रुई बाजार में तेजी का रुख रहेगा। **संक्रांति फल–**कृष्ण चतुर्दशी की गुरुवारी सूती अतिवन्ध्यावस्था की ३० मुहूर्ति संक्रांति क्रूर, बुद्धिमान, परपीड़ा प्रेमियों के वर्चस्व को बढ़ायेगी। गत मास की संक्रांति से तीसरे वार में लग रही संक्रांति घी, गुड़, खांड आदि रस का तथा कुसुंभा, मजीठ आदि लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनायेगी। ता. १० जनवरी २०१० सूर्य उ.षा. में–उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, गुड़, खांड, देशी शक्कर, रुई, कपास में घटाबढ़ी के बाद तेजी। घी, सरसों, चना में तेजी। वक्री बुध मूल में–गन्ना, गुड़, खांड, रसकस, सोना, चांदी में तेजी। धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। बुधोदय पूर्व में–मेवा, फल में तेजी बनेगी। ता. ११ शुक्र उ.षा. में–गुड़, खांड, सोना, चांदी में मंदी। रुई तथा अनाजों में तेजी बनेगी। ता. १३ शुक्र मकर में–गुड़, खांड, घी तथा अनाजों में तेजी। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद अन्त में तेजी का रुख रहेगा। ता. १४ सूर्य मकर में–गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेज, तेजी तथा धान्यों में मंदी आयेगी। बारदाने का रुख भी मंदे की ओर रहेगा। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। जलीय उत्पादों, नारियल, सुपारी तथा किराना की अन्य वस्तुओं में तेजी रहेगी। शुक्रवारी अमावस्या चांदी तथा अनाज में साधारण तेजी देगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा। १६ जनवरी शनिवारी माघ सुदी प्रतिपदा, बुध मार्गी–चावल, गन्ने में तेजी आयेगी। ता. १८ सोमवारी तृतीया–रुई तथा चांदी में तेजी का योग बना रही है। ता. २० जनवरी गुरु शतभिषा में–सुभिक्ष रहेगा। गेहूं, सोना, केसर, मजीठ, हल्दी में मंदा आयेगा। ता. २१ बुध पू.षा. में शुक्र श्रवण में–धान्यों, गुड़, खांड, शक्कर, सोना, चांदी, मूंग, मोठ में मंदा रहेगा। सोना, चांदी में मंदे का प्रमाण अधिक रहेगा। कपास, तिल, तेल, सरसों में तेजी आयेगी। रुई में साधारण मंदी आकर बाद में तेजी आयेगी। गुरुवारी षष्ठी आगामी दो मास के अन्दर सभी वस्तुओं में तेजी करेगी। ता. २६ वक्री मंगल पुष्य में–सोने में मंदा, चांदी तथा रुई में घटाबढ़ी रहेगी। ता. २९–चांदी, रुई, घी में मंदा आयेगा। ता. ३०–रुई में गिरावट आयेगी। गुड़, खांड, घी, तेल, शेयरों तथा चांदी में तेजी आयेगी।

फाल्गुन–मास में पांच रविवार हैं–बुध का मकर तथा कुंभ में, शुक्र का कुंभ में गोचर होगा। कृष्ण पक्ष में द्वितीया की हानि होकर अमावस्या की वृद्धि हुई है। द्वादशी में मूल नक्षत्र की वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी का क्षय हुआ है। सप्तमी में भरणी में वृद्धि हुई है। मृगशिरा नक्षत्र की हानि हुई है। फाल्गुन मास की रविवारी अमावस्या एवं पूर्णिमा तेजी कारक हैं। परन्तु अमावस्या के घटी पल इस दिन के नक्षत्र के घटी पल से कम होने के कारण अनाज में मंदा रहेगा।

संक्रांति फल–फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की शुक्रवारी संक्रांति ३० मुहूर्ति अतिवन्ध्यावस्था खड़ी अवस्था की जगत् में भय का नाश करने वाली, परन्तु व्यतिपात योग तथा विष्टी करण की संक्रांति जगत में भयकारक है। रात्रि के तीसरे प्रहर की कुंभ संक्रांति अशुभ फलकारी है। गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार आदि धान्यों की वृद्धि से धान्यों के भावों में कहीं तेजी तो कहीं मंदा रहेगा। धान्यों, घी तथा कपड़ा उद्योग में मंदी आयेगी। सोना, चांदी, उड़द, मूंग, ग्वार, नमक, खार, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। १ फरवरी २०१० शुक्र धनिष्ठा में–सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द में तेजी। गेहूं में मंदा आयेगा। ३ फरवरी बुध उ.षा. में–कृषि उत्पादन अच्छा होगा। धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। ४ फरवरी गुरु शतभिषा में–गेहूं, सोना, केसर, मजीठ, हल्दी में मंदा आयेगा। ६ फरवरी सूर्य धनिष्ठा में–सोना, चांदी आदि धातुओं, अन्न पदार्थों में रुई, अलसी, तिलहन में तेजी बनेगी। बुध मकर में–सोना, चांदी में तेजी बनेगी। रुई में तेजी का विशेष प्रभाव रहेगा। गेहूं, जौ, चना आदि के भावों में समता रहेगी। ता. १० वक्री शनि उ.फा. में–धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। ता. १२ शुक्र शतभिषा में–रुई, सूत, कपास, चावल, गुड़, खांड, घी, सरसों, सोना, चांदी में तेजी आयेगी। ता. १२ सूर्य कुंभ में–अन्न, रुई, पटसन, बारदाना, गुड़, खांड, शक्कर में मंदा रहेगा। नमक, तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई में तेजी आयेगी। ता. १३ बुध श्रवण में–गुड़, खांड, चावल, चना, धान्यों में तेजी। ता. १५ गुरु अस्त–चन्द्रदर्शन प्रतिपदा सोमवार में–सोना, रुई, सूत, कपड़ा तथा डाईज में तेजी बनेगी। चांदी में घटबढ़ चलेगी। अनाजों में तेजी आकर मंदे का रुख रहेगा। ता. १९ सूर्य शतभिषा में–रुई, चांदी, सोना, सूत, कपास, गेहूं, गुड़, खांड, सरसों, तिल, तेल, द्राक्ष, जायफल में तेजी आयेगी। ता. २१ बुध धनिष्ठा में–सोना, चांदी, धान्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। चावल में तेजी बनेगी। ता. २२ शुक्र पू.भा. में–रुई में तेजी बनेगी। धान्यों में गिरावट आयेगी। ता. २५ फरवरी बुध कुंभ में–सोना, चांदी आदि धातुओं तथा धान्यों के भावों में समता रहेगी। रुई, गुड़, खांड, घी, तेल में मंदा आयेगा।

चैत्र कृष्ण–मास में पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार हैं। शुक्र का अपनी उच्च राशि मीन तथा मेष में, बुध का अपनी नीच राशि मीन तत्पश्चात मेष में प्रवेश हुआ है। चन्द्रदर्शन बुधवारी द्वितीया का है। मंगल मार्गी हुए हैं। बुधोदय पश्चिम दिशा में गुरु पूर्व दिशा में उदित हुए हैं। तेल, घी में तेजी आयेगी। चांदी, सोना, सूत, पटसन, कपड़ा में मंदा आयेगा। अन्नों, गुड़, खांड में घटबढ़ चलेगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। **संक्रांति फल–**चैत्र की संक्रांति पुनः चतुर्दशी की होने से अशुभ फलकारक है। पू.भा. नक्षत्र की संक्रांति सुवृष्टि तथा सुभिक्ष जैसे शुभ फल देने वाली है। शकुनि करण की संक्रांति धनधान्य तथा पशु धन की वृद्धि कारक घी तथा धान्यों के भावों में मंदीकारक है। कृष्ण चतुर्दशी की रविवारी संक्रांति ४५ मुहूर्ति उभी कंपिता अवस्था की है। दूध तथा रसकस का उत्पादन बढ़ेगा। चांदी के भावों में तेजी आयेगी। गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार आदि धान्यों की वृद्धि से भावों में कहीं तेजी तो कहीं मंदा रहेगा। २ मार्च बुध शतभिषा में–सोना, चांदी में अच्छी मंदी आयेगी। शुक्र मीन में–सभी प्रकार के धान्यों तिलहन, तेल, सरसों, अलसी, गुड़, खांड में मंदा आयेगा। रुई, चांदी में तेजी आयेगी। ४ मार्च सूर्य पू.भा. में–रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, गेहूं, चना, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खांड, घी, चावल, ज्वार, बाजरा, गूग्गल, रेशम में तेजी आयेगी। ५ मार्च शुक्र उ.भा. में–रुई, सूत, कपास, चावल, नमक, सोना, चांदी, मोती, गुड़, खांड, कपूर में मंदा होगा। फलों में तेजी आयेगी। ९ मार्च बुध पू.भा. में–सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि धातुओं एवं धान्यों में गिरावट दर्ज होगी। रुई में घटाबढी चलेगी। ११ मार्च मंगल मार्गी, १४ मार्च बुध–सूर्य मीन में–रुई, कपास, अलसी, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी का तेजी आकर बाद में उसी अनुपात में मंदी आयेगी। गेहूं, गुड़, खांड, शक्कर में घटाबढ़ी चलेगी। अन्न में तेजी के बाद मंदे का रुख बनेगा।

उक्त व्यापारिक फल ग्रह गोचर तथा आकाशीय परिदृश्य के अनुसार है। आज का व्यवसाय केन्द्र तथा प्रदेश सरकर की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, संपादक अथवा प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं होंगे। जिन्सों की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये पत्र द्वारा सम्पर्क **आशीर्वाद भवन,** आकाशगंगा सोसायटी के पास, रीस, पो. मोहपाड़ा, ता. खालापुर, जिला रायगढ़ पिन ४१०२२२ फोन–०२१९२ ३२५०६६ मो. ०९३२६७४१७५० पर करें। टेलीफोन द्वारा सम्पर्क रात्रि ९:३० पर किया जा सकता है।

सन् २००९-१० में शेयर बाजार तेजी-मंदी गतिविधियों का सम्पूर्ण विवेचन

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य-पं. टुनटुन शास्त्री

यह स्तम्भ ग्रहीय चाल के आधार पर लिखा जा रहा है। ग्रहों की युति प्रतियुति, उदय, अस्त, वक्री-मार्गी आदि कारणों से तथा देशकाल की स्थितियां, परिस्थितियां, प्राकृतिक उत्पात आदि अन्य कारणों से बाजार तेजी की जगह मंदी, मंदी की जगह तेजी बन जाए तो आश्चर्य की बात नहीं।

जनवरी २००९-इस नूतन वर्ष का प्रारंभ गुरुवार, पंचमी तिथि, धनिष्ठा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मकर राशिगत चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग बनने से मास का प्रारंभ शेयर बाजार के लिए प्रतिकूल बनने की संभावना अधिक है। विदेशी निवेशक तथा संस्थागत निवेशकों द्वारा अचानक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. १ को बाजार खुलते ही बिकवाली बन सकती है। ता. २ को बाजार में घटाबढ़ी के बाद मंदी की धारणा ११।५५ के बाद बन सकती है। अगामी सप्ताह भी बाजार में उतार-चढ़ाव के मध्य मंदी की धारणा अधिक है। ता. ५ को मंगल पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश करने से बाजार नरम खुलकर नरम बंद होगा। ता. ६ को बाजार में उतार चढ़ाव। ता. ७ से ९ तक बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फर्मा तथा इस्पात, आटोमोबाईल, विद्युत तथा पावर कंपनियों के शेयरों में लिवाली से सुधार की संभावना अधिक है। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। ता. १२ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. १३ को अचानक बिकवाली बनने से मंदा बाजार के सूचकांक में आचर्श्यजनक गिरावट दर्ज हो सकती है। ता. १४ से १६ तक पेट्रोरसायन, विद्युत पावर, बैंक तथा इस्पात धातुओं के शेयरों में अच्छी लिवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में अच्छे सुधार की संभावना है। आगामी सप्ताह शेयर बाजार में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। ता. १३ को गुरु अस्त, ता. १५ को बुध अस्त होना, इस बाजार के लिए शुभ का प्रतीक नहीं है। ता. १९ को ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में लिवाली से सामान्य तेजी की धारणा। ता. २० को बाजार खुलते ही कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से बाजार में भारी बिकवाली बन सकती है। ता. २१ से २३ तक बाजार में घटबढ़ जारी रहेगी। जो भी रुख बनेगा वह सामान्य स्तर का होगा। कोई एकतरफा लाइन नहीं चलेगी। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना कम है। ता. २६ को बुध धनु में, २७ को शुक्र मीन में, इसी तारीख को मंगल अपनी उच्च राशि मकर में प्रवेश करने से इस सप्ताह बाजार में कई कारणों से भारी उथल-पुथल मचने से इन्कार नहीं किया जा सकता। ता. २८ को घटबढ़ होकर सामान्य सुधार। ता. २७ से २९ तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. ३० को सामान्य सुधार की संभावना।

फरवरी-यह मास रविवार, षष्ठी तिथि, रेवती नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मकर राशिगत पंचग्रही योग बनने से इस माह में भी शेयर बाजार की स्थिति अनुकूल नहीं कही जा सकती। ता. ७ को बुध मकर में, ता. १२ को शुक्र-सूर्य कुंभ में, ता. १३ को नेपच्यून कुंभ में विचरण करने से शेयर बाजार की स्थिति में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना है। मासारंभ में बाजार उतार-चढ़ाव के मध्य चलेगा। जो भी हो समय बताएगा। ता. २ को बाजार में उतार-चढ़ाव, ता. ३ को अचानक बिकवाली बनने की संभावना। ता. ४ को घटबढ़, ता. ५ से ६ तक धातुओं, बैंक, सिमेंट, पेट्रोरसायन, विद्युत, दूरसंचार तथा आटोमोबाईल कंपनियों के शेयरों में भारी लिवाली होने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना अधिक। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक है। हालांकि इस सप्ताह बैंक, धातु, इस्पात, पेट्रोरसायन, विद्युत, भारी इंजिनियरिंग में अधिक कारोबार होने के आसार। इसमें जो भी धारणा बनेगी वह गंभीर होगी। ता. ९ को अचानक भारी बिकवाली, ता. १० से १३ तक एकतरफा तेजी की लंबी लाइन बनने की संभावना प्रबल। इसमें मुनाफा अवश्य ले लेना चाहिए। आगामी सप्ताह बाजार में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। रुख जल्दी-जल्दी अदलता-बदलता रहेगा। कोई एकतरफा लाइन नहीं चलेगी। ता. १६ को बिकवाली बन सकती है। ता. १७ से २० तक बाजार व्यापक घटबढ़ के बीच चलेगा। आगामी सप्ताह बाजार में भारी उठक-पटक चलने की आशंका। ता. २३ से २५ तक शेयर बाजार में भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। बजटीय कारणों से या सरकार के दिशा निर्देश इस बाजार के अनुकूल आने की संभावना से सॉफ्टवेयर, मीडिया, दूरसंचार, बैंक, फार्मा, विद्युत, पेट्रोरसायन तथा धातुओं के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा २६ से २७ तक बन सकती है। इसमें जो भी तेजी बनेगी वह गंभीर हो सकती है। ऐसे तो बाजार को लेकर संसद में हंगामा जारी रहेगा, फिर भी बजटीय प्रवाह अनुकूल एवं आम जनता के हित में प्रस्तुत होने की संभावनाओं से शेयर बाजार की स्थिति में मासांत तक सुधार की आशा है।

मार्च-यह मास रविवार, चौथ उपरांत पंचमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. ४ को बुध कुंभ में, ता. ७ को मंगल कुंभ में, ता. १४ को सूर्य मीन में, ता. २२ को बुध भी मीन में विचरण करेंगे। मासारंभ में सूर्य-मंगल-बुध की युति कुंभ राशिगत होने से इस माह भी शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना। ता. २ को बाजार में बिकवाली दबाव बनने की आशंका। ता. ३ से पांच तक इस्पात, सीमेंट, भारी इंजीनियरिंग, बैंक, फार्मा, पेट्रोरसायन तथा आटोमोबाईल कंपनियों के शेयरों में लिवाली बनने की उम्मीद अधिक। ता. ६ को अचानक कोई गलत अफवाह या अन्य कारणों से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की अधिक संभावना। इस सप्ताह सभी ब्लूचिप कंपनियों के सभी सेक्टरों में बारी-बारी से लिवाली से एकतरफा तेजी की लंबी लाइन बनने की संभावना। ता. ९ को बाजार खुलते ही भारी बिकवाली बन सकती है। ता. १० से १३ तक बारी-बारी से सभी सेक्टरों में विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर लिवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की आशा। आगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की उम्मीद अधिक। इस सप्ताह राहू युति तथा शुक्र-सूर्य की युति शेयर बाजार में कोई एक दिशा में बाजार नहीं चलने देगा। अतः बाजार में अधिक संभावना घटाबढ़ी की ही है। इसमें सभी शेयरों में बारी-बारी से लिवाली और बिकवाली बनती बिगड़ती रहेगी। ता. १६ को बाजार नरम खुलकर नरम बंद होगा। ता. १७ से १९ तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। जबकि २० को विद्युत, पावर, पेट्रोरसायन, बैंकों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा है। आगामी सप्ताह भी बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनी रह सकती है। ता. २३ से २४ तक बाजार में बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, दूरसंचार तथा धातुओं के शेयरों में भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। अतः शेयर बाजार के सूचकांक में व्यापक गिरावट की आशंका। ता. २५ से २६ तक विद्युत, सुगर, पेट्रोरसायन, भारी इंजीनियरिंग, सीमेंट, टेक्सटाइल्स तथा इस्पात शेयरों में खरीददारी होने से सामान्य तेजी की धारणा। ता. २७ को अचानक कोई अफवाह से बाजार गिर सकता है। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना। ता. ३० से ३१ तक ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा। कुल मिलाकर इस माह में बाजार घटबढ़ की संभावनाओं में चलता रहेगा।

अप्रैल-यह मास बुधवार, षष्ठी तिथि, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल पूर्वा भाद्रपद में प्रवेश करने तथा शुक्र उदय होने से मासारंभ में बाजार तेज खुलेगा। ता. २ को

बाजार खुलते ही कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से भारी बिकवाली बन सकती है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक गिरावट दर्ज हो सकती है। ता. ३ को बैंक, सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों तथा सीमेंट, आटोमोबाइल कंपनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा अधिक। ता. ६ को बुध मेष में, ता. १३ को सूर्य भी मेष में, ता. १४ को मंगल मीन में, इसी तारीख को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १८ को शुक्र मार्गी होगा। ता. २४ को बुध वृष में स्थान परिवर्तन करेगा, फलत: शुक्र-मंगल की युति तथा उच्च राशि में सूर्य का प्रवेश इस माह इस बाजार के लिए अनुकूल लग रहा है। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक है। हालांकि इस सप्ताह विद्युत, पावर, पेट्रोरसायन, धातुओं के शेयर तथा बैंक, भारी इंजीनियरिंग कंपनियों के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना अधिक है। ता. ६ से १० तक बाजार में विदेशी निवेशकों तथा संस्थागत निवेशकों द्वारा जमकर खरीददारी किए जाने की आशा है। आगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की अधिक संभावना है। इसमें सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक के शेयरों में सुधार तो आटो मोबाइल, इस्पात, सीमेंट, भारी इंजीनियरिंग, पेट्रोरसायन कंपनियों के शेयरों में बिकवाली दबाव बनता-बिगड़ता रहेगा। ता. १३ से १५ तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। जबकि ता. १६ से १७ तक धातुओं, बैंक, मीडिया, फार्मा, सॉफ्टवेयर कंपनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा है। आगामी सप्ताह में व्यापक घटाबढ़ी के बीच बाजार चलता रहेगा। कोई एकतरफा लाइन नहीं बन पाएगी। ता. २० से २१ तक बाजार में भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. २२ से २३ तक संस्थागत निवेशकों के समर्थन से सामान्य सुधार की संभावना अधिक। ता. २४ से अचानक भारी बिकवाली बनने की संभावना लग रही है। अगामी सप्ताह बाजार हद तक सकारात्मक दिशा में चल सकता है। ता. २७ से २८ तक सभी सेक्टरों में बारी-बारी से लिवाली से तेजी की धारणा बन सकती है। ता. २९ को अचानक बिकवाली बनने की संभावना है। जबकि ता. ३० को विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर खरीददारी किए जाने की शंका है।

मई–यह मास शुक्रवार, सप्तमी तिथि, पुष्य नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. १ को गुरु कुंभ में, ता. ७ को बुध वक्री होगा। ता० ८ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. १४ को सूर्य वृष में, ता. १७ को शनि मार्गी होगा। ता. २३ को मंगल मेष में, ता. २५ को बुध भी मेष में, ता. २८ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ३० को शुक्र मेष में, ता. ३१ को बुध मार्गी होगा। फलत: इस मास में शुक्र-मंगल की युति होने से मास का प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक मालूम पड़ रही है। इस सप्ताह में बैंक, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, फार्मा तथा धातुओं के शेयरों में अच्छा कारोबार होने की संभावना अधिक। ता. ४ से ता. ८ तक बाजार एक ही दिशा में तेजी की लंबी लाइन बनने की संभावना है। हालांकि तेजी का मुनाफा इस सप्ताह में भुना लेना चाहिए। अगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना प्रतीत हो रही है। हालांकि इस सप्ताह बैंक, फार्मा, सॉफ्टवेयर, मीडिया, सीमेंट के शेयरों में बिकवाली का दबाव बनता बिगड़ता रहेगा। ता. ११ से १३ तक बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. १४ से १५ तक इस्पात, आटो मोबाइल, भारी इंजीनियरिंग, सीमेंट, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में सामान्य लिवाली से तेजी की धारणा। अगामी सप्ताह भी बाजार में व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई एकतरफा लाइन नहीं बन पाएगी। ता. १८ से बाजार में बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. १९ से २० तक संस्थागत निवेशकों के सर्मथन से पेट्रोरसायन, सीमेंट, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयर में तेजी की धारणा। ता. २१ को बाजार में अचानक बिकवाली बन सकती है। ता. २२ को बाजार में घटबढ़ जारी रहेगी। अगामी सप्ताह चन्द्रदर्शन होने से बाजार में सकारात्मक स्थितियां बनने की अधिक संभावना है। इस सप्ताह सभी सेक्टरों में बारी-बारी से लिवाली से तेजी की धारणा बने रहने की अधिक संभावना है। ता. २५ से २६ तक एकतरफा तेजी की लाइन बनना चाहिए। ता. २७ को अचानक बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. २८ से २९ तक सभी ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में भारी लिवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक ग्राफ तेजी से ऊपर उठेगा। ऐसा प्रतीत हो रहा है।

जून–यह मास सोमवार, नवमी तिथि, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मेष राशिगत मंगल-बुध-शुक्र की युक्ति होने से बाजार की स्थिति घटबढ़ पूर्ण तेजी की अधिक संभावना है। लेकिन समय-समय पर मुनाफा वसूली या किसी कारणों से बाजार कभी-कभी नीचे भी जाता रहेगा। हालांकि मास का प्रारंभ तेजी में होगा। ता. १ से ५ तक सभी सेक्टरों में बारी-बारी से लिवाली से एकतरफा तेजी की लंबी लाइन बननी चाहिए। ता. ५ को बुध वृष में, ता. १४ को सूर्य मिथुन में, ता. १५ को गुरु वक्री होगा। ता. २९ को शुक्र वृष में, ता. ३० को बुध मिथुन में स्थान परिवर्तन करेगा। मेष राशिगत शुक्र-मंगल की युति होने से अगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव का सिलसिला जारी रहेगा। ता. ८ से ९ तक बैंक, सॉफ्टवेयर, फार्मा, दूरसंचार तथा धातुओं के शेयरों में घटाबढ़ी जारी रहेगी। ता. १० से ११ तक भिन्न-भिन्न सेक्टरों में सामान्य लिवाली से तेजी की धारणा अधिक है। ता. १२ को अचानक कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। अगामी सप्ताह भी बाजार में घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई एकतरफा लाइन नहीं बन पाएगी। इसका ध्यान रखकर ही काम करना सुखद हो सकता है। अन्यथा एकबार गलत सौदा हो जाने पर इससे निकलना बड़ा मुश्किल पड़ सकता है। ता. १५ को बाजार में भारी बिकवाली बन सकती है। ता. १६ से १७ तक विद्युत, पेट्रोरसायन, शुगर, टेक्सटाइल, पावर तथा धातुओं के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा बन सकती है। ता. १८ को अचानक बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. १९ को बाजार में घटबढ़ जारी रहेगी। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में अधिक चलने की संभावना है। इसमें बैंक, सॉफ्टवेयर, पावर, विद्युत, धातु भारी इंजिनियरिंग कंपनियों के शेयरों में अधिक कारोबार होने की संभावना अधिक है। ता. २२ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. २३ को अचानक बिकवाली दबाव बन सकता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो शेयर बाजार में अच्छा सुधार भी हो सकता है। ता. २४ से २५ तक एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। ता. २६ को बाजार नरम खुलकर नरम बंद होगा। ता. २९ से ३० तक विदेशी निवेशकों द्वारा ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में भारी खरीददारी किए जाने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठेगा। ऐसी संभावना है। वैसी स्थिति में तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी बन जाए तो आश्चर्य की बात नहीं?

जुलाई–यह मास बुधवार, दशमी तिथि, चित्रा नक्षत्र, तुला राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-बुध की युति मिथुन राशिगत होने से तथा शुक्र-मंगल की युति वृष राशि में होने से इस माह में शेयर बाजार की स्थिति सुदृढ़ प्रतीत नहीं हो रही है। किसी-किसी कारण से मुनाफा वसूली या अन्य कारणों से बाजार में घटबढ़ पूर्ण धारणा नीचे की ओर जा सकती है। ता. २ को बुध पूरब में अस्त, ता. ३ को मंगल राशि परिवर्तन कर वृष में, ता. १५ को बुध तथा ता. १६ को सूर्य कर्क में, ता. २६ को शुक्र मिथुन में, ता. २७ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. ३० को बुध सिंह में इसी तारीख को गुरु वक्री होगा जो फलत: ता. १ से २ तक घटबढ़ धारणा तेजी की, परंतु बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, सेक्टरों में बिकवाली दबाव बनने की संभावना है। ता. ३ को बाजार अचानक दिशाहीन हो सकता है। जिससे बाजार के सूचकांक में भारी गिरावट दर्ज हो सकती है। अगामी सप्ताह में भारी घटाबढ़ी की धारणा में बाजार चलने की संभावना अधिक है। ता. ६ से ८ तक बाजार की धारणा उतार-चढ़ाव, परंतु ता. ९ से १० तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा बैंकों के शेयरों में भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। अगामी सप्ताह भी बाजार की धारणा अधिकांश दिशाहीन हो रही है। एक ही संभावना बाजार में राहत प्रदान कर सकती है कि कुछ कंपनियों के वित्तीय परिणाम भी आने वाले हैं। यदि ऐसा होता है तो अनुकूल स्थिति में मंदी की जगह एकतरफा तेजी बन जाए तो इसमें आश्चर्य की बात भी नहीं? ता. १३ से १४ तक धातुओं, सीमेंट, आटो मोबाइल, पावर, विद्युत, शुगर कंपनियों के शेयरों में लिवाली से समान तेजी की धारणा

बन सकती है। ता. १५ को भारी बिकवाली बन सकती है। ता. १६ से १७ तक व्यापक घटाबढ़ी फिर मंदी। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक है। इस सप्ताह पेट्रोरसायन, विद्युत, शुगर, पावर, इस्पात तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना अधिक है। ता. २० को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. २१ को अचानक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. २२ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. २३ को अचानक बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. २४ को विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर खरीददारी किए जाने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना अधिक। अगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। हालांकि फार्मा, सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, बैंक तथ धातुओं के शेयरों में समर्थन प्राप्त होना संभावित लग रहा है। ता. २७ से २८ तक अच्छी तेजी की संभावना। ता. २९ को विदेशी निवेशकों के समर्थन से सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार। ता. ३०-३१ बाजार में अफरा-तफरी या भारी घटाबढ़ी के साथ बाजार दिशाहीन भी हो सकता है। इस मास ग्रहीय चाल के अनुसार बाजार की स्थिति अधिकांश दिशाहीन प्रतीत हो रही है।

अगस्त–यह मास शनिवार, एकादशी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। इसी दिन शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। ता. २ को सूर्य अश्लेषा में प्रवेश करेगा। इस माह में ५ शुक्रवार होने से शेयर बाजार में अधिकांश धारणा तेजी सूचक। मासारंभ में शनि-बुध की युति, केतु-सूर्य की युति तथा राहु-गुरु की युति होने से मास का प्रारंभ तेजी से होगा। इस सप्ताह दूरसंचार, मीडिया, फार्मा, बैंक तथा धातुओं, पेट्रोरसायन कंपनियों के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना। ता. ३ से ५ तक बाजार घटबढ़ पूर्ण तेजी की धारणा में रहेगा। ता. ६ से ७ तक कोई गलत अफवाह या अन्य कारणों से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा, अतः सावधानी अपेक्षित है। अगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना अधिक। ता. १० को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. ११ को भारी बिकवाली बन सकती है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में गिरावट दर्ज हो सकती है। ता. १२ से १४ तक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। कोई भी एकतरफा लाइन नहीं बनेगी। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। ता. १६ को सूर्य सिंह में, इसी तारीख को मंगल मिथुन में, ता. १९ को बुध कन्या में, ता. २१ को शुक्र कर्क में, ता. २८ को शनि अस्त होगा। फलतः ग्रहीय चाल के अनुसार बुध-सूर्य-शनि की युति सिंह राशि में होने से इस सप्ताह बाजार में सुधार की संभावना अधिक। इस सप्ताह धातुओं, बैंक, पेट्रोरसायन, विद्युत, पावर, शुगर, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा कंपनियों के शेयरों में विशेष तौर पर कारोबार होने की संभावना। ता. १७ को किसी कारण से बाजार में भारी बिकवाली बन सकती है। ता. १८ से १९ तक एकतरफा लाइन तेजी की बननी चाहिए। ता. २० को व्यापक मंदी की धारणा। ता. २१ को पुनः संस्थागत निवेशकों तथा विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर लिवाली से तेजी की धारणा बन सकती है। अगामी सप्ताह में उतार-चढ़ाव की धारणा जारी रह सकती है। ता. २४ से २५ तक उपरोक्त सेक्टरों में मांग निकलने से तेजी की धारणा। ता. २६ को बाजार में बिकवाली बन सकती है। ता. २७-२८ को बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. ३१ को विदेशी निवेशकों द्वारा उपरोक्त सेक्टरों में भारी लिवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना। हालांकि ता. २८ से ३१ तक आटो, मोबाइल, सीमेंट, इस्पात, भारी इंजिनियरिंग कंपनियों के शेयरों में बिकवाली दबाव बनने की संभावना। कुल मिलाकर इस माह के शेयर बाजार की स्थिति सुदृढ़ नहीं कही जा सकती।

सितम्बर–यह मास मंगलवार, द्वादशी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ से पूर्व हीन शनि अस्त चल रहा है तथा सूर्य-शनि की युति होने से मासारंभ में इस्पात, सीमेंट, भारी इंजिनियरिंग तथा वस्तुओं के शेयरों में बिकवाली दबाव बनता रहेगा। ऐसी संभावना अधिक है। ता. १ को बैंक, सॉफ्टवेयर, विद्युत, सुगर, फार्मा, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में कुछ समर्थन प्राप्त होने से शेयर बाजार में सुधार, ता. २ से ४ तक बिकवाली दबाव बनने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक गिरावट की संभावना अधिक। ता. ८ को बुध वक्री होगा, ता. ९ को शनि स्थान परिवर्तन कर सिंह राशि से कन्या में प्रवेश करेगा। ता. १३ को बुध पश्चिम में अस्त होगा, ता. १५ को शुक्र सिंह में, ता. १६ को सूर्य कन्या में, ता. २४ को बुध सिंह में, ता. २८ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ३० को बुध मार्गी होगा। इस माह में शनि-बुध की युति कन्या राशिगत तथा शुक्र-केतु की युति कर्क में गुरु-राहू की युति, मकर राशिगत होने से बाजार की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार की संभावना अधिक। ता. ७ को बिकवाली बनने की संभावना। ता. ८ को सामान्य सुधार, ता. ९ को घटबढ़ पूर्ण मंदी की धारणा, ता. १० से ११ तक बैंक, सॉफ्टवेयर, सुगर, विद्युत, टेक्सटाइल्स तथा मिडकैप श्रेणी के शेयरों में मांग निकलने से तेजी की धारणा। अगामी सप्ताह बाजार अधिकांश सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना। ब्लूचिप कंपनियों के चुनिंदा सेक्टरो में विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर खरीददारी किए जाने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना अधिक। ता. १४ से १५ तक एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। ता. १६ को अचानक बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. १७ से १८ तक विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर लिवाली से अच्छी तेजी की धारणा। अगामी सप्ताह शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना अधिक। ता. २१ से २२ तक सभी सेक्टरों में बारी-बारी से खरीददारी होने से तेजी की धारणा। ता. २३ को भयंकर मंदी की धारणा बन सकती है। ता. २४, २५ को बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अगामी सप्ताह बाजार दिशाहीन चलने की संभावना। सभी सैक्टरों के शेयरों में भारी बिकवाली बनने की संभावना अधिक। ता. २८ सामान्य सुधार, ता. २९ से ३० तक सरकार के दिशा निर्देश अथवा अन्य कारणों से शेयर बाजार के सूचकांक में व्यापक गिरावट की आशंका रहेगी।

अक्टूबर–यह मास गुरुवार, द्वादशी तिथि, शतभिषा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ५ शनिवार और ५ रविवार होने से बाजार की स्थिति चिन्ताजनक कही जा सकती है। मासारंभ में बुध-सूर्य-शनि कन्या राशि में तथा मंगल-केतु कर्क राशि में विचरण करेंगे। ता. ४ को बुध कन्या में, ता. ५ को मंगल कर्क में, ता. १० को शुक्र कन्या में, ता. १३ को गुरु मार्गी होगा। ता. १७ को सूर्य तुला में, ता. १९ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २४ को बुध तुला में विचरण करने से शेयर बाजार की स्थिति कभी अनुकूल कभी प्रतिकूल स्थिति में बाजार चलने की संभावना अधिक। मास का प्रारंभ ता. १ से २ तक मंदी में होगा। अगामी सप्ताह में बाजार उतार-चढ़ाव के मध्य चलेगा। ता. ५ को भारी बिकवाली बन सकती है। ता. ६ से ८ तक उतार-चढ़ाव, ता. ९ को बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, पेट्रोरसायन, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में भारी लिवाली से तेजी की धारणा अधिक। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना। इस सप्ताह हस्त नक्षत्र में बुध प्रवेश करने से आटोमोबाइल, इस्पात, सीमेंट, भारी इंजिनियरिंग, पावर, विद्युत, पेट्रोरसायन तथा धातुओं के शेयरों में अधिक कारोबार होने की संभावना। ता. १२ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. १३ को भारी बिकवाली बन सकती है। जो गंभीर भी हो सकती है। ता. १४ से १६ तक एकतरफा तेजी की लाइन बननी चाहिए जो लंबी लाइन कही जा सकती है। आगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना। ता. २० को सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंकों के शेयरों में भारी बिकवाली बन सकती है। ता. २१ से २३ तक बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। हालांकि सरकार के दिशा निर्देश अथवा अन्य कारणों से बाजार दिशाहीन भी हो सकता है। सूर्य अपनी नीच राशि तुला में बुध के साथ युक्ति कर रहा है। जो इस बाजार के लिए शुभ का प्रतीक नहीं है। किसी भी समय बाजार में व्यापक गिरावट की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता। ता. २६ को सामान्य सुधार, ता. २७ से २९ तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. ३० को सामान्य सुधार की संभावना। कुल मिलाकर इस माह की ग्रह स्थिति के अनुसार शेयर बाजार में कोई एकतरफा लाइन नहीं बनेगी बल्कि बाजार उतार-चढ़ाव के मध्य चलता रहेगा।

नवम्बर–यह मास रविवार, चतुर्दशी तिथि, रेवती नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-शुक्र तुला में, राहू-गुरु मकर में, मंगल-केतु कर्क में विचरण करेंगे। इस माह में ५ मंगलवार

होने से विश्व के विकासशील राष्ट्रों में अचानक अर्थव्यवस्था गड़बड़ाएगी जिससे अन्य राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था भी गड़बड़ाने की आशंका बनी रहेगी। जिससे सोना, कच्चा तेल के मूल्यों में बेतहासा तेजी बन सकती है। जिससे भारतीय शेयर बाजार किसी-किसी कारण से प्रभावित हो सकता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो इस माह एकतरफा तेजी की लाइन भी बन सकती है। परंतु इसमें संदेह है। ता. ३ को शुक्र तुला में, ता. ११ को बुध वृश्चिक में, ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में, ता. २७ को शुक्र वृश्चिक में। इस माह में बुध-सूर्य-शुक्र की युति वृश्चिक राशिगत होने से बाजार की संभावना मासारंभ में तेजी सूचक। ता. २ को उतार-चढ़ाव, ता. ३ को मंदी, ता. ४ से ६ तक एकतरफा तेजी की लाईन बन सकती है। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। इस सप्ताह इस्पात, सीमेंट, पेट्रोरसायन, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना अधिक। ता. ९ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता. १० को भारी बिकवाली बन सकती है। ता. ११ से १३ तक एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। अगामी सप्ताह बाजार में उतार-चढ़ाव बने रहने की संभावना अधिक। ता. १६ को बाजार बिकवाली दबाव में जा सकता है। ता. १७ से २० तक बाजार में घटबढ़ जारी रहेगी। अतः सावधानी से काम करें। गंभीर रिश्क लेकर काम करने वाले अधिकतर घाटे में रहेंगे। क्योंकि इस सप्ताह कोई एकतरफा लाइन नहीं चल पाएगी। अगामी सप्ताह बाजार दिशाहीन स्थिति में चलने की संभावना अधिक। ता. २३ से २५ तक बाजार भारी बिकवाली से आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. २६ से २७ को सामान्य सुधार की संभावना। ता. ३० को बाजार में घटबढ़ जारी रहेगी। कुल मिलाकर इस माह बाजार की स्थिति चिन्ताजनक तथा अधिकांश मंदी सूचक प्रतीत हो रही है। अधिकांश ग्रह वृश्चिक राशिगत भ्रमणशील होने से यदि ऐसा नहीं होता है तो बाजार तेजी की लंबी लाइन में भी जा सकता है। यह आंकलन तो ग्रह गोचर की चाल पर आधारित है। अतः इसमें जोखिम भी स्वाभाविक है।

दिसम्बर–यह मास मंगलवार, चतुर्दशी तिथि, कृतिका नक्षत्र, वृष राशि में तथा धनु राशि में मूल नक्षत्र में बुध प्रवेश के साथ प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य वृश्चिक राशि में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ५ को सूर्य धनु में, ता. १९ को शुक्र अस्त होगा। इसी तारीख को गुरु कुंभ में, ता. २१ को मंगल वक्री होगा, ता. २७ को बुध वक्री होगा, ता. २९ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। फलतः मास का प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। ता. १ से ३ तक बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा आटोमोबाइल धातुओं के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा अधिक। ता. ४ को बाजार में अचानक बिकवाली बनने की संभावना। अगामी सप्ताह भी बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। इस सप्ताह विद्युत, पेट्रोरसायन, धातु, सीमेंट, भारी इंजिनियरिंग तथा बैंक, रसरसायन कंपनियों के शेयरों में अधिक कारोबार होने की संभावना। ता. ७ को अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. ८ से ११ तक तेजी की लंबी लाइन बन सकती है। बाजार तेज होते ही हर मुनाफा भुना लेना चाहिए। आगामी सप्ताह बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. १४ को बाजार में मंदी की धारणा। ता. १५ से १८ तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कोई भी एकतरफा लाइन नहीं चलेगी। एक ही आशा का संचार है कि सूर्य ता. १५ को धनु राशि में प्रवेश कर रहा है। जो शेयर बाजार के लिए एकतरफा तेजी सूचक ग्रह है। यदि बाजार तेजी की ओर जाता है तो एकतरफा भड़कती तेजी से भी इंकार नहीं किया जा सकता। आगामी सप्ताह बाजार दिशाहीन अथवा मंदी सूचक प्रतीत हो रहा है। ता. २१ से २३ तक एकतरफा बिकवाली दबाव बन सकता है। ता. २४ से २५ तक बाजार में सामान्य सुधार की संभावना। आगामी सप्ताह बाजार में सुधार की संभावना अधिक। ता. २८ को बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव, ता. २९ को घटबढ़ की धारणा अर्थात् २८-२९ को कुछ मंदी भी बन सकती है। ता. ३० से ३१ तक ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में भारी लिवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना। वर्ष का अंत अंतरराष्ट्रीय जगत में भी तेजी सूचक प्रतीत हो रहा है।

जनवरी २०१०–यह मास शुक्रवार, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में राहू-बुध-सूर्य-शुक्र धनु राशिगत चतुर्ग्रही योग बन रहे हैं। फलतः मास का प्रारंभ तेजी सूचक। ता. १ को बाजार तेज खुल कर तेज बंद होगा। अगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। ता. ४ से ता. ८ तक एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। इस सप्ताह विश्व के विकासशील राष्ट्रों में भी तेजी का बोलवाला दिखाई पड़ेगा। फलतः भारतीय शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना है। ता. ११ से १५ तक शेयर बाजार में घटबढ़ धारणा तेजी की। जो भी हो बाजार के रुख देख कर काम करें। आगामी सप्ताह शेयर बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। धारणा मंदी की भी हो सकती है। ता. १८ से १९ तक भयंकर मंदी, २० से २१ तक व्यापक घटाबढ़ी कुछ सुधार। ता. २२ को भारी बिकवाली की आशंका। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना। ता. २५ से २७ तक विदेशी निवेशकों द्वारा जमकर खरीददारी किए जाने से तेजी की धारणा। ता. २८ को भयंकर मंदी की आशंका तो ता. २९ को पुनः बाजार के सुधार की संभावना।

फरवरी २०१०–यह मास सोमवार, तीज तिथि, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है। इसी दिन शुक्र धनिष्ठा में प्रवेश करने से मासारंभ में बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। मासारंभ में शुक्र-सूर्य मकर राशि में तथा राहू-बुध की युति धनु राशि में होने से, ता. १ से ५ तक बाजार बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, धातु, इस्पात, सीमेंट तथा विद्युत कंपनियों के शेयरों में लिवाली से एकतरफा तेजी की लाइन। आगामी सप्ताह बाजार में घटाबढ़ी जारी रह सकती है। हालांकि ता. ५ को बुध मकर में प्रवेश करने से जहां तेजी सूचक प्रतीत हो रही है। वहीं ता. ६ को शुक्र कुंभ में प्रवेश करने से मंदी सूचक है। तेजी का पक्ष मजबूत दिखाई पड़ रहा है। जो भी हो बाजार का रुख देख कर काम करें। ता. ८ से १२ तक घटबढ़ जारी रहेगी। आगामी सप्ताह बाजार में दिशाहीनता अर्थात् व्यापक घटाबढ़ी की आशंका व्यक्त कर रहा है। ता. १५ से मंदी, १६ से १७ तक सामान्य सुधार, ता. १८ को मंदी, ता. १९ को उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। आगामी सप्ताह पुनः बाजार में सुधार की स्थिति सुदृढ़ प्रतीत हो रही है। ता. २२ से २३ तक अच्छी तेजी, ता. २४ को भारी बिकवाली की आशंका, ता. २५ से २६ तक संस्थागत निवेशकों तथा विदेशी निवेशकों की लिवाली, बजटीय अफवाह से विशेष हो सकती है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार की संभावना। कुल मिलाकर इस माह शेयर बाजार की स्थिति सुदृढ़ प्रतीत हो रही है।

मार्च २०१०–यह मास सोमवार, प्रतिपदा तिथि, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। इसी दिन बुध शतभिषा में तथा ता. २ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से शेयर बाजार की स्थिति कुछ सुदृढ़। मासारंभ में कुंभ राशिगत सूर्य-बुध-गुरु-शुक्र का चतुर्ग्रही योग बन रहा है। फलतः अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी तेजी की धारणा अधिक। ता. १ से ५ तक एकतरफा तेजी की लंबी लाइन बनने की संभावना। आगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ जारी रहने की संभावना। हालांकि सुधार भी होता रहेगा। ता. ८ से ११ तक घटबढ़ पूर्ण तेजी, ता. १२ को बिकवाली दबाव की आशंका। अगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ धारणा तेजी की। ता. १५ को सामान्य तेजी, ता. १६ से १७ तक सामान्य सुधार, ता. १८ को मंदी की धारणा, ता. १९ को उतार-चढ़ाव। आगामी सप्ताह बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक। ता. २२ से २६ तक एकतरफा तेजी की लाइन लंबी कही जा सकती है। ता. २९-३० को भड़कती तेजी। कुल मिलाकर इस माह की ग्रहीय चाल के अनुसार शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठेगा। ऐसी संभावना हो रही है।

सन् २००९-१० में मंगल का प्रवेश और जिन्सों तथा धातुओं पर तेजी-मंदी का प्रभाव

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य-**पं. टुनटुन शास्त्री**

जनवरी-२७ जनवरी को मंगल मकर राशि में प्रवेश करेगा। २६ घंटा २७ मिनट पर इसका प्रभाव **मकरे च स्थिते भौमे घृत तैल महर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यनां लोकना दुःख पीडनम्॥** घृत, डिब्बा बंद तेल, समस्त तेल, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र, गमग्वार में तेजी, जबकि सभी अनाजों में मंदी की धारणा बनती है। यह धारणा एकतरफा तो नहीं कही जा सकती परंतु घटाबढ़ी के बीच यह धारणा १४ फरवरी तक चलनी चाहिए।

फरवरी-ता. १५ को मंगल पूरब में उदय होने से रुई में तेजी, गेहूं, अलसी में भड़कती तेजी। जौ, चना, गुड़, गमग्वार मे भी तेजी की धारणा बनती है। परंतु धातुओं में व्यापक घटाबढ़ी चलती है। यह धारणा ता. ६ मार्च तक चल सकती है। किराना की वस्तुओं में अधिकांश धारणा तेजी की ओर रहेगी।

मार्च-ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से भूसुतः **कुम्भ राशि एव्यः सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायेत हार्घ लोकमध्ये तु निर्भयम्॥** मंगल इस माह में सूर्य-बुध से युक्ति कर रहा है। फलतः ता. १३ अप्रैल तक चावल, गेहूं, चना, जौ, ग्वार, बाजरा, गमग्वार, किसमिस, छुहाड़ा में भड़कती तेजी बन सकती है। रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड में तेजी, परंतु सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, क्रूड आयल, पामोलिन में प्रायः तेजी।

अप्रैल-ता. १४ मंगल मीन राशि में प्रवेश करने से तथा यह मीन राशीगत शुक्र के साथ युति कर रहा है। **मीन राशि कुजश्चैव तृण, काष्टं चतुष्पदम्। महर्घ जायते सर्वगृहाते पण्डितैः॥** अर्थात् सोना, कपास, बिनौला, रुई, तृण, काष्ठ, फर्नीचर, पशु, गमग्वार, लाल मिर्च में तेजी, तेल, तेलवाना तथा किराना की वस्तुओं में व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। यह धारणा ता. २२ मई तक चल सकती है।

मई-ता. २३ को मंगल मेष में प्रवेश करते हैं। **भूमिपुत्रो यदा मेषे सुभिक्ष सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवास्तु भवेन्नृपः॥** चावल, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, प्रत्येक जाति के अनाज के भावों में अधिकांश धारणा मंदी की बन सकती है। सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, इस्पात, मूंगा, मोती, हीरा, जवाहरात आदि रत्न, ऊनी, अन्न, रुई, कपास, पाट, पटसन, बारदाना, गुड़, खाण्ड, सूखा मेवा, रसकस पदार्थ में तेजी तथा तेल, तेलवाना, गमग्वार, लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा, धनिया, अजवायन, मेथी, लहसुन, प्याज, आलू, कंदमूल, सकरकंद आदि में घटाबढ़ी चल कर धारणा मंदी की ओर अग्रसर रहे। यह धारणा प्रायः १५ दिन में प्रलक्षित होती है।

जुलाई-ता. ३ को मंगल वृष में प्रवेश करने से **वृष राशौ यदा भौमः सर्वधान्य महर्घता। चन्दन कुंकुम वस्त्र कार्पासादि महर्घता॥** अर्थात् मास के अंतर्गत लाल वस्त्र, लाल चन्दन, लाल वर्ण की अन्य वस्तुएं सर्व प्रकार के अनाज, रुई, कपास, सूत, केसर, चन्दन, कपूर, समस्त तेल, तेलवाना, वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, इस्पात, निकिल, क्रूड आयल, पामोलिन, लहसुन, प्याज, आलू, अदरख, मेथी, धनिया, अजवायन, काली मिर्च, जीरा, लवण, इलायची, तरबूज, कमरकस, अखरोट, काजू, बदाम, मेवा आदि में अच्छी तेजी की धारणा बनती है। मंगल स्वगृही शुक्र के साथ युति कर रहा है। जिसका प्रभाव कमोडिटी मार्किट के ऊपर विशेष रूप से पड़ेगा। अधिकांश तेजी की धारणा बनती रहेगी। कुल मिलाकर इसका प्रभाव तेजी सूचक प्रतीत हो रहा है। धारणा गंभीर हो सकती है। तेजी की लंबी लाइन १५ अगस्त तक चल सकती है।

अगस्त-ता. १६ को मंगल मिथुन में प्रवेश करेगा। ता. १७ को यह शुक्र से युति कर ता. २३ तक यह दोनों ग्रह की युति बनी रहेगी। पुनः ता. २४ से मंगल ४ अक्टूबर तक अकेले मिथुन राशि में विचरण करता रहेगा। **मिथुने च यदा भौमः मेघश्च प्रबलो भवेत। आरक्त सर्वद्रव्यानि महर्घाणि भवति ते॥** फलतः गम ग्वार, ग्वारसीड, लाल मिर्च, किसमिस, छुहाड़ा, गुड़, खाण्ड, रसकस पदार्थ, कॉपर, सोना, मजीठ, अलसी, अफीम, सरसों, लहसुन, प्याज, आलू तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में तेजी। चांदी, चावल, चीनी, चाय, कॉफी में घटाबढ़ी होकर भाव खामोश बन सकता है। समस्त किराना की वस्तुओं में तथा डिब्बा बंद तेलों में अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है।

अक्टूबर-ता. ५ को मंगल कर्क में केतु के साथ युति करेगा। ता. १२ को यह चन्द्र से युति करेगा। इसी तरह मंगल लंबी लाइन के साथ मार्च २०१० तक कर्क राशि में ही विचरण करता रहेगा। यह २१ दिसम्बर को वक्री होगा। **भूमि पुत्रो यदा कर्के सर्वधान्य महर्घता। महिषीक्षु महर्घ च भवेन्नात्र संशयः॥** मंगल ने उग्र ग्रह केतु के साथ प्रवेश किया है। फलतः रुई, कपास, बिनौला, चावल, अन्य सफेद रंग की वस्तुओं में अचानक मंदी की धारणा बन सकती है। सरसों, बिनौला, अलसी, डिब्बा बंद तेल आदि में भयंकर मंदी बनती है। चांदी में घटाबढ़ी चलती है। तथा सभी प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, किसमिस, छुहाड़ा, अखरोट, लहसुन, प्याज आदि में अच्छी तेजी बन सकती है। गमग्वार, लाल मिर्च, किराना की वस्तुओं में भी अधिकांश मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, कॉपर, इस्पात, जिंक, क्रूड आयल, पामोलिन, मैन्थौल में घटाबढ़ी चल कर धारणा मंदी की ओर जा सकती है। जिन वस्तुओं में तेजी अथवा मंदी बनेगी। उसका रुख गंभीर हो सकता है। इसका ध्यान रख कर ही काम करना चाहिए। पीले रंग की वस्तुओं में किसी-किसी कारण से कुछ तेजी की धारणा बनती रहेगी।

सन् २००९-१० में संक्रांति द्वारा तेजी-मंदी का विचार

जनवरी-ता. १४ को सूर्य संक्रांति मकर राशि में बुधवार को होने से कॉटन, रेशम, ऊनी वस्त्र, किसमिस, छुहाड़ा, पोस्ता, पशु चारा, सोना, चांदी कुछ तेज होकर अंत में कुछ मंदी की धारणा बनती है। तूअर, हल्दी, जायफल, मवग, इलायची, जावित्री आदि में घटाबढ़ी चलकर फिर तेजी की धारणा बनती है। वनस्पति घी, दूध, पाउडर, घृत, चावल, नारियल, केसर, इस्पात, जिंक, मेंथा में घटाबढी चलकर मंदी की धारणा बन सकती है। समस्त तेल, तेलवाना में घटाबढ़ी चलती है। यदि हल्दी, घी में मंदी देखें तो स्टॉक करने पर आगे फाल्गुन मास में अच्छी तेजी बनती है।

फरवरी-१२ फरवरी को सूर्य संक्रांति कुंभ राशि में गुरुवार को होने से ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, लोबिया, सोना, चांदी, कॉपर, पीतल, जस्ता, सरसों, समस्त तेल, तेलवाना, बिनौला, रुई, कपास, जौ, मक्की आदि में मंदी, चना, गेहूं, जौ, ऊनी, रेशमी वस्त्र में सामान्य तेजी, चन्दन, इतर, नमक, किराना की प्रत्येक वस्तु मेवा, दाख, छुहाड़ा, काजू, अखरोट, घटाबढ़ी लेकर मंदी की धारणा बना सकते हैं।

मार्च-ता. १४ को सूर्य संक्रांति मीन राशि में शनिवार चैत्र कृष्ण पक्ष चौथ को होने से समुद्र से उत्पन्न होने वाली सभी वस्तुओं में प्रायः तेजी की धारणा बनती है। सोना, ज्वार, बाजरा, घृत, खोपरा, अलसी, राई, सरसों, मेथी, दाख, मजीठ, हींग, काली मिर्च, जीरा, सोठ, लाल मिर्च, गमग्वार, लाल चन्दन आदि में भयंकर तेजी। गुड़, खाण्ड, लोबिया, रसकस पदार्थ, तिल तेल, पोस्ता, कॉटन वस्त्र, पाट, पटसन में सम भाव, चांदी, चावल, नारियल, जायफल, लहसुन, प्याज, केसर, कस्तूरी, गेहूं, जौ, चना में कुछ घटाबढ़ी चलेगी।

अप्रैल-वैशाख कृष्ण पक्ष चौथ तिथि सोमवार को मेष संक्रांति होने से रुई, कपास, कॉटन, वस्त्र, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, डिब्बा बंद तेल, समस्त तेल, तेलवाना में तेजी की धारणा बनती है। किराना की प्रत्येक वस्तुओं में घटाबढ़ी की धारणा बनती है। जबकि सोना, चांदी, कॉपर, लहसुन, प्याज, मैन्थाल, क्रूड आयल, पामोलिन, मेवा आदि में तेजी की धारणा बन सकती है। चावल, चना, गेहूं, तूअर आदि में घटाबढ़ी जारी रहेगी।

मई-ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी तिथि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन गुरुवार को सूर्य संक्रांति वृष राशि में होने से गुड़, घृत, वनस्पति घी, रसकस पदार्थ, रुई, कपास, बिनौला, तिल, डिब्बा बंद तेल, तेलवाना, क्रूड आयल, पामोलिन, मैन्थौल निकिल, नील, विरोजा, वैक्स में तेजी, गेहूं, जौ, चना, तूअर में मंदी की धारणा बन सकती है। जबकि गमग्वार, किराना की वस्तुओं, सोना, चांदी, कॉपर में घटबढ़ जारी रहेगी।

जून--आषाढ़ कृष्ण पक्ष रविवार षष्ठी तिथि में सूर्य संक्रांति मिथुन राशि में प्रवेश करने से चावल, गेहूं, चना, मसूर, तूअर, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ आदि अनाजों में तेजी की धारणा प्रायः बनी रहती है। किराना की वस्तुओं में प्रायः तेजी की धारणा बनी रह सकती है। वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल, सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, मेवा, लहसुन आदि में घटबढ़ जारी रह सकती है।

जुलाई-श्रावण कृष्ण पक्ष नवमी गुरुवार को सूर्य संक्रांति १६

जुलाई को कर्क राशि में प्रवेश होने से गेहूं, चावल, चना, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों में भाव मंदी का बन सकता है। काली मिर्च, जीरा, लहसुन, मेथी, लवण, इलायची, धनिया, अजवायन, अमचूर में सामान्य तेजी, जबकि सोना, चांदी, कॉपर, पाट, पटसन, रुई, कपास में घटबढ़ जारी रहेगी। वायदा बाजार में कोई एकतरफा लाइन बनेगी।

अगस्त–भाद्रपद कृष्ण पक्ष दशमी रविवार १६ अगस्त को सूर्य संक्रांति सिंह राशि में प्रवेश होने से फलतः वायु अधिक चलेगी। वर्षा भी अधिक होगी। मूंग, मोठ, उड़द, चना, चावल आदि में व्यापक घटाबढ़ी चलेगी। फिर इसमें मंदी की धारणा बन सकती है। जबकि सोना, कॉपर, गमग्वार, किराना की प्रत्येक वस्तुएं, डिब्बा बंद तेल, वनस्पति घी आदि में भयंकर तेजी की धारणा बन सकती है।

सितम्बर–आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी बुधवार को कन्या संक्रांति १६ सितम्बर को होने से रुई, कपास, कॉटन, हर प्रकार के वस्त्र, घृत, चांदी, चावल, चीनी में मंदी, सोना, चांदी, कॉपर, काली मिर्च, जीरा, धनिया, अजवायन आदि में कुछ तेजी, हल्दी, मेथी, लहसुन, प्याज, गमग्वार, मैन्थौल, क्रूड आयल, पामोलिन, काजू, अखरोट, दालचीनी में घटाबढ़ी की धारणा बन सकती है। जबकि डिब्बा बंद तेल, रसकस पदार्थ में समभाव बना रह सकता है।

अक्टूबर–कार्तिक कृष्ण पक्ष १७ अक्टूबर शनिवार को तुला संक्रांति होने से गेहूं, चना, जौ के भाव में व्यापक घटाबढ़ी, घृत, गुड़, खाण्ड, चावल, चीनी में तेजी, रुई, कपास, तिल, डिब्बा बंद तेल, समस्त तेल, तेलवाना, सरसों, इस्पात, ज्वार, बाजरा, सोना, कॉपर में सामान्य सुधार, जबकि चांदी तथा किराना की वस्तुओं में मंदी की धारणा बन सकती है।

नवम्बर–मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सोमवती अमावस्या सोमवार १६ नवम्बर को वृश्चिक संक्रांति होने से मटर, तुअर, ज्वार, बाजरा, चावल, घृत, चांदी, चना, जौ, गेहूं आदि में मंदी, कोयला, पशु चारा, फर्नीचर, लकड़ी, पाट, पटसन, कॉटन, वस्त्र में कुछ मंदी हो। तिल, डिब्बा बंद तेल, सोना, कॉपर, गमग्वार, इस्पात, लाल मिर्च, काली मिर्च, धनिया, जीरा, अजवायन आदि में तेजी की धारणा बन सकती है।

दिसम्बर–पौष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी मंगलवार १५ दिसम्बर को धनु संक्रांति लगने से वनस्पति घी, घृत, तिल, समस्त तेल, तेलवाना, गेहूं, जौ, चावल, चना, रुई, कॉटन, कपास, चांदी, गमग्वार, केसर में तेजी। अरहर, मूंग, मटर, चना में कुछ मंदी। सोना, कॉपर, इस्पात में घटबढ़ जारी रहेगी।

जनवरी २०१०–माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी गुरुवार १४ जनवरी को मकर संक्रांति लग रही है। फलतः गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, घी में व्यापक मंदी, सूत, कॉटन, कपास, बिनौला, कोयला, पाट, पटसन में तेजी, सोना, चांदी तथा किराना की वस्तुओं में घटाबढ़ी। क्रूड आयल, पामोलिन, लहसुन, प्याज आदि में अच्छी तेजी बन सकती है।

फरवरी–१२ फरवरी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी शुक्रवार को कुंभ संक्रांति होने से ज्वार, बाजरा में मंदी, जौ, चना, गेहूं में घटाबढ़ी, पाट, पटसन, सोना, चांदी, कापॅर में समभाव, तेल, तेलवाना, रुई, चावल, हल्दी, किराना की वस्तुओं में तेजी की धारणा बन सकती है।

मार्च–१४ मार्च चैत्र कृष्ण चतुर्दशी रविवार को मीन संक्रांति होने से समस्त तेल, तेलवाना, इमली, गमग्वार, अनारदाना में समभाव, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, रुई, कपास, इस्पात, कोयला, अरहर, उड़द, सोना, चांदी में घटाबढ़ी चल सकती है। हालांकि किराना की कुछ प्रमुख वस्तुओं में भड़कती तेजी बन सकती है।

क्रूड आयल में उतार-चढ़ाव परंतु धारणा तेजी की ओर सन् २००९-१०

कच्चे तेलों के भावों में उतार-चढ़ाव के बावजूद सोने का भाव मजबूत बना हुआ है। अंतरराष्ट्रीय हालात और महंगाई को देखते हुए निवेशकों के लिए सोना में निवेश का रुझान अधिक दिखाई दे रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने का भाव मजबूत बने रहने से भारतीय बाजारों में भी तेजी बनी हुई है। गत वर्ष भारत में सोने की कीमत १५ फीसदी तक बढ़ी है। जबकि चांदी की कीमत २२ प्रतिशत तक बढ़ चुकी है। ई.टी.एफ. में खरीददारी बढ़ने से भी सपोर्ट मिलती है। सोना और क्रूड आयल में गंभीर तालमेल है। क्रूड आयल में गंभीर मंदी आने पर सोना में भी मंदी की धारणा गंभीर बन जाती है। जबकि क्रूड आयल में तेजी बनते ही आश्चर्यजनक तरीकों से सोना के मूल्यों में ग्राफ ऊपर उठ जाता है। अंतरराष्ट्रीय जगत में तेल उत्पादक राष्ट्रों द्वारा इनके मूल्यों में तेजी-मंदी की धारणा निर्धारित होती है। कच्चे तेलों के मूल्यों पर ही शेयर बाजार का सूचकांक तथा सोना में गंभीर तेजी-मंदी की धारणा बनती बिगड़ती रहती है।

जनवरी–मासारंभ में ता. १ से २ तक क्रूड आयल, पामोलिन में तेजी। ता. ३ को सामान्य सुधार, ता. ५ से ७ तक सामान्य सुधार, ता. ८ से ९ तक व्यापक मंदी, ता. १० को भयंकर तेजी, ता. १२ को मंदी, ता. १३ को भयंकर तेजी, ता १४ से १७ तक व्यापक मंदी, ता. १९ को तेजी, ता. २० से २१ तक तेजी, ता. २२ से २४ तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. २६ को सामान्य तेजी, ता. २७ से २९ तक भयंकर तेजी, ता. ३० से ३१ तक व्यापक मंदी की धारणा।

फरवरी–ता. २ से ३ तक तेजी, ता. ४ से ६ तक मंदी, ता. ७ को भयंकर तेजी, ता. ९ को भयंकर तेजी, ता. १० से १४ तक व्यापक घटाबढ़ी चल कर मंदी की धारणा बन सकती है। ता. १६ से २१ तक व्यापक घटाबढ़ी, परंतु धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता. २३ से २५ तक क्रूड एवं पामोलिन से आश्चर्यजनक तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. २६ से २७ तक मंदी तथा २८ को तेजी बन सकती है।

मार्च–ता. २ को तेजी, ता. ३ से ५ तक भयंकर मंदी। ता. ६ को तेजी, ता. ७ को मंदी, ता. ९ को भयंकर तेजी, ता. १० से १४ तक व्यापक गिरावट की आशंका, ता. १६ को तेजी, ता. १७ से २१ तक व्यापक घटाबढ़ी, धारणा मंदी की ओर, ता. २३ से २४ तक भयंकर तेजी, ता. २५ से २६ तक मंदी, ता. २७ को तेजी, ता. २८ को घटाबढ़ी, ता. ३० से ३१ तक सामान्य मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

अप्रैल–ता. १ को मंदी, ता. २ को तेजी, ता. ३ से ४ को मंदी, ता. ६ से ११ तक एकतरफा मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. १३ से १८ तक व्यापक घटाबढ़ी, धारणा मंदी की, ता. २० से २१ तक भयंकर तेजी, ता. २२ से २३ तक गंभीर मंदी, ता. २४ को तेजी, ता. २५ को घटाबढ़ी, ता. २७ से २८ तक मंदी, ता. २९ को तेजी, ता. ३० को पुनः मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

मई–ता. १ को भयंकर मंदी, ता. २ को तेजी, ता. ४ से ८ तक व्यापक मंदी, ता. १० को पुनः सुधार, ता. ११ से १५ तक घटाबढ़ी, धारणा मंदी की ओर, ता. १६ को भयंकर तेजी, ता. १८ को तेजी, ता. १९ से २० तक मंदी, ता. २१ से तेजी, ता. २२ से २३ तक अच्छी तेजी, ता. २५ से २६ तक मंदी, ता. २७ को तेजी, ता. २८ से ३० तक मंदी की धारणा बन सकती है।

जून–ता. १ से २ तक मंदी, ता. ३ से ४ तक घटबढ़, ता. ५ से ६ तक तेजी की धारणा, ता. ८ से १३ तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. १५ को भयंकर तेजी, ता. १६ से १७ तक मंदी, ता. १८ से २० तक तेजी की धारणा, ता. २२ को मंदी, ता. २३ को तेजी, ता. २४ से २५ तक मंदी, ता. २६ को मंदी, ता. २७ को भयंकर मंदी, ता. २९ से ३० तक मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

जुलाई–ता. १ को घटाबढ़ी, २ को सुधार, ता. ३ से ४ तक तेजी, ६ से ११ तक व्यापक तेजी की धारणा, ता. १३ से १४ तक मंदी, ता. १५ से १७ तक तेजी, ता. १८ को घटाबढ़ी, ता. २० को मंदी, ता. २१ को तेजी, ता. २२ को मंदी, ता. २३ को तेजी, ता. २४ से २५ तक मंदी, ता. २७ से ३१ तक व्यापक घटाबढ़ी चल कर मंदी की धारणा बन सकती है।

अगस्त–ता. १ को घटाबढ़ी, ता. ३ से ५ तक घटाबढ़ी, ता. ६ से ८ तक भयंकर तेजी, ता. १० को मंदी, ता. ११ से १४ तक घटाबढ़ी, धारणा तेजी की, ता. १५ को मंदी, ता. १७ को भयंकर तेजी, ता. १८ से १९ तक मंदी, ता. २० को अच्छी तेजी, ता. २१ से २२ तक मंदी, ता. २४ को घटाबढ़ी, ता. २५ को मंदी, ता. २६ से २९ तक घटाबढ़ी धारणा कुछ तेजी की, ता. ३१ को सामान्य मंदी की धारणा प्रतीत हो रही है।

सितम्बर–ता. १ से ४ तक तेजी, ता. ५ को मंदी, ता. ७ से १० तक सामान्य तेजी, ता. ११ से १२ तक मंदी, ता. १४ से १५ तक मंदी, ता. १६ को तेजी, ता. १७ से १९ तक भयंकर मंदी, ता. २१ से

२२ तक घटाबढ़ी, ता. २३ से २६ तक तेजी, ता. २८ से ३० तक भयंकर तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है।

अक्टूबर–ता. १ से २ तक तेजी, ता. ३ को मंदी, ता. ५ से ८ तक सामान्य तेजी की धारणा, ता. ९ से १० तक भयंकर मंदी की धारणा, ता. १२ को मंदी, ता. १३ को तेजी, ता. १४ से १७ तक भयंकर मंदी, ता. १९ को मंदी, ता. २० से २३ तक घटाबढ़ी, ता. २४ को घटाबढ़ी, ता. २६ से २९ तक तेजी, ता. ३० से ३१ तक मंदी की धारणा प्रतीत हो रही है।

नवम्बर–ता. २ से ४ तक तेजी, ५ से ६ तक मंदी, ता. ७ को भयंकर तेजी, ता. ९ को मंदी, ता. १० को तेजी, ता. ११ से १४ तक मंदी, ता. १६ से २० तक घटाबढ़ी, ता. २१ को मंदी, ता. २३ से २५ तक अच्छी तेजी, ता. २६ से २७ तक मंदी, ता. २८ को तेजी, ता. ३० को भयंकर तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है।

दिसम्बर–ता. १ को घटाबढ़ी, ता. २ से ३ तक मंदी, ता. ४ को तेजी, ता. ५ को मंदी, ता. ७ को तेजी, ता. ८ से १० तक मंदी, ता. १४ से १७ तक घटाबढ़ी चलकर तेजी की धारणा, ता. १८ से १९ तक मंदी की धारणा। ता. २१ से २४ तक भयंकर तेजी, ता. २४ से २५ तक मंदी, ता. २६ को तेजी, ता. २८ से २९ तक व्यापक घटाबढ़ी धारणा तेजी, ता. ३० से ३१ तक मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

जनवरी २०१०–ता. १ से २ तक मंदी, ता. ४ से ९ तक व्यापक मंदी, ता. ११ से १६ तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. १८ से १९ तक तेजी, ता. २० से २१ तक मंदी, ता. २२ से २३ तक सामान्य तेजी, ता. २५ से २७ तक मंदी, ता. २८ को तेजी, ता. २९ से ३० तक अच्छी मंदी बन सकती है।

फरवरी–ता. १ से ५ तक मंदी, ता. ६ को तेजी, ता. ८ से १३ तक घटाबढ़ी धारणा कुछ तेजी की, ता. १५ को तेजी, ता. १६ से १७ तक मंदी, ता. १८ से २० तक तेजी, ता. २२ से २३ तक मंदी, ता. २४ को तेजी, ता. २५ से २६ तक मंदी, ता. २७ को मंदी व भयंकर तेजी बन सकती है।

मार्च–ता. १ से ५ तक मंदी, ता. ६ को तेजी, ता. ८ से १३ तक तेजी की धारणा अधिकत प्रतीत हो रही है। ता. १५ से १७ तक मंदी, ता. १८ से २० तक तेजी, ता. २२ से २३ तक मंदी, ता. २४ को तेजी, ता. २५ से २६ तक मंदी, ता. २७ को तेजी, ता. २९ से ३१ तक मंदी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

सोना, क्रूड आयल में तेजी के मुख्य-मुख्य चान्स

जनवरी–ता. १५ को बुध पश्चिम में अस्त होने से सोना, क्रूड आयल, पामोलिन में तेजी की धारणा बनती है। ता. २७ को मंगल मकर में प्रवेश करने से कॉपर, सोना, क्रूड आयल में तेजी की गंभीर लाइन बनती है।

फरवरी–ता. १ को बुध मार्गी होने से कच्चे तेलों के मूल्यों में तथा सोना में सामान्य तेजी की धारणा बनती है। गुरु पूरब में होने से ता. ७ को बुध मकर में प्रवेश करने से सोना, तांबा, क्रूड आयल में तेजी की धारणा बनती है। ता. १५ को उदय होने से सोना, क्रूड आयल में घटाबढ़ी चलती है।

मार्च–ता. ७ को मंगल कुंभ में प्रवेश करने से सोना में भयंकर तेजी की लंबी लाइन बनती है। सूर्य ता. १४ को मीन में प्रवेश करने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोने में तेजी की धारणा बनती है।

अप्रैल–ता. १३ को सूर्य मेष में तथा ता. १४ को मंगल मीन में प्रवेश करने से क्रूड आयल में तेजी की लंबी लाइन बनती है। ता. १८ को शुक्र मार्गी होने से सोना, क्रूड आयल, कॉपर में तेजी बनती है।

मई–ता. १ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से क्रूड आयल, सोने में तेजी। ता. ८ को पश्चिम में अस्त होने से क्रूड आयल में तेजी बनती है। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करने से सोना, क्रूड आयल, पामोलिन में गंभीर तेजी की धारणा बनती है। ता. १७ को शनि मार्गी होने से कच्चे तेलों में अच्छी तेजी बनती है। ता. २३ को मंगल मेष में प्रवेश करने से क्रूड आयल, सोना में अच्छी तेजी बनती है। यह धारणा लंबी चल सकती है। ता. ३१ को बुध मार्गी होने से सोना, कॉपर, तेल, तेलवाना में तेजी की धारणा बनती है।

जून–ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से सोना, कॉपर, क्रूड आयल, पामोलिन में गंभीर तेजी की धारणा बनती है। ता. १५ को गुरु वक्री होने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोना, कॉपर में घटाबढ़ी चल कर धारणा तेजी की गंभीर बन सकती है। ता. २९ को शुक्र वृष में प्रवेश करने से क्रूड आयल, सोना में घटबढ़ चल कर तेजी की धारणा बनती है।

जुलाई–ता. २ को बुध पूरब में अस्त होने से ता. ३ को मंगल वृष में प्रवेश करने से ता. १४ तक सोना, कॉपर, क्रूड आयल, पामोलिन में गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है। जो तेजी की लंबी लाइन कही जा सकती है। जो एक चान्स है। ता. १६ को सूर्य कर्क में प्रवेश करने से क्रूड आयल सोना में तेजी बनती है। ता. ३० को बुध सिंह में प्रवेश करने से तथा गुरु वक्री होने से सोना, क्रूड आयल में गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है।

अगस्त–इस माह के प्रारंभ में सोना, क्रूड आयल में तेजी की धारणा बनी रह सकती है। ता. १६ को सूर्य सिंह में प्रवेश करने से तथा इसी ता. को मंगल मिथुन में प्रवेश करने से सोना, क्रूड आयल में गंभीर तेजी की धारणा बनती है।

सितम्बर–ता. १३ को बुध पश्चिम में अस्त होने से सोना, क्रूड में घटाबढ़ी, ता. १५ को शुक्र सिंह में प्रवेश करने से सोना में अच्छी तेजी बनती है। ता. १६ को सूर्य कन्या में प्रवेश करने से क्रूड आयल, पामोलिन, कॉपर में तेजी बनती है। ता. २४ को बुध सिंह में प्रवेश करने से सोना, कॉपर, क्रूड आयल में गंभीर तेजी की लाइन बनती है। ता. ३० को बुध मार्गी होने से तेजी बनती है।

अक्टूबर–ता. १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करने से मासांत तक क्रूड आयल, पामोलिन, अन्य पेट्रोरसायन, सोना, कॉपर में गंभीर तेजी की लाइन बनती है।

नवम्बर–ता. ३ को शुक्र तुला में प्रवेश करने से क्रूड में सामान्य तेजी बनती है। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश करने से सोना, क्रूड में अच्छी तेजी बनती है। जो मासांत तक जारी रह सकती है।

दिसम्बर–ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से सोना, क्रूड में तेजी की गंभीर लाइन बनती है। ता. १९ को शुक्र पूरब में अस्त होने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोना में अच्छी तेजी बनती है। ता. २१ को मंगल वक्री होने से सोना, क्रूड आयल में गंभीर तेजी की लंबी लाइन बन सकती है। जो एक अच्छा चान्स है।

सोना, क्रूड आयल में मुख्य-मुख्य मंदी के चान्स

जनवरी–ता. १२ को गुरु अस्त होने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोना में गंभीर मंदी की धारणा बनती है। ता. २७ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से कुछ मंदी की धारणा बनती है।

फरवरी–ता. ५ को गुरु उदय होने से सोना, क्रूड आयल में घटाबढ़ी चलती है। सोना, क्रूड में मंदी का योग।

मार्च–ता. २२ को बुध मीन में प्रवेश करने से क्रूड आयल तथा सोना में व्यापक घटाबढ़ी चलकर मंदी की धारणा बनती है। ता. २४ को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से क्रूड आयल, पामोलिन तथा सोना में भयंकर मंदी की धारणा बनती है।

अप्रैल–ता. १ को गुरु पूरब में उदय होने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोने में मंदी की धारणा बनती है। ता. ६ को बुध मेष में प्रवेश करने से ता. १२ तक सोना, क्रूड आयल में मंदी की धारणा बनती है।

मई–ता. १ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोना में घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की बनती है। ता. २५ को बुध मेष में प्रवेश करने से मासांत तक सोना, क्रूड में मंदी की धारणा बनती है।

जून–ता. ३० को बुध मिथुन में प्रवेश करने से सोना, क्रूड में मंदी की गंभीर लाइन बनती है।

जुलाई–ता. १५ को बुध कर्क में प्रवेश करने से कुछ मंदी की धारणा बनती है। ता. २६ को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने से कच्चे तेलों में मंदी की धारणा बनती है। ता. १६ से २१ तक गंभीर मंदी की धारणा।

अगस्त–ता. २८ को शनि अस्त होने से क्रूड आयल, पामोलिन, सोना में गंभीर मंदी की धारणा बन सकती है।

सितम्बर–ता. ९ को शनि कन्या में प्रवेश करने से सोना, क्रूड आयल में गंभीर मंदी की धारणा बन सकती है।

अक्टूबर–ता. ५ को मंगल कर्क में प्रवेश करने से मंदी की धारणा बनती है। ता. ५ से गंभीर मंदी की धारणा।

नवम्बर–ता. १९ को गुरु कुंभ में प्रवेश करने से सोना में मंदी की धारणा बनती है। ता. १९ को सूर्य अनुराधा में प्रवेश करने से ता. २९ तक गंभीर मंदी की धारणा बन सकती है।

वर्ष २००९-१० में शेयर बाजार का संभावित रुख

प्रवीन कुमार जैन

पूर्व की भाँति इस वर्ष भी हम प्रत्येक मंगलवार के लिये शेयर बाजार का आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है। हम भी इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि मंगल ग्रह का शेयर बाजार पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अब वर्ष २००९-२०१० के लिये ग्रह नक्षत्रों के गोचर से टैक्सटाईल काटन जूट, मिल्स के शेयर, कन्फैक्शनरी, लैड, सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, फार्मिंग, बिल्डिंग, लेदर रियल एस्टेट, धातुएं, मारबल सैक्टर के शेयरों में अत्याधिक उतार-चढ़ाव बनेगा।

३१ मार्च २००९ : एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, ब्रिवरीज (यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान), भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केन्टर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स में तेजी रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिब्सि लैबोरेट्रीज, डा रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, गोड्फ्रे फिलिप्स, आई टी सी, इलेक्ट्रिक गुड्स, ऐयरास्पेश, टेली कम्यूनिकेशन, ऐरियल नेवीगेशन, फिल्म एण्ड ऐन्टरटेनमेन्ट इण्डस्ट्रीज, ऐयरेटड वाटर, एल्यूमीनियम सैक्टर लोजिस्टिक एवं ट्रान्सपोर्ट कम्पनीज के शेयर्स के शेयरों में गिरावट रहेगी।

७ अप्रैल : ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेंट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड्को खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केन्टर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास तथा टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिब्सि लैबोरेट्रीज, डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क के शेयरों में गिरावट रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी।

१४ अप्रैल : हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में तेजी रहेगी। टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड्को खेतान, गोड्फ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, ग्लैनमार्क फार्मा के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी।

२१ अप्रैल : ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, हीरो होंडा, मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में तेजी रहेगी। टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी के शेयरों में गिरावट रहेगी। मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईसेंज, टोरेन्ट फार्मा, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, यूनियन बैंक आफ इण्डिया, विजया बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया के शेयरों में घटाबढ़ी चलती रहेगी।

२८ अप्रैल : जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स, वीडियोकोन, ए बी बी, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, टी बी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शान्स, एन डी टी वी, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में तेजी रहेगी। आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरविन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिब्सि लैबोरेट्रीज, डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, वाईथ, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट रहेगी। अपोलो टायर्स, एम आर एफ, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, वैलस्पन इण्डिया के शेयरों में घटाबढ़ी चलती रहेगी।

५ मई : एस्सार स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, लार्सन एण्ड टूब्रो, बलरामपुर चीनी,

धामपुर शुगर, मवाना शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल के शेयरों में गिरावट रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास के शेयर्स अपरिवर्तनीय रहेंगे। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, वैलस्पन इण्डिया, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम लैब्स, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। १२ मई–हिन्दुस्तान कापर, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, टिन प्लेट, निटको टाईल्स, वीडियोकोन, ए बी बी, सीमेन्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, भारती टेलीवेन्चर्स, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी जी टेलीफिल्मस में तेजी रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, अपोलो टायर्स, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, कोटक महिंद्रा बैंक, एस बी आई, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, टाटा काफी, टाटा टी. विलियमसन टी, जय श्री टी के शेयरों में गिरावट रहेगी। १९ मई : बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर में तेजी रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया में घटबढ़ चलेगी। अपोलो टायर्स, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला के शेयरों में गिरावट रहेगी। २६ मई : वीडियोकोन, अस्तरा माइक्रो, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, हिन्दुस्तान कापर, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, रुचि सोया, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, निटको टाईल्स, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट रहेगी। आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी।

२ जून : वीडियोकोन, ए बी बी, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, इंड स्विफ्ट लैब, इंड स्विफ्ट, इप्का लैब, जे बी कैप एझड फार्मा, ल्यूपिन, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो हौंडा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी रहेगी। टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेताने, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, जिन्दुस्तान कापर, कोटक महिंद्रा बैंक, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स, एस बी आई, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। ९ जून : ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, इंड स्विफ्ट लैब, इंड स्विफ्ट, इप्का लैब, जे बी कैप एझड फार्मा, ल्यूपिन, भारती टेलीवेन्चर्स, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, जी टेलीफिल्मस, ऐयरेटड वाटर, एल्यूमीनियम सेक्टर वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, ऐयरास्पेश लोजिस्टिक एवं ट्रान्सपोर्ट कम्पनीज के शेयरों में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एस बी आई, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। १६ जून : भारत बिजली, हैवेल्स इण्डिया, सीमेन्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एस बी आई, साउथ इण्डियन बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर, एण्ड गैम्ब्ल, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी के शेयरों में तेजी रहेगी। आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। हिन्दुस्तान जिंक, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। २३ जून : अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, कोटक महिन्द्रा बैंक, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, बजाज आटो, हीरो हौंडा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के

शेयरों में तेजी रहेगी। एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड़िको खेतान, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। **३० जून :** अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, यूनियन बैंक आफ इण्डिया, विजया बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलेम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केड़िला हैल्थ केयर, सिप्ला, अशोका लेलेण्ड, बजाज आटो, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी के शेयरो में तेजी रहेगी। बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी।

७ जुलाई : अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एस बी आई, सिंडिकेट बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, फुलफोर्ड इण्डिया, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, इंड स्विफ्ट लैब, इंड स्विफ्ट, इप्का लैब, जे बी कैप एज्रड फार्मा, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा के शेयरों में तेजी रहेगी। क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, इंड स्विफ्ट लैब, इंड स्विफ्ट, इप्का लैब, अव्या ग्लोबल कनेक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, निटको टाईल्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। **१४ जुलाई :** एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, ए सी सी सीमेंट, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, इण्डस इण्ड बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, बजाज हिन्दुस्तान, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल के शेयरों में गिरावट रहेगी। हिन्दुस्तान कापर, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड़िको खेतान के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। **२१ जुलाई :** अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स, पंजाब नेशनल बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, महावीर स्पिनिंग मिल्स, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, आरती ड्रग, एलेम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केड़िला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड़िको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, आसी इण्डिया ग्लास, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, मारुति उद्योग, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। **२८ जुलाई :** सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिब्सि लैबोरेट्रीज, डॉ. रेड्डीज लैब्स, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, इण्डस इण्ड बैंक, जे एण्ड के बैंक, एस बी आई के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड़िको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, सीमेन्स, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। आसी इण्डिया ग्लास, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, हिन्दुस्तान कापर के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी।

४ अगस्त : एशियन होटल्स, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेड़िको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, आसी इण्डिया ग्लास, एस्सार स्टील, सेल, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गुड्स, गोड्फ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरो में तेजी रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, इण्डो रामा सिन्थैटिक, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, जी टेलीफिल्मस। भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिब्सि लैबोरेट्रीज, डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड

फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवेन लाईफ साईन्सेज, टौरेन्ट फार्मा, वाईथ के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। **११ अगस्त :** सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गुड्स, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी आयेगी। ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, वीडियोकोन, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, इंड स्विफ्ट लैब, इंड स्विफ्ट, इप्का लैब, जे बी कैम एण्ड फार्मा, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम के शेयरों में गिरावट रहेगी। **१८ अगस्त :** सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, आसी इण्डिया ग्लास, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, टैक्समेको, आल्सटम प्रोजेक्टस, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। **२५ अगस्त :** सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी आयेगी। भारत बिजली, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, वीडियोकोन, ए बी बी, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस। भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, बैंक आफ बरोदा, सिटी यूनियन बैंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एसी बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग के शेयरों में साधारण कारोबार होगा।

१ सितम्बर : सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी आयेगी। क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत बिजली, आरती ड्रग, एलैम्बिक, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। **८ सितम्बर :** गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज के शेयरों में तेजी आयेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केन्टर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुणा शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी में घटबढ़ चलेगी। **१५ सितम्बर :** अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिव्हि लैबोरेट्रीज, डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम सैक्टर के शेयरों में गिरावट रहेगी। ए सी सी सीमेंट, अंबुजा सीमेंट ईस्टर्न, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। **२२ सितम्बर :** टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, ब्रिवरीज (यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान), अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, इण्डो रामा सिंथेटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शमरी, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में गिरावट रहेगी। हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, निटको टाईल्स के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। भारत अर्थ मूवर्स, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, श्री सीमेंट, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, हिन्दुस्तान कापर के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **२९ सितम्बर :** सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में तेजी रहेगी। एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे एस डब्ल्यू, ए सी सी सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम के शेयरों में गिरावट रहेगी।

६ अक्टूबर : शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, वीडियोकोन, ए बी बी, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्टोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, मार्कसेन फार्मा, टौरेन्ट फार्मा, भारती टेलीवेन्चर्स, बजाज आटो, हीरो होंडा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम,

हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। टाटा स्टील, उत्तम स्टील, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, ई आई डी कन्फैक्शनरी, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टारलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। **१३ अक्टूबर :** एशियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, मर्कैटर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, आसी इण्डिया ग्लास, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **२० अक्टूबर :** अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, एच एम टी, महाराष्ट्र स्कूटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, शिपिंग कारपोरेशन, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में गिरावट रहेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, टौरेन्ट फार्मा, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **२७ अक्टूबर :** वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, एच एम टी, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी।

३ नवम्बर : एस्सार स्टील, मुकुन्द, सेल, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, आल्सटम प्रोजेक्टस, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरो में तेजी रहेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम लैब्स, वाईथ, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **१० नवम्बर :** टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, टैक्समेको, एल जी बालाकृष्णन, आल्सटम प्रोजेक्टस, इंजीनियर्स इण्डिया, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आरती ड्रग, एलैम्बिक, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, वाईथ, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में गिरावट आयेगी। यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, ए बी बी, भारत बिजली, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स के शेयरों में घटाबढ़ी चलेगी। **१७ नवम्बर :** आरती ड्रग, एलैम्बिक, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बाला जी टेली फिल्मस, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों का कारोबार साधारण रहेगा। **२४ नवम्बर :** डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्युफिक बायो साईन्सज, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में साधारण कारोबार होगा।

१ दिसम्बर : जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, लार्सन एण्ड टूब्रो, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास

एल्यूमीनियम के शेयरों में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, महावीर स्पिनिंग मिल्स, वैलस्पन इण्डिया, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्त्रा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **८ दिसम्बर :** आलोक इण्डस्ट्रीज, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, ई आई डीन कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, ग्लैनमार्क फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, पंजाब के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्त्रा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। **१५ दिसम्बर :** एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन के शेयरों में तेजी रहेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, अस्त्रा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। धामपुर शुगर, मवाना शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, हिन्दुस्तान कापर, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, सन फार्मा, अस्त्रा माइक्रो, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स के शेयरों में गिरावट आयेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल के शेयरों में साधारण कारोबार होगा। **२२ दिसम्बर :** बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फेक्शनरी के शेयरो में तेजी रहेगी। अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स, पंजाब नेशनल बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, भारती टेलीवेन्चर्स, बजाज आटो, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। ए बी बी, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, भारती टेलीवेन्चर्स, अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **२९ दिसम्बर :** एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कारपोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास के शेयरों में तेजी रहेगी। महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, निकोलस पीरामल, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, श्री टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एरियल नेवीगेशन, लोजिस्टिक एवं ट्रांसपोर्ट शेयर्स, फिल्म इण्डस्ट्री ऐयरटेड वाटर, टिन रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कापर, जिंक सैक्टर के शेयरों में गिरावट आयेगी।

५ जनवरी : एशियन होटल्स, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, आसी इण्डिया ग्लास, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **१२ जनवरी :** रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होण्डा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **१९ जनवरी :** एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, अरबिन्दो फार्मा, सिप्ला, डाबर फार्मा, टौरेन्ट फार्मा, यूनिकैम लैब्स, वाईथ, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **२५ जनवरी :** टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, आल्सटम प्रोजेक्टस, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, हिन्दुस्तान जिंक, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी आयेगी। एस्सार स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, टैक्समेको, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन

एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, आरती ड्रग, एलैम्बिक, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, युनिकैम लैब्स, वाईथ, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी।

२ फरवरी : वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, सीमेन्स, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी आयेगी। एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा स्टील, ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत) गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इंजीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। आरती ड्रग, एलैम्बिक, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम्प लैब्स, वाईथ, एशियन होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, आसी इण्डिया ग्लास का कारोबार साधारण रहेगा। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **९ फरवरी :** अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी रहेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, निकोलस पीरामल, टौरेन्ट फार्मा, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, हिन्दुस्तान कापर के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **१६ फरवरी :** अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी रहेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। डा. रैड्डीज लैब्स, एल्डर फार्मा, एफ डी सी, फुलफोर्ड इण्डिया, ग्लैनमार्क फार्मा, ग्यूफिक बायो साईन्सज, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। **२३ फरवरी :** अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, सिटी यूनियन बैंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी रहेगी। बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, आरती ड्रग, एलैम्बिक, टौरेन्ट फार्मा, यूनिकैम लैब्स, वाईथ के शेयरों में गिरावट आयेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी।

२ मार्च : अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, फैडरल बैंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, एस बी आई, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्ब्ल सैक्टर, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी १८, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, बाटा इण्डिया के शेयरों के शेयरों में तेजी रहेगी। बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा के शेयरों में गिरावट आयेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम, इलैक्ट्रानिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, के शेयरों में घटबढ़ चलेगी। **९ मार्च :** एशियन होटल्स, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, आसी इण्डिया ग्लास, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो होंडा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमीनियम, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, बाटा इण्डिया के शेयरों में तेजी रहेगी। टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में गिरावट आयेगी। वीडियोकोन, ए बी बी, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल के शेयरों में घटबढ़ चलेगी।

शेयर बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियां आदि पर निर्भर करता है। व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये लेखक से **आशीर्वाद भवन,** आकाशगंगा सोसायटी के पास, रीस, पोस्ट मोहपाड़ा, ता. खालापुर जिला रायगढ़ पिन ४१०२२२ फोन ०२१९२ ३२५०६६ मो. ०९२६७४१७५० पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रवीन कुमार जैन आशीर्वाद भवन, आकाशगंगा सोसायटी के पास, रीस, पो. मोहपाड़ा, ता. खालापुर, जिला-रायगढ़ (महाराष्ट्र) पिन-४१०२२२, फोन-०२१९२ ३२५०६६ मो. ०९३२६७४१७५०

सन् २००९-१० में वर्ष लग्न और ग्रह मंत्री परिषद् द्वारा तेजी-मंदी का अनुमान

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य-पं. टुनटुन शास्त्री

वर्ष लग्न कुण्डली व ग्रह मंत्री परिषद की स्थिति की लग्न कुण्डली

८
६
९
७
५ श.
१० रा.गु.
४ के.
११ मं.
१
३
१२
बु.चं.सू.शु.
२
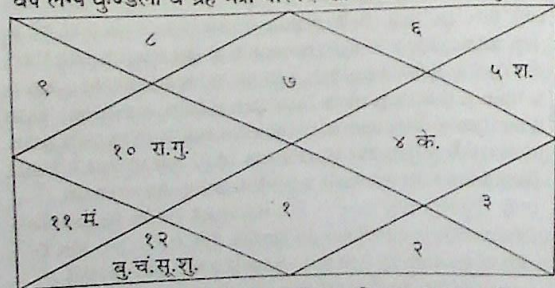
तुला लग्ने मध्यदेशे छत्र भंगश्च विग्रहः धान्यस्य विक्रयः प्राच्यं छत्रभंग उपद्रव दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वतपमेघ प्रवर्षणम् पश्चिमायां महायुद्धं दष्ट भीतिर्महता दक्षिणस्या सुख लोकेर्भिक्षं चोतरापथे मासद्वयं पश्चिमयां किंचिदुत्पाता संभव वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्ष नवमासिकम्।

इस वर्ष तुला लग्न में वर्ष प्रवेश हो रहा है। फलतः प्रांतीय सरकारों में क्षत्रभंग होने की सम्भावना बनेगी तथा विग्रह होते रहेंगे। धान्य के मूल्यों में तेजी बनेगी। जगह-जगह दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। वायु वेग बना रहेगा। वर्षा कम होगी। अंतरराष्ट्रीय जगत में पश्चिमी राष्ट्रों में महायुद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। सर्पों के उत्पात से जन-जीवन शोकाकुल हो सकता है। लगभग सभी खाद्य पदार्थों में तेजी की धारणा बनी रह सकती है। दक्षिण में सुख उत्तर में दुर्भिक्ष की स्थिति बन सकती है। कुल मिलाकर इस वर्ष चावल, चीनी, समस्त तेल, तेलवाना, किराना की प्रमुख वस्तुओं गुड़, खाण्ड, हल्दी, गमग्वार, मेवा, अमचूर, मखाना, मगज तरबूज, कमरकस, काजू, अखरोट, गेहूं, चना, तूअर, उड़द, मूंग, मोठ, पाट, पटसन, तांबा, सोना, चांदी, क्रूड आयल, पामोलिन, कॉपर, निकिल, विरोजा, इस्पात, जिंक आदि में किसी-किसी कारण से तेजी की धारणा प्रस्फुटित होती रहेगी। कहीं अतिवृष्टि तो अधिकतर प्रदेशों में अनावृष्टि से किसान चिंतित दिखाई पड़ेंगे। मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न होगा। साथ ही दैवी आपदाओं, अराजक गतिविधियों की वृद्धि से सामान्य जनजीवन की कठिनाईयां बढ़ेंगी। राजा एवं मंत्री परस्पर मित्र ग्रह नहीं हैं। इस वर्ष मंत्रि मण्डल में शुक्र एवं चन्द्रमा को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। बेमेल गठबंधन की खिचड़ी में ऐसे तत्वों को महत्व मिला है। जो दलित पिछड़े कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। उच्च राजनीतिक महत्व का क्षतिपूर्ति है तो सामाजिक समरसता को बिगाड़ कर एक पक्षीय निर्णय लेने की राजनीतिक दलों की बाध्यता सामने स्पष्ट होगी। विदेश नीति के मुद्दा पर राष्ट्रीय सोच को महत्व मिलेगा और विश्व मंच पर राष्ट्र की उज्जवल भविष्य की रचना में अधिकांश महत्वपूर्ण गरिमा बढ़ेगी। आर्थिक मुद्दों पर भी व्यापार संतुलन की स्थिति मजबूत होगी। राजस्व बढ़ाने की गति मिलेगी परंतु किराना की वस्तुओं, अखाद्य तेलों, सोना, कॉपर, तांबा, खाद्य सामग्रियों की अनुपलब्धता या कोई अन्य कारणों से इनके मूल्यों में किसी-किसी कारण से तेजी की धारणा बनी रह सकती है।

राजा शुक्र फलम्-जिस वर्ष में राजा शुक्र होते हैं। उन वर्षों में पशुचारा, सभी तरह के अनाज, घास की उत्पति अच्छी होती है। वर्षारंभ में चावल आदि अनाजों में मंदी की धारणा बनती है। परंतु अंत में घटाबढ़ी चलकर तेजी की धारणा बन जाती है। फल, मेवा, रसकस पदार्थों में भी घटाबढ़ी चल कर मंदी की धारणा बनती है। यह ध्यान रहे कि गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, तूअर आदि में घटाबढ़ी चल सकती है। लेकिन चावल की अनुपलब्धता अथवा अचानक निर्यात मांग निकलने से इसमें तेजी की धारणा अच्छी बन सकती है। फलतः चावल का संग्रह भविष्य में लाभकारी हो सकता है। सर्वत्र उग्रवादी तत्व सुख शान्ति, भंग करने का पुरजोर प्रयास जारी रखेंगे। आर्थिक औद्योगिक तेजी का असर दिखेगा। विश्व शान्ति की दिशा में सार्थक प्रयास जारी रहेंगे। रोगों पर नियंत्रण हेतु समाज कल्याण संबंधी कार्यक्रमों की प्रचुरता जगह-जगह देखने को मिलेगी। धार्मिक अध्यात्मिक जाति मजहब को लेकर जगह-जगह दंगा फसाद भयंकर रूप धारण करती रहेगी। जिसका नियंत्रण संभावित नहीं है।

मंत्री चन्द्र फलम्-इस वर्ष के राजा एवं मंत्री परस्पर एक दूसरे के शत्रु ग्रह हैं। फलतः मंत्री परिषद् में सामंजस्य बनाए रखने के लिए कठिन प्रयास होते रहेंगे। परंतु सामंजस्य अंततः सफल नहीं हो पाऐगा। अनेक विषमताओं विसंगतियों का सामना करना पड़ेगा। सीमा विवाद, आतंकवादी गतिविधियों को लेकर पड़ोसी राष्ट्रों से तनाव बना रह सकता है। अनाचार में बढ़ोतरी होगी, परंतु व्यापार जगत में तथा कमोडिटी जगत में सफेद रंग के पदार्थ अधिक उत्पन्न होने से रुई, कपास, कॉटन, ऊनी वस्त्र, चांदी, तिल आदि के मूल्यों में मंदी की धारणा बन सकती है। परंतु लहसुन, प्याज, आलू, मेथी, अजवायन, काली मिर्च, जीरा, गमग्वार, लाल मिर्च, गुड़, खाण्ड, अमचूर, इमली, घृत, डिब्बा बंद तेलों के मूल्यों में तेजी की धारणा बनी रह सकती है।

सस्येश गुरु फलम्-पशुचारा, बिनौला, खल आदि में मंदी की धारणा बनती है।

धनेष-मंगल फलम्-होने से कहीं अधिक कहीं कम वर्षा होती है। जिससे कृषक वर्ग चिंतित होते हैं। चावल, घृत, वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल, गुड़, खाण्ड, चीनी, चना, कॉफी, इस्पात, गमग्वार, लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा तथा गन्ना में तेजी की धारणा बनती है। क्रूड आयल, पामोलिन, सोना, चांदी, कॉपर, चावल आदि में तेजी की धारणा बन सकती है। परंतु विश्व के अधिकांश राष्ट्रों में जल संकट एवं आंतकवादी घटनाओं में व्यापक जन धन की हानि भी संभावित है। राष्ट्रनायकों की कठोर दंण्डात्मक कार्रवाई के बाद भी इस पर नियंत्रण संभावित प्रतीत नहीं होता।

मेघेश सूर्य फलम्-जौ, चना, चावल, गुड़, खाण्ड, गन्ना, सोना, चांदी, कॉपर आदि के मूल्यों में प्रायः मंदी की धारणा बनती बिगड़ती रहेगी। वर्षा की स्थिति समय अनुकूल नहीं होगी। कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होगा। साथ ही धन जन की हानि भी सम्भावित हो सकती है। राजनैतिक लोग अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए गलत निर्णयों का सहारा लेंगे। भिन्न-भिन्न रोगों के प्रकोप से जनता कष्ट में रहेगी। म्लेक्ष कारक प्रवृतियों को बढ़ावा मिलेगा। अपराध में बेतहासा वृद्धि हो सकती है।

रसेश शनि फलम्-सुख, शान्ति, सद्भाव का वातावरण अशांत बनेगा। जगह-जगह लड़ाई-झगड़े, मजहबी फिसाद, धर्म जाति की लड़ाई, अमीर-गरीब की लड़ाई, झगड़े, विकराल रूप धारण कर सकते हैं। कठिन रोगों की बेतहासा वृद्धि होने से जन जीवन कुंठा ग्रस्त दिखाई देगा। मौसम संबंधी व्यतिक्रम एवं रोग समवाहक कीटों की वृद्धि से वृक्षों में भी निष्फल पुष्प लगेंगे। जो विघटित हो जाएंगे। वर्षा की कमी से कृषि कार्य प्रभावित होगा। रसकस पदार्थ तथा किराना की वस्तुओं में तेजी होगी।

निरसेश गुरु फलम्-निर्यात व्यापार बढ़ने से पारदेशिक व्यापार संतुलन पक्ष में रहेंगे। लौह धातुओं के मूल्य में वृद्धि होगी। हस्तशिल्प, रसायन, खनिज तेलों के मूल्यों में वृद्धि के साथ ही व्यापार औद्योगिक उत्पादन में जन प्रदर्शन से इसके उत्पादन पर असर पड़ेगा। हल्दी, पीले वस्त्र, सोना, कॉपर के मूल्यों में मंदी की धारणा स्पष्ट दृष्टि गोचर हो सकती है।

धनेश बुध फलम्-सट्टेबाजी के कारण खाद्यान्नों के साथ ही जीवन उपयोगी वस्तुओं में असर पड़ेगा। व्यापारिक वस्तुओं के मंदी होने पर इसका संग्रह करना भविष्य में लाभकारी हो सकता है।

दुर्गेश रवि फलम्-राजा-प्रजा में सुख शान्ति का संचार होता है तथा हाजिर एवं वायदा बाजार में व्यपारीगन प्रायः लाभ प्राप्त करते हैं। इनके द्वारा किया गया निवेश प्रायः लाभकारी होते हैं। देशकाल में शीत युद्ध जोर पकड़ सकता है। आपसी संबंधों में दुराव-कटुता की भावना पनपती है। आतंकवादी, अराजकतावादी प्रवृतियों का जोर दवदबा बढ़ेगा। कृषि की हानि तथा जिन्सों, धातुओं की अनुपलब्धता, संग्रहीत अन्न भण्डार को नुकसान पहुंचने से व्यापार जगत् में व्यापक तेजी की धारणा बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। समयानुकूल वर्षा का अभाव बना रहेगा। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से किसान चिंतित दिखेंगे। कुल मिलाकर वर्षा की स्थिति संतोषप्रद नहीं रहेगी। जिसका कुप्रभाव निश्चित तौर पर कृषि कार्यों पर पड़ेगा।

निष्कर्ष-इस वर्ष चावल, चीनी, गुड़, हल्दी, काली मिर्च, जीरा, सौफ, मूंग, मोठ, लहसुन, प्याज, आलू, मैन्थोल, क्रूड आयल, पामोलिन, रसरसायन, जिंक, इस्पात, सोना, चांदी, कॉपर, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, नारियल, सुपारी आदि में प्रायः तेजी की धारणा किसी भी समय बनने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। जब भी इन सामग्रियों का वास्तविक मूल्य से कम मूल्य बने तो इसका संग्रह करके चलना लाभप्रद हो सकता है। सितम्बर तक सभी तेल तेलवाना, वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल के मूल्यों में घटाबढ़ी चल कर समय पर तेजी की धारणा बनती बिगड़ती रहेगी। धनिया, अजवायन, मेथी, अमचूर, गमग्वार, इमली, किशमिश, छुहाड़ा, राजमा, पोस्ता, अखरोट, चिरोंजी, मगज तरबूज आदि में कोई एकतरफा लाइन नहीं बन पाएगी। इनके मूल्यों में घटाबढ़ी अधिक होगी। मादक पदार्थ, चीनी, गुड़, गन्ना आदि के मूल्यों में अधिक धारणा तेजी की प्रतीत हो रही है। रुई, कपास, बिनौला, कॉटन, पाट, पटसन आदि के मूल्यों में अधिकांश धारणा तेजी की रह सकती है। इनके द्वारा निर्मित समग्रियों के मूल्यों में बेतहासा तेजी की धारणा बन सकती है।

व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी का वार्षिक भविष्य सन् २००९ ई.

निर्देशक: डा. वसंत लाल व्यास (ज्योतिष सम्राट) लेखक: पं. अनिल कुमार व्यास, राया (मथुरा) उ.प्र. सम्पर्क सूत्र: ०५६६३-२७३३५३, २७३४९२, ०९९२७२६९३०४

जनवरी–यह मास पौष शुक्ला ५ गुरुवार से आरंभ होकर माघ शुक्ला ५ शनिवार तक रहेगा। ता. ३ जन. को शत. के शुक्र से गेहूं, जौ, दालवाना, हल्दी, सोना, केशर, मजीठ के भावों में मन्दी का झटका (ता. ७ जन. "पौष शुक्ला एकादश्यां कृतिका" से अलसी, सरसों, गेहूं, तेल, गुड़, खाण्ड, सोना, लाल मिर्च के भावों में तेजी। ता. ११ उ.षा. के सूर्य से दो सप्ताह के अन्तर्गत, उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पीपलमूल, चमड़ा, सरसों, मूंज, पट्टसूत्र व शेयरों के भावों में तेजी बन जायेगी। ता. १२ को गुरु अस्त हो रहे हैं जो घी, तेल, उड़द, तिल के भावों में मन्दी देंगे। जनरल लाईन भी बदल जायेगी। ता. १४ जनवरी मकर संक्रांति व बुध अस्त भी हो रहे हैं। अत: गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, बाजरा, मक्का, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मजीठ, अनारदाना, इमली, तिल, तेल, सरसों, हल्दी, बिनौला, ताम्बा, पीतल, जस्ता के भावों में तेजी। सोना, चांदी, शेयर बाजार घटाबढ़ी से तेजी, उड़द, मूंग व लोबिया, अरहर, घी में आंशिक मंदी, नमक, मिर्च तेजी लेकर गिर जायेंगे। चौपाये पशुओं के भावों में मन्दी। ता. २२ जन. श्रवण के गुरु, गुड़, खाण्ड व सोना, चावल के भावों में तेजी। आज जनरल लाईन में घटाबढ़ी तो चलेगी लेकिन मान तेजी का रहेगा। ता. २६ जन. मीन के शुक्र "मीन राशि गते शुक्र:" से रुई, घी, चाँदी में मन्दी। आज प्राय: व्यापारिक जिन्सों के भावों में मन्दी आयेगी। पृथ्वी पर कलह का वातावरण लेकिन बुध ग्रह चतुर्ग्रही योग से सतर्कता से कार्य करें। शेयर बाजार, सोना व चांदी में अच्छी तेजी का धमाका हो सकता है, लाईन पर नजर रखें। ता. २८ "मकरे स्थिते भौमे" से रुई, सोना, चांदी लगभग सभी चुनिन्दा शेयर्स, तांबा, गुड़, तेल, अलसी, ऊन के भावों में तेजी, अनाजों के भावों में मन्दी। ता. ३१ जन. बुध मार्गी हो रहे हैं जो सरसों के भावों में मन्दी बना देंगे।

विशेष–चार पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग। वर्षा या युद्ध से दु:ख पावें सब लोग।। जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाहि में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी रहें महंगाई हट जाय।।

फरवरी–यह मास माघ शुक्ला ६ रविवार से आरंभ होकर फाल्गुन शुक्ला ३ शनिवार तक रहेगा। मास प्रारंभ में आई मन्दी में सुधार। सप्तमी भरणी युक्त है। अत: फसल अच्छी। आज श्वेत वस्तुओं चांदी, नमक, कपूर, पिपरमेन्ट के भावों में मन्दी, शेयर बाजार में घटाबढ़ी से मन्दी। ता. ७ फर. "निशापतेश्च तनय: शनिक्षेत्रे" रुई, सोना, चांदी में तेजी। सभी प्रकार अनाजों में घटाबढ़ी से भाव मध्यम रहेंगे। ता. ९ फर. "श्रवणे भौम" से २० दिनों के अन्तर्गत गेहूं के भावों में अच्छी तेजी, जौ, चना, तिल, तेल, अफीम, पीतल, सोना, चांदी के भावों में तेजी व शेयर्स बाजार में एक तरफा तेजी का योग। ता. १० फर. को गुरु उदय हो रहे हैं जो आनाजों के भावों में मन्दी का झटका देंगे। ता. १२ फर. कुंभ संक्रांति ४५ मुहूर्ती व गुरु वासरी अत: मक्का, ज्वार, चावल, बाजरा, मूंग, मौंठ, लोबिया, रमास, सोना-चांदी, शेयर्स तांबा, पीतल व जस्ता, सरसों, तिल, तेल, अलसी, बिनौला, रुई, सूत के भावों में मंदी। गाय, बकरी, चना, जौ, गेहूं के भावों में तेजी। चंदन, इत्र, नमक, किराना के भावों में समता, मेवा बाजार में घटाबढ़ी से मन्दी। ता. १६ फर. सतर्कता से कार्य करें, रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर व गुड़, खाण्ड, चीनी, शक्कर, हीरा व रत्नों के भावों में मन्दी, आयरन व वित्तीय शेयर्स घटाबढ़ी तो होगी लेकिन भावों में तेजी। ता. २० फर. श्रवण के गुरु भी मन्दी का संकेत दे रहे हैं। जिन चीजों पर मन्दी आ रही है। क्रय करें व चैत्र की तेजी में लाभ लें। ता. २६ फर. चन्द्रदर्शन गुरु वासरी है। अत: रुई, सूत, सूती व ऊनी वस्त्र, सरसों, तिल, तेल के भावों में तेजी। सोना, चांदी, गुड़ के भावों में मन्दी। अन्न उत्पादन में सुधार, मूंग, घी के भावों में तेजी। रसीले फलों की न्यूनता बनेगी।

विशेष–बदी पखवारे तिथि बढ़े किन्तु सुदी घट जाय। सभी वस्तुयें तेज हों सस्तापन हट जाय।। फागुन कृष्णा प्रतिपदा पूर्वा फाल्गुनि नक्षत्र। सभी दोष दु:ख दूर हों सुख बरसे सर्वत्र।।

मार्च–यह मास फाल्गुन शुक्ला ५ रविवार से आरंभ होकर चैत्र शुक्ला ५ मंगलवार तक रहेगा। ता. ३ मार्च को शुक्र वक्री हो रहे हैं व पूर्वा भाद्रे सूर्य से दो सप्ताह के अन्तर्गत रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, पीपर मूल व गुगल किराना बाजार में तेजी, शेयर्स व सोना में चमक का योग है। ता. १० होली भौमवासरी है जो प्रजा हित में अच्छी नहीं है। ता. १४ मार्च मीन संक्रांति से तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी, इमली, अनार, अनारदाना के भावों में समता। गेहूं, चना, जौ, मक्का, ज्वार, बाजरा, मसूर, रुई, सूत, इत्र, कोयला, लकड़ी, पत्थर, घी, मूंग, उड़द के भावों में अच्छी तेजी व अच्छी मन्दी का योग। इस संक्रांति में जो वस्तुयें मन्दी हों तो क्रय करें, अगली संक्रांति में बेचकर लाभ लें। सोना, चांदी, शेयर्स बाजार घटाबढ़ी से तेजी। ता. २३ मार्च "मीन राशि गतौ बुधे" से गुड़, रुई, खाण्ड, शक्कर के भावों में मन्दी जितनी तेजी उतनी ही मन्दी, लेकिन बुध का मिलन शुक्र सूर्य से है अत: बाजार पर नजर रखें तेजी का योग अधिक है। शेयर्स सोना, चांदी में दोपहर बाद तेजी। नवमी क्षय बाजार में तेजी का वातावरण रहेगा। ता. २८ चन्द्रदर्शन शनिवासरी आगे महीने में अनाजों के भावों में तेजी का संकेत दे रहा है व दो दिन जनरल लाइन तेज चलेगी।

विशेष–रवि शनि मंगल होली आवै। डंक कहे मोहे फागुन भावै।। उल्का पात करे मुई सारी। घर घर रोवे नर नारी।।

अप्रैल–यह मास चैत्र शुक्ला ६ बुधवार से आरंभ होकर वैशाख शुक्ला ६ गुरुवार तक रहेगा। मास में गुरु+राहु व बुध+सूर्य+शुक्र का मिलन, शनि भौम का सम सप्तक योग। ता. १ अप्रै. तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपाड़ी, घी, रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, शेयर्स बाजार गर्म रहेगा। ता. ६ अप्रैल मेष राशि के बुध से मूँगा, मोती, हीरा, जवाहरात, घी, सोना, चांदी, जौ, गेहूं, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, खाण्ड के भावों में मन्दी का झटका, पशुओं के भावों में तेजी। ता. १० अप्रैल बुध उदय अनाजों के भावों में तेजी को बल प्रदान करेगा। सोना, चांदी शेयर्स बाजार गिर कर सुधार से तेजी बनायेंगे। ता. १३ मेष संक्रांति चन्द्र वासरी है। अत: रुई, कपास, सूत, घी, तेल व तिल, सरसों, गेहूं, जौ, चना, नारियल, सुपारी, बादाम, सभी प्रकार के फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी व लगभग सभी चुनिंदा शेयर्सों के भावों में तेजी। उड़द, मूंग, अरहर, मटर के भावों में मन्दी का झटका। ता. १४ अप्रैल "मीन राशि कुंज धेव" से घास, चारा, लकड़ी, फर्नीचर, चौपाये पशु, सूत, सोना, चांदी, रुई के भावों में तेजी चलेगी। ता. १९ अप्रैल एक मास के अन्तर्गत देवदारु, चंदन, अगर, कपूर, सुगन्धित पदार्थों, गेहूं, चना, गुड़, सोना, चांदी, शेयर्स बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। सतर्कता से कार्य करें। ता. २३ अप्रैल "सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा" से व्यापारिक वस्तुओं में दुतर्फा घटाबढ़ी, नशीले पदार्थ, अफीम, तम्बाकू के भावों में तेजी। ता. २७ भरणी के सूर्य योग से रुई, अलसी में मन्दी का झटका। सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल के बर्तन, चादर, गेहूं, जौ, चना, चावल, मौंठ, अलसी, गुड़, खाण्ड, घी के भावों में तेजी, शेयर्स बाजार घटाबढ़ी से तेजी लेगा। ता. ३० अप्रैल गुड़, खाण्ड, सरसों, मूल पदार्थ, आंवला, तेल, किराना बाजार, बिजली का सामान, आयरन व शेयर्स में घटाबढ़ी चले लेकिन आवरेज तेजी का ही रहेगा।

विशेष–एक राशि पर होय बुध, शुक्र और सूर। वर्षा की कमती करै तेजी हो भरपूर।। बदी बारै सुदी घटे तिथि क्रूर वार संक्रांति। छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा निन्तांत।।

मई–यह मास वैशाख शुक्ल ७ शुक्रवार से आरंभ होकर ज्येष्ठ शुक्ला ३ रविवार तक रहेगा। ता. १ मई कुंभ के गुरु से रुई में करीब छ: महीने तक ७५-१०० टका के करीब तेजी बाद में मन्दी घी, तिल, तेल, सरसों प्रथम पांच मास गिरावट के बाद तेजी लेंगे। पूर्वी प्रान्तों में अनाज के भावों में मंदी। ता. ६ मई "रेवत्यां भौमे" से गेहूं, चना, मूंग, मौंठ, जौ, ज्वार, बाजरा के भावों में मन्दी का झटका। सोना नर्म रहे। रुई घटाबढ़ी से तेजी। ता. १० मई बुध अस्त सतर्कता से कार्य करें। शेयर्स बाजार, सोना, चांदी, अनाज व चौपाये पशुओं के भावों में एकतरफा तेजी की लाईन बाद में मन्दी का योग। ता. १२ मई आयरन शेयर्स, मेडीसन, लोहा, सरसों के भावों में तेजी का झटका। ता. १४ मई वृष संक्रांति ४५ मुहूर्ती है। अत: सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों के भावों मे तेजी, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल के भावों में आंशिक मंदी का झटका। ता. १९ मई घी, तिल, तेल, अनाज, किराना, मूल पदार्थ के भावों में घटाबढ़ी से तेजी का झटका, किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी, सोना, चांदी, शेयर्स घटाबढ़ी से तेजी लेंगे। ता. २३ मई मेष के मंगल से गेहूं व प्रत्येक जाति के अनाजों के भावों में मन्दी, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा, मोती, रत्न, रुई, कपास, पाट, बारदाना, शेयर्स, गुड़, रसीले फल व पदार्थों में तेजी। चन्द्रदर्शन सोमवारी

व "यदा सौम्य स्थितो मेषे" से पशुओं के भावों में तेजी, भारी वर्षा से नुकसान। व्यापारिक वस्तुओं में दुतरफा घटाबढ़ी, अच्छा रुख देखकर कार्य करें। घी, सोना, गुड़, रुई, सूत, बिनौला में मन्दी। ता. २९ मई दैत्य गुरुर्यदा मेषे से पशुओं में कष्ट, तेजी। दूध, दही, घी, चावल, चांदी, अनाजों के भावों में तेजी, गुड़, शक्कर व बारदाना में घटाबढ़ी, वर्षा कारक, ऊन, तिल, तेल, अलसी, अरण्डी के भाव नर्म रहेंगे।

विशेष–किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय। ग्राहक मांगे मूंग, घी विक्रेता नट जाय।। दुतिया तृतीया जेठ सुठी आवै, आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी दर्सें दुःख दुर्भिक्ष।।

जून–यह मास ज्येष्ठ शुक्ला ९ सोमवार से आरंभ होकर आषाढ़ शुक्ला ४ मंगलवार तक रहेगा। उड़द, मलका, मटर, अरण्डी, सरसों, गेहूं, मूंग, रेशम के भावों में मन्दी। उड़द, मूंग, मटर के भावों में तेजी। सोना तेज, चांदी गिरकर सुधार लेगी। ता. ५ जून "सोम पुत्रो वृषे" से दो सप्ताह के अन्तर्गत रुई गिरकर सुधार लेगी। प्रायः सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी। ता. ७ जून मृगशिर के सूर्य से रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मौंठ, चना, बाजरा, अलसी, नारियल व जलीय पदार्थ, साग सब्जियों व फलों के भावों में तेजी। ता. १० जून सभी प्रकार के अनाजों, धातुओं व लगभग सभी चुनिन्दा शेयरों में तेजी। किसी-किसी में चमक, रुई तेजी में। ता. १४ जून मिथुन संक्रांति से कंद, मूल, फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना व अनाजों में तेजी, सोना, चांदी शेयरों के भाव घटाबढ़ी से मन्दी लेकर तेजी बना लेंगे। ता. १७ जून रोहिण्यां बुधौ से ८ दिनों के अन्तर्गत रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड तेजी में, राई, तुअर, सन, ऊनी व सूती वस्त्रों में मन्दी। रुई, शेयर, चांदी तेजी लेकर मन्दी। ता. २१ जून आर्द्रा के सूर्य व सोमवती अमावस्या मन्दी कारक है। अतः दो दिन के अन्तर्गत जनरल लाईन पलट जायेगी। लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में मन्दी का रुख रहेगा। ता. २३ जून चन्द्रदर्शन बुध योग से सोना, चांदी, सूती व ऊनी वस्त्र, [illegible] तेल तेज। ता. २९ तिथि क्षय लगभग सभी जिन्सों में तेजी का संकेत। ता. ३० जून "वृषे च यदा शुक्रे" से रुई, गुड़, खाण्ड, अफीम, तांबा, कुसुंभा, लाल मिर्च व रक्त वर्ण की वस्तुओं में तेजी, शुक्र योग से सतर्कता से कार्य करें। अच्छी तेजी का माहौल भी बन सकता है।

विशेष–जेहि पखवारे तिथि बढ़ै वाही में घट जाय। सभी वस्तुयें मन्दी रहें, महंगाई हट जाय।। आषाढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग। करफ्यू अरु कंट्रोल से दुःख पावैं सब लोग।।

जुलाई–यह मास आषाढ़ शुक्ला १० बुधवार से आरंभ होकर श्रावण शुक्ला १० शुक्रवार तक रहेगा। ता. ३ "वृष राशौ यदा भौम" से एक मास के अन्तर्गत लाल वस्त्र, सभी प्रकार के अनाज, रुई, कपास, चन्दन, सोना, सूत, कुसुंभा, शेयर्स, केशर, कपूर, तेल, तांबा, जस्ता, धातुवाना शेयर्स के भावों में तेजी। ता. ६ पुनर्वसु के सूर्य रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरंड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मौंठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्जी, हरड़, सुपाड़ी, नारियल, माजू, केसर, मजीठ, सौंठ, गूगल, किराना व लगभग सभी चुनिन्दा शेयर्स में तेजी। किसी-किसी जिन्स में चमक। ता. १० जुलाई चांदी, नमक, कपास, सूत में एक सप्ताह के अन्तर्गत मन्दी का झटका व घी, तेल, गुड़, खाण्ड, ऊन, नारियल, छुआरा, दाख के भाव भी गिर जायेंगे। अतः रुख देखकर कार्य करें। ता. १५ जुलाई यदा "कर्क राशौ स्थित्वा बुधे" से रुई में १५ टका की मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी से दो टका की मन्दी व रस पदार्थ, दूध, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना तेजी लेकर गिरे। श्वेत पदार्थ व वस्त्रों में मन्दी, अनाज के भाव मध्यम रहेंगे। ता. १६ जुलाई कर्क संक्रांति से रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, तिल, सरसों, सोना, चांदी के भावों में तेजी, गेहूं, चना, मटर, अरहर, उड़द के भावों में मन्दी। ता. २२ जुलाई श्रावणी व अमा. ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण भी है। अतः गुड़, सोना, चांदी, लोहा, जस्ता व शेयर्स के भावों में तेजी, मूंग का संग्रह करें तथा पांचवें महीने में बेचकर लाभ लें अथवा ज्वार, बाजरा, मौंठ, चना, रुई, कपास, सूत, लाल वस्त्र, लौंग, सुपारी, अफीम, लोहा का संग्रह करें। दो मास पश्चात विक्रय कर लाभ लें। ता. २६ जुलाई मिथुने शुक्रे से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, तिल, तेल, सरसों, ग्वार में मन्दी का झटका। गुड़, घी में घटाबढ़ी तथा गेहूं, जौ, चना, चावल के भावों में तेजी। ता. ३० जुलाई सिंहे बुध से सोना, चांदी, सूत, रुई व ऊनी वस्त्र देवदारु व खट्टे पदार्थों में तेजी। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर व रसीले पदार्थों के भावों में मन्दी, अनाज के भावों में समता को बल।

विशेष–पौष माघ वैशाख या सावण या आषाढ़। भयकारी बुध का उदय अस्त होय सुख बाढ़।। सावन शुक्ला सप्तमी को स्वाति नक्षत्र। पूनम की श्रावण रहे, सुख सुर्भिक्ष सर्वत्र।।

अगस्त–यह मास श्रावण शुक्ला ११ शनिवार से आरंभ होकर भाद्रपद शुक्ला ११ सोमवार तक रहेगा। मास प्रारंभ गेहूं व अन्य अनाजों के भावों में मन्दी का झटका लेकिन यह मन्दी स्थाई नहीं रहेगी। ता. ६ अगस्त मृगशिरे भौम से तिल, चांदी में तेजी। रुई में गिर कर सुधार, सोना, चांदी शेयर्स बाजार में घटाबढ़ी चलेगी। लेकिन मान मन्दी का ही रहेगा। ता. १३ अगस्त पुनर्वसु के शुक्र १२ दिनों के अन्तर्गत धान्य व बिनौला तेज। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास मन्दी में लेकिन आज जनरल लाईन तेज चलेगी। ता. १६ अगस्त सिंह संक्रांति, वायु वर्षा का प्रकोप, चावल, तुष, धान्य का नाश, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, एरंड, सरसों व रक्त वर्ण की वस्तुओं में तेजी। शेयर व अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी। ता. १९ अगस्त कन्या के बुध रुई, चांदी में मंदी का झटका गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी में तेजी। ता. २१ अगस्त कर्क के शुक्र योग से रुई गिर कर तेज। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, चांदी, गेहूं, जौ, मटर व अरहर के भावों में मन्दी। ता. २६ अगस्त आर्द्रा के भौम रुई, कपास, अलसी, एरंड, गुड़, तिल, तेल, सरसों व चांदी के भावों में मन्दी। ता. ३० अगस्त पूर्वा फाल्गुने सूर्ये दो सप्ताह के अन्तर्गत तिल, तेल, मूंगफली, घी, खाण्ड व नमक के भावों में तेजी। सोना, चांदी सर्पमुखी चाल से तेज शेयर्सों में भी तेजी।

विशेष–रोहिणी युक्त जन्माष्टमी शनि रवि या भृगुवार। जौ, गेहूं, अरु, बाजरा महंगा मटर ग्वार।। महंगा मटर, ग्वार, सौंठ, जीरा और किराना। सोना धातुयें तेज तेज सर्राफ बखाना।। कस्तूरी, तिल, तेल, हींग, गुड़ संग्रह कर लो। तीन मास पश्चात नफा ले घर में धर लो।।

सितम्बर–यह मास भाद्रपद शुक्ला १२ मंगलवार से आरंभ होकर आश्विन शुक्ला ११ बुधवार तक रहेगा। ता. ४ सितम्बर आश्ले. के शुक्र योग से १० दिनों के अन्दर तूअर, चावल व रुई के भावों में मन्दी। ता. ६ बुध अस्त से एक सप्ताह के लिये तेजी की अच्छी लाईन निकल सकती है। अतः सतर्कता से कार्य करें। ता. ८ सितम्बर रुई में करीब १०० टका की तेजी। सोना, चांदी, मोती, रत्न तेज, गुड़, खाण्ड, नमक घटाबढ़ी से तेजी लेंगे। ता. १६ सितम्बर "कन्या संक्रांति" से वस्त्र, घी, रुई, सूत, चांदी में मन्दी। चौपाये पशुओं के भावों में तेजी, रुई, नारियल, सुपारी, तिल तेल, मजीठ में तेजी। चांदी व शेयर बाजार तेजी लेकर गिर जायेगा। ता. २१ सितम्बर श्रवणे गुरु से.गुड़, खाण्ड, अनाजों में मन्दी, शेयर बाजार गिर कर तेज। सोना स्थिरता में ता. २४ सितम्बर "सिंह राशौ बुधः" से रुई, चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी में तेजी, रसीले फल व पदार्थों में तेजी। ता. ३० सितम्बर बुध मार्गी रुई, पाट, कुष्टा, शेयर बाजार गिर कर तेज। किराना बाजार में घटाबढ़ी।

विशेष–आश्विन में बुध का उदय महंगी बिके कपास। अस्त हो तो जानिये लाल पदार्थ नाश।। दशमी ग्यारस द्वादशी लागत आश्विन मास। बिजली बादल गाज हो जौ गेहूं का नाश।।

अक्टूबर–यह मास श्री आश्विन शुक्ला १२ गुरुवार से आरंभ होकर कार्तिक शुक्ला १३ शनिवार तक रहेगा। ता. ५ अक्टूबर "कन्या राशौ यदा बुधे" अथवा कर्क राशौ भूमि पुत्रे के अनुसार रुई में १५ टका की मन्दी। रस.पदार्थ, गुड़, घी, तेल, मूंगफली के भाव चढ़कर उतर जायेंगे। गेहूं, चावल, सोना, चांदी, सरसों, ऊनी व सूती वस्त्र, अलसी, गेरु, लाल मिर्च के भावों में तेजी। ता. १० अक्टूबर कन्या के शुक्र योग से चांदी घटाबढ़ी से तेज, गेहूं, जौ, बाजरा, अनाज, गुड़, खाण्ड, घास व ऊनी रेशमी वस्त्रों में तेजी, सतर्कता से कार्य करें। चावलों पर अच्छी तेजी का झटका। ता. १७ अक्टूबर तुला संक्रांति शनिवासरी है। अतः रुई, चांदी के भाव में मन्दी का झटका। गेहूं, जौ, चना, अलसी, तांबा में तेजी, रक्त चंदन, मजीठ, श्री फल, सुपारी के भावों में भी तेजी, चौपाये पशुओं व गाय बकरी के भावों में मन्दी के बाद तेजी। तिल, तेल, अलसी, सरसों, लोहा, ज्वार, मक्का, बाजरा के भाव घटाबढ़ी से तेजी। ता. २० अक्टूबर को बुध अस्त हो रहे हैं और पूर्व में है। अतः एक सप्ताह के लिये शेयर्स, सोना, चांदी में तेजी की एकतरफा लाईन निकल सकती है। ता. २३ अक्टूबर स्वाति के सूर्य दो सप्ताह के अन्तर्गत रुई, सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गूगल के भावों में तेजी। ता. २४ अक्टूबर तुलायां बुधे से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम में तेजी। चांदी, अलसी, एरण्डी, बिनौला तथा मूंगफली के भावों में मन्दी का झटका, जनरल लाईन में तेजी रहेगी। ता. २८ अक्टूबर "चित्रायां भृगौ" से लगभग १० दिन तक सोना, चांदी व अनाजों के भाव समता के बल देंगे।

विशेष–वृश्चिक गत जब सूर्य हो ऊन वस्त्र सम भाव। लाल द्रव मंदे मिलें तो खरीद कर लाभ।। मावस्या तुल, चन्द्रमा तथा मंगल मकर विचार। रोगों से नासै, निष्फल हो व्यापार।।

नवम्बर–यह मास कार्तिक शुक्ला १४ रविवार से आरंभ होकर मार्गशीर्ष शुक्ला १४ मंगलवार तक रहेगा। ता. ३ तुला के शुक्र+बुध+सूर्य

योग से रुई, गुड़, सोना, अफीम के भावों में तेजी, शेयर्स बाजार एक तरफा तेजी की सपोर्ट लेगा। ता. ८ नव. स्वाति के शुक्र ११ दिनों के अन्दर गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी, अनाजों के भावों में मन्दी का झटका। ता. १२ नव. वृश्चिक के बुध भारत के कई प्रान्तों में अनाज तेज व कहीं समता को बल मिलेगा। रुई, चांदी, शेयर्स के भाव उठ कर गिर जायेंगे। ता. १६ नवं. वृश्चिक राशौ गते सूर्य से रुई, तांबा, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्रों में तेजी, गेहूं, जौ, चना, मटर, घी, चावल के भावों में मन्दी, कोयला, लकड़ी, सन, सूत, ऊनी वस्त्र के भावों में मन्दी, सोना, शेयर्स तेज, चांदी के भाव घटाबढ़ी से तेजी लेंगे। ता. १७ नवं. मिथुन के केतु व धनु के राहू से रुई में तेजी, घी, अनाज तेजी लेकर सातवें मास में मन्दे, शेयर तेज, कौंदा, गेहूं, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, लकड़ी, कोयला के भावों में तेजी। ता. २२ नवं. ज्येष्ठायां बुधौ से घी, गुड़, खाण्ड, चावल तेज। ता. २७ नवं. "वृश्चिके च गते शुक्रः" से रुई, शेयर्स, अफीम, चांदी गिर कर तेजी लेंगे। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, बाजरा, अनाजों के भावों में तेजी अलसी तेज। ता. ३० नव. अनु. के शुक्र योग से २२ दिनों के अन्तर्गत गुड़, खाण्ड, चावल के भावों में मन्दी।

विशेष–मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाय। झगड़ा और फसाद नित लोगों में अधिकाय।। पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करें तेजी हो जब छीन।।

दिसम्बर–यह मास मार्गशीर्ष शुक्ला १४ मंगलवार से आरंभ होकर पौष शुक्ला १५ गुरुवार तक रहेगा। ता. १ ज्येष्ठा के सूर्य दो सप्ताह के अन्तर्गत सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरंड, हींग, पारा, गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी व रुई गिर कर तेजी बना लेगी। ता. ४ दिसं. चांदी, चाय, जायफल, तम्बाकू, दालचीनी, नारियल, नमक, पारा में तेजी। शेयर्स बाजार भी घट कर सुधार लेगा। ता. १५ दिस. धनु संक्रांति भौमवासरी है। अतः नारियल, खोपरा, छुआरा, चिरौंजी, जीरा के भाव गिर कर सुधार लेंगे। सूत, श्वेत वस्त्र, जूट, ऊँट, भेड़ के भावों में तेजी। तिल, तेल, अलसी, सम स्टॉक ना करें। मन्दी में ले तेजी में बेचें। ता. १९ दिसं. कुंभ राशि "गते गुरौ" से पूर्वी प्रान्तों में अनाज सस्ता, खेती में नुकसान। रुई छः महीने तक तेजी लेकर गिरे। कांसी, पीतल, तांबा, शीशा, तीन मास पश्चात तेजी लेंगे। ता. २२ दिसं. उ.षा. के बुध से अनाजों के भावों में मन्दी शेयर्स आज मन्दी में रहेंगे। सोना व चांदी में अच्छी घटाबढ़ी। ता. ३० दिसं. बुध अस्त से धनु राशि पर राहु+बुध+सूर्य+शुक्र का मिलन तेजी की ओर संकेत दे रहा है। प्रजा में विग्रह, रोग, हिंसा की वृद्धि, कपूर, चंदन तेज।

विशेष–चार पांच ग्रहों का बनै, एक शशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावैं सब लोग।। जेहि पखवारे तिथि बढ़ै वाहीं में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी रहे महंगाई हट जाय।।

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव

लेखक–पं. अनिल कुमार व्यास

चैत्र–श्री संवत् २०६६ चैत्र मास का नवीन चन्द्रदर्शन २८ मार्च २००९ ई. शनिवार को हो रहा है "जो शशि उगे सोम शनि" से व्यापारिक जिन्सों में तेजी को बल प्राप्त मिलेगा। चन्द्रदर्शन मेष राशि गत आश्विनी नक्षत्र में हो रहा है। अतः इसकी दक्षिणी श्रृंग (नौंक) ऊँची होगी जो तेजी प्रदायक है। उदित समय इसका वर्ण रक्त (लाल) होगा अतः चाँदी, सोना, सूत, सन, पाट, शेयर, वारदाना, कपासिया के भावों में तेजी को बल देगा। गुरुवासरी पूर्णिमा अतः तुष, धान्य में वृद्धि, अनाज के भावों में मन्दी के बाद तेजी, सरसों, अलसी के भावों में तेजी, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र के भावों में तेजी दक्षिणी प्रान्तों में व दक्षिणी देशों में उपद्रव व अशान्ति को बल मिलेगा। लोहा, सीसा, जस्ता, कलई, तांबा, मूँगा के भावों में तेजी।

वैशाख–२६ अप्रैल सन् २००९ ई. रविवार को वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है व वृष राशि अन्तर्गत कृतिका नक्षत्र में हो रहा है। यदि रात्रि में चन्द्रमा पर कुण्डल हो तो अन्न का संचय करें लाभ मिलेगा। वायु का प्रकोप, इस चन्द्रदर्शन से व्यापार में आवरेज में मन्दी, गुड़, तिल, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी, रुई के भावा में गिरावट, अफीम, सरसों, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी, सभी प्रकार के धान्य मूंग, मौंठ, उड़द, दालवाना, वारदाना के भावों में तेजी, शेयर्स बाजार भी घटाबढ़ी तो लेगा लेकिन भाव तेजी के ही रहेंगे। शनि वासरी पूर्णिमा भी तेजी कारक है अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें।

ज्येष्ठ–२५ मई सन् २००९ ई. सोमवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मिथुन राशि अन्तर्गत हो रहा है। अतः "जो शशि उगे सोम शनि" से अनाजों के भावों में तेजी का संकेत मिल रहा है। वस्त्र, रुई, सूत, सोना व रंग के भावों में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी से मन्दी, अन्न के भावों में मन्दी का झटका। उदित समय इसके दोनों श्रृंग समान होंगे जो प्रत्येक जिन्स में तेजी को बल मिलेगा व मासांत में गिरावट, घी, तिल, तेल, मूंगफली, सोयाबीन, तिलहन के भाव में तेजी, शेयर बाजार में घटाबढ़ी से मन्दी के बाद सुधार। रसायन पदार्थ, रसीले पदार्थ, जीवन रक्षक दवाईयां, दैनिक उपयोगी सामान की न्यूनता से तेजी, किराना बाजार गर्म रहेगा।

आषाढ़–२४ जून सन् २००९ ई. को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती व कर्क राशि पुष्य नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है, यदि चन्द्रमा पर मण्डल हो, दूसरे तीसरे दिन वर्षा उदय काल में, इसका वर्ण श्वेत और दोनों श्रृंग समान होंगे। अतः चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, सन, वारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गुड़ के भावों में मन्दी का झटका, गेहूं, जौ, चना के भावों में भी मन्दी को बल मिलेगा। वर्षा हो तो प्रत्येक जिन्स में तेजी जोकि अस्थाई होगी। ज्वार, बाजरा, मक्का के भाव भी गिर जायेंगे। शेयर्स बाजार तेजी लेकर मन्दी लेगा।

श्रावण–२३ जुलाई सन् २००९ ई. गुरुवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो

रहा है। यह चन्द्रदर्शन १५ मुहूर्ती सिंह व मघा नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है। अतः दुर्भिक्ष के संकेत। सोना, चांदी, स्टील, पीतल के भावों में तेजी, रुई, सूत, पाट, वारदाना, सूती व ऊनी वस्त्र, सरसों, घी, तेल के भावों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में चमक, गेहूं, जौ, चना, मटर के भवा घटाबढ़ी से तेज, अलसी, सींगदाना, बिनौला, खोपरा के भाव भी आलस्य त्याग देंगे। कालीमिर्च, हल्दी, जीरा तेज। जीवन उपयोगी वस्तुओं के भाव भी तेजी को बल देंगे।

भाद्रपद–२२ अगस्त सन् २००९ ई. शनिवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन कन्या व उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है। यह ४५ मुहूर्ती है अतः इसके दोनों शृंग शूल के सामन उच्च होंगे, वर्ण पीत होगा। राई, सूत, सूती वस्त्र, वारदाना, जूट, हैसियन, शेयर बाजार में तेजी का मान होगा। सोना, चांदी घटाबढ़ी से तेज। रंग, रोगन, मज्जी पत्थर, इमारती लकड़ी के भावों में तेजी। धान्य उत्पादन में कमी, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, मूंगफली के भावों में मन्दी, अन्न के भावों में घटाबढ़ी।

आश्विन–२० सितम्बर सन् २००९ ई. रविवार को आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती तुला राशि अन्तर्गत हो रहा है। उदित समय दोनों शृंग समान व वर्ण श्वेत होगा। श्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी, आवरेज में मन्दी, गुड़, तेल, सोना, चांदी तेज, रुई घटाबढ़ी से मन्दी, सूत, पाट, वारदाना, शेयर्स, पटसन, हैसियन के भाव प्रथम मंदी लेकर तेजी बना लेंगे। गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द के भावों में तेजी। घी, चावल, चीनी, गुड़ के भाव तेजी लेकर मन्दी की मांग करेंगे।

कार्तिक–२० अक्टूबर सन् २००९ ई. मंगलवार को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ती है व उत्तर का शृंग उच्च होगा जो कि प्रत्येक जिन्स में तेजी कारक है। गुड़, चीनी, शक्कर, चावल के भाव तेजी लेकर आंशिक मंदी बना लेंगे। घी, सरसों, सोयाबीन, अरण्डी, लोहा, सूर्यमुखी के भावों में तेजी, सोना, चांदी के भाव टूट जायेंगे। पीतल, सरसों, जस्ता के भावों में भी मन्दी, आलू, प्याज, जड़ के पदार्थों में तेजी, सौंठ, धनियां, हल्दी के भावों में सुधार, पशुचारा, घास, लकड़ी के भावों में तेजी का मान होगा।

मार्गशीर्ष–१८ नवम्बर सन् २००९ ई. बुधवार को मार्गशीर्ष मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन १५ मुहूर्ती वृश्चिक राशि व ज्येष्ठा नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है। अतः सोना, चांदी, रुई, सूत, वस्त्र, सरसों, घी, तेल के भावों में तेजी, अलसी, अरण्डी व सरसों, सींगदाना, मूंगफली, खोपरा, सूर्यमुखी, चीड़, हैसियन के भाव सर्पमुखी चाल से तेजी लेंगे। हल्दी, धनियां, जीरा, सौंठ, लौंग, जायफल के भावों में तेजी।

पौष–१८ दिसम्बर सन् २००९ ई. शुक्रवार को पौष मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह दर्शन ३० मुहूर्ती है जो प्रत्येक व्यापारिक जिन्सों व शेयर्स बाजार में घटाबढ़ी को बल देगा। उदयकाल में वर्ण श्याम व दोनों शृंग समान उच्च। सोना, चांदी, शेयर्स बाजार में घटाबढ़ी से तेजी। गुड़, शक्कर, चीनी, चावल के भाव टूट जायेंगे। कपास, रुई, लाल मिर्च, गेरु, हैसियन, पाट, वारदाना के भाव गिर कर सुधार लेंगे। ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, मूंग, मसूर व अरहर के भावों में तेजी। घी, तेल, लवण, कपूर, रस पदार्थों के भावों में तेजी, सरसों, सोयाबीन के भाव गिर कर सुधार बना लेंगे।

माघ–१६ जनवरी सन् २०१० ई. शनिवार को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती व कुंभ राशि अन्तर्गत हो रहा है। उदय काल में चन्द्रमा का वर्ण श्याम व दोनों शृंग समान होंगे। घी, चावल, धान के भावों में तेजी, रुई में १०, २५ की, कपास में ३०, २५ की तेजी, शेयर, पाट, जूट, वारदाना, सूत, सन, कपासिया, हैसियन के भाव तेजी लेकर गिर जायेंगे। उड़द, चना में सुधार व ऊनी वस्त्रों के भावों में घटाबढ़ी, हल्दी, जीरा, पोस्त, सोना, पीतल, तम्बाकू, अफीम के भाव तेज, धान्यादि के भावों में नरमी रहेगी, दूध, दही, घी के भाव समता को बल देंगे।

फाल्गुन–१५ फरवरी सन् २०१० ई. सोमवार को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मीन राशि व उ. भाद्रपद नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है। चन्द्र उदय अग्नि मण्डल में हो रहा है। अतः गाय, भैंस, मोटर गाड़ी, शेयर, ऊन, रुई, सूत, कपास, पाट, वारदाना के भावों में तेजी, अन्न के भावों में मन्दी का मान होगा। गुड़, चीनी, खाण्ड, मिश्री के भावों में मंदी का झटका आयेगा, ज्वार, बाजरा, ग्वार, अरहर के भावों में भी नरमी आएगी। सीसा, पीतल, लोहा, जस्ता, तांबा, चांदी के भावों में तेजी, किसी-किसी जिन्स में चमक, जीरा, कालीमिर्च, गूगल, अदरक, दाल चीनी, इलाइची के भावों में भी नरमी आयेगी।

विशेष–आप अपने गांव, नगर, शहर में स्वयं चन्द्रदर्शन का अवलोकन करें। उदय काल में नौंक उच्च हो, चन्द्रा नाम समान हो तो नाविकों को कष्ट, समुद्रीय दुर्घटना अधिक हों, यदि चन्द्रमा का शृंग आधा उठा हो तो किसान वर्ग को परेशानी, फसलों में हानि। यदि दक्षिण शृंग आधा ऊँचा हो तो पंजाब, हरियाणा, काश्मीर में, उत्पात, प्रजा को कष्ट। चन्द्रमा यदि समान भाव से उदय हो तो सुर्भिक्ष, वर्षा अच्छी सुख। चन्द्रमा यदि दण्ड के समान उदित हो तो गाय, बैल, पशुओं में रोग, शासन द्वारा जनहित कार्यों में उपेक्षा, स्वार्थवाद को बल। यदि चन्द्रमा धनुष के आकार का हो तो जनता को कष्ट, यदि दक्षिण की ओर फैला हो तो भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि। यदि दक्षिणी नौंक ऊँची हो तो व्यापारी वर्ग को कष्ट, वर्षा में कमी। चन्द्रमा का शृंग यदि नीचे मुँह वाला हो तो उपज व पशुओं का विनाश, मन्त्रि परिषद भंग, चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन सूत्र में परेशानी, राष्ट्रपति शासन के संकेत, यदि चन्द्रमा का एक शृंग दिखाई दे तो किसी महान व्यक्ति का अभाव, चन्द्रमा छोटा हो तो दुर्भिक्ष व प्राणियों को कष्ट, यदि चन्द्रमा बड़ा हो तो सुर्भिक्ष, यदि विशाल हो तो शासक व प्रजा में सुख, यदि चन्द्रमा सुन्दर हो तो धन धान्य की पैदावार अच्छी व धान्य भाव सस्ते।

सन् २०१२ ई. में जल प्रलय भविष्यवाणी भ्रामक...

प्रस्तुति-शोधार्थी ब्रह्मर्षि वैद्य पं नारायण शर्मा कौशिक ज्योषिर्विद ज्योतिषायुर्वेदाचार्य, प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) वेदांग ज्योति (मा.) श्री परशु प्रज्ञा (पाक्षिक), श्री सालासर पंचांग (वार्षिक), सारडा बाजार, मेड़ता सिटी (नागौर), राज.-३४१५१०
सम्पर्क फोन: ०१५९०-२२०७९२ मो.-९४१३९३०२४७, ९७९९०१११९७ फोन: २२०९००

वर्तमान में विभिन्न समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में तथाकथित लेखकों-विचारकों एवं खगोल विदों तथा कुछ अन्य ज्योतिर्विदों द्वारा दैनिक समाचार पत्रों, पाक्षिक व मासिक समाचार पत्रों में सन् २०१२ में जल प्रलय की भविष्य वाणियां प्रकाशित हुई हैं तथा इस वर्ष भी दिनांक ८-०८-०८ व ८-०९-०८ को भी पूर्व में भविष्य वाणियां प्राकृतिक प्रलय तक की की गई जो भ्रामक रही हैं। जल प्रलय की भविष्य वाणी भी भ्रामक रहेगी। अतः भविष्य वेत्ताओं को चाहिए कि भविष्य वाणी में प्राकृतिक, भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं अध्यात्मिक एवं नैतिकता का पतन का जो समय चल रहा है। इसका अभी प्रथम चरण ही गणना में है। चौथा चरण के चौथे भाग में अंतिम अंश में प्राकृतिक उपद्रव प्रलय जन्य घटना घटने से पूर्व मानवीयता का अन्त होकर राक्षसीय गुणों का घर-घर में प्रादुर्भाव होगा, सन्त जन परम् पिता परमेश्वर से अन्तः भाव से पृथ्वी-धर्म-गायों द्वारा पुकार होगी। तब प्रलय का योग बनेगा। अतः उतावला पन या अपना नाम प्रसिद्धि के लिए ऐसी भ्रामक भविष्य वाणियां निरर्थक होती हैं। गृह क्लेश, बाढ़, तूफान, ज्वालामुखी फटना एवं अनैतिक कार्यों का प्रभव बढ़ेगा, यह गणना मान्य है।

समाचार पत्रों में छपे लेख के अनुसार "खगोल विदों" ने बढ़ते प्रदूषण के कारण उत्तरी ध्रुव (अंर्कार्कटिका) का ग्लेशियर (बर्फ) तेजी के साथ पिघल रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार ५० से.मी. बर्फ का पहाड़ प्रतिदिन की दर से पिघल रहा है तथा उस पर जिन्दा ज्वालामुखी है जो कभी भी फट सकता है। जिससे जल प्रलय हो सकता है। वैज्ञानिकों ने २०३० ई. में महा जल प्रलय की बात कही थी, परंतु अब २१ दिसम्बर २०१२ को जल प्रलय की भविष्य वाणी की गयी है जोकि वैज्ञानिकों का शोध आलेख का सर्वेक्षण है।

माया सभ्यता के कलेण्डर के अनुसार पांच युग होते हैं और प्रत्येक युग ५००० वर्ष का होता है। २५,००० वर्ष का महायुग होता है, और प्रत्येक महायुग के अन्त में प्रलय होती है। जिसके अनुसार २१ दिसम्बर २०१२ को जल प्रलय माना गया है। [साभार-भाग्य दर्पण (मा) भानपुरी खगुरिया-खीरी]

प्रजापति ईश्वरीय विश्व विद्यालय ओऊम शांति के अनुयायियों का भी कुछ मत ऐसा ही बताया जा रहा है। उनके द्वारा स्थापित विभिन्न केन्द्रों पर "सतयुग आ रहा है" की बातें भी ध्यान योग मुद्रा में बताई जा रही हैं। परंतु ये लोग चार युग मानते हुए चारों युगों के बीतने के बाद एक युग होता है, ऐसा भी बताते हैं। और महायुग के अन्त में प्रलय होती है, जिससे सृष्टि का विनाश होता है। **जल प्रलय के संबंध में** ईसाई और ईस्लाम का मत समान है। यानि एक जैसा ही है। ईस्लाम के अनुसार एक स्थान से जल की तीव्र धार निकलेगी, जो दुनिया को डुबो देगी। फिर नयी सृष्टि की रचना होगी। इजरत नूर अली के जमाने में भी ३ माह १३ दिन तक मूसलाधार वर्षा होने के कारण जल प्रलय हुआ था और खुदा (ईश्वर) के आदेश से नर ने सभी प्राणियों के जोड़े अपनी किश्ती में रखे थे। जिससे बाद में नयी सृष्टि की रचना हुई। ईस्लाम के ही सिद्धान्तानुसार सेज कयामत (सृष्टि का विनाश) होने के समय खैबर दर्रा से एक अजीब तरह का जानवर जो ऊँट के मानिद [समान] और सफेद होगा-निकलेगा और उसकी आवाज से प्रलय होगी। कयामत के दिन सूरज सवा हाथ पर आ जायेगा, जिससे लोग तपिश से झुलस कर जल जायेंगे एवं मरेंगे। यह मत आधुनिक खगोल विद् एवं वैज्ञानिकों से भिन्न है। जो धार्मिक भावनाओं से जुड़ा है।

—प्रेषक-डॉ. आई.ए. मंसूरी सम्पादक भाग्य दर्पण सितं. ०८

सनातन धर्म के आगमों के अनुसार जब-जब धर्म की हानि होती है, तथा दुष्टों का प्रभाव बढ़ता है। सन्त महात्माओं, गायों को संकट आता है। नैतिकता का पतन होता है तब भगवान अवतार लेते हैं तब प्रलय जैसा वातावरण होता है। यह विचार-विमर्श आध्यात्म एवं प्राकृतिक गुणों से युक्त मान कर लिखे गये हैं। **वेदों का नैत्र ज्योतिष (वेद चक्षुः) की धारणा में दिसम्बर २०१२ का परिदृश्य एक विवेचना—**

ज्योतिषीय गणना के अनुसार जल प्रलय के बारे में जानें तो नव वर्ष सन् २०१२ का शुभारंभ दिनांक २३ मार्च २०१२ से प्रारंभ हो रहा है। नव वर्ष प्रवेश के समय सन् २०१२ शाके १९३४ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि वार शुक्रवार उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र, ब्रह्म योग, किंस्तुघ्न करण, विश्वासु नाम संवत्सर तथा कन्या लग्न है। चन्द्रमा मीन राशि में होगा जो कि प्रत्येक वर्ष चन्द्र मीन राशि में लगभग रहता है। विक्रम संवत् २०६६ के आकाशीय (कौशल) परिषद के अधिकारी इस प्रकार हैं-राजा शुक्र, मंत्री शुक्र, सस्येश चन्द्र, धान्येश शनि, मेघेश गुरु, रसेश मंगल, नीरसेस रवि, फलेश गुरु, धनेश सूर्य, दुर्गेश गुरु होंगे। लग्नेश बुध होगा। तथा सृष्टि का गतांश १९५५८८११३ वर्ष होगा। तथा लग्न की स्थिति इस प्रकार होगी—

विवेचित शास्त्रीय एवं ज्योतिष गणना से दिनांक २१ दिसम्बर २०१२ को वि.सं. २०६९, शाके १९३४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शुक्रवार, तिथि नौमी, उभा नक्षत्र, वरियान योग, बालव करणे, मीन राशि का चन्द्रमा लग्न धनु का योग बनता है। ग्रह स्थिति १२वें भाव में तीन ग्रहों की स्थिति प्राकृतिक आपदा योग पूर्वोत्तर देशों में बनने का योग बनता है।

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	सु	शु	रा	के
राशि सं.	९	१२	१०	८	२	८	७	८	२
राशि नाम	धनु	मीन	मकर	वृशि.	वृष	वृशि.	तुला	वृशि.	वृष

दिनांक ३१ दिसम्बर २०१२ को पौष कृष्ण तृतीया तिथि, सोमवार दिन, पुष्य नक्षत्र ८।२५ घं.मि. तक बाद में आश्लेषा नक्षत्र। विष्कुंभ योग। बव करण का योग तथा (५) शनिवार एवं पांच रविवार पड़ेंगे जो अशुभदायक हैं तथा विष्कुंभ योग होना भी अशुभ है।

"शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।" फलत-अमेरिका, ब्रिटेन, ग्रीनलैण्ड, स्पेन, मोरक्को, अल्जीरिया, नाईजीरिया, अफ्रीका आदि देशों में प्राकृतिक आपदा से क्षति होगी। ईशान देश असम, नेपाल, मंगोलिया, जापान तथा चीन में अग्नि दाह (जण भ्रामक नहीं) युद्धात्पात योग बनेगा।

षष्ठ भाव में रा+के की युक्ति से राजनीतिज्ञों की स्थिति खराब बनेगी। एक दूसरों का परस्पर हत्या करने जैसा योग बनेगा। लेकिन जल प्रलय योग नहीं बनता है। मेष राशि का शुक्र अष्टम् भाव में होना आतंकवाद बढ़ेगा। तथा मित्र राशि का गुरु भारत को वैदिक विद्या में विजय यानि वर्चस्व दिलायेगा। तथा पांच रविवार का फल-**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यान्मतम् तत्र महदभयम्।।** अकाल का ताण्डव चलेगा, वर्षा का अभाव बनता है। छात्र भंग होगा।

इस वर्ष विश्वावसु नाम संवत्सर है, जिसके विषय में बताया गया है कि-"अब्दे (विश्वासो) विश्वावसु रोगादि योग करता है।" श्लोकानुसारेण-**अब्दे विश्वावसोः शश्वद् घोर रोगा धरासु च। सस्यार्घ वृष्टयो महता भूपाला भाति भूतयः।।**

अर्थात्-विश्वावसु संवत्सर से पूरे वर्ष भर भयानक रोगों का प्रकोप रहेगा। अन्न कम होगा। वृष्टि कम होगी। यहां तक कि सरकारें भी धन के लिए दुःखी होंगी। दशाधिकारीणी परिषद इस वर्ष की अपना प्रभाव से उपद्रव योग करेंगे।

राजा शुक्र, मंत्री शुक्र होना नदियों में जल वृद्धि होगी। वृक्षों में फल अधिक लगेंगे। पृथ्वी पार्थिव सौख्य से युक्त होगी। भय का वातावरण रहेगा। स्त्री वर्ग की कमी होगी। अपहरण एवं बलात्कारों की सीमा नहीं रहेगी। प्रजा के लिए वर्षा का योग सुखद बनेगा। गायों में दुग्ध की वृद्धि होगी। द्विज देव (विप्र वर्ग) की आराधना (पूजा-मान सम्मान) होगी। शासक वर्ग एक दूसरे के लिए युद्ध करेंगे। भारत पाक या भारत चीन में युद्ध का वातावरण क्रियान्वित होने का योग बनता है। दुर्भिक्ष योग यत्र-तत्र बनेगा। महामारी का प्रभाव बढ़ेगा। ग्रामों में हत्याएं, कलह और विग्रह। अशोभनीय कृत्य होंगे। शुक्र गुप्त रोग, धातु रोग एवं प्रेम संबंध का भी प्रतीक है। इस वर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से अति वृष्टि का योग तथा अल्प वृष्टि का योग दोनों ही बनते हैं। अतः दुःख सुख का प्रभाव बनेगा। सौराष्ट्र देश में प्राकृतिक आपदा का विशेष प्रभाव इस वर्ष होने से यहाँ का विनाश योग प्राकृतिक आपदा से होगा। मेघेश गुरु अपना प्रभाव से वर्षा योग न्यूनाधिक करेगा। वायु का वेग तेज होगा। आँधियों का वेग भयानक लगेगा। विश्व में प्रजा रोगों से पीड़ित होगी। विश्व व्यापार की स्थिति बिगड़ेगी। भारत का वर्चस्व धार्मिक दृष्टि से बढ़ेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में धूप तेज रहेगी। उत्तरार्द्ध में कम होगी। ठण्ड का प्रकोप भी बढ़ेगा। असामायिक वर्षा के प्रभाव से फसलों में भी हानि होगी। मदिरा पान नशादि का प्रकोप, प्रवृति का योग बढ़ेगा। मांसाहारी लोगों का वर्चस्व बढ़ेगा। देव दैत्य संघर्ष योग तथा पुराणे सिद्ध पीठों में भी हत्याएं मृत्यु व भय का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी वर्ग सुखी होंगे, लेकिन रोग व्याधि से दुःखी होंगे। जनता में रोग, भय एवं शोक की लहर चलती रहेगी। सत्ता परिवर्तन, अविश्वास तथा भ्रष्टाचारियों के प्रभाव से भी जनता दुःखी होगी।

इस वर्ष माह दिसम्बर २०१२ में लोहा, सोना, गेहूं, धान, चना, बाजरा, मूंग, मोठ, चावल, चांदी, तांबा, औषधियां, मशीनरी तेज होंगे। ग्रह स्थिति के अनुसार २१ दिसम्बर १२ या ३१ दिसम्बर २०१२ को जलीय प्रकोप या जल प्रलय जैसा कोई योग ग्रहों की स्थिति एवं मेदनीय ज्योतिष सिद्धान्त एवं फलित शास्त्रों के अनुसार नहीं बनता है। परंतु दुर्भिक्ष (अकाल), रोगादि व्याधियां, शासकों में कटुता, संघर्ष की स्थिति रहेगी। स्त्री वर्ग का शासन यत्र-तत्र ज्यादा बनेगा। तथा स्त्री वर्ग ही स्त्री की घातक बनकर उपद्रव मचायेगी। भारत के तटीय क्षेत्रों में जल प्लावन की स्थिति बनने का योग है। जिसमें समुन्द्र तटीय क्षेत्र की कुछ आबादी जैसे सौराष्ट्र की स्थिति बिगड़ेगी। मछुआरों का अनायास मृत्यु योग है। अमेरिका, मुम्बई, चैन्नई, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, अण्डेमान निकोबार, ब्रह्मा, हिन्दचीन, विशाखापट्टनम, पाण्डेचेरी, कर्नाटका, कराची और अन्य तटीय प्रदेशों को सावधान रहना चाहिए। यहां प्राकृतिक स्थिति बिगड़ेगी। गोवा में गुप्तचरों द्वारा हानि या जन हानि का योग अचानक बनेगा।

इस वर्ष प्रजा का झुकाव अध्यात्म की ओर बढ़ेगा। "खगोल विदों के अनुसार सूर्य की मौत होगी, सम्पूर्ण पृथ्वी का विनाश होगा।" यह भ्रामक है। ग्रह स्थिति के अनुसार ऐसा कोई योग नजर नही आता है। हाँ विवाद-युद्ध जंग आदि के योग से जनता में कमी या मौतें होंगी। तथा प्रजातांत्रिक स्थलों में संसदों (सभाओं) में मारमारी का योग युद्ध आदि की संभावनाएं बनती हैं।

सारांश

१. सन् २०१२ में जल प्रलय जैसी स्थिति मात्र भ्रामक भविष्य वाणी है। ऐसा योग नहीं है।

२. युद्धादि योग यत्र-तत्र बनेंगे, जिससे जनता में भय बना रहेगा। स्त्री वर्ग विशेष पीड़ित स्त्रीयों द्वारा ही होंगी।

३. समुन्द्र तटीय प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा एवं जल प्लावन का योग बनता है। जनता सतर्क रहें।

४. सूर्य की मौत और पृथ्वी का विनाश भविष्य वाणी भी भ्रामक रहेगी। धर्म साधना बढ़ेगी।

५. वर्षा की न्यूनता, अधिकता तथा वायु वेग एवं प्राकृतिक आपदा से जनता परेशान तो होगी मगर जल प्रलय योग नहीं होगा।

ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायन शर्मा कौशिक
मो.-९४१३९३०२४७१, ९७९९०१११९७

कुण्डली के बारह घरों के नाम तथा उनसे संबंधित विचारक विषय

लेखक-श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति

पाठकों की सुविधा व ज्ञानार्थ हेतु यह लेख मैंने संग्रह करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। मुझे आशा रहेगी कि सभी पाठक इन विषयों से लाभ उठायेंगे और मैं भी अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

1. **पहले घर के नाम**-आत्मा, शरीर, लग्न, होरा, देह, वायु, कल्प, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, आद्य, केन्द्र, पहला, कण्टक, चतुष्टय। **विचारक विषय**-स्वात्मा तथा शरीर, सुख उम्र, जाति, आरोग्य, लक्षण, गुण, क्लेश, रूप, वर्ण, लड़का, लड़की, नौकरी, खेती, साहुकारी, भिखारी, कार्यारंभ, जन्म स्थान की बात, राजनीति, आजीविका, महत्त्वकांक्षा, सौभाग्य, लोभी, प्रवास, पितामही, मातामह, कद लम्बा-छोटा, नाना, दादी, मोटा-पतला, पुत्र की किस्मत।

2. **दूसरे घर के नाम**-धन, वित्त, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, स्व, पणकर, द्रव्य, मारक आदि। **विचारक विषय**-पुत्र के सर्व कार्य, रुपये-पैसे, वस्त्र, घोड़े का काम, रास्ते का, धन, धातु, द्रव्य, कुटुम्ब के लोग तथा पड़ोसी, वंशवाणी, आभूषण, आगमन, खरीद, बिक्री, कृपण, भक्ति, गला, प्राप्ति स्थान एवं नष्ट वस्तु का आना, सत्कार, समीपस्थ जन की स्थिति, अंतिम उम्र, सखी-सहेली, पुत्र की सास, स्त्री की मृत्यु, आंख, कान, नाक, गान विद्या, प्रेम, स्वर, खजाना आदि का विचार इस घर से करें।

3. **तीसरे घर के नाम**-भ्रातृ, सहज, पराक्रम, उपचय, आपेक्लिम, दुश्चिक्य आदि। **विचारक विषय**-भाई, बहन, बन्धु, स्वप्न, लघुयात्रा, किसी के भेजने से यात्रा, देह कम्पन, संतोष, नौकर, धर्म, देव स्थान, कन्या, हाथ, कान, गुप्त शत्रु, युद्ध, खेल, चाकर, आभूषण, दासकार्य, यश, दमा, योगाभ्यास, पराक्रम, आलस्य, उद्यम, पिता की बिमारी का विचार इस घर से करें।

4. **चौथे घर के नाम**-केन्द्र, सुख, हिबुक, गृह, अम्बु, कण्टक, पाताल, तुर्य, सुहृद, वाहन, यान आदि। **विचारक विषय**-माता का, भूमि, सवारी, कृषि, पृथ्वी में गढ़ी वस्तु, मृतकमातृ धन, परिवर्तन, समीपस्थ का प्रश्न, कुक्षि, आंत, राजकीय कैदी, मृतक मनुष्य का धन, चाची, ताई, फूफी, भली, बुरी, धर्मशाला, सास-ससुर, विशेष दवाई, खेत-खलिहान, मित्रों से लाभ, सिंहासन, गद्दी की प्राप्ति, फूलवारी, चतुष्पद, मकान, गृह, ग्राम, वाहन, शांति, माता की सवारी, पेट के रोग आदि का विचार इस घर से करें।

5. **पांचवे घर के नाम**-पंचम, त्रिकोण, बुद्धि, विद्या, सुत, पणफर, वाणी आदि। **विचारक विषय**-पुत्र, गर्भ, वस्तु लाभ, आनन्द से भेजे हुए व्यक्ति का आगमन, प्यार भरे पत्र, ईश्वर भक्ति, बुद्धि, विद्या, आश्चर्य के कार्य, अचानक लाभ, मंगल कार्य, पितृ धन, विदेशी व्यापार का, पुत्र धन, राजा द्वारा लाभ, इधर-उधर से संतान ले जाने का मंत्र, छोटा भाई, व्यवस्था, नौकरी छूटना, हाथ का यश, मूत्र संबंधी, पीठ, कोख।

6. **छठे घर के नाम**-रिपु, त्रिक, रोग, शत्रु, आपेक्लिम, उपचय आदि। **विचारक विषय**-रोग, मामा, मौसी, मित्र का मित्र, मृत्यु, चोरी धन, घाव, दास, दासी, चौपाया, मार, जादू, टोना, ताबीज, चिन्ता, जमींदारी, गुप्त स्थान, कर्जा, अपयश, सौतेली मां, विश्वासघात, उदर, आंत, नाभी, कमर, भैंस, डर, शंका, दादी के रोग का, युद्ध आदि का विचार इस घर से करें।

7. **सातवें घर के नाम**-केन्द्र, सौभाग्य, जाया, काम, कलत्र, स्त्री, मदन, जामित्र आदि। **विचारक विषय**-लेन-देन, दूसरे से विवाद, आना-जाना, स्त्री-पति, यातायात, दूध, व्यापार, मार्ग, साझा, चोर, स्थित धन, विजय, मैथुन, परदेश विवाह, नष्ट वस्तु, मुकदमा, प्रेम, प्रत्यक्ष, शत्रु, ट्रान्सफर, वैद्यक, गुप्तांग, जुआ, सामने वाले से हार जीत, भाई का भतीजा, बड़े से छोटा पुत्र, पुत्र के साले की बहू, ससुर की माता आदि का विचार करें।

८. **आठवें घर के नाम**-पणफर, त्रिक, आयु, मृत्यु, रंध्र, चतुरस्त्र आदि। **विचारक विषय**-मौत का, कर्ज, लड़ाई, चिन्ता, कष्टादि, ससुराल की स्थिति, स्त्री संबंध से या विवाह से धन लाभ, वसीयतनामा से लाभ, सट्टा, लॉटरी, छूटी आशा का धन, सजा, आलस्य, झूठी बात, नदी के पार जाना, रास्ते का संकट, नष्ट धन, गुप्त कार्य, गुदारोग, युद्ध, गुप्त धन, जनेन्द्रिय, कुत्ते या सांप का काटना, शाकिनी, डाकिनी आदि का विचार इस घर से करें।

9. **नवें घर के नाम**-भाग्य, धर्म, त्रिकोण, पुण्य आदि। **विचारक विषय**-तीर्थ यात्रा, धर्म, दूर यात्रा, भाग्य, जप, योग, पति धर्म, देवपूजा, स्थापित धन, संचित धन, विश्वास, सेवा, ऐश्वर्य, सन्यास, यश, गुरु, पिता, समाज सेवा, सार्वजनिक कार्य, राजकीय संस्था से संबंध, देव मन्दिर, देवी मंदिर, जलाशयों, प्रताप वृद्धि, ईश्वर भक्ति, कुंआ, तालाब, साला, बहनोई, भाई की स्त्री यानि भावज का, पौत्र, विदेश यात्रा, भाग्योदय स्थान, जांघ, पुत्र की विद्या, गुरु बनाना, गुरु से मिलना, सुन्दरता आदि का विचार इस घर से करें।

10. **दसवें घर के नाम**-केन्द्र, कर्म, गगन, आस्पद, नभ, व्योम, स्व आदि। **विचारक विषय**-राजा, हाकिम, रोजगार, यान, कला, प्रताप का घटना बढ़ना, आकाश संबंधी समाचार, ग्रहण, ग्रेजुएट होना, चुनाव में विजय, महाविद्यालय की परीक्षा, योगी, परीक्षा उत्तीर्ण, शास्त्रार्थ में विजय, खेती, अधिकार, राजदरबार, सामाजिक सम्मान, प्रतिष्ठा, जायदाद, अधिक शक्तिशाली शत्रु, चोरी का धन, ज्येष्ठ बन्धु की मृत्यु, बल, तंत्र, सेना, औषधि, मेघ, यंत्र, जाति, मुखिया, वैद्य, पैर, रुपया, धूमकेतु, परिवेश मंडल, पिता का धन, सम्पत्ति, इज्जत, परदेश में रहना, पुत्र की बिमारी, घुटने, नौकरी कर्म क्षेत्र, विदेशागमन, व्यापार, उद्योग-धन्धा, पिता का सुख, किसी अधिकारी से मिलना, दुकान खोलना आदि का विचार इस घर से करें।

11. **ग्यारहवें घर के नाम**-आय, उत्तम, पणफर, उपचय, लाभ आदि। **विचारक विषय**-बेटे की बहू, आमदनी, कविता, समय, अज्ञात धन की आशादि, हाथी, घोड़े की सवारी, कपड़ा, सोना, मंत्री, सिद्धि, दीवान, जज, न्यायकर्ता, शांति, सत्य, धारणा, नवीन योजना, पिता का धन, माता की मृत्यु, मोटर, हवाई जहाज, भाईयों से आर्थिक मदद, पिण्डली, कान, दामाद, दूसरी पत्नि, बड़े भाई, बड़ी बहन, मित्र, लाभ, विद्या, पालकी, लड़की के भाग्य आदि का विचार इस घर से करें।

12. **बारहवें घर के नाम**-व्यय, अंतिम, प्रांत, त्रिक, रिष्क आदि। **विचारक विषय**-खर्च, परदेश गमन, निद्रा भंग, मन में चिन्ता, दरिद्रता, किसी काम को छोड़ने, किसी पदार्थ के योग, किसी के साथ विवाद, अभिष्ट कार्य, खेतों में, सब संस्थाओं में धन का खर्च, ताऊ, चाचा, शत्रु पीड़ा, वन पर्वत, दान, भ्रमण, पशु, उद्योग, नाश, कर्ज, खून, आत्म हत्या, पूर्वाजित सम्पत्ति, जेल खाना, मोक्ष, बन्धन मुक्ति, व्याधि दूर होना, बैल आदि, पशु का बन्धन, राजमान, चरण, नेत्र, अपव्यय, घाटा, तलाक, गुप्त विद्या, षड्यंत्र, राजदंड, व्यसन, पैर की अंगुलियां, तलबे, चाचा, मामी, भाई, बहन का सुख, भूत-प्रेत पीड़ा आदि का विचार इस घर से करें।

विशेष-जन्म लग्न अथवा प्रश्न लग्न से जिस-जिस घर में शुभ ग्रह हों और शुभ ग्रहों की उस पर दृष्टि हो तो उस-उस घर का शुभफल जानना और जिस-जिस घर में अशुभ ग्रह हों और उस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उस-उस घर का अशुभ फल जानना और जिस-जिस घर में शुभ-अशुभ ग्रह हों और उस पर शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों की दृष्टि हो तो उस-उस घर का मिश्रित फल जानना। ज्योतिष सीखने वालों के लिए एवं ज्योतिष प्रेमी पाठकों के लिए यह लेख उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

लेखक-श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति
ग्राम-कालेवाला, पोस्ट-गोपीवाला, जिला-मुरादाबाद
पिन-244601 (उत्तर प्रदेश)

सन् २००८-१० के व्यापार जगत तथा शेयर बाजार संबंधित मुख्य बातें

❖ परिलेखकर्ता-आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री

इस वर्ष की दीपावली २८ अक्टूबर २००८ ई. को पड़ रही है। इस दिन अमावस्या तिथि रात्री मेष में ४।४४ बजे तक रहेगी। चित्रा नक्षत्र में १८।२३ बजे तक। तत्पश्चात् स्वाती नक्षत्र विष्कुंभ योग ९।५५ बजे तक तत्पश्चात् प्रिति योग रहेगा। दीपावली पर्व की ग्रह स्थितियां तथा जगत लग्न कुण्डली की ग्रह स्थितियों के अनुसार इस वर्ष जगत लग्न कुण्डली धन लग्न तथा वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रही है। लग्न का स्वामी गुरु चतुर्थ भाव का स्वामी होकर अपनी नीच राशि मकर में शत्रु राहु के साथ चाण्डाल योग धन भाव में बना रहा है। इस ग्रह प्रभाव से समस्त अंतर्राष्ट्रीय जगत आर्थिक हालातों से किसी न किसी कारण से प्रभावित रहेगा। ग्रह स्थितियों के अनुसार आर्थिक हालात विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों में अनियंत्रित रहेगा। जिससे पूरा विश्व प्रभावित रहेगा। दीपावली की ग्रह स्थिति के अनुसार शेयर्स बाजार के हालात शुभ कारक प्रतित नहीं होते। और भविष्य में भी इसमें तेजी कम मंदी की धारणा अधिक है। प्राय: बाजार में उतार-चढ़ाव बनने की संभावना है। यदि किसी कारण से बाजार संभलता है तो उससे अधिक अचानक बिकवाली बनने से बाजार गिर सकता है। आने वाले समय में वैश्विक मंदी बने रहने की संभावना है। भारतीय शेयर बाजार आने वाले दिनों में ५५०० से ७००० अंकों के बीच चलते रहने की संभावना है। अर्थ आकड़ों के बाजीगर प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह, वित्त मंत्री पी.चिदम्बरम्, योजना आयोग के उपाध्यक्ष की तिकड़ी जनता को भी आश्वासन दे रही है। सच्चाई यह है कि लिक्विडिटी का क्रंच शुरू हो गया है। विदेशों में अपने यहां के कई बैंक लिक्विडिटी की कमी को पूरा करने के लिए कुछ दिन के लिए २० प्रतिशत ब्याज पर उधार नकदी ले रहे हैं। शेयर बाजार से विदेशी संस्थाएं अपनी रकम निकालती जा रही हैं। आने वाले समय में सीमेन्ट, भारी ईंजीनियरींग, ऑटो मोबाईल, पेट्रो रसायन तथा रियल एस्टेट का बुलबुला किसी भी समय फट सकता है। मार्च २००९ तक शेयर बाजार बिकवाली दबाव में ७००० अंको से भी नीचे ग्राफ आश्चर्य तरीकों से आ सकता है। ऐसे तो उतार-चढ़ाव का सिलसिला मार्च १० तक जारी रह सकता है। अत: बाजार रुख देखते हुए दैनिक कारोबार करते रहने पर सामान्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। चढ़ते बाजार को देखते ही दैनिक समाचार पत्र तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया गुलाबी तस्वीर प्रस्तुत कर देते हैं। परन्तु थोड़ा सा बाजार करवट लेते ही उन विश्लेषकों द्वारा नकारात्मक बातों की घुटी पिलाना शुरू कर दी जाती है। अप्रैल से जून तक घटाबढ़ी, जुलाई से सितम्बर तक बाजार कुछ मजबूती की ओर रहेगा। अक्टूबर से दिसम्बर तक कुछ तेजी बन सकती है। जबकि जनवरी १० से मार्च तक व्यापक गिरावट बन सकती है। अत: बाजार रुख देखते हुए सामान्य स्तर के कारोबार करते हुए ९ जनवरी २००८ को २१२०६ अंक, ३१ मार्च २००८ को १५६६४ अंक, ३१ जून २००८ को १३४६१ अंक, ३० अगस्त २००८ को १४५६४ अंक, २० अक्टूबर को १०२३ अंक की भारी गिरावट की कालखंड साबित हुआ है। दीर्घ कालीन निवेशक के लिए आने वाले दिन निवेशकों को लाभकारी रहेगा। ऐसे तो शेयर्स बाजार में पूर्ण मजबूती आने में कुछ और समय लगेगा। धैर्यवान निवेशकों ने बाजार रूख पहचान लिया तो पैसा आते देर नहीं लगेगा।

कमोडिटी बाजार में कच्चे तैलों के मूल्यों में गिरावट का सिलसिला मार्च २००९ तक जारी रह सकता है। अप्रैल से जुलाई तक व्यापक घटाबढ़ी, अगस्त से अक्टूबर तक सामान्य तेजी, नवम्बर से मार्च १० तक व्यापक गिरावट की संभावना है। सोना, चांदी के वर्तमान मूल्यों में गिरावट जारी रह सकती है। जनवरी २००९ तक यह गिरावट १०००० के आसपास चल सकती है। आने वाले समय में सोना-चांदी में व्यापक गिरावट की आशंका अधिक है। तिल, उड़द, कालीमिर्च, अजवायन, अमचूर, मूंग, हल्दी, जीरा आदि के वर्तमान मूल्यों में जनवरी २००९ से मार्च तक सामान्य, अप्रैल से जुलाई तक भयंका तेजी, अगस्त से नवम्बर तक तेजी की धारणा। चावल, गेहूं, चना, धनियां, आलू, गमग्वार, लालमिर्च, काजू, अखरोट, किसमिस, छुआरा आदि में प्राय: घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की। जून २००९ से सितंबर २००९ इन जिन्सों में एकबार अच्छी तेजी बन सकती है। जबकि अधिक धारणा मंदी की है। सोना के वर्तमान मूल्य में गिरावट आकर ७००० के आसपास स्थिरता बनी रह सकती है। अगस्त से सितंबर तक लालमिर्च, गमग्वार, कालीमिर्च, सोना, कॉपर, हल्दी, चना में अच्छी तेजी बन सकती है। जबकि अक्टूबर से दिसंबर तक व्यापक मंदी। २० दिसंबर २००९ से मार्च २०१० तक उपरोक्त जिन्सों एवं धातुओं में व्यापक उठापटक होने की संभावना है। ◆

भारतीय मानूसन एवं अकाशी लक्षण के हालात सन् २००९ ई.

लेखक-पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार

जनवरी-ता. १ को शुक्र धनिष्ठा में प्रवेश करने से शीत लहरों के प्रकोप में वृद्धि होगी। ता. ४ को शुक्र शतभिषा में, ता. १३ को सूर्य मकर में तथा ता. १५ को बुध पश्चिम में अस्त होने से ता. ५, ६, ७, ९, ११, १२ को हिमपात, बादल वृष्टि से जन जीवन बाधित होगा। पहाड़ी प्रदेशों में हिमपात, भूस्खलन से जन धन की हानि होगी। सूर्य की मकर संक्रान्ति अग्नि मण्डल में पड़ने से अनेक भूभागों में अचानक मौसम में अप्रत्याशित विपर्यय देखने को मिलेगा। कृषि की हानि भी संभावित, दिन-रात के तापमान में गिरावट जारी रहेगी।

फरवरी-ता. १ को मंगल उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में तथा इसी तारीख को बुध मार्गी होने से मौसम में आश्चर्यजनक गिरावट जारी रहेगी। पूर्णिमा के नजदीक सूर्य सहित पंचग्रही योग मकर राशिगत होने से मौसम का दिल-दिमाग बनता बिगड़ता है। ता. ५ को सूर्य धनिष्ठा में ता. १९ को शतभिषा में प्रवेश करने से प्राकृतिक उत्पाद विशेष समभावी है। उत्तर भारत में शीत लहर का प्रकोप अभी भी जारी रहेगा। ता. ५, १०, ११, १२, १८, १९, २१, २३ को मौसम विपर्यय बूंदाबांदी का योग बनेगा। कुंभ संक्रान्ति वायु मंडल में पड़ जाने से पश्चिम भारत में वायु वेग घटने से ठंड में वृद्धि होगी। मैदानी भागों में यत्र-तत्र साधारण से भारी वर्षा भी संभावित है। मासांत में आकाश साफ होता दीखेगा।

मार्च-ता. १ को सूर्य शतभिषा में, सूर्य पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में, ता. १७ को उत्तर भाद्रपद में और ता. ३१ को रेवती में प्रवेश करने से, ता. ६ को शुक्र वक्री होकर २४ को पश्चिम में अस्त होगा। फलतः तापमान में धीरे-धीरे गर्मी बढ़ने लगेगी। वायुवेग उपद्रव से समुन्द्र तटीय प्रदेशों में जनजीवन प्रभावित होगा। मीन की संक्रान्ति वायुमंडल में पड़ जाने से पूर्वी भारत में मौसम साफ होता जाएगा। परंतु पश्चिमी भारत में रह रहकर वायुवेग का उपद्रव बना रहेगा। उत्तर भारत में मौसम साफ तथा मनमोहक दीख पड़ेगा। वसंत का गुलाबी वातावरण खुशनसीब तथा दिन के तापमान में धीरे-धीरे उष्णता बढ़ती जाएगी। राहु-गुरु की युक्ति मकर राशिगत होने से अचानक कुछ प्रदेशों में प्राकृतिक उत्पात अथवा अन्य मौसम विपर्यय स्थितियां जनजीवन बाधित करेंगी। पशु पक्षियों की हानि होगी।

अप्रैल-ता. १ को मंगल पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करने से मासारंभ में दिन के तापमान में अचानक उष्णता बढ़ती जाएगी। ता. ६ को बुध मेष में प्रवेश करने से आंधी तूफान तथा वायुवेग के दबाव से जनजीवन, यतायात के साधनों में गतिरोध उत्पन्न होगा। ता. १३ को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने से तथा ता. १४ को मंगल जलीय राशि मीन में प्रवेश करने से दक्षिण एवं पश्चिम भारत में कहीं-कहीं वर्षा से, गर्मी से राहत मिलेगी। परंतु उत्तर भारत में अत्यधिक गर्मी से जनजीवन बाधित होंगे। सूर्य अग्नि मण्डल में प्रवेश करने से दिन के तापमान में आश्चर्यजनक ग्राफ तेजी से ऊपर उठेगा। ता. १८ को शुक्र मार्गी होने से अचानक वायुवेग के साथ वर्षा होने से मौसम सुहाना प्रतीत होगा।

मई-ता. १ को गुरु कुंभ में, ता. ७ को बुध वक्री। फलतः गर्मी का जोर धीरे-धीरे बढ़ता ही रहेगा। हवा में उष्णता बनी रहेगी। पश्चिम उत्तर भारत के मैदानी भूभागों में तपन का एहसास अपनी चरम सीमा पर दिखाई देगा। दक्षिण भारत के कुछ भूभागों में आंधी, तूफान, वायुवेग तथा वर्षा से व्यापक जन धन की हानि होगी। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करने से अचानक बादल वृष्टि भी संभावित है। ता. २५ को सूर्य रोहिणी में प्रवेश करने से मौसम में विपर्यय स्थितियां उत्पन्न होंगी। ताप लहरी से जनजीवन बाधित रहेगा। यदा-कदा असामयिक वर्षा या बादल वृष्टि से तापमान में गिरावट संभावित है।

जून-यह मास उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश हो रहा है। ता. ४ को गंगा दशहरा, ता. ५ को बुध वृष में, ता. ७ को सूर्य मृगशिरा में प्रवेश करने से मासारंभ से ही गर्मी का जोर बढ़ता रहेगा। मैदान के इलाकों में ताप लहरों से जनजीवन अस्त व्यस्त रहेगा। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से पहाड़ों पर तापमान का ग्राफ ऊपर उठने से बर्फ पिघलने का क्रम जारी रहेगा। ता. २१ को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करने से नेपाल, बिहार, असम में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। २२ जून के आसपास मानसून पूरी तरह सक्रिय हो जाएगा। ता. १६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २७ को मौसम में बदलाव दीख पड़ेगा। कहीं-कहीं प्रदेशों में सामान्य से भारी वर्षा तो कुछ प्रदेशों में अनावृष्टि से किसान चिंतित रहेंगे। पश्चिम भारत में मौसम विपर्यय से खड़ी फसलों की विशेष हानि।

जुलाई-ता. २ को बुध पूरब में अस्त होने से, ता. ३ को मंगल वृष में, ता. ५ को सूर्य पुनर्वसु में प्रवेश करने से मासारंभ में उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, आदि प्रदेशों में व्यापक वर्षा से जनजीवन बाधित होंगे। ता. ३, ६, १०, ११, १४ को भयंकर वर्षा संभावित है। ता. १५ को बुध कर्क में, ता. १६ को सूर्य भी जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से भारत के कुछ प्रांतों में व्यापक वर्षा से बाढ़ की स्थिति भयावह उत्पन्न हो सकती है। जिसका सहज समाधान भी संभावित नहीं है। ता. १९ को सूर्य पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करने से मासांत तक वर्षा का क्रम जारी रहेगा। हालांकि कुछ प्रदेशों में मौसम दगा भी देगा। जिससे किसान चिंतित हो सकते हैं। ता. २२ को सूर्य ग्रहण होने से कई तरह के प्राकृतिक प्रकोप से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

अगस्त-ता. १ को शुक्र आर्द्रा में प्रवेश करने से मानसून सक्रिय दिखाई पड़ेगा। जो प्रदेश पिछले वर्षों में सूखाग्रस्त रहे हैं, वहां भी वर्षा इस माह व्यापक होगी। इस वर्ष कृषि उत्पादन समयानुकूल वर्षा होने से उपज पर वृद्धि होगी। ता. १, ३, ५, ७, ९, १३, १४, १७, २१, २३ को अनेक भूभागों में सामान्य से भारी वर्षा संभावित है। ता. १ को सूर्य मघा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। ता. ३० को सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में प्रवेश करने से मौसम का उपद्रव कुछ शांत दिखाई पड़ेगा। परंतु मघा नक्षत्र का जल किन्हीं प्रदेशों में ही संभावित है। जबकि उत्तरा के जल से कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से खड़ी फसलों को नुकसान होगा।

सितम्बर-यह मास उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रारंभ हो रहा है। पूर्वा फाल्गुन का कीमती जल बहुत कम प्रदेशों में संभावित है। ता. १३ को सूर्य उत्तराफाल्गुनी में प्रवेश करने से, जबकि ता. १५ को शुक्र सिंह में, ता. २४ को बुध भी सिंह में प्रवेश करने से, ता. १३ के बाद आंधी, तूफान, वायुवेग आदि से कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि का योग है। मौसम में व्यतिक्रम होगा। मानसून के छिटकने के कारण कृषक लोग चिंतित दिखाई पड़ेंगे। ता. २४ से मासांत तक कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि की संभावना रहेगी। कन्या की सूर्य संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ने से मानसून में कमजोरी महसूस होगी। भारत के कुछ भूभागों में भूस्खलन अथवा अन्य प्राकृतिक उत्पात संभावित हैं।

अक्टूबर-इस माह में ५ शनिवार एवं ५ रविवार होने से मानसून की सक्रियता धीरे-धीरे समाप्त होती जाएगी। हस्त नक्षत्र का जल भाग्यशाली प्रदेशों में अचानक सक्रिय होकर वायुवेग के साथ साधारण से भारी वर्षा संभावित है। दिन का तापमान सामान्य या अधिक होने से जनजीवन कष्ट अनुभव करेंगे। ता. १३ को गुरु मार्गी तथा १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करने से तुला संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ना अशुभ है। अधिकांश भूभागों में तीव्र धूप से दिन के तापमान में गर्मी का अनुभव होगा। कुछ प्रदेशों में ता. ५, ६, ७, ९, ११, १२ को साधारण से भारी वर्षा होना संभावित है। समुद्र तटीय प्रदेशों में वायुवेग, आंधी, तूफान से व्यापक जन धन की हानि होगी।

नवम्बर-ता. ३ को शुक्र तुला में, ता. ११ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से हिमाचल प्रदेश, कुमाऊँ मण्डल, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखण्ड में छिटपुट वर्षा के साथ हिमपात होगा, तराई वाले क्षेत्रों में शीत प्रकोप धीरे-धीरे बढ़ेगा। दक्षिण पूर्व भारत के समुद्र तटीय प्रदेशों में भारी वर्षा, चक्रवात से जनधन की विशेष हानि संभावित है। ता. १६ को वृश्चिक की सूर्य संक्रान्ति महेन्द्र मण्डल में पड़ जाने से मौसम में अनुकूल परिवर्तन संभावित है। रात्रि के तापमान में अचानक भारी गिरावट। उत्तरी क्षेत्र में शीत लहरों का प्रकोप बढ़ता जाएगा। ता. २, ५, ७, १०, १३, १४, १७, २०, २२, २३, २६, २९ को कहीं-कहीं साधारण से भारी वर्षा संभावित है।

दिसम्बर-ता. १ के बुध धनु में प्रवेश करने से तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल, उड़ीसा, महाराष्ट्र के समुद्र तटीय क्षेत्रों में आंधी तूफान वर्षा हो सकती है। मैदानी भूभागों में मौसम में व्यतिक्रम दिखेंगे। उत्तर भारत में शीतलहर का जोर बढ़ेगा। हिमपात, भूस्खलन, हिमालय क्षेत्रों में व्यापक ओला, हिमपात होने से ठंडक बढ़ती जाएगी। ता. १५ को धनु सूर्य संक्रान्ति वरुण मण्डल में पड़ने के कारण मैदानी क्षेत्रों में यत्र-तत्र बादल वृष्टि शीत लहरों के प्रकोप बढ़ जाएंगे। जिससे यातायात एवं वायुयान प्रभावित होंगे। व्यापक ठंड से मृत्यु दर का ग्राफ ऊपर उठेगा।

शेष 13 का शेष

सूर्यग्रहण को भारत से बाह्य कंकणाकृति रूप में दक्षिण-पूर्वी बंगलादेश, लंका के उत्तरी भाग और अफ्रीका महाद्वीप में भी देखा जा सकेगा। भारत के कुछ दक्षिणी भाग कन्याकुमारी, रामेश्वरम् एवं तामिलनाडु और केरला के दक्षिणी छोर पर कंकणाकृति रूप में देखा जायेगा। विश्व भू-भाग पर दिखाई देने का समय भा.स्टै.टा. ९।३४ बजे से दोपहर ३।३८ बजे तक का है। जबकि दिल्ली क्षेत्र में दिखाई देने का समय व विवरण निम्न प्रकार है।

ग्रहण स्पर्श-११।५३ बजे। **ग्रहण मध्य**-१३।३९ बजे। **ग्रहण मोक्ष**-१५।१२ बजे। **कुल ग्रहण काल (पर्व काल)**-३ घंटा १९ मिनट। **ग्रहण वेध (सूतक)**-ता. १४ जनवरी २०१० ई. की रात्री ११।५३ बजे प्रारंभ होगा। प्रातः देवस्थानों में सूतक विधान मान्य रहेगा।

विश्वव्यापी प्रभाव-माघ मास की मौनी अमावस्या का ग्रहण धार्मिक जनों, विद्याभ्यासियों व धर्म प्रचारकों के लिए कष्ट व परेशानी प्रद रहेगा। दक्षिणी पश्चिमी प्रदेशों व राष्ट्रों में रोगोत्पात, प्राकृतिक, आपदाओं और कूटनीति के दुष्प्रभावों से जनसमूह में भयवृद्धि रहेगी। धातु बाजारों में सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहादि भावों की विशेष अस्थिरता होगी।

दक्षिणी भारत में कंकणाकृति ग्रहण दिखाई देने के प्रमुख स्थान (घं. मि. मे)

नगर नाम	ग्रहण आरंभ	कंकण आरंभ	मध्य	कंकण समाप्ति	ग्रहण समाप्ति	पर्व काल	कंकणावधि (मि.सै.)
मदुरै	११।१२	१३।१९	१३।२१	१३।२२	१५।१०	३।५८	२।५७
तिरूवनन्तपुरम्	११।०५	१३।११	१३।१४	१३।१८	१५।०६	४।०१	७।१८
कन्याकुमारी	११।०६	१३।१०	१३।१५	१३।२०	१५।०७	४।०१	९।५९
तिरूनेलवेली	११।०८	१३।१२	१३।१७	१३।२१	१५।०८	४।००	८।५०

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	रोग उत्पात	चिन्ता	सुख उपभोग	स्त्री कष्ट	अरिष्ट	अप व्यय	कार्य लाभ	धन अर्जन	हानि	देह अरिष्ट	अर्थ कष्ट	धन लाभ

भारतीय प्रमुख शहरों के ग्रहणारंभ व समाप्ति काल

स्थान	आरंभ	मध्य	मोक्ष	स्थान	आरंभ	मध्य	मोक्ष	स्थान	आरंभ	मध्य	मोक्ष
अजमेर	११।४२	१३।३१	१५।०८	चेन्नई	११।२५	१३।३१	१५।१५	बैंगलोर	११।१७	१३।२४	१५।११
अगरतल्ला	१२।१७	१४।०४	१५।३२	जालंधर	११।५४	१३।३६	१५।०५	भोपाल	११।४१	१३।३६	१५।१४
अमृतसर	११।५७	१३।३४	१५।०४	जयपुर	११।४६	१३।३५	१५।१०	मुम्बई	११।१७	१३।१८	१५।०५
अहमदाबाद	११।२७	१३।२२	१५।०४	जबलपुर	११।४७	१३।४०	१५।१६	लुधियाना	११।५५	१३।३६	१५।०५
आगरा	११।५१	१३।३८	१५।१३	डिब्रूगढ़	१२।२८	१४।०८	१५।३४	श्रीनगर	१२।०२	१३।३६	१५।००
इलाहाबाद	११।५७	१३।४८	१५।२१	दार्जिलिंग	१२।१४	१४।०१	१५।२९	सोलन	११।५९	१३।४१	१५।१०
इम्फाल	१२।२४	१४।०८	१५।३५	नागपुर	११।४०	१३।३८	१५।१७	सिलीगुडी	१२।१४	१३।५९	१५।२८
उज्जैन	११।३६	१३।३१	१५।११	पटना	१२।०४	१३।५४	१५।२५	हरिद्वार	११।५८	१३।४१	१५।११
कलकत्ता	१२।०७	१३।५८	१५।३०	पूना	११।१९	१३।२१	१५।०७	हिसार	११।५१	१३।३७	१५।०९
कटक	११।५७	१३।५२	१५।२६	वाराणसी	११।५८	१३।५०	१५।२२	हैदराबाद	११।२९	१३।३२	१५।१६
कानपुर	११।५७	१३।४५	१५।१८	बीकानेर	११।४८	१३।३४	१५।०४				

◆◆◆

मंत्र उत्कीलन व मालाऐं

❒ लेखक–डॉ. प्रेम प्रकाश ''विद्रोही''

जब किसी भवन का ताला बन्द हो हम अन्दर ताला खोले बिना प्रवेश नहीं कर सकते हैं। इसी तरह मंत्र उत्कीलन विधि के विद्वान् पंडित को भी तब ही मंत्र सिद्धि में सफलता मिलती हैं। जबकि वह मंत्र उत्कीलन विधि का पूर्ण ज्ञाता हो।

मंत्र उत्कीलन विधि

मंत्र शास्त्र के ग्रन्थों में-**भूतड़ाकार**-आदि में मंत्र उत्कीलन की दो प्रमुख विधियां वर्णित की गई हैं-1. जिस मंत्र को सिद्ध करना हो शुभ मुहूर्त्त में विधि-विधान से निश्चित स्याही अष्ट गंध आदि से १०८ बार लिखकर षोडस उपचार से पूजन कर मंत्र को पवित्र नदी में प्रवाहित कर दशांश तुल्य हवन आहुति, कन्या-ब्राह्मण भोजन आदि कराकर प्रयोग करना चाहिए। 2. अपने इष्ट देव की गंगा आदि पवित्र नदी की मिट्टी से मूर्ति बनाकर, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र में मंत्र लिखकर मूर्ति के सीने पर रखें। प्रतिदिन षोडष उपचार से पूजन एक माह तक कर शुभ मुहूर्त्त में मूर्ति व मंत्र प्रवाहित कर होमादि कर दें। मंत्र का उत्कीलन हो जाने पर प्रयोग करें।

दूषित द्रव्य शोधन

कीट-पतंग, मंत्र साधन की विधि से व विषादि मंत्र प्रक्रिया से दूषित हो जावे या अन्य कारण से अशुद्ध हो जावे तो 108 बार यह मंत्र गुरु आज्ञा से पाठ करें-**ॐ ह्रीं त्रिपुटि-त्रिपुटि, कठ-कठ, अभिचारिक दोषं कीट-पतंगादि स्पर्श दोषं रिप्वादि दूषित हन-हन, नाशय-नाशय, शोषय-शोषय हुं फट स्वाहा।**

बीज मन्त्रम्

कुछ प्रमुख देवी-देवताओं के बीज मंत्र दिये जाते हैं। शेष की जानकारी गुरु व विद्वान् पंडितों से मिलकर प्रयोग करें।

क्रमांक	देवता	बीज मंत्र / मंत्र
1.	श्री गणेश जी	गं
2.	हरिद्रा गणेश जी	ग्लं
3.	सूर्य	ॐ घृणि सूर्य आदित्य
4.	श्री विष्णु जी	ॐ नारायणाय नमः
5.	श्री ब्रह्मा जी	ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म
6.	श्री शिव मंत्र	नमः शिवाय
7.	दुर्गा मंत्र	ॐ ह्रीं दुर्गे रक्षिणि स्वाहा
8.	श्री लक्ष्मी मंत्र	श्री
9.	सर्वोपरी मंत्र	हरि ॐ तत्सत्
10.	मातंगी मंत्र	ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातग्ये फट स्वाहा
11.	अन्नपूर्णा मंत्र	ह्रीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा
12.	श्री सरस्वती मंत्र	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सरस्वत्यै नमः

आसन व मालाऐं

उत्कीलन समय मंत्र पाठ का समय बैठने का आसन, मुद्रा व माला का ध्यान भी रखना आवश्यक है। रुद्राक्ष की माला सभी जापों में, स्फटिक माला सरस्वती मंत्र जापों में, तुलसी माला भगवान् राम-कृष्ण, श्री विष्णु गायत्री मंत्र जापों में, लाल चन्दन माला दुर्गा जी के जापों में, मूंगे की माला श्री गणेश जी, हनुमान व मंगल ग्रहों के जापों में, कमल गट्ठे की माला श्री महालक्ष्मी-विष्णु जी के जापों में, हल्दी माला बगुलामुखी देवो, श्री बृहस्पति जी व शत्रु पीड़ा निवारण जापों में, फिरोजा की माला पति-पत्नि मन-मुटाव दूर करने के जापों में प्रयोग करना उत्तम सिद्धिप्रद रहता है। शेष कार्यों की मालाओं का ज्ञान गुरु या विद्वान् पंडितों से ज्ञात कर सिद्धि व सुयश प्राप्त करें। मंत्र उत्कीलन विधि का सही ज्ञान या प्रयोग नहीं करने पर मंत्र लाभ की अपेक्षा नुकसान भी कर सकता है। अतः सावधानी भी आवश्यक है। ◆◆

वर्षा योग 2009 ई.

परिलेखकर्ता–रामावतार गुप्ता "व्यापार भूषण"

वर्षा होने के कुछ नियम

मण्डल बदले कोई ग्रह या उदय अस्त हो। रवि उत्तर-दक्षिणायन मावस पूनम क्षय हो। अतिचारी हो क्रूर ग्रह साधारण बरसाय। सोम्य ग्रह वक्री चले सावन उत्तर वाय। पछवा चलै मास दस वर्षा होय सुहाय। गुरु उदय शुक्रास्त हो मंगल वर्षे मेह। अथवा सूर्य देव आर्द्रा पर जब आवै। यही नियम है साधारण वर्षा तब आवै॥ अर्थात् कोई भी ग्रह राशि बदले या अस्त-उदय हो, सूर्य उत्तरायण अथवा दक्षिणायन हो, मावस या पूनम का क्षय हो। कोई भी क्रूर ग्रह अतिचारी गति से अधिक चले या सौम्य ग्रह वक्री चले, मंगल अपनी राशि बदले या सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश करें तब प्रायः वर्षा हो जाती है। यह नियम है। प्रायः अन्य ग्रहों की स्थिति दखल अंदाजी से वर्षा होना जरूरी नहीं है। भादव में जब पूर्वी पवन चलती है, सावन में उत्तर की वायु चले तथा शेष दस महीनों में पश्चिम की वायु चले तो यह वर्षा कारक होती है।

आधा प्रहर आषाढ़ में वर्षे एक प्रहर हो ज्येष्ठ। बैशाखे दो प्रहर, चैत्र में सिर्फ एक दिन वर्षा नेष्ट। फागुन में दो दिन वर्षे, अरु माघ महीने में तीन दिन। है अकाल सूचक यह वर्षा, संवत् हो वर्षा से हीन॥ अर्थात् आषाढ़ में केवल चार घड़ी,ज्येष्ठ में एक प्रहर, वैशाख में दो प्रहर, चैत्र में एक दिन वर्षा हो तो नेष्ट फल होता है। फागुन में दो दिन, माघ में तीन दिन हो तो वर्षा अकाल की सूचना देती है।

स्त्री-पुरुष योग-पुरुष नखत चन्दा चलै नारी नखत पर सूर। वर्षा कारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥ ता. २९ अप्रैल से ८ मई तक, ता. २७ मई से ४ जून तक, ता. २२ जून, ता. ६ जुलाई से १९ जुलाई तक, ता. २ से १६ अगस्त तक, ता. २९ अगस्त से १२ सितम्बर तक, ता. २६ सितम्बर से ९ अक्टूबर तक तथा ता. २३ अक्टूबर से ६ नवम्बर तक स्त्री-पुरुष योग है। के अनुसार इस दौरान समुद्र के साथ लगते तटीय प्रांतों में महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पूर्वी तथा उत्तरी हिन्द में अच्छी वर्षा होने के योग हैं।

पुरुष-पुरुष योग-ता. १५ अप्रैल से २८ अप्रैल तक, ता. १२ मई से २६ मई तक एवं ता. ९ जून से २१ जून तक यह योग है। के अनुसार इस दौरान हवाएं बन्द रहें। काफी उमस तथा अच्छी गर्मी पड़ेगी। पारा काफी ऊपर जा सकता है। वर्षा नहीं होगी।

पुरुष-नपुंसक योग-ता. ९ मई से ११ मई तक, ता. ५ जून से ८ जून तक यह योग है। इन दिनों कभी-कभी हवा चलती है। परन्तु गर्मी बनी रहती है। तथा वर्षा भी नहीं होगी। धूप में काफी तीव्रता रहेगी।

स्त्री-स्त्री योग-ता. २३ जून से २ जुलाई तक, ता. २२ से २९ जुलाई तक, ता. १७ से २५ अगस्त तक, ता. १३ से २२ सितम्बर तक, ता. १० अक्टूबर से १९ अक्टूबर तक यह योग है। के अनुसार इस दौरान आकाश में बादल छायेंगे। हवाएं भी चलेंगी। परन्तु वर्षा नहीं होगी। कहीं-कहीं अल्प वर्षा, बूंदाबांदी या खण्ड वर्षा हो सकती है।

स्त्री-नपुंसक योग-ता. ३ से ५ जुलाई तक, ता. ३० जुलाई से १ अगस्त तक, ता. २६ से २८ अगस्त तक, ता. २३ से २५ सितम्बर तक एवं ता. २० से २२ अक्टूबर तक। के अनुसार इस दौरान कभी-कभी हवा चलेगी। बादल बनेंगे परन्तु वर्षा नहीं होगी। धूप में तीव्रता तथा अवर्षण रहेगा। **जल राशि के चन्द्र से नवे सातवें थान। शनि हो अथवा भूमि सुत, वर्षा होय महान॥** के अनुसार यह योग ८-९ फरवरी, ता. १-२ मई, ता. ३ से ४ अक्टूबर, ता. ३०-३१ अक्टूबर एवं १ नवम्बर को यह योग है। इस दौरान भारत के बहुत स्थानों पर घनघोर घर गिराने वाली वर्षा होने का योग है। **मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥** के अनुसार फागुन कृष्ण पक्ष २०६५, चैत्र कृष्ण पक्ष २०६५, आषाढ़-सावन-भादवा-कातिक इन महीनों के कृष्ण पक्ष में यह योग आया है। अतः संबंधित पक्षों में अच्छी वर्षा हो सकती है। **पुष्य नखत में चन्द्रमां पर मण्डल एकत्र। दूजे या तीजे दिना वर्षा हो सर्वत्र॥** ता. ११ जनवरी, ता. ८ फरवरी, ता. ७ मार्च, ता. ३-४ अप्रैल, ता. १ मई, २८ मई, ता. ८ नवम्बर, ता. ५ दिसम्बर को यदि रात्रि में चन्द्रमा पर मण्डल (घेरा) दिखाई दे तो शीघ्र ही अच्छी वर्षा होगी। परीक्षित है। **सावन में वर्षे नहीं चित्रा स्वाती विशाखा। नदी किनारे घर करो, पानी के अभिलाषा॥** ता. २८ से ३० जुलाई तक उपरोक्त नक्षत्र है। इस दौरान जिन क्षेत्रों में, इलाके, गांव, शहर आदि में उपरोक्त नक्षत्रों में जहां पर वर्षा नहीं होगी। वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा होने से, आगे वर्षा की आशा रहेगी। **चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षे भादव मास। वर्षा काल समाप्त है, रखो न आगे आस॥** ता. २४ से २६ अगस्त तक उपरोक्त नक्षत्र है। उपयुक्त क्षेत्रों में जहां वर्षा नहीं होगी। वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा काल समाप्त हुआ समझना चाहिए। **अतिचारी गुरुदेव हो शनि जी वक्री चाल। तब वर्षा होवे नहीं खेती हो पामाल॥** यह योग १० जनवरी से ७ फरवरी तक है। इस दौरान उत्तरी-पश्चिमी मध्य हिन्द में वर्षा नहीं होगी। **सम सप्तक शनि जीव हो, या मंगल भृगुनाथ। रखते हैं बरसात में वर्षा अपने साथ॥** यह योग ता. १७ मई से १५ जून तक है। इस दौरान वर्षा हो सकती है। **कातिक नवमी को रहे चार पांच ग्रह इकठोर। उमड़-उमड़ नदियां वहें, वर्षा हो घनघोर॥** के अनुसार कातिक मास में घनघोर वर्षा होगी। **शुक्र साथ में चन्द्रमा अथवा मंगल संग। जो नभ में बादल छवै, वर्षा होय अमंग॥** ता. १८ अप्रैल से २३ मई तक, ता. ६ से २९ जून तक, ता. ३ से २६ जुलाई तक, ता. १६ से २१ अग. तक, के अनुसार इस दौरान जिस क्षेत्र में आकाश बादल छा जाये तो उस क्षेत्र में अवश्य अच्छी वर्षा होगी। **समसप्तक गुरु-शुक्र हो अथवा भृगु सुत सूर। अथवा सूरज गुरु रहे, समझो वर्षा दूर॥** यह योग ३१ जुलाई से १५ अग तक तथा २२ अग. से १५ सितं. तक भी है। इस दौरान वर्षा की काफी कमी रह सकती है। अथवा खण्ड वर्षा होगी। **चार पांच ग्रहों का बने, एक राशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावै सब लोग॥** ता. १३ जन. से ४ मार्च तक, ता. १० से १६ अक्टू. तक एवं २१ दिसं. ०९ से १३ जन. २०१० तक यह योग है। इस दौरान अति वर्षा या लड़ाई झगड़े, दंगे, फिसाद का बोलबाला रहेगा।

संवत् २०६६ वि. में रिकार्ड वर्षा होगी। जिससे रोगी एवं वर्षा की अधिकता से जनता दुखी रहेगी। फसलों को व्यापक नुकसान तथा प्रमुख नदियों में बाढ़ आदि से जन-धन की हानि होना संभव है। **कार्तिक बदी की तेरस जान, मगसिर बदी एकादशी मान। पोष बदी नोमी तिथि कहीं, माघ बदी सो सातम सही। फागुन बदी की पंचमी होई, चैत्र बदी सो सातम सही। इन दिनों में बिजली युत मेह, पूरन गर्भ सुजानो तेह। धणी साख निपजे चहु ओर, होय सुकाल न लखियो होर। जो इन तिथि में बिजली न मेंह, तो जानो तुम अकाल निःसंदेह॥** के अनुसार जिस इलाके, क्षेत्रों में, प्रांत आदि में उपरोक्त तिथियों में बिजली चमके वर्षा हो तो उस क्षेत्र में फसलें अच्छी होंगी। विपरीत से विपरीत फल समझना। नोट-जुलाई एवं अक्टूबर मास सन् २००९ ई. में हिन्द व्यापी घनघौर वर्षा होने के योग हैं।

स्टॉक करने के अवसर 2009 ई.

(अमावस्या एवं पूर्णमासी में तेजी-मंदी विचार)

किसी भी मास की पूर्णमासी अथवा अमावस्या को ग्रहण हो या भूकम्प हो, अतिवृष्टि हो या ओले बहुत गिरें या काले पीले रंग की घोर तूफान आवे या धूमकेतु दिखें या बिजली भयंकर गर्जना करके कई स्थानों पर गिरे या सूर्य चन्द्रमा पर कुण्डल दिखाई दे या आकाश पर टिड्डी दल दिखाई दे आदि को उत्पात कहते है। इसका विचार पूनम अथवा मावस को ही किया जाता है।

ता. २६ जनवरी या ९ फरवरी को यदि कोई उत्पात हो तो उड़द, मूंग, चना, जौ, गेहूं, लोहा, तांबा का शीघ्र स्टॉक करके एक मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. २५ फरवरी या १० या ११ मार्च** को यदि कोई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना, मक्की, बाजरा, जुवार, मटर, अरहर आदि का शीघ्र संग्रह करके एक मास पश्चात बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. २६ मार्च या ९ अप्रैल** को यदि कोई उत्पात हो तो खनिज पदार्थ, हीरा, पुखराज, पन्ना, नीलम, मुर्दासन, सोना, चांदी, समस्त धातुएं, कोयला आदि का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. २४ अप्रैल या ८ मई** को यदि कोई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, गल्ला आदि का शीघ्र स्टॉक करके यहां से चौथे मास बेचने से अच्छा लाभ हो। **ता. २४ मई या ७ जून** को यदि कोई उत्पात हो तो कन्द मूल पदार्थ, आलू, प्याज, लहसून, हल्दी, मूंगफली, अदरक आदि का शीघ्र संग्रह करके यहां से चौथे मास में बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। **ता. २२ जून या ७ जुलाई** को यदि कोई उत्पात हो तो हर प्रकार के रस पदार्थ, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, तेलों, नमक आदि का संग्रह करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. २२ जुलाई या ५ अगस्त** को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा आदि धातुएं, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी का अतिशीघ्र स्टॉक करके एक मास बाद बेचने से उत्तम लाभ होगा। यहां सूर्यग्रहण होने से उपरोक्त स्टॉक करना लाभदायक है। **ता. २० अगस्त या ४ सितम्बर** को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, चांदी, लाख, चमड़ा आदि का स्टॉक करके

यहां से पांचवें मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. १८ सितम्बर या ४ अक्टूबर** को यदि कोई उत्पात हो तो समस्त पशु, हाथी, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, गधा, गाय, भैंस आदि को खरीद कर यहां से छठे मास में बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. १८ अक्टूबर या २ नवम्बर को यदि कोई उत्पात हो तो ज्वार, बाजरा, मक्का, केसर, कस्तूरी, हल्दी, पीले रंग की वस्तुएं, घी, उड़द, मूंग, सर्व प्रकार के रत्न आदि का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. १६ नवम्बर या २ दिसम्बर** को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, लोहा, पत्थर का कोयला, जस्ता, शीशा आदि तुरन्त खरीद कर एक महीने के अंदर कभी भी तेजी आने पर बेचने से अच्छा लाभ होगा। **ता. १६ दिसम्बर या ३१ दिसम्बर** को यदि कोई उत्पात हो तो मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, रत्न आदि, केसर, कस्तूरी, सुगन्धित पदार्थों का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. ३१ दिसम्बर को ग्रहण होने से उपरोक्त स्टॉक लाभदायक रहेगा।

तीन राशियां घूमते गुरु देव जिस वर्ष। सब जीवों के हृदय में रहता है संघर्ष॥ के अनुसार इस वर्ष गुरुदेव अतिचारी तथा वक्री आदि चलने के कारण तीन राशियों पर चलने के कारण सभी जीवों, मनुष्यों के हृदय में चिन्ता, घबराहट आदि आश्चर्य जनक रूप से बढ़ेगी। क्योंकि बृहस्पति को जीव भी कहा गया है। अतः सभी जीवों के जीव पर भी इसका प्रभाव निःसंदेह पड़ेगा। **आश्विन में शनि-राहु जो बदले अपनी राश। तेज बिकै सण पाट अरु रुई सूत कपास॥** आसोज में राहु ने राशि परिवर्तन किया है। अतः उपरोक्त वस्तुएं तेज हो जायेंगी। **एकम दोयज तीज कोई माघ बदी घट जाए। संग्रह कर लो अन्न का कंगाली कट जाए॥** माघ बदी एकम का क्षय (१२ जनवरी) हुआ है। अतः आगे अनाज का स्टॉक करना निःसंदेह लाभदायक रहेगा। **कुंभ मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी होय। भारी से भारी तेजी अन्न में होय॥** ता. ४ मार्च को यह योग आया है। कुछ दिन प्रथम भारी मंदी चलकर बाद में २ मास के अन्दर भारी तेजी आयेगी। **सम सप्तक शनि-गुरु रहे अथवा हो इकठौर। प्रजा नाश अरु अन्न में महंगाई का जोर॥** मई से जुलाई तक लगभग यह योग है। इस दौर में एक बार कभी भी भारी तेजी का वातावरण अनाजों में बन सकता है। **बुध को सूर्य ग्रहण हो इसको फल यह जान। वस्त्र सुपारी लौंगफल लोहा महंगो मान॥** यह योग श्रावण में २२ जुलाई को आया है। आगे २२ जुलाई में पूरा विवरण पढ़ें। **आश्विन शुक्ला प्रतिपदा जो शनिवारी होय। अन्न बेचिए क्योंकि फिर भारी मंदी होय॥** के अनुसार यह योग १९ सितम्बर को आया है। अनाज स्टॉक बेचने की राय देता है। **शनि-बुध दोनों चले जब-जब वक्री चाल। सरसों अलसी अरण्डी तिलहन मन्दा माल॥** ता. १२ जनवरी से १ फरवरी तक, ता. ७ से १६ मई तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अनाज, तिलहन मालों में मंदी चलने की आशा है। **अश्वनी भरणी का बने पूनम से संयोग। गुवार ज्वार मकई मटर महंगाई अरु रोग॥** के अनुसार कातिक की पूनम को यह योग आया है। आगे उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी। **जो पूर्णमासी बढ़े तो मंदा बाजार। जौ गेहूं चावल मटर मोठ उड़द गुड़ गुवार॥** सावन मास में पूनम की वृद्धि हुई है। अतः आगे उपरोक्त वस्तुओं में मंदी आयेगी। **जो शशि उगे सोम शनि एक अचंबो जिय जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जू महंगो होय॥** के अनुसार ता. २८ मार्च, ता. २५ मई, ता. २२ अगस्त को उपरोक्त वारों में चन्द्रदर्शन हुआ है। संबंधित तारीख से एक मास के अंदर किसी राज्य के मंत्री मण्डल में परिवर्तन तथा अनाजों में जनरल तेजी आयेगी। **एक राशि पर होय जब बुध-शुक्र और सूर। वर्षा की कमी करे तेजी हो भरपूर॥** यह योग ता. २३ मार्च से ६ अप्रैल तक, ता. ३ से ११ नवम्बर तक तथा २७ से ३० नवम्बर तक है। इस दौरान वर्षा की कमी तथा प्रमुख वस्तुओं में भरपूर तेजी की संभावना है। **पड़वा आठें पूर्णिमा जो बुधवारी आय। सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥** के अनुसार सावन शुक्ल पक्ष में सभी प्रमुख वस्तुएं तेज होंगी। **पड़वा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो जब छीन॥** के अनुसार सावन सुदी एकम का क्षय पक्ष में तेजी कारक तो मंगसिर सुदी ५ की वृद्धि पक्ष में मंदी कारक है। **किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मांगे मूंग घी, बिक्रेता नट जाए॥** के अनुसार फागुन सुदी पक्ष, ज्येष्ठ सुदी पक्ष, भाद्रपद सुदी पक्ष में उपरोक्त योग है। संबंधित पक्षों में घी, मूंग आदि दलहन पदार्थ तेज रहेंगे। **शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त। किसी मास की एकम को हो तो महंगा धान्य समस्त॥** पौष सुदी पक्ष, फागुन सुदी पक्ष, ज्येष्ठ सुदी पक्ष, आसोज कृष्ण पक्ष में उपरोक्त योग होने से संबंधित पक्ष में अनाजों में जनरल लाईन तेज रहेगी। **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाए। सभी वस्तुऐं तेज हों, सस्ता पन हट जाए॥** माघ, फागुन, चैत्र, वैशाख इन चार मासों में लगातार उपरोक्त योग होने से अनाजादि प्रमुख वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रह सकती है। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मंदी रहे महंगाई हट जाए॥** पौष शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि होकर क्षय हुआ है। पक्ष में तेजी चलकर अन्त में प्रमुख व्यापारिक वस्तुएं मंदी हो जायेंगी। **कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, किन्तु सुदी बढ़ जाए। होय सुभिक्ष सुकाल सुख, महंगाई हट जाए॥** आश्विन मास तथा मार्गशीर्ष मास में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में जनरल लाईन मन्दी रहेगी। **ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा स्वाती सुलेखा माहिं। जो सूर्य संक्रमण हो महंगा अन्न बिकाहिं॥** ता. १४ मार्च मीन संक्रांति, ता. १३ अप्रैल मेष संक्रांति, ता. १४ जून मिथुन संक्रांति, ता. १६ अगस्त सिंह संक्रांति तथा १५ दिसम्बर धनु संक्रांति। यह संक्रांतियां उपरोक्त नक्षत्रों में प्रवेश होने से संबंधित संक्रांतियों के प्रभाव काल में अन्न, गल्ला माल तेज रहेगा। **शनि-बुध- सूरज साथ जब इक राशि इक सेज। जौ गेहूं चावल चना मटर ज्वार बाजरा तेज॥** ता. १६ अगस्त से तथा १६ सितम्बर से तथा ६ अक्टूबर से उपरोक्त योग है। यहां करीब सप्ताह दस दिन बाजार अनाज सावणी फसल का तेज रहेगा। **भौम शुक्र चन्द्रमा मीन राशि को प्राप्त। अनावृष्टि के कारणे जग में धान्य समाप्त॥** यह योग ता. २२ अप्रैल से है। अनाजों में घोर तेजी के झटके आयेंगे।

Ram Avtar Gupta "Vyapar Bhushan"
Rao Umrao Singh Market, Arya Samaj Road,
Near Subzi Mandi, P.O.-REWARI-123401 (HR)
Phone-01274-223947 Mobile-09416110996

पृष्ठ 15 का शेष

मार्केट में अच्छी मंदी का झटका लग सकता है। 17 अगस्त 2009 से 11 सितम्बर तक 1999 Point की तेजी तो 19 सितम्बर तक मंदी, 21 सितम्बर 2009 से 9 अक्टूबर 2009 के बीच BSE Index में 999 Point की तेजी, तो 25 अक्टूबर 2009 तक 1575 की जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। 25 अक्टूबर 2009 से 5 नवम्बर 2009 के मध्य Index में 1575 Point की तेजी तो 7 से 18 नवम्बर 2009 या फिर 9 दिसम्बर 2009 तक BSE Index में 2975 Point की मंदी आवेगी। 9 से 15 दिसम्बर 09 के बीच 775 Point की तेजी आने की संभावना है। 16 से 29 दिसंबर 09 या 18 जनवरी 2010 तक 2575 Point की जोरदार मंदी चल सकती है।

15 से 25 जनवरी 2010 के बीच ACC 55 तेज, Reliance 87 तेज, BSE Index 777 Point की तेजी, तो 7 फरवरी 2010 तक मंदी आवेगी। 9 फरवरी 2010 से 5 मार्च 2010 के बीच शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी तो 6 से 12 मार्च 2010 तक मंदी, 12 से 17 मार्च 2010 तक तेजी, 18 मार्च 2010 से 7 अप्रैल 2010 तक Index में 2975 Point की जोरदार मंदी, ता. 7 से 25 अप्रैल 2010 तक तेजी का उछाला आ सकता है।

1 मई से 25 मई 2010 तक BSE Index में 1500 Point की तेजी। ACC में 45 तेजी, Reliance में 55 तेजी, Hero Honda में 36 की तेजी, Infosys में 115 तेजी आ सकती है। 25 मई 2010 से 5 जून 2010 तक पुन: शेयर्स मार्केट में मंदी का धमाका, तो 5 जून 2010 से 15 जुलाई 2010 तक Shares Market में अच्छी तेजी आवे तो 16 जुलाई से 5 अगस्त 2010 के बीच Shares Market में धमाकेदार मंदी आ सकती है।

(18-10-3) 29-11-08 से 21-12-08 के बीच BSE Index में 500 Point की बढ़ोत्तरी। तथा Reliance में 15 की तेजी, ACC में 11 की तेजी बन सकती है। तो 27-12-08 तक शेयर मार्केट में मंदी का झटका लगेगा। तो पुन: 28-12-08 से 3-1-09 तक BSE Index में 300 Point की बढ़ोतरी हो सकती है। तो 26-1-09 तक 350 Point से 401 Point की बढ़ोतरी तथा Reliance में 55 की तेजी, ACC में 45 की तेजी बन सकती है। 27-1-09 से 17-2-09 तक फिर 18 फरवरी 09 से 25 फरवरी तक ACC, Reliance, Satyam Computer आदि शेयर्स मार्केट में तेजी तो 25 फरवरी से 7 मार्च 09 तक BSE Index में 505 Point की गिरावट आ सकती है तो 7 मार्च 09 से 21 अप्रैल 09 तक BSE Index में 777 Point की बढ़ोतरी, ACC 55 तेजी। रिलायंस में 75 की तेजी बनने की संभावना है।

(18-10-3) 21 अप्रैल 09 से 23 मई 09 तक BSE Index में 999 Point की गिरावट, ACC में 115 Point की, रिलायंस में 175 की गिरावट, सत्यम कम्प्यूटर, कोटक बैंक, HDFC में अच्छी मंदी का झटका लग सकता है। 23 मई 2009 से 29 जून 09 तक BSE Index में 777 Point की तेजी तो 11 जुलाई 09 तक BSE Index में 575 Point की गिरावट। 12 से 25 जुलाई 09 तक 1100 Point की तेजी, जो 29 जुलाई 09 तक गिरावट आ जायेगी। अथवा 3 से 23 अगस्त 09 के बीच Index में 555 Point की बढ़ोतरी। ACC में 75 की तेजी, रिलायंस में 115, Infosys में 315 तेजी बनने की संभावना है। तो 24 अगस्त 2009 से 15 सितम्बर 2009 तक 1175 Point की Index में एकदम गिरावट बन सकती है। 16 सितम्बर 09 से 16 अक्टूबर 09 तक Shares Market में तूफानी तेजी का दौर चल सकता है। तथा BSE Index में 1200 से 1500 Point की घटाबढ़ी आने की संभावना है। बाजार जैसा चले वैसा ही रुख का सीमित व्यापार करें।

17 अक्टूबर 2009 से 1-11-2009 तक शेयर्स मार्केट में एकदम मंदी। मगर 1-11-2009 से 25 दिसंबर 2009 के बीच तेजी-मंदी काफी जोर से घटाबढ़ी चलेगी। मगर इस बीच में 999 Point की BSE में बढ़ोतरी। ACC में 99 तेजी, Reliance, Kotak, HDFC, Jai Prakash में अच्छी तेजी का उछाला बन सकता है। हर तेजी के उछाले में माल बेचकर मुनाफा लेना चाहिए।

(18-10-3) 27 दिसंबर 2009 से 9 जनवरी 2010 के बीच Shares Market में भयंकर मंदी का झटका लग सकता है। BSE Index में 575 Point की मंदी आ सकती है। ACC में 45 की मंदी, Reliance में 65 की मंदी, Kotak, HDFC, Jai Prakash, ICICI, DLF में झड़पी मंदी आ सकती है। 9 जनवरी से 25 जनवरी 2010 या 3 मार्च २०१० तक यदि तेजी आगे बढ़ी तो 1 अप्रैल 2010 तक तूफानी तेजी आकर शेयर्स मार्केट में आगे 1 से 29 अप्रैल 2010 तक BSE Index में 2575 Point की गिरावट, ACC में 250 की मंदी। Reliance में 305 की मंदी। Hero Honda, SBI, HDFC, ICICI, Bharati, Reliance Communication में मंदी का धमाका आने की संभावना है।

20 जनवरी 2009 सूर्य-बुध Inferior Conjunction होने से (14-4M-5) 5 से 15 जनवरी 2009 तक मूंग 175 मंदी, चना 75 मंदी, तैल अरण्डी 150 मंदी तो 15 से 21 जनवरी 2009 तक फली तैल 270 तेज, उड़द, मूंग में मंदी, बिनौला तैल तेजी। चावल में तेजी, मक्का तेज। खोपरा तैल में तेजी, बाजरा, कलौंजी में मंदी आ सकती है। 21 जनवरी 2009 से 2 फरवरी तक तैलों में भयंकर मंदी, मगज तरबूज में मंदी, मगर **कालीमिर्च** 551 तेजी, **राजमा** 75 तेज, **छोटी इलायची** तेज। जीरा, काबली चना में 275 तेजी आ सकती है। 1 से 12 फरवरी 2009 तक मक्का, जौ, उड़द, पोस्तादाना, छोटी इलायची में तेजी आ सकती है। चांदी, सोना मार्केट यदि 5 जनवरी 2009 के आसपास ऊंचे भाव तो 29 जनवरी 2009 तक चांदी 1575 की मंदी, तो 30 जनवरी 2009 से 11 मार्च 2009 के बीच चांदी में 2575 से 3005 की तेजी। 21 फरवरी से 6 मार्च 2009 फली तैल, अरण्ड में मंदी आने की संभावना है। (14-4-5) 25 जनवरी 2009 से 3 फरवरी 2009 तक Shares Market अच्छी मंदी आकर नीचे भाव हो सकते हैं।

31 मार्च 2009 सूर्य-बुध से Superior Conjunction होने से 7 मार्च 2009 से 25 मार्च 2009 तक 2575 की मंदी तो घटबढ़ से 27 मई 2009 तक चांदी, सोना में तेजी आ सकती है। फिर लाईन जिधर चले वैसा व्यापार करें। (20D-4-2) 21 मार्च 2009 से 7 अप्रैल तक तैलों में एकतरफा लाईन शायद मंदी की होगी। 30 अप्रैल 2009 से 27 मई 2009 के बीच तैलों Oil & Oil Seeds में जोरदार गिरावट आकर नीचे भाव हो सकते हैं। 3 मार्च 2009 से 11 मार्च 2009 के बीच Shares Market BSE Index में 375 Point की गिरावट आ सकती है।

18 मई 2009 को सूर्य-बुध की Inferior Conjunction युति होने से 27 मई 2009 से 18 जून तक सोना, चांदी में तेजी, तो 30 जून तक चांदी, सोना में मंदी आ सकती है। (14-4M-5) 3 अप्रैल 2009 से 23 मई 2009 के बीच Shares में यदि 1575 Point की तेजी, यदि मंदी चली तो 4375 Point की मंदी आ सकती है। 21 मई 2009 से 11 जून तक शेयर्स मार्केट में जोरदार मंदी, तो 15 जुलाई तक तेजी बन सकती है।

14 जुलाई 2009 को सूर्य-बुध की Superior Conjunction युति होने पर 5 जुलाई से 15 जुलाई तक चांदी मंदी। 23 जुलाई 2009 तक चांदी-सोना नीचे भाव, तो 9 अक्टूबर 2009 तक 3-4 हजार की तेजी चांदी में, सोना ढाई हजार की तेजी बन सकती है। अथवा बीच की अवधि में 17 अगस्त 2009 तक चांदी के नीचे भाव, तो 25 दिन में चांदी-सोना भयंकर तेजी, तो 11-9-2009 से 15-10-2009 के बीच भयंकर लाईन चल सकती है। (14-4-5) 23 जून 2009 से 5-7-2009 के बीच सरसों, अरण्ड में जोरदार तेजी चल सकती है। 23-7-2009 से 31-8-2009 के बीच तैलों में मंदी का दौर चल सकता है। 15 जुलाई 2009 से 7 अगस्त Shares Market में गिरावट चल सकती है।

20 सितम्बर 2009 को सूर्य-बुध की Inferior Conjunction युति होने से यदि 23-9-09 तक चांदी के नीचे भाव, तो 17 अक्टूबर 09 तक चांदी-सोना में अच्छी तेजी आ सकती है। 19 सितं. से 12 अक्टू. 09 के बीच मूंगफली तैल, अरण्ड, सोयाबीन तैल में भारी गिरावट चल सकती है। यहां पर तैल भाव नीचे बन सकते हैं। 16 से 30 सितं. 09 तक Shares BSE Index में 1875 Point की जोरदार गिरावट, तो 1 से 7 अक्टू. 09 तक शेयर्स में अस्थाई तेजी का उछाला, तो 21-10-09 पुन: जोरदार गिरावट चल सकती है।

5 नवंबर 2009 को सूर्य-बुध की Superior Conjunction युति होने पर 10-15 दिन में चांदी-सोना अच्छी मंदी, तो 3 दिसंबर 09 के आसपास चांदी-सोना के नीचे भाव बन सकते हैं। ये Period Low or Highest होने का है। यदि चांदी-सोना ऊंचे बने तो आगे मंदी चलेगी। 27 दिसंबर तक चांदी-सोना में एक तरफा लाईन चलेगी।

जनवरी 2010 सूर्य-बुध *Inferior Conjunction* युति होने से चांदी-सोना में 1 से 12 जनवरी 2010 तक अच्छी तेजी तो 30 जनवरी

2010 तक चांदी-सोना में अच्छी मंदी आ सकती है। फिर भी जैसी लाईन चले वैसा ही व्यापार करें।

3 मार्च 2010 सूर्य-बुध Superior Conjunction युति होने पर 23 फरवरी 2010 से 15 अप्रैल 2010 के बीच चांदी में 3015 की तेजी। सोना 2575 की तेजी बन सकती है। 1 से 29 मार्च 2010 तक Shares Market में 999 Point की बढ़ोतरी तो 7 अप्रैल 2010 तक शेयर्स में जोरदार गिरावट चल सकती है।

29 अप्रैल 2010 सूर्य-बुध Inferior Conjunction युति होने पर 15 अप्रैल से 15 मई 2010 तक चांदी-सोना में अच्छी मंदी आ सकती है। (14-4-5Y) 5 अप्रैल से 3 मई 2010 के बीच सरसों, सोयाबीन, अलसी में अच्छी मंदी आ सकती है। तो 5 से 15 मई 2010 तक तैलों में भारी तेजी, 15 मई से 11-6-2010 तैलों में जोरदार मंदी की संभावना है। यहां नीचे भाव बन सकते हैं। 15 मई 2010 से 27 मई तक Shares Market में जोरदार गिरावट चल सकती है। तो बाद में शेयर्स में तेजी आ जायेगी। 1 से 24 मई 2010 तक इमली 500 मंदी, चावल 25 मंदी, सोयाबीन 205 मंदी, हल्दी 155 मंदी, सौंठ 777 मंदी, गुड़ में मंदी, पिस्ता मंदी, सुपारी में तेजी चल सकती है। 27 मई 2010 से 9 जून तक अरहर में 205 की मंदी तो 29 जून तक 175 तेजी आ सकती है। 11 से 21 मई तक कालीमिर्च में 575 तेजी तो 27 जून 2010 तक 1575 की मंदी बन सकती है। पुस्तक में कई विधियां तेजी-मंदी की दी हैं। मगर जहां एक विधि सही मिल रही हो उसी को उपयोग में लावें। एक साथ कई विधियों को उपयोग कर भ्रमित नहीं हों। सूर्य-बुध की युति व शर परिवर्तन पर अन्य ग्रहों का प्रभाव कम, बुध-शुक्र का प्रभाव सीधा ज्यादा जोरदार पड़ता है। ये स्थिति बीच-बीच में साल में कई बार बनती है। एक विधि को कम से कम 5-6 महीने उपयोग करें। 2-7 दिन का अंतर पड़ सकता है। उससे भ्रमित नहीं हों। बाजार रुख देखकर समय-दिनों का अंतर ठीक करें। 25 मई से 11 जून 2010 के बीच मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में पानी वर्षा व ओलापात, गुड़, चीनी में जोरदार तेजी। किसमिस 505 तेज, चना में तेजी, मगर सौंठ 999 की जोरदार मंदी। इमली मंदी, चावल में 55 की मंदी आ सकती है। 11 जून 2010 से 15 जुलाई तक गेहूं सरबती 175 तेज, चावल 99 तेज। ज्वार, मक्का में तेजी। सोयाबीन 505 तेज, किसमिस में अच्छी तेजी आ सकती है।

29 जून 2010 सूर्य-बुध Superior Conjunction युति होने पर 19 जून 2010 से 9 जुलाई 2010 के बीच जीरा 1677 की तूफानी तेजी तो 16 जुलाई तक 755 की मंदी तो 25 जुलाई तक 405 की तेजी आ सकती है। 9 से 23 जुलाई के बीच उड़द 375 को भारी तेजी, काबली चना में तेजी, राजमा में तेजी। मसूर 375 तेज, सोयाबीन में 309 की तेजी। 11 जुलाई से 25 अगस्त तक अरहर में 505 की भारी तेजी तो 9 सितम्बर तक 315 की जोरदार मंदी आ सकती है। 11 जुलाई से 25 अगस्त तक कलौंजी, मक्का, ज्वार, चीनी, इमली में अच्छी तेजी बन सकती है। बाजार रुख देखकर सीमित व्यापार करें।

4 सितम्बर 2010 सूर्य-बुध Inferior Conjunction युति होने पर 11 सितम्बर से 3-10-2010 तक तैलों में भारी मंदी आ सकती है। 11 सितम्बर से 23-10-2010 के बीच Shares में तेजी आ सकती है। 21 सितम्बर से 9 अक्टूबर 2010 के बीच गेहूं 77 तेज, मसूर 275 तेज, चना 205 तेज, बादाम में भारी तेजी, अजवाईन में तेजी, मगर पिस्ता, जावित्री में मंदी आ सकती है।

17 अक्टूबर 2010 सूर्य-बुध Superior Conjunction युति होने पर 21-10-2010 से 21-12-2010 तक तैल, तिलहन में तूफानी तेजी आ सकती है।

शेयर्स तेजी-मंदी लाईनें (प्रथम विधि)

29-4-2003 को BSE Index 2904 था और इससे पहले नीचे Index 23-10-1998 को 2741, 21 सितम्बर 01 को 2595, सो 29 अप्रैल 03 से 10 जनवरी 08 के बीच पौने पांच वर्ष में भयंकर तेजी चली। जनवरी 08 को 21207 Top Index बन गया। वैसे इससे पहले 14-2-2000 को Top Index 6150 हुआ। 23-10-1998 को रिलायंस शेयर्स भाव 104 के थे। 12-7-1999 को Reliance Industries भाव 189, 29-9-1999 को 241, 21-10-1999 को 265.10 तो 1 नवम्बर 1999 को घटकर 217.85, 7-1-2000 को बढ़कर 312, 11 फरवरी 2000 को ऊंचा भाव 359, वहां से बाजार वापिस घटे, रिलायंस शेयर्स 285 रह गया। 16-11-2000 को 365, 1 मार्च 01 को 438, 7 मई 01 को 340.90, 7 जून 01 को 374.45, 25 सितम्बर को 206, 3-10-01 को Reliance 246, 10-12-01 को 308, 29 अप्रैल 02 को 275, 7 मई 02 को 293, 27 मई 02 को 236, 14-6-02 को 281, 5-7-02 को 263, 10-7-02 को 277, 12 अगस्त 02 को 240.75, 2-9-02 को 265.25, 25-10-02 को 223.85, 18-12-02 को 298.40, 30 जनवरी 03 को 268, 9 मई 03 को 259.70, 18-7-03 को 339.25, 29-8-03 को 398, 17 अक्टूबर 03 को 489, 4-12-03 को 508, 18 फरवरी 04 को 604, 18 मई 04 को नीचा भाव 433, 11 जून 04 को 431, 5 अगस्त 04 को Reliance Shares भाव 502, 19-9-04 को 487, 22-11-04 को 632, 25-1-05 को 501, 21 मार्च 05 को 595, 19 मई 05 को 484, 30 जून 05 को 664, 4 अगस्त 05 को 729, 23 अगस्त 05 को 685, 29 सितम्बर 05 को 808, 28 अक्टूबर 05 को 741, 9 दिसंबर 05 को 863, 24 जनवरी 06 को 643, 27 फरवरी 06 को 780, 10 मई 06 को 1170, 24 मई 06 को 938, 14 जून 06 को 859, 25-9-06 को 1163, 7 नवम्बर 06 को 1306, 30 नवंबर 06 को 1245, 20 फरवरी 07 को 1414, 5 मार्च 07 को 1259, 25 अप्रैल 07 को 1599, 3 मई 07 को 1627, 10 मई 07 को 1581, 31 मई 07 को 1760, 13 सितम्बर 07 को 2026, 24 अक्टूबर 07 को 2615 हो गया। 27 नवम्बर 07 को 2842, 5 दिसम्बर 07 को 2902, 19 दिसंबर 07 को 2704, जनवरी 08 को 3252 का ऊंचा भाव होकर 22 जनवरी 08 को 2358, 5 फरवरी 08 को 2691, 4 अप्रैल 08 को 2243, 30 अप्रैल 08 को 2614, 3 मई को 2406, 8 मई 08 को Reliance Ind. Shares 2666, 2 जून 08 को 2355, 9 जून 08 को 2163, 23 जून 08 को 2022, 26 जून को 2239, 7 जुलाई 2008 को 2028, 15 जुलाई 08 को 1976, 5 अगस्त 08 को 2276, 12 अगस्त को 2342, 22 अगस्त 08 को Reliance Shares भाव 2245 के आसरे भाव चल रहे हैं। मतलब 23 अक्टूबर 1998 को 104 वाला शेयर्स जनवरी 08 सवा 9 वर्ष में 3252 हो गया यानि 32 गुणे करीब हो गये।

(Fax) 91-141-2606698 Website: www.rashiratanbhagya.com
email: info_pmsl@yahoo.co.in

करें

मंदा-तेजी पर १० विद्वानों [illegible] ..जा रिपोर्ट

आर्यभट्ट पंचांग सं. 2066 में 10 विश्व-विख्यात विद्वानों की मंदा-तेजी पर रिपोर्ट छपी हैं जो आने वाले 2 से 3 वर्षों की हर वस्तु पर मंदा-तेजी की जानकारी देते हैं। उन्हें पढ़कर निष्कर्ष निकाल कर आप शेयर बाजार, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, दालें, अनाज, ड्राई फ्रूट, किराना, कैमीकल, लोहा, तांबा, सूत, पटसन, कपासिया तथा मशीनरी आदि में करोड़ों का लाभ उठा सकते हैं। यह लेख जो अन्यत्र दुर्लभ है। आज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से मांगें या मनिआर्डर भेजकर मंगवायें।

क्र.सं.	प्रकाशित तेजी-मंदी रिपोर्ट	लेखक
1	व्यापारिक भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान	श्री मनीष कुमार जैन, पोरसा वाले
2	ग्रह मंत्री परिषद द्वारा तेजी-मंदी समीक्षा	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
3	शेयर बाजार तेजी-मंदी समीक्षा	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
4	सामूहिक व्यापार भविष्य	पं. विश्व बन्धु शर्मा एवं जयवर्द्धन शर्मा
5	व्यापार एवं कमोडिटी ट्रेडिंग सलाह	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
6	व्यापार जगत शेयर बाजार समीक्षा	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
7	चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव	पं. अनिल कुमार व्यास, राया, मथुरा
8	जिन्सों, धातुओं की तेजी-मंदी	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
9	व्यापार विमर्श सं. २०६६ वि.	चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, गुड़गांव, हरियाणा
10	व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी	पं. अनिल कुमार व्यास, राया, मथुरा
11	व्यापार भविष्य	श्री प्रवीन कुमार जैन, मोहपाड़ा, रायगढ़
12	शेयर बाजार संभावित रुख	श्री प्रवीन कुमार जैन, मोहपाड़ा, रायगढ़
	अन्य महत्वपूर्ण लेखः-	
13	वर्षा योग	रामावतार गुप्ता व्यापार 'भूषण', रेवाड़ी, हरि.
14	जल प्रलय भविष्यवाणी-भ्रामक	पं. नारायण शर्मा कौशिक, मेड़ता सिटी, राज.
15	रमल ज्योतिष से जानें संतान सुख	डा. नरेन्द्र कुमार भैया, भरतपुर, राज.
16	मानसून एवं आकाशीय लक्षण	आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री, रोहतास, बिहार
17	जनोपयोगी घरेलु नुस्खें, काल सर्प योग	पं. नारायण शर्मा कौशिक, मेड़ता सिटी, राज.

यह पंचांग अपनी **शुद्ध गणित तथा व्यापारिक मन्दा तेजी की भविष्यवाणी** व **अन्य उपयोगी लेखों** के कारण अब भारत में ही नहीं **अपितु विदेशों** में भी भारतीय मूल के निवासियों में बहुत **प्रचलित** है। **विदेशी व्यापारी** भी इसके आधार पर करोड़ों का व्यापार करने लगे हैं। 27 मार्च सन् 2009 से आरम्भ होने वाला नव संवत् 2066 का यह पूजित किया हुआ लघु पंचांग आपके पास में है। यह आने वाले 15 मार्च सन् 2010 तक काम आने वाला है। **इसे इधर-उधर नहीं फेंकें। गल्ला, पेटी, धर्म स्थान या मन्दिर में ही रखें। पंचांग ईश्वरीय शक्ति से युक्त होता है। यह अनुपम उपहार** आपको भेंट स्वरूप भेजा जा रहा है। हमारी शुभकामनाएं तथा पूरी आशा है कि भगवान आने वाले वर्ष में आपको करोड़ों का लाभ दें।

इस पंचांग का बड़ा अंक व लघु पंचांग मूल्य 45.00 व डाक खर्च 35.00 यानि 80.00 रुपए भेजकर मंगवाएं।

अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से मांगें या मनिआर्डर भेजकर मंगवायें। यह हर पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध है।

नोट : अपने विचारों से हमें अवगत कराते रहें। हम भी आपको और लेख मन्दा-तेजी आदि के भेजते रहेंगे।

प्रकाशकः **धर्मसन प्रकाशन**
2597, नई सड़क, दिल्ली-110006
☎ 32663222, 32472404, 23285234, 25225194

आर्यभट्ट पंचांग के थोक विक्रेता

दिल्ली

अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावली	दिल्ली
पुस्तक महल, खारी बावली	दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, नई सड़क	दिल्ली
कमल पुस्तकालय, नई सड़क	दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, चावरी बाजार	दिल्ली
के.के. गोयल एण्ड कं., दरीबा बाजार	दिल्ली
नाथ पुस्तक भण्डार, दरीबा बाजार	दिल्ली

राजस्थान

अग्रवाल जनरल स्टोर, सदर बाजार, नासिराबाद	अजमेर
आर्य ब्रदर्स बुक सेलर्स, पुरानी मंडी	अजमेर
गनपत लाल अग्रवाल, पुरानी मंडी	अजमेर
मानक चन्द रतन लाल गोडिया, नेकरी	अजमेर
अखंड भारत समाचार बिक्रेता, बुक सेलर्स	बांसबाड़ा
अमर बुक सेन्टर, सूरज पोल के बाहर	उदयपुर
भारतीय पुस्तक भण्डार, नानी गली, जगदीश रोड	उदयपुर
फेमस बुक स्टोर, 27-बापू बाजार	उदयपुर
हितेषी पुस्तक भण्डार, सूरज पोल	उदयपुर
राजस्थान बुक स्टोर्स, 25, बापू बाजार	उदयपुर
सिंघतवादिया स्टोर्स, घंटा घर	उदयपुर
यूनिवर्सल बुक स्टोर, चेतक सर्कल	उदयपुर
देवी साईं बुक सेलर्स, त्रिपालिया बाजार	जयपुर
ईश्वर लाल बुक सेलर्स, त्रिपालिया बाजार	जयपुर
अमृत लाल देवी लाल बुक सेलर्स	बाड़मेर
बदरी नारायण मुथा, मुथा की बारी, बुक सेलर्स	नागौर
भांडी सरदार चन्द जैन एण्ड सन्स, त्रिपालिया बाजार	जोधपुर
विजय पुस्तक भण्डार, जैलारी गेट	जोधपुर
किताब घर बुक सेलर्स, सजती गेट के बाहर	जोधपुर
भरतपुर बुक स्टोर, जामा मस्जिद	भरतपुर
गोयल नावेल स्टोर, बस स्टैन्ड	पाली मारवार
हिन्दी पुस्तक मंदिर, नेहरू मार्ग	सिकार
जगन्नाथ गुरुमल बुक सेलर्स	गंगापुर सिटी
खुशी राम लक्ष्मी नारायण बुक सेलर्स, गोल बाजार	श्रीगंगानगर
किताब घर, बुक सेलर्स	सुजान गढ़
लोकप्रिय पुस्तक भण्डार, गुड़ मंडी	भिलवाड़ा
प्रताप पुस्तक भण्डार	भिलवाड़ा
सरस्वती स्टोर्स, कॉलेज रोड	भिलवाड़ा
मोहन न्यूज एजेन्सी, रामपुरा बाजार	कोटा
महावीर बुक स्टॉल	सरदार शहर
शारदा पुस्तक मंदिर, बुक सेलर्स	सरदार शहर
विजय स्टोर, नजदीक पोस्ट ऑफिस	सरदार शहर
महावीर पुस्तक भण्डार, सदर बाजार	नोखा
मिसरी लाल बस्तीमल कटारिया	पाली मारवाड़
नटवर पुस्तक भण्डार, बुक सेलर्स	चित्तोड़गढ़
श्रृंगार स्टोर, 4/5, नेहरू बाजार	चित्तौड़गढ़
पालीवाल जेनरल स्टोर, सिनेमा रोड	कंकरोली
प्रेम बुक डिपो, बस स्टैन्ड	मेड़ता सिटी
पं. बंसीधर शर्मा, बुक सेलर्स	किशन गढ़
राधाकृष्णा रामबिलास जिन्दल, बुक सेलर्स	अबू रोड
राम बल्लभ राम गोपाल	दिदवाना
रामचन्दर हीरालाल बुक सेलर्स, खजांची बिल्डिंग	बीकानेर
राठौर प्लेइंग स्टोर, बुक सेलर्स, गणेश चौक	जलोर
सरस्वती पुस्तक भण्डार, मेन रोड	डुंगरपुर
श्री हनुमान स्टोर, बुक सेलर्स	रतनगढ़

हरियाणा

अरुण बुक डिपो, रेलवे रोड	कालका
गुजराल पुस्तक भण्डार, दाल बाजार	अम्बाला सिटी
गुरदयाल सिंह एण्ड सन्ज, रेलवे रोड	अम्बाला सिटी
विद्या सागर, भारतीय प्रकाशन, बजाज तन्दुरन	अम्बाला सिटी
नागिया पुस्तक भण्डार, चौक सब्जी मंडी	अम्बाला कैन्ट
नाथ पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड	रोहतक

पंजाब

अमृत स्टेशनरी मार्ट, बाजार माई सेवा	अमृतसर
जवाहर सिंह किरपाल सिंह, बाजार माई सेवा	अमृतसर
प्रकाश ब्रदर्स, बाजार माई सेवा	अमृतसर
तिरथ राम जोशी एण्ड सन्ज, बाजार माई सेवा	अमृतसर
उत्तम सिंह गुरबचन सिंह, बाजार माई सेवा	अमृतसर
भाटिया बुक डिपो, रेलवे रोड	पठानकोट
रामा न्यूज एजेन्सी, रेलवे रोड	पठानकोट
स्टैन्डर्ड बुक डिपो, रेलवे रोड	पठानकोट
चपत राय किशोरी लाल बुक सेलर्स	अबोहर
चोपरा पब्लिशर्स, शीश महल	होशियारपुर
गुप्ता ब्रदर्स बुक सेलर्स, बाजार शिखा	जालंधर
न्यू भारत पुस्तक भण्डार, अडा होशियारपुर	जालंधर
हंसराज अग्रवाल, अरना बरना बाजार	पटियाला
हरबंश बंक डिपो, बुक मार्केट	लुधियाना
मोहन पुस्तकालय, बुक मार्केट	लुधियाना
प्रताप बुक डिपो, बुक मार्केट	लुधियाना

चण्डीगढ़

लक्ष्मी स्टेशनर्स, बूथ नं. 19, सेक्टर-22 डी	चण्डीगढ़
मोडर्न बुक शोप, बूथ नं. 5, सेक्टर-22 डी	चण्डीगढ़
पाल प्रकाशन, शोप नं. 9, सेक्टर-45	चण्डीगढ़
शर्मा बुक डिपो, एस.सी.एफ.-4, सेक्टर-19 सी	चण्डीगढ़
इंगलिश बुक डिपो, शोप नं. 33-34, से.-22 डी	चण्डीगढ़

उत्तर प्रदेश

अग्रवाल बुक डिपो, अमरोहा गेट	मोरादाबाद
मो. मुस्तकीन बुक [illegible], तहसील गेट	मोरादाबाद
गर्ग पुस्तक भण्डार, कुशल नगर	मोरादाबाद
अनवर बुक डिपो, 37-अमीनाबाद पार्क	लखनऊ
ब्रजवासी पुस्तक भण्डार, छाता बाजार	मथुरा
श्रीजी प्रकाशन मंदिर, विश्राम बाजार	मथुरा
सी.एल. अग्रवाल एण्ड सन्ज, बड़ा बाजार	अलीगढ़
सस्ता प्रकाशन, बड़ा बाजार	अलीगढ़
के.बी. एण्ड सी.एल. अग्रवाल, बड़ा बाजार	अलीगढ़
चित्र प्रकाशन, पुरानी तहसील	मेरठ
जवाहर बुक कं., बुधाना गेट	मेरठ
जवाहर बुक डिपो, स्वामी पारा	मेरठ
दीप पब्लिकेशन, कंचन मार्केट, हॉस्पीटल रोड,	आगरा
महावीर बुक एजेन्सी, हॉस्पीटल रोड	आगरा
श्री नारायण हरिश चन्द, जौहरी बाजार	आगरा
हरभजन सिंह एण्ड सन्ज, बड़ा बाजार	हरिद्वार
हरदास बुक सेलर्स, गांधी रोड	झांसी
रामकुमार महावीर प्रसाद, मेन बाजार	धामपुर
श्रीकृष्णा पुस्तकालय, चौक	कानपुर

हिमाचल प्रदेश

अजय स्टेशनरी मार्ट, मेन बाजार	सोलन
मंगत राम एण्ड सन्ज, न्यूज एजेन्ट	सोलन
राज कुमार डिपो, मेन बाजार	सोलन
गोयल बुक डिपो, मेन बाजार	पालमपुर
पालम स्पोर्ट एण्ड स्टेशनर्स	पालमपुर
स्नो लाईन ट्रेडिंग कारपोरेशन, मेन बाजार	पालमपुर
किरण कुमार विनोद कुमार, मेन बाजार	ऊना
किशन लाल एण्ड सन्ज, 193, लोअर बाजार	शिमला
पं. सुन्दर दास एण्ड सन्ज, लोअर बाजार	शिमला
राज ब्रदर्स बुक सेलर्स, लोअर बाजार	शिमला
राजपाल स्टेशनरी मार्ट, लोअर बाजार	शिमला
रमेश बुक डिपो, लोअर बाजार	शिमला
मदी दी हटी, मेन बाजार	मान्डी
शर्मा बुक डिपो, स्कूल बाजार	मान्डी
नवीन पुस्तक भण्डार, बुक सेलर्स	सरकाघाट
प्रेम जनरल स्टोर, बुक सेलर्स एण्ड स्टेशनर्स	चम्बा
रामनाथ जोशी एण्ड सन्ज, अड्डा मार्केट	नांगल टाउनशीप
रामा कृष्णा एण्ड सन्ज, सिविल लाईन	धर्मशाला
रिकी बुक स्टोर, अखोरा बाजार	कुलू
टेकनीकल बुक डिपो	बैजनाथ
त्रिलोकचन्द सूद न्यूज पेपर एजेन्ट, बस स्टैन्ड	बिलासपुर

काश्मीर

अब्दुला न्यूज एजेन्सी, लाल चौक	श्रीनगर
ज्ञानचन्द ओम प्रकाश, लाल चौक	श्रीनगर
एशिया बुक सेन्टर, कोची छावनी	जम्मू
दुर्गा स्टेशनरी स्टोर, हॉस्पीटल रोड	जम्मू
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, सिटी चौक	जम्मू
साहित्य संगम बुक सेलर्स, कोची छावनी	जम्मू
सानिक स्टेशनरी मार्ट, सदर बाजार	जम्मू कैन्ट
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, बुक सेलर्स	उधमपुर

मध्य प्रदेश

गोपालजी धनामल एण्ड कं.	गंज बासोदा
रामचन्द्र जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, गणेश बाजार	शिवपुर कलां
कोठारी पुस्तक भण्डार, बुक मार्केट	नीमच कैन्ट
श्रीकृष्णा पुस्तक भण्डार	नीमच कैन्ट-2
नेशनल बुक डिपो, 21, राजवारा चौक	इन्दौर
सरदार सहन सिंह बुक सेलर्स, 28, बक्शी गली	इन्दौर
विरेन्दर पुस्तकालय, सिया गंज	इन्दौर
ओंकार प्रिंटिंग प्रेस, सर्राफा बाजार	मंदसोर
सरस्वती स्टोर्स, लक्ष्मीबाई मार्केट, बडा	ग्वालियर

महाराष्ट्र

भंवरलाल राम चन्दर व्यास, 112-शांति पेठ	जलगांव
गर्ग एण्ड कं., 106-सी.पी. टैंक	मुम्बई
गोवर्धन दास भांजी बुक सेलर्स, दु. नं. 9, माधव मार्ग	मुम्बई
मोतीलाल जेठालाल बुक सेलर्स, नजदीक जैन मंदिर	मुम्बई
नाज बुक डिपो, मो. अली बिल्डिंग, अली मार्ग	मुम्बई
न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, वजीर बिल्डिंग, भिंडी बाजार	मुम्बई
श्रीलक्ष्मी बुक डिपो, सी.पी. टैंक, माधव मार्ग	मुम्बई
रामकुमार ककाडा बुक सेलर्स, चाती खाट्	नागपुर
कर्मवीर बुक डिपो, मोहेल	नागपुर-2
श्री विष्णु बुक सेलर्स, गांधी रोड	अकोला
सुखदेव जोधराज सर्राफा बाजार, नेहरू रोड	जालान
सुरेश जनरल स्टोर, फूल बाजार	जालान

उत्तरांचल

अमर बुक डिपो, हरकी पौरी	हरिद्वार
अर्जुन सिंह बुक सेलर, बड़ा बाजार	हरिद्वार
महेन्द्र पुस्तक भण्डार, विकास नगर	देहरादून
यशपाल एण्ड सन्ज, रेलवे रोड	रूड़की

पश्चिमी बंगाल

गणेश एण्ड ब्रदर्स, 30/31, कलाकार स्ट्रीट	कोलकाता
हिन्दी पुस्तक भण्डार, 177-एम.जी. रोड	कोलकाता
राम सेवक शुक्ला बुक सेलर्स, 207/1-एम.जी. रोड	कोलकाता
काशी स्टोर, मेन रोड, कलिमपौंग	दार्जिलिंग

असम

अखबार घर, फैंसी बाजार	गुवाहाटी
बी.एन. मादी, एच.एस. रोड	डिब्रूगढ़
कंगन स्टेशनरी स्टोर, बुक सेलर्स	डिब्रूगढ़
रावतमल सूरजमल शर्मा, बुक सेलर्स	डिब्रूगढ़
विश्वखुश बुक सेलर्स, मंदिर मार्ग	शिव सागर
धार्मिक पुस्तक भण्डार, जी.एन.बी.रोड	तीनसुकिया
हिन्दी पुस्तक भण्डार, बुक सेलर्स	जोरहाट
राधा कृष्णा रमेश बुक सेलर्स	जोरहाट
ललन बुक स्टाल, चौक बाजार	तेजपुर
नवीन पुस्तक भण्डार, मेन रोड	गोला घाट

कैसा होगा वर्ष 2009 ई. का शेयर बाजार

परिलेखकर्ता–प्रवीण कुमार जैन

स्टॉक एक्सचेंज के विशेषज्ञ जिस प्रकार तीस स्क्रिप्स के आधार पर शेयर बाजार का आकलन करते हैं, ठीक उसी प्रकार योग्य ज्योतिषी भी हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो सहित बारह ग्रहों तथा बारह भावों के आधार पर शेयर बाजार का आकलन करता है। बाजार पर शनि, मंगल, गुरु, यूरेनस, नेपच्यून के गोचर के अतिरिक्त बुध, शुक्र के उदयास्त तथा इनकी सूर्य से अंशात्मक युति का प्रभाव पड़ता है। ग्रहों की युति में सूर्य-गुरु, मंगल-सूर्य, मंगल-शुक्र, गुरु-सूर्य, गुरु-बुध तथा राहु-गुरु महत्वपूर्ण हैं। शेयर बाजार पर राजनैतिक वातावरण, सरकार की नीतियों, विदेशी इन्वेस्टमेन्ट जैसे अन्य तत्व जिन्हें ज्योतिषीय भाषा में देश-काल परिस्थिति कहा जाता है, का भी प्रभाव होता है। अब देखना यह है कि जिन ग्रह योगों के कारण वर्ष 2008 का शेयर बाजार वोलेटाईल रहा, क्या वैसी ही परिस्थितियां वर्ष 2009 में होंगी। अथवा 2009 में कुछ परिवर्तन होगा। ज्योतिषीय योगों एवं गणनाओं के आधार पर शेयर बाजार की गतिविधियों के आकलन के लिये अनेक सूत्र हैं। प्रायः इन सूत्रों को गोपनीय ही रखा गया है। अथवा तो इन्हें ऐसी भाषा में प्रस्तुत किया गया है कि वह मार्गदर्शन कम करते हैं, और कन्फ्यूजन ज्यादा क्रियेट करते हैं। इसके विपरीत विदेशी विद्वान जैसे कि बिल मेरेडियन, डोनाल्ड ब्राडली एवं अन्य अपने ज्ञान एवं रिसर्च वर्क को मुक्त हस्त से बांटते हैं एवं विचार विमर्श करते हैं तथा यदि कहीं कोई भूल हो रही है तो उसे स्वीकार करते हैं। भविष्य में उसमें संशोधन करते हैं। हमें यह परम्परा स्वस्थ लगती है तो हम इस लेख में शेयर बाजार के तथाकथित गोपनीय सूत्रों को उदघाटित करते हुए उनके आधार पर वर्ष 2009 का आकलन कर रहे हैं।

आचार्य बृहस्पति के वचनानुसार समस्त संसार ग्रहों के अधीन है। मनुष्य भी ग्रहों के अधीन है। समय का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन है। संसार की प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक जीवधारी, प्रत्येक आत्मा ग्रहों के अधीन है। ग्रह ही संसार का संचालन करते हैं। वर्ष 2008 के शेयर बाजार का उतार-चढ़ाव ग्रहों की ही देन है। इस वर्ष में जहां शेयर बाजार का तीस स्क्रिप्स आधारित संवेदी सूचकांक अर्थात् सैंसेक्स भारतीय शेयर बाजार के अब तक के सर्वाधिक उच्च स्तर 21077.53 अंक तक पहुंचा, वहीं मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज में 1070.63 अंकों की गिरावट शेयर बाजार के इतिहास की दूसरी सबसे बड़ी गिरावट रही। सैंसेक्स में 10.96 प्रतिशत की गिरावट आकर 24 अक्टूबर 2008 में 8701.56 अंकों का आंकड़ा वर्ष 2008 में ही आया। वर्ष का न्यूनतम सैंसेक्स 8509.56 अंकों पर 27 अक्टूबर 2008 में दर्ज हुआ। आर्यभट्ट पंचांग में वर्ष 2008 के शेयर बाजार की वोलेटिलीटी के विषय में हम पूर्व में भी लिख चुके थे। अब हम वर्ष 2008 के परिणामों की तुलना के साथ वर्ष 2009 का भविष्यफल निम्न पंक्तियों में कर रहे हैं।

1. शनि तथा गुरु शेयर बाजार की कुंडली के दो महत्वपूर्ण ग्रह हैं। वास्तव में वर्ष 2008 के शेयर बाजार की वोलेटिलीटी इन्हीं दो ग्रहों के अधीन रही। श्री टी.जी.बुटानी ने सन् 1963 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक फारकास्टिंग प्राईजेज के पृष्ठ 225 के पैरा 9 पर एक सूत्र दिया था कि जब-जब गुरु, राशि चक्र की तेजी कारक राशि में होता है तथा शनि मंदी कारक राशि में होता है तब-तब उस वर्ष में मंदी एवं तेजी के लगातार झटके आया करते हैं। वर्ष 2008 में गुरु का धनु राशि का गोचर तथा शनि का सिंह राशि का गोचर इस सूत्र की प्रबल पुष्टि करते हैं।

2. शनि तथा गुरु आधारित योगों के अनुसार जब कभी भी शनि तथा गुरु का गोचर सिंह अथवा कुंभ राशियों में होता है, तब शेयर मार्केट में गिरावट आती है। वर्ष 2009 में 1 मई 2009 से गुरु के कुंभ में गोचर के समय शनि सिंह राशि में होंगे। 30 जुलाई 2009 तक यह स्थिति रहेगी। यह समय शेयर बाजार में गिरावट का रहेगा। इस में भी विशेषता यह रहेगी कि 17 मई 2009 तक वक्री शनि बाजार में तेजी कारक होने से तथा ग्रहों का राशि चार मंदी कारक होने से 1 से 17 मई के मध्य बाजार में घटाबढ़ी का योग रहेगा। शेयर बाजार में गिरावट का विशेष प्रभाव इन दोनों ग्रहों के चन्द्रमा, बुध, शुक्र एवं मंगल की युति एवं प्रतियुति के समय में दृष्टिगोचर होगा।

3. ज्योतिषीय के सम्प्रदाय में शेयर बाजार की राशि वृष तथा लग्न राशि 20 अंश वृश्चिक मानी गई है। शेयर बाजार की कुंडली का सप्तमेश जब-जब धनु राशि में गोचर करता है, तब-तब शेयरों में मंदी आती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्ष 2008 का शेयर बाजार है। इस वर्ष शुक्र का धनु राशि में प्रवेश 19 जनवरी शनिवार की दोपहर 15 बजकर 40 मिनट से हुआ था। शुक्र इस राशि में 12 फरवरी की रात्री में 24 बजकर 42 मिनट तक रहे। इस समयावधि में सैंसेक्स में 1000 अंकों की हानि दर्ज हुई। इस सूत्र के आधार पर कहें तो शेयर बाजार की कुंडली का सप्तमेश शुक्र 21 दिसम्बर 2009 से 14 जनवरी 2010 तक कुंडली के द्वितीय भाव में स्थित धनु राशि में गोचर कर मंदी कारक सिद्ध होगा। धनु राशि (21 दिसम्बर 2009 से 14 जनवरी 2010 तक) तथा कर्क राशि (23 अगस्त 2009 से 15 सितम्बर 2009 तक) का शुक्र शेयरों के भावों में मंदी कारक रहेगा। भाद्रपद मास की शुक्रवारी पूर्णिमा अर्थात् 4 सितम्बर के दिन शेयर बाजार तेजी में जाने के पश्चात् सामान्य अवस्था में आ जायेगा।

4. शेयर बाजार की कुंडली का अष्टमेश बुध वक्री होकर बाजार में तेजी का योग बनाया करता है। बुध 12 जनवरी, 8 मई, 8 सितम्बर तथा 27 दिसम्बर 2009 में वक्री होकर शेयर बाजार में तेजी के हिसाब से महत्वपूर्ण रहेंगे। 3 अगस्त 2009 में दोपहर 1 बजकर 46 मिनट पर अष्टमेश बुध के नक्षत्र आश्लेषा पर सूर्य का गोचर शेयरों में तेजी करेगा।

5. वर्ष 2009 में गुरुवार 10 जनवरी, सोमवार 5 फरवरी, शुक्रवार 28 मार्च, मंगलवार 22 अप्रैल, गुरुवार 12 जून, सोमवार 7 जुलाई, शुक्रवार 1 अगस्त, बुधवार 27 अगस्त, शुक्रवार 17 अक्टूबर, मंगलवार 11 नवम्बर के ऐन्द्र योग, बुधवार 2 जनवरी, शुक्रवार 22 फरवरी, बुधवार 19 मार्च, गुरुवार 8 मई, मंगलवार 3 जून, गुरुवार 24 जुलाई, मंगलवार 19 अगस्त, गुरुवार 9 अक्टूबर, सोमवार 3 नवम्बर, बुधवार [illegible]बर के व्यतिपात [illegible] सोमवार 3 मार्च, बुधवार 23 अप्रैल, सोमवार 19 मई, शुक्रवार 13 जून, मंगलवार 8 जुलाई, गुरुवार 28 अगस्त, सोमवार 22 सितम्बर, बुधवार 12 नवम्बर तथा सोमवार 8 दिसम्बर के वैधृति योग इन-इन दिनों में शेयरों में तेजी का रुख बनायेंगे।

6. शेयर बाजार के आकलन में कुंभ राशि अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है। इस राशि में से विभिन्न ग्रहों का गोचर शेयर बाजार पर अलग-अलग प्रभाव डालता है। 12 फरवरी 2009 सायं 19 बजकर 23 मिनट पर सूर्य का कुंभ राशि में प्रवेश शेयर बाजार में घटबढ़ के बाद तेजी बनायेगा। 5 मार्च 2009 प्रातः 3 बजकर 40 मिनट पर बुध का कुंभ राशि का गोचर शेयरों में मंदी देगा। परन्तु इस राशि कुंभ राशि का मंगल (7 मार्च 2009 शनिवार सायं 16 बजकर 32 मिनट से) शेयरों में तेजी देगा।

7. बुध ग्रह के सिंह राशि पर गोचर के समय (30 जुलाई 2009 सायं 3 बजकर 53 मिनट से 20 अगस्त 2009 प्रातः 5 ।23 तक) शेयरों में तेजी आयेगी। बुध अस्त होने पर 16 जनवरी- मकरस्थ बुध पश्चिम में अस्त, 12 मार्च-बुध पूर्व में अस्त, 11 मई-वृषस्थ बुध पश्चिम में अस्त, 10 सितम्बर-कन्या का वक्री बुध पश्चिम में अस्त, 20 अक्टूबर-बुध पूर्व में अस्त, 31 दिसम्बर-बुध पश्चिम दिशा में धनु राशि में अस्त होकर शेयरों में मंदी का योग बनायेगा।

8. वर्ष 2009 में 14 अप्रैल 2009 मंगलवार सायं 22 बजकर 52 मिनट पर, 14 मई सायं 19 ।17 मिनट पर, 11 जून रात्रि 2 ।08 मिनट पर, 8 जुलाई प्रातः 8 ।20 मिनट पर, 4 अगस्त दोपहर 2 बजकर 25 मिनट पर, 31 अगस्त रात्रि 21 बजकर 00 मिनट पर तथा 28 सितम्बर प्रातः 4 ।23 मिनट पर राहु तथा चन्द्रमा की युति शेयरों में गिरावट लगेगी।

9. 4 मई सोमवार की सायं 14 बजकर 57 मिनट पर राहु तथा गुरु एक ही नक्षत्र में होंगे। इन दोनों ग्रहों की युति शेयरों में तेजी कारक होने से आज का बाजार तेजी पर बंद होगा। 17 फरवरी मंगलवार रात्रि 21 ।58 में गुरु मंगल की युति शेयरों में तेजी करेगी। इसका प्रभाव 17 फरवरी के दिन से ही अनुभव में आने लगेगा। जैसे-जैसे गुरु तथा मंगल के मध्य तीन अंशों से अधिक की दूरी बढ़ेगी, इस युति का प्रभाव समाप्त होने लगेगा। 17 अगस्त 2009 सोमवार रात्रि 8 बजकर 45 मिनट पर, 22 सितम्बर मंगलवार दोपहर 2 बजकर 38 मिनट पर तथा 8 अक्टूबर 2009 दोपहर 2 बजकर 38 पर बुध-शनि की युति, 13 अक्टूबर गुरुवार सायं 16 ।23 पर शुक्र-शनि की युति, शेयर बाजार में गिरावट लायेगी। परन्तु 17 सितम्बर गुरुवार रात्रि 23 ।53 पर शनि-सूर्य की युति शेयर बाजार में तेजी बनायेगी।

10. 21 अगस्त शुक्रवार में मिथुन राशि का मंगल, मंद गति का शनि तथा कर्कस्थ मंद गति का शुक्र शेयर बाजार में मंदी कारक सिद्ध होगा। चूंकि कर्क में शुक्र का प्रवेश रात्रि 20 ।16 पर होगा तो इस योग का प्रभाव भी अगले दिन अर्थात् 22 अगस्त में देखने को मिलेगा। 9 सितम्बर बुधवार रात्रि 23 बजकर 59 मिनट से कन्या राशि का शनि भी शेयरों में मंदी कारक ही रहेगा। वर्ष 2009 के प्रारंभ से ही अस्त मंगल अपनी उदय तिथि 10 फरवरी मंगलवार तक शेयरों में तेजी कारक रहेंगे। 1 सितम्बर मंगलवार में पश्चिम में अस्त शनि भी शेयरों में तेजी बनायेंगे।

11. 9 मार्च सोमवार प्रातः 1।24 पर एक दूसरे को पूर्ण सप्तम दृष्टि से देख रहे सूर्य तथा शनि शेयरों में तेजी देंगे। कुंभ राशि के मार्गी नेपच्यून के साथ बुध-गुरु-शनि की युति शेयरों में गिरावट लाती है। 5 मार्च गुरुवार दोपहर 15।11 मिनट पर मार्गी नेपच्यून के साथ बुध की युति शेयरों में मंदी करेगी। 28 मई गुरुवार में दोपहर 13।43 पर, 10 जुलाई शुक्रवार दोपहर 13।43 पर तथा 21 सित. सोमवार में दोपहर 14।24 पर गुरु के साथ मार्गी नेपच्यून की युति शेयरों में गिरावट का कारण बनेगी।

सैक्टर वाईज वर्ष 2009 सीमेन्ट, कॉपर, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज के शेयर साधारण रहेंगे। चाय, टैक्सटाईल, फार्मास्युटिकल, टोबैको सैक्टर में गिरावट। 17 नवम्बर के पश्चात इन सैक्टरों में सुधार आयेगा। यह वर्ष भी पिछले वर्ष की भांति वोलेटाईल ही रहेगा। सैंसेक्स के 25000 अंकों पर पहुंचने की आशा रखने वाले व्यक्तियों के लिये वर्ष 2008 निराशाजनक था। इनके लिये वर्ष 2009 भी आशावान नहीं होगा।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य शेयर बाजार पर ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत किये गये विभिन्न योगों को जैसे का तैसा उपयोग करने में सावधानी आवश्यक है। किसी भी निर्णय पर पहुंचने के लिये ग्रहों की राशि स्थिति, कुंडली में भाव स्थिति, ग्रहों के बलाबल, उच्च अथवा नीच राशि में स्थिति, अंशात्मक मान, दृष्टि योग, वक्रावस्था, उदय अथवा अस्तावस्था, शर, संक्रांति, तिथि नक्षत्र एवं योग वृद्धि अथवा क्षय आदि का समन्वित अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुति में केवल उन्हीं योगों का उपयोग किया गया है, जो वर्ष 2009 में लागू होंगे। वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र सरकार की नीतियां आदि का आकलन कर लेना सदा सर्वदा हितावह है। लेख में दिये गये योगों के आधार पर किये गये व्यापार से किसी भी प्रकार की लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, प्रकाशक अथवा मुद्रक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं होंगे। शेयर बाजार की वार्षिक, अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये लेखक से निम्न पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आशीर्वाद भवन, आकाशगंगा सोसायटी के पास, रीस,
पोस्ट-मोहपाड़ा, ता.-खालापुर, जिला-रायगढ़
पिन-410222 फोन-02192-325066 मो-09326741750

षडष्टक योग (भकूट)

परिलेखकर्ता-एम. आर. जिन्दल

मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है। पूर्व जन्म में किया हुआ पाप-पुण्य प्रत्येक प्राणी को लेन-देन के रूप में स्वीकार करना ही पड़ता है। जैसा बोया है, वैसा ही काटेंगे। पूर्व में किये हुए शुभ कर्मों का फल हमें रोग-शोक-भय और चिन्ता से मुक्त कर जीवन में खुशियां प्रदान करेगा, इसमें सन्देह नहीं। पूर्व जन्मों में किये हुए पाप, वर्तमान में कष्ट-क्लेश, निराशा, रोग, शोक आदि देंगे। ग्रह, राशि, नक्षत्र, योग आदि सब पूर्व कर्मों के ही प्रतिबिम्ब है। जिस योग की यहां चर्चा करेंगे, उसका नाम '**षडष्टक**' है। यह **भकूट** महादोष के नाम से भी प्रसिद्ध है।

मैंने ज्योतिष अनुसंधान में जितना भयानक इस **षडष्टक** दोष को पाया है, उतना किसी अन्य योग या दोष को नहीं। इसमें जीवन में रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाएं घटित होती देखी हैं। यौवनावस्था में पति-पत्नि विछोह, बाल्यावस्था में शिशु का देहावसान, मित्र द्वारा विश्वासघात, पुत्र द्वारा माता-पिता का तिरस्कार, भाई द्वारा भाई की हत्या, हृष्ट-पुष्ट दम्पति का संतान अभाव और सज्जन प्राणी को दर-दर की खाक छानते हुए देखा है। हजारों कुण्डलियों के अध्ययन और अनगिणत राशियों के मिलान से मैं निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि षडष्टक योग ज्योतिष क्षेत्र में भयंकर से भयंकरतम है।

पाठकों के लाभार्थ यह अनुभूत निष्कर्ष प्रस्तुत कर रहा हूं ताकि ज्योतिष क्षेत्र में कार्यरत ज्योतिर्विद इस पर और अनुसंधान कर मानव कल्याण में अपना योगदान दे सकें। इसके विस्तृत विवेचन से पहले इस योग की मूल बात समझ ली जाये, तो कार्य आसान हो जायेगा।

कुण्डली में बारह भाव होते हैं। जैसे एक अर्थात् लग्न, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश और द्वादश। इनमें राशि संख्या कोई भी हो सकती है। यह भाव स्थिर है, प्रायः इन्हीं नामों से पुकारे जाते हैं। इनके नाम क्रमशः लग्न, धन, सहज, सुख, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, भाग्य, कर्म, लाभ और व्यय है। भावों के जैसे नाम हैं, उन्हीं के अनुरूप इनका गुण भी है।

बारह राशियां क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन हैं।

इस योग में केवल दो भाव अथवा राशियां ही अपना कार्य करती हैं, छठी और आठवीं राशि या भाव। छठा भाव रोग, बीमारी, शत्रु और परेशानी का कारक है तो आठवां मृत्यु का। अब आप स्वयं ही अनुमान लगा लें कि इन दोनों के संबंध होने पर क्या कुछ नहीं हो जायेगा?

वर-कन्या विवाह मिलान के समय यूं तो नव-पंचम, द्विर्दाद्श योनि, नाड़ी-दोष, वर्ग आदि बहुत कुछ है। परन्तु इस षडष्टक को भकूट महादोष की संज्ञा दी गई है। इन दोषों के परिहार हेतु शास्त्रों में बहुत से दान-पूजनों का वर्णन प्रायः उपलब्ध है। अपवाद स्वरूप राशीश-मैत्री का आश्रय भी कहीं-कहीं लिया जाता है। परन्तु अनुभव के धरातल पर इसे खरा उतरते नहीं पाया गया। माना जा सकता है कि दान-पूजन आदि से इसका प्रभाव कुछ कम हो जायेगा। परन्तु यह पूर्णरूपेण समाप्त नहीं हो पायेगा। एक राशि, मित्र राशि और दान-पूजन के पश्चात् भी मैंने इस योग को घटित होते हुए देखा है।

प्रायः यह दोष जन्म राशि पर अधिक प्रभावी होता है। परन्तु यदि वह दोष नाम राशि से भी बन रहा हो तो इसका कुप्रभाव जातक को भोगना ही पड़ेगा। यदि यह दोष जन्म राशि और नाम राशि दोनों से एक साथ बन रहा हो तो जातक का अहित निश्चित समझिये।

यह दोष कैसे बनता है? इसे ध्यान से समझ लें-मान लीजिये किसी जातक की जन्म राशि कुंभ है (चन्द्रमा नं.11 में है) और उस जातक के नाम का पहला अक्षर 'स/श' है तो जातक की जन्म राशि और नाम राशि कुंभ मानी जायेगी। इस राशि वाले जातक का कर्क और कन्या राशि वाले जातक के साथ संबंध इस महादोष '**षडष्टक**' के अंतर्गत आयेगा। अतः इस कुंभ राशि वाले जातक को जीवन के किसी भी क्षेत्र में कर्क और कन्या राशि वाले जातक, स्थान, मित्र, वस्तु आदि से कभी लाभ नहीं हो पायेगा। प्रायः हानि ही होगी।

ऐसा क्यों होगा? क्योंकि पहले बताया जा चुका है कि छठा भाव रोग, शत्रु, परेशानी आदि का कारक है और आठवां मृत्यु का। उपरोक्त कुण्डली में यदि हम कुंभ राशि से गणना शुरू करें तो कुंभ राशि से कर्क राशि छठे पड़ेगी और कन्या आठवें। इसी प्रकार कर्क राशि से कुंभ राशि आठवें आ जायेगी, तो कन्या राशि से कुंभ राशि छठे भाव में पड़ेगी।
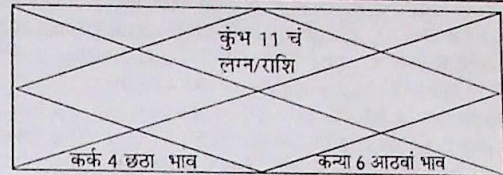
बाकी राशि वालों के लिए भी यही नियम है। किस राशि को कौन-कौन सी राशि से यह दोष बनेगा, निम्नलिखित है:-

1. मेष का - कन्या और वृश्चि. से।
2. वृष का - तुला और धनु से।
3. मिथुन का- वृश्चि. और मकर से
4. कर्क का - धनु और कुंभ से
5. सिंह का - मकर और मीन से
6. कन्या का- कुंभ और मेष से
7. तुला का - मीन और वृष से
8. वृश्चि. का- मेष और मिथुन से
9. धनु का - वृष और कर्क से
10. मकर का - मिथुन और सिंह से
11. कुंभ का - कर्क और कन्या से
12. मीन का - सिंह और तुला से

उपरोक्त से यह स्पष्ट हो गया कि कौन सी राशि परस्पर दोश कारक है। इनमें स्वराशि मेष-वृश्चिक, वृष और तुला बनेगी। राशीश मैत्री को अधिक मान्यता देना आवश्यक नहीं, क्योंकि यह अनुभव में खरी नहीं उतरती। इस दोष से जितना बचा जा सके, उतना ही बेहतर है।

इसकी सत्यता और प्रमाणिकता के लिए अपने आस-पास दृष्टि दौड़ायें और देखें कि इस महादोष के अंतर्गत आने वाली राशियों को अपने मित्र, शहर, स्त्री-पुरुष, स्थान, नाम, भाई-बहन, संस्था आदि से क्या प्राप्त हुआ? अभिप्राय यह है कि इस महादोष में जातक को परेशानी अवश्य आयेगी। राशि मैत्री, स्वराशि या जन्म राशि की भिन्नता, दान-पूजन एवं प्रभु कृपा से या पूर्व कर्मों के फलस्वरूप किसी एक प्रतिशत जातकों का बचाव हो भी गया हो तो भी इस दोष के महादोष होने और इसकी सत्यता पर प्रश्न चिन्ह नहीं लग सकेगा। मानता हूं कि भाग्य को बदला जा नहीं सकता परन्तु इस महादोष से अपने आप को बचाने का प्रयास किया जा सकता है।

एम. आर. जिन्दल (ज्योतिष विद्यार्थी)
सम्पादक ज्योतिष रत्नाकर (हिन्दी मासिक पत्रिका)